इंजील-ए मुक़द्दस

असल यूनानी मतन से नया उर्दू तर्जुमा

नाशिरीन

जियोलिंक रीसोर्स कन्सल्टेंट्स

बार _____ दुवुम

The New Testament in Modern Urdu
Translated from the Original Greek
Urdu Geo Version (Devanagari) (beta version 150122)

© 2012 Geolink Resource Consultants, LLC

Published by
Geolink Resource Consultants, LLC
10307 W. Broad Street, # 169, Glen Allen, Virginia 23060
United States of America

http://urdugeoversion.com

जुम्ला हुक़ूक़ ब-हक़्क़-ए नाशिरीन, जियोलिंक रीसोर्स कन्सल्टेंट्स, एल-एल-सी महफ़ूज़ हैं

मत्ती

ईसा मसीह का नसबनामा

1 [1] ईसा मसीह बिन दाऊद बिन इब्राहीम का
नसबनामा :
[2] इब्राहीम इस्हाक़ का बाप था, इस्हाक़ याक़ूब का
बाप और याक़ूब यहूदा और उस के भाइयों का बाप।
[3] यहूदा के दो बेटे फ़ारस और ज़ारह थे (उन की माँ
तमर थी)। फ़ारस हस्रोन का बाप और हस्रोन राम
का बाप था। [4] राम अम्मीनदाब का बाप, अम्मीनदाब
नह्सोन का बाप और नह्सोन सल्मोन का बाप था।
[5] सल्मोन बोअज़ का बाप था (बोअज़ की माँ राहब
थी)। बोअज़ ओबेद का बाप था (ओबेद की माँ
रूत थी)। ओबेद यस्सी का बाप और [6] यस्सी दाऊद
बादशाह का बाप था।

दाऊद सुलैमान का बाप था (सुलैमान की माँ पहले
ऊरिय्याह की बीवी थी)। [7] सुलैमान रहुबिआम का
बाप, रहुबिआम अबियाह का बाप और अबियाह
आसा का बाप था। [8] आसा यहूसफ़त का बाप,
यहूसफ़त यूराम का बाप और यूराम उज़्ज़ियाह का
बाप था। [9] उज़्ज़ियाह यूताम का बाप, यूताम आख़ज़
का बाप और आख़ज़ हिज़क़ियाह का बाप था।
[10] हिज़क़ियाह मनस्सी का बाप, मनस्सी अमून का
बाप और अमून यूसियाह का बाप था। [11] यूसियाह
यहूयाकीन [l]और उस के भाइयों का बाप था (यह
बाबल की जिलावतनी के दौरान पैदा हुए)।

[12] बाबल की जिलावतनी के बाद यहूयाकीन
[m]सियाल्तीएल का बाप और सियाल्तीएल
ज़रुब्बाबल का बाप था। [13] ज़रुब्बाबल अबीहूद
का बाप, अबीहूद इलियाक़ीम का बाप और
इलियाक़ीम आज़ोर का बाप था। [14] आज़ोर सदोक़
का बाप, सदोक़ अख़ीम का बाप और अख़ीम
इलीहूद का बाप था। [15] इलीहूद इलीअज़र का
बाप, अलीअज़र मत्तान का बाप और मत्तान का
बाप याक़ूब था। [16] याक़ूब मरियम के शौहर यूसुफ़
का बाप था। इस मरियम से ईसा पैदा हुआ, जो
मसीह कहलाता है।

[17] यूँ इब्राहीम से दाऊद तक 14 नस्लें हैं, दाऊद
से बाबल की जिलावतनी तक 14 नस्लें हैं और
जिलावतनी से मसीह तक 14 नस्लें हैं

ईसा मसीह की पैदाइश

[18] ईसा मसीह की पैदाइश यूँ हुई : उस वक़्त उस
की माँ मरियम की मंगनी यूसुफ़ के साथ हो चुकी थी
कि वह रूह-उल-क़ुद्स से हामिला पाई गई। अभी
उन की शादी नहीं हुई थी। [19] उस का मंगेतर यूसुफ़
रास्तबाज़ था, वह अलानिया मरियम को बदनाम
नहीं करना चाहता था। इस लिए उस ने ख़ामोशी
से यह रिश्ता तोड़ने का इरादा कर लिया। [20] वह
इस बात पर अभी ग़ौर-ओ-फ़िक्र कर ही रहा था कि
रब का फ़रिश्ता ख़्वाब में उस पर ज़ाहिर हुआ और
फ़रमाया, "यूसुफ़ बिन दाऊद, मरियम से शादी करके
उसे अपने घर ले आने से मत डर, क्यूँकि पैदा होने
वाला बच्चा रूह-उल-क़ुद्स से है। [21] उस के बेटा होगा
और उस का नाम ईसा रखना, क्यूँकि वह अपनी
क़ौम को उस के गुनाहों से रिहाई देगा।"

[22] यह सब कुछ इस लिए हुआ ताकि रब की वह
बात पूरी हो जाए जो उस ने अपने नबी की मारिफ़त
फ़रमाई थी, [23] "देखो एक कुंवारी हामिला होगी। उस
से बेटा पैदा होगा और वह उस का नाम इम्मानूएल

---

[l] यूनानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है।

[m] यूनानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है।

रखेंगे।” (इम्मानूएल का मतलब ‘ख़ुदा हमारे साथ’ है।)

24 जब यूसुफ़ जाग उठा तो उस ने रब के फ़रिश्ते
के फ़रमान के मुताबिक़ मरियम से शादी कर ली और
उसे अपने घर ले गया। 25 लेकिन जब तक उस के
बेटा पैदा न हुआ वह मरियम से हमबिसतर न हुआ।
और यूसुफ़ ने बच्चे का नाम ईसा रखा।

मशरिक़ से मजूसी आलिम

2 1 ईसा हेरोदेस बादशाह के ज़माने में सूबा
यहूदिया के शहर बैत-लहम में पैदा हुआ। उन
दिनों में कुछ मजूसी आलिम मशरिक़ से आ कर
यरूशलम पहुँच गए। 2 उन्हों ने पूछा, “यहूदियों का
वह बादशाह कहाँ है जो हाल ही में पैदा हुआ है?
क्यूँकि हम ने मशरिक़ में उस का सितारा देखा है
और हम उसे सिज्दा करने आए हैं।”

3 यह सुन कर हेरोदेस बादशाह पूरे यरूशलम समेत
घबरा गया। 4 तमाम राहनुमा इमामों और शरीअत के
उलमा को जमा करके उस ने उन से दरयाफ़्त किया
कि मसीह कहाँ पैदा होगा।

5 उन्हों ने जवाब दिया, “यहूदिया के शहर बैत-
लहम में, क्यूँकि नबी की मारिफ़त यूँ लिखा है, 6 ‘ऐ
मुल्क-ए-यहूदिया में वाक़े बैत-लहम, तू यहूदिया के
हुक्मरानों में हरगिज़ सब से छोटा नहीं। क्यूँकि तुझ
में से एक हुक्मरान निकलेगा जो मेरी क़ौम इस्राईल
की गल्लाबानी करेगा’।”

7 इस पर हेरोदेस ने ख़ुफ़िया तौर पर मजूसी
आलिमों को बुला कर तफ़्सील से पूछा कि वह
सितारा किस वक़्त दिखाई दिया था। 8 फिर उस ने
उन्हें बताया, “बैत-लहम जाएँ और तफ़्सील से बच्चे
का पता लगाएँ। जब आप उसे पा लें तो मुझे इत्तिला
दें ताकि मैं भी जा कर उसे सिज्दा करूँ।”

9 बादशाह के इन अल्फ़ाज़ के बाद वह चले गए।
और देखो जो सितारा उन्हों ने मशरिक़ में देखा था वह
उन के आगे आगे चलता गया और चलते चलते उस
मक़ाम के ऊपर ठहर गया जहाँ बच्चा था। 10 सितारे
को देख कर वह बहुत ख़ुश हुए। 11 वह घर में दाख़िल
हुए और बच्चे को माँ के साथ देख कर उन्हों ने औंधे
मुँह गिर कर उसे सिज्दा किया। फिर अपने डिब्बे
खोल कर उसे सोने, लुबान और मुर के तुह्फ़े पेश
किए।

12 जब रवानगी का वक़्त आया तो वह यरूशलम
से हो कर न गए बल्कि एक और रास्ते से अपने मुल्क
चले गए, क्यूँकि उन्हें ख़्वाब में आगाह किया गया
था कि हेरोदेस के पास वापस न जाओ।

मिस्र की जानिब हिज्रत

13 उन के चले जाने के बाद रब का फ़रिश्ता ख़्वाब
में यूसुफ़ पर ज़ाहिर हुआ और कहा, “उठ, बच्चे को
उस की माँ समेत ले कर मिस्र को हिज्रत कर जा।
जब तक मैं तुझे इत्तिला न दूँ वहीं ठहरा रह, क्यूँकि
हेरोदेस बच्चे को तलाश करेगा ताकि उसे क़त्ल करे।”

14 यूसुफ़ उठा और उसी रात बच्चे को उस की माँ
समेत ले कर मिस्र के लिए रवाना हुआ। 15 वहाँ वह
हेरोदेस के इन्तिक़ाल तक रहा। यूँ वह बात पूरी हुई
जो रब ने नबी की मारिफ़त फ़रमाई थी, “मैं ने अपने
फ़र्ज़न्द को मिस्र से बुलाया।”

बच्चों का क़त्ल

16 जब हेरोदेस को मालूम हुआ कि मजूसी आलिमों
ने मुझे फ़रेब दिया है तो उसे बड़ा तैश आया। उस ने
अपने फ़ौजियों को बैत-लहम भेज कर उन्हें हुक्म
दिया कि बैत-लहम और इर्दगिर्द के इलाक़े के उन
तमाम लड़कों को क़त्ल करें जिन की उम्र दो साल
तक हो। क्यूँकि उस ने मजूसियों से बच्चे की उम्र के
बारे में यह मालूम कर लिया था।

17 यूँ यर्मियाह नबी की पेशगोई पूरी हुई, 18 “रामा
में शोर मच गया है, रोने पीटने और शदीद मातम की
आवाज़ें। राख़िल अपने बच्चों के लिए रो रही है और
तसल्ली क़बूल नहीं कर रही, क्यूँकि वह हलाक हो
गए हैं।”

मिस्र से वापसी

19 जब हेरोदेस इन्तिक़ाल कर गया तो रब का
फ़रिश्ता ख़्वाब में यूसुफ़ पर ज़ाहिर हुआ जो अभी
मिस्र ही में था। 20 फ़रिश्ते ने उसे बताया, "उठ, बच्चे
को उस की माँ समेत ले कर मुल्क-ए-इस्राईल वापस
चला जा, क्यूँकि जो बच्चे को जान से मारने के दरपै
थे वह मर गए हैं।" 21 चुनाँचे यूसुफ़ उठा और बच्चे
और उस की माँ को ले कर मुल्क-ए-इस्राईल में लौट
आया।
22 लेकिन जब उस ने सुना कि अर्ख़िलाउस अपने
बाप हेरोदेस की जगह यहूदिया में तख़्तनशीन हो
गया है तो वह वहाँ जाने से डर गया। फिर ख़्वाब
में हिदायत पा कर वह गलील के इलाक़े के लिए
रवाना हुआ। 23 वहाँ वह एक शहर में जा बसा जिस
का नाम नासरत था। यूँ नबियों की बात पूरी हुई कि
'वह नासरी कहलाएगा।'

यहया बपतिस्मा देने वाले की ख़िदमत

3 1 उन दिनों में यहया बपतिस्मा देने वाला आया
और यहूदिया के रेगिस्तान में एलान करने लगा,
2 "तौबा करो, क्यूँकि आसमान की बादशाही क़रीब
आ गई है।" 3 यहया वही है जिस के बारे में यसायाह
नबी ने फ़रमाया, 'रेगिस्तान में एक आवाज़ पुकार
रही है, रब की राह तय्यार करो! उस के रास्ते सीधे
बनाओ।'
4 यहया ऊँटों के बालों का लिबास पहने और कमर
पर चमड़े का पटका बांधे रहता था। ख़ुराक के तौर
पर वह टिड्डियाँ और जंगली शहद खाता था। 5 लोग
यरूशलम, पूरे यहूदिया और दरया-ए-यर्दन के पूरे
इलाक़े से निकल कर उस के पास आए। 6 और अपने
गुनाहों को तस्लीम करके उन्हों ने दरया-ए- यर्दन में
यहया से बपतिस्मा लिया।
7 बहुत से फ़रीसी और सदूक़ी भी वहाँ आए जहाँ
वह बपतिस्मा दे रहा था। उन्हें देख कर उस ने
कहा, "ऐ ज़हरीले साँप के बच्चो! किस ने तुम्हें आने
वाले ग़ज़ब से बचने की हिदायत की? 8 अपनी
ज़िन्दगी से ज़ाहिर करो कि तुम ने वाक़ई तौबा की
है। 9 यह ख़याल मत करो कि हम तो बच जाएंगे
क्यूँकि इब्राहीम हमारा बाप है। मैं तुम को बताता
हूँ कि अल्लाह इन पत्थरों से भी इब्राहीम के लिए
औलाद पैदा कर सकता है। 10 अब तो अदालत
की कुल्हाड़ी दरख़्तों की जड़ों पर रखी हुई है। हर
दरख़्त जो अच्छा फल न लाए काटा और आग में
झोंका जाएगा। 11 मैं तो तुम तौबा करने वालों को
पानी से बपतिस्मा देता हूँ, लेकिन एक आने वाला
है जो मुझ से बड़ा है। मैं उस के जूतों को उठाने के
भी लाइक़ नहीं। वह तुम्हें रूह-उल-क़ुद्स और आग
से बपतिस्मा देगा। 12 वह हाथ में छाज पकड़े हुए
अनाज को भूसे से अलग करने के लिए तय्यार खड़ा
है। वह गाहने की जगह बिलकुल साफ़ करके अनाज
को अपने गोदाम में जमा करेगा। लेकिन भूसे को वह
ऐसी आग में झोंकेगा जो बुझने की नहीं।"

ईसा का बपतिस्मा

13 फिर ईसा गलील से दरया-ए-यर्दन के किनारे
आया ताकि यहया से बपतिस्मा ले। 14 लेकिन यहया
ने उसे रोकने की कोशिश करके कहा, "मुझे तो आप
से बपतिस्मा लेने की ज़रूरत है, तो फिर आप मेरे
पास क्यूँ आए हैं?"
15 ईसा ने जवाब दिया, "अब होने ही दे, क्यूँकि
मुनासिब है कि हम यह करते हुए अल्लाह की रास्त
मर्ज़ी पूरी करें।" [n]इस पर यहया मान गया।
16 बपतिस्मा लेने पर ईसा फ़ौरन पानी से निकला।
उसी लम्हे आसमान खुल गया और उस ने अल्लाह के
रूह को देखा जो कबूतर की तरह उतर कर उस पर
ठहर गया। 17 साथ साथ आसमान से एक आवाज़

---

[n]लफ़्ज़ी तर्जुमा : हम तमाम रास्तबाज़ी पूरी करें।

सुनाई दी, “यह मेरा प्यारा फ़र्ज़न्द है, इस से मैं ख़ुश हूँ।”

ईसा को आज़माया जाता है

4 1 फिर रूह-उल-क़ुद्स ईसा को रेगिस्तान में ले
गया ताकि उसे इब्लीस से आज़माया जाए।
2 चालीस दिन और चालीस रात रोज़ा रखने के बाद
उसे आख़िरकार भूक लगी। 3 फिर आज़माने वाला
उस के पास आ कर कहने लगा, “अगर तू अल्लाह
का फ़र्ज़न्द है तो इन पत्थरों को हुक्म दे कि रोटी बन
जाएँ।”
4 लेकिन ईसा ने इन्कार करके कहा, “हरगिज़ नहीं,
क्यूँकि कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है कि इन्सान की
ज़िन्दगी सिर्फ़ रोटी पर मुन्हसिर नहीं होती बल्कि हर
उस बात पर जो रब के मुँह से निकलती है।”
5 इस पर इब्लीस ने उसे मुक़द्दस शहर यरूशलम ले
जा कर बैत-उल-मुक़द्दस की सब से ऊँची जगह पर
खड़ा किया और कहा, 6 “अगर तू अल्लाह का फ़र्ज़न्द
है तो यहाँ से छलाँग लगा दे। क्यूँकि कलाम-ए-
मुक़द्दस में लिखा है, ‘वह तेरी ख़ातिर अपने फ़रिश्तों
को हुक्म देगा, और वह तुझे अपने हाथों पर उठा
लेंगे ताकि तेरे पाँओ को पत्थर से ठेस न लगे’।”
7 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “कलाम-ए-मुक़द्दस
यह भी फ़रमाता है, ‘रब अपने ख़ुदा को न
आज़माना’।”
8 फिर इब्लीस ने उसे एक निहायत ऊँचे पहाड़ पर
ले जा कर उसे दुनिया के तमाम ममालिक और उन
की शान-ओ-शौकत दिखाई। 9 वह बोला, “यह सब
कुछ मैं तुझे दे दूँगा, शर्त यह है कि तू गिर कर मुझे
सिज्दा करे।”
10 लेकिन ईसा ने तीसरी बार इन्कार किया और
कहा, “इब्लीस, दफ़ा हो जा! क्यूँकि कलाम-ए-
मुक़द्दस में यूँ लिखा है, ‘रब अपने ख़ुदा को सिज्दा
कर और सिर्फ़ उसी की इबादत कर’।”
11 इस पर इब्लीस उसे छोड़ कर चला गया और
फ़रिश्ते आ कर उस की ख़िदमत करने लगे।

गलील में ईसा की ख़िदमत का आग़ाज़

12 जब ईसा को ख़बर मिली कि यहया को जेल
में डाल दिया गया है तो वह वहाँ से चला गया
और गलील में आया। 13 नासरत को छोड़ कर वह
झील के किनारे पर वाक़े शहर कफ़र्नहूम में रहने
लगा, यानी ज़बूलून और नफ़्ताली के इलाक़े में। 14 यूँ
यसायाह नबी की पेशगोई पूरी हुई,

15 “ज़बूलून का इलाक़ा, नफ़्ताली का इलाक़ा,
झील के साथ का रास्ता, दरया-ए-यर्दन के पार,
ग़ैरयहूदियों का गलील :
16 अंधेरे में बैठी क़ौम ने एक तेज़ रौशनी देखी,
मौत के साय में डूबे हुए मुल्क के बाशिन्दों पर
रौशनी चमकी।”

17 उस वक़्त से ईसा इस पैग़ाम की मुनादी करने
लगा, “तौबा करो, क्यूँकि आसमान की बादशाही
क़रीब आ गई है।”

ईसा चार मछेरों को बुलाता है

18 एक दिन जब ईसा गलील की झील के किनारे
किनारे चल रहा था तो उस ने दो भाइयों को देखा -
शमाऊन जो पतरस भी कहलाता था और अन्द्रियास
को। वह पानी में जाल डाल रहे थे, क्यूँकि वह
माहीगीर थे। 19 उस ने कहा, “आओ, मेरे पीछे हो
लो, मैं तुम को आदमगीर बनाऊँगा।” 20 यह सुनते
ही वह अपने जालों को छोड़ कर उस के पीछे हो
लिए।
21 आगे जा कर ईसा ने दो और भाइयों को देखा,
याक़ूब बिन ज़ब्दी और उस के भाई यूहन्ना को। वह
कश्ती में बैठे अपने बाप ज़ब्दी के साथ अपने जालों
की मरम्मत कर रहे थे। ईसा ने उन्हें बुलाया 22 तो
वह फ़ौरन कश्ती और अपने बाप को छोड़ कर उस
के पीछे हो लिए।

ईसा तालीम देता, मुनादी करता और शिफ़ा देता है

23 और ईसा गलील के पूरे इलाक़े में फिरता रहा।
जहाँ भी वह जाता वह यहूदी इबादतख़ानों में तालीम
देता, बादशाही की ख़ुशख़बरी सुनाता और हर क़िस्म
की बीमारी और अलालत से शिफ़ा देता था। 24 उस
की ख़बर मुल्क-ए-शाम के कोने कोने तक पहुँच गई,
और लोग अपने तमाम मरीज़ों को उस के पास लाने
लगे। क़िस्म क़िस्म की बीमारियों तले दबे लोग, ऐसे
जो शदीद दर्द का शिकार थे, बदरूहों की गिरिफ़्त
में मुब्तला, मिर्गी वाले और फ़ालिजज़दा, ग़रज़ जो
भी आया ईसा ने उसे शिफ़ा बख़्शी। 25 गलील,
दिकपुलिस, यरूशलम, यहूदिया और दरया-ए-यर्दन
के पार के इलाक़े से बड़े बड़े हुजूम उस के पीछे
चलते रहे।

पहाड़ी वाज़

5 1 भीड़ को देख कर ईसा पहाड़ पर चढ़ कर बैठ
गया। उस के शागिर्द उस के पास आए 2 और
वह उन्हें यह तालीम देने लगा :

हक़ीक़ी ख़ुशी

3 "मुबारक हैं वह जिन की रूह ज़रूरतमन्द है,
क्यूँकि आसमान की बादशाही उन ही की है।
4 मुबारक हैं वह जो मातम करते हैं, क्यूँकि उन्हें
तसल्ली दी जाएगी।
5 मुबारक हैं वह जो हलीम हैं, क्यूँकि वह ज़मीन
विरसे में पाएँगे।
6 मुबारक हैं वह जिन्हें रास्तबाज़ी की भूक और
प्यास है, क्यूँकि वह सेर हो जाएंगे।
7 मुबारक हैं वह जो रहमदिल हैं, क्यूँकि उन पर
रहम किया जाएगा।
8 मुबारक हैं वह जो ख़ालिस दिल हैं, क्यूँकि वह
अल्लाह को देखेंगे।
9 मुबारक हैं वह जो सुलह कराते हैं, क्यूँकि वह
अल्लाह के फ़र्ज़न्द कहलाएँगे।
10 मुबारक हैं वह जिन को रास्तबाज़ होने के
सबब से सताया जाता है, क्यूँकि उन्हें आसमान की
बादशाही विरसे में मिलेगी।
11 मुबारक हो तुम जब लोग मेरी वजह से तुम्हें
लान-तान करते, तुम्हें सताते और तुम्हारे बारे में हर
क़िस्म की बुरी और झूटी बात करते हैं। 12 ख़ुशी
मनाओ और बाग़ बाग़ हो जाओ, तुम को आसमान
पर बड़ा अज्र मिलेगा। क्यूँकि इसी तरह उन्हों ने तुम
से पहले नबियों को भी ईज़ा पहुँचाई थी।

तुम नमक और रौशनी हो

13 तुम दुनिया का नमक हो। लेकिन अगर नमक का
ज़ाइक़ा जाता रहे तो फिर उसे क्यूँकर दुबारा नमकीन
किया जा सकता है? वह किसी भी काम का नहीं रहा
बल्कि बाहर फैंका जाएगा जहाँ वह लोगों के पाँओ
तले रौंदा जाएगा।
14 तुम दुनिया की रौशनी हो। पहाड़ पर वाक़े शहर
की तरह तुम को छुपाया नहीं जा सकता। 15 जब
कोई चराग़ जलाता है तो वह उसे बर्तन के नीचे नहीं
रखता बल्कि शमादान पर रख देता है जहाँ से वह घर
के तमाम अफ़राद को रौशनी देता है। 16 इसी तरह
तुम्हारी रौशनी भी लोगों के सामने चमके ताकि वह
तुम्हारे नेक काम देख कर तुम्हारे आसमानी बाप को
जलाल दें।

शरीअत

17 यह न समझो कि मैं मूसवी शरीअत और नबियों
की बातों को मन्सूख़ करने आया हूँ। मन्सूख़ करने
नहीं बल्कि उन की तक्मील करने आया हूँ। 18 मैं
तुम को सच बताता हूँ, जब तक आसमान-ओ-ज़मीन
क़ाइम रहेंगे तब तक शरीअत भी क़ाइम रहेगी - न उस
का कोई हर्फ़, न उस का कोई ज़ेर या ज़बर मन्सूख़
होगा जब तक सब कुछ पूरा न हो जाए। 19 जो इन
सब से छोटे अह्काम में से एक को भी मन्सूख़ करे
और लोगों को ऐसा करना सिखाए उसे आसमान की
बादशाही में सब से छोटा क़रार दिया जाएगा। इस

के मुक़ाबले में जो इन अह्काम पर अमल करके
इन्हें सिखाता है उसे आसमान की बादशाही में बड़ा
क़रार दिया जाएगा। 20 क्यूँकि मैं तुम को बताता
हूँ कि अगर तुम्हारी रास्तबाज़ी शरीअत के उलमा
और फ़रीसियों की रास्तबाज़ी से ज़्यादा नहीं तो तुम
आसमान की बादशाही में दाख़िल होने के लाइक़
नहीं।

ग़ुस्सा

21 तुम ने सुना है कि बापदादा को फ़रमाया गया,
'क़त्ल न करना। और जो क़त्ल करे उसे अदालत में
जवाब देना होगा।' 22 लेकिन मैं तुम को बताता हूँ
कि जो भी अपने भाई पर ग़ुस्सा करे उसे अदालत
में जवाब देना होगा। इसी तरह जो अपने भाई
को 'अहमक़' कहे उसे यहूदी अदालत-ए-अलिया
में जवाब देना होगा। और जो उस को 'बेवुक़ूफ़!'
कहे वह जहन्नुम की आग में फैंके जाने के लाइक़
ठहरेगा। 23 लिहाज़ा अगर तुझे बैत-उल-मुक़द्दस में
क़ुर्बानी पेश करते वक़्त याद आए कि तेरे भाई को
तुझ से कोई शिकायत है 24 तो अपनी क़ुर्बानी को
वहीं क़ुर्बानगाह के सामने ही छोड़ कर अपने भाई
के पास चला जा। पहले उस से सुलह कर और फिर
वापस आ कर अल्लाह को अपनी क़ुर्बानी पेश कर।
25 फ़र्ज़ करो कि किसी ने तुझ पर मुक़द्दमा चलाया
है। अगर ऐसा हो तो कचहरी में दाख़िल होने से पहले
पहले जल्दी से झगड़ा ख़त्म कर। ऐसा न हो कि वह
तुझे जज के हवाले करे, जज तुझे पुलिस अफ़्सर के
हवाले करे और नतीजे में तुझ को जेल में डाला जाए।
26 मैं तुझे सच बताता हूँ, वहाँ से तू उस वक़्त तक
नहीं निकल पाएगा जब तक जुर्माने की पूरी पूरी रक़म
अदा न कर दे।

ज़िनाकारी

27 तुम ने यह हुक्म सुन लिया है कि 'ज़िना न
करना।' 28 लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ, जो किसी औरत
को बुरी ख़्वाहिश से देखता है वह अपने दिल में उस
के साथ ज़िना कर चुका है। 29 अगर तेरी बाईं आँख
तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे निकाल कर
फैंक दे। इस से पहले कि तेरे पूरे जिस्म को जहन्नुम
में डाला जाए बेहतर यह है कि तेरा एक ही उज़ू जाता
रहे। 30 और अगर तेरा दहना हाथ तुझे गुनाह करने
पर उकसाए तो उसे काट कर फैंक दे। इस से पहले
कि तेरा पूरा जिस्म जहन्नुम में जाए बेहतर यह है कि
तेरा एक ही उज़ू जाता रहे।

तलाक़

31 यह भी फ़रमाया गया है, 'जो भी अपनी बीवी को
तलाक़ दे वह उसे तलाक़नामा लिख दे।' 32 लेकिन
मैं तुम को बताता हूँ कि अगर किसी की बीवी ने
ज़िना न किया हो तो भी शौहर उसे तलाक़ दे तो वह
उस से ज़िना कराता है। और जो तलाकशुदा औरत
से शादी करे वह ज़िना करता है।

क़सम मत खाना

33 तुम ने यह भी सुना है कि बापदादा को फ़रमाया
गया, 'झूटी क़सम मत खाना बल्कि जो वादे तू ने
रब से क़सम खा कर किए हों उन्हें पूरा करना।'
34 लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ, क़सम बिलकुल न
खाना। न 'आसमान की क़सम' क्यूँकि आसमान
अल्लाह का तख़्त है, 35 न 'ज़मीन की' क्यूँकि ज़मीन
उस के पाँओ की चौकी है। 'यरूशलम की क़सम' भी
न खाना क्यूँकि यरूशलम अज़ीम बादशाह का शहर
है। 36 यहाँ तक कि अपने सर की क़सम भी न खाना,
क्यूँकि तू अपना एक बाल भी काला या सफ़ेद नहीं
कर सकता। 37 सिर्फ़ इतना ही कहना, 'जी हाँ' या
'जी नहीं।' अगर इस से ज़्यादा कहो तो यह इब्लीस
की तरफ़ से है।

बदला लेना

38 तुम ने सुना है कि यह फ़रमाया गया है, 'आँख के
बदले आँख, दाँत के बदले दाँत।' 39 लेकिन मैं तुम
को बताता हूँ कि बदकार का मुक़ाबला मत करना।

अगर कोई तेरे दहने गाल पर थप्पड़ मारे तो उसे
दूसरा गाल भी पेश कर दे। 40 अगर कोई तेरी क़मीस
लेने के लिए तुझ पर मुक़द्दमा करना चाहे तो उसे
अपनी चादर भी दे देना। 41 अगर कोई तुझ को उस
का सामान उठा कर एक किलोमीटर जाने पर मज्बूर
करे तो उस के साथ दो किलोमीटर चला जाना। 42 जो
तुझ से कुछ माँगे उसे दे देना और जो तुझ से क़र्ज़
लेना चाहे उस से इन्कार न करना।

दुश्मन से मुहब्बत

43 तुम ने सुना है कि फ़रमाया गया है, 'अपने
पड़ोसी से मुहब्बत रखना और अपने दुश्मन से
नफ़रत करना।' 44 लेकिन मैं तुम को बताता हूँ, अपने
दुश्मनों से मुहब्बत रखो और उन के लिए दुआ करो
जो तुम को सताते हैं। 45 फिर तुम अपने आसमानी
बाप के फ़र्ज़न्द ठहरोगे, क्यूँकि वह अपना सूरज सब
पर तुलू होने देता है, ख़्वाह वह अच्छे हों या बुरे।
और वह सब पर बारिश बरसने देता है, ख़्वाह वह
रास्तबाज़ हों या नारास्त। 46 अगर तुम सिर्फ़ उन ही
से मुहब्बत करो जो तुम से करते हैं तो तुम को क्या
अज्र मिलेगा? टैक्स लेने वाले भी तो ऐसा ही करते
हैं। 47 और अगर तुम सिर्फ़ अपने भाइयों के लिए
सलामती की दुआ करो तो कौन सी ख़ास बात करते
हो? ग़ैरयहूदी भी तो ऐसा ही करते हैं। 48 चुनाँचे वैसे
ही कामिल हो जैसा तुम्हारा आसमानी बाप कामिल
है।

ख़ैरात

6 1 ख़बरदार! अपने नेक काम लोगों के सामने
दिखावे के लिए न करो, वर्ना तुम को अपने
आसमानी बाप से कोई अज्र नहीं मिलेगा।
2 चुनाँचे ख़ैरात देते वक़्त रियाकारों की तरह न कर
जो इबादतख़ानों और गलियों में बिगुल बजा कर इस
का एलान करते हैं ताकि लोग उन की इज़्ज़त करें।
मैं तुम को सच बताता हूँ, जितना अज्र उन्हें मिलना
था उन्हें मिल चुका है। 3 इस के बजाय जब तू ख़ैरात
दे तो तेरे दाएँ हाथ को पता न चले कि बायाँ हाथ
क्या कर रहा है। 4 तेरी ख़ैरात यूँ पोशीदगी में दी जाए
तो तेरा बाप जो पोशीदा बातें देखता है तुझे इस का
मुआवज़ा देगा।

दुआ

5 दुआ करते वक़्त रियाकारों की तरह न करना
जो इबादतख़ानों और चौकों में जा कर दुआ करना
पसन्द करते हैं, जहाँ सब उन्हें देख सकें। मैं तुम को
सच बताता हूँ, जितना अज्र उन्हें मिलना था उन्हें
मिल चुका है। 6 इस के बजाय जब तू दुआ करता
है तो अन्दर के कमरे में जा कर दरवाज़ा बन्द कर
और फिर अपने बाप से दुआ कर जो पोशीदगी में है।
फिर तेरा बाप जो पोशीदा बातें देखता है तुझे इस का
मुआवज़ा देगा।
7 दुआ करते वक़्त ग़ैरयहूदियों की तरह तवील और
बेमानी बातें न दुहराते रहो। वह समझते हैं कि हमारी
बहुत सी बातों के सबब से हमारी सुनी जाएगी। 8 उन
की मानिन्द न बनो, क्यूँकि तुम्हारा बाप पहले से
तुम्हारी ज़रूरियात से वाक़िफ़ है, 9 बल्कि यूँ दुआ
किया करो,

ऐ हमारे आसमानी बाप,
तेरा नाम मुक़द्दस माना जाए।
10 तेरी बादशाही आए।
तेरी मर्ज़ी जिस तरह आसमान में पूरी होती है ज़मीन
पर भी पूरी हो।
11 हमारी रोज़ की रोटी आज हमें दे।
12 हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर
जिस तरह हम ने उन्हें मुआफ़ किया [o]
जिन्हों ने हमारा गुनाह किया है।
13 और हमें आज़माइश में न पड़ने दे
बल्कि हमें इब्लीस से बचाए रख।

---

[o] लफ़्ज़ी तर्जुमा : हमारे क़र्ज़ हमें मुआफ़ कर जिस तरह हम ने अपने क़र्ज़दारों को मुआफ़ किया।

[क्यूँकि बादशाही, क़ुदरत और जलाल अबद तक
तेरे ही हैं।]

14 क्यूँकि जब तुम लोगों के गुनाह मुआफ़ करोगे
तो तुम्हारा आसमानी बाप भी तुम को मुआफ़ करेगा।
15 लेकिन अगर तुम उन्हें मुआफ़ न करो तो तुम्हारा
बाप भी तुम्हारे गुनाह मुआफ़ नहीं करेगा।

रोज़ा

16 रोज़ा रखते वक़्त रियाकारों की तरह मुँह
लटकाए न फिरो, क्यूँकि वह ऐसा रूप भरते हैं ताकि
लोगों को मालूम हो जाए कि वह रोज़ा से हैं। मैं तुम
को सच बताता हूँ, जितना अज्र उन्हें मिलना था उन्हें
मिल चुका है। 17 ऐसा मत करना बल्कि रोज़े के वक़्त
अपने बालों में तेल डाल और अपना मुँह धो। 18 फिर
लोगों को मालूम नहीं होगा कि तू रोज़ा से है बल्कि
सिर्फ़ तेरे बाप को जो पोशीदगी में है। और तेरा बाप
जो पोशीदा बातें देखता है तुझे इस का मुआवज़ा
देगा।

आसमान पर ख़ज़ाना

19 इस दुनिया में अपने लिए ख़ज़ाने जमा न करो,
जहाँ कीड़ा और ज़ंग उन्हें खा जाते और चोर नक़ब
लगा कर चुरा लेते हैं। 20 इस के बजाय अपने ख़ज़ाने
आसमान पर जमा करो जहाँ कीड़ा और ज़ंग उन्हें
तबाह नहीं कर सकते, न चोर नक़ब लगा कर चुरा
सकते हैं। 21 क्यूँकि जहाँ तेरा ख़ज़ाना है वहीं तेरा
दिल भी लगा रहेगा।

जिस्म की रौशनी

22 बदन का चराग़ आँख है। अगर तेरी आँख ठीक
हो तो फिर तेरा पूरा बदन रौशन होगा। 23 लेकिन
अगर तेरी आँख ख़राब हो तो तेरा पूरा बदन अंधेरा
ही अंधेरा होगा। और अगर तेरे अन्दर की रौशनी
तारीकी हो तो यह तारीकी कितनी शदीद होगी!

बेफ़िक्र होना

24 कोई भी दो मालिकों की ख़िदमत नहीं कर
सकता। या तो वह एक से नफ़रत करके दूसरे से
मुहब्बत रखेगा या एक से लिपट कर दूसरे को हक़ीर
जानेगा। तुम एक ही वक़्त में अल्लाह और दौलत की
ख़िदमत नहीं कर सकते।

25 इस लिए मैं तुम्हें बताता हूँ, अपनी ज़िन्दगी की
ज़रूरियात पूरी करने के लिए परेशान न रहो कि हाय,
मैं क्या खाऊँ और क्या पियूँ। और जिस्म के लिए
फ़िक्रमन्द न रहो कि हाय, मैं क्या पहनूँ। क्या ज़िन्दगी
खाने-पीने से अहम नहीं है? और क्या जिस्म पोशाक
से ज़्यादा अहमियत नहीं रखता? 26 परिन्दों पर ग़ौर
करो। न वह बीज बोते, न फ़सलें काट कर उन्हें
गोदाम में जमा करते हैं। तुम्हारा आसमानी बाप ख़ुद
उन्हें खाना खिलाता है। क्या तुम्हारी उन की निस्बत
ज़्यादा क़दर-ओ-क़ीमत नहीं है? 27 क्या तुम में से
कोई फ़िक्र करते करते अपनी ज़िन्दगी में एक लम्हे
का भी इज़ाफ़ा कर सकता है?

28 और तुम अपने कपड़ों के लिए क्यूँ फ़िक्रमन्द
होते हो? ग़ौर करो कि सोसन के फूल किस तरह
उगते हैं। न वह मेहनत करते, न कातते हैं। 29 लेकिन
मैं तुम्हें बताता हूँ कि सुलैमान बादशाह अपनी पूरी
शान-ओ-शौकत के बावुजूद ऐसे शानदार कपड़ों से
मुलब्बस नहीं था जैसे उन में से एक। 30 अगर अल्लाह
उस घास को जो आज मैदान में है और कल आग
में झोंकी जाएगी ऐसा शानदार लिबास पहनाता है तो
ऐ कमएतिक़ादो, वह तुम को पहनाने के लिए क्या
कुछ नहीं करेगा?

31 चुनाँचे परेशानी के आलम में फ़िक्र करते करते
यह न कहते रहो, 'हम क्या खाएँ? हम क्या पिएँ? हम
क्या पहनें?' 32 क्यूँकि जो ईमान नहीं रखते वही इन
तमाम चीज़ों के पीछे भागते रहते हैं जबकि तुम्हारे
आसमानी बाप को पहले से मालूम है कि तुम को
इन तमाम चीज़ों की ज़रूरत है। 33 पहले अल्लाह की
बादशाही और उस की रास्तबाज़ी की तलाश में रहो।

फिर यह तमाम चीज़ें भी तुम को मिल जाएँगी। 34 इस
लिए कल के बारे में फ़िक्र करते करते परेशान न
हो क्यूँकि कल का दिन अपने लिए आप फ़िक्र कर
लेगा। हर दिन की अपनी मुसीबतें काफ़ी हैं।

औरों का मुन्सिफ़ बनना

7 1 दूसरों की अदालत मत करना, वर्ना तुम्हारी
अदालत भी की जाएगी। 2 क्यूँकि जितनी सख़्ती
से तुम दूसरों का फ़ैसला करते हो उतनी सख़्ती से
तुम्हारा भी फ़ैसला किया जाएगा। और जिस पैमाने
से तुम नापते हो उसी पैमाने से तुम भी नापे जाओगे।
3 तू क्यूँ ग़ौर से अपने भाई की आँख में पड़े तिनके
पर नज़र करता है जबकि तुझे वह शहतीर नज़र नहीं
आता जो तेरी अपनी आँख में है? 4 तू क्यूँकर अपने
भाई से कह सकता है, 'ठहरो, मुझे तुम्हारी आँख
में पड़ा तिनका निकालने दो,' जबकि तेरी अपनी
आँख में शहतीर है। 5 रियाकार! पहले अपनी आँख
के शहतीर को निकाल। तब ही तुझे भाई का तिनका
साफ़ नज़र आएगा और तू उसे अच्छी तरह से देख
कर निकाल सकेगा।

6 कुत्तों को मुक़द्दस ख़ुराक मत खिलाना और
सूअरों के आगे अपने मोती न फैंकना। ऐसा न हो
कि वह उन्हें पाँओ तले रौंदें और मुड़ कर तुम को
फाड़ डालें।

माँगते रहना

7 माँगते रहो तो तुम को दिया जाएगा। ढूँडते रहो तो
तुम को मिल जाएगा। खटखटाते रहो तो तुम्हारे लिए
दरवाज़ा खोल दिया जाएगा। 8 क्यूँकि जो भी माँगता
है वह पाता है, जो ढूँडता है उसे मिलता है, और
जो खटखटाता है उस के लिए दरवाज़ा खोल दिया
जाता है। 9 तुम में से कौन अपने बेटे को पत्थर देगा
अगर वह रोटी माँगे? 10 या कौन उसे साँप देगा अगर
वह मछली माँगे? कोई नहीं! 11 जब तुम बुरे होने के
बावुजूद इतने समझदार हो कि अपने बच्चों को अच्छी
चीज़ें दे सकते हो तो फिर कितनी ज़्यादा यक़ीनी बात
है कि तुम्हारा आसमानी बाप माँगने वालों को अच्छी
चीज़ें देगा।

12 हर बात में दूसरों के साथ वही सुलूक करो
जो तुम चाहते हो कि वह तुम्हारे साथ करें। क्यूँकि
यही शरीअत और नबियों की तालीमात का लुब्ब-ए-
लुबाब है।

तंग दरवाज़ा

13 तंग दरवाज़े से दाख़िल हो, क्यूँकि हलाकत की
तरफ़ ले जाने वाला रास्ता कुशादा और उस का
दरवाज़ा चौड़ा है। बहुत से लोग उस में दाख़िल हो
जाते हैं। 14 लेकिन ज़िन्दगी की तरफ़ ले जाने वाला
रास्ता तंग है और उस का दरवाज़ा छोटा। कम ही
लोग उसे पाते हैं।

हर दरख़्त का अपना फल होता है

15 झूटे नबियों से ख़बरदार रहो! गो वह भेड़ों का
भेस बदल कर तुम्हारे पास आते हैं, लेकिन अन्दर
से वह ग़ारतगर भेड़िए होते हैं। 16 उन का फल देख
कर तुम उन्हें पहचान लोगे। क्या ख़ारदार झाड़ियों से
अंगूर तोड़े जाते हैं या ऊँटकटारों से अन्जीर? हरगिज़
नहीं। 17 इसी तरह अच्छा दरख़्त अच्छा फल लाता है
और ख़राब दरख़्त ख़राब फल। 18 न अच्छा दरख़्त
ख़राब फल ला सकता है, न ख़राब दरख़्त अच्छा
फल। 19 जो भी दरख़्त अच्छा फल नहीं लाता उसे
काट कर आग में झोंका जाता है। 20 यूँ तुम उन का
फल देख कर उन्हें पहचान लोगे।

सिर्फ़ असल पैरोकार दाख़िल होंगे

21 हर एक जो मुझे 'ख़ुदावन्द, ख़ुदावन्द' कह कर
पुकारता है आसमान की बादशाही में दाख़िल न
होगा। सिर्फ़ वही दाख़िल होगा जो मेरे आसमानी
बाप की मर्ज़ी पर अमल करता है। 22 अदालत के दिन
बहुत से लोग मुझ से कहेंगे, 'ऐ ख़ुदावन्द, ख़ुदावन्द!
क्या हम ने तेरे ही नाम में नबुव्वत नहीं की, तेरे
ही नाम से बदरुहें नहीं निकालीं, तेरे ही नाम से

मोजिज़े नहीं किए?' 23 उस वक़्त मैं उन से साफ़ साफ़
कह दूँगा, 'मेरी कभी तुम से जान पहचान न थी। ऐ
बदकारो! मेरे सामने से चले जाओ।'

दो क़िस्म के मकान

24 लिहाज़ा जो भी मेरी यह बातें सुन कर उन
पर अमल करता है वह उस समझदार आदमी की
मानिन्द है जिस ने अपने मकान की बुन्याद चटान पर
रखी। 25 बारिश होने लगी, सैलाब आया और आँधी
मकान को झंझोड़ने लगी। लेकिन वह न गिरा, क्यूँकि
उस की बुन्याद चटान पर रखी गई थी।
26 लेकिन जो भी मेरी यह बातें सुन कर उन पर
अमल नहीं करता वह उस अहमक़ की मानिन्द है
जिस ने अपना मकान सहीह बुन्याद डाले बग़ैर रेत
पर तामीर किया। 27 जब बारिश होने लगी, सैलाब
आया और आँधी मकान को झंझोड़ने लगी तो यह
मकान धड़ाम से गिर गया।"

ईसा का इख़तियार

28 जब ईसा ने यह बातें ख़त्म कर लीं तो लोग उस
की तालीम सुन कर हक्का-बक्का रह गए, 29 क्यूँकि वह
उन के उलमा की तरह नहीं बल्कि इख़तियार के साथ
सिखाता था।

कोढ़ से शिफ़ा

8 1 ईसा पहाड़ से उतरा तो बड़ी भीड़ उस के पीछे
चलने लगी। 2 फिर एक आदमी उस के पास
आया जो कोढ़ का मरीज़ था। मुँह के बल गिर कर
उस ने कहा, "ख़ुदावन्द, अगर आप चाहें तो मुझे
पाक-साफ़ कर सकते हैं।"
3 ईसा ने अपना हाथ बढ़ा कर उसे छुआ और कहा,
"मैं चाहता हूँ, पाक-साफ़ हो जा।" इस पर वह फ़ौरन
उस बीमारी से पाक-साफ़ हो गया। 4 ईसा ने उस
से कहा, "ख़बरदार! यह बात किसी को न बताना
बल्कि बैत-उल-मुक़द्दस में इमाम के पास जा ताकि
वह तेरा मुआइना करे। अपने साथ वह क़ुर्बानी ले जा
जिस का तक़ाज़ा मूसा की शरीअत उन से करती है
जिन्हें कोढ़ से शिफ़ा मिली है। यूँ अलानिया तस्दीक़
हो जाएगी कि तू वाक़ई पाक-साफ़ हो गया है।"

रोमी अफ़्सर के ग़ुलाम की शिफ़ा

5 जब ईसा कफ़र्नहूम में दाख़िल हुआ तो सौ
फ़ौजियों पर मुक़र्रर एक अफ़्सर उस के पास आ कर
उस की मिन्नत करने लगा, 6 "ख़ुदावन्द, मेरा ग़ुलाम
मफ़्लूज हालत में घर में पड़ा है, और उसे शदीद दर्द
हो रहा है।"
7 ईसा ने उस से कहा, "मैं आ कर उसे शिफ़ा दूँगा।"
8 अफ़्सर ने जवाब दिया, "नहीं ख़ुदावन्द, मैं इस
लाइक़ नहीं कि आप मेरे घर जाएँ। बस यहीं से हुक्म
करें तो मेरा ग़ुलाम शिफ़ा पा जाएगा। 9 क्यूँकि मुझे
ख़ुद आला अफ़्सरों के हुक्म पर चलना पड़ता है और
मेरे मातहत भी फ़ौजी हैं। एक को कहता हूँ, 'जा!'
तो वह जाता है और दूसरे को 'आ!' तो वह आता
है। इसी तरह मैं अपने नौकर को हुक्म देता हूँ, 'यह
कर' तो वह करता है।"
10 यह सुन कर ईसा निहायत हैरान हुआ। उस ने
मुड़ कर अपने पीछे आने वालों से कहा, "मैं तुम
को सच बताता हूँ, मैं ने इस्राईल में भी इस क़िस्म
का ईमान नहीं पाया। 11 मैं तुम्हें बताता हूँ, बहुत
से लोग मशरिक़ और मग़रिब से आ कर इब्राहीम,
इस्हाक़ और याक़ूब के साथ आसमान की बादशाही
की ज़ियाफ़त में शरीक होंगे। 12 लेकिन बादशाही के
असल वारिसों को निकाल कर अंधेरे में डाल दिया
जाएगा, उस जगह जहाँ लोग रोते और दाँत पीसते
रहेंगे।" 13 फिर ईसा अफ़्सर से मुख़ातिब हुआ, "जा,
तेरे साथ वैसा ही हो जैसा तेरा ईमान है।"
और अफ़्सर के ग़ुलाम को उसी घड़ी शिफ़ा मिल
गई।

बहुत से मरीज़ों की शिफ़ा

14 ईसा पतरस के घर में आया। वहाँ उस ने पतरस
की सास को बिस्तर पर पड़े देखा। उसे बुख़ार था।

15 उस ने उस का हाथ छू लिया तो बुख़ार उतर गया
और वह उठ कर उस की ख़िदमत करने लगी।
16 शाम हुई तो बदरूहों की गिरिफ़्त में पड़े बहुत से
लोगों को ईसा के पास लाया गया। उस ने बदरूहों
को हुक्म दे कर निकाल दिया और तमाम मरीज़ों को
शिफ़ा दी। 17 यूँ यसायाह नबी की यह पेशगोई पूरी
हुई कि "उस ने हमारी कमज़ोरियाँ ले लीं और हमारी
बीमारियाँ उठा लीं।"

पैरवी की सन्जीदगी

18 जब ईसा ने अपने गिर्द बड़ा हुजूम देखा तो उस ने
शागिर्दों को झील पार करने का हुक्म दिया। 19 रवाना
होने से पहले शरीअत का एक आलिम उस के पास
आ कर कहने लगा, "उस्ताद, जहाँ भी आप जाएंगे
मैं आप के पीछे चलता रहूँगा।"
20 ईसा ने जवाब दिया, "लोमड़ियाँ अपने भटों में
और परिन्दे अपने घोंसलों में आराम कर सकते हैं,
लेकिन इब्न-ए-आदम के पास सर रख कर आराम
करने की कोई जगह नहीं।"
21 किसी और शागिर्द ने उस से कहा, "ख़ुदावन्द,
मुझे पहले जा कर अपने बाप को दफ़न करने की
इजाज़त दें।"
22 लेकिन ईसा ने उसे बताया, "मेरे पीछे हो ले और
मुर्दों को अपने मुर्दे दफ़न करने दे।"

ईसा आँधी को थमा देता है

23 फिर वह कश्ती पर सवार हुआ और उस के पीछे
उस के शागिर्द भी। 24 अचानक झील पर सख़्त आँधी
चलने लगी और कश्ती लहरों में डूबने लगी। लेकिन
ईसा सो रहा था। 25 शागिर्द उस के पास गए और
उसे जगा कर कहने लगे, "ख़ुदावन्द, हमें बचा, हम
तबाह हो रहे हैं!"
26 उस ने जवाब दिया, "ऐ कमएतिक़ादो! घबराते
क्यूँ हो?" खड़े हो कर उस ने आँधी और मौजों को
डाँटा तो लहरें बिलकुल साकित हो गईं। 27 शागिर्द
हैरान हो कर कहने लगे, "यह किस क़िस्म का शख़्स
है? हवा और झील भी उस का हुक्म मानती हैं।"

दो बदरुह-गिरिफ़्ता आदमियों की शिफ़ा

28 वह झील के पार गदरीनियों के इलाक़े में पहुँचे
तो बदरुह-गिरिफ़्ता दो आदमी क़ब्रों में से निकल कर
ईसा को मिले। वह इतने ख़तरनाक थे कि वहाँ से
कोई गुज़र नहीं सकता था। 29 चीख़ें मार मार कर
उन्हों ने कहा, "अल्लाह के फ़र्ज़न्द, हमारा आप के
साथ क्या वास्ता? क्या आप हमें मुक़र्ररा वक़्त से
पहले अज़ाब में डालने आए हैं?"
30 कुछ फ़ासिले पर सूअरों का बड़ा ग़ोल चर रहा
था। 31 बदरूहों ने ईसा से इल्तिजा की, "अगर आप
हमें निकालते हैं तो सूअरों के उस ग़ोल में भेज दें।"
32 ईसा ने उन्हें हुक्म दिया, "जाओ।" बदरुहें
निकल कर सूअरों में जा घुसीं। इस पर पूरे का पूरा
ग़ोल भाग भाग कर पहाड़ी की ढलान पर से उतरा
और झील में झपट कर डूब मरा। 33 यह देख कर
सूअरों के गल्लाबान भाग गए। शहर में जा कर उन्हों ने
लोगों को सब कुछ सुनाया और वह भी जो बदरुह-
गिरिफ़्ता आदमियों के साथ हुआ था। 34 फिर पूरा
शहर निकल कर ईसा को मिलने आया। उसे देख
कर उन्हों ने उस की मिन्नत की कि हमारे इलाक़े से
चले जाएँ।

मफ़्लूज आदमी की शिफ़ा

9 1 कश्ती में बैठ कर ईसा ने झील को पार किया
और अपने शहर पहुँच गया। 2 वहाँ एक मफ़्लूज
आदमी को चारपाई पर डाल कर उस के पास लाया
गया। उन का ईमान देख कर ईसा ने कहा, "बेटा,
हौसला रख। तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए गए हैं।"
3 यह सुन कर शरीअत के कुछ उलमा दिल में कहने
लगे, "यह कुफ़्र बक रहा है!"
4 ईसा ने जान लिया कि यह क्या सोच रहे हैं, इस
लिए उस ने उन से पूछा, 5 "तुम दिल में बुरी बातें
क्यूँ सोच रहे हो? क्या मफ़्लूज से यह कहना ज़्यादा

आसान है कि 'तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए गए हैं' या
यह कि 'उठ और चल फिर?' 6 लेकिन मैं तुम को
दिखाता हूँ कि इब्न-ए-आदम को वाक़ई दुनिया में
गुनाह मुआफ़ करने का इख़तियार है।" यह कह कर
वह मफ़्लूज से मुख़ातिब हुआ, "उठ, अपनी चारपाई
उठा कर घर चला जा।"
7 वह आदमी खड़ा हुआ और अपने घर चला गया।
8 यह देख कर हुजूम पर अल्लाह का ख़ौफ़ तारी हो
गया और वह अल्लाह की तम्जीद करने लगे कि उस
ने इन्सान को इस क़िस्म का इख़तियार दिया है।

मत्ती की बुलाहट

9 आगे जा कर ईसा ने एक आदमी को देखा जो
टैक्स लेने वालों की चौकी पर बैठा था। उस का
नाम मत्ती था। ईसा ने उस से कहा, "मेरे पीछे हो
ले।" और मत्ती उठ कर उस के पीछे हो लिया।
10 बाद में ईसा मत्ती के घर में खाना खा रहा था।
बहुत से टैक्स लेने वाले और गुनाहगार भी आ कर
ईसा और उस के शागिर्दों के साथ खाने में शरीक हुए।
11 यह देख कर फ़रीसियों ने उस के शागिर्दों से पूछा,
"आप का उस्ताद टैक्स लेने वालों और गुनाहगारों
के साथ क्यूँ खाता है?"
12 यह सुन कर ईसा ने कहा, "सेहतमन्दों को
डाक्टर की ज़रूरत नहीं होती बल्कि मरीज़ों को।
13 पहले जाओ और कलाम-ए-मुक़द्दस की इस बात
का मतलब जान लो कि 'मैं क़ुर्बानी नहीं बल्कि
रहम पसन्द करता हूँ।' क्यूँकि मैं रास्तबाज़ों को नहीं
बल्कि गुनाहगारों को बुलाने आया हूँ।"

शागिर्द रोज़ा क्यूँ नहीं रखते?

14 फिर यहया के शागिर्द उस के पास आए और
पूछा, "आप के शागिर्द रोज़ा क्यूँ नहीं रखते जबकि
हम और फ़रीसी रोज़ा रखते हैं?"
15 ईसा ने जवाब दिया, "शादी के मेहमान किस
तरह मातम कर सकते हैं जब तक दूल्हा उन के
दरमियान है? लेकिन एक दिन आएगा जब दूल्हा उन
से ले लिया जाएगा। उस वक़्त वह ज़रूर रोज़ा रखेंगे।
16 कोई भी नए कपड़े का टुकड़ा किसी पुराने
लिबास में नहीं लगाता। अगर वह ऐसा करे तो नया
टुकड़ा बाद में सुकड़ कर पुराने लिबास से अलग हो
जाएगा। यूँ पुराने लिबास की फटी हुई जगह पहले
की निस्बत ज़्यादा ख़राब हो जाएगी। 17 इसी तरह
अंगूर का ताज़ा रस पुरानी और बेलचक मश्कों में
नहीं डाला जाता। अगर ऐसा किया जाए तो पुरानी
मश्कें पैदा होने वाली गैस के बाइस फट जाएँगी।
नतीजे में मै और मश्कें दोनों ज़ाए हो जाएँगी। इस
लिए अंगूर का ताज़ा रस नई मश्कों में डाला जाता
है जो लचकदार होती हैं। यूँ रस और मश्कें दोनों ही
महफ़ूज़ रहते हैं।"

याईर की बेटी और बीमार औरत

18 ईसा अभी यह बयान कर रहा था कि एक यहूदी
राहनुमा ने गिर कर उसे सिज्दा किया और कहा,
"मेरी बेटी अभी अभी मरी है। लेकिन आ कर अपना
हाथ उस पर रखें तो वह दुबारा ज़िन्दा हो जाएगी।"
19 ईसा उठ कर अपने शागिर्दों समेत उस के साथ
हो लिया।
20 चलते चलते एक औरत ने पीछे से आ कर ईसा
के लिबास का किनारा छुआ। यह औरत बारह साल
से ख़ून बहने की मरीज़ा थी 21 और वह सोच रही
थी, "अगर मैं सिर्फ़ उस के लिबास को ही छू लूँ तो
शिफ़ा पा लूँगी।"
22 ईसा ने मुड़ कर उसे देखा और कहा, "बेटी,
हौसला रख! तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया है।" और
औरत को उसी वक़्त शिफ़ा मिल गई।
23 फिर ईसा राहनुमा के घर में दाख़िल हुआ।
बाँसरी बजाने वाले और बहुत से लोग पहुँच चुके
थे और बहुत शोर-शराबा था। यह देख कर 24 ईसा
ने कहा, "निकल जाओ! लड़की मर नहीं गई बल्कि
सो रही है।" लोग हंस कर उस का मज़ाक़ उड़ाने
लगे। 25 लेकिन जब सब को निकाल दिया गया तो

वह अन्दर गया। उस ने लड़की का हाथ पकड़ा तो
वह उठ खड़ी हुई। 26 इस मोजिज़े की ख़बर उस पूरे
इलाक़े में फैल गई।

दो अंधों की शिफ़ा

27 जब ईसा वहाँ से रवाना हुआ तो दो अंधे उस के
पीछे चल कर चिल्लाने लगे, "इब्न-ए-दाऊद, हम पर
रहम करें।"
28 जब ईसा किसी के घर में दाख़िल हुआ तो वह
उस के पास आए। ईसा ने उन से पूछा, "क्या तुम्हारा
ईमान है कि मैं यह कर सकता हूँ?"
उन्हों ने जवाब दिया, "जी, ख़ुदावन्द।"
29 फिर उस ने उन की आँखें छू कर कहा, "तुम्हारे
साथ तुम्हारे ईमान के मुताबिक़ हो जाए।" 30 उन की
आँखें बहाल हो गईं और ईसा ने सख़्ती से उन्हें कहा,
"ख़बरदार, किसी को भी इस का पता न चले!"
31 लेकिन वह निकल कर पूरे इलाक़े में उस की
ख़बर फैलाने लगे।

गूँगे आदमी की शिफ़ा

32 जब वह निकल रहे थे तो एक गूँगा आदमी ईसा
के पास लाया गया जो किसी बदरुह के क़ब्ज़े में
था। 33 जब बदरुह को निकाला गया तो गूँगा बोलने
लगा। हुजूम हैरान रह गया। उन्हों ने कहा, "ऐसा
काम इस्राईल में कभी नहीं देखा गया।"
34 लेकिन फ़रीसियों ने कहा, "वह बदरूहों के
सरदार ही की मदद से बदरूहों को निकालता है।"

ईसा को लोगों पर तरस आता है

35 और ईसा सफ़र करते करते तमाम शहरों और
गाँव में से गुज़रा। जहाँ भी वह पहुँचा वहाँ उस
ने उन के इबादतख़ानों में तालीम दी, बादशाही
की ख़ुशख़बरी सुनाई और हर क़िस्म के मर्ज़ और
अलालत से शिफ़ा दी। 36 हुजूम को देख कर उसे
उन पर बड़ा तरस आया, क्यूँकि वह पिसे हुए और
बेबस थे, ऐसी भेड़ों की तरह जिन का चरवाहा न हो।
37 उस ने अपने शागिर्दों से कहा, "फ़सल बहुत है,
लेकिन मज़दूर कम। 38 इस लिए फ़सल के मालिक
से गुज़ारिश करो कि वह अपनी फ़सल काटने के
लिए मज़ीद मज़दूर भेज दे।"

बारह रसूलों को इख़तियार दिया जाता है

10 1 फिर ईसा ने अपने बारह रसूलों को बुला
कर उन्हें नापाक रूहें निकालने और हर
क़िस्म के मर्ज़ और अलालत से शिफ़ा देने का
इख़तियार दिया। 2 बारह रसूलों के नाम यह हैं :
पहला शमाऊन जो पतरस भी कहलाता है, फिर उस
का भाई अन्द्रियास, याक़ूब बिन ज़ब्दी और उस
का भाई यूहन्ना, 3 फ़िलिप्पुस, बरतुल्माई, तोमा, मत्ती
(जो टैक्स लेने वाला था), याक़ूब बिन हल्फ़ई, तद्दी,
4 शमाऊन मुजाहिद और यहूदा इस्करियोती जिस ने
बाद में उसे दुश्मनों के हवाले कर दिया।

रसूलों को तब्लीग़ के लिए भेजा जाता है

5 इन बारह मर्दों को ईसा ने भेज दिया। साथ
साथ उस ने उन्हें हिदायत दी, "ग़ैरयहूदी आबादियों
में न जाना, न किसी सामरी शहर में, 6 बल्कि
सिर्फ़ इस्राईल की खोई हुई भेड़ों के पास। 7 और
चलते चलते मुनादी करते जाओ कि 'आसमान की
बादशाही क़रीब आ चुकी है।' 8 बीमारों को शिफ़ा
दो, मुर्दों को ज़िन्दा करो, कोढ़ियों को पाक-साफ़
करो, बदरूहों को निकालो। तुम को मुफ़्त में मिला
है, मुफ़्त में ही बाँटना। 9 अपने कमरबन्द में पैसे न
रखना - न सोने, न चाँदी और न ताँबे के सिक्के। 10 न
सफ़र के लिए बैग हो, न एक से ज़्यादा सूट, न जूते,
न लाठी। क्यूँकि मज़दूर अपनी रोज़ी का हक़दार है।
11 जिस शहर या गाँव में दाख़िल होते हो उस में
किसी लाइक़ शख़्स का पता करो और रवाना होते
वक़्त तक उसी के घर में ठहरो। 12 घर में दाख़िल
होते वक़्त उसे दुआ-ए-ख़ैर दो। 13 अगर वह घर इस
लाइक़ होगा तो जो सलामती तुम ने उस के लिए माँगी
है वह उस पर आ कर ठहरी रहेगी। अगर नहीं तो

यह सलामती तुम्हारे पास लौट आएगी। 14 अगर कोई
घराना या शहर तुम को क़बूल न करे, न तुम्हारी सुने
तो रवाना होते वक़्त उस जगह की गर्द अपने पाँओ
से झाड़ देना। 15 मैं तुम्हें सच बताता हूँ, अदालत
के दिन उस शहर की निस्बत सदूम और अमूरा के
इलाक़े का हाल ज़्यादा क़ाबिल-ए-बर्दाश्त होगा।

आने वाली ईज़ारसानियाँ

16 देखो, मैं तुम भेड़ों को भेड़ियों में भेज रहा हूँ।
इस लिए साँपों की तरह होश्यार और कबूतरों की
तरह मासूम बनो। 17 लोगों से ख़बरदार रहो, क्यूँकि
वह तुम को मक़ामी अदालतों के हवाले करके अपने
इबादतख़ानों में कोड़े लगवाएँगे। 18 मेरी ख़ातिर तुम्हें
हुक्मरानों और बादशाहों के सामने पेश किया जाएगा
और यूँ तुम को उन्हें और ग़ैरयहूदियों को गवाही देने
का मौक़ा मिलेगा। 19 जब वह तुम्हें गिरिफ़्तार करेंगे
तो यह सोचते सोचते परेशान न हो जाना कि मैं क्या
कहूँ या किस तरह बात करूँ। उस वक़्त तुम को
बताया जाएगा कि क्या कहना है, 20 क्यूँकि तुम ख़ुद
बात नहीं करोगे बल्कि तुम्हारे बाप का रूह तुम्हारी
मारिफ़त बोलेगा।

21 भाई अपने भाई को और बाप अपने बच्चे को मौत
के हवाले करेगा। बच्चे अपने वालिदैन के ख़िलाफ़
खड़े हो कर उन्हें क़त्ल करवाएँगे। 22 सब तुम से
नफ़रत करेंगे, इस लिए कि तुम मेरे पैरोकार हो।
लेकिन जो आख़िर तक क़ाइम रहेगा उसे नजात
मिलेगी। 23 जब वह एक शहर में तुम्हें सताएँगे तो
किसी दूसरे शहर को हिज्रत कर जाना। मैं तुम को
सच बताता हूँ कि इब्न-ए-आदम की आमद तक तुम
इस्राईल के तमाम शहरों तक नहीं पहुँच पाओगे।

24 शागिर्द अपने उस्ताद से बड़ा नहीं होता, न
ग़ुलाम अपने मालिक से। 25 शागिर्द को इस पर
इकतिफ़ा करना है कि वह अपने उस्ताद की मानिन्द
हो, और इसी तरह ग़ुलाम को कि वह अपने मालिक
की मानिन्द हो। घराने के सरपरस्त को अगर बदरूहों
का सरदार बाल-ज़बूल क़रार दिया गया है तो उस के
घर वालों को क्या कुछ न कहा जाएगा।

किस से डरना है?

26 उन से मत डरना, क्यूँकि जो कुछ अभी छुपा
हुआ है उसे आख़िर में ज़ाहिर किया जाएगा, और जो
कुछ भी इस वक़्त पोशीदा है उस का राज़ आख़िर
में खुल जाएगा। 27 जो कुछ मैं तुम्हें अंधेरे में सुना
रहा हूँ उसे रोज़-ए-रौशन में सुना देना। और जो कुछ
आहिस्ता आहिस्ता तुम्हारे कान में बताया गया है
उस का छतों से एलान करो। 28 उन से ख़ौफ़ मत
खाना जो तुम्हारी रूह को नहीं बल्कि सिर्फ़ तुम्हारे
जिस्म को क़त्ल कर सकते हैं। अल्लाह से डरो जो
रूह और जिस्म दोनों को जहन्नुम में डाल कर हलाक
कर सकता है। 29 क्या चिड़ियों का जोड़ा कम पैसों
में नहीं बिकता? ताहम उन में से एक भी तुम्हारे बाप
की इजाज़त के बग़ैर ज़मीन पर नहीं गिर सकती।
30 न सिर्फ़ यह बल्कि तुम्हारे सर के सब बाल भी
गिने हुए हैं। 31 लिहाज़ा मत डरो। तुम्हारी क़दर-ओ-
क़ीमत बहुत सी चिड़ियों से कहीं ज़्यादा है।

मसीह का इक़्रार या इन्कार करने का नतीजा

32 जो भी लोगों के सामने मेरा इक़्रार करे उस का
इक़्रार मैं ख़ुद भी अपने आसमानी बाप के सामने
करूँगा। 33 लेकिन जो भी लोगों के सामने मेरा इन्कार
करे उस का मैं भी अपने आसमानी बाप के सामने
इन्कार करूँगा।

ईसा सुलह-सलामती का बाइस नहीं

34 यह मत समझो कि मैं दुनिया में सुलह-सलामती
क़ाइम करने आया हूँ। मैं सुलह-सलामती नहीं बल्कि
तलवार चलवाने आया हूँ। 35 मैं बेटे को उस के बाप
के ख़िलाफ़ खड़ा करने आया हूँ, बेटी को उस की माँ
के ख़िलाफ़ और बहू को उस की सास के ख़िलाफ़।
36 इन्सान के दुश्मन उस के अपने घर वाले होंगे।

37 जो अपने बाप या माँ को मुझ से ज़्यादा प्यार
करे वह मेरे लाइक़ नहीं। जो अपने बेटे या बेटी को
मुझ से ज़्यादा प्यार करे वह मेरे लाइक़ नहीं। 38 जो
अपनी सलीब उठा कर मेरे पीछे न हो ले वह मेरे
लाइक़ नहीं। 39 जो भी अपनी जान को बचाए वह
उसे खो देगा, लेकिन जो अपनी जान को मेरी ख़ातिर
खो दे वह उसे पाएगा।

ईसा और उस के पैरोकारों को क़बूल करने का अज्र

40 जो तुम्हें क़बूल करे वह मुझे क़बूल करता है,
और जो मुझे क़बूल करता है वह उस को क़बूल
करता है जिस ने मुझे भेजा है। 41 जो किसी नबी को
क़बूल करे उसे नबी का सा अज्र मिलेगा। और जो
किसी रास्तबाज़ शख़्स को उस की रास्तबाज़ी के
सबब से क़बूल करे उसे रास्तबाज़ शख़्स का सा
अज्र मिलेगा। 42 मैं तुम को सच बताता हूँ कि जो इन
छोटों में से किसी एक को मेरा शागिर्द होने के बाइस
ठंडे पानी का गलास भी पिलाए उस का अज्र क़ाइम
रहेगा।"

यहया का ईसा से सवाल

11 1 अपने शागिर्दों को यह हिदायात देने के
बाद ईसा उन के शहरों में तालीम देने और
मुनादी करने के लिए रवाना हुआ।

2 यहया ने जो उस वक़्त जेल में था सुना कि ईसा
क्या क्या कर रहा है। इस पर उस ने अपने शागिर्दों
को उस के पास भेज दिया 3 ताकि वह उस से पूछें,
"क्या आप वही हैं जिसे आना है या हम किसी और
के इन्तिज़ार में रहें?"

4 ईसा ने जवाब दिया, "यहया के पास वापस जा
कर उसे सब कुछ बता देना जो तुम ने देखा और सुना
है। 5 'अंधे देखते, लंगड़े चलते फिरते हैं, कोढ़ियों
को पाक-साफ़ किया जाता है, बहरे सुनते हैं, मुर्दों
को ज़िन्दा किया जाता है और ग़रीबों को अल्लाह की
ख़ुशख़बरी सुनाई जाती है।' 6 मुबारक है वह जो मेरे
सबब से ठोकर खा कर बर्गश्ता नहीं होता।"

7 यहया के यह शागिर्द चले गए तो ईसा हुजूम से
यहया के बारे में बात करने लगा, "तुम रेगिस्तान
में क्या देखने गए थे? एक सरकंडा जो हवा के हर
झोंके से हिलता है? बेशक नहीं। 8 या क्या वहाँ जा
कर ऐसे आदमी की तवक़्क़ो कर रहे थे जो नफ़ीस
और मुलाइम लिबास पहने हुए है? नहीं, जो शानदार
कपड़े पहनते हैं वह शाही महलों में पाए जाते हैं।
9 तो फिर तुम क्या देखने गए थे? एक नबी को?
बिलकुल सहीह, बल्कि में तुम को बताता हूँ कि
वह नबी से भी बड़ा है। 10 उसी के बारे में कलाम-ए-
मुक़द्दस में लिखा है, 'देख, मैं अपने पैग़म्बर को तेरे
आगे आगे भेज देता हूँ जो तेरे सामने रास्ता तय्यार
करेगा।' 11 मैं तुम को सच बताता हूँ कि इस दुनिया
में पैदा होने वाला कोई भी शख़्स यहया से बड़ा नहीं
है। तो भी आसमान की बादशाही में दाख़िल होने
वाला सब से छोटा शख़्स उस से बड़ा है। 12 यहया
बपतिस्मा देने वाले की ख़िदमत से ले कर आज तक
आसमान की बादशाही पर ज़बरदस्ती की जा रही
है, और ज़बरदस्त उसे छीन रहे हैं। 13 क्यूँकि तमाम
नबी और तौरेत ने यहया के दौर तक इस के बारे में
पेशगोई की है। 14 और अगर तुम यह मानने के लिए
तय्यार हो तो मानो कि वह इल्यास नबी है जिसे आना
था। 15 जो सुन सकता है वह सुन ले!

16 मैं इस नस्ल को किस से तश्बीह दूँ? वह उन
बच्चों की मानिन्द हैं जो बाज़ार में बैठे खेल रहे हैं। उन
में से कुछ ऊँची आवाज़ से दूसरे बच्चों से शिकायत
कर रहे हैं, 17 'हम ने बाँसरी बजाई तो तुम न नाचे।
फिर हम ने नोहा के गीत गाए, लेकिन तुम ने छाती
पीट कर मातम न किया।' 18 देखो, यहया आया और
न खाया, न पिया। यह देख कर लोग कहते हैं कि उस
में बदरुह है। 19 फिर इब्न-ए-आदम खाता और पीता
हुआ आया। अब कहते हैं, 'देखो यह कैसा पेटू और
शराबी है। और वह टैक्स लेने वालों और गुनाहगारों
का दोस्त भी है।' लेकिन हिक्मत अपने आमाल से
ही सहीह साबित हुई है।"

तौबा न करने वाले शहरों पर अफ़्सोस

20 फिर ईसा उन शहरों को डाँटने लगा जिन में उस
ने ज़्यादा मोजिज़े किए थे, क्यूँकि उन्हों ने तौबा नहीं
की थी। 21 "ऐ ख़ुराज़ीन, तुझ पर अफ़्सोस! बैत-
सैदा, तुझ पर अफ़्सोस! अगर सूर और सैदा में वह
मोजिज़े किए गए होते जो तुम में हुए तो वहाँ के
लोग कब के टाट ओढ़ कर और सर पर राख डाल
कर तौबा कर चुके होते। 22 जी हाँ, अदालत के
दिन तुम्हारी निस्बत सूर और सैदा का हाल ज़्यादा
क़ाबिल-ए-बर्दाश्त होगा। 23 और ऐ कफ़र्नहूम, क्या
तुझे आसमान तक सरफ़राज़ किया जाएगा? हरगिज़
नहीं, बल्कि तू उतरता उतरता पाताल तक पहुँचेगा।
अगर सदूम में वह मोजिज़े किए गए होते जो तुझ में
हुए हैं तो वह आज तक क़ाइम रहता। 24 हाँ, अदालत
के दिन तेरी निस्बत सदूम का हाल ज़्यादा क़ाबिल-
ए-बर्दाश्त होगा।"

बाप की तम्जीद

25 उस वक़्त ईसा ने कहा, "ऐ बाप, आसमान-ओ-
ज़मीन के मालिक! मैं तेरी तम्जीद करता हूँ कि तू ने
यह बातें दानाओं और अक़लमन्दों से छुपा कर छोटे
बच्चों पर ज़ाहिर कर दी हैं। 26 हाँ मेरे बाप, यही तुझे
पसन्द आया।

27 मेरे बाप ने सब कुछ मेरे सपुर्द कर दिया है। कोई
भी फ़र्ज़न्द को नहीं जानता सिवाए बाप के। और
कोई बाप को नहीं जानता सिवाए फ़र्ज़न्द के और
उन लोगों के जिन पर फ़र्ज़न्द बाप को ज़ाहिर करना
चाहता है।

28 ऐ थकेमान्दे और बोझ तले दबे हुए लोगो, सब
मेरे पास आओ! मैं तुम को आराम दूँगा। 29 मेरा जूआ
अपने ऊपर उठा कर मुझ से सीखो, क्यूँकि मैं हलीम
और नर्मदिल हूँ। यूँ करने से तुम्हारी जानें आराम
पाएँगी, 30 क्यूँकि मेरा जूआ मुलाइम और मेरा बोझ
हल्का है।"

सबत के बारे में सवाल

12 1 उन दिनों में ईसा अनाज के खेतों में से
गुज़र रहा था। सबत का दिन था। चलते
चलते उस के शागिर्दों को भूक लगी और वह अनाज
की बालें तोड़ तोड़ कर खाने लगे। 2 यह देख कर
फ़रीसियों ने ईसा से शिकायत की, "देखो, आप के
शागिर्द ऐसा काम कर रहे हैं जो सबत के दिन मना
है।"

3 ईसा ने जवाब दिया, "क्या तुम ने नहीं पढ़ा कि
दाऊद ने क्या किया जब उसे और उस के साथियों को
भूक लगी? 4 वह अल्लाह के घर में दाख़िल हुआ और
अपने साथियों समेत रब के लिए मख़्सूसशुदा रोटियाँ
खाईं, अगरचे उन्हें इस की इजाज़त नहीं थी बल्कि
सिर्फ़ इमामों को? 5 या क्या तुम ने तौरेत में नहीं
पढ़ा कि गो इमाम सबत के दिन बैत-उल-मुक़द्दस
में ख़िदमत करते हुए आराम करने का हुक्म तोड़ते
हैं तो भी वह बेइल्ज़ाम ठहरते हैं? 6 मैं तुम्हें बताता
हूँ कि यहाँ वह है जो बैत-उल-मुक़द्दस से अफ़्ज़ल
है। 7 कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है, 'मैं क़ुर्बानी नहीं
बल्कि रहम पसन्द करता हूँ।' अगर तुम इस का
मतलब समझते तो बेक़ुसूरों को मुजरिम न ठहराते।
8 क्यूँकि इब्न-ए-आदम सबत का मालिक है।"

सूखे हाथ वाले आदमी की शिफ़ा

9 वहाँ से चलते चलते वह उन के इबादतख़ाने में
दाख़िल हुआ। 10 उस में एक आदमी था जिस का
हाथ सूखा हुआ था। लोग ईसा पर इल्ज़ाम लगाने
का कोई बहाना तलाश कर रहे थे, इस लिए उन्हों ने
उस से पूछा, "क्या शरीअत सबत के दिन शिफ़ा देने
की इजाज़त देती है?"

11 ईसा ने जवाब दिया, "अगर तुम में से किसी
की भेड़ सबत के दिन गढ़े में गिर जाए तो क्या
उसे नहीं निकालोगे? 12 और भेड़ की निस्बत इन्सान
की कितनी ज़्यादा क़दर-ओ-क़ीमत है! ग़रज़ शरीअत
नेक काम करने की इजाज़त देती है।" 13 फिर उस ने

उस आदमी से जिस का हाथ सूखा हुआ था कहा,
“अपना हाथ आगे बढ़ा।”
उस ने ऐसा किया तो उस का हाथ दूसरे हाथ की
मानिन्द तन्दुरुस्त हो गया। 14 इस पर फ़रीसी निकल
कर आपस में ईसा को क़त्ल करने की साज़िशें करने
लगे।

अल्लाह का चुना हुआ ख़ादिम

15 जब ईसा ने यह जान लिया तो वह वहाँ से चला
गया। बहुत से लोग उस के पीछे चल रहे थे। उस
ने उन के तमाम मरीज़ों को शिफ़ा दे कर 16 उन्हें
ताकीद की, “किसी को मेरे बारे में न बताओ।” 17 यूँ
यसायाह नबी की यह पेशगोई पूरी हुई,

18 ‘देखो, मेरा ख़ादिम जिसे मैं ने चुन लिया है,
मेरा प्यारा जो मुझे पसन्द है।
मैं अपने रूह को उस पर डालूँगा,
और वह अक़्वाम में इन्साफ़ का एलान करेगा।
19 वह न तो झगड़ेगा, न चिल्लाएगा।
गलियों में उस की आवाज़ सुनाई नहीं देगी।
20 न वह कुचले हुए सरकंडे को तोड़ेगा,
न बुझती हुई बत्ती को बुझाएगा
जब तक वह इन्साफ़ को ग़ल्बा न बख़्शे।
21 उसी के नाम से क़ौमें उम्मीद रखेंगी।’

ईसा और बदरूहों का सरदार

22 फिर एक आदमी को ईसा के पास लाया गया
जो बदरुह की गिरिफ़्त में था। वह अंधा और गूँगा
था। ईसा ने उसे शिफ़ा दी तो गूँगा बोलने और देखने
लगा। 23 हुजूम के तमाम लोग हक्का-बक्का रह गए और
पूछने लगे, “क्या यह इब्न-ए-दाऊद नहीं?”
24 लेकिन जब फ़रीसियों ने यह सुना तो उन्हों ने
कहा, “यह सिर्फ़ बदरूहों के सरदार बाल-ज़बूल की
मारिफ़त बदरूहों को निकालता है।”
25 उन के यह ख़यालात जान कर ईसा ने उन से
कहा, “जिस बादशाही में फूट पड़ जाए वह तबाह
हो जाएगी। और जिस शहर या घराने की ऐसी हालत
हो वह भी क़ाइम नहीं रह सकता। 26 इसी तरह अगर
इब्लीस अपने आप को निकाले तो फिर उस में फूट
पड़ गई है। इस सूरत में उस की बादशाही किस
तरह क़ाइम रह सकती है? 27 और अगर मैं बदरूहों
को बाल-ज़बूल की मदद से निकालता हूँ तो तुम्हारे
बेटे उन्हें किस के ज़रीए निकालते हैं? चुनाँचे वही
इस बात में तुम्हारे मुन्सिफ़ होंगे। 28 लेकिन अगर मैं
अल्लाह के रूह की मारिफ़त बदरूहों को निकाल देता
हूँ तो फिर अल्लाह की बादशाही तुम्हारे पास पहुँच
चुकी है।
29 किसी ज़ोरावर आदमी के घर में घुस कर उस
का माल-ओ-अस्बाब लूटना किस तरह मुमकिन है
जब तक कि उसे बांधा न जाए? फिर ही उसे लूटा
जा सकता है।
30 जो मेरे साथ नहीं वह मेरे ख़िलाफ़ है और जो मेरे
साथ जमा नहीं करता वह बिखेरता है। 31 ग़रज़ मैं
तुम को बताता हूँ कि इन्सान का हर गुनाह और कुफ़्र
मुआफ़ किया जा सकेगा सिवाए रूह-उल-क़ुद्स के
ख़िलाफ़ कुफ़्र बकने के। इसे मुआफ़ नहीं किया
जाएगा। 32 जो इब्न-ए-आदम के ख़िलाफ़ बात करे
उसे मुआफ़ किया जा सकेगा, लेकिन जो रूह-उल-
क़ुद्स के ख़िलाफ़ बात करे उसे न इस जहान में और
न आने वाले जहान में मुआफ़ किया जाएगा।

दरख़्त उस के फल से पहचाना जाता है

33 अच्छे फल के लिए अच्छे दरख़्त की ज़रूरत
होती है। ख़राब दरख़्त से ख़राब फल मिलता है।
दरख़्त उस के फल से ही पहचाना जाता है। 34 ऐ साँप
के बच्चो! तुम जो बुरे हो किस तरह अच्छी बातें कर
सकते हो? क्यूँकि जिस चीज़ से दिल लबरेज़ होता
है वह छलक कर ज़बान पर आ जाती है। 35 अच्छा
शख़्स अपने दिल के अच्छे ख़ज़ाने से अच्छी चीज़ें
निकालता है जबकि बुरा शख़्स अपने बुरे ख़ज़ाने से
बुरी चीज़ें।
36 मैं तुम को बताता हूँ कि क़ियामत के दिन लोगों
को बेपर्वाई से की गई हर बात का हिसाब देना

पड़ेगा। 37 तुम्हारी अपनी बातों की बिना पर तुम को
रास्त या नारास्त ठहराया जाएगा।”

इलाही निशान का तक़ाज़ा

38 फिर शरीअत के कुछ उलमा और फ़रीसियों ने
ईसा से बात की, “उस्ताद, हम आप की तरफ़ से
इलाही निशान देखना चाहते हैं।”
39 उस ने जवाब दिया, “सिर्फ़ शरीर और ज़िनाकार
नस्ल इलाही निशान का तक़ाज़ा करती है। लेकिन
उसे कोई भी इलाही निशान पेश नहीं किया जाएगा
सिवाए यूनुस नबी के निशान के। 40 क्यूँकि जिस तरह
यूनुस तीन दिन और तीन रात मछली के पेट में रहा
उसी तरह इब्न-ए-आदम भी तीन दिन और तीन रात
ज़मीन की गोद में पड़ा रहेगा। 41 क़ियामत के दिन
नीनवा के बाशिन्दे इस नस्ल के साथ खड़े हो कर इसे
मुजरिम ठहराएँगे। क्यूँकि यूनुस के एलान पर उन्हों ने
तौबा की थी जबकि यहाँ वह है जो यूनुस से भी बड़ा
है। 42 उस दिन जुनूबी मुल्क सबा की मलिका भी इस
नस्ल के साथ खड़ी हो कर इसे मुजरिम क़रार देगी।
क्यूँकि वह दूरदराज़ मुल्क से सुलैमान की हिक्मत
सुनने के लिए आई थी जबकि यहाँ वह है जो सुलैमान
से भी बड़ा है।

बदरुह की वापसी

43 जब कोई बदरुह किसी शख़्स से निकलती है
तो वह वीरान इलाक़ों में से गुज़रती हुई आराम की
जगह तलाश करती है। लेकिन जब उसे कोई ऐसा
मक़ाम नहीं मिलता 44 तो वह कहती है, ‘मैं अपने
उस घर में वापस चली जाऊँगी जिस में से निकली
थी।’ वह वापस आ कर देखती है कि घर ख़ाली है
और किसी ने झाड़ू दे कर सब कुछ सलीक़े से रख
दिया है। 45 फिर वह जा कर सात और बदरुहें ढूँड
लाती है जो उस से बदतर होती हैं, और वह सब उस
शख़्स में घुस कर रहने लगती हैं। चुनाँचे अब उस
आदमी की हालत पहले की निस्बत ज़्यादा बुरी हो
जाती है। इस शरीर नस्ल का भी यही हाल होगा।”

ईसा की माँ और भाई

46 ईसा अभी हुजूम से बात कर ही रहा था कि उस
की माँ और भाई बाहर खड़े उस से बात करने की
कोशिश करने लगे। 47 किसी ने ईसा से कहा, “आप
की माँ और भाई बाहर खड़े हैं और आप से बात
करना चाहते हैं।”
48 ईसा ने पूछा, “कौन है मेरी माँ और कौन हैं
मेरे भाई?” 49 फिर अपने हाथ से शागिर्दों की तरफ़
इशारा करके उस ने कहा, “देखो, यह मेरी माँ और
मेरे भाई हैं। 50 क्यूँकि जो भी मेरे आसमानी बाप की
मर्ज़ी पूरी करता है वह मेरा भाई, मेरी बहन और मेरी
माँ है।”

बीज बोने वाले की तम्सील

13 1 उसी दिन ईसा घर से निकल कर झील
के किनारे बैठ गया। 2 इतना बड़ा हुजूम
उस के गिर्द जमा हो गया कि आख़िरकार वह एक
कश्ती में बैठ गया जबकि लोग किनारे पर खड़े रहे।
3 फिर उस ने उन्हें बहुत सी बातें तम्सीलों में सुनाईं।
“एक किसान बीज बोने के लिए निकला। 4 जब
बीज इधर उधर बिखर गया तो कुछ दाने रास्ते पर
गिरे और परिन्दों ने आ कर उन्हें चुग लिया। 5 कुछ
पथरीली ज़मीन पर गिरे जहाँ मिट्टी की कमी थी। वह
जल्द उग आए क्यूँकि मिट्टी गहरी नहीं थी। 6 लेकिन
जब सूरज निकला तो पौदे झुलस गए और चूँकि वह
जड़ न पकड़ सके इस लिए सूख गए। 7 कुछ ख़ुदरौ
काँटेदार पौदों के दरमियान भी गिरे। वहाँ वह उगने
तो लगे, लेकिन ख़ुदरौ पौदों ने साथ साथ बढ़ कर
उन्हें फलने फूलने न दिया। चुनाँचे वह भी ख़त्म हो
गए। 8 लेकिन ऐसे दाने भी थे जो ज़रख़ेज़ ज़मीन में
गिरे और बढ़ते बढ़ते तीस गुना, साठ गुना बल्कि सौ
गुना तक ज़्यादा फल लाए। 9 जो सुन सकता है वह
सुन ले!”

तम्सीलों का मक़्सद

10 शागिर्द उस के पास आ कर पूछने लगे, “आप
लोगों से तम्सीलों में बात क्यूँ करते हैं?”
11 उस ने जवाब दिया, “तुम को तो आसमान की
बादशाही के भेद समझने की लियाक़त दी गई है,
लेकिन उन्हें यह लियाक़त नहीं दी गई। 12 जिस के
पास कुछ है उसे और दिया जाएगा और उस के पास
कस्रत की चीज़ें होंगी। लेकिन जिस के पास कुछ
नहीं है उस से वह भी छीन लिया जाएगा जो उस के
पास है। 13 इस लिए मैं तम्सीलों में उन से बात करता
हूँ। क्यूँकि वह देखते हुए कुछ नहीं देखते, वह सुनते
हुए कुछ नहीं सुनते और कुछ नहीं समझते। 14 उन
में यसायाह नबी की यह पेशगोई पूरी हो रही है :

‘तुम अपने कानों से सुनोगे
मगर कुछ नहीं समझोगे,
तुम अपनी आँखों से देखोगे
मगर कुछ नहीं जानोगे।
15 क्यूँकि इस क़ौम का दिल बेहिस्स हो गया है।
वह मुश्किल से अपने कानों से सुनते हैं,
उन्हों ने अपनी आँखों को बन्द कर रखा है,
ऐसा न हो कि वह अपनी आँखों से देखें,
अपने कानों से सुनें,
अपने दिल से समझें,
मेरी तरफ़ रुजू करें
और मैं उन्हें शिफ़ा दूँ।’

16 लेकिन तुम्हारी आँखें मुबारक हैं क्यूँकि वह देख
सकती हैं और तुम्हारे कान मुबारक हैं क्यूँकि वह सुन
सकते हैं। 17 मैं तुम को सच बताता हूँ कि जो कुछ
तुम देख रहे हो बहुत से नबी और रास्तबाज़ इसे देख
न पाए अगरचे वह इस के आरज़ूमन्द थे। और जो
कुछ तुम सुन रहे हो इसे वह सुनने न पाए, अगरचे
वह इस के ख़्वाहिशमन्द थे।

बीज बोने वाले की तम्सील का मतलब

18 अब सुनो कि बीज बोने वाले की तम्सील का
मतलब क्या है। 19 रास्ते पर गिरे हुए दाने वह लोग
हैं जो बादशाही का कलाम सुनते तो हैं, लेकिन उसे
समझते नहीं। फिर इब्लीस आ कर वह कलाम छीन
लेता है जो उन के दिलों में बोया गया है। 20 पथरीली
ज़मीन पर गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम सुनते
ही उसे ख़ुशी से क़बूल तो कर लेते हैं, 21 लेकिन वह
जड़ नहीं पकड़ते और इस लिए ज़्यादा देर तक क़ाइम
नहीं रहते। जूँ ही वह कलाम पर ईमान लाने के बाइस
किसी मुसीबत या ईज़ारसानी से दोचार हो जाएँ तो
वह बर्गश्ता हो जाते हैं। 22 ख़ुदरौ काँटेदार पौदों
के दरमियान गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम
सुनते तो हैं, लेकिन फिर रोज़मर्रा की परेशानियाँ और
दौलत का फ़रेब कलाम को फलने फूलने नहीं देता।
नतीजे में वह फल लाने तक नहीं पहुँचता। 23 इस के
मुक़ाबले में ज़रख़ेज़ ज़मीन में गिरे हुए दाने वह लोग
हैं जो कलाम को सुन कर उसे समझ लेते और बढ़ते
बढ़ते तीस गुना, साठ गुना बल्कि सौ गुना तक फल
लाते हैं।”

ख़ुदरौ पौदों की तम्सील

24 ईसा ने उन्हें एक और तम्सील सुनाई। “आसमान
की बादशाही उस किसान से मुताबिक़त रखती है
जिस ने अपने खेत में अच्छा बीज बो दिया। 25 लेकिन
जब लोग सो रहे थे तो उस के दुश्मन ने आ कर
अनाज के पौदों के दरमियान ख़ुदरौ पौदों का बीज
बो दिया। फिर वह चला गया। 26 जब अनाज फूट
निकला और फ़सल पकने लगी तो ख़ुदरौ पौदे भी
नज़र आए। 27 नौकर मालिक के पास आए और
कहने लगे, ‘जनाब, क्या आप ने अपने खेत में अच्छा
बीज नहीं बोया था? तो फिर यह ख़ुदरौ पौदे कहाँ से
आ गए हैं?’

28 उस ने जवाब दिया, ‘किसी दुश्मन ने यह कर
दिया है।’

नौकरों ने पूछा, 'क्या हम जा कर उन्हें उखाड़ें?'
29 'नहीं,' उस ने कहा। 'ऐसा न हो कि ख़ुदरौ पौदों
के साथ साथ तुम अनाज के पौदे भी उखाड़ डालो।
30 उन्हें फ़सल की कटाई तक मिल कर बढ़ने दो।
उस वक़्त मैं फ़सल की कटाई करने वालों से कहूँगा
कि पहले ख़ुदरौ पौदों को चुन लो और उन्हें जलाने
के लिए गठों में बांध लो। फिर ही अनाज को जमा
करके गोदाम में लाओ'।"

राई के दाने की तम्सील

31 ईसा ने उन्हें एक और तम्सील सुनाई। "आसमान
की बादशाही राई के दाने की मानिन्द है जो किसी ने
ले कर अपने खेत में बो दिया। 32 गो यह बीजों में सब
से छोटा दाना है, लेकिन बढ़ते बढ़ते यह सब्ज़ियों में
सब से बड़ा हो जाता है। बल्कि यह दरख़्त सा बन
जाता है और परिन्दे आ कर उस की शाख़ों में घोंसले
बना लेते हैं।"

ख़मीर की तम्सील

33 उस ने उन्हें एक और तम्सील भी सुनाई।
"आसमान की बादशाही ख़मीर की मानिन्द है जो
किसी औरत ने ले कर तक़रीबन 27 किलोग्राम आटे
में मिला दिया। गो वह उस में छुप गया तो भी होते
होते पूरे गुंधे हुए आटे को ख़मीर बना दिया।"

तम्सीलों में बात करने का सबब

34 ईसा ने यह तमाम बातें हुजूम के सामने तम्सीलों
की सूरत में कीं। तम्सील के बग़ैर उस ने उन से बात
ही नहीं की। 35 यूँ नबी की यह पेशगोई पूरी हुई कि
"मैं तम्सीलों में बात करूँगा, मैं दुनिया की तख़्लीक़
से ले कर आज तक छुपी हुई बातें बयान करूँगा।"

ख़ुदरौ पौदों की तम्सील का मतलब

36 फिर ईसा हुजूम को रुख़्सत करके घर के अन्दर
चला गया। उस के शागिर्द उस के पास आ कर कहने
लगे, "खेत में ख़ुदरौ पौदों की तम्सील का मतलब
हमें समझाएँ।"
37 उस ने जवाब दिया, "अच्छा बीज बोने वाला
इब्न-ए-आदम है। 38 खेत दुनिया है जबकि अच्छे
बीज से मुराद बादशाही के फ़र्ज़न्द हैं। ख़ुदरौ पौदे
इब्लीस के फ़र्ज़न्द हैं 39 और उन्हें बोने वाला दुश्मन
इब्लीस है। फ़सल की कटाई का मतलब दुनिया
का इख़तिताम है जबकि फ़सल की कटाई करने
वाले फ़रिश्ते हैं। 40 जिस तरह तम्सील में ख़ुदरौ पौदे
उखाड़े जाते और आग में जलाए जाते हैं उसी तरह
दुनिया के इख़तिताम पर भी किया जाएगा। 41 इब्न-
ए-आदम अपने फ़रिश्तों को भेज देगा, और वह उस
की बादशाही से बर्गश्तगी का हर सबब और शरीअत
की ख़िलाफ़वरज़ी करने वाले हर शख़्स को निकालते
जाएंगे। 42 वह उन्हें भड़कती भट्टी में फैंक देंगे जहाँ
लोग रोते और दाँत पीसते रहेंगे। 43 फिर रास्तबाज़
अपने बाप की बादशाही में सूरज की तरह चमकेंगे।
जो सुन सकता है वह सुन ले!

छुपे हुए ख़ज़ाने की तम्सील

44 आसमान की बादशाही खेत में छुपे ख़ज़ाने की
मानिन्द है। जब किसी आदमी को उस के बारे में
मालूम हुआ तो उस ने उसे दुबारा छुपा दिया। फिर
वह ख़ुशी के मारे चला गया, अपनी तमाम मिलकियत
फ़रोख़्त कर दी और उस खेत को ख़रीद लिया।

मोती की तम्सील

45 नीज़, आसमान की बादशाही ऐसे सौदागर की
मानिन्द है जो अच्छे मोतियों की तलाश में था। 46 जब
उसे एक निहायत क़ीमती मोती के बारे में मालूम हुआ
तो वह चला गया, अपनी तमाम मिलकियत फ़रोख़्त
कर दी और उस मोती को ख़रीद लिया।

जाल की तम्सील

47 आसमान की बादशाही जाल की मानिन्द भी
है। उसे झील में डाला गया तो हर क़िस्म की

मछलियाँ पकड़ी गईं। 48 जब वह भर गया तो मछेरों
ने उसे किनारे पर खैंच लिया। फिर उन्हों ने बैठ कर
क़ाबिल-ए-इस्तेमाल मछलियाँ चुन कर टोकरियों
में डाल दीं और नाक़ाबिल-ए-इस्तेमाल मछलियाँ
फैंक दीं। 49 दुनिया के इख़तिताम पर ऐसा ही होगा।
फ़रिश्ते आएँगे और बुरे लोगों को रास्तबाज़ों से
अलग करके 50 उन्हें भड़कती भट्टी में फैंक देंगे जहाँ
लोग रोते और दाँत पीसते रहेंगे।"

नई और पुरानी सच्चाइयाँ

51 ईसा ने पूछा, "क्या तुम को इन तमाम बातों की
समझ आ गई है?"

"जी," शागिर्दों ने जवाब दिया।

52 उस ने उन से कहा, "इस लिए शरीअत का हर
आलिम जो आसमान की बादशाही में शागिर्द बन
गया है ऐसे मालिक-ए-मकान की मानिन्द है जो अपने
ख़ज़ाने से नए और पुराने जवाहिर निकालता है।"

ईसा को नासरत में रद्द किया जाता है

53 यह तम्सीलें सुनाने के बाद ईसा वहाँ से चला
गया। 54 अपने वतनी शहर नासरत पहुँच कर वह
इबादतख़ाने में लोगों को तालीम देने लगा। उस की
बातें सुन कर वह हैरतज़दा हुए। उन्हों ने पूछा, "उसे
यह हिक्मत और मोजिज़े करने की यह क़ुदरत कहाँ
से हासिल हुई है? 55 क्या यह बढ़ई का बेटा नहीं है?
क्या उस की माँ का नाम मरियम नहीं है, और क्या
उस के भाई याक़ूब, यूसुफ़, शमाऊन और यहूदा नहीं
हैं? 56 क्या उस की बहनें हमारे साथ नहीं रहतीं? तो
फिर उसे यह सब कुछ कहाँ से मिल गया?" 57 यूँ वह
उस से ठोकर खा कर उसे क़बूल करने से क़ासिर
रहे।

ईसा ने उन से कहा, "नबी की इज़्ज़त हर जगह
की जाती है सिवाए उस के वतनी शहर और उस के
अपने ख़ानदान के।" 58 और उन के ईमान की कमी
के बाइस उस ने वहाँ ज़्यादा मोजिज़े न किए

यहया का क़त्ल

14 1 उस वक़्त गलील के हुक्मरान हेरोदेस
अनतिपास को ईसा के बारे में इत्तिला
मिली। 2 इस पर उस ने अपने दरबारियों से कहा,
"यह यहया बपतिस्मा देने वाला है जो मुर्दों में से जी
उठा है, इस लिए उस की मोजिज़ाना ताक़तें इस में
नज़र आती हैं।"

3 वजह यह थी कि हेरोदेस ने यहया को गिरिफ़्तार
करके जेल में डाला था। यह हेरोदियास की ख़ातिर
हुआ था जो पहले हेरोदेस के भाई फ़िलिप्पुस
की बीवी थी। 4 यहया ने हेरोदेस को बताया था,
"हेरोदियास से तेरी शादी नाजाइज़ है।" 5 हेरोदेस
यहया को क़त्ल करना चाहता था, लेकिन अवाम
से डरता था क्यूँकि वह उसे नबी समझते थे।

6 हेरोदेस की सालगिरह के मौक़े पर हेरोदियास की
बेटी उन के सामने नाची। हेरोदेस को उस का नाचना
इतना पसन्द आया 7 कि उस ने क़सम खा कर उस
से वादा किया, "जो भी तू माँगेगी मैं तुझे दूँगा।"

8 अपनी माँ के सिखाने पर बेटी ने कहा, "मुझे
यहया बपतिस्मा देने वाले का सर ट्रे में मंगवा दें।"

9 यह सुन कर बादशाह को दुख हुआ। लेकिन
अपनी क़समों और मेहमानों की मौजूदगी की वजह
से उस ने उसे देने का हुक्म दे दिया। 10 चुनाँचे यहया
का सर क़लम कर दिया गया। 11 फिर ट्रे में रख कर
अन्दर लाया गया और लड़की को दे दिया गया।
लड़की उसे अपनी माँ के पास ले गई। 12 बाद में
यहया के शागिर्द आए और उस की लाश ले कर उसे
दफ़नाया। फिर वह ईसा के पास गए और उसे इत्तिला
दी।

ईसा 5000 मर्दों को खाना खिलाता है

13 यह ख़बर सुन कर ईसा लोगों से अलग हो कर
कश्ती पर सवार हुआ और किसी वीरान जगह चला
गया। लेकिन हुजूम को उस की ख़बर मिली। लोग
पैदल चल कर शहरों से निकल आए और उस के

पीछे लग गए। 14 जब ईसा ने कश्ती पर से उतर
कर बड़े हुजूम को देखा तो उसे लोगों पर बड़ा तरस
आया। वहीं उस ने उन के मरीज़ों को शिफ़ा दी।
15 जब दिन ढलने लगा तो उस के शागिर्द उस के
पास आए और कहा, "यह जगह वीरान है और दिन
ढलने लगा है। इन को रुख़्सत कर दें ताकि यह
इर्दगिर्द के दीहातों में जा कर खाने के लिए कुछ
ख़रीद लें।"
16 ईसा ने जवाब दिया, "इन्हें जाने की ज़रूरत नहीं,
तुम ख़ुद इन्हें खाने को दो।"
17 उन्हों ने जवाब दिया, "हमारे पास सिर्फ़ पाँच
रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं।"
18 उस ने कहा, "उन्हें यहाँ मेरे पास ले आओ,"
19 और लोगों को घास पर बैठने का हुक्म दिया।
ईसा ने उन पाँच रोटियों और दो मछलियों को ले
कर आसमान की तरफ़ देखा और शुक्रगुज़ारी की
दुआ की। फिर उस ने रोटियों को तोड़ तोड़ कर
शागिर्दों को दिया, और शागिर्दों ने यह रोटियाँ लोगों
में तक़्सीम कर दीं। 20 सब ने जी भर कर खाया। जब
शागिर्दों ने बचे हुए टुकड़े जमा किए तो बारह टोकरे
भर गए। 21 ख़वातीन और बच्चों के इलावा खाने वाले
तक़रीबन 5,000 मर्द थे।

ईसा पानी पर चलता है

22 इस के ऐन बाद ईसा ने शागिर्दों को मज्बूर किया
कि वह कश्ती पर सवार हो कर आगे निकलें और
झील के पार चले जाएँ। इतने में वह हुजूम को रुख़्सत
करना चाहता था। 23 उन्हें ख़ैरबाद कहने के बाद
वह दुआ करने के लिए अकेला पहाड़ पर चढ़ गया।
शाम के वक़्त वह वहाँ अकेला था 24 जबकि कश्ती
किनारे से काफ़ी दूर हो गई थी। लहरें कश्ती को
बहुत तंग कर रही थीं क्यूँकि हवा उस के ख़िलाफ़
चल रही थी।
25 तक़रीबन तीन बजे रात के वक़्त ईसा पानी पर
चलते हुए उन के पास आया। 26 जब शागिर्दों ने उसे
झील की सतह पर चलते हुए देखा तो उन्हों ने दहशत
खाई। "यह कोई भूत है,"उन्हों ने कहा और डर के
मारे चीख़ें मारने लगे।
27 लेकिन ईसा फ़ौरन उन से मुख़ातिब हो कर
बोला, "हौसला रखो! मैं ही हूँ। मत घबराओ।"
28 इस पर पतरस बोल उठा, "ख़ुदावन्द, अगर
आप ही हैं तो मुझे पानी पर अपने पास आने का
हुक्म दें।"
29 ईसा ने जवाब दिया, "आ।" पतरस कश्ती पर से
उतर कर पानी पर चलते चलते ईसा की तरफ़ बढ़ने
लगा। 30 लेकिन जब उस ने तेज़ हवा पर ग़ौर किया
तो वह घबरा गया और डूबने लगा। वह चिल्ला उठा,
"ख़ुदावन्द, मुझे बचाएँ!"
31 ईसा ने फ़ौरन अपना हाथ बढ़ा कर उसे पकड़
लिया। उस ने कहा, "ऐ कमएतिक़ाद! तू शक में क्यूँ
पड़ गया था?"
32 दोनों कश्ती पर सवार हुए तो हवा थम गई।
33 फिर कश्ती में मौजूद शागिर्दों ने उसे सिज्दा करके
कहा, "यक़ीनन आप अल्लाह के फ़र्ज़न्द हैं!"

गन्नेसरत में मरीज़ों की शिफ़ा

34 झील को पार करके वह गन्नेसरत शहर के पास
पहुँच गए। 35 जब उस जगह के लोगों ने ईसा को
पहचान लिया तो उन्हों ने इर्दगिर्द के पूरे इलाक़े में
इस की ख़बर फैलाई। उन्हों ने अपने तमाम मरीज़ों
को उस के पास ला कर 36 उस से मिन्नत की कि वह
उन्हें सिर्फ़ अपने लिबास के दामन को छूने दे। और
जिस ने भी उसे छुआ उसे शिफ़ा मिली।

बापदादा की तालीम

15 1 फिर कुछ फ़रीसी और शरीअत के
आलिम यरूशलम से आ कर ईसा से पूछने
लगे, 2 "आप के शागिर्द बापदादा की रिवायत क्यूँ
तोड़ते हैं? क्यूँकि वह हाथ धोए बग़ैर रोटी खाते हैं।"
3 ईसा ने जवाब दिया, "और तुम अपनी रिवायात
की ख़ातिर अल्लाह का हुक्म क्यूँ तोड़ते हो? 4 क्यूँकि
अल्लाह ने फ़रमाया, 'अपने बाप और अपनी माँ की

इज़्ज़त करना’ और ‘जो अपने बाप या माँ पर लानत
करे उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए।’ 5 लेकिन जब कोई
अपने वालिदैन से कहे, ‘मैं आप की मदद नहीं कर
सकता, क्यूँकि मैं ने मन्नत मानी है कि जो कुछ मुझे
आप को देना था वह अल्लाह के लिए वक़्फ़ है’ तो
तुम इसे जाइज़ क़रार देते हो। 6 यूँ तुम कहते हो कि
उसे अपने माँ-बाप की इज़्ज़त करने की ज़रूरत नहीं
है। और इसी तरह तुम अल्लाह के कलाम को अपनी
रिवायत की ख़ातिर मन्सूख़ कर लेते हो। 7 रियाकारो!
यसायाह नबी ने तुम्हारे बारे में क्या ख़ूब नबुव्वत की
है,

8 ‘यह क़ौम अपने होंटों से तो मेरा एहतिराम करती
है
लेकिन उस का दिल मुझ से दूर है।
9 वह मेरी परस्तिश करते तो हैं, लेकिन बेफ़ाइदा।
क्यूँकि वह सिर्फ़ इन्सान ही के अहकाम सिखाते
हैं’।”

इन्सान को क्या कुछ नापाक कर देता है?

10 फिर ईसा ने हुजूम को अपने पास बुला कर कहा,
“सब मेरी बात सुनो और इसे समझने की कोशिश
करो। 11 कोई ऐसी चीज़ है नहीं जो इन्सान के मुँह
में दाख़िल हो कर उसे नापाक कर सके, बल्कि जो
कुछ इन्सान के मुँह से निकलता है वही उसे नापाक
कर देता है।”

12 इस पर शागिर्दों ने उस के पास आ कर पूछा,
“क्या आप को मालूम है कि फ़रीसी यह बात सुन
कर नाराज़ हुए हैं?”

13 उस ने जवाब दिया, “जो भी पौदा मेरे आसमानी
बाप ने नहीं लगाया उसे जड़ से उखाड़ा जाएगा।
14 उन्हें छोड़ दो, वह अंधे राह दिखाने वाले हैं। अगर
एक अंधा दूसरे अंधे की राहनुमाई करे तो दोनों गढ़े
में गिर जाएंगे।”

15 पतरस बोल उठा, “इस तम्सील का मतलब हमें
बताएँ।”

16 ईसा ने कहा, “क्या तुम अभी तक इतने नासमझ
हो? 17 क्या तुम नहीं समझ सकते कि जो कुछ
इन्सान के मुँह में दाख़िल हो जाता है वह उस के मेदे
में जाता है और वहाँ से निकल कर जा-ए-ज़रूरत
में? 18 लेकिन जो कुछ इन्सान के मुँह से निकलता
है वह दिल से आता है। वही इन्सान को नापाक
करता है। 19 दिल ही से बुरे ख़यालात, क़त्ल-ओ-
ग़ारत, ज़िनाकारी, हरामकारी, चोरी, झूटी गवाही
और बुहतान निकलते हैं। 20 यही कुछ इन्सान को
नापाक कर देता है, लेकिन हाथ धोए बग़ैर खाना
खाने से वह नापाक नहीं होता।”

ग़ैरयहूदी औरत का ईमान

21 फिर ईसा गलील से रवाना हो कर शिमाल में सूर
और सैदा के इलाक़े में आया। 22 इस इलाक़े की एक
कनआनी ख़ातून उस के पास आ कर चिल्लाने लगी,
“ख़ुदावन्द, इब्न-ए-दाऊद, मुझ पर रहम करें। एक
बदरुह मेरी बेटी को बहुत सताती है।”

23 लेकिन ईसा ने जवाब में एक लफ़्ज़ भी न कहा।
इस पर उस के शागिर्द उस के पास आ कर उस से
गुज़ारिश करने लगे, “उसे फ़ारिग़ कर दें, क्यूँकि वह
हमारे पीछे पीछे चीख़ती चिल्लाती है।”

24 ईसा ने जवाब दिया, “मुझे सिर्फ़ इस्राईल की
खोई हुई भेड़ों के पास भेजा गया है।”

25 औरत उस के पास आ कर मुँह के बल झुक गई
और कहा, “ख़ुदावन्द, मेरी मदद करें!”

26 उस ने उसे बताया, “यह मुनासिब नहीं कि बच्चों
से खाना ले कर कुत्तों के सामने फैंक दिया जाए।”

27 उस ने जवाब दिया, “जी ख़ुदावन्द, लेकिन कुत्ते
भी वह टुकड़े खाते हैं जो उन के मालिक की मेज़ पर
से फ़र्श पर गिर जाते हैं।”

28 ईसा ने कहा, “ऐ औरत, तेरा ईमान बड़ा है। तेरी
दरख़्वास्त पूरी हो जाए।” उसी लम्हे औरत की बेटी
को शिफ़ा मिल गई।

ईसा बहुत से मरीज़ों को शिफ़ा देता है

29 फिर ईसा वहाँ से रवाना हो कर गलील की झील
के किनारे पहुँच गया। वहाँ वह पहाड़ पर चढ़ कर
बैठ गया। 30 लोगों की बड़ी तादाद उस के पास
आई। वह अपने लंगड़े, अंधे, मफ़्लूज, गूँगे और कई
और क़िस्म के मरीज़ भी साथ ले आए। उन्हों ने उन्हें
ईसा के सामने रखा तो उस ने उन्हें शिफ़ा दी। 31 हुजूम
हैरतज़दा हो गया। क्यूँकि गूँगे बोल रहे थे, अपाहजों
के आज़ा बहाल हो गए, लंगड़े चलने और अंधे देखने
लगे थे। यह देख कर भीड़ ने इस्राईल के ख़ुदा की
तम्जीद की।

ईसा 4000 मर्दों को खाना खिलाता है

32 फिर ईसा ने अपने शागिर्दों को बुला कर उन
से कहा, "मुझे इन लोगों पर तरस आता है। इन्हें
मेरे साथ ठहरे तीन दिन हो चुके हैं और इन के पास
खाने की कोई चीज़ नहीं है। लेकिन मैं इन्हें इस भूकी
हालत में रुख़्सत नहीं करना चाहता। ऐसा न हो कि
वह रास्ते में थक कर चूर हो जाएँ।"
33 उस के शागिर्दों ने जवाब दिया, "इस वीरान
इलाक़े में कहाँ से इतना खाना मिल सकेगा कि यह
लोग खा कर सेर हो जाएँ?"
34 ईसा ने पूछा, "तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?"
उन्हों ने जवाब दिया, "सात, और चन्द एक छोटी
मछलियाँ।"
35 ईसा ने हुजूम को ज़मीन पर बैठने को कहा।
36 फिर सात रोटियों और मछलियों को ले कर उस
ने शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उन्हें तोड़ तोड़ कर
अपने शागिर्दों को तक़्सीम करने के लिए दे दिया।
37 सब ने जी भर कर खाया। बाद में जब खाने के
बचे हुए टुकड़े जमा किए गए तो सात बड़े टोकरे भर
गए। 38 ख़वातीन और बच्चों के इलावा खाने वाले
4,000 मर्द थे।
39 फिर ईसा लोगों को रुख़्सत करके कश्ती पर
सवार हुआ और मगदन के इलाक़े में चला गया।

फ़रीसी इलाही निशान का तक़ाज़ा करते हैं

16 1 एक दिन फ़रीसी और सदूक़ी ईसा के
पास आए। उसे परखने के लिए उन्हों ने
मुतालबा किया कि वह उन्हें आसमान की तरफ़ से
कोई इलाही निशान दिखाए ताकि उस का इख़तियार
साबित हो जाए। 2 लेकिन उस ने जवाब दिया, "शाम
को तुम कहते हो, 'कल मौसम साफ़ होगा क्यूँकि
आसमान सुर्ख़ नज़र आता है।' 3 और सुब्ह के वक़्त
कहते हो, 'आज तूफ़ान होगा क्यूँकि आसमान सुर्ख़
है और बादल छाए हुए हैं।' ग़रज़ तुम आसमान की
हालत पर ग़ौर करके सहीह नतीजा निकाल लेते हो,
लेकिन ज़मानों की अलामतों पर ग़ौर करके सहीह
नतीजे तक पहुँचना तुम्हारे बस की बात नहीं है।
4 सिर्फ़ शरीर और ज़िनाकार नस्ल इलाही निशान का
तक़ाज़ा करती है। लेकिन उसे कोई भी इलाही निशान
पेश नहीं किया जाएगा सिवाए यूनुस नबी के निशान
के।"
यह कह कर ईसा उन्हें छोड़ कर चला गया।

फ़रीसियों और सदूक़ियों का ख़मीर

5 झील को पार करते वक़्त शागिर्द अपने साथ
खाना लाना भूल गए थे। 6 ईसा ने उन से कहा,
"ख़बरदार, फ़रीसियों और सदूक़ियों के ख़मीर से
होश्यार रहना।"
7 शागिर्द आपस में बह्स करने लगे, "वह इस लिए
कह रहे होंगे कि हम खाना साथ नहीं लाए।"
8 ईसा को मालूम हुआ कि वह क्या सोच रहे हैं।
उस ने कहा, "तुम आपस में क्यूँ बह्स कर रहे हो कि
हमारे पास रोटी नहीं है? 9 क्या तुम अभी तक नहीं
समझते? क्या तुम्हें याद नहीं कि मैं ने पाँच रोटियाँ
ले कर 5,000 आदमियों को खाना खिला दिया और
कि तुम ने बचे हुए टुकड़ों के कितने टोकरे उठाए
थे? 10 या क्या तुम भूल गए हो कि मैं ने सात रोटियाँ
ले कर 4,000 आदमियों को खाना खिलाया और
कि तुम ने बचे हुए टुकड़ों के कितने टोकरे उठाए

थे? 11 तुम क्यूँ नहीं समझते कि मैं तुम से खाने की
बात नहीं कर रहा? सुनो मेरी बात! फ़रीसियों और
सदूक़ियों के ख़मीर से होश्यार रहो!”
12 फिर उन्हें समझ आई कि ईसा उन्हें रोटी के
ख़मीर से आगाह नहीं कर रहा था बल्कि फ़रीसियों
और सदूक़ियों की तालीम से।

पतरस का इक़्रार

13 जब ईसा क़ैसरिया-फ़िलिप्पी के इलाक़े में पहुँचा
तो उस ने शागिर्दों से पूछा, “इब्न-ए-आदम लोगों के
नज़्दीक कौन है?”
14 उन्हों ने जवाब दिया, “कुछ कहते हैं यहया
बपतिस्मा देने वाला, कुछ यह कि आप इल्यास नबी
हैं। कुछ यह भी कहते हैं कि यरमियाह या नबियों में
से एक।”
15 उस ने पूछा, “लेकिन तुम्हारे नज़्दीक मैं कौन
हूँ?”
16 पतरस ने जवाब दिया, “आप ज़िन्दा ख़ुदा के
फ़र्ज़न्द मसीह हैं।”
17 ईसा ने कहा, “शमाऊन बिन यूनुस, तू मुबारक
है, क्यूँकि किसी इन्सान ने तुझ पर यह ज़ाहिर नहीं
किया बल्कि मेरे आसमानी बाप ने। 18 मैं तुझे यह
भी बताता हूँ कि तू पतरस यानी पत्थर है, और इसी
पत्थर पर मैं अपनी जमाअत को तामीर करूँगा, ऐसी
जमाअत जिस पर पाताल के दरवाज़े भी ग़ालिब नहीं
आएँगे। 19 मैं तुझे आसमान की बादशाही की कुंजियाँ
दे दूँगा। जो कुछ तू ज़मीन पर बांधेगा वह आसमान
पर भी बंधेगा। और जो कुछ तू ज़मीन पर खोलेगा
वह आसमान पर भी खुलेगा।”
20 फिर ईसा ने अपने शागिर्दों को हुक्म दिया,
“किसी को भी न बताओ कि मैं मसीह हूँ।”

ईसा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

21 उस वक़्त से ईसा अपने शागिर्दों पर वाज़िह करने
लगा, “लाज़िम है कि मैं यरूशलम जा कर क़ौम के
बुज़ुर्गों, राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा के
हाथों बहुत दुख उठाऊँ। मुझे क़त्ल किया जाएगा,
लेकिन तीसरे दिन मैं जी उठूँगा।”
22 इस पर पतरस उसे एक तरफ़ ले जा कर समझाने
लगा। “ऐ ख़ुदावन्द, अल्लाह न करे कि यह कभी भी
आप के साथ हो।”
23 ईसा ने मुड़ कर पतरस से कहा, “शैतान, मेरे
सामने से हट जा! तू मेरे लिए ठोकर का बाइस है,
क्यूँकि तू अल्लाह की सोच नहीं रखता बल्कि इन्सान
की।”
24 फिर ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, “जो मेरे
पीछे आना चाहे वह अपने आप का इन्कार करे और
अपनी सलीब उठा कर मेरे पीछे हो ले। 25 क्यूँकि जो
अपनी जान को बचाए रखना चाहे वह उसे खो देगा।
लेकिन जो मेरी ख़ातिर अपनी जान खो दे वही उसे पा
लेगा। 26 क्या फ़ाइदा है अगर किसी को पूरी दुनिया
हासिल हो जाए, लेकिन वह अपनी जान से महरूम
हो जाए? इन्सान अपनी जान के बदले क्या दे सकता
है? 27 क्यूँकि इब्न-ए-आदम अपने बाप के जलाल में
अपने फ़रिश्तों के साथ आएगा, और उस वक़्त वह
हर एक को उस के काम का बदला देगा। 28 मैं तुम्हें
सच बताता हूँ, यहाँ कुछ ऐसे लोग खड़े हैं जो मरने
से पहले ही इब्न-ए-आदम को उस की बादशाही में
आते हुए देखेंगे।”

पहाड़ पर ईसा की सूरत बदल जाती है

17 1 छः दिन के बाद ईसा सिर्फ़ पतरस, याक़ूब
और यूहन्ना को अपने साथ ले कर ऊँचे
पहाड़ पर चढ़ गया। 2 वहाँ उस की शक्ल-ओ-सूरत
उन के सामने बदल गई। उस का चिहरा सूरज की
तरह चमकने लगा, और उस के कपड़े नूर की मानिन्द
सफ़ेद हो गए। 3 अचानक इल्यास और मूसा ज़ाहिर
हुए और ईसा से बातें करने लगे। 4 पतरस बोल उठा,
“ख़ुदावन्द, कितनी अच्छी बात है कि हम यहाँ हैं।
अगर आप चाहें तो मैं तीन झोंपड़ियाँ बनाऊँगा, एक
आप के लिए, एक मूसा के लिए और एक इल्यास
के लिए।”

5 वह अभी बात कर ही रहा था कि एक चमकदार
बादल आ कर उन पर छा गया और बादल में से एक
आवाज़ सुनाई दी, “यह मेरा प्यारा फ़र्ज़न्द है, जिस
से मैं ख़ुश हूँ। इस की सुनो।”
6 यह सुन कर शागिर्द दहशत खा कर औंधे मुँह
गिर गए। 7 लेकिन ईसा ने आ कर उन्हें छुआ। उस ने
कहा, “उठो, मत डरो।” 8 जब उन्हों ने नज़र उठाई
तो ईसा के सिवा किसी को न देखा।
9 वह पहाड़ से उतरने लगे तो ईसा ने उन्हें हुक्म
दिया, “जो कुछ तुम ने देखा है उसे उस वक़्त तक
किसी को न बताना जब तक कि इब्न-ए-आदम मुर्दों
में से जी न उठे।”
10 शागिर्दों ने उस से पूछा, “शरीअत के उलमा क्यूँ
कहते हैं कि मसीह की आमद से पहले इल्यास का
आना ज़रूरी है?”
11 ईसा ने जवाब दिया, “इल्यास तो ज़रूर सब कुछ
बहाल करने के लिए आएगा। 12 लेकिन मैं तुम को
बताता हूँ कि इल्यास तो आ चुका है और उन्हों
ने उसे नहीं पहचाना बल्कि उस के साथ जो चाहा
किया। इसी तरह इब्न-ए-आदम भी उन के हाथों दुख
उठाएगा।”
13 फिर शागिर्दों को समझ आई कि वह उन के साथ
यहया बपतिस्मा देने वाले की बात कर रहा था।

ईसा लड़के में से बदरुह निकालता है

14 जब वह नीचे हुजूम के पास पहुँचे तो एक आदमी
ने ईसा के सामने आ कर घुटने टेके 15 और कहा,
“ख़ुदावन्द, मेरे बेटे पर रहम करें, उसे मिर्गी के दौरे
पड़ते हैं और उसे शदीद तक्लीफ़ उठानी पड़ती है।
कई बार वह आग या पानी में गिर जाता है। 16 मैं उसे
आप के शागिर्दों के पास लाया था, लेकिन वह उसे
शिफ़ा न दे सके।”
17 ईसा ने जवाब दिया, “ईमान से ख़ाली और
टेढ़ी नस्ल! मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँ, कब तक
तुम्हें बर्दाश्त करूँ? लड़के को मेरे पास ले आओ।”
18 ईसा ने बदरुह को डाँटा, तो वह लड़के में से
निकल गई। उसी लम्हे उसे शिफ़ा मिल गई।
19 बाद में शागिर्दों ने अलाहिदगी में ईसा के पास
आ कर पूछा, “हम बदरुह को क्यूँ न निकाल सके?”
20 उस ने जवाब दिया, “अपने ईमान की कमी के
सबब से। मैं तुम्हें सच बताता हूँ, अगर तुम्हारा ईमान
राई के दाने के बराबर भी हो तो फिर तुम इस पहाड़
को कह सकोगे, ‘इधर से उधर खिसक जा,’ तो वह
खिसक जाएगा। और तुम्हारे लिए कुछ भी नामुमकिन
नहीं होगा। 21 [लेकिन इस क़िस्म की बदरुह दुआ
और रोज़े के बग़ैर नहीं निकलती।]”

ईसा दूसरी बार अपनी मौत का ज़िक्र करता है

22 जब वह गलील में जमा हुए तो ईसा ने उन्हें
बताया, “इब्न-ए-आदम को आदमियों के हवाले कर
दिया जाएगा। 23 वह उसे क़त्ल करेंगे, लेकिन तीन
दिन के बाद वह जी उठेगा।” यह सुन कर शागिर्द
निहायत ग़मगीन हुए।

बैत-उल-मुक़द्दस का टैक्स

24 वह कफ़र्नहूम पहुँचे तो बैत-उल-मुक़द्दस का
टैक्स जमा करने वाले पतरस के पास आ कर पूछने
लगे, “क्या आप का उस्ताद बैत-उल-मुक़द्दस का
टैक्स अदा नहीं करता?”
25 “जी, वह करता है,” पतरस ने जवाब दिया।
वह घर में आया तो ईसा पहले ही बोलने लगा,
“क्या ख़याल है शमाऊन, दुनिया के बादशाह किन
से ड्यूटी और टैक्स लेते हैं, अपने फ़र्ज़न्दों से या
अजनबियों से?”
26 पतरस ने जवाब दिया, “अजनबियों से।” ईसा
बोला “तो फिर उन के फ़र्ज़न्द टैक्स देने से बरी हुए।
27 लेकिन हम उन्हें नाराज़ नहीं करना चाहते। इस
लिए झील पर जा कर उस में डोरी डाल देना। जो
मछली तू पहले पकड़ेगा उस का मुँह खोलना तो उस
में से चाँदी का सिक्का निकलेगा। उसे ले कर उन्हें मेरे
और अपने लिए अदा कर दे।”

कौन सब से बड़ा है?

18 1 उस वक़्त शागिर्द ईसा के पास आ कर
पूछने लगे, “आसमान की बादशाही में
कौन सब से बड़ा है?”
2 जवाब में ईसा ने एक छोटे बच्चे को बुला कर उन
के दरमियान खड़ा किया 3 और कहा, “मैं तुम को
सच बताता हूँ अगर तुम बदल कर छोटे बच्चों की
मानिन्द न बनो तो तुम कभी आसमान की बादशाही
में दाख़िल नहीं होगे। 4 इस लिए जो भी अपने आप
को इस बच्चे की तरह छोटा बनाएगा वह आसमान में
सब से बड़ा होगा। 5 और जो भी मेरे नाम में इस जैसे
छोटे बच्चे को क़बूल करे वह मुझे क़बूल करता है।

आज़माइशें

6 लेकिन जो कोई इन छोटों में से किसी को गुनाह
करने पर उकसाए उस के लिए बेहतर है कि उस के
गले में बड़ी चक्की का पाट बांध कर उसे समुन्दर की
गहराइयों में डुबो दिया जाए। 7 दुनिया पर उन चीज़ों
की वजह से अफ़्सोस जो गुनाह करने पर उकसाती
हैं। लाज़िम है कि ऐसी आज़माइशें आएँ, लेकिन उस
शख़्स पर अफ़्सोस जिस की मारिफ़त वह आएँ।
8 अगर तेरा हाथ या पाँओ तुझे गुनाह करने पर
उकसाए तो उसे काट कर फैंक देना। इस से पहले
कि तुझे दो हाथों या दो पाँओ समेत जहन्नुम की
अबदी आग में फैंका जाए, बेहतर यह है कि एक
हाथ या पाँओ से महरूम हो कर अबदी ज़िन्दगी में
दाख़िल हो। 9 और अगर तेरी आँख तुझे गुनाह करने
पर उकसाए तो उसे निकाल कर फैंक देना। इस से
पहले कि तुझे दो आँखों समेत जहन्नुम की आग में
फैंका जाए बेहतर यह है कि एक आँख से महरूम हो
कर अबदी ज़िन्दगी में दाख़िल हो।

खोई हुई भेड़ की तम्सील

10 ख़बरदार! तुम इन छोटों में से किसी को भी
हक़ीर न जानना। क्यूँकि मैं तुम को बताता हूँ कि
आसमान पर इन के फ़रिश्ते हर वक़्त मेरे बाप के
चिहरे को देखते रहते हैं। 11 [क्यूँकि इब्न-ए-आदम
खोए हुओं को ढूँडने और नजात देने आया है।]
12 तुम्हारा क्या ख़याल है? अगर किसी आदमी की
100 भेड़ें हों और एक भटक कर गुम हो जाए तो वह
क्या करेगा? क्या वह बाक़ी 99 भेड़ें पहाड़ी इलाक़े
में छोड़ कर भटकी हुई भेड़ को ढूँडने नहीं जाएगा?
13 और मैं तुम को सच बताता हूँ कि भटकी हुई भेड़
के मिलने पर वह उस के बारे में उन बाक़ी 99 भेड़ों
की निस्बत कहीं ज़्यादा ख़ुशी मनाएगा जो भटकी
नहीं। 14 बिलकुल इसी तरह आसमान पर तुम्हारा
बाप नहीं चाहता कि इन छोटों में से एक भी हलाक
हो जाए।

गुनाह में पड़े भाई से सुलूक

15 अगर तेरे भाई ने तेरा गुनाह किया हो तो अकेले
उस के पास जा कर उस पर उस का गुनाह ज़ाहिर
कर। अगर वह तेरी बात माने तो तू ने अपने भाई को
जीत लिया। 16 लेकिन अगर वह न माने तो एक या
दो और लोगों को अपने साथ ले जा ताकि तुम्हारी
हर बात की दो या तीन गवाहों से तस्दीक़ हो जाए।
17 अगर वह उन की बात भी न माने तो जमाअत को
बता देना। और अगर वह जमाअत की भी न माने तो
उस के साथ ग़ैरईमानदार या टैक्स लेने वाले का सा
सुलूक कर।

बांधने और खोलने का इख़्तियार

18 मैं तुम को सच बताता हूँ कि जो कुछ भी तुम
ज़मीन पर बान्धोगे आसमान पर भी बंधेगा, और जो
कुछ ज़मीन पर खोलोगे आसमान पर भी खुलेगा।
19 मैं तुम को यह भी बताता हूँ कि अगर तुम में से
दो शख़्स किसी बात को माँगने पर मुत्तफ़िक़ हो जाएँ
तो मेरा आसमानी बाप तुम को बख़्शेगा। 20 क्यूँकि
जहाँ भी दो या तीन अफ़राद मेरे नाम में जमा हो जाएँ
वहाँ मैं उन के दरमियान हूँगा।”

मुआफ़ न करने वाले नौकर की तम्सील

21 फिर पतरस ने ईसा के पास आ कर पूछा,
“ख़ुदावन्द, जब मेरा भाई मेरा गुनाह करे तो मैं
कितनी बार उसे मुआफ़ करूँ? सात बार तक?”
22 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुझे बताता हूँ, सात
बार नहीं बल्कि 77 बार। 23 इस लिए आसमान की
बादशाही एक बादशाह की मानिन्द है जो अपने
नौकरों के कर्ज़ों का हिसाब-किताब करना चाहता
था। 24 हिसाब-किताब शुरू करते वक़्त एक आदमी
उस के सामने पेश किया गया जो अरबों के हिसाब
से उस का क़र्ज़दार था। 25 वह यह रक़म अदा न
कर सका, इस लिए उस के मालिक ने यह क़र्ज़
वसूल करने के लिए हुक्म दिया कि उसे बाल-बच्चों
और तमाम मिलकियत समेत फ़रोख़्त कर दिया जाए।
26 यह सुन कर नौकर मुँह के बल गिरा और मिन्नत
करने लगा, ‘मुझे मुहलत दें, मैं पूरी रक़म अदा कर
दूँगा।’ 27 बादशाह को उस पर तरस आया। उस ने
उस का क़र्ज़ मुआफ़ करके उसे जाने दिया।
28 लेकिन जब यही नौकर बाहर निकला तो एक
हमख़िदमत मिला जो उस का चन्द हज़ार रूपों का
क़र्ज़दार था। उसे पकड़ कर वह उस का गला दबा
कर कहने लगा, ‘अपना क़र्ज़ अदा कर!’ 29 दूसरा
नौकर गिर कर मिन्नत करने लगा, ‘मुझे मुहलत दें, मैं
आप को सारी रक़म अदा कर दूँगा।’ 30 लेकिन वह
इस के लिए तय्यार न हुआ, बल्कि जा कर उसे उस
वक़्त तक जेल में डलवाया जब तक वह पूरी रक़म
अदा न कर दे। 31 जब बाक़ी नौकरों ने यह देखा तो
उन्हें शदीद दुख हुआ और उन्हों ने अपने मालिक के
पास जा कर सब कुछ बता दिया जो हुआ था। 32 इस
पर मालिक ने उस नौकर को अपने पास बुला लिया
और कहा, ‘शरीर नौकर! जब तू ने मेरी मिन्नत की तो
मैं ने तेरा पूरा क़र्ज़ मुआफ़ कर दिया। 33 क्या लाज़िम
न था कि तू भी अपने साथी नौकर पर उतना रहम
करता जितना मैं ने तुझ पर किया था?’ 34 ग़ुस्से में
मालिक ने उसे जेल के अफ़सरों के हवाले कर दिया
ताकि उस पर उस वक़्त तक तशद्दुद किया जाए जब
तक वह क़र्ज़ की पूरी रक़म अदा न कर दे।
35 मेरा आसमानी बाप तुम में से हर एक के साथ
भी ऐसा ही करेगा अगर तुम ने अपने भाई को पूरे
दिल से मुआफ़ न किया।”

तलाक़ के बारे में तालीम

19 1 यह कहने के बाद ईसा गलील को छोड़
कर यहूदिया में दरया-ए- यर्दन के पार चला
गया। 2 बड़ा हुजूम उस के पीछे हो लिया और उस ने
उन्हें वहाँ शिफ़ा दी।
3 कुछ फ़रीसी आए और उसे फंसाने की ग़रज़ से
सवाल किया, “क्या जाइज़ है कि मर्द अपनी बीवी
को किसी भी वजह से तलाक़ दे?”
4 ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुम ने कलाम-ए-
मुक़द्दस में नहीं पढ़ा कि इब्तिदा में ख़ालिक़ ने उन्हें
मर्द और औरत बनाया? 5 और उस ने फ़रमाया, ‘इस
लिए मर्द अपने माँ-बाप को छोड़ कर अपनी बीवी
के साथ पैवस्त हो जाता है। वह दोनों एक हो जाते
हैं।’ 6 यूँ वह कलाम-ए-मुक़द्दस के मुताबिक़ दो नहीं
रहते बल्कि एक हो जाते हैं। जिसे अल्लाह ने जोड़ा है
उसे इन्सान जुदा न करे।”
7 उन्हों ने एतिराज़ किया, “तो फिर मूसा ने यह क्यूँ
फ़रमाया कि आदमी तलाक़नामा लिख कर बीवी को
रुख़्सत कर दे?”
8 ईसा ने जवाब दिया, “मूसा ने तुम्हारी सख़्तदिली
की वजह से तुम को अपनी बीवी को तलाक़ देने की
इजाज़त दी। लेकिन इब्तिदा में ऐसा न था। 9 मैं तुम्हें
बताता हूँ, जो अपनी बीवी को जिस ने ज़िना न किया
हो तलाक़ दे और किसी और से शादी करे, वह ज़िना
करता है।”
10 शागिर्दों ने उस से कहा, “अगर शौहर और बीवी
का आपस का ताल्लुक़ ऐसा है तो शादी न करना
बेहतर है।”
11 ईसा ने जवाब दिया, “हर कोई यह बात समझ
नहीं सकता बल्कि सिर्फ़ वह जिसे इस क़ाबिल बना

दिया गया हो। 12 क्यूँकि कुछ पैदाइश ही से शादी
करने के क़ाबिल नहीं होते, बाज़ को दूसरों ने यूँ
बनाया है और बाज़ ने आसमान की बादशाही की
ख़ातिर शादी करने से इन्कार किया है। लिहाज़ा जो
यह समझ सके वह समझ ले।"

ईसा छोटे बच्चों को बरकत देता है

13 एक दिन छोटे बच्चों को ईसा के पास लाया गया
ताकि वह उन पर अपने हाथ रख कर दुआ करे।
लेकिन शागिर्दों ने लाने वालों को मलामत की। 14 यह
देख कर ईसा ने कहा, "बच्चों को मेरे पास आने दो
और उन्हें न रोको, क्यूँकि आसमान की बादशाही
इन जैसे लोगों को हासिल है।"
15 उस ने उन पर अपने हाथ रखे और फिर वहाँ से
चला गया।

अमीर मुश्किल से अल्लाह की बादशाही में दाख़िल हो सकते हैं

16 फिर एक आदमी ईसा के पास आया। उस ने
कहा, "उस्ताद, में कौन सा नेक काम करूँ ताकि
अबदी ज़िन्दगी मिल जाए?"
17 ईसा ने जवाब दिया, "तू मुझे नेकी के बारे में
क्यूँ पूछ रहा है? सिर्फ़ एक ही नेक है। लेकिन अगर
तू अबदी ज़िन्दगी में दाख़िल होना चाहता है तो
अह्काम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ार।"
18 आदमी ने पूछा, "कौन से अह्काम?"
ईसा ने जवाब दिया, "क़त्ल न करना, ज़िना न
करना, चोरी न करना, झूटी गवाही न देना, 19 अपने
बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना और अपने
पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आप
से रखता है।"
20 जवान आदमी ने जवाब दिया, "मैं ने इन तमाम
अह्काम की पैरवी की है, अब क्या रह गया है?"
21 ईसा ने उसे बताया, "अगर तू कामिल होना
चाहता है तो जा और अपनी पूरी जायदाद फ़रोख़्त
करके पैसे ग़रीबों में तक़्सीम कर दे। फिर तेरे लिए
आसमान पर ख़ज़ाना जमा हो जाएगा। इस के बाद
आ कर मेरे पीछे हो ले।"
22 यह सुन कर नौजवान मायूस हो कर चला गया,
क्यूँकि वह निहायत दौलतमन्द था।
23 इस पर ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, "मैं तुम
को सच बताता हूँ कि दौलतमन्द के लिए आसमान
की बादशाही में दाख़िल होना मुश्किल है। 24 मैं यह
दुबारा कहता हूँ, अमीर के आसमान की बादशाही
में दाख़िल होने की निस्बत ज़्यादा आसान यह है कि
ऊँट सूई के नाके में से गुज़र जाए।"
25 यह सुन कर शागिर्द निहायत हैरतज़दा हुए और
पूछने लगे, "फिर किस को नजात हासिल हो सकती
है?"
26 ईसा ने ग़ौर से उन की तरफ़ देख कर जवाब
दिया, "यह इन्सान के लिए तो नामुमकिन है, लेकिन
अल्लाह के लिए सब कुछ मुमकिन है।"
27 फिर पतरस बोल उठा, "हम तो अपना सब
कुछ छोड़ कर आप के पीछे हो लिए हैं। हमें क्या
मिलेगा?"
28 ईसा ने उन से कहा, "मैं तुम को सच बताता
हूँ, दुनिया की नई तख़्लीक़ पर जब इब्न-ए-आदम
अपने जलाली तख़्त पर बैठेगा तो तुम भी जिन्हों ने
मेरी पैरवी की है बारह तख़्तों पर बैठ कर इस्राईल
के बारह क़बीलों की अदालत करोगे। 29 और जिस
ने भी मेरी ख़ातिर अपने घरों, भाइयों, बहनों, बाप,
माँ, बच्चों या खेतों को छोड़ दिया है उसे सौ गुना
ज़्यादा मिल जाएगा और मीरास में अबदी ज़िन्दगी
पाएगा। 30 लेकिन बहुत से लोग जो अब अव्वल हैं
उस वक़्त आख़िर होंगे और जो अब आख़िर हैं वह
अव्वल होंगे।

अंगूर के बाग़ में मज़दूर

20 1 क्यूँकि आसमान की बादशाही उस
ज़मीन्दार से मुताबिक़त रखती है जो एक
दिन सुब्ह-सवेरे निकला ताकि अपने अंगूर के बाग़
के लिए मज़दूर ढूँडे। 2 वह उन से दिहाड़ी के लिए

चाँदी का एक सिक्का देने पर मुत्तफ़िक़ हुआ और उन्हें
अपने अंगूर के बाग़ में भेज दिया। 3 नौ बजे वह दुबारा
निकला तो देखा कि कुछ लोग अभी तक मंडी में
फ़ारिग़ बैठे हैं। 4 उस ने उन से कहा, 'तुम भी जा कर
मेरे अंगूर के बाग़ में काम करो। मैं तुम्हें मुनासिब
उजरत दूँगा।' 5 चुनाँचे वह काम करने के लिए चले
गए। बारह बजे और तीन बजे दोपहर के वक़्त भी
वह निकला और इस तरह के फ़ारिग़ मज़दूरों को
काम पर लगाया। 6 फिर शाम के पाँच बज गए। वह
निकला तो देखा कि अभी तक कुछ लोग फ़ारिग़ बैठे
हैं। उस ने उन से पूछा, 'तुम क्यूँ पूरा दिन फ़ारिग़ बैठे
रहे हो?' 7 उन्हों ने जवाब दिया, 'इस लिए कि किसी
ने हमें काम पर नहीं लगाया।' उस ने उन से कहा,
'तुम भी जा कर मेरे अंगूर के बाग़ में काम करो।'

8 दिन ढल गया तो ज़मीन्दार ने अपने अफ़सर को
बताया, 'मज़दूरों को बुला कर उन्हें मज़दूरी दे दे,
आख़िर में आने वालों से शुरू करके पहले आने
वालों तक।' 9 जो मज़दूर पाँच बजे आए थे उन्हें
चाँदी का एक एक सिक्का मिल गया। 10 इस लिए
जब वह आए जो पहले काम पर लगाए गए थे तो
उन्हों ने ज़्यादा मिलने की तवक़्क़ो की। लेकिन उन्हें
भी चाँदी का एक एक सिक्का मिला। 11 इस पर वह
ज़मीन्दार के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाने लगे, 12 'यह आदमी
जिन्हें आख़िर में लगाया गया उन्हों ने सिर्फ़ एक घंटा
काम किया। तो भी आप ने उन्हें हमारे बराबर की
मज़दूरी दी हालाँकि हमें दिन का पूरा बोझ और धूप
की शिद्दत बर्दाश्त करनी पड़ी।'

13 लेकिन ज़मीन्दार ने उन में से एक से बात की,
'यार, मैं ने ग़लत काम नहीं किया। क्या तू चाँदी के
एक सिक्के के लिए मज़दूरी करने पर मुत्तफ़िक़ न हुआ
था? 14 अपने पैसे ले कर चला जा। मैं आख़िर में काम
पर लगने वालों को उतना ही देना चाहता हूँ जितना
तुझे। 15 क्या मेरा हक़ नहीं कि मैं जैसा चाहूँ अपने
पैसे ख़र्च करूँ? या क्या तू इस लिए हसद करता है
कि मैं फ़य्याज़दिल हूँ?'

16 यूँ अव्वल आख़िर में आएँगे और जो आख़िरी
हैं वह अव्वल हो जाएंगे।"

ईसा तीसरी मर्तबा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

17 अब जब ईसा यरूशलम की तरफ़ बढ़ रहा था
तो बारह शागिर्दों को एक तरफ़ ले जा कर उस ने
उन से कहा, 18 "हम यरूशलम की तरफ़ बढ़ रहे हैं।
वहाँ इब्न-ए-आदम को राहनुमा इमामों और शरीअत
के उलमा के हवाले कर दिया जाएगा। वह उस पर
सज़ा-ए-मौत का फ़त्वा दे कर 19 उसे ग़ैरयहूदियों के
हवाले कर देंगे ताकि वह उस का मज़ाक़ उड़ाएँ, उस
को कोड़े मारें और उसे मस्लूब करें। लेकिन तीसरे
दिन वह जी उठेगा।"

याक़ूब और यूहन्ना की माँ की गुज़ारिश

20 फिर ज़ब्दी के बेटों याक़ूब और यूहन्ना की माँ
अपने बेटों को साथ ले कर ईसा के पास आई और
सिज्दा करके कहा, "आप से एक गुज़ारिश है।"

21 ईसा ने पूछा, "तू क्या चाहती है?"

उस ने जवाब दिया, "अपनी बादशाही में मेरे इन
बेटों में से एक को अपने दाएँ हाथ बैठने दें और दूसरे
को बाएँ हाथ।"

22 ईसा ने कहा, "तुम को नहीं मालूम कि क्या माँग
रहे हो। क्या तुम वह प्याला पी सकते हो जो मैं पीने
को हूँ?" "जी, हम पी सकते हैं," उन्हों ने जवाब
दिया।

23 फिर ईसा ने उन से कहा, "तुम मेरा प्याला तो
ज़रूर पियोगे, लेकिन यह फ़ैसला करना मेरा काम
नहीं कि कौन मेरे दाएँ हाथ बैठेगा और कौन बाएँ
हाथ। मेरे बाप ने यह मक़ाम उन ही के लिए तय्यार
किया है जिन को उस ने ख़ुद मुक़र्रर किया है।"

24 जब बाक़ी दस शागिर्दों ने यह सुना तो उन्हें
याक़ूब और यूहन्ना पर ग़ुस्सा आया। 25 इस पर ईसा
ने उन सब को बुला कर कहा, "तुम जानते हो कि
क़ौमों के हुक्मरान अपनी रआया पर रोब डालते हैं
और उन के बड़े अफ़सर उन पर अपने इख़तियार का

ग़लत इस्तेमाल करते हैं। 26 लेकिन तुम्हारे दरमियान
ऐसा नहीं है। जो तुम में बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा
ख़ादिम बने 27 और जो तुम में अव्वल होना चाहे वह
तुम्हारा ग़ुलाम बने। 28 क्यूँकि इब्न-ए-आदम भी इस
लिए नहीं आया कि ख़िदमत ले बल्कि इस लिए कि
ख़िदमत करे और अपनी जान फ़िद्या के तौर पर दे
कर बहुतों को छुड़ाए।"

दो अंधों की शिफ़ा

29 जब वह यरीहू शहर से निकलने लगे तो एक बड़ा
हुजूम उन के पीछे चल रहा था। 30 दो अंधे रास्ते के
किनारे बैठे थे। जब उन्हों ने सुना कि ईसा गुज़र रहा
है तो वह चिल्लाने लगे, "ख़ुदावन्द, इब्न-ए-दाऊद,
हम पर रहम करें।"
31 हुजूम ने उन्हें डाँट कर कहा, "ख़ामोश!"
लेकिन वह और भी ऊँची आवाज़ से पुकारते रहे,
"ख़ुदावन्द, इब्न-ए-दाऊद, हम पर रहम करें।"
32 ईसा रुक गया। उस ने उन्हें अपने पास बुलाया
और पूछा, "तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए
करूँ?"
33 उन्हों ने जवाब दिया, "ख़ुदावन्द, यह कि हम
देख सकें।"
34 ईसा को उन पर तरस आया। उस ने उन की
आँखों को छुआ तो वह फ़ौरन बहाल हो गईं। फिर
वह उस के पीछे चलने लगे।

यरूशलम में पुरजोश इस्तिक़्बाल

21 1 वह यरूशलम के क़रीब बैत-फ़गे पहुँचे।
यह गाँव ज़ैतून के पहाड़ पर वाक़े था। ईसा
ने दो शागिर्दों को भेजा 2 और कहा, "सामने वाले
गाँव में जाओ। वहाँ तुम को फ़ौरन एक गधी नज़र
आएगी जो अपने बच्चे के साथ बंधी हुई होगी। उन्हें
खोल कर यहाँ ले आओ। 3 अगर कोई यह देख कर
तुम से कुछ कहे तो उसे बता देना, 'ख़ुदावन्द को
इन की ज़रूरत है।' यह सुन कर वह फ़ौरन इन्हें भेज
देगा।"
4 यूँ नबी की यह पेशगोई पूरी हुई,
5 'सिय्यून बेटी को बता देना,
देख, तेरा बादशाह तेरे पास आ रहा है।
वह हलीम है और गधे पर,
हाँ गधी के बच्चे पर सवार है।'
6 दोनों शागिर्द चले गए। उन्हों ने वैसा ही किया
जैसा ईसा ने उन्हें बताया था। 7 वह गधी को बच्चे
समेत ले आए और अपने कपड़े उन पर रख दिए।
फिर ईसा उन पर बैठ गया। 8 जब वह चल पड़ा तो
बहुत ज़्यादा लोगों ने उस के आगे आगे रास्ते में अपने
कपड़े बिछा दिए। बाज़ ने शाख़ें भी उस के आगे आगे
रास्ते में बिछा दीं जो उन्हों ने दरख़्तों से काट ली थीं।
9 लोग ईसा के आगे और पीछे चल रहे थे और चिल्ला
कर यह नारे लगा रहे थे,
"इब्न-ए-दाऊद को होशाना! [p]
मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है।
आसमान की बुलन्दियों पर होशाना।" [q]
10 जब ईसा यरूशलम में दाख़िल हुआ तो पूरा शहर
हिल गया। सब ने पूछा, "यह कौन है?"
11 हुजूम ने जवाब दिया, "यह ईसा है, वह नबी जो
गलील के नासरत से है।"

ईसा बैत-उल-मुक़द्दस में जाता है

12 और ईसा बैत-उल-मुक़द्दस में जा कर उन सब
को निकालने लगा जो वहाँ क़ुर्बानियों के लिए
दरकार चीज़ों की ख़रीद-ओ-फ़रोख़्त कर रहे थे।
उस ने सिक्कों का तबादला करने वालों की मेज़ें और
कबूतर बेचने वालों की कुर्सियाँ उलट दीं 13 और उन
से कहा, "कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है, 'मेरा घर
दुआ का घर कहलाएगा।' लेकिन तुम ने उसे डाकुओं
के अड्डे में बदल दिया है।"

---

[p] होशाना (इब्रानी : मेहरबानी करके हमें बचा)। यहाँ इस में हम्द-ओ-सना का उन्सुर भी पाया जाता है।

[q] होशाना (इब्रानी : मेहरबानी करके हमें बचा)। यहाँ इस में हम्द-ओ-सना का उन्सुर भी पाया जाता है।

14 अंधे और लंगड़े बैत-उल-मुक़द्दस में उस के पास
आए और उस ने उन्हें शिफ़ा दी। 15 लेकिन राहनुमा
इमाम और शरीअत के उलमा नाराज़ हुए जब उन्हों ने
उस के हैरतअंगेज़ काम देखे और यह कि बच्चे बैत-
उल-मुक़द्दस में "इब्न-ए-दाऊद को होशाना" चिल्ला
रहे हैं। 16 उन्हों ने उस से पूछा, "क्या आप सुन रहे
हैं कि यह बच्चे क्या कह रहे हैं?"

"जी," ईसा ने जवाब दिया, "क्या तुम ने कलाम-ए-
मुक़द्दस में कभी नहीं पढ़ा कि 'तू ने छोटे बच्चों और
शीरख़्वारों की ज़बान को तय्यार किया है ताकि वह
तेरी तम्जीद करें'?"

17 फिर वह उन्हें छोड़ कर शहर से निकला और
बैत-अनियाह पहुँचा जहाँ उस ने रात गुज़ारी।

अन्जीर के दरख़्त पर लानत

18 अगले दिन सुब्ह-सवेरे जब वह यरूशलम लौट
रहा था तो ईसा को भूक लगी। 19 रास्ते के क़रीब
अन्जीर का एक दरख़्त देख कर वह उस के पास
गया। लेकिन जब वह वहाँ पहुँचा तो देखा कि फल
नहीं लगा बल्कि सिर्फ़ पत्ते ही पत्ते हैं। इस पर उस
ने दरख़्त से कहा, "अब से कभी भी तुझ में फल न
लगे!" दरख़्त फ़ौरन सूख गया।

20 यह देख कर शागिर्द हैरान हुए और कहा,
"अन्जीर का दरख़्त इतनी जल्दी से किस तरह सूख
गया?"

21 ईसा ने जवाब दिया, "मैं तुम को सच बताता हूँ,
अगर तुम शक न करो बल्कि ईमान रखो तो फिर
तुम न सिर्फ़ ऐसा काम कर सकोगे बल्कि इस से भी
बड़ा। तुम इस पहाड़ से कहोगे, 'उठ, अपने आप को
समुन्दर में गिरा दे' तो यह हो जाएगा। 22 अगर तुम
ईमान रखो तो जो कुछ भी तुम दुआ में माँगोगे वह
तुम को मिल जाएगा।"

किस ने ईसा को इख़तियार दिया?

23 ईसा बैत-उल-मुक़द्दस में दाख़िल हो कर तालीम
देने लगा। इतने में राहनुमा इमाम और क़ौम के बुज़ुर्ग
उस के पास आए और पूछा, "आप यह सब कुछ
किस इख़तियार से कर रहे हैं? किस ने आप को यह
इख़तियार दिया है?"

24 ईसा ने जवाब दिया, "मेरा भी तुम से एक सवाल
है। इस का जवाब दो तो फिर तुम को बता दूँगा
कि मैं यह किस इख़तियार से कर रहा हूँ। 25 मुझे
बताओ कि यहया का बपतिस्मा कहाँ से था - क्या
वह आसमानी था या इन्सानी?"

वह आपस में बह्स करने लगे, "अगर हम कहें
'आसमानी' तो वह पूछेगा, 'तो फिर तुम उस पर
ईमान क्यूँ न लाए?' 26 लेकिन हम कैसे कह सकते
हैं कि वह इन्सानी था? हम तो आम लोगों से डरते
हैं, क्यूँकि वह सब मानते हैं कि यहया नबी था।"
27 चुनाँचे उन्हों ने जवाब दिया, "हम नहीं जानते।"

ईसा ने कहा, "फिर मैं भी तुम को नहीं बताता कि
मैं यह सब कुछ किस इख़तियार से कर रहा हूँ।

दो बेटों की तम्सील

28 तुम्हारा क्या ख़याल है? एक आदमी के दो बेटे
थे। बाप बड़े बेटे के पास गया और कहा, 'बेटा, आज
अंगूर के बाग़ में जा कर काम कर।' 29 बेटे ने जवाब
दिया, 'मैं जाना नहीं चाहता,' लेकिन बाद में उस ने
अपना ख़याल बदल लिया और बाग़ में चला गया।
30 इतने में बाप छोटे बेटे के पास भी गया और उसे
बाग़ में जाने को कहा। 'जी जनाब, मैं जाऊँगा,' छोटे
बेटे ने कहा। लेकिन वह न गया। 31 अब मुझे बताओ
कि किस बेटे ने अपने बाप की मर्ज़ी पूरी की?"

"पहले बेटे ने," उन्हों ने जवाब दिया।

ईसा ने कहा, "मैं तुम को सच बताता हूँ कि टैक्स
लेने वाले और कस्बियाँ तुम से पहले अल्लाह की
बादशाही में दाख़िल हो रहे हैं। 32 क्यूँकि यहया तुम
को रास्तबाज़ी की राह दिखाने आया और तुम उस पर
ईमान न लाए। लेकिन टैक्स लेने वाले और कस्बियाँ
उस पर ईमान लाए। और यह देख कर भी तुम ने
अपना ख़याल न बदला और उस पर ईमान न लाए।

अंगूर के बाग़ में मुज़ारेओं की बग़ावत

33 एक और तम्सील सुनो। एक ज़मीन्दार था जिस
ने अंगूर का बाग़ लगाया। उस ने उस की चारदीवारी
बनाई, अंगूरों का रस निकालने के लिए एक गढ़े की
खुदाई की और पहरेदारों के लिए बुर्ज तामीर किया।
फिर वह उसे मुज़ारेओं के सपुर्द करके बैरून-ए-मुल्क
चला गया। 34 जब अंगूर को तोड़ने का वक़्त क़रीब
आ गया तो उस ने अपने नौकरों को मुज़ारेओं के
पास भेज दिया ताकि वह उन से मालिक का हिस्सा
वसूल करें। 35 लेकिन मुज़ारेओं ने उस के नौकरों को
पकड़ लिया। उन्हों ने एक की पिटाई की, दूसरे को
क़त्ल किया और तीसरे को संगसार किया। 36 फिर
मालिक ने मज़ीद नौकरों को उन के पास भेज दिया
जो पहले की निस्बत ज़्यादा थे। लेकिन मुज़ारेओं ने
उन के साथ भी वही सुलूक किया। 37 आख़िरकार
ज़मीन्दार ने अपने बेटे को उन के पास भेजा। उस
ने कहा, 'आख़िर मेरे बेटे का तो लिहाज़ करेंगे।'
38 लेकिन बेटे को देख कर मुज़ारे एक दूसरे से कहने
लगे, 'यह ज़मीन का वारिस है। आओ, हम इसे क़त्ल
करके उस की मीरास पर क़ब्ज़ा कर लें।' 39 उन्हों ने
उसे पकड़ कर बाग़ से बाहर फैंक दिया और क़त्ल
किया।"

40 ईसा ने पूछा, "अब बताओ, बाग़ का मालिक
जब आएगा तो उन मुज़ारेओं के साथ क्या करेगा?"
41 उन्हों ने जवाब दिया, "वह उन्हें बुरी तरह तबाह
करेगा और बाग़ को दूसरों के सपुर्द कर देगा, ऐसे
मुज़ारेओं के सपुर्द जो वक़्त पर उसे फ़सल का उस
का हिस्सा देंगे।"

42 ईसा ने उन से कहा, "क्या तुम ने कभी कलाम
का यह हवाला नहीं पढ़ा,

'जिस पत्थर को मकान बनाने वालों ने रद्द किया,
वह कोने का बुन्यादी पत्थर बन गया।
यह रब ने किया
और देखने में कितना हैरतअंगेज़ है'?

43 इस लिए मैं तुम्हें बताता हूँ कि अल्लाह की
बादशाही तुम से ले ली जाएगी और एक ऐसी क़ौम
को दी जाएगी जो इस के मुताबिक़ फल लाएगी।
44 जो इस पत्थर पर गिरेगा वह टुकड़े टुकड़े हो
जाएगा, जबकि जिस पर वह ख़ुद गिरेगा उसे वह
पीस डालेगा।"

45 ईसा की तम्सीलें सुन कर राहनुमा इमाम और
फ़रीसी समझ गए कि वह हमारे बारे में बात कर रहा
है। 46 उन्हों ने ईसा को गिरिफ़्तार करने की कोशिश
की, लेकिन वह अवाम से डरते थे क्यूँकि वह समझते
थे कि ईसा नबी है।

बड़ी ज़ियाफ़त की तम्सील

22 1 ईसा ने एक बार फिर तम्सीलों में उन से
बात की। 2 "आसमान की बादशाही एक
बादशाह से मुताबिक़त रखती है जिस ने अपने बेटे
की शादी की ज़ियाफ़त की तय्यारियाँ करवाईं। 3 जब
ज़ियाफ़त का वक़्त आ गया तो उस ने अपने नौकरों
को मेहमानों के पास यह इत्तिला देने के लिए भेजा
कि वह आएँ, लेकिन वह आना नहीं चाहते थे।
4 फिर उस ने मज़ीद कुछ नौकरों को भेज कर कहा,
'मेहमानों को बताना कि मैं ने अपना खाना तय्यार
कर रखा है। बैलों और मोटे-ताज़े बछड़ों को ज़बह
किया गया है, 5 सब कुछ तय्यार है। आएँ, ज़ियाफ़त
में शरीक हो जाएँ।' लेकिन मेहमानों ने पर्वा न की
बल्कि अपने मुख़्तलिफ़ कामों में लग गए। एक अपने
खेत को चला गया, दूसरा अपने कारोबार में मसरूफ़
हो गया। 6 बाक़ियों ने बादशाह के नौकरों को पकड़
लिया और उन से बुरा सुलूक करके उन्हें क़त्ल
किया। 7 बादशाह बड़े तैश में आ गया। उस ने अपनी
फ़ौज को भेज कर क़ातिलों को तबाह कर दिया और
उन का शहर जला दिया। 8 फिर उस ने अपने नौकरों
से कहा, 'शादी की ज़ियाफ़त तो तय्यार है, लेकिन
जिन मेहमानों को मैं ने दावत दी थी वह आने के
लाइक़ नहीं थे। 9 अब वहाँ जाओ जहाँ सड़कें शहर
से निकलती हैं और जिस से भी मुलाक़ात हो जाए उसे

ज़ियाफ़त के लिए दावत दे देना।' 10 चुनाँचे नौकर
सड़कों पर निकले और जिस से भी मुलाक़ात हुई
उसे लाए, ख़्वाह वह अच्छा था या बुरा। यूँ शादी
हाल मेहमानों से भर गया।

11 लेकिन जब बादशाह मेहमानों से मिलने के लिए
अन्दर आया तो उसे एक आदमी नज़र आया जिस
ने शादी के लिए मुनासिब कपड़े नहीं पहने थे।
12 बादशाह ने पूछा, 'दोस्त, तुम शादी का लिबास
पहने बग़ैर अन्दर किस तरह आए?' वह आदमी
कोई जवाब न दे सका। 13 फिर बादशाह ने अपने
दरबारियों को हुक्म दिया, 'इस के हाथ और पाँओ
बांध कर इसे बाहर तारीकी में फैंक दो, वहाँ जहाँ
लोग रोते और दाँत पीसते रहेंगे।'

14 क्यूँकि बुलाए हुए तो बहुत हैं, लेकिन चुने हुए
कम।"

क्या टैक्स देना जाइज़ है?

15 फिर फ़रीसियों ने जा कर आपस में मश्वरा किया
कि हम ईसा को किस तरह ऐसी बात करने के लिए
उभारें जिस से उसे पकड़ा जा सके। 16 इस मक़सद के
तहत उन्हों ने अपने शागिर्दों को हेरोदेस के पैरोकारों
समेत ईसा के पास भेजा। उन्हों ने कहा, "उस्ताद,
हम जानते हैं कि आप सच्चे हैं और दयानतदारी से
अल्लाह की राह की तालीम देते हैं। आप किसी की
पर्वा नहीं करते क्यूँकि आप ग़ैरजानिबदार हैं। 17 अब
हमें अपनी राय बताएँ। क्या रोमी शहन्शाह को टैक्स
देना जाइज़ है या नाजाइज़?"

18 लेकिन ईसा ने उन की बुरी नीयत पहचान ली।
उस ने कहा, "रियाकारो, तुम मुझे क्यूँ फंसाना चाहते
हो? 19 मुझे वह सिक्का दिखाओ जो टैक्स अदा करने
के लिए इस्तेमाल होता है।"

वह उस के पास चाँदी का एक रोमी सिक्का ले आए
20 तो उस ने पूछा, "किस की सूरत और नाम इस पर
कन्दा है?"

21 उन्हों ने जवाब दिया, "शहन्शाह का।"

उस ने कहा, "तो जो शहन्शाह का है शहन्शाह को
दो और जो अल्लाह का है अल्लाह को।"

22 उस का यह जवाब सुन कर वह हक्का-बक्का रह
गए और उसे छोड़ कर चले गए।

क्या हम जी उठेंगे?

23 उस दिन सदूक़ी ईसा के पास आए। सदूक़ी
नहीं मानते कि रोज़-ए-क़ियामत मुर्दे जी उठेंगे। उन्हों
ने ईसा से एक सवाल किया। 24 "उस्ताद, मूसा ने
हमें हुक्म दिया कि अगर कोई शादीशुदा आदमी
बेऔलाद मर जाए और उस का भाई हो तो भाई का
फ़र्ज़ है कि वह बेवा से शादी करके अपने भाई के
लिए औलाद पैदा करे। 25 अब फ़र्ज़ करें कि हमारे
दरमियान सात भाई थे। पहले ने शादी की, लेकिन
बेऔलाद फ़ौत हुआ। इस लिए दूसरे भाई ने बेवा से
शादी की। 26 लेकिन वह भी बेऔलाद मर गया। फिर
तीसरे भाई ने उस से शादी की। यह सिलसिला सातवें
भाई तक जारी रहा। यके बाद दीगरे हर भाई बेवा से
शादी करने के बाद मर गया। 27 आख़िर में बेवा भी
फ़ौत हो गई। 28 अब बताएँ कि क़ियामत के दिन वह
किस की बीवी होगी? क्यूँकि सात के सात भाइयों
ने उस से शादी की थी।"

29 ईसा ने जवाब दिया, "तुम इस लिए ग़लती पर
हो कि न तुम कलाम-ए-मुक़द्दस से वाक़िफ़ हो, न
अल्लाह की क़ुदरत से। 30 क्यूँकि क़ियामत के दिन
लोग न शादी करेंगे न उन की शादी कराई जाएगी
बल्कि वह आसमान पर फ़रिश्तों की मानिन्द होंगे।
31 रही यह बात कि मुर्दे जी उठेंगे, क्या तुम ने वह
बात नहीं पढ़ी जो अल्लाह ने तुम से कही? 32 उस ने
फ़रमाया, 'मैं इब्राहीम का ख़ुदा, इस्हाक़ का ख़ुदा
और याक़ूब का ख़ुदा हूँ,' हालाँकि उस वक़्त तीनों
काफ़ी अर्से से मर चुके थे। इस का मतलब है कि यह
हक़ीक़त में ज़िन्दा हैं। क्यूँकि अल्लाह मुर्दों का नहीं
बल्कि ज़िन्दों का ख़ुदा है।"

33 यह सुन कर हुजूम उस की तालीम के बाइस
हैरान रह गया।

अव्वल हुक्म

34 जब फ़रीसियों ने सुना कि ईसा ने सदूक़ियों को
लाजवाब कर दिया है तो वह जमा हुए। 35 उन में से
एक ने जो शरीअत का आलिम था उसे फंसाने के
लिए सवाल किया, 36 "उस्ताद, शरीअत में सब से
बड़ा हुक्म कौन सा है?"
37 ईसा ने जवाब दिया, "'रब अपने ख़ुदा से अपने
पूरे दिल, अपनी पूरी जान और अपने पूरे ज़हन से
प्यार करना।' 38 यह अव्वल और सब से बड़ा हुक्म
है। 39 और दूसरा हुक्म इस के बराबर यह है, 'अपने
पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आप
से रखता है।' 40 तमाम शरीअत और नबियों की
तालीमात इन दो अह्काम पर मब्नी हैं।"

मसीह के बारे में सवाल

41 जब फ़रीसी इकट्ठे थे तो ईसा ने उन से पूछा,
42 "तुम्हारा मसीह के बारे में क्या ख़याल है? वह
किस का फ़र्ज़न्द है?"
उन्हों ने जवाब दिया, "वह दाऊद का फ़र्ज़न्द है।"
43 ईसा ने कहा, "तो फिर दाऊद रूह-उल-क़ुद्स
की मारिफ़त उसे किस तरह 'रब' कहता है? क्यूँकि
वह फ़रमाता है,
44 'रब ने मेरे रब से कहा,
मेरे दहने हाथ बैठ,
जब तक मैं तेरे दुश्मनों को
तेरे पाँओ के नीचे न कर दूँ।'
45 दाऊद तो ख़ुद मसीह को रब कहता है। तो फिर
वह किस तरह उस का फ़र्ज़न्द हो सकता है?"
46 कोई भी जवाब न दे सका, और उस दिन से
किसी ने भी उस से मज़ीद कुछ पूछने की जुरअत न
की।

उलमा और फ़रीसियों से ख़बरदार

23 1 फिर ईसा हुजूम और अपने शागिर्दों से
मुख़ातिब हुआ, 2 "शरीअत के उलमा और
फ़रीसी मूसा की कुर्सी पर बैठे हैं। 3 चुनाँचे जो कुछ
वह तुम को बताते हैं वह करो और उस के मुताबिक़
ज़िन्दगी गुज़ारो। लेकिन जो कुछ वह करते हैं वह न
करो, क्यूँकि वह ख़ुद अपनी तालीम के मुताबिक़
ज़िन्दगी नहीं गुज़ारते। 4 वह भारी गठड़ियाँ बांध
बांध कर लोगों के कंधों पर रख देते हैं, लेकिन
ख़ुद उन्हें उठाने के लिए एक उंगली तक हिलाने
को तय्यार नहीं होते। 5 जो भी करते हैं दिखावे के
लिए करते हैं। जो तावीज़ [r]वह अपने बाज़ूओं और
पेशानियों पर बांधते और जो फुन्दने अपने लिबास से
लगाते हैं वह ख़ास बड़े होते हैं। 6 उन की बस एक ही
ख़्वाहिश होती है कि ज़ियाफ़तों और इबादतख़ानों में
इज़्ज़त की कुर्सियों पर बैठ जाएँ। 7 जब लोग बाज़ारों
में सलाम करके उन की इज़्ज़त करते और 'उस्ताद'
कह कर उन से बात करते हैं तो फिर वह ख़ुश हो जाते
हैं। 8 लेकिन तुम को उस्ताद नहीं कहलाना चाहिए,
क्यूँकि तुम्हारा सिर्फ़ एक ही उस्ताद है जबकि तुम
सब भाई हो। 9 और दुनिया में किसी को 'बाप' कह
कर उस से बात न करो, क्यूँकि तुम्हारा एक ही बाप है
और वह आसमान पर है। 10 हादी न कहलाना क्यूँकि
तुम्हारा सिर्फ़ एक ही हादी है यानी अल-मसीह।
11 तुम में से सब से बड़ा शख़्स तुम्हारा ख़ादिम होगा।
12 क्यूँकि जो भी अपने आप को सरफ़राज़ करेगा
उसे पस्त किया जाएगा और जो अपने आप को पस्त
करेगा उसे सरफ़राज़ किया जाएगा।

उन की रियाकारी पर अफ़्सोस

13 शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर
अफ़्सोस! रियाकारो! तुम लोगों के सामने आसमान
की बादशाही पर ताला लगाते हो। न तुम ख़ुद दाख़िल

---

[r]तावीज़ों में तौरेत के हवालाजात लिख कर रखे जाते थे।

होते हो, न उन्हें दाख़िल होने देते हो जो अन्दर जाना
चाहते हैं।
14 [शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर
अफ़सोस! रियाकारो! तुम बेवाओं के घरों पर क़ब्ज़ा
कर लेते और दिखावे के लिए लम्बी लम्बी नमाज़
पढ़ते हो। इस लिए तुम्हें ज़्यादा सज़ा मिलेगी।]
15 शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर
अफ़सोस! रियाकारो! तुम एक नौमुरीद बनाने की
ख़ातिर ख़ुश्की और तरीके लम्बे सफ़र करते हो। और
जब इस में कामयाब हो जाते हो तो तुम उस शख़्स को
अपनी निस्बत जहन्नुम का दुगना शरीर फ़र्ज़न्द बना
देते हो। 16 अंधे राहनुमाओ, तुम पर अफ़सोस! तुम
कहते हो, 'अगर कोई बैत-उल-मुक़द्दस की क़सम
खाए तो ज़रूरी नहीं कि वह उसे पूरा करे। लेकिन
अगर वह बैत-उल-मुक़द्दस के सोने की क़सम खाए
तो लाज़िम है कि उसे पूरा करे।' 17 अंधे अहमक़ो!
ज़्यादा अहम किया है, सोना या बैत-उल-मुक़द्दस
जो सोने को मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस बनाता है? 18 तुम
यह भी कहते हो, 'अगर कोई क़ुर्बानगाह की क़सम
खाए तो ज़रूरी नहीं कि वह उसे पूरा करे। लेकिन
अगर वह क़ुर्बानगाह पर पड़े हदिए की क़सम खाए
तो लाज़िम है कि वह उसे पूरा करे।' 19 अंधो!
ज़्यादा अहम किया है, हदिया या क़ुर्बानगाह जो
हदिए को मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस बनाती है? 20 ग़रज़,
जो क़ुर्बानगाह की क़सम खाता है वह उन तमाम
चीज़ों की क़सम भी खाता है जो उस पर पड़ी हैं।
21 और जो बैत-उल-मुक़द्दस की क़सम खाता है वह
उस की भी क़सम खाता है जो उस में सुकूनत करता
है। 22 और जो आसमान की क़सम खाता है वह
अल्लाह के तख़्त की और उस पर बैठने वाले की
क़सम भी खाता है।
23 शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर
अफ़सोस! रियाकारो! गो तुम बड़ी एहतियात से
पौदीने, अजवाइन और ज़ीरे का दसवाँ हिस्सा हदिए
के लिए मख़्सूस करते हो, लेकिन तुम ने शरीअत
की ज़्यादा अहम बातों को नज़रअन्दाज़ कर दिया है
यानी इन्साफ़, रहम और वफ़ादारी को। लाज़िम है
कि तुम यह काम भी करो और पहला भी न छोड़ो।
24 अंधे राहनुमाओ! तुम अपने मशरूब छानते हो
ताकि ग़लती से मच्छर न पी लिया जाए, लेकिन साथ
साथ ऊँट को निगल लेते हो।
25 शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर
अफ़सोस! रियाकारो! तुम बाहर से हर प्याले और
बर्तन की सफ़ाई करते हो, लेकिन अन्दर से वह लूट-
मार और ऐशपरस्ती से भरे होते हैं। 26 अंधे फ़रीसियो,
पहले अन्दर से प्याले और बर्तन की सफ़ाई करो,
और फिर वह बाहर से भी पाक-साफ़ हो जाएंगे।
27 शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर
अफ़सोस! रियाकारो! तुम ऐसी क़ब्रों से मुताबिक़त
रखते हो जिन पर सफेदी की गई हो। गो वह बाहर
से दिलकश नज़र आती हैं, लेकिन अन्दर से वह
मुर्दों की हड्डियों और हर क़िस्म की नापाकी से भरी
होती हैं। 28 तुम भी बाहर से रास्तबाज़ दिखाई देते हो
जबकि अन्दर से तुम रियाकारी और बेदीनी से मामूर
होते हो।
29 शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर
अफ़सोस! रियाकारो! तुम नबियों के लिए क़ब्रें
तामीर करते और रास्तबाज़ों के मज़ार सजाते हो।
30 और तुम कहते हो, 'अगर हम अपने बापदादा
के ज़माने में ज़िन्दा होते तो नबियों को क़त्ल करने
में शरीक न होते।' 31 लेकिन यह कहने से तुम
अपने ख़िलाफ़ गवाही देते हो कि तुम नबियों के
क़ातिलों की औलाद हो। 32 अब जाओ, वह काम
मुकम्मल करो जो तुम्हारे बापदादा ने अधूरा छोड़
दिया था। 33 साँपो, ज़हरीले साँपों के बच्चो! तुम किस
तरह जहन्नुम की सज़ा से बच पाओगे? 34 इस लिए
मैं नबियों, दानिशमन्दों और शरीअत के आलिमों
को तुम्हारे पास भेज देता हूँ। उन में से बाज़ को
तुम क़त्ल और मस्लूब करोगे और बाज़ को अपने
इबादतख़ानों में ले जा कर कोड़े लगवाओगे और
शहर-ब-शहर उन का ताक़्क़ुब करोगे। 35 नतीजे में
तुम तमाम रास्तबाज़ों के क़त्ल के ज़िम्मादार ठहरोगे

- रास्तबाज़ हाबील के क़त्ल से ले कर ज़करियाह
बिन बरकियाह के क़त्ल तक जिसे तुम ने बैत-उल-
मुक़द्दस के दरवाज़े और उस के सहन में मौजूद
क़ुर्बानगाह के दरमियान मार डाला। 36 मैं तुम को सच
बताता हूँ कि यह सब कुछ इसी नस्ल पर आएगा।

यरूशलम पर अफ़सोस

37 हाय यरूशलम, यरूशलम! तू जो नबियों को
क़त्ल करती और अपने पास भेजे हुए पैग़म्बरों को
संगसार करती है। मैं ने कितनी ही बार तेरी औलाद
को जमा करना चाहा, बिलकुल उसी तरह जिस तरह
मुर्ग़ी अपने बच्चों को अपने परों तले जमा करके
महफ़ूज़ कर लेती है। लेकिन तुम ने न चाहा। 38 अब
तुम्हारे घर को वीरान-ओ-सुन्सान छोड़ा जाएगा।
39 क्यूँकि मैं तुम को बताता हूँ, तुम मुझे उस वक़्त
तक दुबारा नहीं देखोगे जब तक तुम न कहो कि
मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है।"

बैत-उल-मुक़द्दस पर आने वाली तबाही

24 1 ईसा बैत-उल-मुक़द्दस को छोड़ कर
निकल रहा था कि उस के शागिर्द उस
के पास आए और बैत-उल-मुक़द्दस की मुख़्तलिफ़
इमारतों की तरफ़ उस की तवज्जुह दिलाने लगे।
2 लेकिन ईसा ने जवाब में कहा, "क्या तुम को यह
सब कुछ नज़र आता है? मैं तुम को सच बताता हूँ
कि यहाँ पत्थर पर पत्थर नहीं रहेगा बल्कि सब कुछ
ढा दिया जाएगा।"

मुसीबतों और ईज़ारसानियों की पेशगोई

3 बाद में ईसा ज़ैतून के पहाड़ पर बैठ गया। शागिर्द
अकेले उस के पास आए। उन्हों ने कहा, "हमें ज़रा
बताएँ, यह कब होगा? क्या क्या नज़र आएगा जिस
से पता चलेगा कि आप आने वाले हैं और यह दुनिया
ख़त्म होने वाली है?"

4 ईसा ने जवाब दिया, "ख़बरदार रहो कि कोई तुम्हें
गुमराह न कर दे। 5 क्यूँकि बहुत से लोग मेरा नाम
ले कर आएँगे और कहेंगे, 'मैं ही मसीह हूँ।' यूँ वह
बहुतों को गुमराह कर देंगे। 6 जंगों की ख़बरें और
अफ़वाहें तुम तक पहुँचेंगी, लेकिन मुह्तात रहो ताकि
तुम घबरा न जाओ। क्यूँकि लाज़िम है कि यह सब
कुछ पेश आए। तो भी अभी आख़िरत नहीं होगी।
7 एक क़ौम दूसरी के ख़िलाफ़ उठ खड़ी होगी, और
एक बादशाही दूसरी के ख़िलाफ़। काल पड़ेंगे और
जगह जगह ज़ल्ज़ले आएँगे। 8 लेकिन यह सिर्फ़ दर्द-
ए-ज़ह की इब्तिदा ही होगी।

9 फिर वह तुम को बड़ी मुसीबत में डाल देंगे और
तुम को क़त्ल करेंगे। तमाम क़ौमें तुम से इस लिए
नफ़रत करेंगी कि तुम मेरे पैरोकार हो। 10 उस वक़्त
बहुत से लोग ईमान से बर्गश्ता हो कर एक दूसरे
को दुश्मन के हवाले करेंगे और एक दूसरे से नफ़रत
करेंगे। 11 बहुत से झूटे नबी खड़े हो कर बहुत से
लोगों को गुमराह कर देंगे। 12 बेदीनी के बढ़ जाने
की वजह से बेशतर लोगों की मुहब्बत ठंडी पड़
जाएगी। 13 लेकिन जो आख़िर तक क़ाइम रहेगा उसे
नजात मिलेगी। 14 और बादशाही की इस ख़ुशख़बरी
के पैग़ाम का एलान पूरी दुनिया में किया जाएगा ताकि
तमाम क़ौमों के सामने उस की गवाही दी जाए। फिर
ही आख़िरत आएगी।

बैत-उल-मुक़द्दस की बेहुरमती

15 एक दिन आएगा जब तुम मुक़द्दस मक़ाम में वह
कुछ खड़ा देखोगे जिस का ज़िक्र दान्याल नबी ने
किया और जो बेहुरमती और तबाही का बाइस है।"
(क़ारी इस पर ध्यान दे!) 16 "उस वक़्त यहूदिया के
रहने वाले भाग कर पहाड़ी इलाक़े में पनाह लें। 17 जो
अपने घर की छत पर हो वह घर में से कुछ साथ ले
जाने के लिए न उतरे। 18 जो खेत में हो वह अपनी
चादर साथ ले जाने के लिए वापस न जाए। 19 उन
ख़वातीन पर अफ़सोस जो उन दिनों में हामिला हों या
अपने बच्चों को दूध पिलाती हों। 20 दुआ करो कि तुम
को सर्दियों के मौसम में या सबत के दिन हिज्रत न
करनी पड़े। 21 क्यूँकि उस वक़्त ऐसी शदीद मुसीबत

होगी कि दुनिया की तख़्लीक़ से आज तक देखने में न
आई होगी। इस क़िस्म की मुसीबत बाद में भी कभी
नहीं आएगी। 22 और अगर इस मुसीबत का दौरानिया
मुख़्तसर न किया जाता तो कोई न बचता। लेकिन
अल्लाह के चुने हुओं की ख़ातिर इस का दौरानिया
मुख़्तसर कर दिया जाएगा।
23 उस वक़्त अगर कोई तुम को बताए, 'देखो,
मसीह यहाँ है' या 'वह वहाँ है' तो उस की बात न
मानना। 24 क्यूँकि झूटे मसीह और झूटे नबी उठ खड़े
होंगे जो बड़े अजीब-ओ-ग़रीब निशान और मोजिज़े
दिखाएँगे ताकि अल्लाह के चुने हुए लोगों को भी ग़लत
रास्ते पर डाल दें - अगर यह मुमकिन होता। 25 देखो,
मैं ने तुम्हें पहले से इस से आगाह कर दिया है।
26 चुनाँचे अगर कोई तुम को बताए, 'देखो, वह
रेगिस्तान में है' तो वहाँ जाने के लिए न निकलना।
और अगर कोई कहे, 'देखो, वह अन्दरूनी कमरों में
है' तो उस का यक़ीन न करना। 27 क्यूँकि जिस तरह
बादल की बिजली मशरिक़ में कड़क कर मग़रिब
तक चमकती है उसी तरह इब्न-ए-आदम की आमद
भी होगी।
28 जहाँ भी लाश पड़ी हो वहाँ गिद्ध जमा हो जाएंगे।

इब्न-ए-आदम की आमद

29 मुसीबत के उन दिनों के ऐन बाद सूरज तारीक
हो जाएगा और चाँद की रौशनी ख़त्म हो जाएगी।
सितारे आसमान पर से गिर पड़ेंगे और आसमान की
क़ुव्वतें हिलाई जाएँगी। 30 उस वक़्त इब्न-ए-आदम
का निशान आसमान पर नज़र आएगा। तब दुनिया
की तमाम क़ौमें मातम करेंगी। वह इब्न-ए-आदम
को बड़ी क़ुदरत और जलाल के साथ आसमान
के बादलों पर आते हुए देखेंगी। 31 और वह अपने
फ़रिश्तों को बिगुल की ऊँची आवाज़ के साथ भेज
देगा ताकि उस के चुने हुओं को चारों तरफ़ से जमा
करें, आसमान के एक सिरे से दूसरे सिरे तक इकट्ठा
करें।

अन्जीर के दरख़्त से सबक़

32 अन्जीर के दरख़्त से सबक़ सीखो। जूँ ही उस
की शाख़ें नर्म और लचकदार हो जाती हैं और उन से
कोंपलें फूट निकलती हैं तो तुम को मालूम हो जाता
है कि गर्मियों का मौसम क़रीब आ गया है। 33 इसी
तरह जब तुम यह वाक़िआत देखोगे तो जान लोगे
कि इब्न-ए-आदम की आमद क़रीब बल्कि दरवाज़े
पर है। 34 मैं तुम को सच बताता हूँ कि इस नस्ल
के ख़त्म होने से पहले पहले यह सब कुछ वाक़े
होगा। 35 आसमान-ओ-ज़मीन तो जाते रहेंगे, लेकिन
मेरी बातें हमेशा तक क़ाइम रहेंगी।

किसी को भी उस की आमद का वक़्त मालूम नहीं

36 लेकिन किसी को भी इल्म नहीं कि यह किस दिन
या कौन सी घड़ी रूनुमा होगा। आसमान के फ़रिश्तों
और फ़र्ज़न्द को भी इल्म नहीं बल्कि सिर्फ़ बाप को।
37 जब इब्न-ए-आदम आएगा तो हालात नूह के दिनों
जैसे होंगे। 38 क्यूँकि सैलाब से पहले के दिनों में लोग
उस वक़्त तक खाते-पीते और शादियाँ करते कराते
रहे जब तक नूह कश्ती में दाख़िल न हो गया। 39 वह
उस वक़्त तक आने वाली मुसीबत के बारे में लाइल्म
रहे जब तक सैलाब आ कर उन सब को बहा न ले
गया। जब इब्न-ए-आदम आएगा तो इसी क़िस्म के
हालात होंगे। 40 उस वक़्त दो अफ़राद खेत में होंगे,
एक को साथ ले लिया जाएगा जबकि दूसरे को पीछे
छोड़ दिया जाएगा। 41 दो ख़वातीन चक्की पर गन्दुम
पीस रही होंगी, एक को साथ ले लिया जाएगा जबकि
दूसरी को पीछे छोड़ दिया जाएगा।
42 इस लिए चौकस रहो, क्यूँकि तुम नहीं जानते कि
तुम्हारा ख़ुदावन्द किस दिन आ जाएगा। 43 यक़ीन
जानो, अगर किसी घर के मालिक को मालूम होता
कि चोर कब आएगा तो वह ज़रूर चौकस रहता और
उसे अपने घर में नक़ब लगाने न देता। 44 तुम भी
तय्यार रहो, क्यूँकि इब्न-ए-आदम ऐसे वक़्त आएगा
जब तुम उस की तवक़्क़ो नहीं करोगे।

वफ़ादार नौकर

45 चुनाँचे कौन सा नौकर वफ़ादार और समझदार
है? फ़र्ज़ करो कि घर के मालिक ने किसी नौकर
को बाक़ी नौकरों पर मुक़र्रर किया हो। उस की
एक ज़िम्मादारी यह भी है कि उन्हें वक़्त पर खाना
खिलाए। 46 वह नौकर मुबारक होगा जो मालिक की
वापसी पर यह सब कुछ कर रहा होगा। 47 मैं तुम को
सच बताता हूँ कि यह देख कर मालिक उसे अपनी
पूरी जायदाद पर मुक़र्रर करेगा। 48 लेकिन फ़र्ज़ करो
कि नौकर अपने दिल में सोचे, 'मालिक की वापसी
में अभी देर है।' 49 वह अपने साथी नौकरों को पीटने
और शराबियों के साथ खाने-पीने लगे। 50 अगर वह
ऐसा करे तो मालिक ऐसे दिन और वक़्त आएगा जिस
की तवक़्क़ो नौकर को नहीं होगी। 51 इन हालात को
देख कर वह नौकर को टुकड़े टुकड़े कर डालेगा और
उसे रियाकारों में शामिल करेगा, वहाँ जहाँ लोग रोते
और दाँत पीसते रहेंगे।

दस कुंवारियों की तम्सील

25 1 उस वक़्त आसमान की बादशाही दस
कुंवारियों से मुताबिक़त रखेगी जो अपने
चराग़ ले कर दूल्हे को मिलने के लिए निकलें।
2 उन में से पाँच नासमझ थीं और पाँच समझदार।
3 नासमझ कुंवारियों ने अपने पास चराग़ों के लिए
फ़ाल्तू तेल न रखा। 4 लेकिन समझदार कुंवारियों ने
कुप्पी में तेल डाल कर अपने साथ ले लिया। 5 दूल्हे
को आने में बड़ी देर लगी, इस लिए वह सब ऊँघ
ऊँघ कर सो गईं।

6 आधी रात को शोर मच गया, 'देखो, दूल्हा पहुँच
रहा है, उसे मिलने के लिए निकलो!' 7 इस पर
तमाम कुंवारियाँ जाग उठीं और अपने चराग़ों को
दुरुस्त करने लगीं। 8 नासमझ कुंवारियों ने समझदार
कुंवारियों से कहा, 'अपने तेल में से हमें भी कुछ दे
दो। हमारे चराग़ बुझने वाले हैं।' 9 दूसरी कुंवारियों
ने जवाब दिया, 'नहीं, ऐसा न हो कि न सिर्फ़ तुम्हारे
लिए बल्कि हमारे लिए भी तेल काफ़ी न हो। दुकान
पर जा कर अपने लिए ख़रीद लो।' 10 चुनाँचे नासमझ
कुंवारियाँ चली गईं। लेकिन इस दौरान दूल्हा पहुँच
गया। जो कुंवारियाँ तय्यार थीं वह उस के साथ शादी
हाल में दाख़िल हुईं। फिर दरवाज़े को बन्द कर दिया
गया।

11 कुछ देर के बाद बाक़ी कुंवारियाँ आईं और
चिल्लाने लगीं, 'जनाब! हमारे लिए दरवाज़ा खोल दें।'
12 लेकिन उस ने जवाब दिया, 'यक़ीन जानो, मैं तुम
को नहीं जानता।'

13 इस लिए चौकस रहो, क्यूँकि तुम इब्न-ए-आदम
के आने का दिन या वक़्त नहीं जानते।

तीन नौकरों की तम्सील

14 उस वक़्त आसमान की बादशाही यूँ होगी : एक
आदमी को बैरून-ए-मुल्क जाना था। उस ने अपने
नौकरों को बुला कर अपनी मिलकियत उन के सपुर्द
कर दी। 15 पहले को उस ने सोने के 5,000 सिक्के दिए,
दूसरे को 2,000 और तीसरे को 1,000। हर एक को
उस ने उस की क़ाबिलियत के मुताबिक़ पैसे दिए।
फिर वह रवाना हुआ। 16 जिस नौकर को 5,000 सिक्के
मिले थे उस ने सीधा जा कर उन्हें किसी कारोबार में
लगाया। इस से उसे मज़ीद 5,000 सिक्के हासिल हुए।
17 इसी तरह दूसरे को भी जिसे 2,000 सिक्के मिले
थे मज़ीद 2,000 सिक्के हासिल हुए। 18 लेकिन जिस
आदमी को 1,000 सिक्के मिले थे वह चला गया और
कहीं ज़मीन में गढ़ा खोद कर अपने मालिक के पैसे
उस में छुपा दिए।

19 बड़ी देर के बाद उन का मालिक लौट आया।
जब उस ने उन के साथ हिसाब-किताब किया 20 तो
पहला नौकर जिसे 5,000 सिक्के मिले थे मज़ीद 5,000
सिक्के ले कर आया। उस ने कहा, 'जनाब, आप ने
5,000 सिक्के मेरे सपुर्द किए थे। यह देखें, मैं ने मज़ीद
5,000 सिक्के हासिल किए हैं।' 21 उस के मालिक
ने जवाब दिया, 'शाबाश, मेरे अच्छे और वफ़ादार
नौकर। तुम थोड़े में वफ़ादार रहे, इस लिए मैं तुम्हें

बहुत कुछ पर मुक़र्रर करूँगा। अन्दर आओ और
अपने मालिक की ख़ुशी में शरीक हो जाओ।'
22 फिर दूसरा नौकर आया जिसे 2,000 सिक्के मिले
थे। उस ने कहा, 'जनाब, आप ने 2,000 सिक्के मेरे
सपुर्द किए थे। यह देखें, मैं ने मज़ीद 2,000 सिक्के
हासिल किए हैं।' 23 उस के मालिक ने जवाब दिया,
'शाबाश, मेरे अच्छे और वफ़ादार नौकर। तुम थोड़े में
वफ़ादार रहे, इस लिए मैं तुम्हें बहुत कुछ पर मुक़र्रर
करूँगा। अन्दर आओ और अपने मालिक की ख़ुशी
में शरीक हो जाओ।'
24 फिर तीसरा नौकर आया जिसे 1,000 सिक्के मिले
थे। उस ने कहा, 'जनाब, मैं जानता था कि आप सख़्त
आदमी हैं। जो बीज आप ने नहीं बोया उस की फ़सल
आप काटते हैं और जो कुछ आप ने नहीं लगाया उस
की पैदावार जमा करते हैं। 25 इस लिए मैं डर गया
और जा कर आप के पैसे ज़मीन में छुपा दिए। अब
आप अपने पैसे वापस ले सकते हैं।'
26 उस के मालिक ने जवाब दिया, 'शरीर और सुस्त
नौकर! क्या तू जानता था कि जो बीज मैं ने नहीं बोया
उस की फ़सल काटता हूँ और जो कुछ मैं ने नहीं
लगाया उस की पैदावार जमा करता हूँ? 27 तो फिर
तू ने मेरे पैसे बैंक में क्यूँ न जमा करा दिए? अगर ऐसा
करता तो वापसी पर मुझे कम अज़ कम वह पैसे सूद
समेत मिल जाते।' 28 यह कह कर मालिक दूसरों से
मुख़ातिब हुआ, 'यह पैसे इस से ले कर उस नौकर
को दे दो जिस के पास 10,000 सिक्के हैं। 29 क्यूँकि
जिस के पास कुछ है उसे और दिया जाएगा और उस
के पास कस्रत की चीज़ें होंगी। लेकिन जिस के पास
कुछ नहीं है उस से वह भी छीन लिया जाएगा जो उस
के पास है। 30 अब इस बेकार नौकर को निकाल कर
बाहर की तारीकी में फैंक दो, वहाँ जहाँ लोग रोते
और दाँत पीसते रहेंगे।'

आख़िरी अदालत

31 जब इब्न-ए-आदम अपने जलाल के साथ आएगा
और तमाम फ़रिश्ते उस के साथ होंगे तो वह अपने
जलाली तख़्त पर बैठ जाएगा। 32 तब तमाम क़ौमें
उस के सामने जमा की जाएँगी। और जिस तरह
चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग करता है उसी
तरह वह लोगों को एक दूसरे से अलग करेगा। 33 वह
भेड़ों को अपने दहने हाथ खड़ा करेगा और बकरियों
को अपने बाएँ हाथ। 34 फिर बादशाह दहने हाथ
वालों से कहेगा, 'आओ, मेरे बाप के मुबारक लोगो!
जो बादशाही दुनिया की तख़्लीक़ से तुम्हारे लिए
तय्यार है उसे मीरास में ले लो। 35 क्यूँकि मैं भूका
था और तुम ने मुझे खाना खिलाया, मैं प्यासा था
और तुम ने मुझे पानी पिलाया, मैं अजनबी था और
तुम ने मेरी मेहमान-नवाज़ी की, 36 मैं नंगा था और तुम
ने मुझे कपड़े पहनाए, मैं बीमार था और तुम ने मेरी
देख-भाल की, मैं जेल में था और तुम मुझ से मिलने
आए।'
37 फिर यह रास्तबाज़ लोग जवाब में कहेंगे,
'ख़ुदावन्द, हम ने आप को कब भूका देख कर
खाना खिलाया, आप को कब प्यासा देख कर
पानी पिलाया? 38 हम ने आप को कब अजनबी की
हैसियत से देख कर आप की मेहमान-नवाज़ी की,
आप को कब नंगा देख कर कपड़े पहनाए? 39 हम
आप को कब बीमार हालत में या जेल में पड़ा देख
कर आप से मिलने गए?' 40 बादशाह जवाब देगा,
'मैं तुम्हें सच बताता हूँ कि जो कुछ तुम ने मेरे इन
सब से छोटे भाइयों में से एक के लिए किया वह तुम
ने मेरे ही लिए किया।'
41 फिर वह बाएँ हाथ वालों से कहेगा, 'लानती
लोगो, मुझ से दूर हो जाओ और उस अबदी आग
में चले जाओ जो इब्लीस और उस के फ़रिश्तों के
लिए तय्यार है। 42 क्यूँकि मैं भूका था और तुम ने
मुझे कुछ न खिलाया, मैं प्यासा था और तुम ने मुझे
पानी न पिलाया, 43 मैं अजनबी था और तुम ने मेरी
मेहमान-नवाज़ी न की, मैं नंगा था और तुम ने मुझे
कपड़े न पहनाए, मैं बीमार और जेल में था और तुम
मुझ से मिलने न आए।'

44 फिर वह जवाब में पूछेंगे, ‘ख़ुदावन्द, हम ने आप
को कब भूका, प्यासा, अजनबी, नंगा, बीमार या
जेल में पड़ा देखा और आप की ख़िदमत न की?’
45 वह जवाब देगा, ‘मैं तुम को सच बताता हूँ कि
जब कभी तुम ने इन सब से छोटों में से एक की मदद
करने से इन्कार किया तो तुम ने मेरी ख़िदमत करने
से इन्कार किया।’ 46 फिर यह अबदी सज़ा भुगतने
के लिए जाएंगे जबकि रास्तबाज़ अबदी ज़िन्दगी में
दाख़िल होंगे।”

ईसा के ख़िलाफ़ मन्सूबाबन्दियाँ

26 1 यह बातें ख़त्म करने पर ईसा शागिर्दों से
मुख़ातिब हुआ, 2 “तुम जानते हो कि दो
दिन के बाद फ़सह की ईद शुरू होगी। उस वक़्त
इब्न-ए-आदम को दुश्मन के हवाले किया जाएगा
ताकि उसे मस्लूब किया जाए।”
3 फिर राहनुमा इमाम और क़ौम के बुज़ुर्ग काइफ़ा
नामी इमाम-ए-आज़म के महल में जमा हुए 4 और ईसा
को किसी चालाकी से गिरिफ़्तार करके क़त्ल करने
की साज़िशें करने लगे। 5 उन्हों ने कहा, “लेकिन यह
ईद के दौरान नहीं होना चाहिए, ऐसा न हो कि अवाम
में हलचल मच जाए।”

ख़ातून ईसा पर ख़ुश्बू उंडेलती है

6 इतने में ईसा बैत-अनियाह आ कर एक आदमी
के घर में दाख़िल हुआ जो किसी वक़्त कोढ़ का
मरीज़ था। उस का नाम शमाऊन था। 7 ईसा खाना
खाने के लिए बैठ गया तो एक औरत आई जिस के
पास निहायत क़ीमती इत्र का इत्रदान था। उस ने उसे
ईसा के सर पर उंडेल दिया। 8 शागिर्द यह देख कर
नाराज़ हुए। उन्हों ने कहा, “इतना क़ीमती इत्र ज़ाए
करने की क्या ज़रूरत थी? 9 यह बहुत महंगी चीज़
है। अगर इसे बेचा जाता तो इस के पैसे ग़रीबों को
दिए जा सकते थे।”
10 लेकिन उन के ख़याल पहचान कर ईसा ने उन
से कहा, “तुम इसे क्यूँ तंग कर रहे हो? इस ने तो
मेरे लिए एक नेक काम किया है। 11 ग़रीब तो हमेशा
तुम्हारे पास रहेंगे, लेकिन मैं हमेशा तक तुम्हारे पास
नहीं रहूँगा। 12 मुझ पर इत्र उंडेलने से उस ने मेरे बदन
को दफ़न होने के लिए तय्यार किया है। 13 मैं तुम को
सच बताता हूँ कि तमाम दुनिया में जहाँ भी अल्लाह
की ख़ुशख़बरी का एलान किया जाएगा वहाँ लोग
इस ख़ातून को याद करके वह कुछ सुनाएँगे जो इस
ने किया है।”

ईसा को दुश्मन के हवाले करने का मन्सूबा

14 फिर यहूदा इस्करियोती जो बारह शागिर्दों में से
एक था राहनुमा इमामों के पास गया। 15 उस ने पूछा,
“आप मुझे ईसा को आप के हवाले करने के इवज़
कितने पैसे देने के लिए तय्यार हैं?” उन्हों ने उस
के लिए चाँदी के 30 सिक्के मुतअय्यिन किए। 16 उस
वक़्त से यहूदा ईसा को उन के हवाले करने का मौक़ा
ढूँडने लगा।

फ़सह की ईद के लिए तय्यारियाँ

17 बेख़मीरी रोटी की ईद आई। पहले दिन ईसा के
शागिर्दों ने उस के पास आ कर पूछा, “हम कहाँ आप
के लिए फ़सह का खाना तय्यार करें?”
18 उस ने जवाब दिया, “यरूशलम शहर में फ़ुलाँ
आदमी के पास जाओ और उसे बताओ, ‘उस्ताद ने
कहा है कि मेरा मुक़र्ररा वक़्त क़रीब आ गया है। मैं
अपने शागिर्दों के साथ फ़सह की ईद का खाना आप
के घर में खाऊँगा’।”
19 शागिर्दों ने वह कुछ किया जो ईसा ने उन्हें बताया
था और फ़सह की ईद का खाना तय्यार किया।

कौन ग़द्दार है?

20 शाम के वक़्त ईसा बारह शागिर्दों के साथ खाना
खाने के लिए बैठ गया। 21 जब वह खाना खा रहे थे
तो उस ने कहा, “मैं तुम को सच बताता हूँ कि तुम
में से एक मुझे दुश्मन के हवाले कर देगा।”

22 शागिर्द यह सुन कर निहायत ग़मगीन हुए। बारी
बारी वह उस से पूछने लगे, “ख़ुदावन्द, मैं तो नहीं
हूँ?”
23 ईसा ने जवाब दिया, “जिस ने मेरे साथ अपना
हाथ सालन के बर्तन में डाला है वही मुझे दुश्मन के
हवाले करेगा। 24 इब्न-ए-आदम तो कूच कर जाएगा
जिस तरह कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है, लेकिन उस
शख़्स पर अफ़सोस जिस के वसीले से उसे दुश्मन के
हवाले कर दिया जाएगा। उस के लिए बेहतर यह
होता कि वह कभी पैदा ही न होता।”
25 फिर यहूदा ने जो उसे दुश्मन के हवाले करने को
था पूछा, “उस्ताद, मैं तो नहीं हूँ?”
ईसा ने जवाब दिया, “जी, तुम ने ख़ुद कहा है।”

फ़सह का आख़िरी खाना

26 खाने के दौरान ईसा ने रोटी ले कर शुक्रगुज़ारी
की दुआ की और उसे टुकड़े करके शागिर्दों को दे
दिया। उस ने कहा, “यह लो और खाओ। यह मेरा
बदन है।”
27 फिर उस ने मै का प्याला ले कर शुक्रगुज़ारी की
दुआ की और उसे उन्हें दे कर कहा, “तुम सब इस
में से पियो। 28 यह मेरा ख़ून है, नए अह्द का वह
ख़ून जो बहुतों के लिए बहाया जाता है ताकि उन
के गुनाहों को मुआफ़ कर दिया जाए। 29 मैं तुम को
सच बताता हूँ कि अब से मैं अंगूर का यह रस नहीं
पियूँगा, क्यूँकि अगली दफ़ा इसे तुम्हारे साथ अपने
बाप की बादशाही में ही पियूँगा।”
30 फिर एक ज़बूर गा कर वह निकले और ज़ैतून के
पहाड़ के पास पहुँचे।

पतरस के इन्कार की पेशगोई

31 ईसा ने उन्हें बताया, “आज रात तुम सब
मेरी बाबत बर्गश्ता हो जाओगे, क्यूँकि कलाम-ए-
मुक़द्दस में अल्लाह फ़रमाता है, ‘मैं चरवाहे को मार
डालूँगा और रेवड़ की भेड़ें तित्तर-बित्तर हो जाएँगी।’
32 लेकिन अपने जी उठने के बाद मैं तुम्हारे आगे
आगे गलील पहुँचूँगा।”
33 पतरस ने एतिराज़ किया, “दूसरे बेशक सब आप
की बाबत बर्गश्ता हो जाएँ, लेकिन मैं कभी नहीं
हूँगा।”
34 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुझे सच बताता हूँ, इसी
रात मुर्ग़ के बाँग देने से पहले पहले तू तीन बार मुझे
जानने से इन्कार कर चुका होगा।”
35 पतरस ने कहा, “हरगिज़ नहीं! मैं आप को जानने
से कभी इन्कार नहीं करूँगा, चाहे मुझे आप के साथ
मरना भी पड़े।”
दूसरों ने भी यही कुछ कहा।

गत्समनी बाग़ में ईसा की दुआ

36 ईसा अपने शागिर्दों के साथ एक बाग़ में पहुँचा
जिस का नाम गत्समनी था। उस ने उन से कहा, “यहाँ
बैठ कर मेरा इन्तिज़ार करो। मैं दुआ करने के लिए
आगे जाता हूँ।” 37 उस ने पतरस और ज़ब्दी के दो
बेटों याक़ूब और यूहन्ना को साथ लिया। वहाँ वह
ग़मगीन और बेक़रार होने लगा। 38 उस ने उन से
कहा, “मैं दुख से इतना दबा हुआ हूँ कि मरने को
हूँ। यहाँ ठहर कर मेरे साथ जागते रहो।”
39 कुछ आगे जा कर वह औंधे मुँह ज़मीन पर गिर
कर यूँ दुआ करने लगा, “ऐ मेरे बाप, अगर मुमकिन
हो तो दुख का यह प्याला मुझ से हट जाए। लेकिन
मेरी नहीं बल्कि तेरी मर्ज़ी पूरी हो।”
40 वह अपने शागिर्दों के पास वापस आया तो देखा
कि वह सो रहे हैं। उस ने पतरस से पूछा, “क्या तुम
लोग एक घंटा भी मेरे साथ नहीं जाग सके? 41 जागते
और दुआ करते रहो ताकि आज़माइश में न पड़ो।
क्यूँकि रूह तो तय्यार है लेकिन जिस्म कमज़ोर।”
42 एक बार फिर उस ने जा कर दुआ की, “मेरे बाप,
अगर यह प्याला मेरे पिए बग़ैर हट नहीं सकता तो
फिर तेरी मर्ज़ी पूरी हो।” 43 जब वह वापस आया
तो दुबारा देखा कि वह सो रहे हैं, क्यूँकि नींद की
बदौलत उन की आँखें बोझल थीं।

44 चुनाँचे वह उन्हें दुबारा छोड़ कर चला गया
और तीसरी बार यही दुआ करने लगा। 45 फिर ईसा
शागिर्दों के पास वापस आया और उन से कहा,
"अभी तक सो और आराम कर रहे हो? देखो, वक़्त
आ गया है कि इब्न-ए-आदम गुनाहगारों के हवाले
किया जाए। 46 उठो! आओ, चलें। देखो, मुझे दुश्मन
के हवाले करने वाला क़रीब आ चुका है।"

ईसा की गिरिफ़्तारी

47 वह अभी यह बात कर ही रहा था कि यहूदा
पहुँच गया, जो बारह शागिर्दों में से एक था। उस के
साथ तलवारों और लाठियों से लेस आदमियों का
बड़ा हुजूम था। उन्हें राहनुमा इमामों और क़ौम के
बुज़ुर्गों ने भेजा था। 48 इस ग़द्दार यहूदा ने उन्हें एक
इम्तियाज़ी निशान दिया था कि जिस को मैं बोसा दूँ
वही ईसा है। उसे गिरिफ़्तार कर लेना।
49 जूँ ही वह पहुँचे यहूदा ईसा के पास गया और
"उस्ताद, अस्सलामु अलैकुम!" कह कर उसे बोसा
दिया।
50 ईसा ने कहा, "दोस्त, क्या तू इसी मक़्सद से
आया है?"
फिर उन्हों ने उसे पकड़ कर गिरिफ़्तार कर लिया।
51 इस पर ईसा के एक साथी ने अपनी तलवार मियान
से निकाली और इमाम-ए-आज़म के ग़ुलाम को मार
कर उस का कान उड़ा दिया। 52 लेकिन ईसा ने कहा,
"अपनी तलवार को मियान में रख, क्यूँकि जो भी
तलवार चलाता है उसे तलवार से मारा जाएगा। 53 या
क्या तू नहीं समझता कि मेरा बाप मुझे हज़ारों फ़रिश्ते
फ़ौरन भेज देगा अगर मैं उन्हें तलब करूँ? 54 लेकिन
अगर मैं ऐसा करता तो फिर कलाम-ए-मुक़द्दस की
पेशगोइयाँ किस तरह पूरी होतीं जिन के मुताबिक़
यह ऐसा ही होना है?"
55 उस वक़्त ईसा ने हुजूम से कहा, "क्या मैं डाकू
हूँ कि तुम तलवारें और लाठियाँ लिए मुझे गिरिफ़्तार
करने निकले हो? मैं तो रोज़ाना बैत-उल-मुक़द्दस में
बैठ कर तालीम देता रहा, मगर तुम ने मुझे गिरिफ़्तार
नहीं किया। 56 लेकिन यह सब कुछ इस लिए हो रहा
है ताकि नबियों के सहीफ़ों में दर्ज पेशगोइयाँ पूरी हो
जाएँ।"
फिर तमाम शागिर्द उसे छोड़ कर भाग गए।

ईसा यहूदी अदालत-ए-आलिया के सामने

57 जिन्हों ने ईसा को गिरिफ़्तार किया था वह
उसे काइफ़ा इमाम-ए-आज़म के घर ले गए जहाँ
शरीअत के तमाम उलमा और क़ौम के बुज़ुर्ग जमा
थे। 58 इतने में पतरस कुछ फ़ासिले पर ईसा के पीछे
पीछे इमाम-ए-आज़म के सहन तक पहुँच गया। उस
में दाख़िल हो कर वह मुलाज़िमों के साथ आग के
पास बैठ गया ताकि इस सिलसिले का अन्जाम
देख सके। 59 मकान के अन्दर राहनुमा इमाम और
यहूदी अदालत-ए-अलिया के तमाम अफ़राद ईसा के
ख़िलाफ़ झूटी गवाहियाँ ढूँड रहे थे ताकि उसे सज़ा-
ए-मौत दिलवा सकें। 60 बहुत से झूटे गवाह सामने
आए, लेकिन कोई ऐसी गवाही न मिली। आख़िरकार
दो आदमियों ने सामने आ कर 61 यह बात पेश की,
"इस ने कहा है कि मैं अल्लाह के बैत-उल-मुक़द्दस को
ढा कर उसे तीन दिन के अन्दर अन्दर दुबारा तामीर
कर सकता हूँ।"
62 फिर इमाम-ए-आज़म ने खड़े हो कर ईसा से
कहा, "क्या तू कोई जवाब नहीं देगा? यह क्या
गवाहियाँ हैं जो यह लोग तेरे ख़िलाफ़ दे रहे हैं?"
63 लेकिन ईसा ख़ामोश रहा। इमाम-ए-आज़म ने उस
से एक और सवाल किया, "मैं तुझे ज़िन्दा ख़ुदा की
क़सम दे कर पूछता हूँ कि क्या तू अल्लाह का फ़र्ज़न्द
मसीह है?"
64 ईसा ने कहा, "जी, तू ने ख़ुद कह दिया है। और
मैं तुम सब को बताता हूँ कि आइन्दा तुम इब्न-ए-
आदम को क़ादिर-ए-मुतलक़ के दहने हाथ बैठे और
आसमान के बादलों पर आते हुए देखोगे।"
65 इमाम-ए-आज़म ने रंजिश का इज़हार करके
अपने कपड़े फाड़ लिए और कहा, "इस ने कुफ़्र बका
है! हमें मज़ीद गवाहों की क्या ज़रूरत रही! आप ने

ख़ुद सुन लिया है कि इस ने कुफ़्र बका है। 66 आप
का क्या फ़ैसला है?”

उन्हों ने जवाब दिया, “यह सज़ा-ए-मौत के लाइक़
है।”

67 फिर वह उस पर थूकने और उस के मुक्के मारने
लगे। बाज़ ने उस के थप्पड़ मार मार कर 68 कहा,
“ऐ मसीह, नबुव्वत करके हमें बता कि तुझे किस ने
मारा।”

पतरस ईसा को जानने से इन्कार करता है

69 इस दौरान पतरस बाहर सहन में बैठा था। एक
नौकरानी उस के पास आई। उस ने कहा, “तुम भी
गलील के उस आदमी ईसा के साथ थे।”

70 लेकिन पतरस ने उन सब के सामने इन्कार
किया, “मैं नहीं जानता कि तू क्या बात कर रही है।”
यह कह कर 71 वह बाहर गेट तक गया। वहाँ एक
और नौकरानी ने उसे देखा और पास खड़े लोगों से
कहा, “यह आदमी ईसा नासरी के साथ था।”

72 दुबारा पतरस ने इन्कार किया। इस दफ़ा उस
ने क़सम खा कर कहा, “मैं इस आदमी को नहीं
जानता।”

73 थोड़ी देर के बाद वहाँ खड़े कुछ लोगों ने पतरस
के पास आ कर कहा, “तुम ज़रूर उन में से हो क्यूँकि
तुम्हारी बोली से साफ़ पता चलता है।”

74 इस पर पतरस ने क़सम खा कर कहा, “मुझ पर
लानत अगर मैं झूट बोल रहा हूँ। मैं इस आदमी को
नहीं जानता!” फ़ौरन मुर्ग़ की बाँग सुनाई दी। 75 फिर
पतरस को वह बात याद आई जो ईसा ने कही थी,
“मुर्ग़ के बाँग देने से पहले पहले तू तीन बार मुझे
जानने से इन्कार कर चुका होगा।” इस पर वह बाहर
निकला और टूटे दिल से ख़ूब रोया।

ईसा को पीलातुस के सामने पेश किया जाता है

27 1 सुब्ह-सवेरे तमाम राहनुमा इमाम और
क़ौम के तमाम बुज़ुर्ग इस फ़ैसले तक पहुँच
गए कि ईसा को सज़ा-ए-मौत दी जाए। 2 वह उसे
बांध कर वहाँ से ले गए और रोमी गवर्नर पीलातुस
के हवाले कर दिया।

यहूदा की ख़ुदकुशी

3 जब यहूदा ने जिस ने उसे दुश्मन के हवाले कर
दिया था देखा कि उस पर सज़ा-ए-मौत का फ़त्वा दे
दिया गया है तो उस ने पछता कर चाँदी के 30 सिक्के
राहनुमा इमामों और क़ौम के बुज़ुर्गों को वापस कर
दिए। 4 उस ने कहा, “मैं ने गुनाह किया है, क्यूँकि
एक बेक़ुसूर आदमी को सज़ा-ए-मौत दी गई है और
मैं ही ने उसे आप के हवाले किया है।”

उन्हों ने जवाब दिया, “हमें क्या! यह तेरा मसला
है।” 5 यहूदा चाँदी के सिक्के बैत-उल-मुक़द्दस में फैंक
कर चला गया। फिर उस ने जा कर फाँसी ले ली।

6 राहनुमा इमामों ने सिक्कों को जमा करके कहा,
“शरीअत यह पैसे बैत-उल-मुक़द्दस के ख़ज़ाने में
डालने की इजाज़त नहीं देती, क्यूँकि यह ख़ूँरेज़ी का
मुआवज़ा है।” 7 आपस में मश्वरा करने के बाद उन्हों
ने कुम्हार का खेत ख़रीदने का फ़ैसला किया ताकि
परदेसियों को दफ़नाने के लिए जगह हो। 8 इस लिए
यह खेत आज तक ख़ून का खेत कहलाता है।

9 यूँ यरमियाह नबी की यह पेशगोई पूरी हुई कि
“उन्हों ने चाँदी के 30 सिक्के लिए यानी वह रक़म जो
इस्राईलियों ने उस के लिए लगाई थी। 10 इन से उन्हों
ने कुम्हार का खेत ख़रीद लिया, बिलकुल ऐसा जिस
तरह रब ने मुझे हुक्म दिया था।”

पीलातुस ईसा की पूछगछ करता है

11 इतने में ईसा को रोमी गवर्नर पीलातुस के सामने
पेश किया गया। उस ने उस से पूछा, “क्या तुम
यहूदियों के बादशाह हो?”

ईसा ने जवाब दिया, “जी, आप ख़ुद कहते हैं।”
12 लेकिन जब राहनुमा इमामों और क़ौम के बुज़ुर्गों
ने उस पर इल्ज़ाम लगाए तो ईसा ख़ामोश रहा।

13 चुनाँचे पीलातुस ने दुबारा उस से सवाल किया,
“क्या तुम यह तमाम इल्ज़ामात नहीं सुन रहे जो तुम
पर लगाए जा रहे हैं?”
14 लेकिन ईसा ने एक इल्ज़ाम का भी जवाब न
दिया, इस लिए गवर्नर निहायत हैरान हुआ।

सज़ा-ए-मौत का फ़ैसला

15 उन दिनों यह रिवाज था कि गवर्नर हर साल
फ़सह की ईद पर एक क़ैदी को आज़ाद कर देता
था। यह क़ैदी हुजूम से मुन्तख़ब किया जाता था।
16 उस वक़्त जेल में एक बदनाम क़ैदी था। उस का
नाम बर-अब्बा था। 17 चुनाँचे जब हुजूम जमा हुआ
तो पीलातुस ने उस से पूछा, “तुम क्या चाहते हो? मैं
बर-अब्बा को आज़ाद करूँ या ईसा को जो मसीह
कहलाता है?” 18 वह तो जानता था कि उन्हों ने ईसा
को सिर्फ़ हसद की बिना पर उस के हवाले किया है।
19 जब पीलातुस यूँ अदालत के तख़्त पर बैठा था
तो उस की बीवी ने उसे पैग़ाम भेजा, “इस बेक़ुसूर
आदमी को हाथ न लगाएँ, क्यूँकि मुझे पिछली रात
इस के बाइस ख़्वाब में शदीद तक्लीफ़ हुई।”
20 लेकिन राहनुमा इमामों और क़ौम के बुज़ुर्गों ने
हुजूम को उकसाया कि वह बर-अब्बा को माँगें और
ईसा की मौत तलब करें। गवर्नर ने दुबारा पूछा,
21 “मैं इन दोनों में से किस को तुम्हारे लिए आज़ाद
करूँ?”
वह चिल्लाए, “बर-अब्बा को।”
22 पीलातुस ने पूछा, “फिर मैं ईसा के साथ क्या
करूँ जो मसीह कहलाता है?”
वह चीख़े, “उसे मस्लूब करें।”
23 पीलातुस ने पूछा, “क्यूँ? उस ने क्या जुर्म किया
है?”
लेकिन लोग मज़ीद शोर मचा कर चीख़ते रहे, “उसे
मस्लूब करें!”
24 पीलातुस ने देखा कि वह किसी नतीजे तक नहीं
पहुँच रहा बल्कि हंगामा बरपा हो रहा है। इस लिए
उस ने पानी ले कर हुजूम के सामने अपने हाथ धोए।
उस ने कहा, “अगर इस आदमी को क़त्ल किया
जाए तो मैं बेक़ुसूर हूँ, तुम ही उस के लिए जवाबदिह
ठहरो।”
25 तमाम लोगों ने जवाब दिया, “हम और हमारी
औलाद उस के ख़ून के जवाबदिह हैं।”
26 फिर उस ने बर-अब्बा को आज़ाद करके उन्हें दे
दिया। लेकिन ईसा को उस ने कोड़े लगाने का हुक्म
दिया, फिर उसे मस्लूब करने के लिए फ़ौजियों के
हवाले कर दिया।

फ़ौजी ईसा का मज़ाक़ उड़ाते हैं

27 गवर्नर के फ़ौजी ईसा को महल बनाम प्रैटोरियुम
के सहन में ले गए और पूरी पलटन को उस के इर्दगिर्द
इकट्ठा किया। 28 उस के कपड़े उतार कर उन्हों ने उसे
अर्ग़वानी रंग का लिबास पहनाया, 29 फिर काँटेदार
टहनियों का एक ताज बना कर उस के सर पर रख
दिया। उस के दहने हाथ में छड़ी पकड़ा कर उन्हों ने
उस के सामने घुटने टेक कर उस का मज़ाक़ उड़ाया,
“ऐ यहूदियों के बादशाह, आदाब!” 30 वह उस पर
थूकते रहे, छड़ी ले कर बार बार उस के सर को मारा।
31 फिर उस का मज़ाक़ उड़ाने से थक कर उन्हों ने
अर्ग़वानी लिबास उतार कर उसे दुबारा उस के अपने
कपड़े पहनाए और उसे मस्लूब करने के लिए ले गए।

ईसा को मस्लूब किया जाता है

32 शहर से निकलते वक़्त उन्हों ने एक आदमी को
देखा जो लिबिया के शहर कुरेन का रहने वाला था।
उस का नाम शमाऊन था। उसे उन्हों ने सलीब उठा
कर ले जाने पर मज्बूर किया। 33 यूँ चलते चलते वह
एक मक़ाम तक पहुँच गए जिस का नाम गुल्गुता
(यानी खोपड़ी का मक़ाम) था। 34 वहाँ उन्हों ने उसे
मै पेश की जिस में कोई कड़वी चीज़ मिलाई गई
थी। लेकिन चख कर ईसा ने उसे पीने से इन्कार कर
दिया।
35 फिर फ़ौजियों ने उसे मस्लूब किया और उस के
कपड़े आपस में बाँट लिए। यह फ़ैसला करने के लिए

कि किस को क्या क्या मिले उन्हों ने क़ुरआ डाला।
36 यूँ वह वहाँ बैठ कर उस की पहरादारी करते रहे।
37 सलीब पर ईसा के सर के ऊपर एक तख़्ती लगा
दी गई जिस पर यह इल्ज़ाम लिखा था, "यह यहूदियों
का बादशाह ईसा है।" 38 दो डाकुओं को भी ईसा के
साथ मस्लूब किया गया, एक को उस के दहने हाथ
और दूसरे को उस के बाएँ हाथ।

39 जो वहाँ से गुज़रे उन्हों ने कुफ़्र बक कर उस की
तज़्लील की और सर हिला हिला कर अपनी हिक़ारत
का इज़हार किया। 40 उन्हों ने कहा, "तू ने तो कहा
था कि मैं बैत-उल-मुक़द्दस को ढा कर उसे तीन दिन
के अन्दर अन्दर दुबारा तामीर कर दूँगा। अब अपने
आप को बचा! अगर तू वाक़ई अल्लाह का फ़र्ज़न्द है
तो सलीब पर से उतर आ।"

41 राहनुमा इमामों, शरीअत के उलमा और क़ौम
के बुज़ुर्गों ने भी ईसा का मज़ाक़ उड़ाया, 42 "इस
ने औरों को बचाया, लेकिन अपने आप को नहीं
बचा सकता। यह इस्राईल का बादशाह है! अभी यह
सलीब पर से उतर आए तो हम इस पर ईमान ले
आएँगे। 43 इस ने अल्लाह पर भरोसा रखा है। अब
अल्लाह इसे बचाए अगर वह इसे चाहता है, क्यूँकि
इस ने कहा, 'मैं अल्लाह का फ़र्ज़न्द हूँ'।"

44 और जिन डाकुओं को उस के साथ मस्लूब
किया गया था उन्हों ने भी उसे लान-तान की।

ईसा की मौत

45 दोपहर बारह बजे पूरा मुल्क अंधेरे में डूब गया।
यह तारीकी तीन घंटों तक रही। 46 फिर तीन बजे
ईसा ऊँची आवाज़ से पुकार उठा, "एली, एली, लमा
शबक़तनी" जिस का मतलब है, "ऐ मेरे ख़ुदा, ऐ मेरे
ख़ुदा, तू ने मुझे क्यूँ तर्क कर दिया है?"

47 यह सुन कर पास खड़े कुछ लोग कहने लगे,
"वह इल्यास नबी को बुला रहा है।" 48 उन में से
एक ने फ़ौरन दौड़ कर एक इस्फ़ंज को मै के सिरके
में डुबोया और उसे डंडे पर लगा कर ईसा को चुसाने
की कोशिश की।

49 दूसरों ने कहा, "आओ, हम देखें, शायद इल्यास
आ कर उसे बचाए।"

50 लेकिन ईसा ने दुबारा बड़े ज़ोर से चिल्ला कर दम
छोड़ दिया।

51 उसी वक़्त बैत-उल-मुक़द्दस के मुक़द्दसतरीन
कमरे के सामने लटका हुआ पर्दा ऊपर से ले कर नीचे
तक दो हिस्सों में फट गया। ज़ल्ज़ला आया, चटानें
फट गईं 52 और क़ब्रें खुल गईं। कई मरहूम मुक़द्दसीन
के जिस्मों को ज़िन्दा कर दिया गया। 53 वह ईसा के
जी उठने के बाद क़ब्रों में से निकल कर मुक़द्दस शहर
में दाख़िल हुए और बहुतों को नज़र आए।

54 जब पास खड़े रोमी अफ़सर [s]और ईसा की
पहरादारी करने वाले फ़ौजियों ने ज़ल्ज़ला और यह
तमाम वाक़िआत देखे तो वह निहायत दहशतज़दा हो
गए। उन्हों ने कहा, "यह वाक़ई अल्लाह का फ़र्ज़न्द
था।"

55 बहुत सी ख़वातीन भी वहाँ थीं जो कुछ फ़ासिले
पर इस का मुशाहदा कर रही थीं। वह गलील में ईसा
के पीछे चल कर यहाँ तक उस की ख़िदमत करती
आई थीं। 56 उन में मरियम मग्दलीनी, याक़ूब और
यूसुफ़ की माँ मरियम और ज़ब्दी के बेटों याक़ूब और
यूहन्ना की माँ भी थीं।

ईसा को दफ़न किया जाता है

57 जब शाम होने को थी तो अरिमतियाह का एक
दौलतमन्द आदमी बनाम यूसुफ़ आया। वह भी ईसा
का शागिर्द था। 58 उस ने पीलातुस के पास जा कर
ईसा की लाश माँगी, और पीलातुस ने हुक्म दिया
कि वह उसे दे दी जाए। 59 यूसुफ़ ने लाश को ले
कर उसे कतान के एक साफ़ कफ़न में लपेटा 60 और
अपनी ज़ाती ग़ैरइस्तेमालशुदा क़ब्र में रख दिया जो
चटान में तराशी गई थी। आख़िर में उस ने एक बड़ा

---

[s]सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

पत्थर लुढ़का कर क़ब्र का मुँह बन्द कर दिया और
चला गया। 61 उस वक़्त मरियम मग्दलीनी और दूसरी
मरियम क़ब्र के मुक़ाबिल बैठी थीं।

क़ब्र की पहरादारी

62 अगले दिन, जो सबत का दिन था, राहनुमा इमाम
और फ़रीसी पीलातुस के पास आए। 63 "जनाब,"
उन्हों ने कहा, "हमें याद आया कि जब वह धोकेबाज़
अभी ज़िन्दा था तो उस ने कहा था, 'तीन दिन के बाद
मैं जी उठूँगा।' 64 इस लिए हुक्म दें कि क़ब्र को तीसरे
दिन तक महफ़ूज़ रखा जाए। ऐसा न हो कि उस के
शागिर्द आ कर उस की लाश को चुरा ले जाएँ और
लोगों को बताएँ कि वह मुर्दों में से जी उठा है। अगर
ऐसा हुआ तो यह आख़िरी धोका पहले धोके से भी
ज़्यादा बड़ा होगा।"

65 पीलातुस ने जवाब दिया, "पहरेदारों को ले कर
क़ब्र को इतना महफ़ूज़ कर दो जितना तुम कर सकते
हो।"

66 चुनाँचे उन्हों ने जा कर क़ब्र को महफ़ूज़ कर
लिया। क़ब्र के मुँह पर पड़े पत्थर पर मुहर लगा कर
उन्हों ने उस पर पहरेदार मुक़र्रर कर दिए।

ईसा जी उठता है

28 1 इत्वार को सुब्ह-सवेरे ही मरियम
मग्दलीनी और दूसरी मरियम क़ब्र को
देखने के लिए निकलीं। सूरज तुलू हो रहा था।
2 अचानक एक शदीद ज़ल्ज़ला आया, क्यूँकि रब
का एक फ़रिश्ता आसमान से उतर आया और क़ब्र
के पास जा कर उस पर पड़े पत्थर को एक तरफ़
लुढ़का दिया। फिर वह उस पर बैठ गया। 3 उस
की शक्ल-ओ-सूरत बिजली की तरह चमक रही थी
और उस का लिबास बर्फ़ की मानिन्द सफ़ेद था।
4 पहरेदार इतने डर गए कि वह लरज़ते लरज़ते मुर्दा
से हो गए।

5 फ़रिश्ते ने ख़वातीन से कहा, "मत डरो। मुझे
मालूम है कि तुम ईसा को ढूँड रही हो जो मस्लूब
हुआ था। 6 वह यहाँ नहीं है। वह जी उठा है, जिस
तरह उस ने फ़रमाया था। आओ, उस जगह को ख़ुद
देख लो जहाँ वह पड़ा था। 7 और अब जल्दी से जा
कर उस के शागिर्दों को बता दो कि वह जी उठा है
और तुम्हारे आगे आगे गलील पहुँच जाएगा। वहीं
तुम उसे देखोगे। अब मैं ने तुम को इस से आगाह
किया है।"

8 ख़वातीन जल्दी से क़ब्र से चली गईं। वह सहमी
हुई लेकिन बड़ी ख़ुश थीं और दौड़ी दौड़ी उस के
शागिर्दों को यह ख़बर सुनाने गईं।

9 अचानक ईसा उन से मिला। उस ने कहा,
"सलाम।" वह उस के पास आईं, उस के पाँओ पकड़े
और उसे सिज्दा किया। 10 ईसा ने उन से कहा, "मत
डरो। जाओ, मेरे भाइयों को बता दो कि वह गलील
को चले जाएँ। वहाँ वह मुझे देखेंगे।"

पहरेदारों की रिपोर्ट

11 ख़वातीन अभी रास्ते में थीं कि पहरेदारों में से
कुछ शहर में गए और राहनुमा इमामों को सब कुछ
बता दिया। 12 राहनुमा इमामों ने क़ौम के बुज़ुर्गों के
साथ एक मीटिंग मुनअक़िद की और पहरेदारों को
रिश्वत की बड़ी रक़म देने का फ़ैसला किया। 13 उन्हों
ने उन्हें बताया, "तुम को कहना है, 'जब हम रात
के वक़्त सो रहे थे तो उस के शागिर्द आए और उसे
चुरा ले गए।' 14 अगर यह ख़बर गवर्नर तक पहुँचे तो
हम उसे समझा लेंगे। तुम को फ़िक्र करने की ज़रूरत
नहीं।"

15 चुनाँचे पहरेदारों ने रिश्वत ले कर वह कुछ किया
जो उन्हें सिखाया गया था। उन की यह कहानी
यहूदियों के दरमियान बहुत फैलाई गई और आज
तक उन में राइज है।

ईसा अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर होता है

16 फिर ग्यारह शागिर्द गलील के उस पहाड़ के पास
पहुँचे जहाँ ईसा ने उन्हें जाने को कहा था। 17 वहाँ
उसे देख कर उन्हों ने उसे सिज्दा किया। लेकिन कुछ

शक में पड़ गए। 18 फिर ईसा ने उन के पास आ कर
कहा, “आसमान और ज़मीन का कुल इख़तियार मुझे
दे दिया गया है। 19 इस लिए जाओ, तमाम क़ौमों को
शागिर्द बना कर उन्हें बाप, फ़र्ज़न्द और रूह-उल-
क़ुद्स के नाम से बपतिस्मा दो। 20 और उन्हें यह
सिखाओ कि वह उन तमाम अह्काम के मुताबिक़
ज़िन्दगी गुज़ारें जो मैं ने तुम्हें दिए हैं। और देखो, मैं
दुनिया के इख़तिताम तक हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।”

मर्क़ुस

यहया बपतिस्मा देने वाले की ख़िदमत

1 1 यह अल्लाह के फ़र्ज़न्द ईसा मसीह के बारे में
ख़ुशख़बरी है, 2 जो यसायाह नबी की पेशगोई
के मुताबिक़ यूँ शुरू हुई :
'देख, मैं अपने पैग़म्बर को तेरे आगे आगे भेज देता
हूँ
जो तेरे लिए रास्ता तय्यार करेगा।
3 रेगिस्तान में एक आवाज़ पुकार रही है,
रब की राह तय्यार करो!
उस के रास्ते सीधे बनाओ।'
4 यह पैग़म्बर यहया बपतिस्मा देने वाला था।
रेगिस्तान में रह कर उस ने एलान किया कि लोग
तौबा करके बपतिस्मा लें ताकि उन्हें अपने गुनाहों
की मुआफ़ी मिल जाए। 5 यहूदिया के पूरे इलाक़े के
लोग यरूशलम के तमाम बाशिन्दों समेत निकल कर
उस के पास आए। और अपने गुनाहों को तस्लीम
करके उन्हों ने दरया-ए-यर्दन में यहया से बपतिस्मा
लिया।
6 यहया ऊँटों के बालों का लिबास पहने और कमर
पर चमड़े का पटका बांधे रहता था। ख़ुराक के तौर
पर वह टिड्डियाँ और जंगली शहद खाता था। 7 उस
ने एलान किया, "मेरे बाद एक आने वाला है जो मुझ
से बड़ा है। मैं झुक कर उस के जूतों के तस्मे खोलने
के भी लाइक़ नहीं। 8 मैं तुम को पानी से बपतिस्मा
देता हूँ, लेकिन वह तुम्हें रूह-उल-क़ुद्स से बपतिस्मा
देगा।"

ईसा का बपतिस्मा और आज़माइश

9 उन दिनों में ईसा नासरत से आया और यहया
ने उसे दरया-ए-यर्दन में बपतिस्मा दिया। 10 पानी से
निकलते ही ईसा ने देखा कि आसमान फट रहा है
और रूह-उल-क़ुद्स कबूतर की तरह मुझ पर उतर
रहा है। 11 साथ साथ आसमान से एक आवाज़ सुनाई
दी, "तू मेरा प्यारा फ़र्ज़न्द है, तुझ से मैं ख़ुश हूँ।"
12 इस के फ़ौरन बाद रूह-उल-क़ुद्स ने उसे
रेगिस्तान में भेज दिया। 13 वहाँ वह चालीस दिन रहा
जिस के दौरान इब्लीस उस की आज़माइश करता
रहा। वह जंगली जानवरों के दरमियान रहता और
फ़रिश्ते उस की ख़िदमत करते थे।

ईसा चार मछेरों को बुलाता है

14 जब यहया को जेल में डाल दिया गया तो ईसा
गलील के इलाक़े में आया और अल्लाह की ख़ुशख़बरी
का एलान करने लगा। 15 वह बोला, "मुक़र्ररा वक़्त
आ गया है, अल्लाह की बादशाही क़रीब आ गई
है। तौबा करो और अल्लाह की ख़ुशख़बरी पर ईमान
लाओ।"
16 एक दिन जब ईसा गलील की झील के किनारे
किनारे चल रहा था तो उस ने शमाऊन और उस के
भाई अन्द्रियास को देखा। वह झील में जाल डाल रहे
थे क्यूँकि वह माहीगीर थे। 17 उस ने कहा, "आओ,
मेरे पीछे हो लो, मैं तुम को आदमगीर बनाऊँगा।"
18 यह सुनते ही वह अपने जालों को छोड़ कर उस
के पीछे हो लिए।
19 थोड़ा सा आगे जा कर ईसा ने ज़ब्दी के बेटों
याक़ूब और यूहन्ना को देखा। वह कश्ती में बैठे अपने
जालों की मरम्मत कर रहे थे। 20 उस ने उन्हें फ़ौरन
बुलाया तो वह अपने बाप को मज़दूरों समेत कश्ती
में छोड़ कर उस के पीछे हो लिए।

आदमी की बदरुह के क़ब्ज़े से रिहाई

21 वह कफ़र्नहूम शहर में दाख़िल हुए। और सबत
के दिन ईसा इबादतख़ाने में जा कर लोगों को सिखाने

लगा। 22 वह उस की तालीम सुन कर हक्का-बक्का रह
गए क्यूँकि वह उन्हें शरीअत के आलिमों की तरह
नहीं बल्कि इख़तियार के साथ सिखाता था।
23 उन के इबादतख़ाने में एक आदमी था जो किसी
नापाक रूह के क़ब्ज़े में था। ईसा को देखते ही वह
चीख़ चीख़ कर बोलने लगा, 24 "ऐ नासरत के ईसा,
हमारा आप के साथ क्या वास्ता है? क्या आप हमें
हलाक करने आए हैं? मैं तो जानता हूँ कि आप कौन
हैं, आप अल्लाह के क़ुद्दूस हैं।"
25 ईसा ने उसे डाँट कर कहा, "ख़ामोश! आदमी से
निकल जा!" 26 इस पर बदरुह आदमी को झंझोड़
कर और चीख़ें मार मार कर उस में से निकल गई।
27 तमाम लोग घबरा गए और एक दूसरे से कहने
लगे, "यह क्या है? एक नई तालीम जो इख़तियार के
साथ दी जा रही है। और वह बदरूहों को हुक्म देता
है तो वह उस की मानती हैं।"
28 और ईसा के बारे में चर्चा जल्दी से गलील के
पूरे इलाक़े में फैल गया।

बहुत से मरीज़ों की शिफ़ा

29 इबादतख़ाने से निकलने के ऐन बाद वह याक़ूब
और यूहन्ना के साथ शमाऊन और अन्द्रियास के घर
गए। 30 वहाँ शमाऊन की सास बिस्तर पर पड़ी थी,
क्यूँकि उसे बुख़ार था। उन्हों ने ईसा को बता दिया
31 तो वह उस के नज़्दीक गया। उस का हाथ पकड़
कर उस ने उठने में उस की मदद की। इस पर बुख़ार
उतर गया और वह उन की ख़िदमत करने लगी।
32 जब शाम हुई और सूरज ग़ुरूब हुआ तो लोग
तमाम मरीज़ों और बदरुह-गिरिफ़्ता अश्ख़ास को
ईसा के पास लाए। 33 पूरा शहर दरवाज़े पर जमा हो
गया 34 और ईसा ने बहुत से मरीज़ों को मुख़्तलिफ़
क़िस्म की बीमारियों से शिफ़ा दी। उस ने बहुत सी
बदरुहें भी निकाल दीं, लेकिन उस ने उन्हें बोलने न
दिया, क्यूँकि वह जानती थीं कि वह कौन है।

गलील में मुनादी

35 अगले दिन सुब्ह-सवेरे जब अभी अंधेरा ही था
तो ईसा उठ कर दुआ करने के लिए किसी वीरान
जगह चला गया। 36 बाद में शमाऊन और उस के
साथी उसे ढूँडने निकले। 37 जब मालूम हुआ कि वह
कहाँ है तो उन्हों ने उस से कहा, "तमाम लोग आप
को तलाश कर रहे हैं!"
38 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, "आओ, हम साथ
वाली आबादियों में जाएँ ताकि मैं वहाँ भी मुनादी
करूँ। क्यूँकि मैं इसी मक़्सद से निकल आया हूँ।"
39 चुनाँचे वह पूरे गलील में से गुज़रता हुआ
इबादतख़ानों में मुनादी करता और बदरूहों को
निकालता रहा।

कोढ़ से शिफ़ा

40 एक आदमी ईसा के पास आया जो कोढ़ का
मरीज़ था। घुटनों के बल झुक कर उस ने मिन्नत की,
"अगर आप चाहें तो मुझे पाक-साफ़ कर सकते हैं।"
41 ईसा को तरस आया। उस ने अपना हाथ बढ़ा
कर उसे छुआ और कहा, "मैं चाहता हूँ, पाक-साफ़
हो जा।" 42 इस पर बीमारी फ़ौरन दूर हो गई और
वह पाक-साफ़ हो गया। 43 ईसा ने उसे फ़ौरन रुख़्सत
करके सख़्ती से समझाया, 44 "ख़बरदार! यह बात
किसी को न बताना बल्कि बैत-उल-मुक़द्दस में इमाम
के पास जा ताकि वह तेरा मुआइना करे। अपने साथ
वह क़ुर्बानी ले जा जिस का तक़ाज़ा मूसा की शरीअत
उन से करती है जिन्हें कोढ़ से शिफ़ा मिली हो। यूँ
अलानिया तस्दीक़ हो जाएगी कि तू वाक़ई पाक-
साफ़ हो गया है।"
45 आदमी चला गया, लेकिन वह हर जगह अपनी
कहानी सुनाने लगा। उस ने यह ख़बर इतनी फैलाई
कि ईसा खुले तौर पर किसी भी शहर में दाख़िल न हो
सका बल्कि उसे वीरान जगहों में रहना पड़ा। लेकिन
वहाँ भी लोग हर जगह से उस के पास पहुँच गए।

मफ़्लूज के लिए छत खोली जाती है

2 1 कुछ दिनों के बाद ईसा कफ़र्नहूम में वापस
आया। जल्द ही ख़बर फैल गई कि वह घर में
है। 2 इस पर इतने लोग जमा हो गए कि पूरा घर भर
गया बल्कि दरवाज़े के सामने भी जगह न रही। वह
उन्हें कलाम-ए-मुक़द्दस सुनाने लगा। 3 इतने में कुछ
लोग पहुँचे। उन में से चार आदमी एक मफ़्लूज को
उठाए ईसा के पास लाना चाहते थे। 4 मगर वह उसे
हुजूम की वजह से ईसा तक न पहुँचा सके, इस लिए
उन्हों ने छत खोल दी। ईसा के ऊपर का हिस्सा उधेड़
कर उन्हों ने चारपाई को जिस पर मफ़्लूज लेटा था
उतार दिया। 5 जब ईसा ने उन का ईमान देखा तो उस
ने मफ़्लूज से कहा, "बेटा, तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए
गए हैं।"

6 शरीअत के कुछ आलिम वहाँ बैठे थे। वह यह
सुन कर सोच-बिचार में पड़ गए। 7 "यह किस तरह
ऐसी बातें कर सकता है? कुफ़्र बक रहा है। सिर्फ़
अल्लाह ही गुनाह मुआफ़ कर सकता है।"

8 ईसा ने अपनी रूह में फ़ौरन जान लिया कि वह
क्या सोच रहे हैं, इस लिए उस ने उन से पूछा,
"तुम दिल में इस तरह की बातें क्यूँ सोच रहे हो?
9 क्या मफ़्लूज से यह कहना आसान है कि 'तेरे गुनाह
मुआफ़ कर दिए गए हैं' या यह कि 'उठ, अपनी
चारपाई उठा कर चल फिर'? 10 लेकिन मैं तुम को
दिखाता हूँ कि इब्न-ए-आदम को वाक़ई दुनिया में
गुनाह मुआफ़ करने का इख़तियार है।" यह कह कर
वह मफ़्लूज से मुख़ातिब हुआ, 11 "मैं तुझ से कहता
हूँ कि उठ, अपनी चारपाई उठा कर घर चला जा।"

12 वह आदमी खड़ा हुआ और फ़ौरन अपनी
चारपाई उठा कर उन के देखते देखते चला गया। सब
सख़्त हैरतज़दा हुए और अल्लाह की तम्जीद करके
कहने लगे, "ऐसा काम हम ने कभी नहीं देखा!"

ईसा मत्ती को बुलाता है

13 फिर ईसा निकल कर दुबारा झील के किनारे
गया। एक बड़ी भीड़ उस के पास आई तो वह उन्हें
सिखाने लगा। 14 चलते चलते उस ने हल्फ़ई के बेटे
लावी को देखा जो टैक्स लेने के लिए अपनी चौकी
पर बैठा था। ईसा ने उस से कहा, "मेरे पीछे हो ले।"
और लावी उठ कर उस के पीछे हो लिया।

15 बाद में ईसा लावी के घर में खाना खा रहा था।
उस के साथ न सिर्फ़ उस के शागिर्द बल्कि बहुत से
टैक्स लेने वाले और गुनाहगार भी थे, क्यूँकि उन में
से बहुतेरे उस के पैरोकार बन चुके थे। 16 शरीअत के
कुछ फ़रीसी आलिमों ने उसे यूँ टैक्स लेने वालों और
गुनाहगारों के साथ खाते देखा तो उस के शागिर्दों से
पूछा, "यह टैक्स लेने वालों और गुनाहगारों के साथ
क्यूँ खाता है?"

17 यह सुन कर ईसा ने जवाब दिया, "सेहतमन्दों
को डाक्टर की ज़रूरत नहीं होती बल्कि मरीज़ों को।
मैं रास्तबाज़ों को नहीं बल्कि गुनाहगारों को बुलाने
आया हूँ।"

शागिर्द रोज़ा क्यूँ नहीं रखते?

18 यहया के शागिर्द और फ़रीसी रोज़ा रखा करते
थे। एक मौक़े पर कुछ लोग ईसा के पास आए और
पूछा, "आप के शागिर्द रोज़ा क्यूँ नहीं रखते जबकि
यहया और फ़रीसियों के शागिर्द रोज़ा रखते हैं?"

19 ईसा ने जवाब दिया, "शादी के मेहमान किस
तरह रोज़ा रख सकते हैं जब दूल्हा उन के दरमियान
है? जब तक दूल्हा उन के साथ है वह रोज़ा नहीं रख
सकते। 20 लेकिन एक दिन आएगा जब दूल्हा उन से
ले लिया जाएगा। उस वक़्त वह ज़रूर रोज़ा रखेंगे।

21 कोई भी नए कपड़े का टुकड़ा किसी पुराने
लिबास में नहीं लगाता। अगर वह ऐसा करे तो नया
टुकड़ा बाद में सुकड़ कर पुराने लिबास से अलग हो
जाएगा। यूँ पुराने लिबास की फटी हुई जगह पहले
की निस्बत ज़्यादा ख़राब हो जाएगी। 22 इसी तरह

कोई भी अंगूर का ताज़ा रस पुरानी और बेलचक मश्कों में नहीं डालता। अगर वह ऐसा करे तो पुरानी मश्कें पैदा होने वाली गैस के बाइस फट जाएँगी। नतीजे में मै और मश्कें दोनों ज़ाए हो जाएँगी। इस लिए अंगूर का ताज़ा रस नई मश्कों में डाला जाता है जो लचकदार होती हैं।”

सबत के बारे में सवाल

23 एक दिन ईसा अनाज के खेतों में से गुज़र रहा था। चलते चलते उस के शागिर्द खाने के लिए अनाज की बालें तोड़ने लगे। सबत का दिन था। 24 यह देख कर फ़रीसियों ने ईसा से पूछा, “देखो, यह क्यूँ ऐसा कर रहे हैं? सबत के दिन ऐसा करना मना है।”

25 ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुम ने कभी नहीं पढ़ा कि दाऊद ने क्या किया जब उसे और उस के साथियों को भूक लगी और उन के पास ख़ुराक नहीं थी? 26 उस वक़्त अबियातर इमाम-ए-आज़म था। दाऊद अल्लाह के घर में दाख़िल हुआ और रब के लिए मख़्सूसशुदा रोटियाँ ले कर खाईं, अगरचे सिर्फ़ इमामों को इन्हें खाने की इजाज़त है। और उस ने अपने साथियों को भी यह रोटियाँ खिलाईं।”

27 फिर उस ने कहा, “इन्सान को सबत के दिन के लिए नहीं बनाया गया बल्कि सबत का दिन इन्सान के लिए। 28 चुनाँचे इब्न-ए-आदम सबत का भी मालिक है।”

सूखे हुए हाथ की शिफ़ा

3 1 किसी और वक़्त जब ईसा इबादतख़ाने में गया तो वहाँ एक आदमी था जिस का हाथ सूखा हुआ था। 2 सबत का दिन था और लोग बड़े ग़ौर से देख रहे थे कि क्या ईसा उस आदमी को आज भी शिफ़ा देगा। क्यूँकि वह इस पर इल्ज़ाम लगाने का कोई बहाना तलाश कर रहे थे। 3 ईसा ने सूखे हाथ वाले आदमी से कहा, “उठ, दरमियान में खड़ा हो।” 4 फिर ईसा ने उन से पूछा, “मुझे बताओ, शरीअत हमें सबत के दिन क्या करने की इजाज़त देती है, नेक काम करने की या ग़लत काम करने की, किसी की जान बचाने की या उसे तबाह करने की?”

सब ख़ामोश रहे। 5 वह ग़ुस्से से अपने इर्दगिर्द के लोगों की तरफ़ देखने लगा। उन की सख़्तदिली उस के लिए बड़े दुख का बाइस बन रही थी। फिर उस ने आदमी से कहा, “अपना हाथ आगे बढ़ा।” उस ने ऐसा किया तो उस का हाथ बहाल हो गया। 6 इस पर फ़रीसी बाहर निकल कर सीधे हेरोदेस की पार्टी के अफ़राद के साथ मिल कर ईसा को क़त्ल करने की साज़िशें करने लगे।

झील के किनारे पर हुजूम

7 लेकिन ईसा वहाँ से हट कर अपने शागिर्दों के साथ झील के पास गया। एक बड़ा हुजूम उस के पीछे हो लिया। लोग न सिर्फ़ गलील के इलाक़े से आए बल्कि बहुत सी और जगहों यानी यहूदिया, 8 यरूशलम, इदूमया, दरया-ए-यर्दन के पार और सूर और सैदा के इलाक़े से भी। वजह यह थी कि ईसा के काम की ख़बर उन इलाक़ों तक भी पहुँच चुकी थी और नतीजे में बहुत से लोग वहाँ से भी आए। 9 ईसा ने शागिर्दों से कहा, “एहतियातन एक कश्ती उस वक़्त के लिए तय्यार कर रखो जब हुजूम मुझे हद से ज़्यादा दबाने लगेगा।” 10 क्यूँकि उस दिन उस ने बहुतों को शिफ़ा दी थी, इस लिए जिसे भी कोई तक्लीफ़ थी वह धक्के दे दे कर उस के पास आया ताकि उसे छू सके। 11 और जब भी नापाक रूहों ने ईसा को देखा तो वह उस के सामने गिर कर चीख़ें मारने लगीं, “आप अल्लाह के फ़र्ज़न्द हैं।”

12 लेकिन ईसा ने उन्हें सख़्ती से डाँट कर कहा कि वह उसे ज़ाहिर न करें।

ईसा बारह रसूलों को मुक़र्रर करता है

13 इस के बाद ईसा ने पहाड़ पर चढ़ कर जिन्हें वह चाहता था उन्हें अपने पास बुला लिया। और वह उस के पास आए। 14 उस ने उन में से बारह को चुन लिया। उन्हें उस ने अपने रसूल मुक़र्रर कर लिया ताकि वह

उस के साथ चलें और वह उन्हें मुनादी करने के
लिए भेज सके। 15 उस ने उन्हें बदरुहें निकालने का
इख़्तियार भी दिया।
16 जिन बारह को उस ने मुक़र्रर किया उन के नाम
यह हैं : शमाऊन जिस का लक़ब उस ने पतरस
रखा, 17 ज़ब्दी के बेटे याक़ूब और यूहन्ना जिन का
लक़ब ईसा ने 'बादल की गरज के बेटे' रखा,
18 अन्द्रियास, फ़िलिप्पुस, बरतुल्माई, मत्ती, तोमा,
याक़ूब बिन हल्फ़ई, तद्दी, शमाऊन मुजाहिद 19 और
यहूदाह इस्करियोती जिस ने बाद में उसे दुश्मन के
हवाले कर दिया।

ईसा और बदरूहों का सरदार

20 फिर ईसा किसी घर में दाख़िल हुआ। इस बार भी
इतना हुजूम जमा हो गया कि ईसा को अपने शागिर्दों
समेत खाना खाने का मौक़ा भी न मिला। 21 जब उस
के ख़ानदान के अफ़राद ने यह सुना तो वह उसे पकड़
कर ले जाने के लिए आए, क्यूँकि उन्हों ने कहा, "वह
होश में नहीं है।"
22 लेकिन शरीअत के जो आलिम यरूशलम से
आए थे उन्हों ने कहा, "यह बदरूहों के सरदार बाल-
ज़बूल के क़ब्ज़े में है। उसी की मदद से बदरूहों को
निकाल रहा है।"
23 फिर ईसा ने उन्हें अपने पास बुला कर तम्सीलों
में जवाब दिया। "इब्लीस किस तरह इब्लीस को
निकाल सकता है? 24 जिस बादशाही में फूट पड़ जाए
वह क़ाइम नहीं रह सकती। 25 और जिस घराने की
ऐसी हालत हो वह भी क़ाइम नहीं रह सकता। 26 इसी
तरह अगर इब्लीस अपने आप की मुख़ालफ़त करे
और यूँ उस में फूट पड़ जाए तो वह क़ाइम नहीं रह
सकता बल्कि ख़त्म हो चुका है।
27 किसी ज़ोरावर आदमी के घर में घुस कर उस
का माल-ओ-अस्बाब लूटना उस वक़्त तक मुमकिन
नहीं है जब तक उस आदमी को बांधा न जाए। फिर
ही उसे लूटा जा सकता है।
28 मैं तुम से सच कहता हूँ कि लोगों के तमाम
गुनाह और कुफ़्र की बातें मुआफ़ की जा सकेंगी,
ख़्वाह वह कितना ही कुफ़्र क्यूँ न बकें। 29 लेकिन
जो रूह-उल-क़ुद्स के ख़िलाफ़ कुफ़्र बके उसे अबद
तक मुआफ़ी नहीं मिलेगी। वह एक अबदी गुनाह
का क़ुसूरवार ठहरेगा।" 30 ईसा ने यह इस लिए कहा
क्यूँकि आलिम कह रहे थे कि वह किसी बदरुह की
गिरिफ़्त में है।

ईसा की माँ और भाई

31 फिर ईसा की माँ और भाई पहुँच गए। बाहर खड़े
हो कर उन्हों ने किसी को उसे बुलाने को भेज दिया।
32 उस के इर्दगिर्द हुजूम बैठा था। उन्हों ने कहा,
"आप की माँ और भाई बाहर आप को बुला रहे
हैं।"
33 ईसा ने पूछा, "कौन मेरी माँ और कौन मेरे भाई
हैं?" 34 और अपने गिर्द बैठे लोगों पर नज़र डाल
कर उस ने कहा, "देखो, यह मेरी माँ और मेरे भाई
हैं। 35 जो भी अल्लाह की मर्ज़ी पूरी करता है वह मेरा
भाई, मेरी बहन और मेरी माँ है।"

बीज बोने वाले की तम्सील

4 1 फिर ईसा दुबारा झील के किनारे तालीम देने
लगा। और इतनी बड़ी भीड़ उस के पास जमा
हुई कि वह झील में खड़ी एक कश्ती में बैठ गया।
बाक़ी लोग झील के किनारे पर खड़े रहे। 2 उस ने
उन्हें बहुत सी बातें तम्सीलों में सिखाईं। उन में से
एक यह थी :
3 "सुनो! एक किसान बीज बोने के लिए निकला।
4 जब बीज इधर उधर बिखर गया तो कुछ दाने रास्ते
पर गिरे और परिन्दों ने आ कर उन्हें चुग लिया।
5 कुछ पथरीली ज़मीन पर गिरे जहाँ मिट्टी की कमी
थी। वह जल्द उग आए क्यूँकि मिट्टी गहरी नहीं थी।
6 लेकिन जब सूरज निकला तो पौदे झुलस गए और
चूँकि वह जड़ न पकड़ सके इस लिए सूख गए।
7 कुछ दाने ख़ुदरौ काँटेदार पौदों के दरमियान भी

गिरे। वहाँ वह उगने तो लगे, लेकिन ख़ुदरौ पौदों ने
साथ साथ बढ़ कर उन्हें फलने फूलने की जगह न
दी। चुनाँचे वह भी ख़त्म हो गए और फल न ला सके।
8 लेकिन ऐसे दाने भी थे जो ज़रख़ेज़ ज़मीन में गिरे।
वहाँ वह फूट निकले और बढ़ते बढ़ते तीस गुना,
साठ गुना बल्कि सौ गुना तक फल लाए।"
9 फिर उस ने कहा, "जो सुन सकता है वह सुन ले!"

तम्सीलों का मक़्सद

10 जब वह अकेला था तो जो लोग उस के इर्दगिर्द
जमा थे उन्हों ने बारह शागिर्दों समेत उस से पूछा कि
इस तम्सील का क्या मतलब है? 11 उस ने जवाब
दिया, "तुम को तो अल्लाह की बादशाही का भेद
समझने की लियाक़त दी गई है। लेकिन मैं इस दाइरे
से बाहर के लोगों को हर बात समझाने के लिए
तम्सीलें इस्तेमाल करता हूँ 12 ताकि पाक कलाम पूरा
हो जाए कि

'वह अपनी आँखों से देखेंगे मगर कुछ नहीं जानेंगे,
वह अपने कानों से सुनेंगे मगर कुछ नहीं समझेंगे,
ऐसा न हो कि वह मेरी तरफ़ रुजू करें
और उन्हें मुआफ़ कर दिया जाए'।"

बीज बोने वाले की तम्सील का मतलब

13 फिर ईसा ने उन से कहा, "क्या तुम यह तम्सील
नहीं समझते? तो फिर बाक़ी तमाम तम्सीलें किस
तरह समझ पाओगे? 14 बीज बोने वाला अल्लाह का
कलाम बो देता है। 15 रास्ते पर गिरने वाले दाने वह
लोग हैं जो कलाम को सुनते तो हैं, लेकिन फिर
इब्लीस फ़ौरन आ कर वह कलाम छीन लेता है जो
उन में बोया गया है। 16 पथरीली ज़मीन पर गिरने
वाले दाने वह लोग हैं जो कलाम सुनते ही उसे ख़ुशी
से क़बूल तो कर लेते हैं, 17 लेकिन वह जड़ नहीं
पकड़ते और इस लिए ज़्यादा देर तक क़ाइम नहीं
रहते। जूँ ही वह कलाम पर ईमान लाने के बाइस
किसी मुसीबत या ईज़ारसानी से दोचार हो जाएँ, तो
वह बर्गश्ता हो जाते हैं। 18 ख़ुदरौ काँटेदार पौदों के
दरमियान गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम सुनते
तो हैं, 19 लेकिन फिर रोज़मर्रा की परेशानियाँ, दौलत
का फ़रेब और दीगर चीज़ों का लालच कलाम को
फलने फूलने नहीं देते। नतीजे में वह फल लाने तक
नहीं पहुँचता। 20 इस के मुक़ाबले में ज़रख़ेज़ ज़मीन
में गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम सुन कर उसे
क़बूल करते और बढ़ते बढ़ते तीस गुना, साठ गुना
बल्कि सौ गुना तक फल लाते हैं।"

कोई चराग़ को बर्तन के नीचे नहीं छुपाता

21 ईसा ने बात जारी रखी और कहा, "क्या चराग़
को इस लिए जला कर लाया जाता है कि वह किसी
बर्तन या चारपाई के नीचे रखा जाए? हरगिज़ नहीं!
उसे शमादान पर रखा जाता है। 22 क्यूँकि जो कुछ
भी इस वक़्त पोशीदा है उसे आख़िरकार ज़ाहिर हो
जाना है और तमाम भेदों को एक दिन खुल जाना है।
23 अगर कोई सुन सके तो सुन ले।"
24 उस ने उन से यह भी कहा, "इस पर ध्यान दो
कि तुम क्या सुनते हो। जिस हिसाब से तुम दूसरों
को देते हो उसी हिसाब से तुम को भी दिया जाएगा
बल्कि तुम को उस से बढ़ कर मिलेगा। 25 क्यूँकि
जिसे कुछ हासिल हुआ है उसे और भी दिया जाएगा,
जबकि जिसे कुछ हासिल नहीं हुआ उस से वह थोड़ा
बहुत भी छीन लिया जाएगा जो उसे हासिल है।"

ख़ुद-ब-ख़ुद उगने वाले बीज की तम्सील

26 फिर ईसा ने कहा, "अल्लाह की बादशाही यूँ
समझ लो : एक किसान ज़मीन में बीज बिखेर देता
है। 27 यह बीज फूट कर दिन रात उगता रहता है,
ख़्वाह किसान सो रहा या जाग रहा हो। उसे मालूम
नहीं कि यह क्यूँकर होता है। 28 ज़मीन ख़ुद-ब-ख़ुद
अनाज की फ़सल पैदा करती है। पहले पत्ते निकलते
हैं, फिर बालें नज़र आने लगती हैं और आख़िर में
दाने पैदा हो जाते हैं। 29 और जूँ ही अनाज की फ़सल
पक जाती है किसान आ कर दरान्ती से उसे काट

लेता है, क्यूँकि फ़सल की कटाई का वक़्त आ चुका होता है।”

राई के दाने की तम्सील

30 फिर ईसा ने कहा, “हम अल्लाह की बादशाही का मुवाज़ना किस चीज़ से करें? या हम कौन सी तम्सील से इसे बयान करें? 31 वह राई के दाने की मानिन्द है जो ज़मीन में डाला गया हो। राई बीजों में सब से छोटा दाना है 32 लेकिन बढ़ते बढ़ते सब्ज़ियों में सब से बड़ा हो जाता है। उस की शाख़ें इतनी लम्बी हो जाती हैं कि परिन्दे उस के साय में अपने घोंसले बना सकते हैं।”

33 ईसा इसी क़िस्म की बहुत सी तम्सीलों की मदद से उन्हें कलाम यूँ सुनाता था कि वह इसे समझ सकते थे। 34 हाँ, अवाम को वह सिर्फ़ तम्सीलों के ज़रीए सिखाता था। लेकिन जब वह अपने शागिर्दों के साथ अकेला होता तो वह हर बात की तश्रीह करता था।

ईसा आँधी को थमा देता है

35 उस दिन जब शाम हुई तो ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, “आओ, हम झील के पार चलें।” 36 चुनाँचे वह भीड़ को रुख़्सत करके उसे ले कर चल पड़े। बाज़ और कश्तियाँ भी साथ गईं। 37 अचानक सख़्त आँधी आई। लहरें कश्ती से टकरा कर उसे पानी से भरने लगीं, 38 लेकिन ईसा अभी तक कश्ती के पिछले हिस्से में अपना सर गद्दी पर रखे सो रहा था। शागिर्दों ने उसे जगा कर कहा, “उस्ताद, क्या आप को पर्वा नहीं कि हम तबाह हो रहे हैं?”

39 वह जाग उठा, आँधी को डाँटा और झील से कहा, “ख़ामोश! चुप कर!” इस पर आँधी थम गई और लहरें बिलकुल साकित हो गईं। 40 फिर ईसा ने शागिर्दों से पूछा, “तुम क्यूँ घबराते हो? क्या तुम अभी तक ईमान नहीं रखते?” 41 उन पर सख़्त ख़ौफ़ तारी हो गया और वह एक दूसरे से कहने लगे, “आख़िर यह कौन है? हवा और झील भी उस का हुक्म मानती हैं।”

ईसा एक गरासीनी आदमी से बदरुहें निकाल देता है

5 1 फिर वह झील के पार गरासा के इलाक़े में पहुँचे। 2 जब ईसा कश्ती से उतरा तो एक आदमी जो नापाक रूह की गिरिफ़्त में था क़ब्रों में से निकल कर ईसा को मिला। 3 यह आदमी क़ब्रों में रहता और इस नौबत तक पहुँच गया था कि कोई भी उसे बांध न सकता था, चाहे उसे ज़न्जीरों से भी बांधा जाता। 4 उसे बहुत दफ़ा बेड़ियों और ज़न्जीरों से बांधा गया था, लेकिन जब भी ऐसा हुआ तो उस ने ज़न्जीरों को तोड़ कर बेड़ियों को टुकड़े टुकड़े कर दिया था। कोई भी उसे कंट्रोल नहीं कर सकता था। 5 दिन रात वह चीख़ें मार मार कर क़ब्रों और पहाड़ी इलाक़े में घूमता फिरता और अपने आप को पत्थरों से ज़ख़्मी कर लेता था।

6 ईसा को दूर से देख कर वह दौड़ा और उस के सामने मुँह के बल गिरा। 7 वह ज़ोर से चीख़ा, “ऐ ईसा अल्लाह तआला के फ़र्ज़न्द, मेरा आप के साथ क्या वास्ता है? अल्लाह के नाम में आप को क़सम देता हूँ कि मुझे अज़ाब में न डालें।” 8 क्यूँकि ईसा ने उसे कहा था, “ऐ नापाक रूह, आदमी में से निकल जा!”

9 फिर ईसा ने पूछा, “तेरा नाम क्या है?”

उस ने जवाब दिया, “लश्कर, क्यूँकि हम बहुत से हैं।” 10 और वह बार बार मिन्नत करता रहा कि ईसा उन्हें इस इलाक़े से न निकाले।

11 उस वक़्त क़रीब की पहाड़ी पर सूअरों का बड़ा ग़ोल चर रहा था। 12 बदरूहों ने ईसा से इल्तिमास की, “हमें सूअरों में भेज दें, हमें उन में दाख़िल होने दें।” 13 उस ने उन्हें इजाज़त दी तो बदरुहें उस आदमी में से निकल कर सूअरों में जा घुसीं। इस पर पूरे ग़ोल के तक़रीबन 2,000 सूअर भाग भाग कर पहाड़ी की ढलान पर से उतरे और झील में झपट कर डूब मरे।

14 यह देख कर सूअरों के गल्लाबान भाग गए। उन्हों
ने शहर और दीहात में इस बात का चर्चा किया तो
लोग यह मालूम करने के लिए कि क्या हुआ है अपनी
जगहों से निकल कर ईसा के पास आए। 15 उस
के पास पहुँचे तो वह आदमी मिला जिस में पहले
बदरूहों का लश्कर था। अब वह कपड़े पहने वहाँ
बैठा था और उस की ज़हनी हालत ठीक थी। यह
देख कर वह डर गए। 16 जिन्हों ने सब कुछ देखा
था उन्हों ने लोगों को बताया कि बदरुह-गिरिफ़्ता
आदमी और सूअरों के साथ क्या हुआ है।

17 फिर लोग ईसा की मिन्नत करने लगे कि वह उन
के इलाक़े से चला जाए।

18 ईसा कश्ती पर सवार होने लगा तो बदरूहों से
आज़ाद किए गए आदमी ने उस से इल्तिमास की,
"मुझे भी अपने साथ जाने दें।"

19 लेकिन ईसा ने उसे साथ जाने न दिया बल्कि
कहा, "अपने घर वापस चला जा और अपने अज़ीज़ों
को सब कुछ बता जो रब ने तेरे लिए किया है, कि
उस ने तुझ पर कितना रहम किया है।"

20 चुनाँचे आदमी चला गया और दिकपुलिस के
इलाक़े में लोगों को बताने लगा कि ईसा ने मेरे लिए
क्या कुछ किया है। और सब हैरतज़दा हुए।

याईर की बेटी और बीमार औरत

21 ईसा ने कश्ती में बैठे झील को दुबारा पार किया।
जब दूसरे किनारे पहुँचा तो एक हुजूम उस के गिर्द
जमा हो गया। वह अभी झील के पास ही था 22 कि
मक़ामी इबादतख़ाने का एक राहनुमा उस के पास
आया। उस का नाम याईर था। ईसा को देख कर वह
उस के पाँओ में गिर गया 23 और बहुत मिन्नत करने
लगा, "मेरी छोटी बेटी मरने वाली है, बराह-ए-करम
आ कर उस पर अपने हाथ रखें ताकि वह शिफ़ा पा
कर ज़िन्दा रहे।"

24 चुनाँचे ईसा उस के साथ चल पड़ा। एक बड़ी
भीड़ उस के पीछे लग गई और लोग उसे घेर कर हर
तरफ़ से दबाने लगे।

25 हुजूम में एक औरत थी जो बारह साल से ख़ून
बहने के मर्ज़ से रिहाई न पा सकी थी। 26 बहुत
डाक्टरों से अपना इलाज करवा करवा कर उसे कई
तरह की मुसीबत झेलनी पड़ी थी और इतने में उस
के तमाम पैसे भी ख़र्च हो गए थे। तो भी कोई फ़ाइदा
न हुआ था बल्कि उस की हालत मज़ीद ख़राब होती
गई। 27 ईसा के बारे में सुन कर वह भीड़ में शामिल हो
गई थी। अब पीछे से आ कर उस ने उस के लिबास
को छुआ, 28 क्यूँकि उस ने सोचा, "अगर मैं सिर्फ़
उस के लिबास को ही छू लूँ तो मैं शिफ़ा पा लूँगी।"

29 ख़ून बहना फ़ौरन बन्द हो गया और उस ने अपने
जिस्म में महसूस किया कि मुझे इस अज़ियतनाक
हालत से रिहाई मिल गई है। 30 लेकिन उसी लम्हे
ईसा को ख़ुद महसूस हुआ कि मुझ में से तवानाई
निकली है। उस ने मुड़ कर पूछा, "किस ने मेरे कपड़ों
को छुआ है?"

31 उस के शागिर्दों ने जवाब दिया, "आप ख़ुद देख
रहे हैं कि हुजूम आप को घेर कर दबा रहा है। तो
फिर आप किस तरह पूछ सकते हैं कि किस ने मुझे
छुआ?"

32 लेकिन ईसा अपने चारों तरफ़ देखता रहा कि
किस ने यह किया है। 33 इस पर वह औरत यह जान
कर कि मेरे साथ क्या हुआ है ख़ौफ़ के मारे लरज़ती
हुई उस के पास आई। वह उस के सामने गिर पड़ी
और उसे पूरी हक़ीक़त खोल कर बयान की। 34 ईसा
ने उस से कहा, "बेटी, तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया
है। सलामती से जा और अपनी अज़ियतनाक हालत
से बची रह।"

35 ईसा ने यह बात अभी ख़त्म नहीं की थी कि
इबादतख़ाने के राहनुमा याईर के घर की तरफ़ से
कुछ लोग पहुँचे और कहा, "आप की बेटी फ़ौत हो
चुकी है, अब उस्ताद को मज़ीद तक्लीफ़ देने की
क्या ज़रूरत?"

36 उन की यह बात नज़रअन्दाज़ करके ईसा ने
याईर से कहा, "मत घबराओ, फ़क़त ईमान रखो।"
37 फिर ईसा ने हुजूम को रोक लिया और सिर्फ़

पतरस, याक़ूब और उस के भाई यूहन्ना को अपने
साथ जाने की इजाज़त दी। 38 जब इबादतख़ाने के
राहनुमा के घर पहुँचे तो वहाँ बड़ी अफ़्रा-तफ़्री नज़र
आई। लोग ख़ूब गिर्या-ओ-ज़ारी कर रहे थे। 39 उन्दर
जा कर ईसा ने उन से कहा, "यह कैसा शोर-शराबा
है? क्यूँ रो रहे हो? लड़की मर नहीं गई बल्कि सो
रही है।"

40 लोग हंस कर उस का मज़ाक़ उड़ाने लगे। लेकिन
उस ने सब को बाहर निकाल दिया। फिर सिर्फ़
लड़की के वालिदैन और अपने तीन शागिर्दों को साथ
ले कर वह उस कमरे में दाख़िल हुआ जिस में लड़की
पड़ी थी। 41 उस ने उस का हाथ पकड़ कर कहा,
"तलिथा क़ूम!" इस का मतलब है, "छोटी लड़की,
मैं तुझे हुक्म देता हूँ कि जाग उठ!"

42 लड़की फ़ौरन उठ कर चलने फिरने लगी। उस
की उम्र बारह साल थी। यह देख कर लोग घबरा कर
हैरान रह गए। 43 ईसा ने उन्हें सन्जीदगी से समझाया
कि वह किसी को भी इस के बारे में न बताएँ। फिर
उस ने उन्हें कहा कि उसे खाने को कुछ दो।

ईसा को नासरत में रद्द किया जाता है

6 1 फिर ईसा वहाँ से चला गया और अपने वतनी
शहर नासरत में आया। उस के शागिर्द उस
के साथ थे। 2 सबत के दिन वह इबादतख़ाने में
तालीम देने लगा। बेशतर लोग उस की बातें सुन
कर हैरतज़दा हुए। उन्हों ने पूछा, "इसे यह कहाँ
से हासिल हुआ है? यह हिक्मत जो इसे मिली है,
और यह मोजिज़े जो इस के हाथों से होते हैं, यह
क्या है? 3 क्या यह वह बढ़ई नहीं है जो मरियम का
बेटा है और जिस के भाई याक़ूब, यूसुफ़, यहूदाह
और शमाऊन हैं? और क्या इस की बहनें यहीं नहीं
रहतीं?" यूँ उन्हों ने उस से ठोकर खा कर उसे क़बूल
न किया।

4 ईसा ने उन से कहा, "नबी की हर जगह इज़्ज़त
होती है सिवाए उस के वतनी शहर, उस के रिश्तेदारों
और उस के अपने ख़ानदान के।"

5 वहाँ वह कोई मोजिज़ा न कर सका। उस ने सिर्फ़
चन्द एक मरीज़ों पर हाथ रख कर उन को शिफ़ा
दी। 6 और वह उन की बेएतिक़ादी के सबब से बहुत
हैरान था।

ईसा बारह शागिर्दों को तब्लीग़ करने भेजता है

इस के बाद ईसा ने इर्दगिर्द के इलाक़े में गाँव गाँव
जा कर लोगों को तालीम दी। 7 बारह शागिर्दों को
बुला कर वह उन्हें दो दो करके मुख़्तलिफ़ जगहों पर
भेजने लगा। इस के लिए उस ने उन्हें नापाक रूहों
को निकालने का इख़तियार दे कर 8 यह हिदायत
की, "सफ़र पर अपने साथ कुछ न लेना सिवाए एक
लाठी के। न रोटी, न सामान के लिए कोई बैग, न
कमरबन्द में कोई पैसा, 9 न एक से ज़्यादा सूट। तुम
जूते पहन सकते हो। 10 जिस घर में भी दाख़िल हो
उस में उस मक़ाम से चले जाने तक ठहरो। 11 और
अगर कोई मक़ाम तुम को क़बूल न करे या तुम्हारी
न सुने तो फिर रवाना होते वक़्त अपने पाँओ से गर्द
झाड़ दो। यूँ तुम उन के ख़िलाफ़ गवाही दोगे।"

12 चुनाँचे शागिर्द वहाँ से निकल कर मुनादी करने
लगे कि लोग तौबा करें। 13 उन्हों ने बहुत सी बदरूहें
निकाल दीं और बहुत से मरीज़ों पर ज़ैतून का तेल
मल कर उन्हें शिफ़ा दी।

यहया बपतिस्मा देने वाले का क़त्ल

14 बादशाह हेरोदेस अनतिपास ने ईसा के बारे में
सुना, क्यूँकि उस का नाम मश्हूर हो गया था। कुछ
कह रहे थे, "यहया बपतिस्मा देने वाला मुर्दों में से जी
उठा है, इस लिए इस क़िस्म की मोजिज़ाना ताक़तें
उस में नज़र आती हैं।"

औरों ने सोचा, "यह इल्यास नबी है।"

15 यह ख़याल भी पेश किया जा रहा था कि वह
क़दीम ज़माने के नबियों जैसा कोई नबी है।

16 लेकिन जब हेरोदेस ने उस के बारे में सुना तो उस
ने कहा, "यहया जिस का मैं ने सर क़लम करवाया है
मुर्दों में से जी उठा है।" 17 वजह यह थी कि हेरोदेस

के हुक्म पर ही यहया को गिरिफ़्तार करके जेल में
डाला गया था। यह हेरोदियास की ख़ातिर हुआ था
जो पहले हेरोदेस के भाई फ़िलिप्पुस की बीवी थी,
लेकिन जिस से उस ने अब ख़ुद शादी कर ली थी।
18 यहया ने हेरोदेस को बताया था, "अपने भाई की
बीवी से तेरी शादी नाजाइज़ है।"
19 इस वजह से हेरोदियास उस से कीना रखती
और उसे क़त्ल कराना चाहती थी। लेकिन इस में
वह नाकाम रही 20 क्यूँकि हेरोदेस यहया से डरता
था। वह जानता था कि यह आदमी रास्तबाज़ और
मुक़द्दस है, इस लिए वह उस की हिफ़ाज़त करता
था। जब भी उस से बात होती तो हेरोदेस सुन सुन
कर बड़ी उलझन में पड़ जाता। तो भी वह उस की
बातें सुनना पसन्द करता था।
21 आख़िरकार हेरोदियास को हेरोदेस की
सालगिरह पर अच्छा मौक़ा मिल गया। सालगिरह
को मनाने के लिए हेरोदेस ने अपने बड़े सरकारी
अफ़्सरों, मिल्ट्री कमाँडरों और गलील के अव्वल
दर्जे के शहरियों की ज़ियाफ़त की। 22 ज़ियाफ़त के
दौरान हेरोदियास की बेटी अन्दर आ कर नाचने
लगी। हेरोदेस और उस के मेहमानों को यह बहुत
पसन्द आया और उस ने लड़की से कहा, "जो जी
चाहे मुझ से माँग तो मैं वह तुझे दूँगा।" 23 बल्कि
उस ने क़सम खा कर कहा, "जो भी तू माँगेगी मैं
तुझे दूँगा, ख़्वाह बादशाही का आधा हिस्सा ही क्यूँ
न हो।"
24 लड़की ने निकल कर अपनी माँ से पूछा, "मैं
क्या माँगूँ?"
माँ ने जवाब दिया, "यहया बपतिस्मा देने वाले का
सर।"
25 लड़की फ़ुरती से अन्दर जा कर बादशाह के पास
वापस आई और कहा, "मैं चाहती हूँ कि आप मुझे
अभी अभी यहया बपतिस्मा देने वाले का सर ट्रे में
मंगवा दें।"
26 यह सुन कर बादशाह को बहुत दुख हुआ।
लेकिन अपनी क़समों और मेहमानों की मौजूदगी की
वजह से वह इनकार करने के लिए भी तय्यार नहीं
था। 27 चुनाँचे उस ने फ़ौरन जल्लाद को भेज कर हुक्म
दिया कि वह यहया का सर ले आए। जल्लाद ने जेल
में जा कर यहया का सर क़लम कर दिया। 28 फिर
वह उसे ट्रे में रख कर ले आया और लड़की को
दे दिया। लड़की ने उसे अपनी माँ के सपुर्द किया।
29 जब यहया के शागिर्दों को यह ख़बर पहुँची तो वह
आए और उस की लाश ले कर उसे क़ब्र में रख दिया।

ईसा 5000 अफ़राद को खाना खिलाता है

30 रसूल वापस आ कर ईसा के पास जमा हुए और
उसे सब कुछ सुनाने लगे जो उन्हों ने किया और
सिखाया था। 31 इस दौरान इतने लोग आ और जा
रहे थे कि उन्हें खाना खाने का मौक़ा भी न मिला।
इस लिए ईसा ने बारह शागिर्दों से कहा, "आओ, हम
लोगों से अलग हो कर किसी ग़ैरआबाद जगह जाएँ
और आराम करें।" 32 चुनाँचे वह कश्ती पर सवार
हो कर किसी वीरान जगह चले गए।
33 लेकिन बहुत से लोगों ने उन्हें जाते वक़्त पहचान
लिया। वह पैदल चल कर तमाम शहरों से निकल
आए और दौड़ दौड़ कर उन से पहले मन्ज़िल-ए-
मक़सूद तक पहुँच गए। 34 जब ईसा ने कश्ती पर से
उतर कर बड़े हुजूम को देखा तो उसे लोगों पर तरस
आया, क्यूँकि वह उन भेड़ों की मानिन्द थे जिन का
कोई चरवाहा न हो। वहीं वह उन्हें बहुत सी बातें
सिखाने लगा।
35 जब दिन ढलने लगा तो उस के शागिर्द उस के
पास आए और कहा, "यह जगह वीरान है और दिन
ढलने लगा है। 36 इन को रुख़्सत कर दें ताकि यह
इर्दगिर्द की बस्तियों और दीहातों में जा कर खाने के
लिए कुछ ख़रीद लें।"
37 लेकिन ईसा ने उन्हें कहा, "तुम ख़ुद इन्हें कुछ
खाने को दो।"
उन्हों ने पूछा, "हम इस के लिए दरकार चाँदी के
200 सिक्के कहाँ से ले कर रोटी ख़रीदने जाएँ और
इन्हें खिलाएँ?"

38 उस ने कहा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?
जा कर पता करो!”
उन्हों ने मालूम किया। फिर दुबारा उस के पास आ
कर कहने लगे, “हमारे पास पाँच रोटियाँ और दो
मछलियाँ हैं।”
39 इस पर ईसा ने उन्हें हिदायत दी, “तमाम लोगों
को गुरोहों में हरी घास पर बिठा दो।” 40 चुनाँचे लोग
सौ सौ और पचास पचास की सूरत में बैठ गए।
41 फिर ईसा ने उन पाँच रोटियों और दो मछलियों
को ले कर आसमान की तरफ़ देखा और शुक्रगुज़ारी
की दुआ की। फिर उस ने रोटियों को तोड़ तोड़
कर शागिर्दों को दिया ताकि वह लोगों में तक़्सीम
करें। उस ने दो मछलियों को भी टुकड़े टुकड़े करके
शागिर्दों के ज़रीए उन में तक़्सीम करवाया। 42 और
सब ने जी भर कर खाया। 43 जब शागिर्दों ने रोटियों
और मछलियों के बचे हुए टुकड़े जमा किए तो बारह
टोकरे भर गए। 44 खाने वाले मर्दों की कुल तादाद
5,000 थी।

ईसा पानी पर चलता है

45 इस के ऐन बाद ईसा ने अपने शागिर्दों को मज्बूर
किया कि वह कश्ती पर सवार हो कर आगे निकलें
और झील के पार के शहर बैत-सैदा जाएँ। इतने
में वह हुजूम को रुख़्सत करना चाहता था। 46 उन्हें
ख़ैरबाद कहने के बाद वह दुआ करने के लिए पहाड़
पर चढ़ गया। 47 शाम के वक़्त शागिर्दों की कश्ती
झील के बीच तक पहुँच गई थी जबकि ईसा ख़ुद
ख़ुश्की पर अकेला रह गया था। 48 वहाँ से उस ने
देखा कि शागिर्द कश्ती को खेने में बड़ी जिद्द-ओ-
जह्द कर रहे हैं, क्यूँकि हवा उन के ख़िलाफ़ चल
रही थी। तक़रीबन तीन बजे रात के वक़्त ईसा पानी
पर चलते हुए उन के पास आया। वह उन से आगे
निकलना चाहता था, 49 लेकिन जब उन्हों ने उसे
झील की सतह पर चलते हुए देखा तो सोचने लगे,
“यह कोई भूत है” और चीख़ें मारने लगे। 50 क्यूँकि
सब ने उसे देख कर दह्शत खाई।
लेकिन ईसा फ़ौरन उन से मुख़ातिब हो कर बोला,
“हौसला रखो! मैं ही हूँ। मत घबराओ।” 51 फिर वह
उन के पास आया और कश्ती में बैठ गया। उसी
वक़्त हवा थम गई। शागिर्द निहायत ही हैरतज़दा
हुए। 52 क्यूँकि जब रोटियों का मोजिज़ा किया गया
था तो वह इस का मतलब नहीं समझे थे बल्कि उन
के दिल बेहिस्स हो गए थे।

गन्नेसरत में मरीज़ों की शिफ़ा

53 झील को पार करके वह गन्नेसरत शहर के पास
पहुँच गए और लंगर डाल दिया। 54 जूँ ही वह कश्ती
से उतरे लोगों ने ईसा को पहचान लिया। 55 वह भाग
भाग कर उस पूरे इलाक़े में से गुज़रे और मरीज़ों को
चारपाइयों पर उठा उठा कर वहाँ ले आए जहाँ कहीं
उन्हें ख़बर मिली कि वह ठहरा हुआ है। 56 जहाँ भी
वह गया चाहे गाँव, शहर या बस्ती में, वहाँ लोगों ने
बीमारों को चौकों में रख कर उस से मिन्नत की कि
वह कम अज़ कम उन्हें अपने लिबास के दामन को
छूने दे। और जिस ने भी उसे छुआ उसे शिफ़ा मिली।

बापदादा की तालीम

7 1 एक दिन फ़रीसी और शरीअत के कुछ
आलिम यरूशलम से ईसा से मिलने आए। 2 जब
वह वहाँ थे तो उन्हों ने देखा कि उस के कुछ शागिर्द
अपने हाथ पाक-साफ़ किए बग़ैर यानी धोए बग़ैर
खाना खा रहे हैं।
3 (क्यूँकि यहूदी और ख़ासकर फ़रीसी फ़िर्क़े के
लोग इस मुआमले में अपने बापदादा की रिवायत
को मानते हैं। वह अपने हाथ अच्छी तरह धोए बग़ैर
खाना नहीं खाते। 4 इसी तरह जब वह कभी बाज़ार
से आते हैं तो वह ग़ुसल करके ही खाना खाते हैं।
वह बहुत सी और रिवायतों पर भी अमल करते हैं,
मसलन कप, जग और केतली को धो कर पाक-साफ़
करने की रस्म पर।)
5 चुनाँचे फ़रीसियों और शरीअत के आलिमों ने ईसा
से पूछा, “आप के शागिर्द बापदादा की रिवायतों के

मुताबिक़ ज़िन्दगी क्यूँ नहीं गुज़ारते बल्कि रोटी भी
हाथ पाक-साफ़ किए बग़ैर खाते हैं?”
6 ईसा ने जवाब दिया, “यसायाह नबी ने तुम
रियाकारों के बारे में ठीक कहा जब उस ने यह
नबुव्वत की,
‘यह क़ौम अपने होंटों से तो मेरा एहतिराम करती
है
लेकिन उस का दिल मुझ से दूर है।
7 वह मेरी परस्तिश करते तो हैं, लेकिन बेफ़ाइदा।
क्यूँकि वह सिर्फ़ इन्सान ही के अह्काम सिखाते
हैं।’
8 तुम अल्लाह के अह्काम को छोड़ कर इन्सानी
रिवायात की पैरवी करते हो।”
9 ईसा ने अपनी बात जारी रखी, “तुम कितने
सलीक़े से अल्लाह का हुक्म मन्सूख़ करते हो ताकि
अपनी रिवायात को क़ाइम रख सको। 10 मसलन
मूसा ने फ़रमाया, ‘अपने बाप और अपनी माँ की
इज़्ज़त करना’ और ‘जो अपने बाप या माँ पर लानत
करे उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए।’ 11 लेकिन जब कोई
अपने वालिदैन से कहे, ‘मैं आप की मदद नहीं कर
सकता, क्यूँकि मैं ने मन्नत मानी है कि जो मुझे आप
को देना था वह अल्लाह के लिए क़ुर्बानी है’ तो तुम
इसे जाइज़ क़रार देते हो। 12 यूँ तुम उसे अपने माँ-बाप
की मदद करने से रोक लेते हो। 13 और इसी तरह तुम
अल्लाह के कलाम को अपनी उस रिवायत से मन्सूख़
कर लेते हो जो तुम ने नस्ल-दर-नस्ल मुन्तक़िल की
है। तुम इस क़िस्म की बहुत सी हरकतें करते हो।”

क्या कुछ इन्सान को नापाक कर देता है?

14 फिर ईसा ने दुबारा हुजूम को अपने पास बुलाया
और कहा, “सब मेरी बात सुनो और इसे समझने की
कोशिश करो। 15 कोई ऐसी चीज़ है नहीं जो इन्सान में
दाख़िल हो कर उसे नापाक कर सके, बल्कि जो कुछ
इन्सान के अन्दर से निकलता है वही उसे नापाक कर
देता है।” 16 [अगर कोई सुन सकता है तो वह सुन
ले।]
17 फिर वह हुजूम को छोड़ कर किसी घर में
दाख़िल हुआ। वहाँ उस के शागिर्दों ने पूछा, “इस
तम्सील का क्या मतलब है?”
18 उस ने कहा, “क्या तुम भी इतने नासमझ हो?
क्या तुम नहीं समझते कि जो कुछ बाहर से इन्सान
में दाख़िल होता है वह उसे नापाक नहीं कर सकता?
19 वह तो उस के दिल में नहीं जाता बल्कि उस के
मेदे में और वहाँ से निकल कर जा-ए-ज़रूरत में।”
(यह कह कर ईसा ने हर क़िस्म का खाना पाक-साफ़
क़रार दिया।)
20 उस ने यह भी कहा, “जो कुछ इन्सान के अन्दर
से निकलता है वही उसे नापाक करता है। 21 क्यूँकि
लोगों के अन्दर से, उन के दिलों ही से बुरे ख़यालात,
हरामकारी, चोरी, क़त्ल-ओ-ग़ारत, 22 ज़िनाकारी,
लालच, बदकारी, धोका, शहवतपरस्ती, हसद,
बुह्तान, ग़ुरूर और हमाक़त निकलते हैं। 23 यह
तमाम बुराइयाँ अन्दर ही से निकल कर इन्सान को
नापाक कर देती हैं।”

ग़ैरयहूदी औरत का ईमान

24 फिर ईसा गलील से रवाना हो कर शिमाल में सूर
के इलाक़े में आया। वहाँ वह किसी घर में दाख़िल
हुआ। वह नहीं चाहता था कि किसी को पता चले,
लेकिन वह पोशीदा न रह सका। 25 फ़ौरन एक औरत
उस के पास आई जिस ने उस के बारे में सुन रखा
था। वह उस के पाँओ में गिर गई। उस की छोटी
बेटी किसी नापाक रूह के क़ब्ज़े में थी, 26 और उस
ने ईसा से गुज़ारिश की, “बदरुह को मेरी बेटी में
से निकाल दें।” लेकिन वह औरत यूनानी थी और
सूरुफ़ेनीके के इलाक़े में पैदा हुई थी, 27 इस लिए
ईसा ने उसे बताया, “पहले बच्चों को जी भर कर
खाने दे, क्यूँकि यह मुनासिब नहीं कि बच्चों से खाना
ले कर कुत्तों के सामने फैंक दिया जाए।”
28 उस ने जवाब दिया, “जी ख़ुदावन्द, लेकिन मेज़
के नीचे के कुत्ते भी बच्चों के गिरे हुए टुकड़े खाते हैं।”

29 ईसा ने कहा, “तू ने अच्छा जवाब दिया, इस
लिए जा, बदरुह तेरी बेटी में से निकल गई है।”
30 औरत अपने घर वापस चली गई तो देखा कि
लड़की बिस्तर पर पड़ी है और बदरुह उस में से
निकल चुकी है।

गूँगे-बहरे की शिफ़ा

31 जब ईसा सूर से रवाना हुआ तो वह पहले शिमाल
में वाक़े शहर सैदा को चला गया। फिर वहाँ से
भी फ़ारिग़ हो कर वह दुबारा गलील की झील के
किनारे वाक़े दिकपुलिस के इलाक़े में पहुँच गया।
32 वहाँ उस के पास एक बहरा आदमी लाया गया
जो मुश्किल ही से बोल सकता था। उन्हों ने मिन्नत
की कि वह अपना हाथ उस पर रखे। 33 ईसा उसे
हुजूम से दूर ले गया। उस ने अपनी उंगलियाँ उस के
कानों में डालीं और थूक कर आदमी की ज़बान को
छुआ। 34 फिर आसमान की तरफ़ नज़र उठा कर उस
ने आह भरी और उस से कहा, “इफ़्फ़तह!” (इस का
मतलब है “खुल जा!”)
35 फ़ौरन आदमी के कान खुल गए, ज़बान का बंधन
टूट गया और वह ठीक ठीक बोलने लगा। 36 ईसा ने
हाज़िरीन को हुक्म दिया कि वह किसी को यह बात
न बताएँ। लेकिन जितना वह मना करता था उतना
ही लोग इस की ख़बर फैलाते थे। 37 वह निहायत ही
हैरान हुए और कहने लगे, “इस ने सब कुछ अच्छा
किया है, यह बहरों को सुनने की ताक़त देता है और
गूँगों को बोलने की।”

ईसा 4000 अफ़राद को खाना खिलाता है

8 1 उन दिनों में एक और मर्तबा ऐसा हुआ कि
बहुत से लोग जमा हुए जिन के पास खाने का
बन्द-ओ-बस्त नहीं था। चुनाँचे ईसा ने अपने शागिर्दों
को बुला कर उन से कहा, 2 “मुझे इन लोगों पर तरस
आता है। इन्हें मेरे साथ ठहरे तीन दिन हो चुके हैं
और इन के पास खाने की कोई चीज़ नहीं है। 3 लेकिन
अगर मैं इन्हें रुख़्सत कर दूँ और वह इस भूकी हालत
में अपने अपने घर चले जाएँ तो वह रास्ते में थक कर
चूर हो जाएंगे। और इन में से कई दूरदराज़ से आए
हैं।”
4 उस के शागिर्दों ने जवाब दिया, “इस वीरान
इलाक़े में कहाँ से इतना खाना मिल सकेगा कि यह
खा कर सेर हो जाएँ?”
5 ईसा ने पूछा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?”
उन्हों ने जवाब दिया, “सात।”
6 ईसा ने हुजूम को ज़मीन पर बैठने को कहा।
फिर सात रोटियों को ले कर उस ने शुक्रगुज़ारी की
दुआ की और उन्हें तोड़ तोड़ कर अपने शागिर्दों को
तक़्सीम करने के लिए दे दिया। 7 उन के पास दो चार
छोटी मछलियाँ भी थीं। ईसा ने उन पर भी शुक्रगुज़ारी
की दुआ की और शागिर्दों को उन्हें बाँटने को कहा।
8 लोगों ने जी भर कर खाया। बाद में जब खाने के बचे
हुए टुकड़े जमा किए गए तो सात बड़े टोकरे भर गए।
9 तक़रीबन 4,000 आदमी हाज़िर थे। खाने के बाद
ईसा ने उन्हें रुख़्सत कर दिया 10 और फ़ौरन कश्ती
पर सवार हो कर अपने शागिर्दों के साथ दल्मनूता के
इलाक़े में पहुँच गया।

फ़रीसी इलाही निशान तलब करते हैं

11 इस पर फ़रीसी निकल कर ईसा के पास आए
और उस से बह्स करने लगे। उसे आज़माने के लिए
उन्हों ने मुतालबा किया कि वह उन्हें आसमान की
तरफ़ से कोई इलाही निशान दिखाए ताकि उस का
इख़्तियार साबित हो जाए। 12 लेकिन उस ने ठंडी
आह भर कर कहा, “यह नस्ल क्यूँ इलाही निशान
का मुतालबा करती है? मैं तुम को सच बताता हूँ कि
इसे कोई निशान नहीं दिया जाएगा।”
13 और उन्हें छोड़ कर वह दुबारा कश्ती में बैठ
गया और झील को पार करने लगा।

फ़रीसियों और हेरोदेस का ख़मीर

14 लेकिन शागिर्द अपने साथ खाना लाना भूल गए
थे। कश्ती में उन के पास सिर्फ़ एक रोटी थी। 15 ईसा

ने उन्हें हिदायत की, “ख़बरदार, फ़रीसियों और
हेरोदेस के ख़मीर से होश्यार रहना।”
16 शागिर्द आपस में बह्स करने लगे, “वह इस लिए
कह रहे होंगे कि हमारे पास रोटी नहीं है।”
17 ईसा को मालूम हुआ कि वह क्या सोच रहे हैं।
उस ने कहा, “तुम आपस में क्यूँ बह्स कर रहे हो कि
हमारे पास रोटी नहीं है? क्या तुम अब तक न जानते,
न समझते हो? क्या तुम्हारे दिल इतने बेहिस्स हो गए
हैं? 18 तुम्हारी आँखें तो हैं, क्या तुम देख नहीं सकते?
तुम्हारे कान तो हैं, क्या तुम सुन नहीं सकते? और
क्या तुम्हें याद नहीं 19 जब मैं ने 5,000 आदमियों
को पाँच रोटियों से सेर कर दिया तो तुम ने बचे हुए
टुकड़ों के कितने टोकरे उठाए थे?”
उन्हों ने जवाब दिया, “बारह”।
20 “और जब मैं ने 4,000 आदमियों को सात
रोटियों से सेर कर दिया तो तुम ने बचे हुए टुकड़ों
के कितने टोकरे उठाए थे?”
उन्हों ने जवाब दिया, “सात।” 21 उस ने पूछा,
“क्या तुम अभी तक नहीं समझते?”

बैत-सैदा में अंधे की शिफ़ा

22 वह बैत-सैदा पहुँचे तो लोग ईसा के पास एक
अंधे आदमी को लाए। उन्हों ने इल्तिमास की कि
वह उसे छुए। 23 ईसा अंधे का हाथ पकड़ कर उसे
गाँव से बाहर ले गया। वहाँ उस ने उस की आँखों
पर थूक कर अपने हाथ उस पर रख दिए और पूछा,
“क्या तू कुछ देख सकता है?”
24 आदमी ने नज़र उठा कर कहा, “हाँ, मैं लोगों को
देख सकता हूँ। वह फिरते हुए दरख़्तों की मानिन्द
दिखाई दे रहे हैं।”
25 ईसा ने दुबारा अपने हाथ उस की आँखों पर रखे।
इस पर आदमी की आँखें पूरे तौर पर खुल गईं, उस
की नज़र बहाल हो गई और वह सब कुछ साफ़ साफ़
देख सकता था। 26 ईसा ने उसे रुख़्सत करके कहा,
“इस गाँव में वापस न जाना बल्कि सीधा अपने घर
चला जा।”

पतरस का इक़्रार

27 फिर ईसा वहाँ से निकल कर अपने शागिर्दों
के साथ क़ैसरिया-फ़िलिप्पी के क़रीब के दीहातों में
गया। चलते चलते उस ने उन से पूछा, “मैं लोगों के
नज़्दीक कौन हूँ?”
28 उन्हों ने जवाब दिया, “कुछ कहते हैं यहया
बपतिस्मा देने वाला, कुछ यह कि आप इल्यास नबी
हैं। कुछ यह भी कहते हैं कि नबियों में से एक।”
29 उस ने पूछा, “लेकिन तुम क्या कहते हो? तुम्हारे
नज़्दीक मैं कौन हूँ?”
पतरस ने जवाब दिया, “आप मसीह हैं।”
30 यह सुन कर ईसा ने उन्हें किसी को भी यह बात
बताने से मना किया।

ईसा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

31 फिर ईसा उन्हें तालीम देने लगा, “लाज़िम है कि
इब्न-ए-आदम बहुत दुख उठा कर बुज़ुर्गों, राहनुमा
इमामों और शरीअत के उलमा से रद्द किया जाए। उसे
क़त्ल भी किया जाएगा, लेकिन वह तीसरे दिन जी
उठेगा।” 32 उस ने उन्हें यह बात साफ़ साफ़ बताई।
इस पर पतरस उसे एक तरफ़ ले जा कर समझाने
लगा। 33 ईसा मुड़ कर शागिर्दों की तरफ़ देखने लगा।
उस ने पतरस को डाँटा, “शैतान, मेरे सामने से हट
जा! तू अल्लाह की सोच नहीं रखता बल्कि इन्सान
की।”
34 फिर उस ने शागिर्दों के इलावा हुजूम को भी
अपने पास बुलाया। उस ने कहा, “जो मेरे पीछे
आना चाहे वह अपने आप का इनकार करे और
अपनी सलीब उठा कर मेरे पीछे हो ले। 35 क्यूँकि
जो अपनी जान को बचाए रखना चाहे वह उसे खो
देगा। लेकिन जो मेरी और अल्लाह की ख़ुशख़बरी की
ख़ातिर अपनी जान खो दे वही उसे बचाएगा। 36 क्या
फ़ाइदा है अगर किसी को पूरी दुनिया हासिल हो
जाए, लेकिन वह अपनी जान से महरूम हो जाए?
37 इन्सान अपनी जान के बदले क्या दे सकता है?

38 जो भी इस ज़िनाकार और गुनाहआलूदा नस्ल के
सामने मेरे और मेरी बातों के सबब से शरमाए उस
से इब्न-ए-आदम भी उस वक़्त शरमाएगा जब वह
अपने बाप के जलाल में मुक़द्दस फ़रिश्तों के साथ
आएगा।"

9 1 ईसा ने उन्हें यह भी बताया, "मैं तुम को सच
बताता हूँ, यहाँ कुछ ऐसे लोग खड़े हैं जो मरने
से पहले ही अल्लाह की बादशाही को क़ुदरत के साथ
आते हुए देखेंगे।"

पहाड़ पर ईसा की सूरत बदल जाती है

2 छः दिन के बाद ईसा सिर्फ़ पतरस, याक़ूब और
यूहन्ना को अपने साथ ले कर ऊँचे पहाड़ पर चढ़
गया। वहाँ उस की शक्ल-ओ-सूरत उन के सामने
बदल गई। 3 उस के कपड़े चमकने लगे और निहायत
सफ़ेद हो गए। दुनिया में कोई भी धोबी कपड़े इतने
सफ़ेद नहीं कर सकता। 4 फिर इल्यास और मूसा
ज़ाहिर हुए और ईसा से बात करने लगे। 5 पतरस बोल
उठा, "उस्ताद, कितनी अच्छी बात है कि हम यहाँ
हैं। आएँ, हम तीन झोंपड़ियाँ बनाएँ, एक आप के
लिए, एक मूसा के लिए और एक इल्यास के लिए।"
6 उस ने यह इस लिए कहा कि तीनों शागिर्द सहमे
हुए थे और वह नहीं जानता था कि क्या कहे।

7 इस पर एक बादल आ कर उन पर छा गया और
बादल में से एक आवाज़ सुनाई दी, "यह मेरा प्यारा
फ़र्ज़न्द है। इस की सुनो।" 8 अचानक मूसा और
इल्यास ग़ाइब हो गए। शागिर्दों ने चारों तरफ़ देखा,
लेकिन सिर्फ़ ईसा नज़र आया।

9 वह पहाड़ से उतरने लगे तो ईसा ने उन्हें हुक्म
दिया, "जो कुछ तुम ने देखा है उसे उस वक़्त तक
किसी को न बताना जब तक कि इब्न-ए-आदम मुर्दों
में से जी न उठे।"

10 चुनाँचे उन्हों ने यह बात अपने तक महदूद रखी।
लेकिन वह कई बार आपस में बहस करने लगे कि
मुर्दों में से जी उठने से क्या मुराद हो सकती है। 11 फिर
उन्हों ने उस से पूछा, "शरीअत के उलमा क्यूँ कहते
हैं कि मसीह की आमद से पहले इल्यास का आना
ज़रूरी है?"

12 ईसा ने जवाब दिया, "इल्यास तो ज़रूर पहले
सब कुछ बहाल करने के लिए आएगा। लेकिन
कलाम-ए-मुक़द्दस में इब्न-ए-आदम के बारे में यह
क्यूँ लिखा है कि उसे बहुत दुख उठाना और हक़ीर
समझा जाना है? 13 लेकिन मैं तुम को बताता हूँ,
इल्यास तो आ चुका है और उन्हों ने उस के साथ जो
चाहा किया। यह भी कलाम-ए-मुक़द्दस के मुताबिक़
ही हुआ है।"

ईसा लड़के में से बदरुह निकालता है

14 जब वह बाक़ी शागिर्दों के पास वापस पहुँचे तो
उन्हों ने देखा कि उन के गिर्द एक बड़ा हुजूम जमा है
और शरीअत के कुछ उलमा उन के साथ बहस कर
रहे हैं। 15 ईसा को देखते ही लोगों ने बड़ी बेचैनी से
उस की तरफ़ दौड़ कर उसे सलाम किया। 16 उस ने
शागिर्दों से सवाल किया, "तुम उन के साथ किस के
बारे में बहस कर रहे हो?"

17 हुजूम में से एक आदमी ने जवाब दिया, "उस्ताद,
मैं अपने बेटे को आप के पास लाया था। वह ऐसी
बदरुह के क़ब्ज़े में है जो उसे बोलने नहीं देती।
18 और जब भी वह उस पर ग़ालिब आती है वह उसे
ज़मीन पर पटक देती है। बेटे के मुँह से झाग निकलने
लगता और वह दाँत पीसने लगता है। फिर उस का
जिस्म अकड़ जाता है। मैं ने आप के शागिर्दों से कहा
तो था कि वह बदरुह को निकाल दें, लेकिन वह न
निकाल सके।"

19 ईसा ने उन से कहा, "ईमान से ख़ाली नस्ल! मैं
कब तक तुम्हारे साथ रहूँ, कब तक तुम्हें बर्दाश्त
करूँ? लड़के को मेरे पास ले आओ।" 20 वह उसे
ईसा के पास ले आए।

ईसा को देखते ही बदरुह लड़के को झंझोड़ने लगी।
वह ज़मीन पर गिर गया और इधर उधर लुढ़कते हुए
मुँह से झाग निकालने लगा। 21 ईसा ने बाप से पूछा,
"इस के साथ कब से ऐसा हो रहा है?"

उस ने जवाब दिया, “बचपन से। 22 बहुत दफ़ा उस
ने इसे हलाक करने की ख़ातिर आग या पानी में
गिराया है। अगर आप कुछ कर सकते हैं तो तरस
खा कर हमारी मदद करें।”
23 ईसा ने पूछा, “क्या मतलब, ‘अगर आप कुछ
कर सकते हैं’? जो ईमान रखता है उस के लिए सब
कुछ मुमकिन है।”
24 लड़के का बाप फ़ौरन चिल्ला उठा, “मैं ईमान
रखता हूँ। मेरी बेएतिक़ादी का इलाज करें।”
25 ईसा ने देखा कि बहुत से लोग दौड़ दौड़ कर
देखने आ रहे हैं, इस लिए उस ने नापाक रूह को
डाँटा, “ऐ गूँगी और बहरी बदरुह, मैं तुझे हुक्म देता
हूँ कि इस में से निकल जा। कभी भी इस में दुबारा
दाख़िल न होना!”
26 इस पर बदरुह चीख़ उठी और लड़के को शिद्दत
से झंझोड़ कर निकल गई। लड़का लाश की तरह
ज़मीन पर पड़ा रहा, इस लिए सब ने कहा, “वह मर
गया है।” 27 लेकिन ईसा ने उस का हाथ पकड़ कर
उठने में उस की मदद की और वह खड़ा हो गया।
28 बाद में जब ईसा किसी घर में जा कर अपने
शागिर्दों के साथ अकेला था तो उन्हों ने उस से पूछा,
“हम बदरुह को क्यूँ न निकाल सके?”
29 उस ने जवाब दिया, “इस क़िस्म की बदरुह
सिर्फ़ दुआ से निकाली जा सकती है।”

ईसा दूसरी दफ़ा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

30 वहाँ से निकल कर वह गलील में से गुज़रे। ईसा
नहीं चाहता था कि किसी को पता चले कि वह
कहाँ है, 31 क्यूँकि वह अपने शागिर्दों को तालीम
दे रहा था। उस ने उन से कहा, “इब्न-ए-आदम को
आदमियों के हवाले कर दिया जाएगा। वह उसे क़त्ल
करेंगे, लेकिन तीन दिन के बाद वह जी उठेगा।”
32 लेकिन शागिर्द इस का मतलब न समझे और वह
ईसा से इस के बारे में पूछने से डरते भी थे।

कौन सब से बड़ा है?

33 चलते चलते वह कफ़र्नहूम पहुँचे। जब वह
किसी घर में थे तो ईसा ने शागिर्दों से सवाल किया,
“रास्ते में तुम किस बात पर बह्स कर रहे थे?”
34 लेकिन वह ख़ामोश रहे, क्यूँकि वह रास्ते में
इस पर बह्स कर रहे थे कि हम में से बड़ा कौन
है? 35 ईसा बैठ गया और बारह शागिर्दों को बुला
कर कहा, “जो अव्वल होना चाहता है वह सब से
आख़िर में आए और सब का ख़ादिम हो।” 36 फिर
उस ने एक छोटे बच्चे को ले कर उन के दरमियान
खड़ा किया। उसे गले लगा कर उस ने उन से कहा,
37 “जो मेरे नाम में इन बच्चों में से किसी को क़बूल
करता है वह मुझे ही क़बूल करता है। और जो मुझे
क़बूल करता है वह मुझे नहीं बल्कि उसे क़बूल
करता है जिस ने मुझे भेजा है।”

जो हमारे ख़िलाफ़ नहीं वह हमारे हक़ में है

38 यूहन्ना बोल उठा, “उस्ताद, हम ने एक शख़्स को
देखा जो आप का नाम ले कर बदरुहें निकाल रहा
था। हम ने उसे मना किया, क्यूँकि वह हमारी पैरवी
नहीं करता।”
39 लेकिन ईसा ने कहा, “उसे मना न करना। जो
भी मेरे नाम में मोजिज़ा करे वह अगले लम्हे मेरे बारे
में बुरी बातें नहीं कह सकेगा। 40 क्यूँकि जो हमारे
ख़िलाफ़ नहीं वह हमारे हक़ में है। 41 मैं तुम को सच
बताता हूँ, जो भी तुम्हें इस वजह से पानी का गलास
पिलाए कि तुम मसीह के पैरोकार हो उसे ज़रूर अज्र
मिलेगा।

आज़माइशें

42 और जो कोई मुझ पर ईमान रखने वाले इन छोटों
में से किसी को गुनाह करने पर उकसाए उस के
लिए बेहतर है कि उस के गले में बड़ी चक्की का पाट
बांध कर उसे समुन्दर में फैंक दिया जाए। 43–44 अगर
तेरा हाथ तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे काट

डालना। इस से पहले कि तू दो हाथों समेत जहन्नुम
की कभी न बुझने वाली आग में चला जाए [यानी
वहाँ जहाँ लोगों को खाने वाले कीड़े कभी नहीं मरते
और आग कभी नहीं बुझती] बेहतर यह है कि तू एक
हाथ से महरूम हो कर अबदी ज़िन्दगी में दाख़िल हो।
45–46 अगर तेरा पाँओ तुझे गुनाह करने पर उकसाए
तो उसे काट डालना। इस से पहले कि तुझे दो पाँओ
समेत जहन्नुम में फैंका जाए [जहाँ लोगों को खाने
वाले कीड़े कभी नहीं मरते और आग कभी नहीं
बुझती] बेहतर यह है कि तू एक पाँओ से महरूम
हो कर अबदी ज़िन्दगी में दाख़िल हो। 47–48 और
अगर तेरी आँख तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे
निकाल देना। इस से पहले कि तुझे दो आँखों समेत
जहन्नुम में फैंका जाए जहाँ लोगों को खाने वाले कीड़े
कभी नहीं मरते और आग कभी नहीं बुझती बेहतर
यह है कि तू एक आँख से महरूम हो कर अल्लाह की
बादशाही में दाख़िल हो।

49 क्यूँकि हर एक को आग से नमकीन किया
जाएगा [और हर एक क़ुर्बानी नमक से नमकीन की
जाएगी]।

50 नमक अच्छी चीज़ है। लेकिन अगर उस का
ज़ाइक़ा जाता रहे तो उसे क्यूँकर दुबारा नमकीन
किया जा सकता है? अपने दरमियान नमक की
ख़ूबियाँ बरक़रार रखो और सुलह-सलामती से एक
दूसरे के साथ ज़िन्दगी गुज़ारो।"

तलाक़ के बारे में तालीम

10 1 फिर ईसा उस जगह को छोड़ कर
यहूदिया के इलाक़े में और दरया-ए-यर्दन
के पार चला गया। वहाँ भी हुजूम जमा हो गया। उस
ने उन्हें मामूल के मुताबिक़ तालीम दी।

2 कुछ फ़रीसी आए और उसे फंसाने की ग़रज़ से
सवाल किया, "क्या जाइज़ है कि मर्द अपनी बीवी
को तलाक़ दे?"

3 ईसा ने उन से पूछा, "मूसा ने शरीअत में तुम को
क्या हिदायत की है?"

4 उन्हों ने कहा, "उस ने इजाज़त दी है कि आदमी
तलाक़नामा लिख कर बीवी को रुख़्सत कर दे।"

5 ईसा ने जवाब दिया, "मूसा ने तुम्हारी सख़्तदिली
की वजह से तुम्हारे लिए यह हुक्म लिखा था।
6 लेकिन इब्तिदा में ऐसा नहीं था। दुनिया की
तख़्लीक़ के वक़्त अल्लाह ने उन्हें मर्द और औरत
बनाया। 7 'इस लिए मर्द अपने माँ-बाप को छोड़
कर अपनी बीवी के साथ पैवस्त हो जाता है। 8 वह
दोनों एक हो जाते हैं।' यूँ वह कलाम-ए-मुक़द्दस के
मुताबिक़ दो नहीं रहते बल्कि एक हो जाते हैं। 9 तो
जिसे अल्लाह ने ख़ुद जोड़ा है उसे इन्सान जुदा न करे।"

10 किसी घर में आ कर शागिर्दों ने यह बात दुबारा
छेड़ कर ईसा से मज़ीद दरयाफ़्त किया। 11 उस ने
उन्हें बताया, "जो अपनी बीवी को तलाक़ दे कर
किसी और से शादी करे वह उस के साथ ज़िना करता
है। 12 और जो औरत अपने ख़ावन्द को तलाक़ दे कर
किसी और से शादी करे वह भी ज़िना करती है।"

ईसा छोटे बच्चों को बरकत देता है

13 एक दिन लोग अपने छोटे बच्चों को ईसा के पास
लाए ताकि वह उन्हें छुए। लेकिन शागिर्दों ने उन को
मलामत की। 14 यह देख कर ईसा नाराज़ हुआ। उस
ने उन से कहा, "बच्चों को मेरे पास आने दो और
उन्हें न रोको, क्यूँकि अल्लाह की बादशाही इन जैसे
लोगों को हासिल है। 15 मैं तुम को सच बताता हूँ,
जो अल्लाह की बादशाही को बच्चे की तरह क़बूल न
करे वह उस में दाख़िल नहीं होगा।" 16 यह कह कर
उस ने उन्हें गले लगाया और अपने हाथ उन पर रख
कर उन्हें बरकत दी।

अमीर मुश्किल से बादशाही में दाख़िल हो सकते हैं

17 जब ईसा रवाना होने लगा तो एक आदमी दौड़
कर उस के पास आया और उस के सामने घुटने टेक
कर पूछा, "नेक उस्ताद, मैं क्या करूँ ताकि अबदी
ज़िन्दगी मीरास में पाऊँ?"

18 ईसा ने पूछा, “तू मुझे नेक क्यूँ कहता है? कोई
नेक नहीं सिवाए एक के और वह है अल्लाह। 19 तू
शरीअत के अह्काम से तो वाक़िफ़ है। क़त्ल न
करना, ज़िना न करना, चोरी न करना, झूटी गवाही
न देना, धोका न देना, अपने बाप और अपनी माँ की
इज़्ज़त करना।”
20 आदमी ने जवाब दिया, “उस्ताद, मैं ने जवानी
से आज तक इन तमाम अह्काम की पैरवी की है।”
21 ईसा ने ग़ौर से उस की तरफ़ देखा। उस के दिल
में उस के लिए प्यार उभर आया। वह बोला, “एक
काम रह गया है। जा, अपनी पूरी जायदाद फ़रोख़्त
करके पैसे ग़रीबों में तक़्सीम कर दे। फिर तेरे लिए
आसमान पर ख़ज़ाना जमा हो जाएगा। इस के बाद
आ कर मेरे पीछे हो ले।” 22 यह सुन कर आदमी का
मुँह लटक गया और वह मायूस हो कर चला गया,
क्यूँकि वह निहायत दौलतमन्द था।
23 ईसा ने अपने इर्दगिर्द देख कर शागिर्दों से कहा,
“दौलतमन्दों के लिए अल्लाह की बादशाही में दाख़िल
होना कितना मुश्किल है!”
24 शागिर्द उस के यह अल्फ़ाज़ सुन कर हैरान
हुए। लेकिन ईसा ने दुबारा कहा, “बच्चो! अल्लाह
की बादशाही में दाख़िल होना कितना मुश्किल है।
25 अमीर के अल्लाह की बादशाही में दाख़िल होने की
निस्बत ज़्यादा आसान यह है कि ऊँट सूई के नाके में
से गुज़र जाए।”
26 इस पर शागिर्द मज़ीद हैरतज़दा हुए और एक
दूसरे से कहने लगे, “फिर किस को नजात मिल
सकती है?”
27 ईसा ने ग़ौर से उन की तरफ़ देख कर जवाब
दिया, “यह इन्सान के लिए तो नामुमकिन है, लेकिन
अल्लाह के लिए नहीं। उस के लिए सब कुछ मुमकिन
है।”
28 फिर पतरस बोल उठा, “हम तो अपना सब कुछ
छोड़ कर आप के पीछे हो लिए हैं।”
29 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुम को सच बताता हूँ,
जिस ने भी मेरी और अल्लाह की ख़ुशख़बरी की ख़ातिर
अपने घर, भाइयों, बहनों, माँ, बाप, बच्चों या खेतों
को छोड़ दिया है 30 उसे इस ज़माने में ईज़ारसानी के
साथ साथ सौ गुना ज़्यादा घर, भाई, बहनें, माएँ, बच्चे
और खेत मिल जाएंगे। और आने वाले ज़माने में उसे
अबदी ज़िन्दगी मिलेगी। 31 लेकिन बहुत से लोग जो
अब अव्वल हैं उस वक़्त आख़िर होंगे और जो अब
आख़िर हैं वह अव्वल होंगे।”

ईसा तीसरी दफ़ा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

32 अब वह यरूशलम की तरफ़ बढ़ रहे थे और ईसा
उन के आगे आगे चल रहा था। शागिर्द हैरतज़दा थे
जबकि उन के पीछे चलने वाले लोग सहमे हुए थे।
एक और दफ़ा बारह शागिर्दों को एक तरफ़ ले जा कर
ईसा उन्हें वह कुछ बताने लगा जो उस के साथ होने
को था। 33 उस ने कहा, “हम यरूशलम की तरफ़ बढ़
रहे हैं। वहाँ इब्न-ए-आदम को राहनुमा इमामों और
शरीअत के उलमा के हवाले कर दिया जाएगा। वह
उस पर सज़ा-ए-मौत का फ़त्वा दे कर उसे ग़ैरयहूदियों
के हवाले कर देंगे, 34 जो उस का मज़ाक़ उड़ाएँगे,
उस पर थूकेंगे, उस को कोड़े मारेंगे और उसे क़त्ल
करेंगे। लेकिन तीन दिन के बाद वह जी उठेगा।”

याक़ूब और यूहन्ना की गुज़ारिश

35 फिर ज़ब्दी के बेटे याक़ूब और यूहन्ना उस के
पास आए। वह कहने लगे, “उस्ताद, आप से एक
गुज़ारिश है।”
36 उस ने पूछा, “तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे
लिए करूँ?”
37 उन्हों ने जवाब दिया, “जब आप अपने जलाली
तख़्त पर बैठेंगे तो हम में से एक को अपने दाएँ हाथ
बैठने दें और दूसरे को बाएँ हाथ।”
38 ईसा ने कहा, “तुम को नहीं मालूम कि क्या माँग
रहे हो। क्या तुम वह प्याला पी सकते हो जो मैं पीने
को हूँ या वह बपतिस्मा ले सकते हो जो मैं लेने को
हूँ?”

39 उन्हों ने जवाब दिया, “जी, हम कर सकते हैं।”
फिर ईसा ने उन से कहा, “तुम ज़रूर वह प्याला
पियोगे जो मैं पीने को हूँ और वह बपतिस्मा लोगे
जो मैं लेने को हूँ। 40 लेकिन यह फ़ैसला करना मेरा
काम नहीं कि कौन मेरे दाएँ हाथ बैठेगा और कौन
बाएँ हाथ। अल्लाह ने यह मक़ाम सिर्फ़ उन ही के लिए
तय्यार किया है जिन को उस ने ख़ुद मुक़र्रर किया
है।”

41 जब बाक़ी दस शागिर्दों ने यह सुना तो उन्हें
याक़ूब और यूहन्ना पर ग़ुस्सा आया। 42 इस पर ईसा
ने उन सब को बुला कर कहा, “तुम जानते हो कि
क़ौमों के हुक्मरान अपनी रआया पर रोब डालते हैं,
और उन के बड़े अफ़सर उन पर अपने इख़तियार का
ग़लत इस्तेमाल करते हैं। 43 लेकिन तुम्हारे दरमियान
ऐसा नहीं है। जो तुम में बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा
ख़ादिम बने 44 और जो तुम में अव्वल होना चाहे वह
सब का ग़ुलाम बने। 45 क्यूँकि इब्न-ए-आदम भी इस
लिए नहीं आया कि ख़िदमत ले बल्कि इस लिए कि
ख़िदमत करे और अपनी जान फ़िद्या के तौर पर दे
कर बहुतों को छुड़ाए।”

अंधे बरतिमाई की शिफ़ा

46 वह यरीहू पहुँच गए। उस में से गुज़र कर ईसा
शागिर्दों और एक बड़े हुजूम के साथ बाहर निकलने
लगा। वहाँ एक अंधा भीक माँगने वाला रास्ते के
किनारे बैठा था। उस का नाम बरतिमाई (तिमाई का
बेटा) था। 47 जब उस ने सुना कि ईसा नासरी क़रीब
ही है तो वह चिल्लाने लगा, “ईसा इब्न-ए-दाऊद, मुझ
पर रहम करें!”

48 बहुत से लोगों ने उसे डाँट कर कहा, “ख़ामोश!”
लेकिन वह मज़ीद ऊँची आवाज़ से पुकारता रहा,
“इब्न-ए-दाऊद, मुझ पर रहम करें!”

49 ईसा रुक कर बोला, “उसे बुलाओ।”

चुनाँचे उन्हों ने उसे बुला कर कहा, “हौसला रख।
उठ, वह तुझे बुला रहा है।”

50 बरतिमाई ने अपनी चादर ज़मीन पर फैंक दी और
उछल कर ईसा के पास आया।

51 ईसा ने पूछा, “तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिए
करूँ?”

उस ने जवाब दिया, “उस्ताद, यह कि मैं देख
सकूँ।”

52 ईसा ने कहा, “जा, तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया
है।”

जूँ ही ईसा ने यह कहा अंधे की आँखें बहाल हो
गईं और वह ईसा के पीछे चलने लगा।

यरूशलम में ईसा का पुरजोश इस्तिक़्बाल

11 1 वह यरूशलम के क़रीब बैत-फ़गे और
बैत-अनियाह पहुँचने लगे। यह गाँव ज़ैतून
के पहाड़ पर वाक़े थे। ईसा ने अपने शागिर्दों में से दो
को भेजा 2 और कहा, “सामने वाले गाँव में जाओ।
वहाँ तुम एक जवान गधा देखोगे। वह बंधा हुआ
होगा और अब तक कोई भी उस पर सवार नहीं हुआ
है। उसे खोल कर यहाँ ले आओ। 3 अगर कोई पूछे
कि यह क्या कर रहे हो तो उसे बता देना, ‘ख़ुदावन्द
को इस की ज़रूरत है। वह जल्द ही इसे वापस भेज
देंगे’।”

4 दोनों शागिर्द वहाँ गए तो एक जवान गधा देखा
जो बाहर गली में किसी दरवाज़े के साथ बंधा हुआ
था। जब वह उस की रस्सी खोलने लगे 5 तो वहाँ
खड़े कुछ लोगों ने पूछा, “तुम यह क्या कर रहे हो?
जवान गधे को क्यूँ खोल रहे हो?”

6 उन्हों ने जवाब में वह कुछ बता दिया जो ईसा ने
उन्हें कहा था। इस पर लोगों ने उन्हें खोलने दिया।
7 वह जवान गधे को ईसा के पास ले आए और अपने
कपड़े उस पर रख दिए। फिर ईसा उस पर सवार
हुआ। 8 जब वह चल पड़ा तो बहुत से लोगों ने उस
के आगे आगे रास्ते में अपने कपड़े बिछा दिए। बाज़
ने हरी शाख़ें भी उस के आगे बिछा दीं जो उन्हों ने
खेतों के दरख़्तों से काट ली थीं। 9 लोग ईसा के आगे

और पीछे चल रहे थे और चिल्ला चिल्ला कर नारे लगा रहे थे,

"होशाना! [t]

मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है। 10 मुबारक है हमारे बाप दाऊद की बादशाही जो आ रही है।

आसमान की बुलन्दियों पर होशाना।" [u]

11 यूँ ईसा यरूशलम में दाख़िल हुआ। वह बैत-उल-मुक़द्दस में गया और अपने इर्दगिर्द नज़र दौड़ा कर सब कुछ देखने के बाद चला गया। चूँकि शाम का पिछला वक़्त था इस लिए वह बारह शागिर्दों समेत शहर से निकल कर बैत-अनियाह वापस गया।

अन्जीर के दरख़्त पर लानत

12 अगले दिन जब वह बैत-अनियाह से निकल रहे थे तो ईसा को भूक लगी। 13 उस ने कुछ फ़ासिले पर अन्जीर का एक दरख़्त देखा जिस पर पत्ते थे। इस लिए वह यह देखने के लिए उस के पास गया कि आया कोई फल लगा है या नहीं। लेकिन जब वह वहाँ पहुँचा तो देखा कि पत्ते ही पत्ते हैं। वजह यह थी कि अन्जीर का मौसम नहीं था। 14 इस पर ईसा ने दरख़्त से कहा, "अब से हमेशा तक तुझ से फल खाया न जा सके!" उस के शागिर्दों ने उस की यह बात सुन ली।

ईसा बैत-उल-मुक़द्दस में जाता है

15 वह यरूशलम पहुँच गए। और ईसा बैत-उल-मुक़द्दस में जा कर उन्हें निकालने लगा जो वहाँ क़ुर्बानियों के लिए दरकार चीज़ों की ख़रीद-ओ-फ़रोख़्त कर रहे थे। उस ने सिक्कों का तबादला करने वालों की मेज़ें और कबूतर बेचने वालों की कुर्सियाँ उलट दीं 16 और जो तिजारती माल ले कर बैत-उल-मुक़द्दस के सहनों में से गुज़र रहे थे उन्हें रोक लिया। 17 तालीम दे कर उस ने कहा, "क्या कलाम-ए-मुक़द्दस में नहीं लिखा है, 'मेरा घर तमाम क़ौमों के लिए दुआ का घर कहलाएगा'? लेकिन तुम ने उसे डाकुओं के अड्डे में बदल दिया है।"

18 राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा ने जब यह सुना तो उसे क़त्ल करने का मौक़ा ढूँडने लगे। क्यूँकि वह उस से डरते थे इस लिए कि पूरा हुजूम उस की तालीम से निहायत हैरान था।

19 जब शाम हुई तो ईसा और उस के शागिर्द शहर से निकल गए।

अन्जीर के दरख़्त से सबक़

20 अगले दिन वह सुब्ह-सवेरे अन्जीर के उस दरख़्त के पास से गुज़रे जिस पर ईसा ने लानत भेजी थी। जब उन्हों ने उस पर ग़ौर किया तो मालूम हुआ कि वह जड़ों तक सूख गया है। 21 तब पतरस को वह बात याद आई जो ईसा ने कल अन्जीर के दरख़्त से की थी। उस ने कहा, "उस्ताद, यह देखें! अन्जीर के जिस दरख़्त पर आप ने लानत भेजी थी वह सूख गया है।"

22 ईसा ने जवाब दिया, "अल्लाह पर ईमान रखो। 23 मैं तुम को सच बताता हूँ कि अगर कोई इस पहाड़ से कहे, 'उठ, अपने आप को समुन्दर में गिरा दे' तो यह हो जाएगा। शर्त सिर्फ़ यह है कि वह शक न करे बल्कि ईमान रखे कि जो कुछ उस ने कहा है वह उस के लिए हो जाएगा। 24 इस लिए मैं तुम को बताता हूँ, जब भी तुम दुआ करके कुछ माँगते हो तो ईमान रखो कि तुम को मिल गया है। फिर वह तुम्हें ज़रूर मिल जाएगा। 25 और जब तुम खड़े हो कर दुआ करते हो तो अगर तुम्हें किसी से शिकायत हो तो पहले उसे मुआफ़ करो ताकि आसमान पर तुम्हारा बाप भी तुम्हारे गुनाहों को मुआफ़ करे। 26 [और अगर तुम मुआफ़ न करो तो तुम्हारा आसमानी बाप तुम्हारे गुनाह भी मुआफ़ नहीं करेगा।]"

---

[t]होशाना (इब्रानी : मेहरबानी करके हमें बचा)। यहाँ इस में हम्द-ओ-सना का उन्सुर भी पाया जाता है।

[u]होशाना (इब्रानी : मेहरबानी करके हमें बचा)। यहाँ इस में हम्द-ओ-सना का उन्सुर भी पाया जाता है।

किस ने ईसा को इख़तियार दिया?

27 वह एक और दफ़ा यरूशलम पहुँच गए। और
जब ईसा बैत-उल-मुक़द्दस में फिर रहा था तो राहनुमा
इमाम, शरीअत के उलमा और बुज़ुर्ग उस के पास
आए। 28 उन्हों ने पूछा, "आप यह सब कुछ किस
इख़तियार से कर रहे हैं? किस ने आप को यह करने
का इख़तियार दिया है?"
29 ईसा ने जवाब दिया, "मेरा भी तुम से एक सवाल
है। इस का जवाब दो तो फिर तुम को बता दूँगा
कि मैं यह किस इख़तियार से कर रहा हूँ। 30 मुझे
बताओ, क्या यहया का बपतिस्मा आसमानी था या
इन्सानी?"
31 वह आपस में बह्स करने लगे, "अगर हम कहें
'आसमानी' तो वह पूछेगा, 'तो फिर तुम उस पर
ईमान क्यूँ न लाए?' 32 लेकिन हम कैसे कह सकते
हैं कि वह इन्सानी था?" वजह यह थी कि वह आम
लोगों से डरते थे, क्यूँकि सब मानते थे कि यहया
वाक़ई नबी था। 33 चुनाँचे उन्हों ने जवाब दिया, "हम
नहीं जानते।"
ईसा ने कहा, "तो फिर मैं भी तुम को नहीं बताता
कि मैं यह सब कुछ किस इख़तियार से कर रहा हूँ।"

अंगूर के बाग़ के मुज़ारेओं की बग़ावत

12 1 फिर वह तम्सीलों में उन से बात करने
लगा। "किसी आदमी ने अंगूर का एक बाग़
लगाया। उस ने उस की चारदीवारी बनाई, अंगूरों
का रस निकालने के लिए एक गढ़े की खुदाई की
और पहरेदारों के लिए बुर्ज तामीर किया। फिर वह
उसे मुज़ारेओं के सपुर्द करके बैरून-ए-मुल्क चला
गया। 2 जब अंगूर पक गए तो उस ने अपने नौकर
को मुज़ारेओं के पास भेज दिया ताकि वह उन से
मालिक का हिस्सा वसूल करे। 3 लेकिन मुज़ारेओं ने
उसे पकड़ कर उस की पिटाई की और उसे ख़ाली
हाथ लौटा दिया। 4 फिर मालिक ने एक और नौकर
को भेज दिया। लेकिन उन्हों ने उस की भी बेइज़्ज़ती
करके उस का सर फोड़ दिया। 5 जब मालिक ने
तीसरे नौकर को भेजा तो उन्हों ने उसे मार डाला।
यूँ उस ने कई एक को भेजा। बाज़ को उन्हों ने मारा
पीटा, बाज़ को क़त्ल किया। 6 आख़िरकार सिर्फ़ एक
बाक़ी रह गया था। वह था उस का प्यारा बेटा। अब
उस ने उसे भेज कर कहा, 'आख़िर मेरे बेटे का तो
लिहाज़ करेंगे।' 7 लेकिन मुज़ारे एक दूसरे से कहने
लगे, 'यह ज़मीन का वारिस है। आओ हम इसे मार
डालें तो फिर इस की मीरास हमारी ही होगी।' 8 उन्हों
ने उसे पकड़ कर क़त्ल किया और बाग़ से बाहर फैंक
दिया।
9 अब बताओ, बाग़ का मालिक क्या करेगा? वह
जा कर मुज़ारेओं को हलाक करेगा और बाग़ को
दूसरों के सपुर्द कर देगा। 10 क्या तुम ने कलाम-ए-
मुक़द्दस का यह हवाला नहीं पढ़ा,

'जिस पत्थर को मकान बनाने वालों ने रद्द किया
वह कोने का बुन्यादी पत्थर बन गया।
11 यह रब ने किया
और देखने में कितना हैरतअंगेज़ है'।"

12 इस पर दीनी राहनुमाओं ने ईसा को गिरिफ़्तार
करने की कोशिश की, क्यूँकि वह समझ गए थे कि
तम्सील में बयानशुदा मुज़ारे हम ही हैं। लेकिन वह
हुजूम से डरते थे, इस लिए वह उसे छोड़ कर चले
गए।

क्या टैक्स देना जाइज़ है?

13 बाद में उन्हों ने कुछ फ़रीसियों और हेरोदेस के
पैरोकारों को उस के पास भेज दिया ताकि वह उसे
कोई ऐसी बात करने पर उभारें जिस से उसे पकड़ा
जा सके। 14 वह उस के पास आ कर कहने लगे,
"उस्ताद, हम जानते हैं कि आप सच्चे हैं और किसी
की पर्वा नहीं करते। आप जानिबदार नहीं होते बल्कि
दयानतदारी से अल्लाह की राह की तालीम देते हैं।
अब हमें बताएँ कि क्या रोमी शहन्शाह को टैक्स
देना जाइज़ है या नाजाइज़? क्या हम अदा करें या न
करें?"

15 लेकिन ईसा ने उन की रियाकारी जान कर उन
से कहा, “मुझे क्यूँ फंसाना चाहते हो? चाँदी का एक
रोमी सिक्का मेरे पास ले आओ।”
16 वह एक सिक्का उस के पास ले आए तो उस ने
पूछा, “किस की सूरत और नाम इस पर कन्दा है?”
उन्हों ने जवाब दिया, “शहन्शाह का।”
17 उस ने कहा, “तो जो शहन्शाह का है शहन्शाह
को दो और जो अल्लाह का है अल्लाह को।” उस का
यह जवाब सुन कर उन्हों ने बड़ा ताज्जुब किया।

क्या हम जी उठेंगे?

18 फिर कुछ सदूक़ी ईसा के पास आए। सदूक़ी
नहीं मानते कि रोज़-ए-क़ियामत मुर्दे जी उठेंगे। उन्हों
ने ईसा से एक सवाल किया, 19 “उस्ताद, मूसा ने
हमें हुक्म दिया कि अगर कोई शादीशुदा आदमी
बेऔलाद मर जाए और उस का भाई हो तो भाई का
फ़र्ज़ है कि वह बेवा से शादी करके अपने भाई के
लिए औलाद पैदा करे। 20 अब फ़र्ज़ करें कि सात
भाई थे। पहले ने शादी की, लेकिन बेऔलाद फ़ौत
हुआ। 21 इस पर दूसरे ने उस से शादी की, लेकिन
वह भी बेऔलाद मर गया। फिर तीसरे भाई ने उस से
शादी की। 22 यह सिलसिला सातवें भाई तक जारी
रहा। यके बाद दीगरे हर भाई बेवा से शादी करने
के बाद मर गया। आख़िर में बेवा भी फ़ौत हो गई।
23 अब बताएँ कि क़ियामत के दिन वह किस की
बीवी होगी? क्यूँकि सात के सात भाइयों ने उस से
शादी की थी।”
24 ईसा ने जवाब दिया, “तुम इस लिए ग़लती पर हो
कि न तुम कलाम-ए-मुक़द्दस से वाक़िफ़ हो, न अल्लाह
की क़ुदरत से। 25 क्यूँकि जब मुर्दे जी उठेंगे तो न वह
शादी करेंगे न उन की शादी कराई जाएगी बल्कि वह
आसमान पर फ़रिश्तों की मानिन्द होंगे। 26 रही यह
बात कि मुर्दे जी उठेंगे। क्या तुम ने मूसा की किताब
में नहीं पढ़ा कि अल्लाह जलती हुई झाड़ी में से किस
तरह मूसा से हमकलाम हुआ? उस ने फ़रमाया, ‘मैं
इब्राहीम का ख़ुदा, इस्हाक़ का ख़ुदा और याक़ूब का
ख़ुदा हूँ,’ हालाँकि उस वक़्त तीनों काफ़ी अर्से से मर
चुके थे। 27 इस का मतलब है कि यह हक़ीक़त में
ज़िन्दा हैं, क्यूँकि अल्लाह मुर्दों का नहीं, बल्कि ज़िन्दों
का ख़ुदा है। तुम से बड़ी ग़लती हुई है।”

अव्वल हुक्म

28 इतने में शरीअत का एक आलिम उन के पास
आया। उस ने उन्हें बह्स करते हुए सुना था और
जान लिया कि ईसा ने अच्छा जवाब दिया, इस लिए
उस ने पूछा, “तमाम अह्काम में से कौन सा हुक्म
सब से अहम है?”
29 ईसा ने जवाब दिया, “अव्वल हुक्म यह है : ‘सुन
ऐ उसराईल! रब हमारा ख़ुदा एक ही रब है। 30 रब
अपने ख़ुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान, अपने
पूरे ज़हन और अपनी पूरी ताक़त से प्यार करना।’
31 दूसरा हुक्म यह है : ‘अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत
रखना जैसी तू अपने आप से रखता है।’ दीगर कोई
भी हुक्म इन दो अह्काम से अहम नहीं है।”
32 उस आलिम ने कहा, “शाबाश, उस्ताद! आप ने
सच कहा है कि अल्लाह सिर्फ़ एक ही है और उस
के सिवा कोई और नहीं है। 33 हमें उसे अपने पूरे
दिल, अपने पूरे ज़हन और अपनी पूरी ताक़त से प्यार
करना चाहिए और साथ साथ अपने पड़ोसी से वैसी
मुहब्बत रखनी चाहिए जैसी अपने आप से रखते हैं।
यह दो अह्काम भस्म होने वाली तमाम क़ुर्बानियों
और दीगर नज़रों से ज़्यादा अहमियत रखते हैं।”
34 जब ईसा ने उस का यह जवाब सुना तो उस से
कहा, “तू अल्लाह की बादशाही से दूर नहीं है।” इस
के बाद किसी ने भी उस से सवाल पूछने की जुरअत
न की।

मसीह के बारे में सवाल

35 जब ईसा बैत-उल-मुक़द्दस में तालीम दे रहा था
तो उस ने पूछा, “शरीअत के उलमा क्यूँ दावा करते
हैं कि मसीह दाऊद का फ़र्ज़न्द है? 36 क्यूँकि दाऊद
ने तो ख़ुद रूह-उल-क़ुद्स की मारिफ़त यह फ़रमाया,

‘रब ने मेरे रब से कहा,
मेरे दहने हाथ बैठ,
जब तक मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पाँओ के नीचे न कर दूँ।’
37 दाऊद तो ख़ुद मसीह को रब कहता है। तो फिर
वह किस तरह दाऊद का फ़र्ज़न्द हो सकता है?”

शरीअत के उलमा से ख़बरदार रहना

एक बड़ा हुजूम मज़े से ईसा की बातें सुन रहा था।
38 उन्हें तालीम देते वक़्त उस ने कहा, “उलमा से
ख़बरदार रहो! क्यूँकि वह शानदार चोग़े पहन कर
इधर उधर फिरना पसन्द करते हैं। जब लोग बाज़ारों
में सलाम करके उन की इज़्ज़त करते हैं तो फिर वह
ख़ुश हो जाते हैं। 39 उन की बस एक ही ख़्वाहिश
होती है कि इबादतख़ानों और ज़ियाफ़तों में इज़्ज़त
की कुर्सियों पर बैठ जाएँ। 40 यह लोग बेवाओं के
घर हड़प कर जाते और साथ साथ दिखावे के लिए
लम्बी लम्बी दुआएँ माँगते हैं। ऐसे लोगों को निहायत
सख़्त सज़ा मिलेगी।”

बेवा का चन्दा

41 ईसा बैत-उल-मुक़द्दस के चन्दे के बक्स के
मुक़ाबिल बैठ गया और हुजूम को हदिए डालते हुए
देखने लगा। कई अमीर बड़ी बड़ी रकमें डाल रहे
थे। 42 फिर एक ग़रीब बेवा भी वहाँ से गुज़री जिस ने
उस में ताँबे के दो मामूली से सिक्के डाल दिए। 43 ईसा
ने शागिर्दों को अपने पास बुला कर कहा, “मैं तुम
को सच बताता हूँ कि इस ग़रीब बेवा ने तमाम लोगों
की निस्बत ज़्यादा डाला है। 44 क्यूँकि इन सब ने
अपनी दौलत की कस्रत से दे दिया जबकि उस ने
ज़रूरतमन्द होने के बावुजूद भी अपने गुज़ारे के सारे
पैसे दे दिए हैं।”

बैत-उल-मुक़द्दस पर आने वाली तबाही

13 1 उस दिन जब ईसा बैत-उल-मुक़द्दस से
निकल रहा था तो उस के शागिर्दों ने कहा,
“उस्ताद, देखें कितने शानदार पत्थर और इमारतें
हैं!”
2 ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुम को यह बड़ी बड़ी
इमारतें नज़र आती हैं? पत्थर पर पत्थर नहीं रहेगा।
सब कुछ ढा दिया जाएगा।”

मुसीबतों और ईज़ारसानी की पेशगोई

3 बाद में ईसा ज़ैतून के पहाड़ पर बैत-उल-मुक़द्दस
के मुक़ाबिल बैठ गया। पतरस, याक़ूब, यूहन्ना और
अन्द्रियास अकेले उस के पास आए। उन्हों ने कहा,
4 “हमें ज़रा बताएँ, यह कब होगा? क्या क्या नज़र
आएगा जिस से मालूम होगा कि यह अब पूरा होने
को है?”
5 ईसा ने जवाब दिया, “ख़बरदार रहो कि कोई तुम्हें
गुमराह न कर दे। 6 बहुत से लोग मेरा नाम ले कर
आएँगे और कहेंगे, ‘मैं ही मसीह हूँ।’ यूँ वह बहुतों को
गुमराह कर देंगे। 7 जब जंगों की ख़बरें और अफ़वाहें
तुम तक पहुँचेंगी तो मत घबराना। क्यूँकि लाज़िम है
कि यह सब कुछ पेश आए। तो भी अभी आख़िरत
नहीं होगी। 8 एक क़ौम दूसरी के ख़िलाफ़ उठ खड़ी
होगी और एक बादशाही दूसरी के ख़िलाफ़। जगह
जगह ज़ल्ज़ले आएँगे, काल पड़ेंगे। लेकिन यह सिर्फ़
दर्द-ए-ज़ह की इब्तिदा ही होगी।
9 तुम ख़ुद ख़बरदार रहो। तुम को मक़ामी अदालतों
के हवाले कर दिया जाएगा और लोग यहूदी
इबादतख़ानों में तुम्हें कोड़े लगवाएँगे। मेरी ख़ातिर
तुम्हें हुक्मरानों और बादशाहों के सामने पेश किया
जाएगा। यूँ तुम उन्हें मेरी गवाही दोगे। 10 लाज़िम है
कि आख़िरत से पहले अल्लाह की ख़ुशख़बरी तमाम
अक़्वाम को सुनाई जाए। 11 लेकिन जब लोग तुम
को गिरिफ़्तार करके अदालत में पेश करेंगे तो यह
सोचते सोचते परेशान न हो जाना कि मैं क्या कहूँ।
बस वही कुछ कहना जो अल्लाह तुम्हें उस वक़्त
बताएगा। क्यूँकि उस वक़्त तुम नहीं बल्कि रूह-उल-
क़ुद्स बोलने वाला होगा। 12 भाई अपने भाई को और
बाप अपने बच्चे को मौत के हवाले कर देगा। बच्चे

अपने वालिदैन के ख़िलाफ़ खड़े हो कर उन्हें क़त्ल
करवाएँगे। 13 सब तुम से नफ़रत करेंगे, इस लिए कि
तुम मेरे पैरोकार हो। लेकिन जो आख़िर तक क़ाइम
रहेगा उसे नजात मिलेगी।

बैत-उल-मुक़द्दस की बेहुरमती

14 एक दिन आएगा जब तुम वहाँ जहाँ उसे नहीं
होना चाहिए वह कुछ खड़ा देखोगे जो बेहुरमती और
तबाही का बाइस है।" (क़ारी इस पर ध्यान दे!) "उस
वक़्त यहूदिया के रहने वाले भाग कर पहाड़ी इलाक़े
में पनाह लें। 15 जो अपने घर की छत पर हो वह न
उतरे, न कुछ साथ ले जाने के लिए घर में दाख़िल हो
जाए। 16 जो खेत में हो वह अपनी चादर साथ ले जाने
के लिए वापस न जाए। 17 उन ख़वातीन पर अफ़सोस
जो उन दिनों में हामिला हों या अपने बच्चों को दूध
पिलाती हों। 18 दुआ करो कि यह वाक़िआ सर्दियों
के मौसम में पेश न आए। 19 क्यूँकि उन दिनों में ऐसी
मुसीबत होगी कि दुनिया की तख़्लीक़ से आज तक
देखने में न आई होगी। इस क़िस्म की मुसीबत बाद
में भी कभी नहीं आएगी। 20 और अगर ख़ुदावन्द इस
मुसीबत का दौरानिया मुख़्तसर न करता तो कोई न
बचता। लेकिन उस ने अपने चुने हुओं की ख़ातिर
उस का दौरानिया मुख़्तसर कर दिया है।

21 उस वक़्त अगर कोई तुम को बताए, 'देखो,
मसीह यहाँ है,' या 'वह वहाँ है' तो उस की बात
न मानना। 22 क्यूँकि झूटे मसीह और झूटे नबी उठ
खड़े होंगे जो अजीब-ओ-ग़रीब निशान और मोजिज़े
दिखाएँगे ताकि अल्लाह के चुने हुए लोगों को ग़लत
रास्ते पर डाल दें - अगर यह मुमकिन होता। 23 इस
लिए ख़बरदार! मैं ने तुम को पहले ही इन सब बातों
से आगाह कर दिया है।

इब्न-ए-आदम की आमद

24 मुसीबत के उन दिनों के बाद सूरज तारीक
हो जाएगा और चाँद की रौशनी ख़त्म हो जाएगी।
25 सितारे आसमान पर से गिर पड़ेंगे और आसमान
की क़ुव्वतें हिलाई जाएँगी। 26 उस वक़्त लोग इब्न-
ए-आदम को बड़ी क़ुदरत और जलाल के साथ
बादलों में आते हुए देखेंगे। 27 और वह अपने
फ़रिश्तों को भेज देगा ताकि उस के चुने हुओं को
चारों तरफ़ से जमा करें, दुनिया के कोने कोने से
आसमान की इन्तिहा तक इकट्ठा करें।

अन्जीर के दरख़्त से सबक़

28 अन्जीर के दरख़्त से सबक़ सीखो। जूँ ही उस
की शाख़ें नर्म और लचकदार हो जाती हैं और उन से
कोंपलें फूट निकलती हैं तो तुम को मालूम हो जाता है
कि गर्मियों का मौसम क़रीब आ गया है। 29 इसी तरह
जब तुम यह वाक़िआत देखोगे तो जान लोगे कि इब्न-
ए-आदम की आमद क़रीब बल्कि दरवाज़े पर है।
30 मैं तुम को सच बताता हूँ, इस नस्ल के ख़त्म होने से
पहले पहले यह सब कुछ वाक़े होगा। 31 आसमान-
ओ-ज़मीन तो जाते रहेंगे, लेकिन मेरी बातें हमेशा तक
क़ाइम रहेंगी।

किसी को भी उस की आमद का वक़्त मालूम नहीं

32 लेकिन किसी को भी इल्म नहीं कि यह किस दिन
या कौन सी घड़ी रूनुमा होगा। आसमान के फ़रिश्तों
और फ़र्ज़न्द को भी इल्म नहीं बल्कि सिर्फ़ बाप को।
33 चुनाँचे ख़बरदार और चौकन्ने रहो! क्यूँकि तुम को
नहीं मालूम कि यह वक़्त कब आएगा। 34 इब्न-ए-
आदम की आमद उस आदमी से मुताबिक़त रखती है
जिसे किसी सफ़र पर जाना था। घर छोड़ते वक़्त उस
ने अपने नौकरों को इन्तिज़ाम चलाने का इख़तियार
दे कर हर एक को उस की अपनी ज़िम्मादारी सौंप
दी। दरबान को उस ने हुक्म दिया कि वह चौकस
रहे। 35 तुम भी इसी तरह चौकस रहो, क्यूँकि तुम
नहीं जानते कि घर का मालिक कब वापस आएगा,
शाम को, आधी रात को, मुर्ग़ के बाँग देते या पौ
फटते वक़्त। 36 ऐसा न हो कि वह अचानक आ कर
तुम को सोते पाए। 37 यह बात मैं न सिर्फ़ तुम को
बल्कि सब को बताता हूँ, चौकस रहो!"

ईसा के ख़िलाफ़ मन्सूबाबन्दियाँ

14 1 फ़सह और बेख़मीरी रोटी की ईद क़रीब
आ गई थी। सिर्फ़ दो दिन रह गए थे।
राहनुमा इमाम और शरीअत के उलमा ईसा को किसी
चालाकी से गिरिफ़्तार करके क़त्ल करने की तलाश
में थे। 2 उन्हों ने कहा, "लेकिन यह ईद के दौरान नहीं
होना चाहिए, ऐसा न हो कि अवाम में हलचल मच
जाए।"

ख़ातून ईसा पर ख़ुश्बू उंडेलती है

3 इतने में ईसा बैत-अनियाह आ कर एक आदमी
के घर में दाख़िल हुआ जो किसी वक़्त कोढ़ का
मरीज़ था। उस का नाम शमाऊन था। ईसा खाना
खाने के लिए बैठ गया तो एक औरत आई। उस
के पास ख़ालिस जटामासी के निहायत क़ीमती इत्र
का इत्रदान था। उस का सर तोड़ कर उस ने इत्र ईसा
के सर पर उंडेल दिया। 4 हाज़िरीन में से कुछ नाराज़
हुए। "इतना क़ीमती इत्र ज़ाए करने की क्या ज़रूरत
थी? 5 इस की क़ीमत कम अज़ कम चाँदी के 300
सिक्के थी। अगर इसे बेचा जाता तो इस के पैसे ग़रीबों
को दिए जा सकते थे।" ऐसी बातें करते हुए उन्हों ने
उसे झिड़का।

6 लेकिन ईसा ने कहा, "इसे छोड़ दो, तुम इसे क्यूँ
तंग कर रहे हो? इस ने तो मेरे लिए एक नेक काम
किया है। 7 ग़रीब तो हमेशा तुम्हारे पास रहेंगे, और
तुम जब भी चाहो उन की मदद कर सकोगे। लेकिन
मैं हमेशा तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा। 8 जो कुछ वह कर
सकती थी उस ने किया है। मुझ पर इत्र उंडेलने से
वह मुक़र्ररा वक़्त से पहले मेरे बदन को दफ़नाने के
लिए तय्यार कर चुकी है। 9 मैं तुम को सच बताता हूँ
कि तमाम दुनिया में जहाँ भी अल्लाह की ख़ुशख़बरी
का एलान किया जाएगा वहाँ लोग इस ख़ातून को
याद करके वह कुछ सुनाएँगे जो इस ने किया है।"

ईसा को दुश्मन के हवाले करने का मन्सूबा

10 फिर यहूदाह इस्करियोती जो बारह शागिर्दों में से
एक था राहनुमा इमामों के पास गया ताकि ईसा को
उन के हवाले करने की बात करे। 11 उस के आने
का मक़्सद सुन कर वह ख़ुश हुए और उसे पैसे देने
का वादा किया। चुनाँचे वह ईसा को उन के हवाले
करने का मौक़ा ढूँडने लगा।

फ़सह की ईद के लिए तय्यारियाँ

12 बेख़मीरी रोटी की ईद आई जब लोग फ़सह के
लेले को क़ुर्बान करते थे। ईसा के शागिर्दों ने उस
से पूछा, "हम कहाँ आप के लिए फ़सह का खाना
तय्यार करें?"

13 चुनाँचे ईसा ने उन में से दो को यह हिदायत
दे कर यरूशलम भेज दिया कि "जब तुम शहर में
दाख़िल होगे तो तुम्हारी मुलाक़ात एक आदमी से
होगी जो पानी का घड़ा उठाए चल रहा होगा। उस
के पीछे हो लेना। 14 जिस घर में वह दाख़िल हो उस
के मालिक से कहना, 'उस्ताद आप से पूछते हैं कि
वह कमरा कहाँ है जहाँ मैं अपने शागिर्दों के साथ
फ़सह का खाना खाऊँ?' 15 वह तुम्हें दूसरी मन्ज़िल
पर एक बड़ा और सजा हुआ कमरा दिखाएगा। वह
तय्यार होगा। हमारे लिए फ़सह का खाना वहीं तय्यार
करना।"

16 दोनों चले गए तो शहर में दाख़िल हो कर सब
कुछ वैसा ही पाया जैसा ईसा ने उन्हें बताया था।
फिर उन्हों ने फ़सह का खाना तय्यार किया।

ग़द्दार कौन है?

17 शाम के वक़्त ईसा बारह शागिर्दों समेत वहाँ
पहुँच गया। 18 जब वह मेज़ पर बैठे खाना खा रहे थे
तो उस ने कहा, "मैं तुम को सच बताता हूँ, तुम में
से एक जो मेरे साथ खाना खा रहा है मुझे दुश्मन के
हवाले कर देगा।"

19 शागिर्द यह सुन कर ग़मगीन हुए। बारी बारी उन्हों
ने उस से पूछा, “मैं तो नहीं हूँ?”
20 ईसा ने जवाब दिया, “तुम बारह में से एक है।
वह मेरे साथ अपनी रोटी सालन के बर्तन में डाल रहा
है। 21 इब्न-ए-आदम तो कूच कर जाएगा जिस तरह
कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है, लेकिन उस शख़्स पर
अफ़सोस जिस के वसीले से उसे दुश्मन के हवाले
कर दिया जाएगा। उस के लिए बेहतर यह होता कि
वह कभी पैदा ही न होता।”

फ़सह का आख़िरी खाना

22 खाने के दौरान ईसा ने रोटी ले कर शुक्रगुज़ारी
की दुआ की और उसे टुकड़े करके शागिर्दों को दे
दिया। उस ने कहा, “यह लो, यह मेरा बदन है।”
23 फिर उस ने मै का प्याला ले कर शुक्रगुज़ारी की
दुआ की और उसे उन्हें दे दिया। सब ने उस में से पी
लिया। 24 उस ने उन से कहा, “यह मेरा ख़ून है, नए
अह्द का वह ख़ून जो बहुतों के लिए बहाया जाता
है। 25 मैं तुम को सच बताता हूँ कि अब से मैं अंगूर
का रस नहीं पियूँगा, क्यूँकि अगली दफ़ा इसे नए सिरे
से अल्लाह की बादशाही में ही पियूँगा।”
26 फिर वह एक ज़बूर गा कर निकले और ज़ैतून के
पहाड़ के पास पहुँचे।

पतरस के इन्कार की पेशगोई

27 ईसा ने उन्हें बताया, “तुम सब बर्गश्ता
हो जाओगे, क्यूँकि कलाम-ए-मुक़द्दस में अल्लाह
फ़रमाता है, ‘मैं चरवाहे को मार डालूँगा और भेड़ें
तित्तर-बित्तर हो जाएँगी।’ 28 लेकिन अपने जी उठने
के बाद में तुम्हारे आगे आगे गलील पहुँचूँगा।”
29 पतरस ने एतिराज़ किया, “दूसरे बेशक सब
बर्गश्ता हो जाएँ, लेकिन में कभी नहीं हूँगा।”
30 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुझे सच बताता हूँ,
इसी रात मुर्ग़ के दूसरी दफ़ा बाँग देने से पहले पहले
तू तीन बार मुझे जानने से इन्कार कर चुका होगा।”
31 पतरस ने इसरार किया, “हरगिज़ नहीं! मैं आप
को जानने से कभी इन्कार नहीं करूँगा, चाहे मुझे
आप के साथ मरना भी पड़े।”
दूसरों ने भी यही कुछ कहा।

गत्समनी बाग़ में ईसा की दुआ

32 वह एक बाग़ में पहुँचे जिस का नाम गत्समनी
था। ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, “यहाँ बैठ कर
मेरा इन्तिज़ार करो। मैं दुआ करने के लिए आगे जाता
हूँ।” 33 उस ने पतरस, याक़ूब और यूहन्ना को साथ
लिया। वहाँ वह घबरा कर बेक़रार होने लगा। 34 उस
ने उन से कहा, “मैं दुख से इतना दबा हुआ हूँ कि
मरने को हूँ। यहाँ ठहर कर जागते रहो।”
35 कुछ आगे जा कर वह ज़मीन पर गिर गया और
दुआ करने लगा कि अगर मुमकिन हो तो मुझे आने
वाली घड़ियों की तक्लीफ़ से गुज़रना न पड़े। 36 उस
ने कहा, “ऐ अब्बा, ऐ बाप! तेरे लिए सब कुछ
मुमकिन है। दुख का यह प्याला मुझ से हटा ले।
लेकिन मेरी नहीं बल्कि तेरी मर्ज़ी पूरी हो।”
37 वह अपने शागिर्दों के पास वापस आया तो देखा
कि वह सो रहे हैं। उस ने पतरस से कहा, “शमाऊन,
क्या तू सो रहा है? क्या तू एक घंटा भी नहीं जाग
सका? 38 जागते और दुआ करते रहो ताकि तुम
आज़माइश में न पड़ो। क्यूँकि रूह तो तय्यार है,
लेकिन जिस्म कमज़ोर।”
39 एक बार फिर उस ने जा कर वही दुआ की जो
पहले की थी। 40 जब वापस आया तो दुबारा देखा
कि वह सो रहे हैं, क्यूँकि नींद की बदौलत उन की
आँखें बोझल थीं। वह नहीं जानते थे कि क्या जवाब
दें।
41 जब ईसा तीसरी बार वापस आया तो उस ने उन
से कहा, “तुम अभी तक सो और आराम कर रहे
हो? बस काफ़ी है। वक़्त आ गया है। देखो, इब्न-
ए-आदम को गुनाहगारों के हवाले किया जा रहा है।
42 उठो। आओ, चलें। देखो, मुझे दुश्मन के हवाले
करने वाला क़रीब आ चुका है।”

ईसा की गिरिफ़्तारी

43 वह अभी यह बात कर ही रहा था कि यहूदाह
पहुँच गया, जो बारह शागिर्दों में से एक था। उस के
साथ तलवारों और लाठियों से लेस आदमियों का
हुजूम था। उन्हें राहनुमा इमामों, शरीअत के उलमा
और बुज़ुर्गों ने भेजा था। 44 इस ग़द्दार यहूदाह ने उन्हें
एक इम्तियाज़ी निशान दिया था कि जिस को मैं बोसा
दूँ वही ईसा है। उसे गिरिफ़्तार करके ले जाएँ।
45 जूँ ही वह पहुँचे यहूदाह ईसा के पास गया और
"उस्ताद!" कह कर उसे बोसा दिया। 46 इस पर उन्हों
ने उसे पकड़ कर गिरिफ़्तार कर लिया। 47 लेकिन
ईसा के पास खड़े एक शख़्स ने अपनी तलवार मियान
से निकाली और इमाम-ए-आज़म के ग़ुलाम को मार
कर उस का कान उड़ा दिया। 48 ईसा ने उन से पूछा,
"क्या मैं डाकू हूँ कि तुम तलवारें और लाठियाँ लिए
मुझे गिरिफ़्तार करने निकले हो? 49 मैं तो रोज़ाना बैत-
उल-मुक़द्दस में तुम्हारे पास था और तालीम देता रहा,
मगर तुम ने मुझे गिरिफ़्तार नहीं किया। लेकिन यह
इस लिए हो रहा है ताकि कलाम-ए-मुक़द्दस की बातें
पूरी हो जाएँ।"
50 फिर सब के सब उसे छोड़ कर भाग गए।
51 लेकिन एक नौजवान ईसा के पीछे पीछे चलता
रहा जो सिर्फ़ चादर ओढ़े हुए था। लोगों ने उसे
पकड़ने की कोशिश की, 52 लेकिन वह चादर छोड़
कर नंगी हालत में भाग गया।

यहूदी अदालत-ए-आलिया के सामने

53 वह ईसा को इमाम-ए-आज़म के पास ले गए जहाँ
तमाम राहनुमा इमाम, बुज़ुर्ग और शरीअत के उलमा
भी जमा थे। 54 इतने में पतरस कुछ फ़ासिले पर ईसा
के पीछे पीछे इमाम-ए-आज़म के सहन तक पहुँच
गया। वहाँ वह मुलाज़िमों के साथ बैठ कर आग
तापने लगा। 55 मकान के अन्दर राहनुमा इमाम और
यहूदी अदालत-ए-आलिया के तमाम अफ़राद ईसा के
ख़िलाफ़ गवाहियाँ ढूँड रहे थे ताकि उसे सज़ा-ए-मौत
दिलवा सकें। लेकिन कोई गवाही न मिली। 56 काफ़ी
लोगों ने उस के ख़िलाफ़ झूटी गवाही तो दी, लेकिन
उन के बयान एक दूसरे के मुतज़ाद थे।
57 आख़िरकार बाज़ ने खड़े हो कर यह झूटी गवाही
दी, 58 "हम ने इसे यह कहते सुना है कि मैं इन्सान के
हाथों के बने इस बैत-उल-मुक़द्दस को ढा कर तीन
दिन के अन्दर अन्दर नया मक़्दिस तामीर कर दूँगा,
एक ऐसा मक़्दिस जो इन्सान के हाथ नहीं बनाएँगे।"
59 लेकिन उन की गवाहियाँ भी एक दूसरी से मुतज़ाद
थीं।
60 फिर इमाम-ए-आज़म ने हाज़िरीन के सामने खड़े
हो कर ईसा से पूछा, "क्या तू कोई जवाब नहीं देगा?
यह क्या गवाहियाँ हैं जो यह लोग तेरे ख़िलाफ़ दे रहे
हैं?"
61 लेकिन ईसा ख़ामोश रहा। उस ने कोई जवाब
न दिया। इमाम-ए-आज़म ने उस से एक और सवाल
किया, "क्या तू अल-हमीद का फ़र्ज़न्द मसीह है?"
62 ईसा ने कहा, "जी, मैं हूँ। और आइन्दा तुम इब्न-
ए-आदम को क़ादिर-ए-मुतलक़ के दहने हाथ बैठे
और आसमान के बादलों पर आते हुए देखोगे।"
63 इमाम-ए-आज़म ने रंजिश का इज़हार करके
अपने कपड़े फाड़ लिए और कहा, "हमें मज़ीद
गवाहों की क्या ज़रूरत रही! 64 आप ने ख़ुद सुन
लिया है कि इस ने कुफ़्र बका है। आप का क्या
फ़ैसला है?"
सब ने उसे सज़ा-ए-मौत के लाइक़ क़रार दिया।
65 फिर कुछ उस पर थूकने लगे। उन्हों ने उस की
आँखों पर पट्टी बांधी और उसे मुक्के मार मार कर
कहने लगे, "नबुव्वत कर!" मुलाज़िमों ने भी उसे
थप्पड़ मारे।

पतरस ईसा को जानने से इन्कार करता है

66 इस दौरान पतरस नीचे सहन में था। इमाम-ए-
आज़म की एक नौकरानी वहाँ से गुज़री 67 और देखा
कि पतरस वहाँ आग ताप रहा है। उस ने ग़ौर से

उस पर नज़र की और कहा, “तुम भी नासरत के उस
आदमी ईसा के साथ थे।”
68 लेकिन उस ने इन्कार किया, “मैं नहीं जानता या
समझता कि तू क्या बात कर रही है।” यह कह कर
वह गेट के क़रीब चला गया। [उसी लम्हे मुर्ग़ ने बाँग
दी।]
69 जब नौकरानी ने उसे वहाँ देखा तो उस ने दुबारा
पास खड़े लोगों से कहा, “यह बन्दा उन में से है।”
70 दुबारा पतरस ने इन्कार किया।
थोड़ी देर के बाद पतरस के साथ खड़े लोगों ने भी
उस से कहा, “तुम ज़रूर उन में से हो क्यूँकि तुम
गलील के रहने वाले हो।”
71 इस पर पतरस ने क़सम खा कर कहा, “मुझ पर
लानत अगर मैं झूट बोल रहा हूँ। मैं उस आदमी को
नहीं जानता जिस का ज़िक्र तुम कर रहे हो।”
72 फ़ौरन मुर्ग़ की बाँग दूसरी मर्तबा सुनाई दी। फिर
पतरस को वह बात याद आई जो ईसा ने उस से कही
थी, “मुर्ग़ के दूसरी दफ़ा बाँग देने से पहले पहले तू
तीन बार मुझे जानने से इन्कार कर चुका होगा।” इस
पर वह रो पड़ा।

पीलातुस के सामने

15 1 सुब्ह-सवेरे ही राहनुमा इमाम बुज़ुर्गों,
शरीअत के उलमा और पूरी यहूदी
अदालत-ए-आलिया के साथ मिल कर फ़ैसले तक
पहुँच गए। वह ईसा को बांध कर वहाँ से ले गए
और रोमी गवर्नर पीलातुस के हवाले कर दिया।
2 पीलातुस ने उस से पूछा, “क्या तुम यहूदियों के
बादशाह हो?”
ईसा ने जवाब दिया, “जी, आप ख़ुद कहते हैं।”
3 राहनुमा इमामों ने उस पर बहुत इल्ज़ाम लगाए।
4 चुनाँचे पीलातुस ने दुबारा उस से सवाल किया,
“क्या तुम कोई जवाब नहीं दोगे? यह तो तुम पर
बहुत से इल्ज़ामात लगा रहे हैं।”
5 लेकिन ईसा ने इस पर भी कोई जवाब न दिया,
और पीलातुस बड़ा हैरान हुआ।

सज़ा-ए-मौत का फ़ैसला

6 उन दिनों यह रिवाज था कि हर साल फ़सह की
ईद पर एक क़ैदी को रिहा कर दिया जाता था। यह
क़ैदी अवाम से मुन्तख़ब किया जाता था। 7 उस वक़्त
कुछ आदमी जेल में थे जो हुकूमत के ख़िलाफ़ किसी
इन्क़िलाबी तहरीक में शरीक हुए थे और जिन्हों ने
बग़ावत के मौक़े पर क़त्ल-ओ-ग़ारत की थी। उन
में से एक का नाम बर-अब्बा था। 8 अब हुजूम ने
पीलातुस के पास आ कर उस से गुज़ारिश की कि
वह मामूल के मुताबिक़ एक क़ैदी को आज़ाद कर
दे। 9 पीलातुस ने पूछा, “क्या तुम चाहते हो कि मैं
यहूदियों के बादशाह को आज़ाद कर दूँ?” 10 वह
जानता था कि राहनुमा इमामों ने ईसा को सिर्फ़ हसद
की बिना पर उस के हवाले किया है।
11 लेकिन राहनुमा इमामों ने हुजूम को उकसाया कि
वह ईसा के बजाय बर-अब्बा को माँगें। 12 पीलातुस
ने सवाल किया, “फिर मैं इस के साथ क्या करूँ
जिस का नाम तुम ने यहूदियों का बादशाह रखा है?”
13 वह चीख़े, “उसे मस्लूब करें।”
14 पीलातुस ने पूछा, “क्यूँ? उस ने क्या जुर्म किया
है?”
लेकिन लोग मज़ीद शोर मचा कर चीख़ते रहे, “उसे
मस्लूब करें!”
15 चुनाँचे पीलातुस ने हुजूम को मुत्मइन करने की
ख़ातिर बर-अब्बा को आज़ाद कर दिया। उस ने ईसा
को कोड़े लगाने को कहा, फिर उसे मस्लूब करने के
लिए फ़ौजियों के हवाले कर दिया।

फ़ौजी ईसा का मज़ाक़ उड़ाते हैं

16 फ़ौजी ईसा को गवर्नर के महल बनाम प्रैटोरियुम
के सहन में ले गए और पूरी पलटन को इकट्ठा किया।
17 उन्हों ने उसे अर्ग़वानी रंग का लिबास पहनाया
और काँटेदार टहनियों का एक ताज बना कर उस के
सर पर रख दिया। 18 फिर वह उसे सलाम करने लगे,
“ऐ यहूदियों के बादशाह, आदाब!” 19 लाठी से उस

के सर पर मार मार कर वह उस पर थूकते रहे। घुटने
टेक कर उन्हों ने उसे सिज्दा किया। 20 फिर उस का
मज़ाक़ उड़ाने से थक कर उन्हों ने अर्ग़वानी लिबास
उतार कर उसे दुबारा उस के अपने कपड़े पहनाए।
फिर वह उसे मस्लूब करने के लिए बाहर ले गए।

ईसा को मस्लूब किया जाता है

21 उस वक़्त लिबिया के शहर कुरेन का रहने वाला
एक आदमी बनाम शमाऊन दीहात से शहर को आ
रहा था। वह सिकन्दर और रूफ़ुस का बाप था। जब
वह ईसा और फ़ौजियों के पास से गुज़रने लगा तो
फ़ौजियों ने उसे सलीब उठाने पर मज्बूर किया। 22 यूँ
चलते चलते वह ईसा को एक मक़ाम पर ले गए
जिस का नाम गुल्गुता (यानी खोपड़ी का मक़ाम) था।
23 वहाँ उन्हों ने उसे मै पेश की जिस में मुर मिलाया
गया था, लेकिन उस ने पीने से इन्कार किया। 24 फिर
फ़ौजियों ने उसे मस्लूब किया और उस के कपड़े
आपस में बाँट लिए। यह फ़ैसला करने के लिए कि
किस को क्या क्या मिलेगा उन्हों ने क़ुरआ डाला।
25 नौ बजे सुब्ह का वक़्त था जब उन्हों ने उसे मस्लूब
किया। 26 एक तख़्ती सलीब पर लगा दी गई जिस
पर यह इल्ज़ाम लिखा था, "यहूदियों का बादशाह।"
27 दो डाकुओं को भी ईसा के साथ मस्लूब किया
गया, एक को उस के दहने हाथ और दूसरे को उस
के बाएँ हाथ। 28 [यूँ मुक़द्दस कलाम का वह हवाला
पूरा हुआ जिस में लिखा है, 'उसे मुजरिमों में शुमार
किया गया।']

29 जो वहाँ से गुज़रे उन्हों ने कुफ़्र बक कर उस की
तज़्लील की और सर हिला हिला कर अपनी हिक़ारत
का इज़हार किया। उन्हों ने कहा, "तू ने तो कहा था
कि मैं बैत-उल-मुक़द्दस को ढा कर उसे तीन दिन के
अन्दर अन्दर दुबारा तामीर कर दूँगा। 30 अब सलीब
पर से उतर कर अपने आप को बचा!"

31 राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा ने भी
ईसा का मज़ाक़ उड़ा कर कहा, "इस ने औरों को
बचाया, लेकिन अपने आप को नहीं बचा सकता।
32 उसराईल का यह बादशाह मसीह अब सलीब पर
से उतर आए ताकि हम यह देख कर ईमान लाएँ।"
और जिन आदमियों को उस के साथ मस्लूब किया
गया था उन्हों ने भी उसे लान-तान की।

ईसा की मौत

33 दोपहर बारह बजे पूरा मुल्क अंधेरे में डूब गया।
यह तारीकी तीन घंटों तक रही। 34 फिर तीन बजे
ईसा ऊँची आवाज़ से पुकार उठा, "एली, एली, लमा
शबक़तनी?" जिस का मतलब है, "ऐ मेरे ख़ुदा, ऐ
मेरे ख़ुदा, तू ने मुझे क्यूँ तर्क कर दिया है?"

35 यह सुन कर पास खड़े कुछ लोग कहने लगे,
"वह इल्यास नबी को बुला रहा है।" 36 किसी ने दौड़
कर मै के सिरके में एक इस्फ़ंज डुबोया और उसे डंडे
पर लगा कर ईसा को चुसाने की कोशिश की। वह
बोला, "आओ हम देखें, शायद इल्यास आ कर उसे
सलीब पर से उतार ले।"

37 लेकिन ईसा ने बड़े ज़ोर से चिल्ला कर दम छोड़
दिया।

38 उसी वक़्त बैत-उल-मुक़द्दस के मुक़द्दसतरीन
कमरे के सामने लटका हुआ पर्दा ऊपर से ले कर
नीचे तक दो हिस्सों में फट गया। 39 जब ईसा के
मुक़ाबिल खड़े रोमी अफ़्सर [v]ने देखा कि वह किस
तरह मरा तो उस ने कहा, "यह आदमी वाक़ई अल्लाह
का फ़र्ज़न्द था!"

40 कुछ ख़वातीन भी वहाँ थीं जो कुछ फ़ासिले
पर उस का मुशाहदा कर रही थीं। उन में मरियम
मग्दलीनी, छोटे याक़ूब और योसेस की माँ मरियम
और सलोमी भी थीं। 41 गलील में यह औरतें ईसा के
पीछे चल कर इस की ख़िदमत करती रही थीं। कई

---

[v]सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़्सर।

और ख़वातीन भी वहाँ थीं जो उस के साथ यरूशलम
आ गई थीं।

ईसा को दफ़न किया जाता है

42 यह सब कुछ जुमए को हुआ जो अगले दिन के
सबत के लिए तय्यारी का दिन था। जब शाम होने को
थी 43 तो अरिमतियाह का एक आदमी बनाम यूसुफ़
हिम्मत करके पीलातुस के पास गया और उस से ईसा
की लाश माँगी। (यूसुफ़ यहूदी अदालत-ए-अलिया
का नामवर मैम्बर था और अल्लाह की बादशाही के
आने के इन्तिज़ार में था।) 44 पीलातुस यह सुन कर
हैरान हुआ कि ईसा मर चुका है। उस ने रोमी अफ़सर
को बुला कर उस से पूछा कि क्या ईसा वाक़ई मर
चुका है? 45 जब अफ़सर ने इस की तस्दीक़ की तो
पीलातुस ने यूसुफ़ को लाश दे दी। 46 यूसुफ़ ने कफ़न
ख़रीद लिया, फिर ईसा की लाश उतार कर उसे
कतान के कफ़न में लपेटा और एक क़ब्र में रख दिया
जो चटान में तराशी गई थी। आख़िर में उस ने एक
बड़ा पत्थर लुढ़का कर क़ब्र का मुँह बन्द कर दिया।
47 मरियम मग्दलीनी और योसेस की माँ मरियम ने
देख लिया कि ईसा की लाश कहाँ रखी गई है।

ईसा जी उठता है

16 1 हफ़्ते की शाम को जब सबत का दिन
गुज़र गया तो मरियम मग्दलीनी, याक़ूब की
माँ मरियम और सलोमी ने ख़ुश्बूदार मसाले ख़रीद
लिए, क्यूँकि वह क़ब्र के पास जा कर उन्हें ईसा की
लाश पर लगाना चाहती थीं। 2 चुनाँचे वह इत्वार को
सुब्ह-सवेरे ही क़ब्र पर गईं। सूरज तुलू हो रहा था।
3 रास्ते में वह एक दूसरे से पूछने लगीं, "कौन हमारे
लिए क़ब्र के मुँह से पत्थर को लुढ़काएगा?" 4 लेकिन
जब वहाँ पहुँचीं और नज़र उठा कर क़ब्र पर ग़ौर
किया तो देखा कि पत्थर को एक तरफ़ लुढ़काया
जा चुका है। यह पत्थर बहुत बड़ा था। 5 वह क़ब्र
में दाख़िल हुईं। वहाँ एक जवान आदमी नज़र आया
जो सफ़ेद लिबास पहने हुए दाईं तरफ़ बैठा था। वह
घबरा गईं।
6 उस ने कहा, "मत घबराओ। तुम ईसा नासरी को
ढूँड रही हो जो मस्लूब हुआ था। वह जी उठा है,
वह यहाँ नहीं है। उस जगह को ख़ुद देख लो जहाँ
उसे रखा गया था। 7 अब जाओ, उस के शागिर्दों और
पतरस को बता दो कि वह तुम्हारे आगे आगे गलील
पहुँच जाएगा। वहीं तुम उसे देखोगे, जिस तरह उस
ने तुम को बताया था।"
8 ख़वातीन लरज़ती और उलझी हुई हालत में क़ब्र
से निकल कर भाग गईं। उन्हों ने किसी को भी कुछ
न बताया, क्यूँकि वह निहायत सहमी हुई थीं।

ईसा मरियम मग्दलीनी पर ज़ाहिर होता है

9 जब ईसा इत्वार को सुब्ह-सवेरे जी उठा तो पहला
शख़्स जिस पर वह ज़ाहिर हुआ मरियम मग्दलीनी थी
जिस से उस ने सात बदरुहें निकाली थीं। 10 मरियम
ईसा के साथियों के पास गई जो मातम कर रहे और
रो रहे थे। उस ने उन्हें जो कुछ हुआ था बताया।
11 लेकिन गो उन्हों ने सुना कि ईसा ज़िन्दा है और कि
मरियम ने उसे देखा है तो भी उन्हें यक़ीन न आया।

ईसा मज़ीद दो शागिर्दों पर ज़ाहिर होता है

12 इस के बाद ईसा दूसरी सूरत में उन में से दो
पर ज़ाहिर हुआ जब वह यरूशलम से दीहात की
तरफ़ पैदल चल रहे थे। 13 दोनों ने वापस जा कर
यह बात बाक़ी लोगों को बताई। लेकिन उन्हें इन
का भी यक़ीन न आया।

ईसा ग्यारह रसूलों पर ज़ाहिर होता है

14 आख़िर में ईसा ग्यारह शागिर्दों पर भी ज़ाहिर
हुआ। उस वक़्त वह मेज़ पर बैठे खाना खा रहे थे।
उस ने उन्हें उन की बेएतिक़ादी और सख़्तदिली के
सबब से डाँटा, कि उन्हों ने उन का यक़ीन न किया
जिन्हों ने उसे ज़िन्दा देखा था। 15 फिर उस ने उन
से कहा, "पूरी दुनिया में जा कर तमाम मख़्लूक़ात

को अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाओ। 16 जो भी ईमान
ला कर बपतिस्मा ले उसे नजात मिलेगी। लेकिन
जो ईमान न लाए उसे मुजरिम क़रार दिया जाएगा।
17 और जहाँ जहाँ लोग ईमान रखेंगे वहाँ यह इलाही
निशान ज़ाहिर होंगे : वह मेरे नाम से बदरुहें निकाल
देंगे, नई नई ज़बानें बोलेंगे 18 और साँपों को उठा कर
महफ़ूज़ रहेंगे। मोहलिक ज़हर पीने से उन्हें नुक़्सान
नहीं पहुँचेगा और जब वह अपने हाथ मरीज़ों पर
रखेंगे तो शिफ़ा पाएँगे।”

ईसा को आसमान पर उठाया जाता है

19 उन से बात करने के बाद ख़ुदावन्द ईसा को
आसमान पर उठा लिया गया और वह अल्लाह के दहने
हाथ बैठ गया। 20 इस पर शागिर्दों ने निकल कर हर
जगह मुनादी की। और ख़ुदावन्द ने उन की हिमायत
करके इलाही निशानों से कलाम की तस्दीक़ की।

लूक़ा

पेशलफ़्ज़

1 [1] मुह्तरम थियुफ़िलुस, बहुत से लोग वह सब
कुछ लिख चुके हैं जो हमारे दरमियान वाक़े
हुआ है। [2] उन की कोशिश यह थी कि वही कुछ
बयान किया जाए जिस की गवाही वह देते हैं जो
शुरू ही से साथ थे और आज तक अल्लाह का कलाम
सुनाने की ख़िदमत सरअन्जाम दे रहे हैं। [3] मैं ने भी हर
मुमकिन कोशिश की है कि सब कुछ शुरू से और ऐन
हक़ीक़त के मुताबिक़ मालूम करूँ। अब मैं यह बातें
तर्तीब से आप के लिए लिखना चाहता हूँ। [4] आप यह
पढ़ कर जान लेंगे कि जो बातें आप को सिखाई गई
हैं वह सच और दुरुस्त हैं।

यहया के बारे में पेशगोई

[5] यहूदिया के बादशाह हेरोदेस के ज़माने में एक
इमाम था जिस का नाम ज़करियाह था। बैत-उल-
मुक़द्दस में इमामों के मुख़्तलिफ़ गुरोह ख़िदमत
सरअन्जाम देते थे, और ज़करियाह का ताल्लुक़
अबियाह के गुरोह से था। उस की बीवी इमाम-
ए-आज़म हारून की नस्ल से थी और उस का
नाम इलीशिबा था। [6] मियाँ-बीवी अल्लाह के नज़्दीक
रास्तबाज़ थे और रब के तमाम अह्काम और
हिदायात के मुताबिक़ बेइल्ज़ाम ज़िन्दगी गुज़ारते थे।
[7] लेकिन वह बेऔलाद थे। इलीशिबा के बच्चे पैदा
नहीं हो सकते थे। अब वह दोनों बूढ़े हो चुके थे।

[8] एक दिन बैत-उल-मुक़द्दस मैं अबियाह के गुरोह
की बारी थी और ज़करियाह अल्लाह के हुज़ूर अपनी
ख़िदमत सरअन्जाम दे रहा था। [9] दस्तूर के मुताबिक़
उन्हों ने क़ुरआ डाला ताकि मालूम करें कि रब के
मक़्दिस में जा कर बख़ूर की क़ुर्बानी कौन जलाए।
ज़करियाह को चुना गया। [10] जब वह मुक़र्ररा वक़्त
पर बख़ूर जलाने के लिए बैत-उल-मुक़द्दस में दाख़िल
हुआ तो जमा होने वाले तमाम परस्तार सहन में दुआ
कर रहे थे।

[11] अचानक रब का एक फ़रिश्ता ज़ाहिर हुआ जो
बख़ूर जलाने की क़ुर्बानगाह के दहनी तरफ़ खड़ा था।
[12] उसे देख कर ज़करियाह घबराया और बहुत डर
गया। [13] लेकिन फ़रिश्ते ने उस से कहा, "ज़करियाह,
मत डर! अल्लाह ने तेरी दुआ सुन ली है। तेरी बीवी
इलीशिबा के बेटा होगा। उस का नाम यहया रखना।
[14] वह न सिर्फ़ तेरे लिए ख़ुशी और मुसर्रत का बाइस
होगा, बल्कि बहुत से लोग उस की पैदाइश पर ख़ुशी
मनाएँगे। [15] क्यूँकि वह रब के नज़्दीक अज़ीम होगा।
लाज़िम है कि वह मै और शराब से पर्हेज़ करे। वह
पैदा होने से पहले ही रूह-उल-क़ुद्स से मामूर होगा
[16] और इस्राईली क़ौम में से बहुतों को रब उन के
ख़ुदा के पास वापस लाएगा। [17] वह इल्यास की रूह
और क़ुव्वत से ख़ुदावन्द के आगे आगे चलेगा। उस
की ख़िदमत से वालिदों के दिल अपने बच्चों की तरफ़
माइल हो जाएंगे और नाफ़रमान लोग रास्तबाज़ों की
दानाई की तरफ़ रुजू करेंगे। यूँ वह इस क़ौम को रब
के लिए तय्यार करेगा।"

[18] ज़करियाह ने फ़रिश्ते से पूछा, "मैं किस तरह
जानूँ कि यह बात सच है? मैं ख़ुद बूढ़ा हूँ और मेरी
बीवी भी उम्ररसीदा है।"

[19] फ़रिश्ते ने जवाब दिया, "मैं जिब्राईल हूँ जो
अल्लाह के हुज़ूर खड़ा रहता हूँ। मुझे इसी मक़्सद के
लिए भेजा गया है कि तुझे यह ख़ुशख़बरी सुनाऊँ।
[20] लेकिन चूँकि तू ने मेरी बात का यक़ीन नहीं किया
इस लिए तू ख़ामोश रहेगा और उस वक़्त तक बोल
नहीं सकेगा जब तक तेरे बेटा पैदा न हो। मेरी यह
बातें मुक़र्ररा वक़्त पर ही पूरी होंगी।"

21 इस दौरान बाहर के लोग ज़करियाह के इन्तिज़ार
में थे। वह हैरान होते जा रहे थे कि उसे वापस आने
में क्यूँ इतनी देर हो रही है। 22 आख़िरकार वह बाहर
आया, लेकिन वह उन से बात न कर सका। तब
उन्हों ने जान लिया कि उस ने बैत-उल-मुक़द्दस में
रोया देखी है। उस ने हाथों से इशारे तो किए, लेकिन
ख़ामोश रहा।

23 ज़करियाह मुक़र्ररा वक़्त तक बैत-उल-मुक़द्दस
में अपनी ख़िदमत अन्जाम देता रहा, फिर अपने घर
वापस चला गया। 24 थोड़े दिनों के बाद उस की बीवी
इलीशिबा हामिला हो गई और वह पाँच माह तक घर
में छुपी रही। 25 उस ने कहा, "ख़ुदावन्द ने मेरे लिए
कितना बड़ा काम किया है, क्यूँकि अब उस ने मेरी
फ़िक्र की और लोगों के सामने से मेरी रुस्वाई दूर
कर दी।"

ईसा की पैदाइश की पेशगोई

26–27 इलीशिबा छः माह से उम्मीद से थी जब
अल्लाह ने जिब्राईल फ़रिश्ते को एक कुंवारी के पास
भेजा जो नासरत में रहती थी। नासरत गलील का
एक शहर है और कुंवारी का नाम मरियम था। उस
की मंगनी एक मर्द के साथ हो चुकी थी जो दाऊद
बादशाह की नस्ल से था और जिस का नाम यूसुफ़
था। 28 फ़रिश्ते ने उस के पास आ कर कहा, "ऐ
ख़ातून जिस पर रब का ख़ास फ़ज़्ल हुआ है, सलाम!
रब तेरे साथ है।"

29 मरियम यह सुन कर घबरा गई और सोचा, "यह
किस तरह का सलाम है?" 30 लेकिन फ़रिश्ते ने
अपनी बात जारी रखी और कहा, "ऐ मरियम, मत
डर, क्यूँकि तुझ पर अल्लाह का फ़ज़्ल हुआ है। 31 तू
उम्मीद से हो कर एक बेटे को जन्म देगी। तुझे उस का
नाम ईसा (नजात देने वाला) रखना है। 32 वह अज़ीम
होगा और अल्लाह तआला का फ़र्ज़न्द कहलाएगा।
रब हमारा ख़ुदा उसे उस के बाप दाऊद के तख़्त पर
बिठाएगा 33 और वह हमेशा तक इस्राईल पर हुकूमत
करेगा। उस की सल्तनत कभी ख़त्म न होगी।"

34 मरियम ने फ़रिश्ते से कहा, "यह क्यूँकर हो
सकता है? अभी तो मैं कुंवारी हूँ।"

35 फ़रिश्ते ने जवाब दिया, "रूह-उल-क़ुद्स तुझ पर
नाज़िल होगा, अल्लाह तआला की क़ुदरत का साया
तुझ पर छा जाएगा। इस लिए यह बच्चा क़ुद्दूस होगा
और अल्लाह का फ़र्ज़न्द कहलाएगा। 36 और देख,
तेरी रिश्तेदार इलीशिबा के भी बेटा होगा हालाँकि
वह उम्रसीदा है। गो उसे बाँझ क़रार दिया गया था,
लेकिन वह छः माह से उम्मीद से है। 37 क्यूँकि अल्लाह
के नज़्दीक कोई काम नामुमकिन नहीं है।"

38 मरियम ने जवाब दिया, "मैं रब की ख़िदमत के
लिए हाज़िर हूँ। मेरे साथ वैसा ही हो जैसा आप ने
कहा है।" इस पर फ़रिश्ता चला गया।

मरियम इलीशिबा से मिलती है

39 उन दिनों में मरियम यहूदिया के पहाड़ी इलाक़े
के एक शहर के लिए रवाना हुई। उस ने जल्दी जल्दी
सफ़र किया। 40 वहाँ पहुँच कर वह ज़करियाह के
घर में दाख़िल हुई और इलीशिबा को सलाम किया।
41 मरियम का यह सलाम सुन कर इलीशिबा का बच्चा
उस के पेट में उछल पड़ा और इलीशिबा ख़ुद रूह-
उल-क़ुद्स से भर गई। 42 उस ने बुलन्द आवाज़ से
कहा, "तू तमाम औरतों में मुबारक है और मुबारक
है तेरा बच्चा! 43 मैं कौन हूँ कि मेरे ख़ुदावन्द की माँ
मेरे पास आई! 44 जूँ ही मैं ने तेरा सलाम सुना बच्चा
मेरे पेट में ख़ुशी से उछल पड़ा। 45 तू कितनी मुबारक
है, क्यूँकि तू ईमान लाई कि जो कुछ रब ने फ़रमाया
है वह तक्मील तक पहुँचेगा।"

मरियम का गीत

46 इस पर मरियम ने कहा,
"मेरी जान रब की ताज़ीम करती है
47 और मेरी रूह अपने नजातदहिन्दा अल्लाह से
निहायत ख़ुश है।
48 क्यूँकि उस ने अपनी ख़ादिमा की पस्ती पर नज़र
की है।

हाँ, अब से तमाम नस्लें मुझे मुबारक कहेंगी,
49 क्यूँकि क़ादिर-ए-मुतलक़ ने मेरे लिए बड़े बड़े
काम किए हैं।
उस का नाम क़ुद्दूस है।
50 जो उस का ख़ौफ़ मानते हैं
उन पर वह पुश्त-दर-पुश्त अपनी रहमत ज़ाहिर
करेगा।
51 उस की क़ुदरत ने अज़ीम काम कर दिखाए हैं,
और दिल से मग़रूर लोग तित्तर-बित्तर हो गए हैं।
52 उस ने हुक्मरानों को उन के तख़्त से हटा कर
पस्तहाल लोगों को सरफ़राज़ कर दिया है।
53 भूकों को उस ने अच्छी चीज़ों से मालामाल
करके
अमीरों को ख़ाली हाथ लौटा दिया है।
54 वह अपने ख़ादिम इस्राईल की मदद के लिए आ
गया है।
हाँ, उस ने अपनी रहमत को याद किया है,
55 यानी वह दाइमी वादा जो उस ने हमारे बुज़ुर्गों के
साथ किया था,
इब्राहीम और उस की औलाद के साथ।"
56 मरियम तक़रीबन तीन माह इलीशिबा के हाँ
ठहरी रही, फिर अपने घर लौट गई।

यहया बपतिस्मा देने वाले की पैदाइश

57 फिर इलीशिबा का बच्चे को जन्म देने का दिन
आ पहुँचा और उस के बेटा हुआ। 58 जब उस के
हमसायों और रिश्तेदारों को इत्तिला मिली कि रब
की उस पर कितनी बड़ी रहमत हुई है तो उन्हों ने
उस के साथ ख़ुशी मनाई।
59 जब बच्चा आठ दिन का था तो वह उस का ख़तना
करवाने की रस्म के लिए आए। वह बच्चे का नाम
उस के बाप के नाम पर ज़करियाह रखना चाहते थे,
60 लेकिन उस की माँ ने एतिराज़ किया। उस ने कहा,
"नहीं, उस का नाम यहया हो।"
61 उन्हों ने कहा, "आप के रिश्तेदारों में तो ऐसा
नाम कहीं भी नहीं पाया जाता।" 62 तब उन्हों ने
इशारों से बच्चे के बाप से पूछा कि वह क्या नाम
रखना चाहता है।
63 जवाब में ज़करियाह ने तख़्ती मंगवा कर उस पर
लिखा, "इस का नाम यहया है।" यह देख कर सब
हैरान हुए। 64 उसी लम्हे ज़करियाह दुबारा बोलने के
क़ाबिल हो गया, और वह अल्लाह की तम्जीद करने
लगा। 65 तमाम हमसायों पर ख़ौफ़ छा गया और इस
बात का चर्चा यहूदिया के पूरे इलाक़े में फैल गया।
66 जिस ने भी सुना उस ने सन्जीदगी से इस पर ग़ौर
किया और सोचा, "इस बच्चे का क्या बनेगा?" क्यूँकि
रब की क़ुदरत उस के साथ थी।

ज़करियाह की नबुव्वत

67 उस का बाप ज़करियाह रूह-उल-क़ुद्स से मामूर
हो गया और नबुव्वत करके कहा,
68 "रब इस्राईल के अल्लाह की तम्जीद हो!
क्यूँकि वह अपनी क़ौम की मदद के लिए आया है,
उस ने फ़िद्या दे कर उसे छुड़ाया है।
69 उस ने अपने ख़ादिम दाऊद के घराने में
हमारे लिए एक अज़ीम नजातदहिन्दा खड़ा किया
है।
70 ऐसा ही हुआ जिस तरह उस ने क़दीम ज़मानों में
अपने मुक़द्दस नबियों की मारिफ़त फ़रमाया था,
71 कि वह हमें हमारे दुश्मनों से नजात दिलाएगा,
उन सब के हाथ से
जो हम से नफ़रत रखते हैं।
72 क्यूँकि उस ने फ़रमाया था कि वह हमारे
बापदादा पर रहम करेगा
73 और अपने मुक़द्दस अह्द को याद रखेगा,
उस वादे को जो उस ने क़सम खा कर
इब्राहीम के साथ किया था।
74 अब उस का यह वादा पूरा हो जाएगा :
हम अपने दुश्मनों से मख़्लसी पा कर
ख़ौफ़ के बग़ैर अल्लाह की ख़िदमत कर सकेंगे,
75 जीते जी उस के हुज़ूर मुक़द्दस और रास्त ज़िन्दगी
गुज़ार सकेंगे।

76 और तू, मेरे बच्चे, अल्लाह तआला का नबी
कहलाएगा।
क्यूँकि तू ख़ुदावन्द के आगे आगे
उस के रास्ते तय्यार करेगा।
77 तू उस की क़ौम को नजात का रास्ता दिखाएगा,
कि वह किस तरह अपने गुनाहों की मुआफ़ी
पाएगी।
78 हमारे अल्लाह की बड़ी रहमत की वजह से
हम पर इलाही नूर चमकेगा।
79 उस की रौशनी उन पर फैल जाएगी जो अंधेरे
और मौत के साय में बैठे हैं,
हाँ वह हमारे क़दमों को सलामती की राह पर
पहुँचाएगी।"
80 यहया परवान चढ़ा और उस की रूह ने
तक़वियत पाई। उस ने उस वक़्त तक रेगिस्तान में
ज़िन्दगी गुज़ारी जब तक उसे इस्राईल की ख़िदमत
करने के लिए बुलाया न गया।

ईसा की पैदाइश

2 1 उन अय्याम में रोम के शहन्शाह औगुस्तुस
ने फ़रमान जारी किया कि पूरी सल्तनत की
मर्दुमशुमारी की जाए। 2 यह पहली मर्दुमशुमारी उस
वक़्त हुई जब कूरिनियुस शाम का गवर्नर था। 3 हर
किसी को अपने वतनी शहर में जाना पड़ा ताकि वहाँ
रजिस्टर में अपना नाम दर्ज करवाए।
4 चुनाँचे यूसुफ़ गलील के शहर नासरत से रवाना
हो कर यहूदिया के शहर बैत-लहम पहुँचा। वजह
यह थी कि वह दाऊद बादशाह के घराने और नस्ल
से था, और बैत-लहम दाऊद का शहर था। 5 चुनाँचे
वह अपने नाम को रजिस्टर में दर्ज करवाने के लिए
वहाँ गया। उस की मंगेतर मरियम भी साथ थी। उस
वक़्त वह उम्मीद से थी। 6 जब वह वहाँ ठहरे हुए
थे तो बच्चे को जन्म देने का वक़्त आ पहुँचा। 7 बेटा
पैदा हुआ। यह मरियम का पहला बच्चा था। उस ने
उसे कपड़ों [w]में लपेट कर एक चरनी में लिटा दिया,
क्यूँकि उन्हें सराय में रहने की जगह नहीं मिली थी।

चरवाहों को ख़ुशख़बरी

8 उस रात कुछ चरवाहे क़रीब के खुले मैदान में
अपने रेवड़ों की पहरादारी कर रहे थे। 9 अचानक
रब का एक फ़रिश्ता उन पर ज़ाहिर हुआ, और उन
के इर्दगिर्द रब का जलाल चमका। यह देख कर वह
सख़्त डर गए। 10 लेकिन फ़रिश्ते ने उन से कहा,
"डरो मत! देखो मैं तुम को बड़ी ख़ुशी की ख़बर देता
हूँ जो तमाम लोगों के लिए होगी। 11 आज ही दाऊद
के शहर में तुम्हारे लिए नजातदहिन्दा पैदा हुआ है
यानी मसीह ख़ुदावन्द। 12 और तुम उसे इस निशान से
पहचान लोगे, तुम एक शीरख़्वार बच्चे को कपड़ों में
लिपटा हुआ पाओगे। वह चरनी में पड़ा हुआ होगा।"
13 अचानक आसमानी लश्करों के बेशुमार फ़रिश्ते
उस फ़रिश्ते के साथ ज़ाहिर हुए जो अल्लाह की हम्द-
ओ-सना करके कह रहे थे,
14 "आसमान की बुलन्दियों पर अल्लाह की इज़्ज़त-
ओ-जलाल, ज़मीन पर उन लोगों की सलामती जो
उसे मन्ज़ूर हैं।"
15 फ़रिश्ते उन्हें छोड़ कर आसमान पर वापस चले
गए तो चरवाहे आपस में कहने लगे, "आओ, हम
बैत-लहम जा कर यह बात देखें जो हुई है और जो
रब ने हम पर ज़ाहिर की है।"
16 वह भाग कर बैत-लहम पहुँचे। वहाँ उन्हें मरियम
और यूसुफ़ मिले और साथ ही छोटा बच्चा जो चरनी
में पड़ा हुआ था। 17 यह देख कर उन्हों ने सब कुछ
बयान किया जो उन्हें इस बच्चे के बारे में बताया गया
था। 18 जिस ने भी उन की बात सुनी वह हैरतज़दा
हुआ। 19 लेकिन मरियम को यह तमाम बातें याद
रहीं और वह अपने दिल में उन पर ग़ौर करती रही।
20 फिर चरवाहे लौट गए और चलते चलते उन तमाम
बातों के लिए अल्लाह की ताज़ीम-ओ-तारीफ़ करते रहे

---

[w]लफ़्ज़ी तर्जुमा : पोतड़ों

जो उन्हों ने सुनी और देखी थीं, क्यूँकि सब कुछ वैसा
ही पाया था जैसा फ़रिश्ते ने उन्हें बताया था।

बच्चे का नाम ईसा रखा जाता है

21 आठ दिन के बाद बच्चे का ख़तना करवाने का
वक़्त आ गया। उस का नाम ईसा रखा गया, यानी
वही नाम जो फ़रिश्ते ने मरियम को उस के हामिला
होने से पहले बताया था।

ईसा को बैत-उल-मुक़द्दस में पेश किया जाता है

22 जब मूसा की शरीअत के मुताबिक़ तहारत के
दिन पूरे हुए तब वह बच्चे को यरूशलम ले गए ताकि
उसे रब के हुज़ूर पेश किया जाए, 23 जैसे रब की
शरीअत में लिखा है, "हर पहलौठे को रब के लिए
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करना है।" 24 साथ ही उन्हों ने
मरियम की तहारत की रस्म के लिए वह क़ुर्बानी पेश
की जो रब की शरीअत बयान करती है, यानी "दो
क़ुम्रियाँ या दो जवान कबूतर।"
25 उस वक़्त यरूशलम में एक आदमी बनाम
शमाऊन रहता था। वह रास्तबाज़ और ख़ुदातरस था
और इस इन्तिज़ार में था कि मसीह आ कर इस्राईल
को सुकून बख़्शे। रूह-उल-क़ुद्स उस पर था, 26 और
उस ने उस पर यह बात ज़ाहिर की थी कि वह जीते
जी रब के मसीह को देखेगा। 27 उस दिन रूह-उल-
क़ुद्स ने उसे तहरीक दी कि वह बैत-उल-मुक़द्दस
में जाए। चुनाँचे जब मरियम और यूसुफ़ बच्चे को रब
की शरीअत के मुताबिक़ पेश करने के लिए बैत-उल-
मुक़द्दस में आए 28 तो शमाऊन मौजूद था। उस ने बच्चे
को अपने बाज़ूओं में ले कर अल्लाह की हम्द-ओ-सना
करते हुए कहा,
29 "ऐ आक़ा, अब तू अपने बन्दे को इजाज़त देता
है
कि वह सलामती से रेहलत कर जाए, जिस तरह तू
ने फ़रमाया है।
30 क्यूँकि मैं ने अपनी आँखों से तेरी उस नजात का
मुशाहदा कर लिया है
31 जो तू ने तमाम क़ौमों की मौजूदगी में तय्यार की
है।
32 यह एक ऐसी रौशनी है जिस से ग़ैरयहूदियों की
आँखें खुल जाएँगी
और तेरी क़ौम इस्राईल को जलाल हासिल होगा।"
33 बच्चे के माँ-बाप अपने बेटे के बारे में इन अल्फ़ाज़
पर हैरान हुए। 34 शमाऊन ने उन्हें बरकत दी और
मरियम से कहा, "यह बच्चा मुक़र्रर हुआ है कि
इस्राईल के बहुत से लोग इस से ठोकर खा कर गिर
जाएँ, लेकिन बहुत से इस से अपने पाँओ पर खड़े
भी हो जाएंगे। गो यह अल्लाह की तरफ़ से एक इशारा
है तो भी इस की मुख़ालफ़त की जाएगी। 35 यूँ बहुतों
के दिली ख़यालात ज़ाहिर हो जाएंगे। इस सिलसिले
में तलवार तेरी जान में से भी गुज़र जाएगी।"
36 वहाँ बैत-उल-मुक़द्दस में एक उम्ररसीदा नबिया
भी थी जिस का नाम हन्नाह था। वह फ़नूएल की बेटी
और आशर के क़बीले से थी। शादी के सात साल
बाद उस का शौहर मर गया था। 37 अब वह बेवा
की हैसियत से 84 साल की हो चुकी थी। वह कभी
बैत-उल-मुक़द्दस को नहीं छोड़ती थी, बल्कि दिन
रात अल्लाह को सिज्दा करती, रोज़ा रखती और दुआ
करती थी। 38 उस वक़्त वह मरियम और यूसुफ़ के
पास आ कर अल्लाह की तम्जीद करने लगी। साथ
साथ वह हर एक को जो इस इन्तिज़ार में था कि
अल्लाह फ़िद्या दे कर यरूशलम को छुड़ाए, बच्चे के
बारे में बताती रही।

वह नासरत वापस चले जाते हैं

39 जब ईसा के वालिदैन ने रब की शरीअत में दर्ज
तमाम फ़राइज़ अदा कर लिए तो वह गलील में अपने
शहर नासरत को लौट गए। 40 वहाँ बच्चा परवान चढ़ा
और तक़वियत पाता गया। वह हिक्मत-ओ-दानाई से
मामूर था, और अल्लाह का फ़ज़्ल उस पर था।

बारह साल की उम्र में बैत-उल-मुक़द्दस में

41 ईसा के वालिदैन हर साल फ़सह की ईद के लिए
यरूशलम जाया करते थे। 42 उस साल भी वह मामूल
के मुताबिक़ ईद के लिए गए जब ईसा बारह साल का
था। 43 ईद के इख़तिताम पर वह नासरत वापस जाने
लगे, लेकिन ईसा यरूशलम में रह गया। पहले उस
के वालिदैन को मालूम न था, 44 क्यूँकि वह समझते
थे कि वह क़ाफ़िले में कहीं मौजूद है। लेकिन चलते
चलते पहला दिन गुज़र गया और वह अब तक नज़र
न आया था। इस पर वालिदैन उसे अपने रिश्तेदारों
और अज़ीज़ों में ढूँडने लगे। 45 जब वह वहाँ न मिला
तो मरियम और यूसुफ़ यरूशलम वापस गए और वहाँ
ढूँडने लगे। 46 तीन दिन के बाद वह आख़िरकार बैत-
उल-मुक़द्दस में पहुँचे। वहाँ ईसा दीनी उस्तादों के
दरमियान बैठा उन की बातें सुन रहा और उन से
सवालात पूछ रहा था। 47 जिस ने भी उस की बातें
सुनीं वह उस की समझ और जवाबों से दंग रह गया।
48 उसे देख कर उस के वालिदैन घबरा गए। उस की
माँ ने कहा, "बेटा, तू ने हमारे साथ यह क्यूँ किया?
तेरा बाप और मैं तुझे ढूँडते ढूँडते शदीद कोफ़्त का
शिकार हुए।"

49 ईसा ने जवाब दिया, "आप को मुझे तलाश करने
की क्या ज़रूरत थी? क्या आप को मालूम न था कि
मुझे अपने बाप के घर में होना ज़रूर है?" 50 लेकिन
वह उस की बात न समझे।

51 फिर वह उन के साथ रवाना हो कर नासरत
वापस आया और उन के ताबे रहा। लेकिन उस की
माँ ने यह तमाम बातें अपने दिल में महफ़ूज़ रखें। 52 यूँ
ईसा जवान हुआ। उस की समझ और हिक्मत बढ़ती
गई, और उसे अल्लाह और इन्सान की मक़्बूलियत
हासिल थी।

यहया बपतिस्मा देने वाले की ख़िदमत

3 1 फिर रोम के शहन्शाह तिबरियुस की हुकूमत
का पंद्रहवाँ साल आ गया। उस वक़्त पुन्तियुस
पीलातुस सूबा यहूदिया का गवर्नर था, हेरोदेस
अनतिपास गलील का हाकिम था, उस का भाई
फ़िलिप्पुस इतूरिया और त्रख़ोनीतिस के इलाक़े
का, जबकि लिसानियास अबिलेने का। 2 हन्ना और
काइफ़ा दोनों इमाम-ए-आज़म थे। उन दिनों में अल्लाह
यहया बिन ज़करियाह से हमकलाम हुआ जब वह
रेगिस्तान में था। 3 फिर वह दरया-ए-यर्दन के पूरे
इलाक़े में से गुज़रा। हर जगह उस ने एलान किया
कि तौबा करके बपतिस्मा लो ताकि तुम्हें अपने
गुनाहों की मुआफ़ी मिल जाए। 4 यूँ यसायाह नबी
के अल्फ़ाज़ पूरे हुए जो उस की किताब में दर्ज हैं :

'रेगिस्तान में एक आवाज़ पुकार रही है,
रब की राह तय्यार करो!
उस के रास्ते सीधे बनाओ।
5 लाज़िम है कि हर वादी भर दी जाए,
ज़रूरी है कि हर पहाड़ और बुलन्द जगह मैदान
बन जाए।
जो टेढ़ा है उसे सीधा किया जाए,
जो नाहमवार है उसे हमवार किया जाए।
6 और तमाम इन्सान अल्लाह की नजात देखेंगे।'

7 जब बहुत से लोग यहया के पास आए ताकि उस
से बपतिस्मा लें तो उस ने उन से कहा, "ऐ ज़हरीले
साँप के बच्चो! किस ने तुम को आने वाले ग़ज़ब से
बचने की हिदायत की? 8 अपनी ज़िन्दगी से ज़ाहिर
करो कि तुम ने वाक़ई तौबा की है। यह ख़याल मत
करो कि हम तो बच जाएंगे क्यूँकि इब्राहीम हमारा
बाप है। मैं तुम को बताता हूँ कि अल्लाह इन पत्थरों
से भी इब्राहीम के लिए औलाद पैदा कर सकता है।
9 अब तो अदालत की कुल्हाड़ी दरख़्तों की जड़ों पर
रखी हुई है। हर दरख़्त जो अच्छा फल न लाए काटा
और आग में झोंका जाएगा।"

10 लोगों ने उस से पूछा, "फिर हम क्या करें?"

11 उस ने जवाब दिया, "जिस के पास दो कुरते हैं
वह एक उस को दे दे जिस के पास कुछ न हो। और
जिस के पास खाना है वह उसे खिला दे जिस के पास
कुछ न हो।"

12 टैक्स लेने वाले भी बपतिस्मा लेने के लिए आए
तो उन्हों ने पूछा, “उस्ताद, हम क्या करें?”
13 उस ने जवाब दिया, “सिर्फ़ उतने टैक्स लेना
जितने हुकूमत ने मुक़र्रर किए हैं।”
14 कुछ फ़ौजियों ने पूछा, “हमें क्या करना
चाहिए?”
उस ने जवाब दिया, “किसी से जब्रन या ग़लत
इल्ज़ाम लगा कर पैसे न लेना बल्कि अपनी जाइज़
आम्दनी पर इकतिफ़ा करना।”
15 लोगों की तवक़्क़ोआत बहुत बढ़ गईं। वह
अपने दिलों में सोचने लगे कि क्या यह मसीह तो
नहीं है? 16 इस पर यहया उन सब से मुख़ातिब हो
कर कहने लगा, “मैं तो तुम्हें पानी से बपतिस्मा देता
हूँ, लेकिन एक आने वाला है जो मुझ से बड़ा है। मैं
उस के जूतों के तस्मे खोलने के भी लाइक़ नहीं। वह
तुम्हें रूह-उल-क़ुद्स और आग से बपतिस्मा देगा।
17 वह हाथ में छाज पकड़े हुए अनाज को भूसे से
अलग करने के लिए तय्यार खड़ा है। वह गाहने की
जगह को बिलकुल साफ़ करके अनाज को अपने
गोदाम में जमा करेगा। लेकिन भूसे को वह ऐसी आग
में झोंकेगा जो बुझने की नहीं।”
18 इस क़िस्म की बहुत सी और बातों से उस ने
क़ौम को नसीहत की और उसे अल्लाह की ख़ुशख़बरी
सुनाई। 19 लेकिन एक दिन यूँ हुआ कि यहया ने
गलील के हाकिम हेरोदेस अनतिपास को डाँटा।
वजह यह थी कि हेरोदेस ने अपने भाई की बीवी
हेरोदियास से शादी कर ली थी और इस के इलावा
और बहुत से ग़लत काम किए थे। 20 यह मलामत सुन
कर हेरोदेस ने अपने ग़लत कामों में और इज़ाफ़ा यह
किया कि यहया को जेल में डाल दिया।

ईसा का बपतिस्मा

21 एक दिन जब बहुत से लोगों को बपतिस्मा दिया
जा रहा था तो ईसा ने भी बपतिस्मा लिया। जब वह
दुआ कर रहा था तो आसमान खुल गया 22 और रूह-
उल-क़ुद्स जिस्मानी सूरत में कबूतर की तरह उस
पर उतर आया। साथ साथ आसमान से एक आवाज़
सुनाई दी, “तू मेरा प्यारा फ़र्ज़न्द है, तुझ से मैं ख़ुश
हूँ।”

ईसा का नसबनामा

23 ईसा तक़रीबन तीस साल का था जब उस ने
ख़िदमत शुरू की। उसे यूसुफ़ का बेटा समझा जाता
था। उस का नसबनामा यह है : यूसुफ़ बिन एली
24 बिन मत्तात बिन लावी बिन मलकी बिन यन्ना बिन
यूसुफ़ 25 बिन मत्तितियाह बिन आमूस बिन नाहूम बिन
असलियाह बिन नोगा 26 बिन माअत बिन मत्तितियाह
बिन शमई बिन योसेख़ बिन यूदाह 27 बिन यूहन्नाह
बिन रेसा बिन ज़रुब्बाबल बिन सियाल्तीएल बिन
नेरी 28 बिन मलिकी बिन अद्दी बिन क़ोसाम बिन
इल्मोदाम बिन एर 29 बिन यशूअ बिन इलीअज़र बिन
योरीम बिन मत्तात बिन लावी 30 बिन शमाऊन बिन
यहूदाह बिन यूसुफ़ बिन योनाम बिन इलियाक़ीम
31 बिन मलेआह बिन मिन्नाह बिन मत्तितियाह बिन
नातन बिन दाऊद 32 बिन यस्सी बिन ओबेद बिन
बोअज़ बिन सल्मोन बिन नह्सोन 33 बिन अम्मीनदाब
बिन अदमीन बिन अर्नी बिन हस्रोन बिन फ़ारस बिन
यहूदाह 34 बिन याक़ूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम
बिन तारह बिन नहूर 35 बिन सरूज बिन रऊ बिन
फ़लज बिन इबर बिन सिलह 36 बिन क़ीनान बिन
अर्फ़क्सद बिन सिम बिन नूह बिन लमक 37 बिन
मतूसिलह बिन हनूक बिन यारिद बिन महलल-एल
बिन क़ीनान 38 बिन अनूस बिन सेत बिन आदम।
आदम को अल्लाह ने पैदा किया था।

ईसा को आज़माया जाता है

4 1 ईसा दरया-ए-यर्दन से वापस आया। वह रूह-
उल-क़ुद्स से मामूर था जिस ने उसे रेगिस्तान
में ला कर उस की राहनुमाई की। 2 वहाँ उसे चालीस
दिन तक इब्लीस से आज़माया गया। इस पूरे अर्से में
उस ने कुछ न खाया। आख़िरकार उसे भूक लगी।

3 फिर इब्लीस ने उस से कहा, “अगर तू अल्लाह
का फ़र्ज़न्द है तो इस पत्थर को हुक्म दे कि रोटी बन
जाए।”
4 लेकिन ईसा ने इन्कार करके कहा, “हरगिज़ नहीं,
क्यूँकि कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है कि इन्सान की
ज़िन्दगी सिर्फ़ रोटी पर मुन्हसिर नहीं होती।”
5 इस पर इब्लीस ने उसे किसी बुलन्द जगह पर
ले जा कर एक लम्हे में दुनिया के तमाम ममालिक
दिखाए। 6 वह बोला, “मैं तुझे इन ममालिक की
शान-ओ-शौकत और इन पर तमाम इख़तियार दूँगा।
क्यूँकि यह मेरे सपुर्द किए गए हैं और जिसे चाहूँ दे
सकता हूँ। 7 लिहाज़ा यह सब कुछ तेरा ही होगा।
शर्त यह है कि तू मुझे सिज्दा करे।”
8 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “हरगिज़ नहीं, क्यूँकि
कलाम-ए-मुक़द्दस में यूँ लिखा है, ‘रब अपने अल्लाह
को सिज्दा कर और सिर्फ़ उसी की इबादत कर’।”
9 फिर इब्लीस ने उसे यरूशलम ले जा कर बैत-
उल-मुक़द्दस की सब से ऊँची जगह पर खड़ा किया
और कहा, “अगर तू अल्लाह का फ़र्ज़न्द है तो यहाँ
से छलाँग लगा दे। 10 क्यूँकि कलाम-ए-मुक़द्दस में
लिखा है, ‘वह अपने फ़रिश्तों को तेरी हिफ़ाज़त करने
का हुक्म देगा, 11 और वह तुझे अपने हाथों पर उठा
लेंगे ताकि तेरे पाँओ को पत्थर से ठेस न लगे’।”
12 लेकिन ईसा ने तीसरी बार इन्कार किया और
कहा, “कलाम-ए-मुक़द्दस यह भी फ़रमाता है, ‘रब
अपने अल्लाह को न आज़माना’।”
13 इन आज़माइशों के बाद इब्लीस ने ईसा को कुछ
देर के लिए छोड़ दिया।

ख़िदमत का आग़ाज़

14 फिर ईसा वापस गलील में आया। उस में रूह-
उल-क़ुद्स की क़ुव्वत थी, और उस की शुहरत
उस पूरे इलाक़े में फैल गई। 15 वहाँ वह उन के
इबादतख़ानों में तालीम देने लगा, और सब ने उस
की तारीफ़ की।

ईसा को नासरत में रद्द किया जाता है

16 एक दिन वह नासरत पहुँचा जहाँ वह परवान
चढ़ा था। वहाँ भी वह मामूल के मुताबिक़ सबत
के दिन मक़ामी इबादतख़ाने में जा कर कलाम-ए-
मुक़द्दस में से पढ़ने के लिए खड़ा हो गया। 17 उसे
यसायाह नबी की किताब दी गई तो उस ने तूमार को
खोल कर यह हवाला ढूँड निकाला,
18 “रब का रूह मुझ पर है,
क्यूँकि उस ने मुझे तेल से मसह करके
ग़रीबों को ख़ुशख़बरी सुनाने का इख़तियार दिया
है।
उस ने मुझे यह एलान करने के लिए भेजा है कि
क़ैदियों को रिहाई मिलेगी
और अंधे देखेंगे।
उस ने मुझे भेजा है कि मैं कुचले हुओं को आज़ाद
कराऊँ
19 और रब की तरफ़ से बहाली के साल का एलान
करूँ।”
20 यह कह कर ईसा ने तूमार को लपेट कर
इबादतख़ाने के मुलाज़िम को वापस कर दिया और
बैठ गया। सारी जमाअत की आँखें उस पर लगी थीं।
21 फिर वह बोल उठा, “आज अल्लाह का यह फ़रमान
तुम्हारे सुनते ही पूरा हो गया है।”
22 सब ईसा के हक़ में बातें करने लगे। वह उन
पुरफ़ज़्ल बातों पर हैरतज़दा थे जो उस के मुँह से
निकलीं, और वह कहने लगे, “क्या यह यूसुफ़ का
बेटा नहीं है?”
23 उस ने उन से कहा, “बेशक तुम मुझे यह कहावत
बताओगे, ‘ऐ डाक्टर, पहले अपने आप का इलाज
कर।’ यानी सुनने में आया है कि आप ने कफ़र्नहूम में
मोजिज़े किए हैं। अब ऐसे मोजिज़े यहाँ अपने वतनी
शहर में भी दिखाएँ। 24 लेकिन मैं तुम को सच बताता
हूँ कि कोई भी नबी अपने वतनी शहर में मक़्बूल नहीं
होता।

25 यह हक़ीक़त है कि इल्यास नबी के ज़माने में
इस्राईल में बहुत सी ज़रूरतमन्द बेवाएँ थीं, उस
वक़्त जब साढ़े तीन साल तक बारिश न हुई और पूरे
मुल्क में सख़्त काल पड़ा। 26 इस के बावुजूद इल्यास
को उन में से किसी के पास नहीं भेजा गया बल्कि
एक ग़ैरयहूदी बेवा के पास जो सैदा के शहर सारपत
में रहती थी। 27 इसी तरह इलीशा नबी के ज़माने में
इस्राईल में कोढ़ के बहुत से मरीज़ थे। लेकिन उन में
से किसी को शिफ़ा न मिली बल्कि सिर्फ़ नामान को
जो मुल्क-ए-शाम का शहरी था।"

28 जब इबादतख़ाने में जमा लोगों ने यह बातें सुनीं
तो वह बड़े तैश में आ गए। 29 वह उठे और उसे शहर
से निकाल कर उस पहाड़ी के किनारे ले गए जिस पर
शहर को तामीर किया गया था। वहाँ से वह उसे नीचे
गिराना चाहते थे, 30 लेकिन ईसा उन में से गुज़र कर
वहाँ से चला गया।

आदमी का बदरुह की गिरिफ़्त से रिहाई पाना

31 इस के बाद वह गलील के शहर कफ़र्नहूम को
गया और सबत के दिन इबादतख़ाने में लोगों को
सिखाने लगा। 32 वह उस की तालीम सुन कर हक्का-
बक्का रह गए, क्यूँकि वह इख़तियार के साथ तालीम
देता था। 33 इबादतख़ाने में एक आदमी था जो किसी
नापाक रूह के क़ब्ज़े में था। अब वह चीख़ चीख़ कर
बोलने लगा, 34 "अरे नासरत के ईसा, हमारा आप
के साथ क्या वास्ता है? क्या आप हमें हलाक करने
आए हैं? मैं तो जानता हूँ कि आप कौन हैं, आप
अल्लाह के क़ुद्दूस हैं।"

35 ईसा ने उसे डाँट कर कहा, "ख़ामोश! आदमी में
से निकल जा!" इस पर बदरुह आदमी को जमाअत
के बीच में फ़र्श पर पटक कर उस में से निकल गई।
लेकिन वह आदमी ज़ख़्मी न हुआ।

36 तमाम लोग घबरा गए और एक दूसरे से कहने
लगे, "उस आदमी के अल्फ़ाज़ में क्या इख़तियार
और क़ुव्वत है कि बदरुहें उस का हुक्म मानती और
उस के कहने पर निकल जाती हैं?" 37 और ईसा के
बारे में चर्चा उस पूरे इलाक़े में फैल गया।

बहुत से मरीज़ों की शिफ़ायाबी

38 फिर ईसा इबादतख़ाने को छोड़ कर शमाऊन के
घर गया। वहाँ शमाऊन की सास शदीद बुख़ार में
मुब्तला थी। उन्हों ने ईसा से गुज़ारिश की कि वह
उस की मदद करे। 39 उस ने उस के सिरहाने खड़े हो
कर बुख़ार को डाँटा तो वह उतर गया और शमाऊन
की सास उसी वक़्त उठ कर उन की ख़िदमत करने
लगी।

40 जब दिन ढल गया तो सब मक़ामी लोग अपने
मरीज़ों को ईसा के पास लाए। ख़्वाह उन की
बीमारियाँ कुछ भी क्यूँ न थीं, उस ने हर एक पर
अपने हाथ रख कर उसे शिफ़ा दी। 41 बहुतों में
बदरुहें भी थीं जिन्हों ने निकलते वक़्त चिल्ला कर
कहा, "तू अल्लाह का फ़र्ज़न्द है।" लेकिन चूँकि वह
जानती थीं कि वह मसीह है इस लिए उस ने उन्हें
डाँट कर बोलने न दिया।

ख़ुशख़बरी हर एक के लिए है

42 जब अगला दिन चढ़ा तो ईसा शहर से निकल
कर किसी वीरान जगह चला गया। लेकिन हुजूम उसे
ढूँडते ढूँडते आख़िरकार उस के पास पहुँचा। लोग
उसे अपने पास से जाने नहीं देना चाहते थे। 43 लेकिन
उस ने उन से कहा, "लाज़िम है कि मैं दूसरे शहरों
में भी जा कर अल्लाह की बादशाही की ख़ुशख़बरी
सुनाऊँ, क्यूँकि मुझे इसी मक़्सद के लिए भेजा गया
है।"

44 चुनाँचे वह यहूदिया के इबादतख़ानों में मुनादी
करता रहा।

पहले शागिर्दों की बुलाहट

5 1 एक दिन ईसा गलील की झील गन्नेसरत के
किनारे पर खड़ा हुजूम को अल्लाह का कलाम
सुना रहा था। लोग सुनते सुनते इतने क़रीब आ गए

कि उस के लिए जगह कम हो गई। 2 फिर उसे दो
कश्तियाँ नज़र आईं जो झील के किनारे लगी थीं।
मछेरे उन में से उतर चुके थे और अब अपने जालों
को धो रहे थे। 3 ईसा एक कश्ती पर सवार हुआ।
उस ने कश्ती के मालिक शमाऊन से दरख़्वास्त की
कि वह कश्ती को किनारे से थोड़ा सा दूर ले चले।
फिर वह कश्ती में बैठा और हुजूम को तालीम देने
लगा।

4 तालीम देने के इख़तिताम पर उस ने शमाऊन से
कहा, "अब कश्ती को वहाँ ले जा जहाँ पानी गहरा
है और अपने जालों को मछलियाँ पकड़ने के लिए
डाल दो।"

5 लेकिन शमाऊन ने एतिराज़ किया, "उस्ताद, हम
ने तो पूरी रात बड़ी कोशिश की, लेकिन एक भी न
पकड़ी। ताहम आप के कहने पर मैं जालों को दुबारा
डालूँगा।" 6 यह कह कर उन्हों ने गहरे पानी में जा
कर अपने जाल डाल दिए। और वाक़ई, मछलियों
का इतना बड़ा ग़ोल जालों में फंस गया कि वह
फटने लगे। 7 यह देख कर उन्हों ने अपने साथियों
को इशारा करके बुलाया ताकि वह दूसरी कश्ती में
आ कर उन की मदद करें। वह आए और सब ने मिल
कर दोनों कश्तियों को इतनी मछलियों से भर दिया
कि आख़िरकार दोनों डूबने के ख़तरे में थीं। 8 जब
शमाऊन पतरस ने यह सब कुछ देखा तो उस ने ईसा
के सामने मुँह के बल गिर कर कहा, "ख़ुदावन्द, मुझ
से दूर चले जाएँ। मैं तो गुनाहगार हूँ।" 9 क्यूँकि वह
और उस के साथी इतनी मछलियाँ पकड़ने की वजह
से सख़्त हैरान थे। 10 और ज़ब्दी के बेटे याक़ूब और
यूहन्ना की हालत भी यही थी जो शमाऊन के साथ
मिल कर काम करते थे।

लेकिन ईसा ने शमाऊन से कहा, "मत डर। अब से
तू आदमियों को पकड़ा करेगा।"

11 वह अपनी कश्तियों को किनारे पर ले आए और
सब कुछ छोड़ कर ईसा के पीछे हो लिए।

कोढ़ से शिफ़ा

12 एक दिन ईसा किसी शहर में से गुज़र रहा था कि
वहाँ एक मरीज़ मिला जिस का पूरा जिस्म कोढ़ से
मुतअस्सिर था। जब उस ने ईसा को देखा तो वह मुँह
के बल गिर पड़ा और इल्तिजा की, "ऐ ख़ुदावन्द,
अगर आप चाहें तो मुझे पाक-साफ़ कर सकते हैं।"

13 ईसा ने अपना हाथ बढ़ा कर उसे छुआ और
कहा, "मैं चाहता हूँ, पाक-साफ़ हो जा।" इस पर
बीमारी फ़ौरन दूर हो गई। 14 ईसा ने उसे हिदायत की
कि वह किसी को न बताए कि क्या हुआ है। उस
ने कहा, "सीधा बैत-उल-मुक़द्दस में इमाम के पास
जा ताकि वह तेरा मुआइना करे। अपने साथ वह
क़ुर्बानी ले जा जिस का तक़ाज़ा मूसा की शरीअत
उन से करती है जिन्हें कोढ़ से शिफ़ा मिलती है। यूँ
अलानिया तस्दीक़ हो जाएगी कि तू वाक़ई पाक-
साफ़ हो गया है।"

15 ताहम ईसा के बारे में ख़बर और ज़्यादा तेज़ी से
फैलती गई। लोगों के बड़े गुरोह उस के पास आते रहे
ताकि उस की बातें सुनें और उस के हाथ से शिफ़ा
पाएँ। 16 फिर भी वह कई बार उन्हें छोड़ कर दुआ
करने के लिए वीरान जगहों पर जाया करता था।

मफ़्लूज के लिए छत खोली जाती है

17 एक दिन वह लोगों को तालीम दे रहा था।
फ़रीसी और शरीअत के आलिम भी गलील और
यहूदिया के हर गाँव और यरूशलम से आ कर उस
के पास बैठे थे। और रब की क़ुदरत उसे शिफ़ा देने
के लिए तहरीक दे रही थी। 18 इतने में कुछ आदमी
एक मफ़्लूज को चारपाई पर डाल कर वहाँ पहुँचे।
उन्हों ने उसे घर के अन्दर ईसा के सामने रखने की
कोशिश की, 19 लेकिन बेफ़ाइदा। घर में इतने लोग
थे कि अन्दर जाना नामुमकिन था। इस लिए वह
आख़िरकार छत पर चढ़ गए और कुछ टायलें उधेड़
कर छत का एक हिस्सा खोल दिया। फिर उन्हों ने
चारपाई को मफ़्लूज समेत हुजूम के दरमियान ईसा

के सामने उतारा। 20 जब ईसा ने उन का ईमान देखा
तो उस ने मफ़्लूज से कहा, “ऐ आदमी, तेरे गुनाह
मुआफ़ कर दिए गए हैं।”
21 यह सुन कर शरीअत के आलिम और फ़रीसी
सोच-बिचार में पड़ गए, “यह किस तरह का बन्दा है
जो इस क़िस्म का कुफ़्र बकता है? सिर्फ़ अल्लाह ही
गुनाह मुआफ़ कर सकता है।”
22 लेकिन ईसा ने जान लिया कि यह क्या सोच रहे
हैं, इस लिए उस ने पूछा, “तुम दिल में इस तरह की
बातें क्यूँ सोच रहे हो? 23 क्या मफ़्लूज से यह कहना
ज़्यादा आसान है कि ‘तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए
गए हैं’ या यह कि ‘उठ कर चल फिर’? 24 लेकिन
मैं तुम को दिखाता हूँ कि इब्न-ए-आदम को वाक़ई
दुनिया में गुनाह मुआफ़ करने का इख़तियार है।” यह
कह कर वह मफ़्लूज से मुख़ातिब हुआ, “उठ, अपनी
चारपाई उठा कर अपने घर चला जा।”
25 लोगों के देखते देखते वह आदमी खड़ा हुआ
और अपनी चारपाई उठा कर अल्लाह की हम्द-ओ-
सना करते हुए अपने घर चला गया। 26 यह देख कर
सब सख़्त हैरतज़दा हुए और अल्लाह की तम्जीद करने
लगे। उन पर ख़ौफ़ छा गया और वह कह उठे, “आज
हम ने नाक़ाबिल-ए-यक़ीन बातें देखी हैं।”

ईसा मत्ती को बुलाता है

27 इस के बाद ईसा निकल कर एक टैक्स लेने वाले
के पास से गुज़रा जो अपनी चौकी पर बैठा था। उस
का नाम लावी था। उसे देख कर ईसा ने कहा, “मेरे
पीछे हो ले।” 28 वह उठा और सब कुछ छोड़ कर
उस के पीछे हो लिया।
29 बाद में उस ने अपने घर में ईसा की बड़ी
ज़ियाफ़त की। बहुत से टैक्स लेने वाले और दीगर
मेहमान इस में शरीक हुए। 30 यह देख कर कुछ
फ़रीसियों और उन से ताल्लुक़ रखने वाले शरीअत के
आलिमों ने ईसा के शागिर्दों से शिकायत की। उन्हों
ने कहा, “तुम टैक्स लेने वालों और गुनाहगारों के
साथ क्यूँ खाते-पीते हो?”
31 ईसा ने जवाब दिया, “सेहतमन्दों को डाक्टर की
ज़रूरत नहीं होती बल्कि मरीज़ों को। 32 मैं रास्तबाज़ों
को नहीं बल्कि गुनाहगारों को बुलाने आया हूँ ताकि
वह तौबा करें।”

शागिर्द रोज़ा क्यूँ नहीं रखते?

33 कुछ लोगों ने ईसा से एक और सवाल पूछा,
“यहया के शागिर्द अक्सर रोज़ा रखते हैं। और साथ
साथ वह दुआ भी करते रहते हैं। फ़रीसियों के शागिर्द
भी इसी तरह करते हैं। लेकिन आप के शागिर्द खाने-
पीने का सिलसिला जारी रखते हैं।”
34 ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुम शादी के मेहमानों
को रोज़ा रखने को कह सकते हो जब दूल्हा उन
के दरमियान है? हरगिज़ नहीं! 35 लेकिन एक दिन
आएगा जब दूल्हा उन से ले लिया जाएगा। उस वक़्त
वह ज़रूर रोज़ा रखेंगे।”
36 उस ने उन्हें यह मिसाल भी दी, “कौन किसी
नए लिबास को फाड़ कर उस का एक टुकड़ा किसी
पुराने लिबास में लगाएगा? कोई भी नहीं! अगर वह
ऐसा करे तो न सिर्फ़ नया लिबास ख़राब होगा बल्कि
उस से लिया गया टुकड़ा पुराने लिबास को भी ख़राब
कर देगा। 37 इसी तरह कोई भी अंगूर का ताज़ा रस
पुरानी और बेलचक मश्कों में नहीं डालेगा। अगर
वह ऐसा करे तो पुरानी मश्कें पैदा होने वाली गैस के
बाइस फट जाएँगी। नतीजे में मै और मश्कें दोनों ज़ाए
हो जाएँगी। 38 इस लिए अंगूर का ताज़ा रस नई मश्कों
में डाला जाता है जो लचकदार होती हैं। 39 लेकिन
जो भी पुरानी मै पीना पसन्द करे वह अंगूर का नया
और ताज़ा रस पसन्द नहीं करेगा। वह कहेगा कि
पुरानी ही बेहतर है।”

सबत के बारे में सवाल

6 1 एक दिन ईसा अनाज के खेतों में से गुज़र रहा
था। चलते चलते उस के शागिर्द अनाज की
बालें तोड़ने और अपने हाथों से मल कर खाने लगे।
सबत का दिन था। 2 यह देख कर कुछ फ़रीसियों ने

कहा, “तुम यह क्यूँ कर रहे हो? सबत के दिन ऐसा
करना मना है।”
3 ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुम ने कभी नहीं पढ़ा
कि दाऊद ने क्या किया जब उसे और उस के साथियों
को भूक लगी थी? 4 वह अल्लाह के घर में दाख़िल
हुआ और रब के लिए मख़्सूसशुदा रोटियाँ ले कर
खाईं, अगरचे सिर्फ़ इमामों को इन्हें खाने की इजाज़त
है। और उस ने अपने साथियों को भी यह रोटियाँ
खिलाईं।” 5 फिर ईसा ने उन से कहा, “इब्न-ए-आदम
सबत का मालिक है।”

सूखे हाथ की शिफ़ा

6 सबत के एक और दिन ईसा इबादतख़ाने में जा
कर सिखाने लगा। वहाँ एक आदमी था जिस का
दहना हाथ सूखा हुआ था। 7 शरीअत के आलिम और
फ़रीसी बड़े ग़ौर से देख रहे थे कि क्या ईसा इस
आदमी को आज भी शिफ़ा देगा? क्यूँकि वह उस पर
इल्ज़ाम लगाने का कोई बहाना ढूँड रहे थे। 8 लेकिन
ईसा ने उन की सोच को जान लिया और उस सूखे
हाथ वाले आदमी से कहा, “उठ, दरमियान में खड़ा
हो।” चुनाँचे वह आदमी खड़ा हुआ। 9 फिर ईसा ने
उन से पूछा, “मुझे बताओ, शरीअत हमें सबत के
दिन क्या करने की इजाज़त देती है, नेक काम करने
की या ग़लत काम करने की, किसी की जान बचाने
की या उसे तबाह करने की?” 10 वह ख़ामोश हो कर
अपने इर्दगिर्द के तमाम लोगों की तरफ़ देखने लगा।
फिर उस ने कहा, “अपना हाथ आगे बढ़ा।” उस ने
ऐसा किया तो उस का हाथ बहाल हो गया।
11 लेकिन वह आपे में न रहे और एक दूसरे से बात
करने लगे कि हम ईसा से किस तरह निपट सकते
हैं?

ईसा बारह रसूलों को मुक़र्रर करता है

12 उन ही दिनों में ईसा निकल कर दुआ करने के
लिए पहाड़ पर चढ़ गया। दुआ करते करते पूरी
रात गुज़र गई। 13 फिर उस ने अपने शागिर्दों को
अपने पास बुला कर उन में से बारह को चुन लिया,
जिन्हें उस ने अपने रसूल मुक़र्रर किया। उन के
नाम यह हैं : 14 शमाऊन जिस का लक़ब उस ने
पतरस रखा, उस का भाई अन्द्रियास, याक़ूब, यूहन्ना,
फ़िलिप्पुस, बरतुल्माई, 15 मत्ती, तोमा, याक़ूब बिन
हल्फ़ई, शमाऊन मुजाहिद, 16 यहूदाह बिन याक़ूब
और यहूदाह इस्करियोती जिस ने बाद में उसे दुश्मन
के हवाले कर दिया।

ईसा तालीम और शिफ़ा देता है

17 फिर वह उन के साथ पहाड़ से उतर कर एक
खुले और हमवार मैदान में खड़ा हुआ। वहाँ शागिर्दों
की बड़ी तादाद ने उसे घेर लिया। साथ ही बहुत
से लोग यहूदिया, यरूशलम और सूर और सैदा के
साहिली इलाक़े से 18 उस की तालीम सुनने और
बीमारियों से शिफ़ा पाने के लिए आए थे। और
जिन्हें बदरुहें तंग कर रही थीं उन्हें भी शिफ़ा मिली।
19 तमाम लोग उसे छूने की कोशिश कर रहे थे,
क्यूँकि उस में से क़ुव्वत निकल कर सब को शिफ़ा
दे रही थी।

कौन मुबारक है?

20 फिर ईसा ने अपने शागिर्दों की तरफ़ देख कर
कहा,
“मुबारक हो तुम जो ज़रूरतमन्द हो,
क्यूँकि अल्लाह की बादशाही तुम को ही हासिल है।
21 मुबारक हो तुम जो इस वक़्त भूके हो,
क्यूँकि सेर हो जाओगे।
मुबारक हो तुम जो इस वक़्त रोते हो,
क्यूँकि ख़ुशी से हंसोगे।
22 मुबारक हो तुम जब लोग इस लिए तुम से नफ़रत
करते और तुम्हारा हुक़्क़ा-पानी बन्द करते हैं कि तुम
इब्न-ए-आदम के पैरोकार बन गए हो। हाँ, मुबारक
हो तुम जब वह इसी वजह से तुम्हें लान-तान करते
और तुम्हारी बदनामी करते हैं। 23 जब वह ऐसा करते
हैं तो शादमान हो कर ख़ुशी से नाचो, क्यूँकि आसमान

पर तुम को बड़ा अज्र मिलेगा। उन के बापदादा ने यही
सुलूक नबियों के साथ किया था।
24 मगर तुम पर अफ़्सोस जो अब दौलतमन्द हो,
क्यूँकि तुम्हारा सुकून यहीं ख़त्म हो जाएगा।
25 तुम पर अफ़्सोस जो इस वक़्त ख़ूब सेर हो,
क्यूँकि बाद में तुम भूके होगे।
तुम पर अफ़्सोस जो अब हंस रहे हो,
क्यूँकि एक वक़्त आएगा कि रो रो कर मातम
करोगे।
26 तुम पर अफ़्सोस जिन की तमाम लोग तारीफ़
करते हैं, क्यूँकि उन के बापदादा ने यही सुलूक झूटे
नबियों के साथ किया था।

अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखना

27 लेकिन तुम को जो सुन रहे हो मैं यह बताता हूँ,
अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखो, और उन से भलाई
करो जो तुम से नफ़रत करते हैं। 28 जो तुम पर लानत
करते हैं उन्हें बरकत दो, और जो तुम से बुरा सुलूक
करते हैं उन के लिए दुआ करो। 29 अगर कोई तुम्हारे
एक गाल पर थप्पड़ मारे तो उसे दूसरा गाल भी पेश
कर दो। इसी तरह अगर कोई तुम्हारी चादर छीन ले
तो उसे क़मीस लेने से भी न रोको। 30 जो भी तुम से
कुछ माँगता है उसे दो। और जिस ने तुम से कुछ
लिया है उस से उसे वापस देने का तक़ाज़ा न करो।
31 लोगों के साथ वैसा सुलूक करो जैसा तुम चाहते
हो कि वह तुम्हारे साथ करें।
32 अगर तुम सिर्फ़ उन ही से मुहब्बत करो जो तुम से
करते हैं तो इस में तुम्हारी क्या ख़ास मेहरबानी होगी?
गुनाहगार भी ऐसा ही करते हैं। 33 और अगर तुम सिर्फ़
उन ही से भलाई करो जो तुम से भलाई करते हैं तो
इस में तुम्हारी क्या ख़ास मेहरबानी होगी? गुनाहगार
भी ऐसा ही करते हैं। 34 इसी तरह अगर तुम सिर्फ़
उन ही को उधार दो जिन के बारे में तुम्हें अन्दाज़ा है
कि वह वापस कर देंगे तो इस में तुम्हारी क्या ख़ास
मेहरबानी होगी? गुनाहगार भी गुनाहगारों को उधार
देते हैं जब उन्हें सब कुछ वापस मिलने का यक़ीन
होता है। 35 नहीं, अपने दुश्मनों से मुहब्बत करो और
उन ही से भलाई करो। उन्हें उधार दो जिन के बारे में
तुम्हें वापस मिलने की उम्मीद नहीं है। फिर तुम को
बड़ा अज्र मिलेगा और तुम अल्लाह तआला के फ़र्ज़न्द
साबित होगे, क्यूँकि वह भी नाशुक्रों और बुरे लोगों
पर नेकी का इज़हार करता है। 36 लाज़िम है कि तुम
रहमदिल हो क्यूँकि तुम्हारा बाप भी रहमदिल है।

मुन्सिफ़ न बनना

37 दूसरों की अदालत न करना तो तुम्हारी भी
अदालत नहीं की जाएगी। दूसरों को मुजरिम क़रार न
देना तो तुम को भी मुजरिम क़रार नहीं दिया जाएगा।
मुआफ़ करो तो तुम को भी मुआफ़ कर दिया जाएगा।
38 दो तो तुम को भी दिया जाएगा। हाँ, जिस हिसाब
से तुम ने दिया उसी हिसाब से तुम को दिया जाएगा,
बल्कि पैमाना दबा दबा और हिला हिला कर और
लबरेज़ करके तुम्हारी झोली में डाल दिया जाएगा।
क्यूँकि जिस पैमाने से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे
लिए नापा जाएगा।”
39 फिर ईसा ने यह मिसाल पेश की। “क्या एक
अंधा दूसरे अंधे की राहनुमाई कर सकता है? हरगिज़
नहीं! अगर वह ऐसा करे तो दोनों गढ़े में गिर जाएंगे।
40 शागिर्द अपने उस्ताद से बड़ा नहीं होता बल्कि
जब उसे पूरी ट्रेनिंग मिली हो तो वह अपने उस्ताद ही
की मानिन्द होगा।
41 तू क्यूँ ग़ौर से अपने भाई की आँख में पड़े तिनके
पर नज़र करता है जबकि तुझे वह शहतीर नज़र नहीं
आता जो तेरी अपनी आँख में है? 42 तू क्यूँकर अपने
भाई से कह सकता है, ‘भाई, ठहरो, मुझे तुम्हारी
आँख में पड़ा तिनका निकालने दो’ जबकि तुझे
अपनी आँख का शहतीर नज़र नहीं आता? रियाकार!
पहले अपनी आँख के शहतीर को निकाल। तब ही
तुझे भाई का तिनका साफ़ नज़र आएगा और तू उसे
अच्छी तरह से देख कर निकाल सकेगा।

दरख़्त उस के फल से पहचाना जाता है

43 न अच्छा दरख़्त ख़राब फल लाता है, न ख़राब
दरख़्त अच्छा फल। 44 हर क़िस्म का दरख़्त उस
के फल से पहचाना जाता है। ख़ारदार झाड़ियों से
अन्जीर या अंगूर नहीं तोड़े जाते। 45 नेक शख़्स
का अच्छा फल उस के दिल के अच्छे ख़ज़ाने से
निकलता है जबकि बुरे शख़्स का ख़राब फल उस
के दिल की बुराई से निकलता है। क्यूँकि जिस चीज़
से दिल भरा होता है वही छलक कर मुँह से निकलती
है।

दो क़िस्म के मकान

46 तुम क्यूँ मुझे 'ख़ुदावन्द, ख़ुदावन्द' कह कर
पुकारते हो? मेरी बात पर तो तुम अमल नहीं करते।
47 लेकिन मैं तुम को बताता हूँ कि वह शख़्स किस
की मानिन्द है जो मेरे पास आ कर मेरी बात सुन लेता
और उस पर अमल करता है। 48 वह उस आदमी
की मानिन्द है जिस ने अपना मकान बनाने के लिए
गहरी बुन्याद की खुदाई करवाई। खोद खोद कर
वह चटान तक पहुँच गया। उसी पर उस ने मकान
की बुन्याद रखी। मकान मुकम्मल हुआ तो एक दिन
सैलाब आया। ज़ोर से बहता हुआ पानी मकान से
टकराया, लेकिन वह उसे हिला न सका क्यूँकि वह
मज़बूती से बनाया गया था। 49 लेकिन जो मेरी बात
सुनता और उस पर अमल नहीं करता वह उस शख़्स
की मानिन्द है जिस ने अपना मकान बुन्याद के बग़ैर
ज़मीन पर ही तामीर किया। जूँ ही ज़ोर से बहता हुआ
पानी उस से टकराया तो वह गिर गया और सरासर
तबाह हो गया।"

रोमी अफ़्सर के ग़ुलाम की शिफ़ा

7 1 यह सब कुछ लोगों को सुनाने के बाद ईसा
कफ़र्नहूम चला गया। 2 वहाँ सौ फ़ौजियों पर
मुक़र्रर एक अफ़्सर रहता था। उन दिनों में उस का
एक ग़ुलाम जो उसे बहुत अज़ीज़ था बीमार पड़ गया।
अब वह मरने को था। 3 चूँकि अफ़्सर ने ईसा के बारे
में सुना था इस लिए उस ने यहूदियों के कुछ बुज़ुर्ग
यह दरख़्वास्त करने के लिए उस के पास भेज दिए
कि वह आ कर ग़ुलाम को शिफ़ा दे। 4 वह ईसा के
पास पहुँच कर बड़े ज़ोर से इल्तिजा करने लगे, "यह
आदमी इस लाइक़ है कि आप उस की दरख़्वास्त
पूरी करें, 5 क्यूँकि वह हमारी क़ौम से प्यार करता
है, यहाँ तक कि उस ने हमारे लिए इबादतख़ाना भी
तामीर करवाया है।"

6 चुनाँचे ईसा उन के साथ चल पड़ा। लेकिन जब
वह घर के क़रीब पहुँच गया तो अफ़्सर ने अपने
कुछ दोस्त यह कह कर उस के पास भेज दिए कि
"ख़ुदावन्द, मेरे घर में आने की तक्लीफ़ न करें,
क्यूँकि मैं इस लाइक़ नहीं हूँ। 7 इस लिए मैं ने ख़ुद को
आप के पास आने के लाइक़ भी न समझा। बस वहीं
से कह दें तो मेरा ग़ुलाम शिफ़ा पा जाएगा। 8 क्यूँकि
मुझे ख़ुद आला अफ़्सरों के हुक्म पर चलना पड़ता
है और मेरे मातहत भी फ़ौजी हैं। एक को कहता हूँ,
'जा!' तो वह जाता है और दूसरे को 'आ!' तो वह
आता है। इसी तरह मैं अपने नौकर को हुक्म देता हूँ,
'यह कर!' तो वह करता है।"

9 यह सुन कर ईसा निहायत हैरान हुआ। उस ने मुड़
कर अपने पीछे आने वाले हुजूम से कहा, "मैं तुम
को सच बताता हूँ, मैं ने इस्राईल में भी इस क़िस्म
का ईमान नहीं पाया।"

10 जब अफ़्सर का पैग़ाम पहुँचाने वाले घर वापस
आए तो उन्हों ने देखा कि ग़ुलाम की सेहत बहाल हो
चुकी है।

बेवा का बेटा ज़िन्दा किया जाता है

11 कुछ देर के बाद ईसा अपने शागिर्दों के साथ
नाइन शहर के लिए रवाना हुआ। एक बड़ा हुजूम भी
साथ चल रहा था। 12 जब वह शहर के दरवाज़े के
क़रीब पहुँचा तो एक जनाज़ा निकला। जो नौजवान
फ़ौत हुआ था उस की माँ बेवा थी और वह उस का
इक्लौता बेटा था। माँ के साथ शहर के बहुत से लोग

चल रहे थे। 13 उसे देख कर ख़ुदावन्द को उस पर
बड़ा तरस आया। उस ने उस से कहा, “मत रो।”
14 फिर वह जनाज़े के पास गया और उसे छुआ। उसे
उठाने वाले रुक गए तो ईसा ने कहा, “ऐ नौजवान,
मैं तुझे कहता हूँ कि उठ!” 15 मुर्दा उठ बैठा और
बोलने लगा। ईसा ने उसे उस की माँ के सपुर्द कर
दिया।

16 यह देख कर तमाम लोगों पर ख़ौफ़ तारी हो गया
और वह अल्लाह की तम्जीद करके कहने लगे, “हमारे
दरमियान एक बड़ा नबी बरपा हुआ है। अल्लाह ने
अपनी क़ौम पर नज़र की है।”

17 और ईसा के बारे में यह ख़बर पूरे यहूदिया और
इर्दगिर्द के इलाक़े में फैल गई।

यहया का ईसा से सवाल

18 यहया को भी अपने शागिर्दों की मारिफ़त इन
तमाम वाक़िआत के बारे में पता चला। इस पर उस
ने दो शागिर्दों को बुला कर 19 उन्हें यह पूछने के लिए
ख़ुदावन्द के पास भेजा, “क्या आप वही हैं जिसे
आना है या हम किसी और के इन्तिज़ार में रहें?”

20 चुनाँचे यह शागिर्द ईसा के पास पहुँच कर कहने
लगे, “यहया बपतिस्मा देने वाले ने हमें यह पूछने के
लिए भेजा है कि क्या आप वही हैं जिसे आना है या
हम किसी और का इन्तिज़ार करें?”

21 ईसा ने उसी वक़्त बहुत से लोगों को शिफ़ा दी थी
जो मुख़्तलिफ़ क़िस्म की बीमारियों, मुसीबतों और
बदरूहों की गिरिफ़्त में थे। अंधों की आँखें भी बहाल
हो गई थीं। 22 इस लिए उस ने जवाब में यहया के
क़ासिदों से कहा, “यहया के पास वापस जा कर उसे
सब कुछ बता देना जो तुम ने देखा और सुना है। ‘अंधे
देखते, लंगड़े चलते फिरते हैं, कोढ़ियों को पाक-
साफ़ किया जाता है, बहरे सुनते हैं, मुर्दों को ज़िन्दा
किया जाता है और ग़रीबों को अल्लाह की ख़ुशख़बरी
सुनाई जाती है।’ 23 यहया को बताओ, ‘मुबारक है
वह जो मेरे सबब से ठोकर खा कर बर्गश्ता नहीं
होता’।”

24 यहया के यह क़ासिद चले गए तो ईसा हुजूम
से यहया के बारे में बात करने लगा, “तुम रेगिस्तान
में क्या देखने गए थे? एक सरकंडा जो हवा के हर
झोंके से हिलता है? बेशक नहीं। 25 या क्या वहाँ जा
कर ऐसे आदमी की तवक़्क़ो कर रहे थे जो नफ़ीस
और मुलाइम लिबास पहने हुए है? नहीं, जो शानदार
कपड़े पहनते और ऐश-ओ-इश्रत में ज़िन्दगी गुज़ारते
हैं वह शाही महलों में पाए जाते हैं। 26 तो फिर तुम
क्या देखने गए थे? एक नबी को? बिलकुल सहीह,
बल्कि मैं तुम को बताता हूँ कि वह नबी से भी बड़ा
है। 27 उसी के बारे में कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है,
‘देख मैं अपने पैग़म्बर को तेरे आगे आगे भेज देता
हूँ जो तेरे सामने रास्ता तय्यार करेगा।’ 28 मैं तुम को
बताता हूँ कि इस दुनिया में पैदा होने वाला कोई
भी शख़्स यहया से बड़ा नहीं है। तो भी अल्लाह की
बादशाही में दाख़िल होने वाला सब से छोटा शख़्स
उस से बड़ा है।”

29 बात यह थी कि तमाम क़ौम बशमूल टैक्स
लेने वालों ने यहया का पैग़ाम सुन कर अल्लाह का
इन्साफ़ मान लिया और यहया से बपतिस्मा लिया
था। 30 सिर्फ़ फ़रीसी और शरीअत के उलमा ने अपने
बारे में अल्लाह की मर्ज़ी को रद्द करके यहया का
बपतिस्मा लेने से इन्कार किया था।

31 ईसा ने बात जारी रखी, “चुनाँचे मैं इस नस्ल
के लोगों को किस से तश्बीह दूँ? वह किस से
मुताबिक़त रखते हैं? 32 वह उन बच्चों की मानिन्द
हैं जो बाज़ार में बैठे खेल रहे हैं। उन में से कुछ ऊँची
आवाज़ से दूसरे बच्चों से शिकायत कर रहे हैं, ‘हम
ने बाँसरी बजाई तो तुम न नाचे। फिर हम ने नोहा
के गीत गाए, लेकिन तुम न रोए।’ 33 देखो, यहया
बपतिस्मा देने वाला आया और न रोटी खाई, न मै
पी। यह देख कर तुम कहते हो कि उस में बदरुह है।
34 फिर इब्न-ए-आदम खाता और पीता हुआ आया।
अब तुम कहते हो, ‘देखो यह कैसा पेटू और शराबी
है। और वह टैक्स लेने वालों और गुनाहगारों का

दोस्त भी है।' 35 लेकिन हिक्मत अपने तमाम बच्चों से
ही सहीह साबित हुई है।"

ईसा शमाऊन फ़रीसी के घर में

36 एक फ़रीसी ने ईसा को खाना खाने की दावत
दी। ईसा उस के घर जा कर खाना खाने के लिए बैठ
गया। 37 उस शहर में एक बदचलन औरत रहती थी।
जब उसे पता चला कि ईसा उस फ़रीसी के घर में
खाना खा रहा है तो वह इत्रदान में बेशक़ीमत इत्र
ला कर 38 पीछे से उस के पाँओ के पास खड़ी हो
गई। वह रो पड़ी और उस के आँसू टपक टपक कर
ईसा के पाँओ को तर करने लगे। फिर उस ने उस के
पाँओ को अपने बालों से पोंछ कर उन्हें चूमा और
उन पर इत्र डाला। 39 जब ईसा के फ़रीसी मेज़बान ने
यह देखा तो उस ने दिल में कहा, "अगर यह आदमी
नबी होता तो उसे मालूम होता कि यह किस क़िस्म
की औरत है जो उसे छू रही है, कि यह गुनाहगार
है।"

40 ईसा ने इन ख़यालात के जवाब में उस से कहा,
"शमाऊन, मैं तुझे कुछ बताना चाहता हूँ।"

उस ने कहा, "जी उस्ताद, बताएँ।"

41 ईसा ने कहा, "एक साहूकार के दो क़र्ज़दार थे।
एक को उस ने चाँदी के 500 सिक्के दिए थे और दूसरे
को 50 सिक्के। 42 लेकिन दोनों अपना क़र्ज़ अदा न
कर सके। यह देख कर उस ने दोनों का क़र्ज़ मुआफ़
कर दिया। अब मुझे बता, दोनों क़र्ज़दारों में से कौन
उसे ज़्यादा अज़ीज़ रखेगा?"

43 शमाऊन ने जवाब दिया, "मेरे ख़याल में वह जिसे
ज़्यादा मुआफ़ किया गया।"

ईसा ने कहा, "तू ने ठीक अन्दाज़ा लगाया है।"
44 और औरत की तरफ़ मुड़ कर उस ने शमाऊन से
बात जारी रखी, "क्या तू इस औरत को देखता है?
45 जब मैं इस घर में आया तो तू ने मुझे पाँओ धोने
के लिए पानी न दिया। लेकिन इस ने मेरे पाँओ को
अपने आँसूओं से तर करके अपने बालों से पोंछ कर
ख़ुश्क कर दिया है। तू ने मुझे बोसा न दिया, लेकिन
यह मेरे अन्दर आने से ले कर अब तक मेरे पाँओ को
चूमने से बाज़ नहीं रही। 46 तू ने मेरे सर पर ज़ैतून का
तेल न डाला, लेकिन इस ने मेरे पाँओ पर इत्र डाला।
47 इस लिए मैं तुझे बताता हूँ कि इस के गुनाहों को
गो वह बहुत हैं मुआफ़ कर दिया गया है, क्यूँकि इस
ने बहुत मुहब्बत का इज़हार किया है। लेकिन जिसे
कम मुआफ़ किया गया हो वह कम मुहब्बत रखता
है।"

48 फिर ईसा ने औरत से कहा, "तेरे गुनाहों को
मुआफ़ कर दिया गया है।"

49 यह सुन कर जो साथ बैठे थे आपस में कहने
लगे, "यह किस क़िस्म का शख़्स है जो गुनाहों को
भी मुआफ़ करता है?"

50 लेकिन ईसा ने ख़ातून से कहा, "तेरे ईमान ने तुझे
बचा लिया है। सलामती से चली जा।"

ख़िदमतगुज़ार ख़वातीन ईसा के साथ सफ़र करती हैं

8 1 इस के कुछ देर बाद ईसा मुख़्तलिफ़ शहरों
और दीहातों में से गुज़र कर सफ़र करने लगा।
हर जगह उस ने अल्लाह की बादशाही के बारे में
ख़ुशख़बरी सुनाई। उस के बारह शागिर्द उस के साथ
थे, 2 नीज़ कुछ ख़वातीन भी जिन्हें उस ने बदरूहों
से रिहाई और बीमारियों से शिफ़ा दी थी। इन में से
एक मरियम थी जो मग्दलीनी कहलाती थी जिस में
से सात बदरुहें निकाली गई थीं। 3 फिर यूअन्ना जो
ख़ूज़ा की बीवी थी (ख़ूज़ा हेरोदेस बादशाह का एक
अफ़सर था)। सूसन्ना और दीगर कई ख़वातीन भी थीं
जो अपने माली वसाइल से उन की ख़िदमत करती
थीं।

बीज बोने वाले की तम्सील

4 एक दिन ईसा ने एक बड़े हुजूम को एक तम्सील
सुनाई। लोग मुख़्तलिफ़ शहरों से उसे सुनने के लिए
जमा हो गए थे।

5 "एक किसान बीज बोने के लिए निकला। जब
बीज इधर उधर बिखर गया तो कुछ दाने रास्ते पर

गिरे। वहाँ उन्हें पाँओ तले कुचला गया और परिन्दों
ने उन्हें चुग लिया। 6 कुछ पथरीली ज़मीन पर गिरे।
वहाँ वह उगने तो लगे, लेकिन नमी की कमी थी,
इस लिए पौदे कुछ देर के बाद सूख गए। 7 कुछ दाने
ख़ुदरौ काँटेदार पौदों के दरमियान भी गिरे। वहाँ वह
उगने तो लगे, लेकिन ख़ुदरौ पौदों ने साथ साथ बढ़
कर उन्हें फलने फूलने की जगह न दी। चुनाँचे वह
भी ख़त्म हो गए। 8 लेकिन ऐसे दाने भी थे जो ज़रख़ेज़
ज़मीन पर गिरे। वहाँ वह उग सके और जब फ़सल
पक गई तो सौ गुना ज़्यादा फल पैदा हुआ।"

यह कह कर ईसा पुकार उठा, "जो सुन सकता है
वह सुन ले!"

तम्सीलों का मक़्सद

9 उस के शागिर्दों ने उस से पूछा कि इस तम्सील का
क्या मतलब है? 10 जवाब में उस ने कहा, "तुम को
तो अल्लाह की बादशाही के भेद समझने की लियाक़त
दी गई है। लेकिन मैं दूसरों को समझाने के लिए
तम्सीलें इस्तेमाल करता हूँ ताकि पाक कलाम पूरा
हो जाए कि 'वह अपनी आँखों से देखेंगे मगर कुछ
नहीं जानेंगे, वह अपने कानों से सुनेंगे मगर कुछ नहीं
समझेंगे।'

बीज बोने वाले की तम्सील का मतलब

11 तम्सील का मतलब यह है : बीज से मुराद अल्लाह
का कलाम है। 12 राह पर गिरे हुए दाने वह लोग हैं
जो कलाम सुनते तो हैं, लेकिन फिर इब्लीस आ कर
उसे उन के दिलों से छीन लेता है, ऐसा न हो कि
वह ईमान ला कर नजात पाएँ। 13 पथरीली ज़मीन
पर गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम सुन कर
उसे ख़ुशी से क़बूल तो कर लेते हैं, लेकिन जड़ नहीं
पकड़ते। नतीजे में अगरचे वह कुछ देर के लिए ईमान
रखते हैं तो भी जब किसी आज़माइश का सामना
करना पड़ता है तो वह बर्गश्ता हो जाते हैं। 14 ख़ुदरौ
काँटेदार पौदों के दरमियान गिरे हुए दाने वह लोग
हैं जो सुनते तो हैं, लेकिन जब वह चले जाते हैं तो
रोज़मर्रा की परेशानियाँ, दौलत और ज़िन्दगी की ऐश-
ओ-इश्रत उन्हें फलने फूलने नहीं देती। नतीजे में वह
फल लाने तक नहीं पहुँचते। 15 इस के मुक़ाबले में
ज़रख़ेज़ ज़मीन में गिरे हुए दाने वह लोग हैं जिन का
दिल दियानतदार और अच्छा है। जब वह कलाम
सुनते हैं तो वह उसे अपनाते और साबितक़दमी से
तरक़्क़ी करते करते फल लाते हैं।

कोई चराग़ को बर्तन के नीचे नहीं छुपाता

16 जब कोई चराग़ जलाता है तो वह उसे किसी
बर्तन या चारपाई के नीचे नहीं रखता, बल्कि उसे
शमादान पर रख देता है ताकि उस की रौशनी अन्दर
आने वालों को नज़र आए।

17 जो कुछ भी इस वक़्त पोशीदा है वह आख़िर में
ज़ाहिर हो जाएगा, और जो कुछ भी छुपा हुआ है वह
मालूम हो जाएगा और रौशनी में लाया जाएगा।

18 चुनाँचे इस पर ध्यान दो कि तुम किस तरह सुनते
हो। क्यूँकि जिस के पास कुछ है उसे और दिया
जाएगा, जबकि जिस के पास कुछ नहीं है उस से
वह भी छीन लिया जाएगा जिस के बारे में वह ख़याल
करता है कि उस का है।"

ईसा की माँ और भाई

19 एक दिन ईसा की माँ और भाई उस के पास
आए, लेकिन वह हुजूम की वजह से उस तक न पहुँच
सके। 20 चुनाँचे ईसा को इत्तिला दी गई, "आप की
माँ और भाई बाहर खड़े हैं और आप से मिलना चाहते
हैं।"

21 उस ने जवाब दिया, "मेरी माँ और भाई वह सब
हैं जो अल्लाह का कलाम सुन कर उस पर अमल करते
हैं।"

ईसा आँधी को थमा देता है

22 एक दिन ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, "आओ,
हम झील को पार करें।" चुनाँचे वह कश्ती पर सवार
हो कर रवाना हुए। 23 जब कश्ती चली जा रही थी

तो ईसा सो गया। अचानक झील पर आँधी आई।
कश्ती पानी से भरने लगी और डूबने का ख़तरा था।
24 फिर उन्हों ने ईसा के पास जा कर उसे जगा दिया
और कहा, “उस्ताद, उस्ताद, हम तबाह हो रहे हैं।”
वह जाग उठा और आँधी और मौजों को डाँटा।
आँधी थम गई और लहरें बिलकुल साकित हो गईं।
25 फिर उस ने शागिर्दों से पूछा, “तुम्हारा ईमान कहाँ
है?”

उन पर ख़ौफ़ तारी हो गया और वह सख़्त हैरान हो
कर आपस में कहने लगे, “आख़िर यह कौन है? वह
हवा और पानी को भी हुक्म देता है, और वह उस
की मानते हैं।”

ईसा एक गरासीनी आदमी से बदरुहें निकाल देता है

26 फिर वह सफ़र जारी रखते हुए गरासा के इलाक़े
के किनारे पर पहुँचे जो झील के पार गलील के
मुक़ाबिल है। 27 जब ईसा कश्ती से उतरा तो शहर
का एक आदमी ईसा को मिला जो बदरूहों की
गिरिफ़्त में था। वह काफ़ी देर से कपड़े पहने बग़ैर
चलता फिरता था और अपने घर के बजाय क़ब्रों में
रहता था। 28 ईसा को देख कर वह चिल्लाया और उस
के सामने गिर गया। ऊँची आवाज़ से उस ने कहा,
“ईसा अल्लाह तआला के फ़र्ज़न्द, मेरा आप के साथ
क्या वास्ता है? मैं मिन्नत करता हूँ, मुझे अज़ाब में
न डालें।” 29 क्यूँकि ईसा ने नापाक रूह को हुक्म
दिया था, “आदमी में से निकल जा!” इस बदरुह
ने बड़ी देर से उस पर क़ब्ज़ा किया हुआ था, इस
लिए लोगों ने उस के हाथ-पाँओ ज़न्जीरों से बांध
कर उस की पहरादारी करने की कोशिश की थी,
लेकिन बेफ़ाइदा। वह ज़न्जीरों को तोड़ डालता और
बदरुह उसे वीरान इलाक़ों में भगाए फिरती थी।

30 ईसा ने उस से पूछा, “तेरा नाम क्या है?” उस
ने जवाब दिया, “लश्कर।” इस नाम की वजह यह
थी कि उस में बहुत सी बदरुहें घुसी हुई थीं। 31 अब
यह मिन्नत करने लगीं, “हमें अथाह गढ़े में जाने को
न कहें।”

32 उस वक़्त क़रीब की पहाड़ी पर सूअरों का बड़ा
ग़ोल चर रहा था। बदरूहों ने ईसा से इल्तिमास की,
“हमें उन सूअरों में दाख़िल होने दें।” उस ने इजाज़त
दे दी। 33 चुनाँचे वह उस आदमी में से निकल कर
सूअरों में जा घुसीं। इस पर पूरे ग़ोल के सूअर भाग
भाग कर पहाड़ी की ढलान पर से उतरे और झील में
झपट कर डूब मरे।

34 यह देख कर सूअरों के गल्लाबान भाग गए। उन्हों
ने शहर और दीहात में इस बात का चर्चा किया 35 तो
लोग यह मालूम करने के लिए कि क्या हुआ है अपनी
जगहों से निकल कर ईसा के पास आए। उस के पास
पहुँचे तो वह आदमी मिला जिस से बदरुहें निकल
गई थीं। अब वह कपड़े पहने ईसा के पाँओ में बैठा
था और उस की ज़हनी हालत ठीक थी। यह देख कर
वह डर गए। 36 जिन्हों ने सब कुछ देखा था उन्हों ने
लोगों को बताया कि इस बदरुह-गिरिफ़्ता आदमी
को किस तरह रिहाई मिली है। 37 फिर उस इलाक़े
के तमाम लोगों ने ईसा से दरख़्वास्त की कि वह उन्हें
छोड़ कर चला जाए, क्यूँकि उन पर बड़ा ख़ौफ़ छा
गया था। चुनाँचे ईसा कश्ती पर सवार हो कर वापस
चला गया। 38 जिस आदमी से बदरुहें निकल गई थीं
उस ने उस से इल्तिमास की, “मुझे भी अपने साथ
जाने दें।”

लेकिन ईसा ने उसे इजाज़त न दी बल्कि कहा,
39 “अपने घर वापस चला जा और दूसरों को वह
सब कुछ बता जो अल्लाह ने तेरे लिए किया है।”

चुनाँचे वह वापस चला गया और पूरे शहर में लोगों
को बताने लगा कि ईसा ने मेरे लिए क्या कुछ किया
है।

याईर की बेटी और बीमार ख़ातून

40 जब ईसा झील के दूसरे किनारे पर वापस पहुँचा
तो लोगों ने उस का इस्तिक़्बाल किया, क्यूँकि वह
उस के इन्तिज़ार में थे। 41 इतने में एक आदमी ईसा
के पास आया जिस का नाम याईर था। वह मक़ामी
इबादतख़ाने का राहनुमा था। वह ईसा के पाँओ में

गिर कर मिन्नत करने लगा, “मेरे घर चलें।” 42 क्यूँकि
उस की इक्लौती बेटी जो तक़रीबन बारह साल की
थी मरने को थी।

ईसा चल पड़ा। हुजूम ने उसे यूँ घेरा हुआ था कि
साँस लेना भी मुश्किल था। 43 हुजूम में एक ख़ातून
थी जो बारह साल से ख़ून बहने के मर्ज़ से रिहाई न
पा सकी थी। कोई उसे शिफ़ा न दे सका था। 44 अब
उस ने पीछे से आ कर ईसा के लिबास के किनारे
को छुआ। ख़ून बहना फ़ौरन बन्द हो गया। 45 लेकिन
ईसा ने पूछा, “किस ने मुझे छुआ है?”

सब ने इन्कार किया और पतरस ने कहा, “उस्ताद,
यह तमाम लोग तो आप को घेर कर दबा रहे हैं।”

46 लेकिन ईसा ने इसरार किया, “किसी ने ज़रूर
मुझे छुआ है, क्यूँकि मुझे महसूस हुआ है कि मुझ में
से तवानाई निकली है।” 47 जब उस ख़ातून ने देखा
कि भेद खुल गया तो वह लरज़ती हुई आई और उस
के सामने गिर गई। पूरे हुजूम की मौजूदगी में उस ने
बयान किया कि उस ने ईसा को क्यूँ छुआ था और
कि छूते ही उसे शिफ़ा मिल गई थी। 48 ईसा ने कहा,
“बेटी, तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया है। सलामती से
चली जा।”

49 ईसा ने यह बात अभी ख़त्म नहीं की थी कि
इबादतख़ाने के राहनुमा याईर के घर से कोई शख़्स
आ पहुँचा। उस ने कहा, “आप की बेटी फ़ौत हो
चुकी है, अब उस्ताद को मज़ीद तक्लीफ़ न दें।”

50 लेकिन ईसा ने यह सुन कर कहा, “मत घबरा।
फ़क़त ईमान रख तो वह बच जाएगी।”

51 वह घर पहुँच गए तो ईसा ने किसी को भी सिवाए
पतरस, यूहन्ना, याक़ूब और बेटी के वालिदैन के
अन्दर आने की इजाज़त न दी। 52 तमाम लोग रो रहे
और छाती पीट पीट कर मातम कर रहे थे। ईसा ने
कहा, “ख़ामोश! वह मर नहीं गई बल्कि सो रही है।”

53 लोग हंस कर उस का मज़ाक़ उड़ाने लगे, क्यूँकि
वह जानते थे कि लड़की मर गई है। 54 लेकिन ईसा
ने लड़की का हाथ पकड़ कर ऊँची आवाज़ से कहा,
“बेटी, जाग उठ!” 55 लड़की की जान वापस आ
गई और वह फ़ौरन उठ खड़ी हुई। फिर ईसा ने हुक्म
दिया कि उसे कुछ खाने को दिया जाए। 56 यह सब
कुछ देख कर उस के वालिदैन हैरतज़दा हुए। लेकिन
उस ने उन्हें कहा कि इस के बारे में किसी को भी न
बताना।

ईसा बारह रसूलों को तब्लीग़ करने भेज देता है

9 1 इस के बाद ईसा ने अपने बारह शागिर्दों को
इकट्ठा करके उन्हें बदरूहों को निकालने और
मरीज़ों को शिफ़ा देने की क़ुव्वत और इख़तियार
दिया। 2 फिर उस ने उन्हें अल्लाह की बादशाही की
मुनादी करने और शिफ़ा देने के लिए भेज दिया। 3 उस
ने कहा, “सफ़र पर कुछ साथ न लेना। न लाठी, न
सामान के लिए बैग, न रोटी, न पैसे और न एक से
ज़्यादा सूट। 4 जिस घर में भी तुम जाते हो उस में
उस मक़ाम से चले जाने तक ठहरो। 5 और अगर
मक़ामी लोग तुम को क़बूल न करें तो फिर उस शहर
से निकलते वक़्त उस की गर्द अपने पाँओ से झाड़
दो। यूँ तुम उन के ख़िलाफ़ गवाही दोगे।”

6 चुनाँचे वह निकल कर गाँव गाँव जा कर अल्लाह
की ख़ुशख़बरी सुनाने और मरीज़ों को शिफ़ा देने लगे।

हेरोदेस अनतिपास परेशान हो जाता है

7 जब गलील के हुक्मरान हेरोदेस अनतिपास ने सब
कुछ सुना जो ईसा कर रहा था तो वह उलझन में पड़
गया। बाज़ तो कह रहे थे कि यहया बपतिस्मा देने
वाला जी उठा है। 8 औरों का ख़याल था कि इल्यास
नबी ईसा में ज़ाहिर हुआ है या कि क़दीम ज़माने का
कोई और नबी जी उठा है। 9 लेकिन हेरोदेस ने कहा,
“मैं ने ख़ुद यहया का सर क़लम करवाया था। तो
फिर यह कौन है जिस के बारे में मैं इस क़िस्म की
बातें सुनता हूँ?” और वह उस से मिलने की कोशिश
करने लगा।

ईसा 5000 अफ़राद को खाना खिलाता है

10 रसूल वापस आए तो उन्हों ने ईसा को सब कुछ
सुनाया जो उन्हों ने किया था। फिर वह उन्हें अलग
ले जा कर बैत-सैदा नामी शहर में आया। 11 लेकिन
जब लोगों को पता चला तो वह उन के पीछे वहाँ
पहुँच गए। ईसा ने उन्हें आने दिया और अल्लाह की
बादशाही के बारे में तालीम दी। साथ साथ उस ने
मरीज़ों को शिफ़ा भी दी। 12 जब दिन ढलने लगा तो
बारह शागिर्दों ने पास आ कर उस से कहा, "लोगों
को रुख़्सत कर दें ताकि वह इर्दगिर्द के दीहातों और
बस्तियों में जा कर रात ठहरने और खाने का बन्द-
ओ-बस्त कर सकें, क्यूँकि इस वीरान जगह में कुछ
नहीं मिलेगा।"

13 लेकिन ईसा ने उन्हें कहा, "तुम ख़ुद इन्हें कुछ
खाने को दो।"

उन्हों ने जवाब दिया, "हमारे पास सिर्फ़ पाँच
रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं। या क्या हम जा कर इन
तमाम लोगों के लिए खाना ख़रीद लाएँ?" 14 (वहाँ
तक़रीबन 5,000 मर्द थे।)

ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, "तमाम लोगों को
गुरोहों में तक़्सीम करके बिठा दो। हर गुरोह पचास
अफ़राद पर मुश्तमिल हो।"

15 शागिर्दों ने ऐसा ही किया और सब को बिठा
दिया। 16 इस पर ईसा ने उन पाँच रोटियों और दो
मछलियों को ले कर आसमान की तरफ़ नज़र उठाई
और उन के लिए शुक्रगुज़ारी की दुआ की। फिर उस
ने उन्हें तोड़ तोड़ कर शागिर्दों को दिया ताकि वह
लोगों में तक़्सीम करें। 17 और सब ने जी भर कर
खाया। इस के बाद जब बचे हुए टुकड़े जमा किए
गए तो बारह टोकरे भर गए।

पतरस का इक़्रार

18 एक दिन ईसा अकेला दुआ कर रहा था। सिर्फ़
शागिर्द उस के साथ थे। उस ने उन से पूछा, "मैं आम
लोगों के नज़्दीक कौन हूँ?"

19 उन्हों ने जवाब दिया, "कुछ कहते हैं यहया
बपतिस्मा देने वाला, कुछ यह कि आप इल्यास नबी
हैं। कुछ यह भी कहते हैं कि क़दीम ज़माने का कोई
नबी जी उठा है।"

20 उस ने पूछा, "लेकिन तुम क्या कहते हो? तुम्हारे
नज़्दीक मैं कौन हूँ?"

पतरस ने जवाब दिया, "आप अल्लाह के मसीह हैं।"

ईसा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

21 यह सुन कर ईसा ने उन्हें यह बात किसी को भी
बताने से मना किया। 22 उस ने कहा, "लाज़िम है कि
इब्न-ए-आदम बहुत दुख उठा कर बुज़ुर्गों, राहनुमा
इमामों और शरीअत के उलमा से रद्द किया जाए।
उसे क़त्ल भी किया जाएगा, लेकिन तीसरे दिन वह
जी उठेगा।"

23 फिर उस ने सब से कहा, "जो मेरे पीछे आना
चाहे वह अपने आप का इन्कार करे और हर रोज़
अपनी सलीब उठा कर मेरे पीछे हो ले। 24 क्यूँकि
जो अपनी जान को बचाए रखना चाहे वह उसे खो
देगा। लेकिन जो मेरी ख़ातिर अपनी जान खो दे वही
उसे बचाएगा। 25 क्या फ़ाइदा है अगर किसी को
पूरी दुनिया हासिल हो जाए मगर वह अपनी जान से
महरूम हो जाए या उसे इस का नुक़्सान उठाना पड़े?
26 जो भी मेरे और मेरी बातों के सबब से शरमाए उस
से इब्न-ए-आदम भी उस वक़्त शरमाएगा जब वह
अपने और अपने बाप के और मुक़द्दस फ़रिश्तों के
जलाल में आएगा। 27 मैं तुम को सच बताता हूँ, यहाँ
कुछ ऐसे लोग खड़े हैं जो मरने से पहले ही अल्लाह
की बादशाही को देखेंगे।"

ईसा की सूरत बदल जाती है

28 तक़रीबन आठ दिन गुज़र गए। फिर ईसा पतरस,
याक़ूब और यूहन्ना को साथ ले कर दुआ करने
के लिए पहाड़ पर चढ़ गया। 29 वहाँ दुआ करते
करते उस के चिहरे की सूरत बदल गई और उस के
कपड़े सफ़ेद हो कर बिजली की तरह चमकने लगे।

30 अचानक दो मर्द ज़ाहिर हो कर उस से मुख़ातिब
हुए। एक मूसा और दूसरा इल्यास था। 31 उन की
शक्ल-ओ-सूरत पुरजलाल थी। वह ईसा से इस के
बारे में बात करने लगे कि वह किस तरह अल्लाह
का मक़्सद पूरा करके यरूशलम में इस दुनिया से
कूच कर जाएगा। 32 पतरस और उस के साथियों को
गहरी नींद आ गई थी, लेकिन जब वह जाग उठे
तो ईसा का जलाल देखा और यह कि दो आदमी
उस के साथ खड़े हैं। 33 जब वह मर्द ईसा को छोड़
कर रवाना होने लगे तो पतरस ने कहा, "उस्ताद,
कितनी अच्छी बात है कि हम यहाँ हैं। आएँ, हम
तीन झोंपड़ियाँ बनाएँ, एक आप के लिए, एक मूसा
के लिए और एक इल्यास के लिए।" लेकिन वह नहीं
जानता था कि क्या कह रहा है।

34 यह कहते ही एक बादल आ कर उन पर छा
गया। जब वह उस में दाख़िल हुए तो दहशतज़दा हो
गए। 35 फिर बादल से एक आवाज़ सुनाई दी, "यह
मेरा चुना हुआ फ़र्ज़न्द है, इस की सुनो।"

36 आवाज़ ख़त्म हुई तो ईसा अकेला ही था। और
उन दिनों में शागिर्दों ने किसी को भी इस वाकिए के
बारे में न बताया बल्कि ख़ामोश रहे।

ईसा लड़के में से बदरुह निकालता है

37 अगले दिन वह पहाड़ से उतर आए तो एक
बड़ा हुजूम ईसा से मिलने आया। 38 हुजूम में से एक
आदमी ने ऊँची आवाज़ से कहा, "उस्ताद, मेहरबानी
करके मेरे बेटे पर नज़र करें। वह मेरा इक्लौता बेटा
है। 39 एक बदरुह उसे बार बार अपनी गिरिफ़्त में ले
लेती है। फिर वह अचानक चीख़ें मारने लगता है।
बदरुह उसे झंझोड़ कर इतना तंग करती है कि उस
के मुँह से झाग निकलने लगता है। वह उसे कुचल
कुचल कर मुश्किल से छोड़ती है। 40 मैं ने आप के
शागिर्दों से दरख़्वास्त की थी कि वह उसे निकालें,
लेकिन वह नाकाम रहे।"

41 ईसा ने कहा, "ईमान से ख़ाली और टेढ़ी नस्ल!
मैं कब तक तुम्हारे पास रहूँ, कब तक तुम्हें बर्दाश्त
करूँ?" फिर उस ने आदमी से कहा, "अपने बेटे को
ले आ।"

42 बेटा ईसा के पास आ रहा था तो बदरुह उसे
ज़मीन पर पटख़ कर झंझोड़ने लगी। लेकिन ईसा ने
नापाक रूह को डाँट कर बच्चे को शिफ़ा दी। फिर उस
ने उसे वापस बाप के सपुर्द कर दिया। 43 तमाम लोग
अल्लाह की अज़ीम क़ुदरत को देख कर हक्का-बक्का रह
गए।

ईसा की मौत का दूसरा एलान

अभी सब उन तमाम कामों पर ताज्जुब कर रहे थे
जो ईसा ने हाल ही में किए थे कि उस ने अपने शागिर्दों
से कहा, 44 "मेरी इस बात पर ख़ूब ध्यान दो, इब्न-ए-
आदम को आदमियों के हवाले कर दिया जाएगा।"
45 लेकिन शागिर्द इस का मतलब न समझे। यह बात
उन से पोशीदा रही और वह इसे समझ न सके। नीज़,
वह ईसा से इस के बारे में पूछने से डरते भी थे।

कौन सब से बड़ा है?

46 फिर शागिर्द बहस करने लगे कि हम में से कौन
सब से बड़ा है। 47 लेकिन ईसा जानता था कि वह
क्या सोच रहे हैं। उस ने एक छोटे बच्चे को ले कर
अपने पास खड़ा किया 48 और उन से कहा, "जो
मेरे नाम में इस बच्चे को क़बूल करता है वह मुझे ही
क़बूल करता है। और जो मुझे क़बूल करता है वह
उसे क़बूल करता है जिस ने मुझे भेजा है। चुनाँचे तुम
में से जो सब से छोटा है वही बड़ा है।"

जो तुम्हारे ख़िलाफ़ नहीं वह तुम्हारे हक़ में है

49 यूहन्ना बोल उठा, "उस्ताद, हम ने किसी को
देखा जो आप का नाम ले कर बदरुहें निकाल रहा
था। हम ने उसे मना किया, क्यूँकि वह हमारे साथ
मिल कर आप की पैरवी नहीं करता।"

50 लेकिन ईसा ने कहा, "उसे मना न करना, क्यूँकि
जो तुम्हारे ख़िलाफ़ नहीं वह तुम्हारे हक़ में है।"

एक सामरी गाँव ईसा को ठहरने नहीं देता

51 जब वह वक़्त क़रीब आया कि ईसा को
आसमान पर उठा लिया जाए तो वह बड़े अज़्म के
साथ यरूशलम की तरफ़ सफ़र करने लगा। 52 इस
मक़्सद के तहत उस ने अपने आगे क़ासिद भेज दिए।
चलते चलते वह सामरियों के एक गाँव में पहुँचे जहाँ
वह उस के लिए ठहरने की जगह तय्यार करना चाहते
थे। 53 लेकिन गाँव के लोगों ने ईसा को टिकने न
दिया, क्यूँकि उस की मन्ज़िल-ए-मक़सूद यरूशलम
थी। 54 यह देख कर उस के शागिर्द याक़ूब और यूहन्ना
ने कहा, "ख़ुदावन्द, क्या [इल्यास की तरह] हम कहें
कि आसमान पर से आग नाज़िल हो कर इन को भस्म
कर दे?"

55 लेकिन ईसा ने मुड़ कर उन्हें डाँटा [और कहा,
"तुम नहीं जानते कि तुम किस क़िस्म की रूह के
हो। इब्न-ए-आदम इस लिए नहीं आया कि लोगों
को हलाक करे बल्कि इस लिए कि उन्हें बचाए।"]
56 चुनाँचे वह किसी और गाँव में चले गए।

पैरवी की सन्जीदगी

57 सफ़र करते करते किसी ने रास्ते में ईसा से कहा,
"जहाँ भी आप जाएँ मैं आप के पीछे चलता रहूँगा।"

58 ईसा ने जवाब दिया, "लोमड़ियाँ अपने भटों में
और परिन्दे अपने घोंसलों में आराम कर सकते हैं,
लेकिन इब्न-ए-आदम के पास सर रख कर आराम
करने की कोई जगह नहीं।"

59 किसी और से उस ने कहा, "मेरे पीछे हो ले।"

लेकिन उस आदमी ने कहा, "ख़ुदावन्द, मुझे पहले
जा कर अपने बाप को दफ़न करने की इजाज़त दें।"

60 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, "मुर्दों को अपने मुर्दे
दफ़नाने दे। तू जा कर अल्लाह की बादशाही की मुनादी
कर।"

61 एक और आदमी ने यह माज़रत चाही,
"ख़ुदावन्द, मैं ज़रूर आप के पीछे हो लूँगा। लेकिन
पहले मुझे अपने घर वालों को ख़ैरबाद कहने दें।"

62 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, "जो भी हल चलाते
हुए पीछे की तरफ़ देखे वह अल्लाह की बादशाही के
लाइक़ नहीं है।"

ईसा 72 शागिर्दों को मुनादी के लिए भेजता है

10 1 इस के बाद ख़ुदावन्द ने मज़ीद 72
शागिर्दों को मुक़र्रर किया और उन्हें दो
दो करके अपने आगे हर उस शहर और जगह भेज
दिया जहाँ वह अभी जाने को था। 2 उस ने उन से
कहा, "फ़सल बहुत है, लेकिन मज़दूर थोड़े। इस
लिए फ़सल के मालिक से दरख़्वास्त करो कि वह
फ़सल काटने के लिए मज़ीद मज़दूर भेज दे। 3 अब
रवाना हो जाओ, लेकिन ज़हन में यह बात रखो कि
तुम भेड़ के बच्चों की मानिन्द हो जिन्हें मैं भेड़ियों
के दरमियान भेज रहा हूँ। 4 अपने साथ न बटवा ले
जाना, न सामान के लिए बैग, न जूते। और रास्ते में
किसी को भी सलाम न करना। 5 जब भी तुम किसी
के घर में दाख़िल हो तो पहले यह कहना, 'इस घर
की सलामती हो।' 6 अगर उस में सलामती का कोई
बन्दा होगा तो तुम्हारी बरकत उस पर ठहरेगी, वर्ना
वह तुम पर लौट आएगी। 7 सलामती के ऐसे घर में
ठहरो और वह कुछ खाओ पियो जो तुम को दिया
जाए, क्यूँकि मज़दूर अपनी मज़दूरी का हक़दार है।
मुख़्तलिफ़ घरों में घूमते न फिरो बल्कि एक ही घर
में रहो। 8 जब भी तुम किसी शहर में दाख़िल हो और
लोग तुम को क़बूल करें तो जो कुछ वह तुम को
खाने को दें उसे खाओ। 9 वहाँ के मरीज़ों को शिफ़ा
दे कर बताओ कि अल्लाह की बादशाही क़रीब आ
गई है। 10 लेकिन अगर तुम किसी शहर में जाओ और
लोग तुम को क़बूल न करें तो फिर शहर की सड़कों
पर खड़े हो कर कहो, 11 'हम अपने जूतों से तुम्हारे
शहर की गर्द भी झाड़ देते हैं। यूँ हम तुम्हारे ख़िलाफ़
गवाही देते हैं। लेकिन यह जान लो कि अल्लाह की
बादशाही क़रीब आ गई है।' 12 मैं तुम को बताता हूँ
कि उस दिन उस शहर की निस्बत सदूम का हाल
ज़्यादा क़ाबिल-ए-बर्दाश्त होगा।

तौबा न करने वाले शहरों पर अफ़्सोस

13 ऐ ख़ुराज़ीन, तुझ पर अफ़्सोस! बैत-सैदा, तुझ पर
अफ़्सोस! अगर सूर और सैदा में वह मोजिज़े किए
गए होते जो तुम में हुए तो वहाँ के लोग कब के
टाट ओढ़ कर और सर पर राख डाल कर तौबा कर
चुके होते। 14 जी हाँ, अदालत के दिन तुम्हारी निस्बत
सूर और सैदा का हाल ज़्यादा क़ाबिल-ए-बर्दाश्त
होगा। 15 और तू ऐ कफ़र्नहूम, क्या तुझे आसमान
तक सरफ़राज़ किया जाएगा? हरगिज़ नहीं, बल्कि
तू उतरता उतरता पाताल तक पहुँचेगा।
16 जिस ने तुम्हारी सुनी उस ने मेरी भी सुनी। और
जिस ने तुम को रद्द किया उस ने मुझे भी रद्द किया।
और मुझे रद्द करने वाले ने उसे भी रद्द किया जिस ने
मुझे भेजा है।"

72 शागिर्दों की वापसी

17 72 शागिर्द लौट आए। वह बहुत ख़ुश थे और
कहने लगे, "ख़ुदावन्द, जब हम आप का नाम लेते
हैं तो बदरुहें भी हमारे ताबे हो जाती हैं।"
18 ईसा ने जवाब दिया, "इब्लीस मुझे नज़र आया
और वह बिजली की तरह आसमान से गिर रहा था।
19 देखो, मैं ने तुम को साँपों और बिछूओं पर चलने
का इख़तियार दिया है। तुम को दुश्मन की पूरी ताक़त
पर इख़तियार हासिल है। कुछ भी तुम को नुक़्सान
नहीं पहुँचा सकेगा। 20 लेकिन इस वजह से ख़ुशी न
मनाओ कि बदरुहें तुम्हारे ताबे हैं, बल्कि इस वजह
से कि तुम्हारे नाम आसमान पर दर्ज किए गए हैं।"

बाप की तम्जीद

21 उसी वक़्त ईसा रूह-उल-क़ुद्स में ख़ुशी मनाने
लगा। उस ने कहा, "ऐ बाप, आसमान-ओ-ज़मीन के
मालिक! मैं तेरी तम्जीद करता हूँ कि तू ने यह बात
दानाओं और अक़्लमन्दों से छुपा कर छोटे बच्चों पर
ज़ाहिर कर दी है। हाँ मेरे बाप, क्यूँकि यही तुझे पसन्द
आया।
22 मेरे बाप ने सब कुछ मेरे सपुर्द कर दिया है। कोई
नहीं जानता कि फ़र्ज़न्द कौन है सिवाए बाप के। और
कोई नहीं जानता कि बाप कौन है सिवाए फ़र्ज़न्द के
और उन लोगों के जिन पर फ़र्ज़न्द यह ज़ाहिर करना
चाहता है।"
23 फिर ईसा शागिर्दों की तरफ़ मुड़ा और
अलाहिदगी में उन से कहने लगा, "मुबारक हैं वह
आँखें जो वह कुछ देखती हैं जो तुम ने देखा है। 24 मैं
तुम को बताता हूँ कि बहुत से नबी और बादशाह यह
देखना चाहते थे जो तुम देखते हो, लेकिन उन्हों ने न
देखा। और वह यह सुनने के आरज़ूमन्द थे जो तुम
सुनते हो, लेकिन उन्हों ने न सुना।"

नेक सामरी की तम्सील

25 एक मौक़े पर शरीअत का एक आलिम ईसा को
फंसाने की ख़ातिर खड़ा हुआ। उस ने पूछा, "उस्ताद,
मैं क्या क्या करने से मीरास में अबदी ज़िन्दगी पा
सकता हूँ?"
26 ईसा ने उस से कहा, "शरीअत में क्या लिखा है?
तू उस में क्या पढ़ता है?"
27 आदमी ने जवाब दिया, "'रब अपने ख़ुदा से
अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान, अपनी पूरी ताक़त
और अपने पूरे ज़हन से प्यार करना।' और 'अपने
पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आप
से रखता है'।"
28 ईसा ने कहा, "तू ने ठीक जवाब दिया। ऐसा ही
कर तो ज़िन्दा रहेगा।"
29 लेकिन आलिम ने अपने आप को दुरुस्त साबित
करने की ग़रज़ से पूछा, "तो मेरा पड़ोसी कौन है?"
30 ईसा ने जवाब में कहा, "एक आदमी यरूशलम
से यरीहू की तरफ़ जा रहा था कि वह डाकुओं के
हाथों में पड़ गया। उन्हों ने उस के कपड़े उतार कर
उसे ख़ूब मारा और अधमुआ छोड़ कर चले गए।
31 इत्तिफ़ाक़ से एक इमाम भी उसी रास्ते पर यरीहू
की तरफ़ चल रहा था। लेकिन जब उस ने ज़ख़्मी
आदमी को देखा तो रास्ते की परली तरफ़ हो कर

आगे निकल गया। 32 लावी क़बीले का एक ख़ादिम
भी वहाँ से गुज़रा। लेकिन वह भी रास्ते की परली
तरफ़ से आगे निकल गया। 33 फिर सामरिया का एक
मुसाफ़िर वहाँ से गुज़रा। जब उस ने ज़ख़्मी आदमी
को देखा तो उसे उस पर तरस आया। 34 वह उस के
पास गया और उस के ज़ख़्मों पर तेल और मै लगा
कर उन पर पट्टियाँ बांध दीं। फिर उस को अपने गधे
पर बिठा कर सराय तक ले गया। वहाँ उस ने उस की
मज़ीद देख-भाल की। 35 अगले दिन उस ने चाँदी के
दो सिक्के निकाल कर सराय के मालिक को दिए और
कहा, 'इस की देख-भाल करना। अगर ख़र्चा इस से
बढ़ कर हुआ तो मैं वापसी पर अदा कर दूँगा'।"

36 फिर ईसा ने पूछा, "अब तेरा क्या ख़याल है,
डाकुओं की ज़द में आने वाले आदमी का पड़ोसी
कौन था? इमाम, लावी या सामरी?"

37 आलिम ने जवाब दिया, "वह जिस ने उस पर
रहम किया।"

ईसा ने कहा, "बिलकुल ठीक। अब तू भी जा कर
ऐसा ही कर।"

ईसा मरियम और मर्था के घर जाता है

38 फिर ईसा शागिर्दों के साथ आगे निकला। चलते
चलते वह एक गाँव में पहुँचा। वहाँ की एक औरत
बनाम मर्था ने उसे अपने घर में ख़ुशआमदीद कहा।
39 मर्था की एक बहन थी जिस का नाम मरियम
था। वह ख़ुदावन्द के पाँओ में बैठ कर उस की
बातें सुनने लगी 40 जबकि मर्था मेहमानों की ख़िदमत
करते करते थक गई। आख़िरकार वह ईसा के पास
आ कर कहने लगी, "ख़ुदावन्द, क्या आप को पर्वा
नहीं कि मेरी बहन ने मेहमानों की ख़िदमत का पूरा
इन्तिज़ाम मुझ पर छोड़ दिया है? उस से कहें कि वह
मेरी मदद करे।"

41 लेकिन ख़ुदावन्द ईसा ने जवाब में कहा, "मर्था,
मर्था, तू बहुत सी फ़िक्रों और परेशानियों में पड़ गई
है। 42 लेकिन एक बात ज़रूरी है। मरियम ने बेहतर
हिस्सा चुन लिया है और यह उस से छीना नहीं
जाएगा।"

दुआ किस तरह करनी है

11 1 एक दिन ईसा कहीं दुआ कर रहा था।
जब वह फ़ारिग़ हुआ तो उस के किसी
शागिर्द ने कहा, "ख़ुदावन्द, हमें दुआ करना सिखाएँ,
जिस तरह यहया ने भी अपने शागिर्दों को दुआ करने
की तालीम दी।"

2 ईसा ने कहा, "दुआ करते वक़्त यूँ कहना,
ऐ बाप,
तेरा नाम मुक़द्दस माना जाए।
तेरी बादशाही आए।
3 हर रोज़ हमें हमारी रोज़ की रोटी दे।
4 हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर।
क्यूँकि हम भी हर एक को मुआफ़ करते हैं
जो हमारा गुनाह करता है। [x]
और हमें आज़माइश में न पड़ने दे।"

माँगते रहो

5 फिर उस ने उन से कहा, "अगर तुम में से कोई
आधी रात के वक़्त अपने दोस्त के घर जा कर कहे,
'भाई, मुझे तीन रोटियाँ दे, बाद में मैं यह वापस कर
दूँगा। 6 क्यूँकि मेरा दोस्त सफ़र करके मेरे पास आया
है और मैं उसे खाने के लिए कुछ नहीं दे सकता।'
7 अब फ़र्ज़ करो कि यह दोस्त अन्दर से जवाब दे,
'मेहरबानी करके मुझे तंग न कर। दरवाज़े पर ताला
लगा है और मेरे बच्चे मेरे साथ बिस्तर पर हैं, इस लिए
मैं तुझे देने के लिए उठ नहीं सकता।' 8 लेकिन मैं तुम
को यह बताता हूँ कि अगर वह दोस्ती की ख़ातिर न
भी उठे, तो भी वह अपने दोस्त के बेजा इसरार की
वजह से उस की तमाम ज़रूरत पूरी करेगा।

---

[x] लफ़्ज़ी तर्जुमा : जो हमारा क़र्ज़दार है।

9 चुनाँचे माँगते रहो तो तुम को दिया जाएगा, ढूँडते
रहो तो तुम को मिल जाएगा। खटखटाते रहो तो
तुम्हारे लिए दरवाज़ा खोल दिया जाएगा। 10 क्यूँकि
जो भी माँगता है वह पाता है, जो ढूँडता है उसे मिलता
है और जो खटखटाता है उस के लिए दरवाज़ा खोल
दिया जाता है। 11 तुम बापों में से कौन अपने बेटे
को साँप देगा अगर वह मछली माँगे? 12 या कौन
उसे बिच्छू देगा अगर वह अंडा माँगे? कोई नहीं!
13 जब तुम बुरे होने के बावुजूद इतने समझदार हो
कि अपने बच्चों को अच्छी चीज़ें दे सकते हो तो फिर
कितनी ज़्यादा यक़ीनी बात है कि आसमानी बाप
अपने माँगने वालों को रूह-उल-क़ुद्स देगा।"

ईसा और बदरूहों का सरदार

14 एक दिन ईसा ने एक ऐसी बदरुह निकाल दी जो
गूँगी थी। जब वह गूँगे आदमी में से निकली तो वह
बोलने लगा। वहाँ पर जमा लोग हक्का-बक्का रह गए।
15 लेकिन बाज़ ने कहा, "यह तो बदरूहों के सरदार
बाल-ज़बूल की मदद से बदरूहों को निकालता है।"
16 औरों ने उसे आज़माने के लिए किसी इलाही
निशान का मुतालबा किया। 17 लेकिन ईसा ने उन के
ख़यालात जान कर कहा, "जिस बादशाही में भी फूट
पड़ जाए वह तबाह हो जाएगी, और जिस घराने की
ऐसी हालत हो वह भी ख़ाक में मिल जाएगा। 18 तुम
कहते हो कि मैं बाल-ज़बूल की मदद से बदरूहों को
निकालता हूँ। लेकिन अगर इब्लीस में फूट पड़ गई
है तो फिर उस की बादशाही किस तरह क़ाइम रह
सकती है? 19 दूसरा सवाल यह है, अगर मैं बाल-
ज़बूल की मदद से बदरूहों को निकालता हूँ तो
तुम्हारे बेटे उन्हें किस के ज़रीए निकालते हैं? चुनाँचे
वही इस बात में तुम्हारे मुन्सिफ़ होंगे। 20 लेकिन
अगर मैं अल्लाह की क़ुदरत से बदरूहों को निकालता
हूँ तो फिर अल्लाह की बादशाही तुम्हारे पास पहुँच
चुकी है।
21 जब तक कोई ज़ोरावर आदमी हथियारों से लेस
अपने डेरे की पहरादारी करे उस वक़्त तक उस की
मिलकियत महफ़ूज़ रहती है। 22 लेकिन अगर कोई
ज़्यादा ताक़तवर शख़्स हम्ला करके उस पर ग़ालिब
आए तो वह उस के असलिहा पर क़ब्ज़ा करेगा जिस
पर उस का भरोसा था, और लूटा हुआ माल अपने
लोगों में तक़्सीम कर देगा।
23 जो मेरे साथ नहीं वह मेरे ख़िलाफ़ है और जो मेरे
साथ जमा नहीं करता वह बिखेरता है।

बदरुह की वापसी

24 जब कोई बदरुह किसी शख़्स में से निकलती है
तो वह वीरान इलाक़ों में से गुज़रती हुई आराम की
जगह तलाश करती है। लेकिन जब उसे कोई ऐसा
मक़ाम नहीं मिलता तो वह कहती है, 'मैं अपने उस
घर में वापस चली जाऊँगी जिस में से निकली थी।'
25 वह वापस आ कर देखती है कि किसी ने झाड़ू दे
कर सब कुछ सलीक़े से रख दिया है। 26 फिर वह जा
कर सात और बदरुहें ढूँड लाती है जो उस से बदतर
होती हैं, और वह सब उस शख़्स में घुस कर रहने
लगती हैं। चुनाँचे अब उस आदमी की हालत पहले
की निस्बत ज़्यादा बुरी हो जाती है।"

कौन मुबारक है?

27 ईसा अभी यह बात कर ही रहा था कि एक औरत
ने ऊँची आवाज़ से कहा, "आप की माँ मुबारक
है जिस ने आप को जन्म दिया और आप को दूध
पिलाया।"
28 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, "बात यह नहीं है।
हक़ीक़त में वह मुबारक हैं जो अल्लाह का कलाम
सुन कर उस पर अमल करते हैं।"

इलाही निशान का तक़ाज़ा

29 सुनने वालों की तादाद बहुत बढ़ गई तो वह
कहने लगा, "यह नस्ल शरीर है, क्यूँकि यह मुझ
से इलाही निशान का तक़ाज़ा करती है। लेकिन
इसे कोई भी इलाही निशान पेश नहीं किया जाएगा
सिवाए यूनुस के निशान के। 30 क्यूँकि जिस तरह

यूनुस नीनवा शहर के बाशिन्दों के लिए निशान था
बिलकुल उसी तरह इब्न-ए-आदम इस नस्ल के लिए
निशान होगा। 31 क़ियामत के दिन जुनूबी मुल्क सबा
की मलिका इस नस्ल के लोगों के साथ खड़ी हो कर
उन्हें मुजरिम क़रार देगी। क्यूँकि वह दूरदराज़ मुल्क
से सुलेमान की हिक्मत सुनने के लिए आई थी जबकि
यहाँ वह है जो सुलेमान से भी बड़ा है। 32 उस दिन
नीनवा के बाशिन्दे भी इस नस्ल के लोगों के साथ
खड़े हो कर उन्हें मुजरिम ठहराएँगे। क्यूँकि यूनुस के
एलान पर उन्हों ने तौबा की थी जबकि यहाँ वह है
जो यूनुस से भी बड़ा है।

बदन की रौशनी

33 जब कोई शख़्स चराग़ जलाता है तो न वह उसे
छुपाता, न बर्तन के नीचे रखता बल्कि उसे शमादान
पर रख देता है ताकि उस की रौशनी अन्दर आने
वालों को नज़र आए। 34 तेरी आँख तेरे बदन का
चराग़ है। अगर तेरी आँख ठीक हो तो तेरा पूरा
जिस्म रौशन होगा। लेकिन अगर आँख ख़राब हो
तो पूरा जिस्म अंधेरा ही अंधेरा होगा। 35 ख़बरदार!
ऐसा न हो कि जो रौशनी तेरे अन्दर है वह हक़ीक़त
में तारीकी हो। 36 चुनाँचे अगर तेरा पूरा जिस्म रौशन
हो और कोई भी हिस्सा तारीक न हो तो फिर वह
बिलकुल रौशन होगा, ऐसा जैसा उस वक़्त होता है
जब चराग़ तुझे अपने चमकने दमकने से रौशन कर
देता है।"

फ़रीसियों पर अफ़्सोस

37 ईसा अभी बात कर रहा था कि किसी फ़रीसी ने
उसे खाने की दावत दी। चुनाँचे वह उस के घर में जा
कर खाने के लिए बैठ गया। 38 मेज़बान बड़ा हैरान
हुआ, क्यूँकि उस ने देखा कि ईसा हाथ धोए बग़ैर
खाने के लिए बैठ गया है। 39 लेकिन ख़ुदावन्द ने उस
से कहा, "देखो, तुम फ़रीसी बाहर से हर प्याले और
बर्तन की सफ़ाई करते हो, लेकिन अन्दर से तुम लूट-
मार और शरारत से भरे होते हो। 40 नादानो! अल्लाह
ने बाहर वाले हिस्से को ख़ल्क़ किया, तो क्या उस
ने अन्दर वाले हिस्से को नहीं बनाया? 41 चुनाँचे जो
कुछ बर्तन के अन्दर है उसे ग़रीबों को दे दो। फिर
तुम्हारे लिए सब कुछ पाक-साफ़ होगा।

42 फ़रीसियो, तुम पर अफ़्सोस! क्यूँकि एक तरफ़
तुम पौदीना, सदाब और बाग़ की हर क़िस्म की
तरकारी का दसवाँ हिस्सा अल्लाह के लिए मख़्सूस
करते हो, लेकिन दूसरी तरफ़ तुम इन्साफ़ और अल्लाह
की मुहब्बत को नज़रअन्दाज़ करते हो। लाज़िम है
कि तुम यह काम भी करो और पहला भी न छोड़ो।

43 फ़रीसियो, तुम पर अफ़्सोस! क्यूँकि तुम
इबादतख़ानों की इज़्ज़त की कुर्सियों पर बैठने के
लिए बेचैन रहते और बाज़ार में लोगों का सलाम
सुनने के लिए तड़पते हो। 44 हाँ, तुम पर अफ़्सोस!
क्यूँकि तुम पोशीदा क़ब्रों की मानिन्द हो जिन पर से
लोग नादानिस्ता तौर पर गुज़रते हैं।"

45 शरीअत के एक आलिम ने एतिराज़ किया,
"उस्ताद, आप यह कह कर हमारी भी बेइज़्ज़ती
करते हैं।"

46 ईसा ने जवाब दिया, "तुम शरीअत के आलिमों
पर भी अफ़्सोस! क्यूँकि तुम लोगों पर भारी बोझ
डाल देते हो जो मुश्किल से उठाया जा सकता है। न
सिर्फ़ यह बल्कि तुम ख़ुद इस बोझ को अपनी एक
उंगली भी नहीं लगाते। 47 तुम पर अफ़्सोस! क्यूँकि
तुम नबियों के मज़ार बना देते हो, उन के जिन्हें तुम्हारे
बापदादा ने मार डाला। 48 इस से तुम गवाही देते हो
कि तुम वह कुछ पसन्द करते हो जो तुम्हारे बापदादा
ने किया। उन्हों ने नबियों को क़त्ल किया जबकि तुम
उन के मज़ार तामीर करते हो। 49 इस लिए अल्लाह
की हिक्मत ने कहा, 'मैं उन में नबी और रसूल भेज
दूँगी। उन में से बाज़ को वह क़त्ल करेंगे और बाज़
को सताएँगे।' 50 नतीजे में यह नस्ल तमाम नबियों के
क़त्ल की ज़िम्मादार ठहरेगी - दुनिया की तख़्लीक़ से
ले कर आज तक, 51 यानी हाबील के क़त्ल से ले कर
ज़करियाह के क़त्ल तक, जिसे बैत-उल-मुक़द्दस के
सहन में मौजूद क़ुर्बानगाह और बैत-उल-मुक़द्दस के

दरवाज़े के दरमियान क़त्ल किया गया। हाँ, मैं तुम
को बताता हूँ कि यह नस्ल ज़रूर उन की ज़िम्मादार
ठहरेगी।
52 शरीअत के आलिमो, तुम पर अफ़्सोस! क्यूँकि
तुम ने इल्म की कुंजी को छीन लिया है। न सिर्फ़ यह
कि तुम ख़ुद दाख़िल नहीं हुए, बल्कि तुम ने दाख़िल
होने वालों को भी रोक लिया।"
53 जब ईसा वहाँ से निकला तो आलिम और
फ़रीसी उस के सख़्त मुख़ालिफ़ हो गए और बड़े ग़ौर
से उस की पूछगछ करने लगे। 54 वह इस ताक में
रहे कि उसे मुँह से निकली किसी बात की वजह से
पकड़ें।

रियाकारी से ख़बरदार रहो!

12 1 इतने में कई हज़ार लोग जमा हो गए थे।
बड़ी तादाद की वजह से वह एक दूसरे पर
गिरे पड़ते थे। फिर ईसा अपने शागिर्दों से यह बात
करने लगा, "फ़रीसियों के ख़मीर यानी रियाकारी
से ख़बरदार! 2 जो कुछ भी अभी छुपा हुआ है उसे
आख़िर में ज़ाहिर किया जाएगा और जो कुछ भी इस
वक़्त पोशीदा है उस का राज़ आख़िर में खुल जाएगा।
3 इस लिए जो कुछ तुम ने अंधेरे में कहा है वह
रोज़-ए-रौशन में सुनाया जाएगा और जो कुछ तुम ने
अन्दरूनी कमरों का दरवाज़ा बन्द करके आहिस्ता
आहिस्ता कान में बयान किया है उस का छतों से
एलान किया जाएगा।

किस से डरना चाहिए?

4 मेरे अज़ीज़ो, उन से मत डरना जो सिर्फ़ जिस्म
को क़त्ल करते हैं और मज़ीद नुक़्सान नहीं पहुँचा
सकते। 5 मैं तुम को बताता हूँ कि किस से डरना है।
अल्लाह से डरो, जो तुम्हें हलाक करने के बाद जहन्नुम
में फैंकने का इख़तियार भी रखता है। जी हाँ, उसी से
ख़ौफ़ खाओ।
6 क्या पाँच चिड़ियाँ दो पैसों में नहीं बिकतीं? तो
भी अल्लाह हर एक की फ़िक्र करके एक को भी नहीं
भूलता। 7 हाँ, बल्कि तुम्हारे सर के सब बाल भी गिने
हुए हैं। लिहाज़ा मत डरो। तुम्हारी क़दर-ओ-क़ीमत
बहुत सी चिड़ियों से कहीं ज़्यादा है।

मसीह का इक़्रार या इन्कार करने के नतीजे

8 मैं तुम को बताता हूँ, जो भी लोगों के सामने मेरा
इक़्रार करे उस का इक़्रार इब्न-ए-आदम भी फ़रिश्तों
के सामने करेगा। 9 लेकिन जो लोगों के सामने मेरा
इन्कार करे उस का भी अल्लाह के फ़रिश्तों के सामने
इन्कार किया जाएगा।
10 और जो भी इब्न-ए-आदम के ख़िलाफ़ बात करे
उसे मुआफ़ किया जा सकता है। लेकिन जो रूह-
उल-क़ुद्स के ख़िलाफ़ कुफ़्र बके उसे मुआफ़ नहीं
किया जाएगा।
11 जब लोग तुम को इबादतख़ानों में और हाकिमों
और इख़तियार वालों के सामने घसीट कर ले जाएंगे
तो यह सोचते सोचते परेशान न हो जाना कि मैं किस
तरह अपना दिफ़ा करूँ या क्या कहूँ, 12 क्यूँकि रूह-
उल-क़ुद्स तुम को उसी वक़्त सिखा देगा कि तुम को
क्या कहना है।"

नादान अमीर की तम्सील

13 किसी ने भीड़ में से कहा, "उस्ताद, मेरे भाई से
कहें कि मीरास का मेरा हिस्सा मुझे दे।"
14 ईसा ने जवाब दिया, "भई, किस ने मुझे तुम
पर जज या तक़्सीम करने वाला मुक़र्रर किया है?"
15 फिर उस ने उन से मज़ीद कहा, "ख़बरदार! हर
क़िस्म के लालच से बचे रहना, क्यूँकि इन्सान
की ज़िन्दगी उस के माल-ओ-दौलत की कस्रत पर
मुन्हसिर नहीं।"
16 उस ने उन्हें एक तम्सील सुनाई। "किसी अमीर
आदमी की ज़मीन में अच्छी फ़सल पैदा हुई।
17 चुनाँचे वह सोचने लगा, 'अब मैं क्या करूँ? मेरे
पास तो इतनी जगह नहीं जहाँ मैं सब कुछ जमा
करके रखूँ।' 18 फिर उस ने कहा, 'मैं यह करूँगा कि
अपने गोदामों को ढा कर इन से बड़े तामीर करूँगा।

उन में अपना तमाम अनाज और बाक़ी पैदावार जमा
कर लूँगा। 19 फिर मैं अपने आप से कहूँगा कि लो,
इन अच्छी चीज़ों से तेरी ज़रूरियात बहुत सालों तक
पूरी होती रहेंगी। अब आराम कर। खा, पी और ख़ुशी
मना।' 20 लेकिन अल्लाह ने उस से कहा, 'अहमक़!
इसी रात तू मर जाएगा। तो फिर जो चीज़ें तू ने जमा
की हैं वह किस की होंगी?'
21 यही उस शख़्स का अन्जाम है जो सिर्फ़ अपने
लिए चीज़ें जमा करता है जबकि वह अल्लाह के सामने
ग़रीब है।"

अल्लाह पर भरोसा

22 फिर ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, "इस लिए
अपनी ज़िन्दगी की ज़रूरियात पूरी करने के लिए
परेशान न रहो कि हाय, मैं क्या खाऊँ। और जिस्म
के लिए फ़िक्रमन्द न रहो कि हाय, मैं क्या पहनूँ।
23 ज़िन्दगी तो खाने से ज़्यादा अहम है और जिस्म
पोशाक से ज़्यादा। 24 कव्वों पर ग़ौर करो। न वह
बीज बोते, न फ़सलें काटते हैं। उन के पास न स्टोर
होता है, न गोदाम। तो भी अल्लाह ख़ुद उन्हें खाना
खिलाता है। और तुम्हारी क़दर-ओ-क़ीमत तो परिन्दों
से कहीं ज़्यादा है। 25 क्या तुम में से कोई फ़िक्र करते
करते अपनी ज़िन्दगी में एक लम्हे का भी इज़ाफ़ा
कर सकता है? 26 अगर तुम फ़िक्र करने से इतनी
छोटी सी तब्दीली भी नहीं ला सकते तो फिर तुम
बाक़ी बातों के बारे में क्यूँ फ़िक्रमन्द हो? 27 ग़ौर
करो कि सोसन के फूल किस तरह उगते हैं। न वह
मेहनत करते, न कातते हैं। लेकिन मैं तुम्हें बताता
हूँ कि सुलेमान बादशाह अपनी पूरी शान-ओ-शौकत
के बावुजूद ऐसे शानदार कपड़ों से मुलब्बस नहीं था
जैसे उन में से एक। 28 अगर अल्लाह उस घास को
जो आज मैदान में है और कल आग में झोंकी जाएगी
ऐसा शानदार लिबास पहनाता है तो ऐ कमएतिक़ादो,
वह तुम को पहनाने के लिए क्या कुछ नहीं करेगा?
29 इस की तलाश में न रहना कि क्या खाओगे या
क्या पियोगे। ऐसी बातों की वजह से बेचैन न रहो।
30 क्यूँकि दुनिया में जो ईमान नहीं रखते वही इन
तमाम चीज़ों के पीछे भागते रहते हैं, जबकि तुम्हारे
बाप को पहले से मालूम है कि तुम को इन की ज़रूरत
है। 31 चुनाँचे उसी की बादशाही की तलाश में रहो।
फिर यह तमाम चीज़ें भी तुम को मिल जाएँगी।

आसमान पर दौलत जमा करना

32 ऐ छोटे गल्ले, मत डरना, क्यूँकि तुम्हारे बाप
ने तुम को बादशाही देना पसन्द किया। 33 अपनी
मिलकियत बेच कर ग़रीबों को दे देना। अपने लिए
ऐसे बटवे बनवाओ जो नहीं घिसते। अपने लिए
आसमान पर ऐसा ख़ज़ाना जमा करो जो कभी ख़त्म
नहीं होगा और जहाँ न कोई चोर आएगा, न कोई
कीड़ा उसे ख़राब करेगा। 34 क्यूँकि जहाँ तुम्हारा
ख़ज़ाना है वहीं तुम्हारा दिल भी लगा रहेगा।

हर वक़्त तय्यार नौकर

35 ख़िदमत के लिए तय्यार खड़े रहो और इस पर
ध्यान दो कि तुम्हारे चराग़ जलते रहें। 36 यानी ऐसे
नौकरों की मानिन्द जिन का मालिक किसी शादी से
वापस आने वाला है और वह उस के लिए तय्यार
खड़े हैं। जूँ ही वह आ कर दस्तक दे वह दरवाज़े को
खोल देंगे। 37 वह नौकर मुबारक हैं जिन्हें मालिक आ
कर जागते हुए और चौकस पाएगा। मैं तुम को सच
बताता हूँ कि यह देख कर मालिक अपने कपड़े बदल
कर उन्हें बिठाएगा और मेज़ पर उन की ख़िदमत
करेगा। 38 हो सकता है मालिक आधी रात या इस
के बाद आए। अगर वह इस सूरत में भी उन्हें मुस्तइद
पाए तो वह मुबारक हैं। 39 यक़ीन जानो, अगर किसी
घर के मालिक को पता होता कि चोर कब आएगा तो
वह ज़रूर उसे घर में नक़ब लगाने न देता। 40 तुम भी
तय्यार रहो, क्यूँकि इब्न-ए-आदम ऐसे वक़्त आएगा
जब तुम इस की तवक़्क़ो नहीं करोगे।"

वफ़ादार नौकर

41 पतरस ने पूछा, “ख़ुदावन्द, क्या यह तम्सील
सिर्फ़ हमारे लिए है या सब के लिए?”
42 ख़ुदावन्द ने जवाब दिया, “कौन सा नौकर
वफ़ादार और समझदार है? फ़र्ज़ करो कि घर के
मालिक ने किसी नौकर को बाक़ी नौकरों पर मुक़र्रर
किया हो। उस की एक ज़िम्मादारी यह भी है कि
उन्हें वक़्त पर मुनासिब खाना खिलाए। 43 वह नौकर
मुबारक होगा जो मालिक की वापसी पर यह सब
कुछ कर रहा होगा। 44 मैं तुम को सच बताता हूँ
कि यह देख कर मालिक उसे अपनी पूरी जायदाद
पर मुक़र्रर करेगा। 45 लेकिन फ़र्ज़ करो कि नौकर
अपने दिल में सोचे, ‘मालिक की वापसी में अभी
देर है।’ वह नौकरों और नौकरानियों को पीटने लगे
और खाते-पीते वह नशे में रहे। 46 अगर वह ऐसा
करे तो मालिक ऐसे दिन और वक़्त आएगा जिस की
तवक़्क़ो नौकर को नहीं होगी। इन हालात को देख
कर वह नौकर को टुकड़े टुकड़े कर डालेगा और उसे
ग़ैरईमानदारों में शामिल करेगा।
47 जो नौकर अपने मालिक की मर्ज़ी को जानता है,
लेकिन उस के लिए तय्यारियाँ नहीं करता, न उसे
पूरी करने की कोशिश करता है, उस की ख़ूब पिटाई
की जाएगी। 48 इस के मुक़ाबले में वह जो मालिक
की मर्ज़ी को नहीं जानता और इस बिना पर कोई
क़ाबिल-ए-सज़ा काम करे उस की कम पिटाई की
जाएगी। क्यूँकि जिसे बहुत दिया गया हो उस से बहुत
तलब किया जाएगा। और जिस के सपुर्द बहुत कुछ
किया गया हो उस से कहीं ज़्यादा माँगा जाएगा।

ईसा की वजह से इख़तिलाफ़ पैदा होगा

49 मैं ज़मीन पर आग लगाने आया हूँ, और काश
वह पहले ही भड़क रही होती! 50 लेकिन अब तक
मेरे सामने एक बपतिस्मा है जिसे लेना ज़रूरी है।
और मुझ पर कितना दबाओ है जब तक उस की
तक्मील न हो जाए। 51 क्या तुम समझते हो कि मैं
दुनिया में सुलह-सलामती क़ाइम करने आया हूँ?
नहीं, मैं तुम को बताता हूँ कि इस की बजाय मैं
इख़तिलाफ़ पैदा करूँगा। 52 क्यूँकि अब से एक
घराने के पाँच अफ़राद में इख़तिलाफ़ होगा। तीन दो
के ख़िलाफ़ और दो तीन के ख़िलाफ़ होंगे। 53 बाप
बेटे के ख़िलाफ़ होगा और बेटा बाप के ख़िलाफ़, माँ
बेटी के ख़िलाफ़ और बेटी माँ के ख़िलाफ़, सास बहू
के ख़िलाफ़ और बहू सास के ख़िलाफ़।”

मौजूदा हालात का सहीह नतीजा निकालना चाहिए

54 ईसा ने हुजूम से यह भी कहा, “जूँ ही कोई बादल
मग़रिबी उफ़क़ से चढ़ता हुआ नज़र आए तो तुम
कहते हो कि बारिश होगी। और ऐसा ही होता है।
55 और जब जुनूबी लू चलती है तो तुम कहते हो
कि सख़्त गर्मी होगी। और ऐसा ही होता है। 56 ऐ
रियाकारो! तुम आसमान-ओ-ज़मीन के हालात पर
ग़ौर करके सहीह नतीजा निकाल लेते हो। तो फिर
तुम मौजूदा ज़माने के हालात पर ग़ौर करके सहीह
नतीजा क्यूँ नहीं निकाल सकते?

अपने मुख़ालिफ़ से समझौता करना

57 तुम ख़ुद सहीह फ़ैसला क्यूँ नहीं कर सकते?
58 फ़र्ज़ करो कि किसी ने तुझ पर मुक़द्दमा चलाया
है। अगर ऐसा हो तो पूरी कोशिश कर कि कचहरी
में पहुँचने से पहले पहले मुआमला हल करके
मुख़ालिफ़ से फ़ारिग़ हो जाए। ऐसा न हो कि वह
तुझ को जज के सामने घसीट कर ले जाए, जज तुझे
पुलिस अफ़्सर के हवाले करे और पुलिस अफ़्सर
तुझे जेल में डाल दे। 59 मैं तुझे बताता हूँ, वहाँ से तू
उस वक़्त तक नहीं निकल पाएगा जब तक जुर्माने
की पूरी पूरी रक़म अदा न कर दे।”

तौबा करो वर्ना हलाक हो जाओगे

13 1 उस वक़्त कुछ लोग ईसा के पास पहुँचे।
उन्हों ने उसे गलील के कुछ लोगों के बारे
में बताया जिन्हें पीलातुस ने उस वक़्त क़त्ल करवाया

था जब वह बैत-उल-मुक़द्दस में क़ुर्बानियाँ पेश कर
रहे थे। यूँ उन का ख़ून क़ुर्बानियों के ख़ून के साथ
मिलाया गया था। 2 ईसा ने यह सुन कर पूछा, “क्या
तुम्हारे ख़याल में यह लोग गलील के बाक़ी लोगों
से ज़्यादा गुनाहगार थे कि इन्हें इतना दुख उठाना
पड़ा? 3 हरगिज़ नहीं! बल्कि मैं तुम को बताता हूँ कि
अगर तुम तौबा न करो तो तुम भी इसी तरह तबाह
हो जाओगे। 4 या उन 18 अफ़राद के बारे में तुम्हारा
क्या ख़याल है जो मर गए जब शिलोख़ का बुर्ज उन
पर गिरा? क्या वह यरूशलम के बाक़ी बाशिन्दों की
निस्बत ज़्यादा गुनाहगार थे? 5 हरगिज़ नहीं! मैं तुम
को बताता हूँ कि अगर तुम तौबा न करो तो तुम भी
तबाह हो जाओगे।”

बेफल अन्जीर का दरख़्त

6 फिर ईसा ने उन्हें यह तम्सील सुनाई, “किसी ने
अपने बाग़ में अन्जीर का दरख़्त लगाया। जब वह
उस का फल तोड़ने के लिए आया तो कोई फल नहीं
था। 7 यह देख कर उस ने माली से कहा, ‘मैं तीन
साल से इस का फल तोड़ने आता हूँ, लेकिन आज
तक कुछ भी नहीं मिला। इसे काट डाल। यह ज़मीन
की ताक़त क्यूँ ख़त्म करे?’ 8 लेकिन माली ने कहा,
‘जनाब, इसे एक साल और रहने दें। मैं इस के इर्दगिर्द
गोडी करके खाद डालूँगा। 9 फिर अगर यह अगले
साल फल लाया तो ठीक, वर्ना इसे कटवा डालना’।”

सबत के दिन कुबड़ी औरत की शिफ़ा

10 सबत के दिन ईसा किसी इबादतख़ाने में तालीम
दे रहा था। 11 वहाँ एक औरत थी जो 18 साल से
बदरुह के बाइस बीमार थी। वह कुबड़ी हो गई थी
और सीधी खड़ी होने के बिलकुल क़ाबिल न थी।
12 जब ईसा ने उसे देखा तो पुकार कर कहा, “ऐ
औरत, तू अपनी बीमारी से छूट गई है!” 13 उस ने
अपने हाथ उस पर रखे तो वह फ़ौरन सीधी खड़ी हो
कर अल्लाह की तम्जीद करने लगी।

14 लेकिन इबादतख़ाने का राहनुमा नाराज़ हुआ
क्यूँकि ईसा ने सबत के दिन शिफ़ा दी थी। उस ने
लोगों से कहा, “हफ़्ते के छः दिन काम करने के
लिए होते हैं। इस लिए इत्वार से ले कर जुमए तक
शिफ़ा पाने के लिए आओ, न कि सबत के दिन।”

15 ख़ुदावन्द ने जवाब में उस से कहा, “तुम कितने
रियाकार हो! क्या तुम में से हर कोई सबत के दिन
अपने बैल या गधे को खोल कर उसे थान से बाहर
नहीं ले जाता ताकि उसे पानी पिलाए? 16 अब इस
औरत को देखो जो इब्राहीम की बेटी है और जो 18
साल से इब्लीस के बंधन में थी। जब तुम सबत के
दिन अपने जानवरों की मदद करते हो तो क्या यह
ठीक नहीं कि औरत को इस बंधन से रिहाई दिलाई
जाती, चाहे यह काम सबत के दिन ही क्यूँ न किया
जाए?” 17 ईसा के इस जवाब से उस के मुख़ालिफ़
शर्मिन्दा हो गए। लेकिन आम लोग उस के इन तमाम
शानदार कामों से ख़ुश हुए।

राई के दाने की तम्सील

18 ईसा ने कहा, “अल्लाह की बादशाही किस चीज़
की मानिन्द है? मैं इस का मुवाज़ना किस से करूँ?
19 वह राई के एक दाने की मानिन्द है जो किसी
ने अपने बाग़ में बो दिया। बढ़ते बढ़ते वह दरख़्त
सा बन गया और परिन्दों ने उस की शाख़ों में अपने
घोंसले बना लिए।”

ख़मीर की मिसाल

20 उस ने दुबारा पूछा, “अल्लाह की बादशाही का
किस चीज़ से मुवाज़ना करूँ? 21 वह उस ख़मीर की
मानिन्द है जो किसी औरत ने ले कर तक़रीबन 27
किलोग्राम आटे में मिला दिया। गो वह उस में छुप
गया तो भी होते होते पूरे गुंधे हुए आटे को ख़मीर कर
गया।”

तंग दरवाज़ा

22 ईसा तालीम देते देते मुख़्तलिफ़ शहरों और
दीहातों में से गुज़रा। अब उस का रुख़ यरूशलम
ही की तरफ़ था। 23 इतने में किसी ने उस से पूछा,
"ख़ुदावन्द, क्या कम लोगों को नजात मिलेगी?"
उस ने जवाब दिया, 24 "तंग दरवाज़े में से दाख़िल
होने की सिरतोड़ कोशिश करो। क्यूँकि मैं तुम को
बताता हूँ कि बहुत से लोग अन्दर जाने की कोशिश
करेंगे, लेकिन बेफ़ाइदा। 25 एक वक़्त आएगा कि
घर का मालिक उठ कर दरवाज़ा बन्द कर देगा।
फिर तुम बाहर खड़े रहोगे और खटखटाते खटखटाते
इल्तिमास करोगे, 'ख़ुदावन्द, हमारे लिए दरवाज़ा
खोल दें।' लेकिन वह जवाब देगा, 'न मैं तुम को
जानता हूँ, न यह कि तुम कहाँ के हो।' 26 फिर तुम
कहोगे, 'हम ने तो आप के सामने ही खाया और पिया
और आप ही हमारी सड़कों पर तालीम देते रहे।'
27 लेकिन वह जवाब देगा, 'न मैं तुम को जानता हूँ, न
यह कि तुम कहाँ के हो। ऐ तमाम बदकारो, मुझ से दूर
हो जाओ!' 28 वहाँ तुम रोते और दाँत पीसते रहोगे।
क्यूँकि तुम देखोगे कि इब्राहीम, इस्हाक़, याक़ूब और
तमाम नबी अल्लाह की बादशाही में हैं जबकि तुम को
निकाल दिया गया है। 29 और लोग मशरिक़, मग़रिब,
शिमाल और जुनूब से आ कर अल्लाह की बादशाही
की ज़ियाफ़त में शरीक होंगे। 30 उस वक़्त कुछ ऐसे
होंगे जो पहले आख़िर थे, लेकिन अब अव्वल होंगे।
और कुछ ऐसे भी होंगे जो पहले अव्वल थे, लेकिन
अब आख़िर होंगे।"

यरूशलम पर अफ़्सोस

31 उस वक़्त कुछ फ़रीसी ईसा के पास आ कर उस
से कहने लगे, "इस मक़ाम को छोड़ कर कहीं और
चले जाएँ, क्यूँकि हेरोदेस आप को क़त्ल करने का
इरादा रखता है।"
32 ईसा ने जवाब दिया, "जाओ, उस लोमड़ी को
बता दो, 'आज और कल मैं बदरुहें निकालता और
मरीज़ों को शिफ़ा देता रहूँगा। फिर तीसरे दिन मैं
पाया-ए-तक्मील को पहुँचूँगा।' 33 इस लिए लाज़िम
है कि मैं आज, कल और परसों आगे चलता रहूँ।
क्यूँकि मुमकिन नहीं कि कोई नबी यरूशलम से
बाहर हलाक हो।
34 हाय यरूशलम, यरूशलम! तू जो नबियों को
क़त्ल करती और अपने पास भेजे हुए पैग़म्बरों को
संगसार करती है। मैं ने कितनी ही बार तेरी औलाद
को जमा करना चाहा, बिलकुल उसी तरह जिस तरह
मुर्ग़ी अपने बच्चों को अपने परों तले जमा करके
महफ़ूज़ कर लेती है। लेकिन तू ने न चाहा। 35 अब
तेरे घर को वीरान-ओ-सुन्सान छोड़ा जाएगा। और मैं
तुम को बताता हूँ, तुम मुझे उस वक़्त तक दुबारा
नहीं देखोगे जब तक तुम न कहो कि मुबारक है वह
जो रब के नाम से आता है।"

सबत के दिन मरीज़ की शिफ़ा

14 1 सबत के एक दिन ईसा खाने के लिए
फ़रीसियों के किसी राहनुमा के घर आया।
लोग उसे पकड़ने के लिए उस की हर हरकत पर
नज़र रखे हुए थे। 2 वहाँ एक आदमी ईसा के सामने
था जिस के बाज़ू और टाँगें फूले हुए थे। 3 यह देख
कर वह फ़रीसियों और शरीअत के आलिमों से पूछने
लगा, "क्या शरीअत सबत के दिन शिफ़ा देने की
इजाज़त देती है?"
4 लेकिन वह ख़ामोश रहे। फिर उस ने उस आदमी
पर हाथ रखा और उसे शिफ़ा दे कर रुख़्सत कर
दिया। 5 हाज़िरीन से वह कहने लगा, "अगर तुम में
से किसी का बेटा या बैल सबत के दिन कुएँ में गिर
जाए तो क्या तुम उसे फ़ौरन नहीं निकालोगे?"
6 इस पर वह कोई जवाब न दे सके।

इज़्ज़त और अज्र हासिल करने का तरीक़ा

7 जब ईसा ने देखा कि मेहमान मेज़ पर इज़्ज़त की
कुर्सियाँ चुन रहे हैं तो उस ने उन्हें यह तम्सील सुनाई,
8 "जब तुझे किसी शादी की ज़ियाफ़त में शरीक होने

की दावत दी जाए तो वहाँ जा कर इज़्ज़त की कुर्सी
पर न बैठना। ऐसा न हो कि किसी और को भी दावत
दी गई हो जो तुझ से ज़्यादा इज़्ज़तदार है। 9 क्यूँकि
जब वह पहुँचेगा तो मेज़बान तेरे पास आ कर कहेगा,
'ज़रा इस आदमी को यहाँ बैठने दे।' यूँ तेरी बेइज़्ज़ती
हो जाएगी और तुझे वहाँ से उठ कर आख़िरी कुर्सी
पर बैठना पड़ेगा। 10 इस लिए ऐसा मत करना बल्कि
जब तुझे दावत दी जाए तो जा कर आख़िरी कुर्सी पर
बैठ जा। फिर जब मेज़बान तुझे वहाँ बैठा हुआ देखेगा
तो वह कहेगा, 'दोस्त, सामने वाली कुर्सी पर बैठ।'
इस तरह तमाम मेहमानों के सामने तेरी इज़्ज़त हो
जाएगी। 11 क्यूँकि जो भी अपने आप को सरफ़राज़
करे उसे पस्त किया जाएगा और जो अपने आप को
पस्त करे उसे सरफ़राज़ किया जाएगा।"

12 फिर ईसा ने मेज़बान से बात की, "जब तू लोगों
को दोपहर या शाम का खाना खाने की दावत देना
चाहता है तो अपने दोस्तों, भाइयों, रिश्तेदारों या
अमीर हमसायों को न बुला। ऐसा न हो कि वह इस
के इवज़ तुझे भी दावत दें। क्यूँकि अगर वह ऐसा
करें तो यही तेरा मुआवज़ा होगा। 13 इस के बजाय
ज़ियाफ़त करते वक़्त ग़रीबों, लंगड़ों, मफ़्लूजों और
अंधों को दावत दे। 14 ऐसा करने से तुझे बरकत
मिलेगी। क्यूँकि वह तुझे इस के इवज़ कुछ नहीं
दे सकेंगे, बल्कि तुझे इस का मुआवज़ा उस वक़्त
मिलेगा जब रास्तबाज़ जी उठेंगे।"

बड़ी ज़ियाफ़त की तम्सील

15 यह सुन कर मेहमानों में से एक ने उस से कहा,
"मुबारक है वह जो अल्लाह की बादशाही में खाना
खाए।"

16 ईसा ने जवाब में कहा, "किसी आदमी ने एक
बड़ी ज़ियाफ़त का इन्तिज़ाम किया। इस के लिए उस
ने बहुत से लोगों को दावत दी। 17 जब ज़ियाफ़त का
वक़्त आया तो उस ने अपने नौकर को मेहमानों को
इत्तिला देने के लिए भेजा कि 'आएँ, सब कुछ तय्यार
है।' 18 लेकिन वह सब के सब माज़रत चाहने लगे।
पहले ने कहा, 'मैं ने खेत ख़रीदा है और अब ज़रूरी
है कि निकल कर उस का मुआइना करूँ। मैं माज़रत
चाहता हूँ।' 19 दूसरे ने कहा, 'मैं ने बैलों के पाँच जोड़े
ख़रीदे हैं। अब मैं उन्हें आज़माने जा रहा हूँ। मैं माज़रत
चाहता हूँ।' 20 तीसरे ने कहा, 'मैं ने शादी की है, इस
लिए नहीं आ सकता।'

21 नौकर ने वापस आ कर मालिक को सब कुछ
बताया। वह ग़ुस्से हो कर नौकर से कहने लगा, 'जा,
सीधे शहर की सड़कों और गलियों में जा कर वहाँ
के ग़रीबों, लंगड़ों, अंधों और मफ़्लूजों को ले आ।'
नौकर ने ऐसा ही किया। 22 फिर वापस आ कर उस
ने मालिक को इत्तिला दी, 'जनाब, जो कुछ आप
ने कहा था पूरा हो चुका है। लेकिन अब भी मज़ीद
लोगों के लिए गुन्जाइश है।' 23 मालिक ने उस से
कहा, फिर शहर से निकल कर दीहात की सड़कों
पर और बाड़ों के पास जा। जो भी मिल जाए उसे
हमारी ख़ुशी में शरीक होने पर मज्बूर कर ताकि मेरा
घर भर जाए। 24 क्यूँकि मैं तुम को बताता हूँ कि जिन
को पहले दावत दी गई थी उन में से कोई भी मेरी
ज़ियाफ़त में शरीक न होगा।"

शागिर्द होने की क़ीमत

25 एक बड़ा हुजूम ईसा के साथ चल रहा था। उन
की तरफ़ मुड़ कर उस ने कहा, 26 "अगर कोई मेरे
पास आ कर अपने बाप, माँ, बीवी, बच्चों, भाइयों,
बहनों बल्कि अपने आप से भी दुश्मनी न रखे तो
वह मेरा शागिर्द नहीं हो सकता। 27 और जो अपनी
सलीब उठा कर मेरे पीछे न हो ले वह मेरा शागिर्द
नहीं हो सकता।

28 अगर तुम में से कोई बुर्ज तामीर करना चाहे तो
क्या वह पहले बैठ कर पूरे अख़्राजात का अन्दाज़ा
नहीं लगाएगा ताकि मालूम हो जाए कि वह उसे
तक्मील तक पहुँचा सकेगा या नहीं? 29 वर्ना ख़तरा
है कि उस की बुन्याद डालने के बाद पैसे ख़त्म हो
जाएँ और वह आगे कुछ न बना सके। फिर जो कोई
भी देखेगा वह उस का मज़ाक़ उड़ा कर 30 कहेगा,

‘उस ने इमारत को शुरू तो किया, लेकिन अब उसे
मुकम्मल नहीं कर पाया।’
31 या अगर कोई बादशाह किसी दूसरे बादशाह के
साथ जंग के लिए निकले तो क्या वह पहले बैठ
कर अन्दाज़ा नहीं लगाएगा कि वह अपने दस हज़ार
फ़ौजियों से उन बीस हज़ार फ़ौजियों पर ग़ालिब आ
सकता है जो उस से लड़ने आ रहे हैं? 32 अगर वह
इस नतीजे पर पहुँचे कि ग़ालिब नहीं आ सकता तो
वह सुलह करने के लिए अपने नुमाइन्दे दुश्मन के
पास भेजेगा जब वह अभी दूर ही हो। 33 इसी तरह
तुम में से जो भी अपना सब कुछ न छोड़े वह मेरा
शागिर्द नहीं हो सकता।

बेकार नमक

34 नमक अच्छी चीज़ है। लेकिन अगर उस का
ज़ाइक़ा जाता रहे तो फिर उसे क्यूँकर दुबारा नमकीन
किया जा सकता है? 35 न वह ज़मीन के लिए मुफ़ीद
है, न खाद के लिए बल्कि उसे निकाल कर बाहर
फैंका जाएगा। जो सुन सकता है वह सुन ले।”

खोई हुई भेड़

15 1 अब ऐसा था कि तमाम टैक्स लेने वाले
और गुनाहगार ईसा की बातें सुनने के लिए
उस के पास आते थे। 2 यह देख कर फ़रीसी और
शरीअत के आलिम बुड़बुड़ाने लगे, “यह आदमी
गुनाहगारों को ख़ुशआमदीद कह कर उन के साथ
खाना खाता है।” 3 इस पर ईसा ने उन्हें यह तम्सील
सुनाई,
4 “फ़र्ज़ करो कि तुम में से किसी की सौ भेड़ें
हैं। लेकिन एक गुम हो जाती है। अब मालिक क्या
करेगा? क्या वह बाक़ी 99 भेड़ें खुले मैदान में छोड़
कर गुमशुदा भेड़ को ढूँडने नहीं जाएगा? ज़रूर
जाएगा, बल्कि जब तक उसे वह भेड़ मिल न जाए
वह उस की तलाश में रहेगा। 5 फिर वह ख़ुश हो कर
उसे अपने कंधों पर उठा लेगा। 6 यूँ चलते चलते वह
अपने घर पहुँच जाएगा और वहाँ अपने दोस्तों और
हमसायों को बुला कर उन से कहेगा, ‘मेरे साथ ख़ुशी
मनाओ! क्यूँकि मुझे अपनी खोई हुई भेड़ मिल गई
है।’ 7 मैं तुम को बताता हूँ कि आसमान पर बिलकुल
इसी तरह ख़ुशी मनाई जाएगी जब एक ही गुनाहगार
तौबा करेगा। और यह ख़ुशी उस ख़ुशी की निस्बत
ज़्यादा होगी जो उन 99 अफ़राद के बाइस मनाई
जाएगी जिन्हें तौबा करने की ज़रूरत ही नहीं थी।

गुमशुदा सिक्का

8 या फ़र्ज़ करो कि किसी औरत के पास दस सिक्के
हों लेकिन एक सिक्का गुम हो जाए। अब औरत क्या
करेगी? क्या वह चराग़ जला कर और घर में झाड़ू
दे दे कर बड़ी एहतियात से सिक्के को तलाश नहीं
करेगी? ज़रूर करेगी, बल्कि वह उस वक़्त तक
ढूँडती रहेगी जब तक उसे सिक्का मिल न जाए। 9 जब
उसे सिक्का मिल जाएगा तो वह अपनी सहेलियों और
हमसायों को बुला कर उन से कहेगी, ‘मेरे साथ ख़ुशी
मनाओ! क्यूँकि मुझे अपना गुमशुदा सिक्का मिल गया
है।’ 10 मैं तुम को बताता हूँ कि बिलकुल इसी तरह
अल्लाह के फ़रिश्तों के सामने ख़ुशी मनाई जाती है
जब एक भी गुनाहगार तौबा करता है।”

गुमशुदा बेटा

11 ईसा ने अपनी बात जारी रखी। “किसी आदमी
के दो बेटे थे। 12 इन में से छोटे ने बाप से कहा, ‘ऐ
बाप, मीरास का मेरा हिस्सा दे दें।’ इस पर बाप ने
दोनों में अपनी मिलकियत तक़्सीम कर दी। 13 थोड़े
दिनों के बाद छोटा बेटा अपना सारा सामान समेट
कर अपने साथ किसी दूरदराज़ मुल्क में ले गया।
वहाँ उस ने अय्याशी में अपना पूरा माल-ओ-मता
उड़ा दिया। 14 सब कुछ ज़ाए हो गया तो उस मुल्क
में सख़्त काल पड़ा। अब वह ज़रूरतमन्द होने लगा।
15 नतीजे में वह उस मुल्क के किसी बाशिन्दे के
हाँ जा पड़ा जिस ने उसे सूअरों को चराने के लिए
अपने खेतों में भेज दिया। 16 वहाँ वह अपना पेट उन
फलियों से भरने की शदीद ख़्वाहिश रखता था जो

सूअर खाते थे, लेकिन उसे इस की भी इजाज़त न
मिली। 17 फिर वह होश में आया। वह कहने लगा, मेरे
बाप के कितने मज़दूरों को कस्रत से खाना मिलता
है जबकि मैं यहाँ भूका मर रहा हूँ। 18 मैं उठ कर
अपने बाप के पास वापस चला जाऊँगा और उस से
कहूँगा, 'ऐ बाप, मैं ने आसमान का और आप का
गुनाह किया है। 19 अब मैं इस लाइक़ नहीं रहा कि
आप का बेटा कहलाऊँ। मेहरबानी करके मुझे अपने
मज़दूरों में रख लें।' 20 फिर वह उठ कर अपने बाप
के पास वापस चला गया।

लेकिन वह घर से अभी दूर ही था कि उस के बाप
ने उसे देख लिया। उसे तरस आया और वह भाग
कर बेटे के पास आया और गले लगा कर उसे बोसा
दिया। 21 बेटे ने कहा, 'ऐ बाप, मैं ने आसमान का और
आप का गुनाह किया है। अब मैं इस लाइक़ नहीं रहा
कि आप का बेटा कहलाऊँ।' 22 लेकिन बाप ने अपने
नौकरों को बुलाया और कहा, 'जल्दी करो, बेहतरीन
सूट ला कर इसे पहनाओ। इस के हाथ में अंगूठी और
पाँओ में जूते पहना दो। 23 फिर मोटा-ताज़ा बछड़ा ला
कर उसे ज़बह करो ताकि हम खाएँ और ख़ुशी मनाएँ,
24 क्यूँकि यह मेरा बेटा मुर्दा था अब ज़िन्दा हो गया
है, गुम हो गया था अब मिल गया है।' इस पर वह
ख़ुशी मनाने लगे।

25 इस दौरान बाप का बड़ा बेटा खेत में था। अब
वह घर लौटा। जब वह घर के क़रीब पहुँचा तो अन्दर
से मौसीक़ी और नाचने की आवाज़ें सुनाई दीं। 26 उस
ने किसी नौकर को बुला कर पूछा, 'यह क्या हो
रहा है?' 27 नौकर ने जवाब दिया, 'आप का भाई आ
गया है और आप के बाप ने मोटा-ताज़ा बछड़ा ज़बह
करवाया है, क्यूँकि उसे अपना बेटा सहीह-सलामत
वापस मिल गया है।'

28 यह सुन कर बड़ा बेटा ग़ुस्से हुआ और अन्दर
जाने से इन्कार कर दिया। फिर बाप घर से निकल
कर उसे समझाने लगा। 29 लेकिन उस ने जवाब में
अपने बाप से कहा, 'देखें, मैं ने इतने साल आप की
ख़िदमत में सख़्त मेहनत-मशक़्क़त की है और एक
दफ़ा भी आप की मर्ज़ी की ख़िलाफ़वरज़ी नहीं की।
तो भी आप ने मुझे इस पूरे अर्से में एक छोटा बकरा
भी नहीं दिया कि उसे ज़बह करके अपने दोस्तों के
साथ ज़ियाफ़त करता। 30 लेकिन जूँ ही आप का यह
बेटा आया जिस ने आप की दौलत कस्बियों में उड़ा
दी, आप ने उस के लिए मोटा-ताज़ा बछड़ा ज़बह
करवाया।' 31 बाप ने जवाब दिया, 'बेटा, आप तो
हर वक़्त मेरे पास रहे हैं, और जो कुछ मेरा है वह
आप ही का है। 32 लेकिन अब ज़रूरी था कि हम
जश्न मनाएँ और ख़ुश हों। क्यूँकि आप का यह भाई
जो मुर्दा था अब ज़िन्दा हो गया है, जो गुम हो गया
था अब मिल गया है'।"

चालाक मुलाज़िम

16 1 ईसा ने शागिर्दों से कहा, "किसी अमीर
आदमी ने एक मुलाज़िम रखा था जो उस
की जायदाद की देख-भाल करता था। ऐसा हुआ कि
एक दिन उस पर इल्ज़ाम लगाया गया कि वह अपने
मालिक की दौलत ज़ाए कर रहा है। 2 मालिक ने
उसे बुला कर कहा, 'यह क्या है जो मैं तेरे बारे में
सुनता हूँ? अपनी तमाम ज़िम्मादारियों का हिसाब दे,
क्यूँकि मैं तुझे बर्ख़ास्त कर दूँगा।' 3 मुलाज़िम ने दिल
में कहा, 'अब मैं क्या करूँ जबकि मेरा मालिक यह
ज़िम्मादारी मुझ से छीन लेगा? खुदाई जैसा सख़्त
काम मुझ से नहीं होता और भीक माँगने से शर्म
आती है। 4 हाँ, मैं जानता हूँ कि क्या करूँ ताकि
लोग मुझे बर्ख़ास्त किए जाने के बाद अपने घरों में
ख़ुशआमदीद कहें।'

5 यह कह कर उस ने अपने मालिक के तमाम
क़र्ज़दारों को बुलाया। पहले से उस ने पूछा, 'तुम्हारा
क़र्ज़ा कितना है?' 6 उस ने जवाब दिया, 'मुझे मालिक
को ज़ैतून के तेल के सौ कनस्तर वापस करने हैं।'
मुलाज़िम ने कहा, 'अपना बिल ले लो और बैठ कर
जल्दी से सौ कनस्तर पचास में बदल लो।' 7 दूसरे
से उस ने पूछा, 'तुम्हारा कितना क़र्ज़ा है?' उस ने
जवाब दिया, 'मुझे गन्दुम की हज़ार बोरियाँ वापस

करनी हैं।' मुलाज़िम ने कहा, 'अपना बिल ले लो
और हज़ार के बदले आठ सौ लिख लो।'
8 यह देख कर मालिक ने बेईमान मुलाज़िम की
तारीफ़ की कि उस ने अक़्ल से काम लिया है।
क्यूँकि इस दुनिया के फ़र्ज़न्द अपनी नस्ल के लोगों
से निपटने में नूर के फ़र्ज़न्दों से ज़्यादा होश्यार होते
हैं।
9 मैं तुम को बताता हूँ कि दुनिया की नारास्त दौलत
से अपने लिए दोस्त बना लो ताकि जब यह ख़त्म
हो जाए तो लोग तुम को अबदी रिहाइशगाहों में
ख़ुशआमदीद कहें। 10 जो थोड़े में वफ़ादार है वह
ज़्यादा में भी वफ़ादार होगा। और जो थोड़े में बेईमान
है वह ज़्यादा में भी बेईमानी करेगा। 11 अगर तुम
दुनिया की नारास्त दौलत को सँभालने में वफ़ादार न
रहे तो फिर कौन हक़ीक़ी दौलत तुम्हारे सपुर्द करेगा?
12 और अगर तुम ने दूसरों की दौलत सँभालने में
बेईमानी दिखाई है तो फिर कौन तुम को तुम्हारे ज़ाती
इस्तेमाल के लिए कुछ देगा?
13 कोई भी ग़ुलाम दो मालिकों की ख़िदमत नहीं
कर सकता। या तो वह एक से नफ़रत करके दूसरे से
मुहब्बत रखेगा, या एक से लिपट कर दूसरे को हक़ीर
जानेगा। तुम एक ही वक़्त में अल्लाह और दौलत की
ख़िदमत नहीं कर सकते।"

ईसा की चन्द कहावतें

14 फ़रीसियों ने यह सब कुछ सुना तो वह उस का
मज़ाक़ उड़ाने लगे, क्यूँकि वह लालची थे। 15 उस
ने उन से कहा, "तुम ही वह हो जो अपने आप
को लोगों के सामने रास्तबाज़ क़रार देते हो, लेकिन
अल्लाह तुम्हारे दिलों से वाक़िफ़ है। क्यूँकि लोग जिस
चीज़ की बहुत क़दर करते हैं वह अल्लाह के नज़्दीक
मकरूह है।
16 यहया के आने तक तुम्हारे राहनुमा मूसा की
शरीअत और नबियों के पैग़ामात थे। लेकिन अब
अल्लाह की बादशाही की ख़ुशख़बरी का एलान किया
जा रहा है और तमाम लोग ज़बरदस्ती इस में दाख़िल
हो रहे हैं। 17 लेकिन इस का यह मतलब नहीं कि
शरीअत मन्सूख़ हो गई है बल्कि आसमान-ओ-ज़मीन
जाते रहेंगे, लेकिन शरीअत की ज़ेर ज़बर तक कोई
भी बात नहीं बदलेगी।
18 चुनाँचे जो आदमी अपनी बीवी को तलाक़ दे
कर किसी और से शादी करे वह ज़िना करता है।
इसी तरह जो किसी तलाकशुदा औरत से शादी करे
वह भी ज़िना करता है।

अमीर आदमी और लाज़र

19 एक अमीर आदमी का ज़िक्र है जो अर्ग़वानी रंग
के कपड़े और नफ़ीस कतान पहनता और हर रोज़
ऐश-ओ-इश्रत में गुज़ारता था। 20 अमीर के गेट पर
एक ग़रीब आदमी पड़ा था जिस के पूरे जिस्म पर
नासूर थे। उस का नाम लाज़र था 21 और उस की
बस एक ही ख़्वाहिश थी कि वह अमीर की मेज़ से
गिरे हुए टुकड़े खा कर सेर हो जाए। कुत्ते उस के पास
आ कर उस के नासूर चाटते थे।
22 फिर ऐसा हुआ कि ग़रीब आदमी मर गया।
फ़रिश्तों ने उसे उठा कर इब्राहीम की गोद में बिठा
दिया। अमीर आदमी भी फ़ौत हुआ और दफ़नाया
गया। 23 वह जहन्नुम में पहुँचा। अज़ाब की हालत में
उस ने अपनी नज़र उठाई तो दूर से इब्राहीम और
उस की गोद में लाज़र को देखा। 24 वह पुकार उठा,
'ऐ मेरे बाप इब्राहीम, मुझ पर रहम करें। मेहरबानी
करके लाज़र को मेरे पास भेज दें ताकि वह अपनी
उंगली को पानी में डुबो कर मेरी ज़बान को ठंडा करे,
क्यूँकि मैं इस आग में तड़पता हूँ।'
25 लेकिन इब्राहीम ने जवाब दिया, 'बेटा, याद रख
कि तुझे अपनी ज़िन्दगी में बेहतरीन चीज़ें मिल चुकी
हैं जबकि लाज़र को बदतरीन चीज़ें। लेकिन अब
उसे आराम और तसल्ली मिल गई है जबकि तुझे
अज़ियत। 26 नीज़, हमारे और तुम्हारे दरमियान एक
वसी ख़लीज क़ाइम है। अगर कोई चाहे भी तो उसे
पार करके यहाँ से तुम्हारे पास नहीं जा सकता, न
वहाँ से कोई यहाँ आ सकता है।' 27 अमीर आदमी

ने कहा, ‘मेरे बाप, फिर मेरी एक और गुज़ारिश
है, मेहरबानी करके लाज़र को मेरे वालिद के घर
भेज दें। 28 मेरे पाँच भाई हैं। वह वहाँ जा कर उन्हें
आगाह करे, ऐसा न हो कि उन का अन्जाम भी यह
अज़ियतनाक मक़ाम हो।’
29 लेकिन इब्राहीम ने जवाब दिया, ‘उन के पास
मूसा की तौरेत और नबियों के सहीफ़े तो हैं। वह
उन की सुनें।’ 30 अमीर ने अर्ज़ की, ‘नहीं, मेरे बाप
इब्राहीम, अगर कोई मुर्दों में से उन के पास जाए
तो फिर वह ज़रूर तौबा करेंगे।’ 31 इब्राहीम ने कहा,
‘अगर वह मूसा और नबियों की नहीं सुनते तो वह
उस वक़्त भी क़ाइल नहीं होंगे जब कोई मुर्दों में से
जी उठ कर उन के पास जाएगा’।”

गुनाह

17 1 ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा,
“आज़माइशों को तो आना ही आना है,
लेकिन उस पर अफ़्सोस जिस की मारिफ़त वह
आएँ। 2 अगर वह इन छोटों में से किसी को गुनाह
करने पर उकसाए तो उस के लिए बेहतर है कि उस
के गले में बड़ी चक्की का पाट बांधा जाए और उसे
समुन्दर में फैंक दिया जाए। 3 ख़बरदार रहो!
अगर तुम्हारा भाई गुनाह करे तो उसे समझाओ।
अगर वह इस पर तौबा करे तो उसे मुआफ़ कर दो।
4 अब फ़र्ज़ करो कि वह एक दिन के अन्दर सात बार
तुम्हारा गुनाह करे, लेकिन हर दफ़ा वापस आ कर
तौबा का इज़हार करे, तो भी उसे हर दफ़ा मुआफ़
कर दो।”

ईमान

5 रसूलों ने ख़ुदावन्द से कहा, “हमारे ईमान को
बढ़ा दें।”
6 ख़ुदावन्द ने जवाब दिया, “अगर तुम्हारा ईमान
राई के दाने जैसा छोटा भी हो तो तुम शहतूत के इस
दरख़्त को कह सकते हो, ‘उखड़ कर समुन्दर में जा
लग’ तो वह तुम्हारी बात पर अमल करेगा।

ग़ुलाम का फ़र्ज़

7 फ़र्ज़ करो कि तुम में से किसी ने हल चलाने या
जानवर चराने के लिए एक ग़ुलाम रखा है। जब यह
ग़ुलाम खेत से घर आएगा तो क्या उस का मालिक
कहेगा, ‘इधर आओ, खाने के लिए बैठ जाओ?’
8 हरगिज़ नहीं, बल्कि वह यह कहेगा, ‘मेरा खाना
तय्यार करो, ड्यूटी के कपड़े पहन कर मेरी ख़िदमत
करो जब तक मैं खा पी न लूँ। इस के बाद तुम भी
खा और पी सकोगे।’ 9 और क्या वह अपने ग़ुलाम
की उस ख़िदमत का शुक्रिया अदा करेगा जो उस ने
उसे करने को कहा था? हरगिज़ नहीं! 10 इसी तरह
जब तुम सब कुछ जो तुम्हें करने को कहा गया है कर
चुको तब तुम को यह कहना चाहिए, ‘हम नालाइक़
नौकर हैं। हम ने सिर्फ़ अपना फ़र्ज़ अदा किया है’।”

कोढ़ के दस मरीज़ों की शिफ़ा

11 ऐसा हुआ कि यरूशलम की तरफ़ सफ़र करते
करते ईसा सामरिया और गलील में से गुज़रा। 12 एक
दिन वह किसी गाँव में दाख़िल हो रहा था कि कोढ़
के दस मरीज़ उस को मिलने आए। वह कुछ फ़ासिले
पर खड़े हो कर 13 ऊँची आवाज़ से कहने लगे, “ऐ
ईसा, उस्ताद, हम पर रहम करें।”
14 उस ने उन्हें देखा तो कहा, “जाओ, अपने आप
को इमामों को दिखाओ ताकि वह तुम्हारा मुआइना
करें।”
और ऐसा हुआ कि वह चलते चलते अपनी बीमारी
से पाक-साफ़ हो गए। 15 उन में से एक ने जब देखा
कि शिफ़ा मिल गई है तो वह मुड़ कर ऊँची आवाज़ से
अल्लाह की तम्जीद करने लगा, 16 और ईसा के सामने
मुँह के बल गिर कर शुक्रिया अदा किया। यह आदमी
सामरिया का बाशिन्दा था। 17 ईसा ने पूछा, “क्या
दस के दस आदमी अपनी बीमारी से पाक-साफ़ नहीं
हुए? बाक़ी नौ कहाँ हैं? 18 क्या इस ग़ैरमुल्की के
इलावा कोई और वापस आ कर अल्लाह की तम्जीद
करने के लिए तय्यार नहीं था?” 19 फिर उस ने उस

से कहा, “उठ कर चला जा। तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया है।”

अल्लाह की बादशाही कब आएगी

20 कुछ फ़रीसियों ने ईसा से पूछा, “अल्लाह की बादशाही कब आएगी?” उस ने जवाब दिया, “अल्लाह की बादशाही यूँ नहीं आ रही कि उसे ज़ाहिरी निशानों से पहचाना जाए। 21 लोग यह भी नहीं कह सकेंगे, ‘वह यहाँ है’ या ‘वह वहाँ है’ क्यूँकि अल्लाह की बादशाही तुम्हारे दरमियान है।”

22 फिर उस ने अपने शागिर्दों से कहा, “ऐसे दिन आएँगे कि तुम इब्न-ए-आदम का कम अज़ कम एक दिन देखने की तमन्ना करोगे, लेकिन नहीं देखोगे। 23 लोग तुम को बताएँगे, ‘वह वहाँ है’ या ‘वह यहाँ है।’ लेकिन मत जाना और उन के पीछे न लगना। 24 क्यूँकि जब इब्न-ए-आदम का दिन आएगा तो वह बिजली की मानिन्द होगा जिस की चमक आसमान को एक सिरे से ले कर दूसरे सिरे तक रौशन कर देती है। 25 लेकिन पहले लाज़िम है कि वह बहुत दुख उठाए और इस नस्ल के हाथों रद्द किया जाए। 26 जब इब्न-ए-आदम का वक़्त आएगा तो हालात नूह के दिनों जैसे होंगे। 27 लोग उस दिन तक खाने-पीने और शादी करने करवाने में लगे रहे जब तक नूह कश्ती में दाख़िल न हो गया। फिर सैलाब ने आ कर उन सब को तबाह कर दिया। 28 बिलकुल यही कुछ लूत के अय्याम में हुआ। लोग खाने-पीने, ख़रीद-ओ-फ़रोख़्त, काश्तकारी और तामीर के काम में लगे रहे। 29 लेकिन जब लूत सदूम को छोड़ कर निकला तो आग और गंधक ने आसमान से बरस कर उन सब को तबाह कर दिया। 30 इब्न-ए-आदम के ज़ुहूर के वक़्त ऐसे ही हालात होंगे।

31 जो शख़्स उस दिन छत पर हो वह घर का सामान साथ ले जाने के लिए नीचे न उतरे। इसी तरह जो खेत में हो वह अपने पीछे पड़ी चीज़ों को साथ ले जाने के लिए घर न लौटे। 32 लूत की बीवी को याद रखो। 33 जो अपनी जान बचाने की कोशिश करेगा वह उसे खो देगा, और जो अपनी जान खो देगा वही उसे बचाए रखेगा। 34 मैं तुम को बताता हूँ कि उस रात दो अफ़राद एक बिस्तर में सोए होंगे, एक को साथ ले लिया जाएगा जबकि दूसरे को पीछे छोड़ दिया जाएगा। 35 दो ख़वातीन चक्की पर गन्दुम पीस रही होंगी, एक को साथ ले लिया जाएगा जबकि दूसरी को पीछे छोड़ दिया जाएगा। 36 [दो अफ़राद खेत में होंगे, एक को साथ ले लिया जाएगा जबकि दूसरे को पीछे छोड़ दिया जाएगा।]”

37 उन्हों ने पूछा, “ख़ुदावन्द, यह कहाँ होगा?” उस ने जवाब दिया, “जहाँ लाश पड़ी हो वहाँ गिद्ध जमा हो जाएंगे।”

बेवा और जज की तम्सील

18 1 फिर ईसा ने उन्हें एक तम्सील सुनाई जो मुसलसल दुआ करने और हिम्मत न हारने की ज़रूरत को ज़ाहिर करती है। 2 उस ने कहा, “किसी शहर में एक जज रहता था जो न ख़ुदा का ख़ौफ़ मानता, न किसी इन्सान का लिहाज़ करता था। 3 अब उस शहर में एक बेवा भी थी जो यह कह कर उस के पास आती रही कि ‘मेरे मुख़ालिफ़ को जीतने न दें बल्कि मेरा इन्साफ़ करें।’ 4 कुछ देर के लिए जज ने इन्कार किया। लेकिन फिर वह दिल में कहने लगा, ‘बेशक मैं ख़ुदा का ख़ौफ़ नहीं मानता, न लोगों की पर्वा करता हूँ, 5 लेकिन यह बेवा मुझे बार बार तंग कर रही है। इस लिए मैं उस का इन्साफ़ करूँगा। ऐसा न हो कि आख़िरकार वह आ कर मेरे मुँह पर थप्पड़ मारे’।”

6 ख़ुदावन्द ने बात जारी रखी। “इस पर ध्यान दो जो बेइन्साफ़ जज ने कहा। 7 अगर उस ने आख़िरकार इन्साफ़ किया तो क्या अल्लाह अपने चुने हुए लोगों का इन्साफ़ नहीं करेगा जो दिन रात उसे मदद के लिए पुकारते हैं? क्या वह उन की बात मुल्तवी करता रहेगा? 8 हरगिज़ नहीं! मैं तुम को बताता हूँ कि वह जल्दी से उन का इन्साफ़ करेगा। लेकिन क्या इब्न-ए-आदम जब दुनिया में आएगा तो ईमान देख पाएगा?”

फ़रीसी और टैक्स लेने वाले की तम्सील

9 बाज़ लोग मौजूद थे जो अपनी रास्तबाज़ी पर
भरोसा रखते और दूसरों को हक़ीर जानते थे। उन्हें
ईसा ने यह तम्सील सुनाई, 10 "दो आदमी बैत-उल-
मुक़द्दस में दुआ करने आए। एक फ़रीसी था और
दूसरा टैक्स लेने वाला।
11 फ़रीसी खड़ा हो कर यह दुआ करने लगा, 'ऐ
ख़ुदा, मैं तेरा शुक्र करता हूँ कि मैं बाक़ी लोगों की
तरह नहीं हूँ। न मैं डाकू हूँ, न बेइन्साफ़, न ज़िनाकार।
मैं इस टैक्स लेने वाले की मानिन्द भी नहीं हूँ। 12 मैं
हफ़्ते में दो मर्तबा रोज़ा रखता हूँ और तमाम आम्दनी
का दसवाँ हिस्सा तेरे लिए मख़्सूस करता हूँ।'
13 लेकिन टैक्स लेने वाला दूर ही खड़ा रहा। उस
ने अपनी आँखें आसमान की तरफ़ उठाने तक की
जुरअत न की बल्कि अपनी छाती पीट पीट कर
कहने लगा, 'ऐ ख़ुदा, मुझ गुनाहगार पर रहम कर!'
14 मैं तुम को बताता हूँ कि जब दोनों अपने अपने
घर लौटे तो फ़रीसी नहीं बल्कि यह आदमी अल्लाह
के नज़्दीक रास्तबाज़ ठहरा। क्यूँकि जो भी अपने
आप को सरफ़राज़ करे उसे पस्त किया जाएगा और
जो अपने आप को पस्त करे उसे सरफ़राज़ किया
जाएगा।"

ईसा छोटे बच्चों को प्यार करता है

15 एक दिन लोग अपने छोटे बच्चों को भी ईसा के
पास लाए ताकि वह उन्हें छुए। यह देख कर शागिर्दों
ने उन को मलामत की। 16 लेकिन ईसा ने उन्हें अपने
पास बुला कर कहा, "बच्चों को मेरे पास आने दो
और उन्हें न रोको, क्यूँकि अल्लाह की बादशाही इन
जैसे लोगों को हासिल है। 17 मैं तुम को सच बताता
हूँ, जो अल्लाह की बादशाही को बच्चे की तरह क़बूल
न करे वह उस में दाख़िल नहीं होगा।"

अमीर मुश्किल से अल्लाह की बादशाही में दाख़िल हो सकते हैं

18 किसी राहनुमा ने उस से पूछा, "नेक उस्ताद, मैं
क्या करूँ ताकि मीरास में अबदी ज़िन्दगी पाऊँ?"
19 ईसा ने जवाब दिया, "तू मुझे नेक क्यूँ कहता है?
कोई नेक नहीं सिवाए एक के और वह है अल्लाह।
20 तू शरीअत के अह्काम से तो वाक़िफ़ है कि
ज़िना न करना, क़त्ल न करना, चोरी न करना, झूटी
गवाही न देना, अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त
करना।"
21 आदमी ने जवाब दिया, "मैं ने जवानी से आज
तक इन तमाम अह्काम की पैरवी की है।"
22 यह सुन कर ईसा ने कहा, "एक काम अब तक
रह गया है। अपनी पूरी जायदाद फ़रोख़्त करके पैसे
ग़रीबों में तक़्सीम कर दे। फिर तेरे लिए आसमान
पर ख़ज़ाना जमा हो जाएगा। इस के बाद आ कर मेरे
पीछे हो ले।" 23 यह सुन कर आदमी को बहुत दुख
हुआ, क्यूँकि वह निहायत दौलतमन्द था।
24 यह देख कर ईसा ने कहा, "दौलतमन्दों के
लिए अल्लाह की बादशाही में दाख़िल होना कितना
मुश्किल है! 25 अमीर के अल्लाह की बादशाही में
दाख़िल होने की निस्बत यह ज़्यादा आसान है कि
ऊँट सूई के नाके में से गुज़र जाए।"
26 यह बात सुन कर सुनने वालों ने पूछा, "फिर
किस को नजात मिल सकती है?"
27 ईसा ने जवाब दिया, "जो इन्सान के लिए
नामुमकिन है वह अल्लाह के लिए मुमकिन है।"
28 पतरस ने उस से कहा, "हम तो अपना सब कुछ
छोड़ कर आप के पीछे हो लिए हैं।"
29 ईसा ने जवाब दिया, "मैं तुम को सच बताता हूँ
कि जिस ने भी अल्लाह की बादशाही की ख़ातिर अपने
घर, बीवी, भाइयों, वालिदैन या बच्चों को छोड़ दिया
है 30 उसे इस ज़माने में कई गुना ज़्यादा और आने
वाले ज़माने में अबदी ज़िन्दगी मिलेगी।"

ईसा की मौत की तीसरी पेशगोई

31 ईसा शागिर्दों को एक तरफ़ ले जा कर उन से
कहने लगा, “सुनो, हम यरूशलम की तरफ़ बढ़ रहे
हैं। वहाँ सब कुछ पूरा हो जाएगा जो नबियों की
मारिफ़त इब्न-ए-आदम के बारे में लिखा गया है।
32 उसे ग़ैरयहूदियों के हवाले कर दिया जाएगा जो
उस का मज़ाक़ उड़ाएँगे, उस की बेइज़्ज़ती करेंगे,
उस पर थूकेंगे, 33 उस को कोड़े मारेंगे और उसे क़त्ल
करेंगे। लेकिन तीसरे दिन वह जी उठेगा।”

34 लेकिन शागिर्दों की समझ में कुछ न आया। इस
बात का मतलब उन से छुपा रहा और वह न समझे
कि वह क्या कह रहा है।

अंधे की शिफ़ा

35 ईसा यरीहू के क़रीब पहुँचा। वहाँ रास्ते के
किनारे एक अंधा बैठा भीक माँग रहा था। 36 बहुत
से लोग उस के सामने से गुज़रने लगे तो उस ने यह
सुन कर पूछा कि क्या हो रहा है।

37 उन्हों ने कहा, “ईसा नासरी यहाँ से गुज़र रहा
है।”

38 अंधा चिल्लाने लगा, “ऐ ईसा इब्न-ए-दाऊद, मुझ
पर रहम करें।”

39 आगे चलने वालों ने उसे डाँट कर कहा,
“ख़ामोश!” लेकिन वह मज़ीद ऊँची आवाज़ से
पुकारता रहा, “ऐ इब्न-ए-दाऊद, मुझ पर रहम करें।”

40 ईसा रुक गया और हुक्म दिया, “उसे मेरे पास
लाओ।” जब वह क़रीब आया तो ईसा ने उस से
पूछा, 41 “तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिए करूँ?”

उस ने जवाब दिया, “ख़ुदावन्द, यह कि मैं देख
सकूँ।”

42 ईसा ने उस से कहा, “तो फिर देख! तेरे ईमान ने
तुझे बचा लिया है।”

43 जूँ ही उस ने यह कहा अंधे की आँखें बहाल हो
गईं और वह अल्लाह की तम्जीद करते हुए उस के
पीछे हो लिया। यह देख कर पूरे हुजूम ने अल्लाह को
जलाल दिया।

ईसा और ज़क्काई

19 1 फिर ईसा यरीहू में दाख़िल हुआ और उस
में से गुज़रने लगा। 2 उस शहर में एक अमीर
आदमी बनाम ज़क्काई रहता था जो टैक्स लेने वालों
का अफ़्सर था। 3 वह जानना चाहता था कि यह ईसा
कौन है, लेकिन पूरी कोशिश करने के बावुजूद उसे
देख न सका, क्यूँकि ईसा के इर्दगिर्द बड़ा हुजूम था
और ज़क्काई का क़द छोटा था। 4 इस लिए वह दौड़
कर आगे निकला और उसे देखने के लिए अन्जीर-
तूत [y]के दरख़्त पर चढ़ गया जो रास्ते में था। 5 जब
ईसा वहाँ पहुँचा तो उस ने नज़र उठा कर कहा,
“ज़क्काई, जल्दी से उतर आ, क्यूँकि आज मुझे तेरे
घर में ठहरना है।”

6 ज़क्काई फ़ौरन उतर आया और ख़ुशी से उस की
मेहमान-नवाज़ी की। 7 यह देख कर बाक़ी तमाम लोग
बुड़बुड़ाने लगे, “इस के घर में जा कर वह एक
गुनाहगार के मेहमान बन गए हैं।”

8 लेकिन ज़क्काई ने ख़ुदावन्द के सामने खड़े हो कर
कहा, “ख़ुदावन्द, मैं अपने माल का आधा हिस्सा
ग़रीबों को दे देता हूँ। और जिस से मैं ने नाजाइज़
तौर से कुछ लिया है उसे चार गुना वापस करता
हूँ।”

9 ईसा ने उस से कहा, “आज इस घराने को नजात
मिल गई है, इस लिए कि यह भी इब्राहीम का बेटा
है। 10 क्यूँकि इब्न-ए-आदम गुमशुदा को ढूँडने और
नजात देने के लिए आया है।”

---

[y]एक सायादार दरख़्त जिस में अन्जीर की तरह का ख़ुर्दनी फल लगता है। इस के फूल ज़र्द और आराइशी होते हैं। मिस्री तूत। जमीज़। ficus sycomorus।

पैसों में इज़ाफ़ा

11 अब ईसा यरूशलम के क़रीब आ चुका था,
इस लिए लोग अन्दाज़ा लगाने लगे कि अल्लाह की
बादशाही ज़ाहिर होने वाली है। इस के पेश-ए-नज़र
ईसा ने अपनी यह बातें सुनने वालों को एक तम्सील
सुनाई। 12 उस ने कहा, "एक नवाब किसी दूरदराज़
मुल्क को चला गया ताकि उसे बादशाह मुक़र्रर किया
जाए। फिर उसे वापस आना था। 13 रवाना होने से
पहले उस ने अपने नौकरों में से दस को बुला कर
उन्हें सोने का एक एक सिक्का दिया। साथ साथ उस
ने कहा, 'यह पैसे ले कर उस वक़्त तक कारोबार में
लगाओ जब तक मैं वापस न आऊँ।' 14 लेकिन उस
की रआया उस से नफ़रत रखती थी, इस लिए उस
ने उस के पीछे वफ़द भेज कर इत्तिला दी, 'हम नहीं
चाहते कि यह आदमी हमारा बादशाह बने।'

15 तो भी उसे बादशाह मुक़र्रर किया गया। इस के
बाद जब वापस आया तो उस ने उन नौकरों को
बुलाया जिन्हें उस ने पैसे दिए थे ताकि मालूम करे
कि उन्हों ने यह पैसे कारोबार में लगा कर कितना
इज़ाफ़ा किया है। 16 पहला नौकर आया। उस ने
कहा, 'जनाब, आप के एक सिक्के से दस हो गए हैं।'
17 मालिक ने कहा, 'शाबाश, अच्छे नौकर। तू थोड़े
में वफ़ादार रहा, इस लिए अब तुझे दस शहरों पर
इख़तियार मिलेगा।' 18 फिर दूसरा नौकर आया। उस
ने कहा, 'जनाब, आप के एक सिक्के से पाँच हो गए
हैं।' 19 मालिक ने उस से कहा, 'तुझे पाँच शहरों पर
इख़तियार मिलेगा।'

20 फिर एक और नौकर आ कर कहने लगा,
'जनाब, यह आप का सिक्का है। मैं ने इसे कपड़े में
लपेट कर महफ़ूज़ रखा, 21 क्यूँकि मैं आप से डरता
था, इस लिए कि आप सख़्त आदमी हैं। जो पैसे
आप ने नहीं लगाए उन्हें ले लेते हैं और जो बीज आप
ने नहीं बोया उस की फ़सल काटते हैं।' 22 मालिक
ने कहा, 'शरीर नौकर! मैं तेरे अपने अल्फ़ाज़ के
मुताबिक़ तेरी अदालत करूँगा। जब तू जानता था
कि मैं सख़्त आदमी हूँ, कि वह पैसे ले लेता हूँ जो
ख़ुद नहीं लगाए और वह फ़सल काटता हूँ जिस का
बीज नहीं बोया, 23 तो फिर तू ने मेरे पैसे बैंक में क्यूँ
न जमा कराए? अगर तू ऐसा करता तो वापसी पर
मुझे कम अज़ कम वह पैसे सूद समेत मिल जाते।'

24 यह कह कर वह हाज़िरीन से मुख़ातिब हुआ,
'यह सिक्का इस से ले कर उस नौकर को दे दो जिस
के पास दस सिक्के हैं।' 25 उन्हों ने एतिराज़ किया,
'जनाब, उस के पास तो पहले ही दस सिक्के हैं।'
26 उस ने जवाब दिया, 'मैं तुम्हें बताता हूँ कि हर
शख़्स जिस के पास कुछ है उसे और दिया जाएगा,
लेकिन जिस के पास कुछ नहीं है उस से वह भी
छीन लिया जाएगा जो उस के पास है। 27 अब उन
दुश्मनों को ले आओ जो नहीं चाहते थे कि मैं उन
का बादशाह बनूँ। उन्हें मेरे सामने फाँसी दे दो'।"

यरूशलम में ईसा का पुरजोश इस्तिक़्बाल

28 इन बातों के बाद ईसा दूसरों के आगे आगे
यरूशलम की तरफ़ बढ़ने लगा। 29 जब वह बैत-
फ़गे और बैत-अनियाह के क़रीब पहुँचा जो ज़ैतून
के पहाड़ पर थे तो उस ने दो शागिर्दों को अपने आगे
भेज कर 30 कहा, "सामने वाले गाँव में जाओ। वहाँ
तुम एक जवान गधा देखोगे। वह बंधा हुआ होगा
और अब तक कोई भी उस पर सवार नहीं हुआ है।
उसे खोल कर ले आओ। 31 अगर कोई पूछे कि गधे
को क्यूँ खोल रहे हो तो उसे बता देना कि ख़ुदावन्द
को इस की ज़रूरत है।"

32 दोनों शागिर्द गए तो देखा कि सब कुछ वैसा ही
है जैसा ईसा ने उन्हें बताया था। 33 जब वह जवान
गधे को खोलने लगे तो उस के मालिकों ने पूछा,
"तुम गधे को क्यूँ खोल रहे हो?"

34 उन्हों ने जवाब दिया, "ख़ुदावन्द को इस की
ज़रूरत है।" 35 वह उसे ईसा के पास ले आए, और
अपने कपड़े गधे पर रख कर उस को उस पर सवार
किया। 36 जब वह चल पड़ा तो लोगों ने उस के आगे
आगे रास्ते में अपने कपड़े बिछा दिए।

37 चलते चलते वह उस जगह के क़रीब पहुँचा जहाँ
रास्ता ज़ैतून के पहाड़ पर से उतरने लगता है। इस पर
शागिर्दों का पूरा हुजूम ख़ुशी के मारे ऊँची आवाज़ से
उन मोजिज़ों के लिए अल्लाह की तम्जीद करने लगा
जो उन्हों ने देखे थे,
38 "मुबारक है वह बादशाह
जो रब के नाम से आता है।
आसमान पर सलामती हो और बुलन्दियों पर
इज़्ज़त-ओ-जलाल।"
39 कुछ फ़रीसी भीड़ में थे। उन्हों ने ईसा से कहा,
"उस्ताद, अपने शागिर्दों को समझाएँ।"
40 उस ने जवाब दिया, "मैं तुम्हें बताता हूँ, अगर
यह चुप हो जाएँ तो पत्थर पुकार उठेंगे।"

ईसा शहर को देख कर रो पड़ता है

41 जब वह यरूशलम के क़रीब पहुँचा तो शहर को
देख कर रो पड़ा 42 और कहा, "काश तू भी इस दिन
जान लेती कि तेरी सलामती किस में है। लेकिन अब
यह बात तेरी आँखों से छुपी हुई है। 43 क्यूँकि तुझ
पर ऐसा वक़्त आएगा कि तेरे दुश्मन तेरे इर्दगिर्द बन्द
बांध कर तेरा मुहासरा करेंगे और यूँ तुझे चारों तरफ़
से घेर कर तंग करेंगे। 44 वह तुझे तेरे बच्चों समेत
ज़मीन पर पटकेंगे और तेरे अन्दर एक भी पत्थर दूसरे
पर नहीं छोड़ेंगे। और वजह यही होगी कि तू ने वह
वक़्त नहीं पहचाना जब अल्लाह ने तेरी नजात के लिए
तुझ पर नज़र की।"

ईसा बैत-उल-मुक़द्दस में जाता है

45 फिर ईसा बैत-उल-मुक़द्दस में जा कर उन्हें
निकालने लगा जो वहाँ क़ुर्बानियों के लिए दरकार
चीज़ें बेच रहे थे। उस ने कहा, 46 "कलाम-ए-मुक़द्दस
में लिखा है, 'मेरा घर दुआ का घर होगा' जबकि तुम
ने उसे डाकुओं के अड्डे में बदल दिया है।"
47 और वह रोज़ाना बैत-उल-मुक़द्दस में तालीम
देता रहा। लेकिन बैत-उल-मुक़द्दस के राहनुमा इमाम,
शरीअत के आलिम और अवामी राहनुमा उसे क़त्ल
करने के लिए कोशाँ रहे, 48 अलबत्ता उन्हें कोई
मौक़ा न मिला, क्यूँकि तमाम लोग ईसा की हर बात
सुन सुन कर उस से लिपटे रहते थे।

ईसा का इख़तियार

20 1 एक दिन जब वह बैत-उल-मुक़द्दस में
लोगों को तालीम दे रहा और अल्लाह की
ख़ुशख़बरी सुना रहा था तो राहनुमा इमाम, शरीअत
के उलमा और बुज़ुर्ग उस के पास आए। 2 उन्हों ने
कहा, "हमें बताएँ, आप यह किस इख़तियार से कर
रहे हैं? किस ने आप को यह इख़तियार दिया है?"
3 ईसा ने जवाब दिया, "मेरा भी तुम से एक सवाल
है। तुम मुझे बताओ कि 4 क्या यहया का बपतिस्मा
आसमानी था या इन्सानी?"
5 वह आपस में बहस करने लगे, "अगर हम कहें
'आसमानी' तो वह पूछेगा, 'तो फिर तुम उस पर
ईमान क्यूँ न लाए?' 6 लेकिन अगर हम कहें 'इन्सानी'
तो तमाम लोग हमें संगसार करेंगे, क्यूँकि वह तो
यक़ीन रखते हैं कि यहया नबी था।" 7 इस लिए उन्हों
ने जवाब दिया, "हम नहीं जानते कि वह कहाँ से
था।"
8 ईसा ने कहा, "तो फिर मैं भी तुम को नहीं बताता
कि मैं यह सब कुछ किस इख़तियार से कर रहा हूँ।"

अंगूर के बाग़ के मुज़ारेओं की बग़ावत

9 फिर ईसा लोगों को यह तम्सील सुनाने लगा,
"किसी आदमी ने अंगूर का एक बाग़ लगाया। फिर
वह उसे मुज़ारेओं के सपुर्द करके बहुत देर के लिए
बैरून-ए-मुल्क चला गया। 10 जब अंगूर पक गए तो
उस ने अपने नौकर को उन के पास भेज दिया ताकि
वह मालिक का हिस्सा वसूल करे। लेकिन मुज़ारेओं
ने उस की पिटाई करके उसे ख़ाली हाथ लौटा दिया।
11 इस पर मालिक ने एक और नौकर को उन के
पास भेजा। लेकिन मुज़ारेओं ने उसे भी मार मार कर
उस की बेइज़्ज़ती की और ख़ाली हाथ निकाल दिया।
12 फिर मालिक ने तीसरे नौकर को भेज दिया। उसे भी

उन्हों ने मार कर ज़ख़्मी कर दिया और निकाल दिया।
13 बाग़ के मालिक ने कहा, 'अब मैं क्या करूँ?
मैं अपने प्यारे बेटे को भेजूँगा, शायद वह उस का
लिहाज़ करें।' 14 लेकिन मालिक के बेटे को देख कर
मुज़ारे आपस में कहने लगे, 'यह ज़मीन का वारिस
है। आओ, हम इसे मार डालें। फिर इस की मीरास
हमारी ही होगी।' 15 उन्हों ने उसे बाग़ से बाहर फैंक
कर क़त्ल किया।"

ईसा ने पूछा, "अब बताओ, बाग़ का मालिक क्या
करेगा? 16 वह वहाँ जा कर मुज़ारेओं को हलाक
करेगा और बाग़ को दूसरों के सपुर्द कर देगा।"

यह सुन कर लोगों ने कहा, "ख़ुदा ऐसा कभी न
करे।"

17 ईसा ने उन पर नज़र डाल कर पूछा, "तो फिर
कलाम-ए-मुक़द्दस के इस हवाले का क्या मतलब है
कि

'जिस पत्थर को मकान बनाने वालों ने रद्द किया,
वह कोने का बुन्यादी पत्थर बन गया'?

18 जो इस पत्थर पर गिरेगा वह टुकड़े टुकड़े हो
जाएगा, जबकि जिस पर वह ख़ुद गिरेगा उसे पीस
डालेगा।"

क्या टैक्स देना जाइज़ है?

19 शरीअत के उलमा और राहनुमा इमामों ने उसी
वक़्त उसे पकड़ने की कोशिश की, क्यूँकि वह समझ
गए थे कि तम्सील में बयानशुदा मुज़ारे हम ही हैं।
लेकिन वह अवाम से डरते थे। 20 चुनाँचे वह उसे
पकड़ने का मौक़ा ढूँडते रहे। इस मक़सद के तहत
उन्हों ने उस के पास जासूस भेज दिए। यह लोग
अपने आप को दियानतदार ज़ाहिर करके ईसा के
पास आए ताकि उस की कोई बात पकड़ कर उसे
रोमी गवर्नर के हवाले कर सकें। 21 इन जासूसों ने
उस से पूछा, "उस्ताद, हम जानते हैं कि आप वही
कुछ बयान करते और सिखाते हैं जो सहीह है। आप
जानिबदार नहीं होते बल्कि दयानतदारी से अल्लाह की
राह की तालीम देते हैं। 22 अब हमें बताएँ कि क्या
रोमी शहन्शाह को टैक्स देना जाइज़ है या नाजाइज़?"

23 लेकिन ईसा ने उन की चालाकी भाँप ली और
कहा, 24 "मुझे चाँदी का एक रोमी सिक्का दिखाओ।
किस की सूरत और नाम इस पर कन्दा है?"

उन्हों ने जवाब दिया, "शहन्शाह का।"

25 उस ने कहा, "तो जो शहन्शाह का है शहन्शाह
को दो और जो अल्लाह का है अल्लाह को।"

26 यूँ वह अवाम के सामने उस की कोई बात
पकड़ने में नाकाम रहे। उस का जवाब सुन कर वह
हक्का-बक्का रह गए और मज़ीद कोई बात न कर सके।

क्या हम जी उठेंगे?

27 फिर कुछ सदूक़ी उस के पास आए। सदूक़ी
नहीं मानते कि रोज़-ए-क़ियामत मुर्दे जी उठेंगे। उन्हों
ने ईसा से एक सवाल किया, 28 "उस्ताद, मूसा ने
हमें हुक्म दिया कि अगर कोई शादीशुदा आदमी
बेऔलाद मर जाए और उस का भाई हो तो भाई का
फ़र्ज़ है कि वह बेवा से शादी करके अपने भाई के
लिए औलाद पैदा करे। 29 अब फ़र्ज़ करें कि सात भाई
थे। पहले ने शादी की, लेकिन बेऔलाद फ़ौत हुआ।
30 इस पर दूसरे ने उस से शादी की, लेकिन वह भी
बेऔलाद मर गया। 31 फिर तीसरे ने उस से शादी की।
यह सिलसिला सातवें भाई तक जारी रहा। यके बाद
दीगरे हर भाई बेवा से शादी करने के बाद मर गया।
32 आख़िर में बेवा भी फ़ौत हो गई। 33 अब बताएँ कि
क़ियामत के दिन वह किस की बीवी होगी? क्यूँकि
सात के सात भाइयों ने उस से शादी की थी।"

34 ईसा ने जवाब दिया, "इस ज़माने में लोग ब्याह-
शादी करते और कराते हैं। 35 लेकिन जिन्हें अल्लाह
आने वाले ज़माने में शरीक होने और मुर्दों में से जी
उठने के लाइक़ समझता है वह उस वक़्त शादी नहीं
करेंगे, न उन की शादी किसी से कराई जाएगी। 36 वह
मर भी नहीं सकेंगे, क्यूँकि वह फ़रिश्तों की मानिन्द
होंगे और क़ियामत के फ़र्ज़न्द होने के बाइस अल्लाह
के फ़र्ज़न्द होंगे। 37 और यह बात कि मुर्दे जी उठेंगे

मूसा से भी ज़ाहिर की गई है। क्यूँकि जब वह काँटेदार
झाड़ी के पास आया तो उस ने रब को यह नाम दिया,
'इब्राहीम का ख़ुदा, इस्हाक़ का ख़ुदा और याक़ूब का
ख़ुदा,' हालाँकि उस वक़्त तीनों बहुत पहले मर चुके
थे। इस का मतलब है कि यह हक़ीक़त में ज़िन्दा
हैं। 38 क्यूँकि अल्लाह मुर्दों का नहीं बल्कि ज़िन्दों का
ख़ुदा है। उस के नज़्दीक यह सब ज़िन्दा हैं।"
39 यह सुन कर शरीअत के कुछ उलमा ने कहा,
"शाबाश उस्ताद, आप ने अच्छा कहा है।" 40 इस
के बाद उन्हों ने उस से कोई भी सवाल करने की
जुरअत न की।

मसीह के बारे में सवाल

41 फिर ईसा ने उन से पूछा, "मसीह के बारे में क्यूँ
कहा जाता है कि वह दाऊद का फ़र्ज़न्द है? 42 क्यूँकि
दाऊद ख़ुद ज़बूर की किताब में फ़रमाता है,
'रब ने मेरे रब से कहा,
मेरे दहने हाथ बैठ,
43 जब तक मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पाँओ की चौकी
न बना दूँ।'
44 दाऊद तो ख़ुद मसीह को रब कहता है। तो फिर
वह किस तरह दाऊद का फ़र्ज़न्द हो सकता है?"

शरीअत के उलमा से ख़बरदार

45 जब लोग सुन रहे थे तो उस ने अपने शागिर्दों
से कहा, 46 "शरीअत के उलमा से ख़बरदार रहो!
क्यूँकि वह शानदार चोग़े पहन कर इधर उधर फिरना
पसन्द करते हैं। जब लोग बाज़ारों में सलाम करके
उन की इज़्ज़त करते हैं तो फिर वह ख़ुश हो जाते
हैं। उन की बस एक ही ख़्वाहिश होती है कि
इबादतख़ानों और ज़ियाफ़तों में इज़्ज़त की कुर्सियों
पर बैठ जाएँ। 47 यह लोग बेवाओं के घर हड़प कर
जाते और साथ साथ दिखावे के लिए लम्बी लम्बी
दुआएँ माँगते हैं। ऐसे लोगों को निहायत सख़्त सज़ा
मिलेगी।"

बेवा का चन्दा

21 1 ईसा ने नज़र उठा कर देखा कि अमीर
लोग अपने हदिए बैत-उल-मुक़द्दस के चन्दे
के बक्स में डाल रहे हैं। 2 एक ग़रीब बेवा भी वहाँ
से गुज़री जिस ने उस में ताँबे के दो मामूली से सिक्के
डाल दिए। 3 ईसा ने कहा, "मैं तुम को सच बताता हूँ
कि इस ग़रीब बेवा ने तमाम लोगों की निस्बत ज़्यादा
डाला है। 4 क्यूँकि इन सब ने तो अपनी दौलत की
कस्रत से कुछ डाला जबकि इस ने ज़रूरतमन्द होने
के बावुजूद भी अपने गुज़ारे के सारे पैसे दे दिए हैं।"

बैत-उल-मुक़द्दस पर आने वाली तबाही

5 उस वक़्त कुछ लोग बैत-उल-मुक़द्दस की तारीफ़
में कहने लगे कि वह कितने ख़ूबसूरत पत्थरों और
मन्नत के तुह्फ़ों से सजी हुई है। यह सुन कर ईसा ने
कहा, 6 "जो कुछ तुम को यहाँ नज़र आता है उस का
पत्थर पर पत्थर नहीं रहेगा। आने वाले दिनों में सब
कुछ ढा दिया जाएगा।"

मुसीबतों और ईज़ारसानी की पेशगोई

7 उन्हों ने पूछा, "उस्ताद, यह कब होगा? क्या क्या
नज़र आएगा जिस से मालूम हो कि यह अब होने को
है?"
8 ईसा ने जवाब दिया, "ख़बरदार रहो कि कोई तुम्हें
गुमराह न कर दे। क्यूँकि बहुत से लोग मेरा नाम ले
कर आएँगे और कहेंगे, 'मैं ही मसीह हूँ' और कि
'वक़्त क़रीब आ चुका है।' लेकिन उन के पीछे न
लगना। 9 और जब जंगों और फ़ितनों की ख़बरें तुम
तक पहुँचेंगी तो मत घबराना। क्यूँकि लाज़िम है कि
यह सब कुछ पहले पेश आए। तो भी अभी आख़िरत
न होगी।"
10 उस ने अपनी बात जारी रखी, "एक क़ौम दूसरी
के ख़िलाफ़ उठ खड़ी होगी, और एक बादशाही
दूसरी के ख़िलाफ़। 11 शदीद ज़ल्ज़ले आएँगे, जगह
जगह काल पड़ेंगे और वबाई बीमारियाँ फैल जाएँगी।

हैबतनाक वाक़िआत और आसमान पर बड़े निशान
देखने में आएँगे। 12 लेकिन इन तमाम वाक़िआत से
पहले लोग तुम को पकड़ कर सताएँगे। वह तुम को
यहूदी इबादतख़ानों के हवाले करेंगे, क़ैदख़ानों में
डलवाएँगे और बादशाहों और हुक्मरानों के सामने
पेश करेंगे। और यह इस लिए होगा कि तुम मेरे
पैरोकार हो। 13 नतीजे में तुम्हें मेरी गवाही देने का
मौक़ा मिलेगा। 14 लेकिन ठान लो कि तुम पहले से
अपना दिफ़ा करने की तय्यारी न करो, 15 क्यूँकि मैं
तुम को ऐसे अल्फ़ाज़ और हिक्मत अता करूँगा कि
तुम्हारे तमाम मुख़ालिफ़ न उस का मुक़ाबला और न
उस की तरदीद कर सकेंगे। 16 तुम्हारे वालिदैन, भाई,
रिश्तेदार और दोस्त भी तुम को दुश्मन के हवाले कर
देंगे, बल्कि तुम में से बाज़ को क़त्ल किया जाएगा।
17 सब तुम से नफ़रत करेंगे, इस लिए कि तुम मेरे
पैरोकार हो। 18 तो भी तुम्हारा एक बाल भी बीका
नहीं होगा। 19 साबितक़दम रहने से ही तुम अपनी
जान बचा लोगे।

यरूशलम की तबाही

20 जब तुम यरूशलम को फ़ौजों से घिरा हुआ देखो
तो जान लो कि उस की तबाही क़रीब आ चुकी है।
21 उस वक़्त यहूदिया के बाशिन्दे भाग कर पहाड़ी
इलाक़े में पनाह लें। शहर के रहने वाले उस से निकल
जाएँ और दीहात में आबाद लोग शहर में दाख़िल न
हों। 22 क्यूँकि यह इलाही ग़ज़ब के दिन होंगे जिन में
वह सब कुछ पूरा हो जाएगा जो कलाम-ए-मुक़द्दस
में लिखा है। 23 उन ख़वातीन पर अफ़्सोस जो उन
दिनों में हामिला हों या अपने बच्चों को दूध पिलाती
हों, क्यूँकि मुल्क में बहुत मुसीबत होगी और इस
क़ौम पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल होगा। 24 लोग
उन्हें तलवार से क़त्ल करेंगे और क़ैद करके तमाम
ग़ैरयहूदी ममालिक में ले जाएंगे। ग़ैरयहूदी यरूशलम
को पाँओ तले कुचल डालेंगे। यह सिलसिला उस
वक़्त तक जारी रहेगा जब तक ग़ैरयहूदियों का दौर
पूरा न हो जाए।

इब्न-ए-आदम की आमद

25 सूरज, चाँद और सितारों में अजीब-ओ-ग़रीब
निशान ज़ाहिर होंगे। क़ौमें समुन्दर के शोर और ठाठें
मारने से हैरान-ओ-परेशान होंगी। 26 लोग इस अन्देशे
से कि क्या क्या मुसीबत दुनिया पर आएगी इस क़दर
ख़ौफ़ खाएँगे कि उन की जान में जान न रहेगी, क्यूँकि
आसमान की क़ुव्वतें हिलाई जाएँगी। 27 और फिर
वह इब्न-ए-आदम को बड़ी क़ुदरत और जलाल के
साथ बादल में आते हुए देखेंगे। 28 चुनाँचे जब यह
कुछ पेश आने लगे तो सीधे खड़े हो कर अपनी नज़र
उठाओ, क्यूँकि तुम्हारी नजात नज़्दीक होगी।”

अन्जीर के दरख़्त की तम्सील

29 इस सिलसिले में ईसा ने उन्हें एक तम्सील
सुनाई। “अन्जीर के दरख़्त और बाक़ी दरख़्तों पर
ग़ौर करो। 30 जूँ ही कोंपलें निकलने लगती हैं तुम
जान लेते हो कि गर्मियों का मौसम नज़्दीक है। 31 इसी
तरह जब तुम यह वाक़िआत देखोगे तो जान लोगे कि
अल्लाह की बादशाही क़रीब ही है।
32 मैं तुम को सच बताता हूँ कि इस नस्ल के
ख़त्म होने से पहले पहले यह सब कुछ वाक़े होगा।
33 आसमान-ओ-ज़मीन तो जाते रहेंगे, लेकिन मेरी
बातें हमेशा तक क़ाइम रहेंगी।

ख़बरदार रहना

34 ख़बरदार रहो ताकि तुम्हारे दिल अय्याशी,
नशाबाज़ी और रोज़ाना की फ़िक्रों तले दब न जाएँ।
वर्ना यह दिन अचानक तुम पर आन पड़ेगा, 35 और
फंदे की तरह तुम्हें जकड़ लेगा। क्यूँकि वह दुनिया
के तमाम बाशिन्दों पर आएगा। 36 हर वक़्त चौकस
रहो और दुआ करते रहो कि तुम को आने वाली इन
सब बातों से बच निकलने की तौफ़ीक़ मिल जाए
और तुम इब्न-ए-आदम के सामने खड़े हो सको।”
37 हर रोज़ ईसा बैत-उल-मुक़द्दस में तालीम देता
रहा और हर शाम वह निकल कर उस पहाड़ पर रात

गुज़ारता था जिस का नाम ज़ैतून का पहाड़ है। 38 और
तमाम लोग उस की बातें सुनने के लिए सुब्ह-सवेरे
बैत-उल-मुक़द्दस में उस के पास आते थे।

ईसा के ख़िलाफ़ मन्सूबाबन्दियाँ

22 1 बेख़मीरी रोटी की ईद यानी फ़सह की ईद
क़रीब आ गई थी। 2 राहनुमा इमाम और
शरीअत के उलमा ईसा को क़त्ल करने का कोई
मौज़ूँ मौक़ा ढूँड रहे थे, क्यूँकि वह अवाम के रद्द-ए-
अमल से डरते थे।

ईसा को दुश्मन के हवाले करने का मन्सूबा

3 उस वक़्त इब्लीस यहूदाह इस्करियोती में समा
गया जो बारह रसूलों में से था। 4 अब वह
राहनुमा इमामों और बैत-उल-मुक़द्दस के पहरेदारों
के अफ़्सरों से मिला और उन से बात करने लगा कि
वह ईसा को किस तरह उन के हवाले कर सकेगा।
5 वह ख़ुश हुए और उसे पैसे देने पर मुत्तफ़िक़ हुए।
6 यहूदाह रज़ामन्द हुआ। अब से वह इस तलाश में
रहा कि ईसा को ऐसे मौक़े पर उन के हवाले करे जब
हुजूम उस के पास न हो।

फ़सह की ईद के लिए तय्यारियाँ

7 बेख़मीरी रोटी की ईद आई जब फ़सह के लेले
को क़ुर्बान करना था। 8 ईसा ने पतरस और यूहन्ना
को आगे भेज कर हिदायत की, "जाओ, हमारे लिए
फ़सह का खाना तय्यार करो ताकि हम जा कर उसे
खा सकें।"

9 उन्हों ने पूछा, "हम उसे कहाँ तय्यार करें?"

10 उस ने जवाब दिया, "जब तुम शहर में दाख़िल
होगे तो तुम्हारी मुलाक़ात एक आदमी से होगी जो
पानी का घड़ा उठाए चल रहा होगा। उस के पीछे चल
कर उस घर में दाख़िल हो जाओ जिस में वह जाएगा।
11 वहाँ के मालिक से कहना, 'उस्ताद आप से पूछते
हैं कि वह कमरा कहाँ है जहाँ मैं अपने शागिर्दों
के साथ फ़सह का खाना खाऊँ?' 12 वह तुम को
दूसरी मन्ज़िल पर एक बड़ा और सजा हुआ कमरा
दिखाएगा। फ़सह का खाना वहीं तय्यार करना।"

13 दोनों चले गए तो सब कुछ वैसा ही पाया जैसा
ईसा ने उन्हें बताया था। फिर उन्हों ने फ़सह का खाना
तय्यार किया।

फ़सह का आख़िरी खाना

14 मुक़र्ररा वक़्त पर ईसा अपने शागिर्दों के साथ
खाने के लिए बैठ गया। 15 उस ने उन से कहा, "मेरी
शदीद आर्ज़ू थी कि दुख उठाने से पहले तुम्हारे साथ
मिल कर फ़सह का यह खाना खाऊँ। 16 क्यूँकि मैं
तुम को बताता हूँ कि उस वक़्त तक इस खाने में
शरीक नहीं हूँगा जब तक इस का मक़्सद अल्लाह की
बादशाही में पूरा न हो गया हो।"

17 फिर उस ने मै का प्याला ले कर शुक्रगुज़ारी की
दुआ की और कहा, "इस को ले कर आपस में बाँट
लो। 18 मैं तुम को बताता हूँ कि अब से मैं अंगूर का
रस नहीं पियूँगा, क्यूँकि अगली दफ़ा इसे अल्लाह की
बादशाही के आने पर पियूँगा।"

19 फिर उस ने रोटी ले कर शुक्रगुज़ारी की दुआ की
और उसे टुकड़े करके उन्हें दे दिया। उस ने कहा,
"यह मेरा बदन है, जो तुम्हारे लिए दिया जाता है। मुझे
याद करने के लिए यही किया करो।" 20 इसी तरह
उस ने खाने के बाद प्याला ले कर कहा, "मै का यह
प्याला वह नया अह्द है जो मेरे ख़ून के ज़रीए क़ाइम
किया जाता है, वह ख़ून जो तुम्हारे लिए बहाया जाता
है।

21 लेकिन जिस शख़्स का हाथ मेरे साथ खाना खाने
में शरीक है वह मुझे दुश्मन के हवाले कर देगा।
22 इब्न-ए-आदम तो अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़
कूच कर जाएगा, लेकिन उस शख़्स पर अफ़्सोस
जिस के वसीले से उसे दुश्मन के हवाले कर दिया
जाएगा।"

23 यह सुन कर शागिर्द एक दूसरे से बह्स करने लगे
कि हम में से यह कौन हो सकता है जो इस क़िस्म
की हरकत करेगा।

कौन बड़ा है?

24 फिर एक और बात भी छिड़ गई। वह एक
दूसरे से बह्स करने लगे कि हम में से कौन सब
से बड़ा समझा जाए। 25 लेकिन ईसा ने उन से कहा,
"ग़ैरयहूदी क़ौमों में बादशाह वही हैं जो दूसरों पर
हुकूमत करते हैं, और इख़तियार वाले वही हैं जिन्हें
'मोहसिन' का लक़ब दिया जाता है। 26 लेकिन तुम
को ऐसा नहीं होना चाहिए। इस के बजाय जो सब से
बड़ा है वह सब से छोटे लड़के की मानिन्द हो और
जो राहनुमाई करता है वह नौकर जैसा हो। 27 क्यूँकि
आम तौर पर कौन ज़्यादा बड़ा होता है, वह जो खाने
के लिए बैठा है या वह जो लोगों की ख़िदमत के
लिए हाज़िर होता है? क्या वह नहीं जो खाने के लिए
बैठा है? बेशक। लेकिन मैं ख़िदमत करने वाले की
हैसियत से ही तुम्हारे दरमियान हूँ।
28 देखो, तुम वही हो जो मेरी तमाम आज़माइशों के
दौरान मेरे साथ रहे हो। 29 चुनाँचे मैं तुम को बादशाही
अता करता हूँ जिस तरह बाप ने मुझे भी बादशाही
अता की है। 30 तुम मेरी बादशाही में मेरी मेज़ पर बैठ
कर मेरे साथ खाओ और पियोगे, और तख़्तों पर बैठ
कर इस्राईल के बारह क़बीलों का इन्साफ़ करोगे।

पतरस के इन्कार की पेशगोई

31 शमाऊन, शमाऊन! इब्लीस ने तुम लोगों को
गन्दुम की तरह फटकने का मुतालबा किया है।
32 लेकिन मैं ने तेरे लिए दुआ की है ताकि तेरा ईमान
जाता न रहे। और जब तू मुड़ कर वापस आए तो उस
वक़्त अपने भाइयों को मज़बूत करना।"
33 पतरस ने जवाब दिया, "ख़ुदावन्द, मैं तो आप
के साथ जेल में भी जाने बल्कि मरने को तय्यार हूँ।"
34 ईसा ने कहा, "पतरस, मैं तुझे बताता हूँ कि कल
सुब्ह मुर्ग़ के बाँग देने से पहले पहले तू तीन बार मुझे
जानने से इन्कार कर चुका होगा।"

अब बटवे, बैग और तलवार की ज़रूरत है

35 फिर उस ने उन से पूछा, "जब मैं ने तुम को बटवे,
सामान के लिए बैग और जूतों के बग़ैर भेज दिया तो
क्या तुम किसी भी चीज़ से महरूम रहे?"
उन्हों ने जवाब दिया, "किसी से नहीं।"
36 उस ने कहा, "लेकिन अब जिस के पास बटवा
या बैग हो वह उसे साथ ले जाए, बल्कि जिस के
पास तलवार न हो वह अपनी चादर बेच कर तलवार
ख़रीद ले। 37 कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है, 'उसे
मुजरिमों में शुमार किया गया' और मैं तुम को बताता
हूँ, लाज़िम है कि यह बात मुझ में पूरी हो जाए। क्यूँकि
जो कुछ मेरे बारे में लिखा है उसे पूरा ही होना है।"
38 उन्हों ने कहा, "ख़ुदावन्द, यहाँ दो तलवारें हैं।"
उस ने कहा, "बस! काफ़ी है!"

ज़ैतून के पहाड़ पर ईसा की दुआ

39 फिर वह शहर से निकल कर मामूल के मुताबिक़
ज़ैतून के पहाड़ की तरफ़ चल दिया। उस के शागिर्द
उस के पीछे हो लिए। 40 वहाँ पहुँच कर उस ने उन
से कहा, "दुआ करो ताकि आज़माइश में न पड़ो।"
41 फिर वह उन्हें छोड़ कर कुछ आगे निकला,
तक़रीबन इतने फ़ासिले पर जितनी दूर तक पत्थर
फैंका जा सकता है। वहाँ वह झुक कर दुआ करने
लगा, 42 "ऐ बाप, अगर तू चाहे तो यह प्याला मुझ
से हटा ले। लेकिन मेरी नहीं बल्कि तेरी मर्ज़ी पूरी
हो।" 43 उस वक़्त एक फ़रिश्ते ने आसमान पर से
उस पर ज़ाहिर हो कर उस को तक़वियत दी। 44 वह
सख़्त परेशान हो कर ज़्यादा दिलसोज़ी से दुआ करने
लगा। साथ साथ उस का पसीना ख़ून की बूँदों की
तरह ज़मीन पर टपकने लगा।
45 जब वह दुआ से फ़ारिग़ हो कर खड़ा हुआ और
शागिर्दों के पास वापस आया तो देखा कि वह ग़म के
मारे सो गए हैं। 46 उस ने उन से कहा, "तुम क्यूँ सो
रहे हो? उठ कर दुआ करते रहो ताकि आज़माइश में
न पड़ो।"

ईसा की गिरिफ़्तारी

47 वह अभी यह बात कर ही रहा था कि एक हुजूम
आ पहुँचा जिस के आगे आगे यहूदाह चल रहा था।
वह ईसा को बोसा देने के लिए उस के पास आया।
48 लेकिन उस ने कहा, "यहूदाह, क्या तू इब्न-ए-
आदम को बोसा दे कर दुश्मन के हवाले कर रहा
है?"
49 जब उस के साथियों ने भाँप लिया कि अब क्या
होने वाला है तो उन्हों ने कहा, "ख़ुदावन्द, क्या हम
तलवार चलाएँ?" 50 और उन में से एक ने अपनी
तलवार से इमाम-ए-आज़म के ग़ुलाम का दहना कान
उड़ा दिया।
51 लेकिन ईसा ने कहा, "बस कर!" उस ने ग़ुलाम
का कान छू कर उसे शिफ़ा दी। 52 फिर वह उन
राहनुमा इमामों, बैत-उल-मुक़द्दस के पहरेदारों के
अफ़सरों और बुज़ुर्गों से मुख़ातिब हुआ जो उस के
पास आए थे, "क्या मैं डाकू हूँ कि तुम तलवारें
और लाठियाँ लिए मेरे ख़िलाफ़ निकले हो? 53 मैं
तो रोज़ाना बैत-उल-मुक़द्दस में तुम्हारे पास था, मगर
तुम ने वहाँ मुझे हाथ नहीं लगाया। लेकिन अब
यह तुम्हारा वक़्त है, वह वक़्त जब तारीकी हुकूमत
करती है।"

पतरस ईसा को जानने से इन्कार करता है

54 फिर वह उसे गिरिफ़्तार करके इमाम-ए-आज़म
के घर ले गए। पतरस कुछ फ़ासिले पर उन के पीछे
पीछे वहाँ पहुँच गया। 55 लोग सहन में आग जला कर
उस के इर्दगिर्द बैठ गए। पतरस भी उन के दरमियान
बैठ गया। 56 किसी नौकरानी ने उसे वहाँ आग के
पास बैठे हुए देखा। उस ने उसे घूर कर कहा, "यह
भी उस के साथ था।"
57 लेकिन उस ने इन्कार किया, "ख़ातून, मैं उसे
नहीं जानता।"
58 थोड़ी देर के बाद किसी आदमी ने उसे देखा और
कहा, "तुम भी उन में से हो।"
लेकिन पतरस ने जवाब दिया, "नहीं भई! मैं नहीं
हूँ।"
59 तक़रीबन एक घंटा गुज़र गया तो किसी और ने
इसरार करके कहा, "यह आदमी यक़ीनन उस के
साथ था, क्यूँकि यह भी गलील का रहने वाला है।"
60 लेकिन पतरस ने जवाब दिया, "यार, मैं नहीं
जानता कि तुम क्या कह रहे हो!"
वह अभी बात कर ही रहा था कि अचानक मुर्ग़
की बाँग सुनाई दी। 61 ख़ुदावन्द ने मुड़ कर पतरस
पर नज़र डाली। फिर पतरस को ख़ुदावन्द की वह
बात याद आई जो उस ने उस से कही थी कि "कल
सुब्ह मुर्ग़ के बाँग देने से पहले पहले तू तीन बार मुझे
जानने से इन्कार कर चुका होगा।" 62 पतरस वहाँ से
निकल कर टूटे दिल से ख़ूब रोया।

लान-तान और पिटाई

63 पहरेदार ईसा का मज़ाक़ उड़ाने और उस की
पिटाई करने लगे। 64 उन्हों ने उस की आँखों पर
पट्टी बांध कर पूछा, "नबुव्वत कर कि किस ने तुझे
मारा?" 65 इस तरह की और बहुत सी बातों से वह
उस की बेइज़्ज़ती करते रहे।

यहूदी अदालत-ए-आलिया के सामने पेशी

66 जब दिन चढ़ा तो राहनुमा इमामों और शरीअत
के उलमा पर मुश्तमिल क़ौम की मजलिस ने जमा हो
कर उसे यहूदी अदालत-ए-आलिया में पेश किया।
67 उन्हों ने कहा, "अगर तू मसीह है तो हमें बता!"
ईसा ने जवाब दिया, "अगर मैं तुम को बताऊँ तो
तुम मेरी बात नहीं मानोगे, 68 और अगर तुम से पूछूँ
तो तुम जवाब नहीं दोगे। 69 लेकिन अब से इब्न-ए-
आदम अल्लाह तआला के दहने हाथ बैठा होगा।"
70 सब ने पूछा, "तो फिर क्या तू अल्लाह का फ़र्ज़न्द
है?"
उस ने जवाब दिया, "जी, तुम ख़ुद कहते हो।"

71 इस पर उन्हों ने कहा, “अब हमें किसी और
गवाही की क्या ज़रूरत रही? क्यूँकि हम ने यह बात
उस के अपने मुँह से सुन ली है।”

पीलातुस के सामने

23 1 फिर पूरी मजलिस उठी और उसे
पीलातुस के पास ले आई। 2 वहाँ वह उस
पर इल्ज़ाम लगा कर कहने लगे, “हम ने मालूम किया
है कि यह आदमी हमारी क़ौम को गुमराह कर रहा
है। यह शहन्शाह को टैक्स देने से मना करता और
दावा करता है कि मैं मसीह और बादशाह हूँ।”
3 पीलातुस ने उस से पूछा, “अच्छा, तुम यहूदियों
के बादशाह हो?”
ईसा ने जवाब दिया, “जी, आप ख़ुद कहते हैं।”
4 फिर पीलातुस ने राहनुमा इमामों और हुजूम से
कहा, “मुझे इस आदमी पर इल्ज़ाम लगाने की कोई
वजह नज़र नहीं आती।”
5 लेकिन वह अड़े रहे। उन्हों ने कहा, “वह पूरे
यहूदिया में तालीम देते हुए क़ौम को उकसाता है।
वह गलील से शुरू करके यहाँ तक आ पहुँचा है।”

हेरोदेस के सामने

6 यह सुन कर पीलातुस ने पूछा, “क्या यह शख़्स
गलील का है?” 7 जब उसे मालूम हुआ कि ईसा
गलील यानी उस इलाक़े से है जिस पर हेरोदेस
अनतिपास की हुकूमत है तो उस ने उसे हेरोदेस के
पास भेज दिया, क्यूँकि वह भी उस वक़्त यरूशलम
में था। 8 हेरोदेस ईसा को देख कर बहुत ख़ुश हुआ,
क्यूँकि उस ने उस के बारे में बहुत कुछ सुना था
और इस लिए काफ़ी देर से उस से मिलना चाहता
था। अब उस की बड़ी ख़्वाहिश थी कि ईसा को
कोई मोजिज़ा करते हुए देख सके। 9 उस ने उस से
बहुत सारे सवाल किए, लेकिन ईसा ने एक का भी
जवाब न दिया। 10 राहनुमा इमाम और शरीअत के
उलमा साथ खड़े बड़े जोश से उस पर इल्ज़ाम लगाते
रहे। 11 फिर हेरोदेस और उस के फ़ौजियों ने उस की
तह्क़ीर करते हुए उस का मज़ाक़ उड़ाया और उसे
चमकदार लिबास पहना कर पीलातुस के पास वापस
भेज दिया। 12 उसी दिन हेरोदेस और पीलातुस दोस्त
बन गए, क्यूँकि इस से पहले उन की दुश्मनी चल
रही थी।

सज़ा-ए-मौत का फ़ैसला

13 फिर पीलातुस ने राहनुमा इमामों, सरदारों और
अवाम को जमा करके 14 उन से कहा, “तुम ने इस
शख़्स को मेरे पास ला कर इस पर इल्ज़ाम लगाया है
कि यह क़ौम को उकसा रहा है। मैं ने तुम्हारी मौजूदगी
में इस का जाइज़ा ले कर ऐसा कुछ नहीं पाया जो
तुम्हारे इल्ज़ामात की तस्दीक़ करे। 15 हेरोदेस भी
कुछ नहीं मालूम कर सका, इस लिए उस ने इसे हमारे
पास वापस भेज दिया है। इस आदमी से कोई भी ऐसा
क़ुसूर नहीं हुआ कि यह सज़ा-ए-मौत के लाइक़ है।
16 इस लिए मैं इसे कोड़ों की सज़ा दे कर रिहा कर
देता हूँ।”
17 [असल में यह उस का फ़र्ज़ था कि वह ईद के
मौक़े पर उन की ख़ातिर एक क़ैदी को रिहा कर दे।]
18 लेकिन सब मिल कर शोर मचा कर कहने लगे,
“इसे ले जाएँ! इसे नहीं बल्कि बर-अब्बा को रिहा
करके हमें दें।” 19 (बर-अब्बा को इस लिए जेल में
डाला गया था कि वह क़ातिल था और उस ने शहर
में हुकूमत के ख़िलाफ़ बग़ावत की थी।)
20 पीलातुस ईसा को रिहा करना चाहता था, इस
लिए वह दुबारा उन से मुख़ातिब हुआ। 21 लेकिन वह
चिल्लाते रहे, “इसे मस्लूब करें, इसे मस्लूब करें।”
22 फिर पीलातुस ने तीसरी दफ़ा उन से कहा, “क्यूँ?
उस ने क्या जुर्म किया है? मुझे इसे सज़ा-ए-मौत देने
की कोई वजह नज़र नहीं आती। इस लिए मैं इसे
कोड़े लगवा कर रिहा कर देता हूँ।”
23 लेकिन वह बड़ा शोर मचा कर उसे मस्लूब करने
का तक़ाज़ा करते रहे, और आख़िरकार उन की
आवाज़ें ग़ालिब आ गईं। 24 फिर पीलातुस ने फ़ैसला
किया कि उन का मुतालबा पूरा किया जाए। 25 उस ने

उस आदमी को रिहा कर दिया जो अपनी बाग़ियाना हरकतों और क़त्ल की वजह से जेल में डाल दिया गया था जबकि ईसा को उस ने उन की मर्ज़ी के मुताबिक़ उन के हवाले कर दिया।

ईसा को मस्लूब किया जाता है

26 जब फ़ौजी ईसा को ले जा रहे थे तो उन्हों ने एक
आदमी को पकड़ लिया जो लिबिया के शहर कुरेन
का रहने वाला था। उस का नाम शमाऊन था। उस
वक़्त वह दीहात से शहर में दाख़िल हो रहा था। उन्हों
ने सलीब को उस के कंधों पर रख कर उसे ईसा के
पीछे चलने का हुक्म दिया।
27 एक बड़ा हुजूम उस के पीछे हो लिया जिस में
कुछ ऐसी औरतें भी शामिल थीं जो सीना पीट पीट
कर उस का मातम कर रही थीं। 28 ईसा ने मुड़ कर
उन से कहा, "यरूशलम की बेटियो! मेरे वास्ते न
रोओ बल्कि अपने और अपने बच्चों के वास्ते रोओ।
29 क्यूँकि ऐसे दिन आएँगे जब लोग कहेंगे, 'मुबारक
हैं वह जो बाँझ हैं, जिन्हों ने न तो बच्चों को जन्म
दिया, न दूध पिलाया।' 30 फिर लोग पहाड़ों से कहने
लगेंगे, 'हम पर गिर पड़ो,' और पहाड़ियों से कि
'हमें छुपा लो।' 31 क्यूँकि अगर हरी लकड़ी से ऐसा
सुलूक किया जाता है तो फिर सूखी लकड़ी का क्या
बनेगा?"
32 दो और मर्दों को भी फाँसी देने के लिए बाहर ले
जाया जा रहा था। दोनों मुजरिम थे। 33 चलते चलते
वह उस जगह पहुँचे जिस का नाम खोपड़ी था। वहाँ
उन्हों ने ईसा को दोनों मुजरिमों समेत मस्लूब किया।
एक मुजरिम को उस के दाएँ हाथ और दूसरे को उस
के बाएँ हाथ लटका दिया गया। 34 ईसा ने कहा, "ऐ
बाप, इन्हें मुआफ़ कर, क्यूँकि यह जानते नहीं कि
क्या कर रहे हैं।"
उन्हों ने क़ुरआ डाल कर उस के कपड़े आपस
में बाँट लिए। 35 हुजूम वहाँ खड़ा तमाशा देखता
रहा जबकि क़ौम के सरदारों ने उस का मज़ाक़ भी
उड़ाया। उन्हों ने कहा, "उस ने औरों को बचाया है।
अगर यह अल्लाह का चुना हुआ और मसीह है तो
अपने आप को बचाए।"
36 फ़ौजियों ने भी उसे लान-तान की। उस के पास
आ कर उन्हों ने उसे मै का सिरका पेश किया 37 और
कहा, "अगर तू यहूदियों का बादशाह है तो अपने
आप को बचा ले।"
38 उस के सर के ऊपर एक तख़्ती लगाई गई थी
जिस पर लिखा था, "यह यहूदियों का बादशाह है।"
39 जो मुजरिम उस के साथ मस्लूब हुए थे उन में से
एक ने कुफ़्र बकते हुए कहा, "क्या तू मसीह नहीं है?
तो फिर अपने आप को और हमें भी बचा ले।"
40 लेकिन दूसरे ने यह सुन कर उसे डाँटा, "क्या
तू अल्लाह से भी नहीं डरता? जो सज़ा उसे दी गई
है वह तुझे भी मिली है। 41 हमारी सज़ा तो वाजिबी
है, क्यूँकि हमें अपने कामों का बदला मिल रहा है,
लेकिन इस ने कोई बुरा काम नहीं किया।" 42 फिर
उस ने ईसा से कहा, "जब आप अपनी बादशाही में
आएँ तो मुझे याद करें।"
43 ईसा ने उस से कहा, "मैं तुझे सच बताता हूँ कि
तू आज ही मेरे साथ फ़िर्दौस में होगा।"

ईसा की मौत

44 बारह बजे से दोपहर तीन बजे तक पूरा मुल्क
अंधेरे में डूब गया। 45 सूरज तारीक हो गया और
बैत-उल-मुक़द्दस के मुक़द्दसतरीन कमरे के सामने
लटका हुआ पर्दा दो हिस्सों में फट गया। 46 ईसा
ऊँची आवाज़ से पुकार उठा, "ऐ बाप, मैं अपनी रूह
तेरे हाथों में सौंपता हूँ।" यह कह कर उस ने दम छोड़
दिया।
47 यह देख कर वहाँ खड़े फ़ौजी अफ़सर [z] ने
अल्लाह की तम्जीद करके कहा, "यह आदमी वाक़ई
रास्तबाज़ था।"

---

[z] सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

48 और हुजूम के तमाम लोग जो यह तमाशा देखने
के लिए जमा हुए थे यह सब कुछ देख कर छाती
पीटने लगे और शहर में वापस चले गए। 49 लेकिन
ईसा के जानने वाले कुछ फ़ासिले पर खड़े देखते रहे।
उन में वह ख़वातीन भी शामिल थीं जो गलील में उस
के पीछे चल कर यहाँ तक उस के साथ आई थीं।

ईसा को दफ़न किया जाता है

50 वहाँ एक नेक और रास्तबाज़ आदमी बनाम
यूसुफ़ था। वह यहूदी अदालत-ए-अलिया का रुकन
था 51 लेकिन दूसरों के फ़ैसले और हरकतों पर
रज़ामन्द नहीं हुआ था। यह आदमी यहूदिया के शहर
अरिमतियाह का रहने वाला था और इस इन्तिज़ार
में था कि अल्लाह की बादशाही आए। 52 अब उस ने
पीलातुस के पास जा कर उस से ईसा की लाश ले
जाने की इजाज़त माँगी। 53 फिर लाश को उतार कर
उस ने उसे कतान के कफ़न में लपेट कर चटान में
तराशी हुई एक क़ब्र में रख दिया जिस में अब तक
किसी को दफ़नाया नहीं गया था। 54 यह तय्यारी का
दिन यानी जुमआ था, लेकिन सबत का दिन शुरू
होने को था। [a]55 जो औरतें ईसा के साथ गलील से
आई थीं वह यूसुफ़ के पीछे हो लीं। उन्हों ने क़ब्र को
देखा और यह भी कि ईसा की लाश किस तरह उस में
रखी गई है। 56 फिर वह शहर में वापस चली गईं और
उस की लाश के लिए ख़ुश्बूदार मसाले तय्यार करने
लगीं। लेकिन बीच में सबत का दिन शुरू हुआ, इस
लिए उन्हों ने शरीअत के मुताबिक़ आराम किया।

ईसा जी उठता है

24 1 इत्वार के दिन यह औरतें अपने
तय्यारशुदा मसाले ले कर सुब्ह-सवेरे क़ब्र
पर गईं। 2 वहाँ पहुँच कर उन्हों ने देखा कि क़ब्र
पर का पत्थर एक तरफ़ लुढ़का हुआ है। 3 लेकिन
जब वह क़ब्र में गईं तो वहाँ ख़ुदावन्द ईसा की
लाश न पाई। 4 वह अभी उलझन में वहाँ खड़ी थीं
कि अचानक दो मर्द उन के पास आ खड़े हुए जिन
के लिबास बिजली की तरह चमक रहे थे। 5 औरतें
दहशत खा कर मुँह के बल झुक गईं, लेकिन उन मर्दों
ने कहा, "तुम क्यूँ ज़िन्दा को मुर्दों में ढूँड रही हो?
6 वह यहाँ नहीं है, वह तो जी उठा है। वह बात याद
करो जो उस ने तुम से उस वक़्त कही जब वह गलील
में था। 7 'लाज़िम है कि इब्न-ए-आदम को गुनाहगारों
के हवाले कर दिया जाए, मस्लूब किया जाए और कि
वह तीसरे दिन जी उठे'।"

8 फिर उन्हें यह बात याद आई। 9 और क़ब्र से
वापस आ कर उन्हों ने यह सब कुछ ग्यारह
रसूलों और बाक़ी शागिर्दों को सुना दिया। 10 मरियम
मग्दलीनी, यूअन्ना, याक़ूब की माँ मरियम और चन्द
एक और औरतें उन में शामिल थीं जिन्हों ने यह बातें
रसूलों को बताईं। 11 लेकिन उन को यह बातें बेतुकी
सी लग रही थीं, इस लिए उन्हें यक़ीन न आया। 12 तो
भी पतरस उठा और भाग कर क़ब्र के पास आया।
जब पहुँचा तो झुक कर अन्दर झाँका, लेकिन सिर्फ़
कफ़न [b]ही नज़र आया। यह हालात देख कर वह
हैरान हुआ और चला गया।

इम्माउस के रास्ते में ईसा से मुलाक़ात

13 उसी दिन ईसा के दो पैरोकार एक गाँव बनाम
इम्माउस की तरफ़ चल रहे थे। यह गाँव यरूशलम
से तक़रीबन दस किलोमीटर दूर था। 14 चलते चलते
वह आपस में उन वाक़िआत का ज़िक्र कर रहे थे जो
हुए थे। 15 और ऐसा हुआ कि जब वह बातें और एक
दूसरे के साथ बहस-मुबाहसा कर रहे थे तो ईसा ख़ुद
क़रीब आ कर उन के साथ चलने लगा। 16 लेकिन उन
की आँखों पर पर्दा डाला गया था, इस लिए वह उसे
पहचान न सके। 17 ईसा ने कहा, "यह कैसी बातें हैं
जिन के बारे में तुम चलते चलते तबादला-ए-ख़याल
कर रहे हो?"

---

[a]यहूदी दिन सूरज के ग़ुरूब होने से शुरू होता है।

[b]लफ़्ज़ी तर्जुमा : कतान की पट्टियाँ जो कफ़न के लिए इस्तेमाल होती थीं।

यह सुन कर वह ग़मगीन से खड़े हो गए। 18 उन में
से एक बनाम क्लियुपास ने उस से पूछा, “क्या आप
यरूशलम में वाहिद शख़्स हैं जिसे मालूम नहीं कि
इन दिनों में क्या कुछ हुआ है?”
19 उस ने कहा, “क्या हुआ है?”
उन्हों ने जवाब दिया, “वह जो ईसा नासरी के साथ
हुआ है। वह नबी था जिसे कलाम और काम में
अल्लाह और तमाम क़ौम के सामने ज़बरदस्त क़ुव्वत
हासिल थी। 20 लेकिन हमारे राहनुमा इमामों और
सरदारों ने उसे हुक्मरानों के हवाले कर दिया ताकि
उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए, और उन्हों ने उसे मस्लूब
किया। 21 लेकिन हमें तो उम्मीद थी कि वही इस्राईल
को नजात देगा। इन वाक़िआत को तीन दिन हो गए
हैं। 22 लेकिन हम में से कुछ ख़वातीन ने भी हमें हैरान
कर दिया है। वह आज सुब्ह-सवेरे क़ब्र पर गईं 23 तो
देखा कि लाश वहाँ नहीं है। उन्हों ने लौट कर हमें
बताया कि हम पर फ़रिश्ते ज़ाहिर हुए जिन्हों ने कहा
कि ईसा ज़िन्दा है। 24 हम में से कुछ क़ब्र पर गए और
उसे वैसा ही पाया जिस तरह उन औरतों ने कहा था।
लेकिन उसे ख़ुद उन्हों ने नहीं देखा।”
25 फिर ईसा ने उन से कहा, “अरे नादानो! तुम
कितने कुन्दज़हन हो कि तुम्हें उन तमाम बातों पर
यक़ीन नहीं आया जो नबियों ने फ़रमाई हैं। 26 क्या
लाज़िम नहीं था कि मसीह यह सब कुछ झेल कर
अपने जलाल में दाख़िल हो जाए?” 27 फिर मूसा
और तमाम नबियों से शुरू करके ईसा ने कलाम-
ए-मुक़द्दस की हर बात की तश्रीह की जहाँ जहाँ उस
का ज़िक्र है।
28 चलते चलते वह उस गाँव के क़रीब पहुँचे जहाँ
उन्हें जाना था। ईसा ने ऐसा किया गोया कि वह आगे
बढ़ना चाहता है, 29 लेकिन उन्हों ने उसे मज्बूर करके
कहा, “हमारे पास ठहरें, क्यूँकि शाम होने को है और
दिन ढल गया है।” चुनाँचे वह उन के साथ ठहरने के
लिए अन्दर गया। 30 और ऐसा हुआ कि जब वह
खाने के लिए बैठ गए तो उस ने रोटी ले कर उस के
लिए शुक्रगुज़ारी की दुआ की। फिर उस ने उसे टुकड़े
करके उन्हें दिया। 31 अचानक उन की आँखें खुल गईं
और उन्हों ने उसे पहचान लिया। लेकिन उसी लम्हे
वह ओझल हो गया। 32 फिर वह एक दूसरे से कहने
लगे, “क्या हमारे दिल जोश से न भर गए थे जब
वह रास्ते में हम से बातें करते करते हमें सहीफ़ों का
मतलब समझा रहा था?”
33 और वह उसी वक़्त उठ कर यरूशलम वापस
चले गए। जब वह वहाँ पहुँचे तो ग्यारह रसूल अपने
साथियों समेत पहले से जमा थे 34 और यह कह रहे
थे, “ख़ुदावन्द वाक़ई जी उठा है! वह शमाऊन पर
ज़ाहिर हुआ है।”
35 फिर इम्माउस के दो शागिर्दों ने उन्हें बताया कि
गाँव की तरफ़ जाते हुए क्या हुआ था और कि ईसा
के रोटी तोड़ते वक़्त उन्हों ने उसे कैसे पहचाना।

ईसा अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर होता है

36 वह अभी यह बातें सुना रहे थे कि ईसा ख़ुद
उन के दरमियान आ खड़ा हुआ और कहा, “तुम्हारी
सलामती हो।”
37 वह घबरा कर बहुत डर गए, क्यूँकि उन का
ख़याल था कि कोई भूत-प्रेत देख रहे हैं। 38 उस ने उन
से कहा, “तुम क्यूँ परेशान हो गए हो? क्या वजह है
कि तुम्हारे दिलों में शक उभर आया है? 39 मेरे हाथों
और पाँओ को देखो कि मैं ही हूँ। मुझे टटोल कर
देखो, क्यूँकि भूत के गोश्त और हड्डियाँ नहीं होतीं
जबकि तुम देख रहे हो कि मेरा जिस्म है।”
40 यह कह कर उस ने उन्हें अपने हाथ और पाँओ
दिखाए। 41 जब उन्हें ख़ुशी के मारे यक़ीन नहीं आ
रहा था और ताज्जुब कर रहे थे तो ईसा ने पूछा,
“क्या यहाँ तुम्हारे पास कोई खाने की चीज़ है?”
42 उन्हों ने उसे भुनी हुई मछली का एक टुकड़ा दिया
43 उस ने उसे ले कर उन के सामने ही खा लिया।
44 फिर उस ने उन से कहा, “यही है जो मैं ने तुम
को उस वक़्त बताया था जब तुम्हारे साथ था कि जो
कुछ भी मूसा की शरीअत, नबियों के सहीफ़ों और

ज़बूर की किताब में मेरे बारे में लिखा है उसे पूरा
होना है।”
45 फिर उस ने उन के ज़हन को खोल दिया ताकि
वह अल्लाह का कलाम समझ सकें। 46 उस ने उन से
कहा, “कलाम-ए-मुक़द्दस में यूँ लिखा है, मसीह दुख
उठा कर तीसरे दिन मुर्दों में से जी उठेगा। 47 फिर
यरूशलम से शुरू करके उस के नाम में यह पैग़ाम
तमाम क़ौमों को सुनाया जाएगा कि वह तौबा करके
गुनाहों की मुआफ़ी पाएँ। 48 तुम इन बातों के गवाह
हो। 49 और मैं तुम्हारे पास उसे भेज दूँगा जिस का
वादा मेरे बाप ने किया है। फिर तुम को आसमान की
क़ुव्वत से मुलब्बस किया जाएगा। उस वक़्त तक
शहर से बाहर न निकलना।”

ईसा को आसमान पर उठाया जाता है

50 फिर वह शहर से निकल कर उन्हें बैत-अनियाह
तक ले गया। वहाँ उस ने अपने हाथ उठा कर उन्हें
बरकत दी। 51 और ऐसा हुआ कि बरकत देते हुए वह
उन से जुदा हो कर आसमान पर उठा लिया गया।
52 उन्हों ने उसे सिज्दा किया और फिर बड़ी ख़ुशी
से यरूशलम वापस चले गए। 53 वहाँ वह अपना
पूरा वक़्त बैत-उल-मुक़द्दस में गुज़ार कर अल्लाह की
तम्जीद करते रहे।

यूहन्ना

ज़िन्दगी का कलाम

1 1 इब्तिदा में कलाम था। कलाम अल्लाह के साथ
था और कलाम अल्लाह था। 2 यही इब्तिदा में
अल्लाह के साथ था। 3 सब कुछ कलाम के वसीले से
पैदा हुआ। मख़्लूक़ात की एक भी चीज़ उस के बग़ैर
पैदा नहीं हुई। 4 उस में ज़िन्दगी थी, और यह ज़िन्दगी
इन्सानों का नूर थी। 5 यह नूर तारीकी में चमकता है,
और तारीकी ने उस पर क़ाबू न पाया।

6 एक दिन अल्लाह ने अपना पैग़म्बर भेज दिया, एक
आदमी जिस का नाम यहया था। 7 वह नूर की गवाही
देने के लिए आया। मक़्सद यह था कि लोग उस
की गवाही की बिना पर ईमान लाएँ। 8 वह ख़ुद तो
नूर न था बल्कि उसे सिर्फ़ नूर की गवाही देनी थी।
9 हक़ीक़ी नूर जो हर शख़्स को रौशन करता है दुनिया
में आने को था।

10 गो कलाम दुनिया में था और दुनिया उस के
वसीले से पैदा हुई तो भी दुनिया ने उसे न पहचाना।
11 वह उस में आया जो उस का अपना था, लेकिन
उस के अपनों ने उसे क़बूल न किया। 12 तो भी कुछ
उसे क़बूल करके उस के नाम पर ईमान लाए। उन्हें
उस ने अल्लाह के फ़र्ज़न्द बनने का हक़ बख़्श दिया,
13 ऐसे फ़र्ज़न्द जो न फ़ित्री तौर पर, न किसी इन्सान
के मन्सूबे के तहत पैदा हुए बल्कि अल्लाह से।

14 कलाम इन्सान बन कर हमारे दरमियान
रिहाइशपज़ीर हुआ और हम ने उस के जलाल का
मुशाहदा किया। वह फ़ज़्ल और सच्चाई से मामूर था
और उस का जलाल बाप के इक्लौते फ़र्ज़न्द का सा
था।

15 यहया उस के बारे में गवाही दे कर पुकार उठा,
"यह वही है जिस के बारे में मैं ने कहा, एक मेरे बाद
आने वाला है जो मुझ से बड़ा है, क्यूँकि वह मुझ से
पहले था।"

16 उस की कस्रत से हम सब ने फ़ज़्ल पर फ़ज़्ल
पाया। 17 क्यूँकि शरीअत मूसा की मारिफ़त दी गई,
लेकिन अल्लाह का फ़ज़्ल और सच्चाई ईसा मसीह के
वसीले से क़ाइम हुई। 18 किसी ने कभी भी अल्लाह
को नहीं देखा। लेकिन इक्लौता फ़र्ज़न्द जो अल्लाह
की गोद में है उसी ने अल्लाह को हम पर ज़ाहिर किया
है।

यहया बपतिस्मा देने वाले का पैग़ाम

19 यह यहया की गवाही है जब यरूशलम के
यहूदियों ने इमामों और लावियों को उस के पास
भेज कर पूछा, "आप कौन हैं?"

20 उस ने इन्कार न किया बल्कि साफ़ तस्लीम
किया, "मैं मसीह नहीं हूँ।"

21 उन्हों ने पूछा, "तो फिर आप कौन हैं? क्या आप
इल्यास हैं?"

उस ने जवाब दिया, "नहीं, मैं वह नहीं हूँ।"

उन्हों ने सवाल किया, "क्या आप आने वाला नबी
हैं?"

उस ने कहा, "नहीं।"

22 "तो फिर हमें बताएँ कि आप कौन हैं? जिन्हों
ने हमें भेजा है उन्हें हमें कोई न कोई जवाब देना है।
आप ख़ुद अपने बारे में क्या कहते हैं?"

23 यहया ने यसायाह नबी का हवाला दे कर जवाब
दिया, "मैं रेगिस्तान में वह आवाज़ हूँ जो पुकार रही
है, रब का रास्ता सीधा बनाओ।"

24 भेजे गए लोग फ़रीसी फ़िर्क़े से ताल्लुक़ रखते थे।
25 उन्हों ने पूछा, "अगर आप न मसीह हैं, न इल्यास
या आने वाला नबी तो फिर आप बपतिस्मा क्यूँ दे
रहे हैं?"

26 यहया ने जवाब दिया, “मैं तो पानी से बपतिस्मा
देता हूँ, लेकिन तुम्हारे दरमियान ही एक खड़ा है जिस
को तुम नहीं जानते। 27 वही मेरे बाद आने वाला है
और मैं उस के जूतों के तस्मे भी खोलने के लाइक़
नहीं।”
28 यह यर्दन के पार बैत-अनियाह में हुआ जहाँ
यहया बपतिस्मा दे रहा था।

अल्लाह का लेला

29 अगले दिन यहया ने ईसा को अपने पास आते
देखा। उस ने कहा, “देखो, यह अल्लाह का लेला है
जो दुनिया का गुनाह उठा ले जाता है। 30 यह वही है
जिस के बारे में मैं ने कहा, ‘एक मेरे बाद आने वाला
है जो मुझ से बड़ा है, क्यूँकि वह मुझ से पहले था।’
31 मैं तो उसे नहीं जानता था, लेकिन मैं इस लिए आ
कर पानी से बपतिस्मा देने लगा ताकि वह इस्राईल
पर ज़ाहिर हो जाए।”
32 और यहया ने यह गवाही दी, “मैं ने देखा कि
रूह-उल-क़ुद्स कबूतर की तरह आसमान पर से
उतर कर उस पर ठहर गया। 33 मैं तो उसे नहीं जानता
था, लेकिन जब अल्लाह ने मुझे बपतिस्मा देने के लिए
भेजा तो उस ने मुझे बताया, ‘तू देखेगा कि रूह-उल-
क़ुद्स उतर कर किसी पर ठहर जाएगा। यह वही
होगा जो रूह-उल-क़ुद्स से बपतिस्मा देगा।’ 34 अब
मैं ने देखा है और गवाही देता हूँ कि यह अल्लाह का
फ़र्ज़न्द है।”

ईसा के पहले शागिर्द

35 अगले दिन यहया दुबारा वहीं खड़ा था। उस के
दो शागिर्द साथ थे। 36 उस ने ईसा को वहाँ से गुज़रते
हुए देखा तो कहा, “देखो, यह अल्लाह का लेला है!”
37 उस की यह बात सुन कर उस के दो शागिर्द ईसा
के पीछे हो लिए। 38 ईसा ने मुड़ कर देखा कि यह
मेरे पीछे चल रहे हैं तो उस ने पूछा, “तुम क्या चाहते
हो?” उन्हों ने कहा, “उस्ताद, आप कहाँ ठहरे हुए
हैं?”
39 उस ने जवाब दिया, “आओ, ख़ुद देख लो।”
चुनाँचे वह उस के साथ गए। उन्हों ने वह जगह देखी
जहाँ वह ठहरा हुआ था और दिन के बाक़ी वक़्त
उस के पास रहे। शाम के तक़रीबन चार बज गए थे।
40 शमाऊन पतरस का भाई अन्द्रियास उन दो
शागिर्दों में से एक था जो यहया की बात सुन कर
ईसा के पीछे हो लिए थे। 41 अब उस की पहली
मुलाक़ात उस के अपने भाई शमाऊन से हुई। उस
ने उसे बताया, “हमें मसीह मिल गया है।” (मसीह
का मतलब ‘मसह किया हुआ शख़्स’ है।) 42 फिर
वह उसे ईसा के पास ले गया।
उसे देख कर ईसा ने कहा, “तू यूहन्ना का बेटा
शमाऊन है। तू कैफ़ा कहलाएगा।” (इस का यूनानी
तर्जुमा पतरस यानी पत्थर है।)

ईसा फ़िलिप्पुस और नतनएल को बुलाता है

43 अगले दिन ईसा ने गलील जाने का इरादा किया।
फ़िलिप्पुस से मिला तो उस से कहा, “मेरे पीछे हो
ले।” 44 अन्द्रियास और पतरस की तरह फ़िलिप्पुस
का वतनी शहर बैत-सैदा था। 45 फ़िलिप्पुस नतनएल
से मिला, और उस ने उस से कहा, “हमें वही शख़्स
मिल गया जिस का ज़िक्र मूसा ने तौरेत और नबियों
ने अपने सहीफ़ों में किया है। उस का नाम ईसा बिन
यूसुफ़ है और वह नासरत का रहने वाला है।”
46 नतनएल ने कहा, “नासरत? क्या नासरत से कोई
अच्छी चीज़ निकल सकती है?” फ़िलिप्पुस ने जवाब
दिया, “आ और ख़ुद देख ले।”
47 जब ईसा ने नतन-एल को आते देखा तो उस ने
कहा, “लो, यह सच्चा इस्राईली है जिस में मक्र नहीं।”
48 नतन-एल ने पूछा, “आप मुझे कहाँ से जानते
हैं?”
ईसा ने जवाब दिया, “इस से पहले कि फ़िलिप्पुस
ने तुझे बुलाया मैं ने तुझे देखा। तू अन्जीर के दरख़्त
के साय में था।”
49 नतन-एल ने कहा, “उस्ताद, आप अल्लाह के
फ़र्ज़न्द हैं, आप इस्राईल के बादशाह हैं।”

50 ईसा ने उस से पूछा, “अच्छा, मेरी यह बात
सुन कर कि मैं ने तुझे अन्जीर के दरख़्त के साय
में देखा तू ईमान लाया है? तू इस से कहीं बड़ी बातें
देखेगा।” 51 उस ने बात जारी रखी, “मैं तुम को सच
बताता हूँ कि तुम आसमान को खुला और अल्लाह
के फ़रिश्तों को ऊपर चढ़ते और इब्न-ए-आदम पर
उतरते देखोगे।”

क़ाना में शादी

2 1 तीसरे दिन गलील के गाँव क़ाना में एक शादी
हुई। ईसा की माँ वहाँ थी 2 और ईसा और उस
के शागिर्दों को भी दावत दी गई थी। 3 मै ख़त्म हो
गई तो ईसा की माँ ने उस से कहा, “उन के पास मै
नहीं रही।”

4 ईसा ने जवाब दिया, “ऐ ख़ातून, मेरा आप से क्या
वास्ता? मेरा वक़्त अभी नहीं आया।”

5 लेकिन उस की माँ ने नौकरों को बताया, “जो
कुछ वह तुम को बताए वह करो।” 6 वहाँ पत्थर के
छः मटके पड़े थे जिन्हें यहूदी दीनी ग़ुसल के लिए
इस्तेमाल करते थे। हर एक में तक़रीबन 100 लिटर
की गुन्जाइश थी। 7 ईसा ने नौकरों से कहा, “मटकों
को पानी से भर दो।” चुनाँचे उन्हों ने उन्हें लबालब
भर दिया। 8 फिर उस ने कहा, “अब कुछ निकाल
कर ज़ियाफ़त का इन्तिज़ाम चलाने वाले के पास ले
जाओ।” उन्हों ने ऐसा ही किया। 9 जूँ ही ज़ियाफ़त
का इन्तिज़ाम चलाने वाले ने वह पानी चखा जो मै
में बदल गया था तो उस ने दूल्हे को बुलाया। (उसे
मालूम न था कि यह कहाँ से आई है, अगरचे उन
नौकरों को पता था जो उसे निकाल कर लाए थे।)
10 उस ने कहा, “हर मेज़बान पहले अच्छी क़िस्म की
मै पीने के लिए पेश करता है। फिर जब लोगों को
नशा चढ़ने लगे तो वह निस्बतन घटिया क़िस्म की
मै पिलाने लगता है। लेकिन आप ने अच्छी मै अब
तक रख छोड़ी है।”

11 यूँ ईसा ने गलील के क़ाना में यह पहला इलाही
निशान दिखा कर अपने जलाल का इज़हार किया।
यह देख कर उस के शागिर्द उस पर ईमान लाए।

12 इस के बाद वह अपनी माँ, अपने भाइयों और
अपने शागिर्दों के साथ कफ़र्नहूम को चला गया। वहाँ
वह थोड़े दिन रहे।

ईसा बैत-उल-मुक़द्दस में जाता है

13 जब यहूदी ईद-ए-फ़सह क़रीब आ गई तो ईसा
यरूशलम चला गया। 14 बैत-उल-मुक़द्दस में जा कर
उस ने देखा कि कई लोग उस में गाय-बैल, भेड़ें और
कबूतर बेच रहे हैं। दूसरे मेज़ पर बैठे ग़ैरमुल्की सिक्के
बैत-उल-मुक़द्दस के सिक्कों में बदल रहे हैं। 15 फिर
ईसा ने रस्सियों का कोड़ा बना कर सब को बैत-उल-
मुक़द्दस से निकाल दिया। उस ने भेड़ों और गाय-बैलों
को बाहर हाँक दिया, पैसे बदलने वालों के सिक्के
बिखेर दिए और उन की मेज़ें उलट दीं। 16 कबूतर
बेचने वालों को उस ने कहा, “इसे ले जाओ। मेरे
बाप के घर को मंडी में मत बदलो।” 17 यह देख
कर ईसा के शागिर्दों को कलाम-ए-मुक़द्दस का यह
हवाला याद आया कि “तेरे घर की ग़ैरत मुझे खा
जाएगी।”

18 यहूदियों ने जवाब में पूछा, “आप हमें क्या
इलाही निशान दिखा सकते हैं ताकि हमें यक़ीन आए
कि आप को यह करने का इख़तियार है?”

19 ईसा ने जवाब दिया, “इस मक़्दिस को ढा दो तो
मैं इसे तीन दिन के अन्दर दुबारा तामीर कर दूँगा।”

20 यहूदियों ने कहा, “बैत-उल-मुक़द्दस को तामीर
करने में 46 साल लग गए थे और आप उसे तीन दिन
में तामीर करना चाहते हैं?”

21 लेकिन जब ईसा ने “इस मक़्दिस” के अल्फ़ाज़
इस्तेमाल किए तो इस का मतलब उस का अपना
बदन था। 22 उस के मुर्दों में से जी उठने के बाद उस
के शागिर्दों को उस की यह बात याद आई। फिर वह
कलाम-ए-मुक़द्दस और उन बातों पर ईमान लाए जो
ईसा ने की थीं।

ईसा इन्सानी फ़ित्रत से वाक़िफ़ है

23 जब ईसा फ़सह की ईद के लिए यरूशलम में था
तो बहुत से लोग उस के पेशकरदा इलाही निशानों को
देख कर उस के नाम पर ईमान लाने लगे। 24 लेकिन
उस को उन पर एतिमाद नहीं था, क्यूँकि वह सब को
जानता था। 25 और उसे इन्सान के बारे में किसी की
गवाही की ज़रूरत नहीं थी, क्यूँकि वह जानता था
कि इन्सान के अन्दर क्या कुछ है।

नीकुदेमुस के साथ मुलाक़ात

3 1 फ़रीसी फ़िर्क़े का एक आदमी बनाम
नीकुदेमुस था जो यहूदी अदालत-ए-अलिया का
रुकन था। 2 वह रात के वक़्त ईसा के पास आया
और कहा, "उस्ताद, हम जानते हैं कि आप ऐसे
उस्ताद हैं जो अल्लाह की तरफ़ से आए हैं, क्यूँकि
जो इलाही निशान आप दिखाते हैं वह सिर्फ़ ऐसा
शख़्स ही दिखा सकता है जिस के साथ अल्लाह हो।"
3 ईसा ने जवाब दिया, "मैं तुझे सच बताता हूँ, सिर्फ़
वह शख़्स अल्लाह की बादशाही को देख सकता है जो
नए सिरे से पैदा हुआ हो।"
4 नीकुदेमुस ने एतिराज़ किया, "क्या मतलब? बूढ़ा
आदमी किस तरह नए सिरे से पैदा हो सकता है? क्या
वह दुबारा अपनी माँ के पेट में जा कर पैदा हो सकता
है?"
5 ईसा ने जवाब दिया, "मैं तुझे सच बताता हूँ, सिर्फ़
वह शख़्स अल्लाह की बादशाही में दाख़िल हो सकता
है जो पानी और रूह से पैदा हुआ हो। 6 जो कुछ
जिस्म से पैदा होता है वह जिस्मानी है, लेकिन जो
रूह से पैदा होता है वह रुहानी है। 7 इस लिए तू
ताज्जुब न कर कि मैं कहता हूँ, 'तुम्हें नए सिरे से
पैदा होना ज़रूर है।' 8 हवा जहाँ चाहे चलती है। तू
उस की आवाज़ तो सुनता है, लेकिन यह नहीं जानता
कि कहाँ से आती और कहाँ को जाती है। यही हालत
हर उस शख़्स की है जो रूह से पैदा हुआ है।"
9 नीकुदेमुस ने पूछा, "यह किस तरह हो सकता
है?"
10 ईसा ने जवाब दिया, "तू तो इस्राईल का उस्ताद
है। क्या इस के बावुजूद भी यह बातें नहीं समझता?
11 मैं तुझ को सच बताता हूँ, हम वह कुछ बयान
करते हैं जो हम जानते हैं और उस की गवाही देते
हैं जो हम ने ख़ुद देखा है। तो भी तुम लोग हमारी
गवाही क़बूल नहीं करते। 12 मैं ने तुम को दुनियावी
बातें सुनाई हैं और तुम उन पर ईमान नहीं रखते। तो
फिर तुम क्यूँकर ईमान लाओगे अगर तुम्हें आसमानी
बातों के बारे में बताऊँ? 13 आसमान पर कोई नहीं
चढ़ा सिवाए इब्न-ए-आदम के, जो आसमान से उतरा
है।
14 और जिस तरह मूसा ने रेगिस्तान में साँप को
लकड़ी पर लटका कर ऊँचा कर दिया उसी तरह
ज़रूर है कि इब्न-ए-आदम को भी ऊँचे पर चढ़ाया
जाए, 15 ताकि हर एक को जो उस पर ईमान लाएगा
अबदी ज़िन्दगी मिल जाए। 16 क्यूँकि अल्लाह ने दुनिया
से इतनी मुहब्बत रखी कि उस ने अपने इक्लौते
फ़र्ज़न्द को बख़्श दिया, ताकि जो भी उस पर ईमान
लाए हलाक न हो बल्कि अबदी ज़िन्दगी पाए।
17 क्यूँकि अल्लाह ने अपने फ़र्ज़न्द को इस लिए दुनिया
में नहीं भेजा कि वह दुनिया को मुजरिम ठहराए
बल्कि इस लिए कि वह उसे नजात दे।
18 जो भी उस पर ईमान लाया है उसे मुजरिम नहीं
क़रार दिया जाएगा, लेकिन जो ईमान नहीं रखता उसे
मुजरिम ठहराया जा चुका है। वजह यह है कि वह
अल्लाह के इक्लौते फ़र्ज़न्द के नाम पर ईमान नहीं
लाया। 19 और लोगों को मुजरिम ठहराने का सबब
यह है कि गो अल्लाह का नूर इस दुनिया में आया,
लेकिन लोगों ने नूर की निस्बत अंधेरे को ज़्यादा प्यार
किया, क्यूँकि उन के काम बुरे थे। 20 जो भी ग़लत
काम करता है वह नूर से दुश्मनी रखता है और उस
के क़रीब नहीं आता ताकि उस के बुरे कामों का
पोल न खुल जाए। 21 लेकिन जो सच्चा काम करता है

वह नूर के पास आता है ताकि ज़ाहिर हो जाए कि उस के काम अल्लाह के वसीले से हुए हैं।”

ईसा और यहया

22 इस के बाद ईसा अपने शागिर्दों के साथ यहूदिया के इलाक़े में गया। वहाँ वह कुछ देर के लिए उन के साथ ठहरा और लोगों को बपतिस्मा देने लगा। 23 उस वक़्त यहया भी शालेम के क़रीब वाक़े मक़ाम ऐनोन में बपतिस्मा दे रहा था, क्यूँकि वहाँ पानी बहुत था। उस जगह पर लोग बपतिस्मा लेने के लिए आते रहे। 24 (यहया को अब तक जेल में नहीं डाला गया था।)

25 एक दिन यहया के शागिर्दों का किसी यहूदी के साथ मुबाहसा छिड़ गया। ज़ेर-ए-ग़ौर मज़्मून दीनी ग़ुसल था। 26 वह यहया के पास आए और कहने लगे, “उस्ताद, जिस आदमी से आप की दरया-ए-यर्दन के पार मुलाक़ात हुई और जिस के बारे में आप ने गवाही दी कि वह मसीह है, वह भी लोगों को बपतिस्मा दे रहा है। अब सब लोग उसी के पास जा रहे हैं।”

27 यहया ने जवाब दिया, “हर एक को सिर्फ़ वह कुछ मिलता है जो उसे आसमान से दिया जाता है। 28 तुम ख़ुद इस के गवाह हो कि मैं ने कहा, ‘मैं मसीह नहीं हूँ बल्कि मुझे उस के आगे आगे भेजा गया है।’ 29 दूल्हा ही दुल्हन से शादी करता है, और दुल्हन उसी की है। उस का दोस्त सिर्फ़ साथ खड़ा होता है। और दूल्हे की आवाज़ सुन सुन कर दोस्त की ख़ुशी की इन्तिहा नहीं होती। मैं भी ऐसा ही दोस्त हूँ जिस की ख़ुशी पूरी हो गई है। 30 लाज़िम है कि वह बढ़ता जाए जबकि मैं घटता जाऊँ।

आसमान से आने वाला

31 जो आसमान पर से आया है उस का इख़तियार सब पर है। जो दुनिया से है उस का ताल्लुक़ दुनिया से ही है और वह दुनियावी बातें करता है। लेकिन जो आसमान पर से आया है उस का इख़तियार सब पर है। 32 जो कुछ उस ने ख़ुद देखा और सुना है उसी की गवाही देता है। तो भी कोई उस की गवाही को क़बूल नहीं करता। 33 लेकिन जिस ने उसे क़बूल किया उस ने इस की तस्दीक़ की है कि अल्लाह सच्चा है। 34 जिसे अल्लाह ने भेजा है वह अल्लाह की बातें सुनाता है, क्यूँकि अल्लाह अपना रूह नाप तोल कर नहीं देता। 35 बाप अपने फ़र्ज़न्द को प्यार करता है, और उस ने सब कुछ उस के सपुर्द कर दिया है। 36 चुनाँचे जो अल्लाह के फ़र्ज़न्द पर ईमान लाता है अबदी ज़िन्दगी उस की है। लेकिन जो फ़र्ज़न्द को रद्द करे वह इस ज़िन्दगी को नहीं देखेगा बल्कि अल्लाह का ग़ज़ब उस पर ठहरा रहेगा।”

ईसा और सामरी औरत

4 1 फ़रीसियों को इत्तिला मिली कि ईसा यहया की निस्बत ज़्यादा शागिर्द बना रहा और लोगों को बपतिस्मा दे रहा है, 2 हालाँकि वह ख़ुद बपतिस्मा नहीं देता था बल्कि उस के शागिर्द। 3 जब ख़ुदावन्द ईसा को यह बात मालूम हुई तो वह यहूदिया को छोड़ कर गलील को वापस चला गया। 4 वहाँ पहुँचने के लिए उसे सामरिया में से गुज़रना था।

5 चलते चलते वह एक शहर के पास पहुँच गया जिस का नाम सूख़ार था। यह उस ज़मीन के क़रीब था जो याक़ूब ने अपने बेटे यूसुफ़ को दी थी। 6 वहाँ याक़ूब का कुआँ था। ईसा सफ़र से थक गया था, इस लिए वह कुएँ पर बैठ गया। दोपहर के तक़रीबन बारह बज गए थे।

7 एक सामरी औरत पानी भरने आई। ईसा ने उस से कहा, “मुझे ज़रा पानी पिला।” 8 (उस के शागिर्द खाना ख़रीदने के लिए शहर गए हुए थे।)

9 सामरी औरत ने ताज्जुब किया, क्यूँकि यहूदी सामरियों के साथ ताल्लुक़ रखने से इन्कार करते हैं। उस ने कहा, “आप तो यहूदी हैं, और मैं सामरी औरत हूँ। आप किस तरह मुझ से पानी पिलाने की दरख़्वास्त कर सकते हैं?”

10 ईसा ने जवाब दिया, “अगर तू उस बख़्शिश से
वाक़िफ़ होती जो अल्लाह तुझ को देना चाहता है और
तू उसे जानती जो तुझ से पानी माँग रहा है तो तू उस
से माँगती और वह तुझे ज़िन्दगी का पानी देता।”
11 ख़ातून ने कहा, “ख़ुदावन्द, आप के पास तो
बाल्टी नहीं है और यह कुआँ गहरा है। आप को
ज़िन्दगी का यह पानी कहाँ से मिला? 12 क्या आप
हमारे बाप याक़ूब से बड़े हैं जिस ने हमें यह कुआँ
दिया और जो ख़ुद भी अपने बेटों और रेवड़ों समेत
उस के पानी से लुत्फ़अन्दोज़ हुआ?”
13 ईसा ने जवाब दिया, “जो भी इस पानी में से पिए
उसे दुबारा प्यास लगेगी। 14 लेकिन जिसे मैं पानी
पिला दूँ उसे बाद में कभी भी प्यास नहीं लगेगी।
बल्कि जो पानी मैं उसे दूँगा वह उस में एक चश्मा
बन जाएगा जिस से पानी फूट कर अबदी ज़िन्दगी
मुहय्या करेगा।”
15 औरत ने उस से कहा, “ख़ुदावन्द, मुझे यह पानी
पिला दें। फिर मुझे कभी भी प्यास नहीं लगेगी और
मुझे बार बार यहाँ आ कर पानी भरना नहीं पड़ेगा।”
16 ईसा ने कहा, “जा, अपने ख़ावन्द को बुला ला।”
17 औरत ने जवाब दिया, “मेरा कोई ख़ावन्द नहीं
है।”
ईसा ने कहा, “तू ने सहीह कहा कि मेरा ख़ावन्द
नहीं है, 18 क्यूँकि तेरी शादी पाँच मर्दों से हो चुकी है
और जिस आदमी के साथ तू अब रह रही है वह तेरा
शौहर नहीं है। तेरी बात बिलकुल दुरुस्त है।”
19 औरत ने कहा, “ख़ुदावन्द, मैं देखती हूँ कि आप
नबी हैं। 20 हमारे बापदादा तो इसी पहाड़ पर इबादत
करते थे जबकि आप यहूदी लोग इसरार करते हैं कि
यरूशलम वह मर्कज़ है जहाँ हमें इबादत करनी है।”
21 ईसा ने जवाब दिया, “ऐ ख़ातून, यक़ीन जान कि
वह वक़्त आएगा जब तुम न तो इस पहाड़ पर बाप
की इबादत करोगे, न यरूशलम में। 22 तुम सामरी
उस की परस्तिश करते हो जिसे नहीं जानते। इस के
मुक़ाबले में हम उस की परस्तिश करते हैं जिसे जानते
हैं, क्यूँकि नजात यहूदियों में से है। 23 लेकिन वह
वक़्त आ रहा है बल्कि पहुँच चुका है जब हक़ीक़ी
परस्तार रूह और सच्चाई से बाप की परस्तिश करेंगे,
क्यूँकि बाप ऐसे ही परस्तार चाहता है। 24 अल्लाह रूह
है, इस लिए लाज़िम है कि उस के परस्तार रूह और
सच्चाई से उस की परस्तिश करें।”
25 औरत ने उस से कहा, “मुझे मालूम है कि मसीह
यानी मसह किया हुआ शख़्स आ रहा है। जब वह
आएगा तो हमें सब कुछ बता देगा।”
26 इस पर ईसा ने उसे बताया, “मैं ही मसीह हूँ जो
तेरे साथ बात कर रहा हूँ।”
27 उसी लम्हे शागिर्द पहुँच गए। उन्हों ने जब देखा
कि ईसा एक औरत से बात कर रहा है तो ताज्जुब
किया। लेकिन किसी ने पूछने की जुरअत न की कि
“आप क्या चाहते हैं?” या “आप इस औरत से क्यूँ
बातें कर रहे हैं?”
28 औरत अपना घड़ा छोड़ कर शहर में चली गई
और वहाँ लोगों से कहने लगी, 29 “आओ, एक
आदमी को देखो जिस ने मुझे सब कुछ बता दिया है
जो मैं ने किया है। वह मसीह तो नहीं है?” 30 चुनाँचे
वह शहर से निकल कर ईसा के पास आए।
31 इतने में शागिर्द ज़ोर दे कर ईसा से कहने लगे,
“उस्ताद, कुछ खाना खा लें।”
32 लेकिन उस ने जवाब दिया, “मेरे पास खाने की
ऐसी चीज़ है जिस से तुम वाक़िफ़ नहीं हो।”
33 शागिर्द आपस में कहने लगे, “क्या कोई उस के
पास खाना ले कर आया?”
34 लेकिन ईसा ने उन से कहा, “मेरा खाना यह
है कि उस की मर्ज़ी पूरी करूँ जिस ने मुझे भेजा है
और उस का काम तक्मील तक पहुँचाऊँ। 35 तुम तो
ख़ुद कहते हो, ‘मज़ीद चार महीने तक फ़सल पक
जाएगी।’ लेकिन मैं तुम को बताता हूँ, अपनी नज़र
उठा कर खेतों पर ग़ौर करो। फ़सल पक गई है और
कटाई के लिए तय्यार है। 36 फ़सल की कटाई शुरू
हो चुकी है। कटाई करने वाले को मज़दूरी मिल रही है
और वह फ़सल को अबदी ज़िन्दगी के लिए जमा कर
रहा है ताकि बीज बोने वाला और कटाई करने वाला

दोनों मिल कर ख़ुशी मना सकें। 37 यूँ यह कहावत
दुरुस्त साबित हो जाती है कि 'एक बीज बोता और
दूसरा फ़सल काटता है।' 38 मैं ने तुम को उस फ़सल
की कटाई करने के लिए भेज दिया है जिसे तय्यार
करने के लिए तुम ने मेहनत नहीं की। औरों ने ख़ूब
मेहनत की है और तुम इस से फ़ाइदा उठा कर फ़सल
जमा कर सकते हो।"

39 उस शहर के बहुत से सामरी ईसा पर ईमान लाए।
वजह यह थी कि उस औरत ने उस के बारे में यह
गवाही दी थी, "उस ने मुझे सब कुछ बता दिया जो
मैं ने किया है।" 40 जब वह उस के पास आए तो
उन्हों ने मिन्नत की, "हमारे पास ठहरें।" चुनाँचे वह
दो दिन वहाँ रहा।

41 और उस की बातें सुन कर मज़ीद बहुत से लोग
ईमान लाए। 42 उन्हों ने औरत से कहा, "अब हम तेरी
बातों की बिना पर ईमान नहीं रखते बल्कि इस लिए
कि हम ने ख़ुद सुन और जान लिया है कि वाक़ई
दुनिया का नजातदहिन्दा यही है।"

अफ़सर के बेटे की शिफ़ा

43 वहाँ दो दिन गुज़ारने के बाद ईसा गलील को
चला गया। 44 उस ने ख़ुद गवाही दे कर कहा था कि
नबी की उस के अपने वतन में इज़्ज़त नहीं होती।
45 अब जब वह गलील पहुँचा तो मक़ामी लोगों ने
उसे ख़ुशआमदीद कहा, क्यूँकि वह फ़सह की ईद
मनाने के लिए यरूशलम आए थे और उन्हों ने सब
कुछ देखा जो ईसा ने वहाँ किया था।

46 फिर वह दुबारा क़ाना में आया जहाँ उस ने पानी
को मै में बदल दिया था। उस इलाक़े में एक शाही
अफ़सर था जिस का बेटा कफ़र्नहूम में बीमार पड़ा
था। 47 जब उसे इत्तिला मिली कि ईसा यहूदिया से
गलील पहुँच गया है तो वह उस के पास गया और
गुज़ारिश की, "काना से मेरे पास आ कर मेरे बेटे को
शिफ़ा दें, क्यूँकि वह मरने को है।" 48 ईसा ने उस से
कहा, "जब तक तुम लोग इलाही निशान और मोजिज़े
नहीं देखते ईमान नहीं लाते।"

49 शाही अफ़सर ने कहा, "ख़ुदावन्द आएँ, इस से
पहले कि मेरा लड़का मर जाए।"

50 ईसा ने जवाब दिया, "जा, तेरा बेटा ज़िन्दा
रहेगा।"

आदमी ईसा की बात पर ईमान लाया और अपने
घर चला गया। 51 वह अभी रास्ते में था कि उस के
नौकर उस से मिले। उन्हों ने उसे इत्तिला दी कि बेटा
ज़िन्दा है।

52 उस ने उन से पूछगछ की कि उस की तबीअत
किस वक़्त से बेहतर होने लगी थी। उन्हों ने जवाब
दिया, "बुख़ार कल दोपहर एक बजे उतर गया।"
53 फिर बाप ने जान लिया कि उसी वक़्त ईसा ने उसे
बताया था, "तुम्हारा बेटा ज़िन्दा रहेगा।" और वह
अपने पूरे घराने समेत उस पर ईमान लाया।

54 यूँ ईसा ने अपना दूसरा इलाही निशान उस वक़्त
दिखाया जब वह यहूदिया से गलील में आया था।

बैत-उल-मुक़द्दस के हौज़ पर शिफ़ा

5 1 कुछ देर के बाद ईसा किसी यहूदी ईद के
मौक़े पर यरूशलम गया। 2 शहर में एक हौज़ था
जिस का नाम अरामी ज़बान में बैत-हसदा था। उस
के पाँच बड़े बरामदे थे और वह शहर के उस दरवाज़े
के क़रीब था जिस का नाम 'भेड़ों का दरवाज़ा' है।
3 इन बरामदों में बेशुमार माज़ूर लोग पड़े रहते थे। यह
अंधे, लंगड़े और मफ़्लूज पानी के हिलने के इन्तिज़ार
में रहते थे। 4 [क्यूँकि गाहे-ब-गाहे रब का फ़रिश्ता
उतर कर पानी को हिला देता था। जो भी उस वक़्त
उस में पहले दाख़िल हो जाता उसे शिफ़ा मिल जाती
थी ख़्वाह उस की बीमारी कोई भी क्यूँ न होती।]
5 मरीज़ों में से एक आदमी 38 साल से माज़ूर था।
6 जब ईसा ने उसे वहाँ पड़ा देखा और उसे मालूम
हुआ कि यह इतनी देर से इस हालत में है तो उस ने
पूछा, "क्या तू तन्दुरुस्त होना चाहता है?"

7 उस ने जवाब दिया, "ख़ुदावन्द, यह मुश्किल है।
मेरा कोई साथी नहीं जो मुझे उठा कर पानी में जब
उसे हिलाया जाता है ले जाए। इस लिए मेरे वहाँ

पहुँचने में इतनी देर लग जाती है कि कोई और मुझ
से पहले पानी में उतर जाता है।”
8 ईसा ने कहा, “उठ, अपना बिस्तर उठा कर चल
फिर!” 9 वह आदमी फ़ौरन बहाल हो गया। उस ने
अपना बिस्तर उठाया और चलने फिरने लगा।
यह वाक़िआ सबत के दिन हुआ। 10 इस लिए
यहूदियों ने शिफ़ायाब आदमी को बताया, “आज
सबत का दिन है। आज बिस्तर उठाना मना है।”
11 लेकिन उस ने जवाब दिया, “जिस आदमी ने मुझे
शिफ़ा दी उस ने मुझे बताया, ‘अपना बिस्तर उठा कर
चल फिर’।”
12 उन्हों ने सवाल किया, “वह कौन है जिस ने तुझे
यह कुछ बताया?” 13 लेकिन शिफ़ायाब आदमी को
मालूम न था, क्यूँकि ईसा हुजूम के सबब से चुपके
से वहाँ से चला गया था।
14 बाद में ईसा उसे बैत-उल-मुक़द्दस में मिला। उस
ने कहा, “अब तू बहाल हो गया है। फिर गुनाह न
करना, ऐसा न हो कि तेरा हाल पहले से भी बदतर
हो जाए।”
15 उस आदमी ने उसे छोड़ कर यहूदियों को इत्तिला
दी, “ईसा ने मुझे शिफ़ा दी।” 16 इस पर यहूदी उस को
सताने लगे, क्यूँकि उस ने उस आदमी को सबत के
दिन बहाल किया था। 17 लेकिन ईसा ने उन्हें जवाब
दिया, “मेरा बाप आज तक काम करता आया है,
और मैं भी ऐसा करता हूँ।”
18 यह सुन कर यहूदी उसे क़त्ल करने की मज़ीद
कोशिश करने लगे, क्यूँकि उस ने न सिर्फ़ सबत
के दिन को मन्सूख़ क़रार दिया था बल्कि अल्लाह
को अपना बाप कह कर अपने आप को अल्लाह के
बराबर ठहराया था।

फ़र्ज़न्द का इख़तियार

19 ईसा ने उन्हें जवाब दिया, “मैं तुम को सच
बताता हूँ कि फ़र्ज़न्द अपनी मर्ज़ी से कुछ नहीं कर
सकता। वह सिर्फ़ वह कुछ करता है जो वह बाप
को करते देखता है। जो कुछ बाप करता है वही
फ़र्ज़न्द भी करता है, 20 क्यूँकि बाप फ़र्ज़न्द को प्यार
करता और उसे सब कुछ दिखाता है जो वह ख़ुद
करता है। हाँ, वह फ़र्ज़न्द को इन से भी अज़ीम काम
दिखाएगा। फिर तुम और भी ज़्यादा हैरतज़दा होगे।
21 क्यूँकि जिस तरह बाप मुर्दों को ज़िन्दा करता है
उसी तरह फ़र्ज़न्द भी जिन्हें चाहता है ज़िन्दा कर देता
है। 22 और बाप किसी की भी अदालत नहीं करता
बल्कि उस ने अदालत का पूरा इन्तिज़ाम फ़र्ज़न्द के
सपुर्द कर दिया है 23 ताकि सब उसी तरह फ़र्ज़न्द की
इज़्ज़त करें जिस तरह वह बाप की इज़्ज़त करते हैं।
जो फ़र्ज़न्द की इज़्ज़त नहीं करता वह बाप की भी
इज़्ज़त नहीं करता जिस ने उसे भेजा है।
24 मैं तुम को सच बताता हूँ, जो भी मेरी बात सुन
कर उस पर ईमान लाता है जिस ने मुझे भेजा है अबदी
ज़िन्दगी उस की है। उसे मुजरिम नहीं ठहराया जाएगा
बल्कि वह मौत की गिरिफ़्त से निकल कर ज़िन्दगी
में दाख़िल हो गया है। 25 मैं तुम को सच बताता हूँ
कि एक वक़्त आने वाला है बल्कि आ चुका है जब
मुर्दे अल्लाह के फ़र्ज़न्द की आवाज़ सुनेंगे। और जितने
सुनेंगे वह ज़िन्दा हो जाएंगे। 26 क्यूँकि जिस तरह
बाप ज़िन्दगी का मम्बा है उसी तरह उस ने अपने
फ़र्ज़न्द को ज़िन्दगी का मम्बा बना दिया है। 27 साथ
साथ उस ने उसे अदालत करने का इख़तियार भी
दे दिया है, क्यूँकि वह इब्न-ए-आदम है। 28 यह सुन
कर ताज्जुब न करो क्यूँकि एक वक़्त आ रहा है जब
तमाम मुर्दे उस की आवाज़ सुन कर 29 क़ब्रों में से
निकल आएँगे। जिन्हों ने नेक काम किया वह जी
उठ कर ज़िन्दगी पाएँगे जबकि जिन्हों ने बुरा काम
किया वह जी तो उठेंगे लेकिन उन की अदालत की
जाएगी।

ईसा के गवाह

30 मैं अपनी मर्ज़ी से कुछ नहीं कर सकता बल्कि
जो कुछ बाप से सुनता हूँ उस के मुताबिक़ अदालत
करता हूँ। और मेरी अदालत रास्त है क्यूँकि मैं अपनी

मर्ज़ी करने की कोशिश नहीं करता बल्कि उसी की
जिस ने मुझे भेजा है।
31 अगर मैं ख़ुद अपने बारे में गवाही देता तो मेरी
गवाही मोतबर न होती। 32 लेकिन एक और है जो मेरे
बारे में गवाही दे रहा है और मैं जानता हूँ कि मेरे बारे
में उस की गवाही सच्ची और मोतबर है। 33 तुम ने पता
करने के लिए अपने लोगों को यहया के पास भेजा
है और उस ने हक़ीक़त की तस्दीक़ की है। 34 बेशक
मुझे किसी इन्सानी गवाह की ज़रूरत नहीं है, लेकिन
मैं यह इस लिए बता रहा हूँ ताकि तुम को नजात मिल
जाए। 35 यहया एक जलता हुआ चराग़ था जो रौशनी
देता था, और कुछ देर के लिए तुम ने उस की रौशनी
में ख़ुशी मनाना पसन्द किया। 36 लेकिन मेरे पास एक
और गवाह है जो यहया की निस्बत ज़्यादा अहम है
यानी वह काम जो बाप ने मुझे मुकम्मल करने के
लिए दे दिया। यही काम जो मैं कर रहा हूँ मेरे बारे
में गवाही देता है कि बाप ने मुझे भेजा है। 37 इस के
इलावा बाप ने ख़ुद जिस ने मुझे भेजा है मेरे बारे में
गवाही दी है। अफ़सोस, तुम ने कभी उस की आवाज़
नहीं सुनी, न उस की शक्ल-ओ-सूरत देखी, 38 और
उस का कलाम तुम्हारे अन्दर नहीं रहता, क्यूँकि तुम
उस पर ईमान नहीं रखते जिसे उस ने भेजा है। 39 तुम
अपने सहीफ़ों में ढूँडते रहते हो क्यूँकि समझते हो
कि उन से तुम्हें अबदी ज़िन्दगी हासिल है। लेकिन
यही मेरे बारे में गवाही देते हैं! 40 तो भी तुम ज़िन्दगी
पाने के लिए मेरे पास आना नहीं चाहते।
41 मैं इन्सानों से इज़्ज़त नहीं चाहता, 42 लेकिन मैं
तुम को जानता हूँ कि तुम में अल्लाह की मुहब्बत नहीं।
43 अगरचे मैं अपने बाप के नाम में आया हूँ तो भी
तुम मुझे क़बूल नहीं करते। इस के मुक़ाबले में अगर
कोई अपने नाम में आएगा तो तुम उसे क़बूल करोगे।
44 कोई अजब नहीं कि तुम ईमान नहीं ला सकते।
क्यूँकि तुम एक दूसरे से इज़्ज़त चाहते हो जबकि तुम
वह इज़्ज़त पाने की कोशिश ही नहीं करते जो वाहिद
ख़ुदा से मिलती है। 45 लेकिन यह न समझो कि मैं बाप
के सामने तुम पर इल्ज़ाम लगाऊँगा। एक और है जो
तुम पर इल्ज़ाम लगा रहा है यानी मूसा, जिस से तुम
उम्मीद रखते हो। 46 अगर तुम वाक़ई मूसा पर ईमान
रखते तो ज़रूर मुझ पर भी ईमान रखते, क्यूँकि उस
ने मेरे ही बारे में लिखा। 47 लेकिन चूँकि तुम वह कुछ
नहीं मानते जो उस ने लिखा है तो मेरी बातें क्यूँकर
मान सकते हो!”

ईसा बड़े हुजूम को खाना खिलाता है

6 1 इस के बाद ईसा ने गलील की झील को पार
किया। (झील का दूसरा नाम तिबरियास था।)
2 एक बड़ा हुजूम उस के पीछे लग गया था, क्यूँकि
उस ने इलाही निशान दिखा कर मरीज़ों को शिफ़ा
दी थी और लोगों ने इस का मुशाहदा किया था।
3 फिर ईसा पहाड़ पर चढ़ कर अपने शागिर्दों के साथ
बैठ गया। 4 (यहूदी ईद-ए-फ़सह क़रीब आ गई थी।)
5 वहाँ बैठे ईसा ने अपनी नज़र उठाई तो देखा कि एक
बड़ा हुजूम पहुँच रहा है। उस ने फ़िलिप्पुस से पूछा,
“हम कहाँ से खाना ख़रीदें ताकि उन्हें खिलाएँ?”
6 (यह उस ने फ़िलिप्पुस को आज़माने के लिए कहा।
ख़ुद तो वह जानता था कि क्या करेगा।)
7 फ़िलिप्पुस ने जवाब दिया, “अगर हर एक को
सिर्फ़ थोड़ा सा मिले तो भी चाँदी के 200 सिक्के काफ़ी
नहीं होंगे।”
8 फिर शमाऊन पतरस का भाई अन्द्रियास बोल
उठा, 9 “यहाँ एक लड़का है जिस के पास जौ की
पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं। मगर इतने लोगों
में यह क्या हैं!”
10 ईसा ने कहा, “लोगों को बिठा दो।” उस जगह
बहुत घास थी। चुनाँचे सब बैठ गए। (सिर्फ़ मर्दों
की तादाद 5,000 थी।) 11 ईसा ने रोटियाँ ले कर
शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उन्हें बैठे हुए लोगों
में तक़्सीम करवाया। यही कुछ उस ने मछलियों के
साथ भी किया। और सब ने जी भर कर रोटी खाई।
12 जब सब सेर हो गए तो ईसा ने शागिर्दों को बताया,
“अब बचे हुए टुकड़े जमा करो ताकि कुछ ज़ाए न हो
जाए।” 13 जब उन्हों ने बचा हुआ खाना इकट्ठा किया

तो जौ की पाँच रोटियों के टुकड़ों से बारह टोकरे भर
गए।
14 जब लोगों ने ईसा को यह इलाही निशान दिखाते
देखा तो उन्हों ने कहा, “यक़ीनन यह वही नबी है
जिसे दुनिया में आना था।” 15 ईसा को मालूम हुआ
कि वह आ कर उसे ज़बरदस्ती बादशाह बनाना
चाहते हैं, इस लिए वह दुबारा उन से अलग हो कर
अकेला ही किसी पहाड़ पर चढ़ गया।

ईसा पानी पर चलता है

16 शाम को शागिर्द झील के पास गए 17 और कश्ती
पर सवार हो कर झील के पार शहर कफ़र्नहूम के
लिए रवाना हुए। अंधेरा हो चुका था और ईसा अब
तक उन के पास वापस नहीं आया था। 18 तेज़ हवा
के बाइस झील में लहरें उठने लगीं। 19 कश्ती को
खेते खेते शागिर्द चार या पाँच किलोमीटर का सफ़र
तै कर चुके थे कि अचानक ईसा नज़र आया। वह
पानी पर चलता हुआ कश्ती की तरफ़ बढ़ रहा था।
शागिर्द दहशतज़दा हो गए। 20 लेकिन उस ने उन से
कहा, “मैं ही हूँ। ख़ौफ़ न करो।” 21 वह उसे कश्ती
में बिठाने पर आमादा हुए। और कश्ती उसी लम्हे
उस जगह पहुँच गई जहाँ वह जाना चाहते थे।

लोग ईसा को ढूँडते हैं

22 हुजूम तो झील के पार रह गया था। अगले दिन
लोगों को पता चला कि शागिर्द एक ही कश्ती ले
कर चले गए हैं और कि उस वक़्त ईसा कश्ती में
नहीं था। 23 फिर कुछ कश्तियाँ तिबरियास से उस
मक़ाम के क़रीब पहुँचीं जहाँ ख़ुदावन्द ईसा ने रोटी
के लिए शुक्रगुज़ारी की दुआ करके उसे लोगों को
खिलाया था। 24 जब लोगों ने देखा कि न ईसा और
न उस के शागिर्द वहाँ हैं तो वह कश्तियों पर सवार
हो कर ईसा को ढूँडते ढूँडते कफ़र्नहूम पहुँचे।

ईसा ज़िन्दगी की रोटी है

25 जब उन्हों ने उसे झील के पार पाया तो पूछा,
“उस्ताद, आप किस तरह यहाँ पहुँच गए?”
26 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुम को सच बताता हूँ,
तुम मुझे इस लिए नहीं ढूँड रहे कि इलाही निशान
देखे हैं बल्कि इस लिए कि तुम ने जी भर कर रोटी
खाई है। 27 ऐसी ख़ुराक के लिए जिद्द-ओ-जहद न
करो जो गल सड़ जाती है, बल्कि ऐसी के लिए जो
अबदी ज़िन्दगी तक क़ाइम रहती है और जो इब्न-
ए-आदम तुम को देगा, क्यूँकि ख़ुदा बाप ने उस पर
अपनी तस्दीक़ की मुहर लगाई है।”
28 इस पर उन्हों ने पूछा, “हमें क्या करना चाहिए
ताकि अल्लाह का मतलूबा काम करें?”
29 ईसा ने जवाब दिया, “अल्लाह का काम यह है
कि तुम उस पर ईमान लाओ जिसे उस ने भेजा है।”
30 उन्हों ने कहा, “तो फिर आप क्या इलाही निशान
दिखाएँगे जिसे देख कर हम आप पर ईमान लाएँ?
आप क्या काम सरअन्जाम देंगे? 31 हमारे बापदादा ने
तो रेगिस्तान में मन खाया। चुनाँचे कलाम-ए-मुक़द्दस
में लिखा है कि मूसा ने उन्हें आसमान से रोटी
खिलाई।”
32 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुम को सच बताता
हूँ कि ख़ुद मूसा ने तुम को आसमान से रोटी नहीं
खिलाई बल्कि मेरे बाप ने। वही तुम को आसमान
से हक़ीक़ी रोटी देता है। 33 क्यूँकि अल्लाह की रोटी
वह शख़्स है जो आसमान पर से उतर कर दुनिया को
ज़िन्दगी बख़्शता है।”
34 उन्हों ने कहा, “ख़ुदावन्द, हमें यह रोटी हर वक़्त
दिया करें।”
35 जवाब में ईसा ने कहा, “मैं ही ज़िन्दगी की रोटी
हूँ। जो मेरे पास आए उसे फिर कभी भूक नहीं लगेगी।
और जो मुझ पर ईमान लाए उसे फिर कभी प्यास नहीं
लगेगी। 36 लेकिन जिस तरह मैं तुम को बता चुका
हूँ, तुम ने मुझे देखा और फिर भी ईमान नहीं लाए।
37 जितने भी बाप ने मुझे दिए हैं वह मेरे पास आएँगे

और जो भी मेरे पास आएगा उसे मैं हरगिज़ निकाल
न दूँगा। 38 क्यूँकि मैं अपनी मर्ज़ी पूरी करने के लिए
आसमान से नहीं उतरा बल्कि उस की जिस ने मुझे
भेजा है। 39 और जिस ने मुझे भेजा उस की मर्ज़ी यह
है कि जितने भी उस ने मुझे दिए हैं उन में से मैं एक
को भी खो न दूँ बल्कि सब को क़ियामत के दिन मुर्दों
में से फिर ज़िन्दा करूँ। 40 क्यूँकि मेरे बाप की मर्ज़ी
यही है कि जो भी फ़र्ज़न्द को देख कर उस पर ईमान
लाए उसे अबदी ज़िन्दगी हासिल हो। ऐसे शख़्स को
मैं क़ियामत के दिन मुर्दों में से फिर ज़िन्दा करूँगा।"
41 यह सुन कर यहूदी इस लिए बुड़बुड़ाने लगे कि
उस ने कहा था, "मैं ही वह रोटी हूँ जो आसमान पर
से उतर आई है।" 42 उन्हों ने एतिराज़ किया, "क्या
यह ईसा बिन यूसुफ़ नहीं, जिस के बाप और माँ से
हम वाक़िफ़ हैं? वह क्यूँकर कह सकता है कि 'मैं
आसमान से उतरा हूँ'?"
43 ईसा ने जवाब में कहा, "आपस में मत
बुड़बुड़ाओ। 44 सिर्फ़ वह शख़्स मेरे पास आ सकता
है जिसे बाप जिस ने मुझे भेजा है मेरे पास खैंच लाया
है। ऐसे शख़्स को मैं क़ियामत के दिन मुर्दों में से
फिर ज़िन्दा करूँगा। 45 नबियों के सहीफ़ों में लिखा
है, 'सब अल्लाह से तालीम पाएँगे।' जो भी अल्लाह की
सुन कर उस से सीखता है वह मेरे पास आ जाता
है। 46 इस का मतलब यह नहीं कि किसी ने कभी
बाप को देखा। सिर्फ़ एक ही ने बाप को देखा है,
वही जो अल्लाह की तरफ़ से है। 47 मैं तुम को सच
बताता हूँ कि जो ईमान रखता है उसे अबदी ज़िन्दगी
हासिल है। 48 ज़िन्दगी की रोटी मैं हूँ। 49 तुम्हारे
बापदादा रेगिस्तान में मन खाते रहे, तो भी वह मर
गए। 50 लेकिन यहाँ आसमान से उतरने वाली ऐसी
रोटी है जिसे खा कर इन्सान नहीं मरता। 51 मैं ही
ज़िन्दगी की वह रोटी हूँ जो आसमान से उतर आई
है। जो इस रोटी से खाए वह अबद तक ज़िन्दा रहेगा।
और यह रोटी मेरा गोश्त है जो मैं दुनिया को ज़िन्दगी
मुहय्या करने की ख़ातिर पेश करूँगा।" 52 यहूदी बड़ी
सरगर्मी से एक दूसरे से बह्स करने लगे, "यह आदमी
हमें किस तरह अपना गोश्त खिला सकता है?"
53 ईसा ने उन से कहा, "मैं तुम को सच बताता हूँ
कि सिर्फ़ इब्न-ए-आदम का गोश्त खाने और उस का
ख़ून पीने ही से तुम में ज़िन्दगी होगी। 54 जो मेरा गोश्त
खाए और मेरा ख़ून पिए अबदी ज़िन्दगी उस की है
और मैं उसे क़ियामत के दिन मुर्दों में से फिर ज़िन्दा
करूँगा। 55 क्यूँकि मेरा गोश्त हक़ीक़ी ख़ुराक और
मेरा ख़ून हक़ीक़ी पीने की चीज़ है। 56 जो मेरा गोश्त
खाता और मेरा ख़ून पीता है वह मुझ में क़ाइम रहता
है और मैं उस में। 57 मैं उस ज़िन्दा बाप की वजह से
ज़िन्दा हूँ जिस ने मुझे भेजा। इसी तरह जो मुझे खाता
है वह मेरी ही वजह से ज़िन्दा रहेगा। 58 यही वह रोटी
है जो आसमान से उतरी है। तुम्हारे बापदादा मन खाने
के बावुजूद मर गए, लेकिन जो यह रोटी खाएगा वह
अबद तक ज़िन्दा रहेगा।"
59 ईसा ने यह बातें उस वक़्त कीं जब वह कफ़र्नहूम
में यहूदी इबादतख़ाने में तालीम दे रहा था।

अबदी ज़िन्दगी की बातें

60 यह सुन कर उस के बहुत से शागिर्दों ने कहा,
"यह बातें नागवार हैं। कौन इन्हें सुन सकता है!"
61 ईसा को मालूम था कि मेरे शागिर्द मेरे बारे में
बुड़बुड़ा रहे हैं, इस लिए उस ने कहा, "क्या तुम को
इन बातों से ठेस लगी है? 62 तो फिर तुम क्या सोचोगे
जब इब्न-ए-आदम को ऊपर जाते देखोगे जहाँ वह
पहले था? 63 अल्लाह का रूह ही ज़िन्दा करता है
जबकि जिस्मानी ताक़त का कोई फ़ाइदा नहीं होता।
जो बातें मैं ने तुम को बताई हैं वह रूह और ज़िन्दगी
हैं। 64 लेकिन तुम में से कुछ हैं जो ईमान नहीं रखते।"
(ईसा तो शुरू से ही जानता था कि कौन कौन ईमान
नहीं रखते और कौन मुझे दुश्मन के हवाले करेगा।)
65 फिर उस ने कहा, "इस लिए मैं ने तुम को बताया
कि सिर्फ़ वह शख़्स मेरे पास आ सकता है जिसे बाप
की तरफ़ से यह तौफ़ीक़ मिले।"

66 उस वक़्त से उस के बहुत से शागिर्द उलटे पाँओ
फिर गए और आइन्दा को उस के साथ न चले। 67 तब
ईसा ने बारह शागिर्दों से पूछा, “क्या तुम भी चले
जाना चाहते हो?”
68 शमाऊन पतरस ने जवाब दिया, “ख़ुदावन्द, हम
किस के पास जाएँ? अबदी ज़िन्दगी की बातें तो आप
ही के पास हैं। 69 और हम ने ईमान ला कर जान लिया
है कि आप अल्लाह के क़ुद्दूस हैं।”
70 जवाब में ईसा ने कहा, “क्या मैं ने तुम बारह
को नहीं चुना? तो भी तुम में से एक शख़्स शैतान
है।” 71 (वह शमाऊन इस्करियोती के बेटे यहूदाह की
तरफ़ इशारा कर रहा था जो बारह शागिर्दों में से एक
था और जिस ने बाद में उसे दुश्मन के हवाले कर
दिया।)

ईसा और उस के भाई

7 1 इस के बाद ईसा ने गलील के इलाक़े में इधर
उधर सफ़र किया। वह यहूदिया में फिरना नहीं
चाहता था क्यूँकि वहाँ के यहूदी उसे क़त्ल करने
का मौक़ा ढूँड रहे थे। 2 लेकिन जब यहूदी ईद बनाम
झोंपड़ियों की ईद क़रीब आई 3 तो उस के भाइयों
ने उस से कहा, “यह जगह छोड़ कर यहूदिया चला
जा ताकि तेरे पैरोकार भी वह मोजिज़े देख लें जो
तू करता है। 4 जो शख़्स चाहता है कि अवाम उसे
जाने वह पोशीदगी में काम नहीं करता। अगर तू इस
क़िस्म का मोजिज़ाना काम करता है तो अपने आप
को दुनिया पर ज़ाहिर कर।” 5 (असल में ईसा के भाई
भी उस पर ईमान नहीं रखते थे।)
6 ईसा ने उन्हें बताया, “अभी वह वक़्त नहीं आया
जो मेरे लिए मौज़ूँ है। लेकिन तुम जा सकते हो, तुम्हारे
लिए हर वक़्त मौज़ूँ है। 7 दुनिया तुम से दुश्मनी नहीं
रख सकती। लेकिन मुझ से वह दुश्मनी रखती है,
क्यूँकि मैं उस के बारे में यह गवाही देता हूँ कि उस
के काम बुरे हैं। 8 तुम ख़ुद ईद पर जाओ। मैं नहीं
जाऊँगा, क्यूँकि अभी वह वक़्त नहीं आया जो मेरे
लिए मौज़ूँ है।” 9 यह कह कर वह गलील में ठहरा
रहा।

ईसा झोंपड़ियों की ईद पर

10 लेकिन बाद में, जब उस के भाई ईद पर जा चुके
थे तो वह भी गया, अगरचे अलानिया नहीं बल्कि
ख़ुफ़िया तौर पर। 11 यहूदी ईद के मौक़े पर उसे तलाश
कर रहे थे। वह पूछते रहे, “वह आदमी कहाँ है?”
12 हुजूम में से कई लोग ईसा के बारे में बुड़बुड़ा
रहे थे। बाज़ ने कहा, “वह अच्छा बन्दा है।” लेकिन
दूसरों ने एतिराज़ किया, “नहीं, वह अवाम को
बहकाता है।” 13 लेकिन किसी ने भी उस के बारे
में खुल कर बात न की, क्यूँकि वह यहूदियों से डरते
थे।
14 ईद का आधा हिस्सा गुज़र चुका था जब ईसा
बैत-उल-मुक़द्दस में जा कर तालीम देने लगा। 15 उसे
सुन कर यहूदी हैरतज़दा हुए और कहा, “यह आदमी
किस तरह इतना इल्म रखता है हालाँकि इस ने कहीं
से भी तालीम हासिल नहीं की!”
16 ईसा ने जवाब दिया, “जो तालीम मैं देता हूँ वह
मेरी अपनी नहीं बल्कि उस की है जिस ने मुझे भेजा।
17 जो उस की मर्ज़ी पूरी करने के लिए तय्यार है वह
जान लेगा कि मेरी तालीम अल्लाह की तरफ़ से है
या कि मेरी अपनी तरफ़ से। 18 जो अपनी तरफ़ से
बोलता है वह अपनी ही इज़्ज़त चाहता है। लेकिन जो
अपने भेजने वाले की इज़्ज़त-ओ-जलाल बढ़ाने की
कोशिश करता है वह सच्चा है और उस में नारास्ती
नहीं है। 19 क्या मूसा ने तुम को शरीअत नहीं दी? तो
फिर तुम मुझे क़त्ल करने की कोशिश क्यूँ कर रहे
हो?”
20 हुजूम ने जवाब दिया, “तुम किसी बदरुह की
गिरिफ़्त में हो। कौन तुम्हें क़त्ल करने की कोशिश
कर रहा है?”
21 ईसा ने उन से कहा, “मैं ने सबत के दिन एक ही
मोजिज़ा किया और तुम सब हैरतज़दा हुए। 22 लेकिन
तुम भी सबत के दिन काम करते हो। तुम उस दिन

अपने बच्चों का ख़तना करवाते हो। और यह रस्म
मूसा की शरीअत के मुताबिक़ ही है, अगरचे यह मूसा
से नहीं बल्कि हमारे बापदादा इब्राहीम, इस्हाक़ और
याक़ूब से शुरू हुई। 23 क्यूँकि शरीअत के मुताबिक़
लाज़िम है कि बच्चे का ख़तना आठवें दिन करवाया
जाए, और अगर यह दिन सबत हो तो तुम फिर भी
अपने बच्चे का ख़तना करवाते हो ताकि शरीअत की
ख़िलाफ़वरज़ी न हो जाए। तो फिर तुम मुझ से क्यूँ
नाराज़ हो कि मैं ने सबत के दिन एक आदमी के पूरे
जिस्म को शिफ़ा दी? 24 ज़ाहिरी सूरत की बिना पर
फ़ैसला न करो बल्कि बातिनी हालत पहचान कर
मुन्सिफ़ाना फ़ैसला करो।"

क्या ईसा ही मसीह है?

25 उस वक़्त यरूशलम के कुछ रहने वाले कहने
लगे, "क्या यह वह आदमी नहीं है जिसे लोग क़त्ल
करने की कोशिश कर रहे हैं? 26 ताहम वह यहाँ
खुल कर बात कर रहा है और कोई भी उसे रोकने
की कोशिश नहीं कर रहा। क्या हमारे राहनुमाओं ने
हक़ीक़त में जान लिया है कि यह मसीह है? 27 लेकिन
जब मसीह आएगा तो किसी को भी मालूम नहीं होगा
कि वह कहाँ से है। यह आदमी फ़र्क़ है। हम तो जानते
हैं कि यह कहाँ से है।"

28 ईसा बैत-उल-मुक़द्दस में तालीम दे रहा था। अब
वह पुकार उठा, "तुम मुझे जानते हो और यह भी
जानते हो कि मैं कहाँ से हूँ। लेकिन मैं अपनी तरफ़
से नहीं आया। जिस ने मुझे भेजा है वह सच्चा है और
उसे तुम नहीं जानते। 29 लेकिन मैं उसे जानता हूँ,
क्यूँकि मैं उस की तरफ़ से हूँ और उस ने मुझे भेजा
है।"

30 तब उन्हों ने उसे गिरिफ़्तार करने की कोशिश
की। लेकिन कोई भी उस को हाथ न लगा सका,
क्यूँकि अभी उस का वक़्त नहीं आया था। 31 तो भी
हुजूम के कई लोग उस पर ईमान लाए, क्यूँकि उन्हों
ने कहा, "जब मसीह आएगा तो क्या वह इस आदमी
से ज़्यादा इलाही निशान दिखाएगा?"

पहरेदार उसे गिरिफ़्तार करने आते हैं

32 फ़रीसियों ने देखा कि हुजूम में इस क़िस्म की
बातें धीमी धीमी आवाज़ के साथ फैल रही हैं। चुनाँचे
उन्हों ने राहनुमा इमामों के साथ मिल कर बैत-उल-
मुक़द्दस के पहरेदार ईसा को गिरिफ़्तार करने के लिए
भेजे। 33 लेकिन ईसा ने कहा, "मैं सिर्फ़ थोड़ी देर और
तुम्हारे साथ रहूँगा, फिर मैं उस के पास वापस चला
जाऊँगा जिस ने मुझे भेजा है। 34 उस वक़्त तुम मुझे
ढूँडोगे, मगर नहीं पाओगे, क्यूँकि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम
नहीं आ सकते।"

35 यहूदी आपस में कहने लगे, "यह कहाँ जाना
चाहता है जहाँ हम उसे नहीं पा सकेंगे? क्या वह
बैरून-ए-मुल्क जाना चाहता है, वहाँ जहाँ हमारे लोग
यूनानियों में बिखरी हालत में रहते हैं? क्या वह
यूनानियों को तालीम देना चाहता है? 36 मतलब क्या
है जब वह कहता है, 'तुम मुझे ढूँडोगे मगर नहीं
पाओगे' और 'जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते'।"

ज़िन्दगी के पानी की नहरें

37 ईद के आख़िरी दिन जो सब से अहम है ईसा
खड़ा हुआ और ऊँची आवाज़ से पुकार उठा, "जो
प्यासा हो वह मेरे पास आए, 38 और जो मुझ पर
ईमान लाए वह पिए। कलाम-ए-मुक़द्दस के मुताबिक़
'उस के अन्दर से ज़िन्दगी के पानी की नहरें बह
निकलेंगी'।" 39 ('ज़िन्दगी के पानी' से वह रूह-उल-
क़ुद्स की तरफ़ इशारा कर रहा था जो उन को हासिल
होता है जो ईसा पर ईमान लाते हैं। लेकिन वह उस
वक़्त तक नाज़िल नहीं हुआ था, क्यूँकि ईसा अब
तक अपने जलाल को न पहुँचा था।)

सुनने वालों में नाइत्तिफ़ाक़ी

40 ईसा की यह बातें सुन कर हुजूम के कुछ लोगों
ने कहा, "यह आदमी वाक़ई वह नबी है जिस के
इन्तिज़ार में हम हैं।"

41 दूसरों ने कहा, "यह मसीह है।"

लेकिन बाज़ ने एतिराज़ किया, “मसीह गलील से
किस तरह आ सकता है! 42 पाक कलाम तो बयान
करता है कि मसीह दाऊद के ख़ानदान और बैत-
लहम से आएगा, उस गाँव से जहाँ दाऊद बादशाह
पैदा हुआ।” 43 यूँ ईसा की वजह से लोगों में फूट
पड़ गई। 44 कुछ तो उसे गिरिफ़्तार करना चाहते थे,
लेकिन कोई भी उस को हाथ न लगा सका।

यहूदी राहनुमा ईसा पर ईमान नहीं रखते

45 इतने में बैत-उल-मुक़द्दस के पहरेदार राहनुमा
इमामों और फ़रीसियों के पास वापस आए। वह ईसा
को ले कर नहीं आए थे, इस लिए राहनुमाओं ने पूछा,
“तुम उसे क्यूँ नहीं लाए?”
46 पहरेदारों ने जवाब दिया, “किसी ने कभी इस
आदमी की तरह बात नहीं की।”
47 फ़रीसियों ने तन्ज़न कहा, “क्या तुम को
भी बहका दिया गया है? 48 क्या राहनुमाओं या
फ़रीसियों में कोई है जो उस पर ईमान लाया हो?
कोई भी नहीं! 49 लेकिन शरीअत से नावाक़िफ़ यह
हुजूम लानती है!”
50 इन राहनुमाओं में नीकुदेमुस भी शामिल था जो
कुछ देर पहले ईसा के पास गया था। अब वह बोल
उठा, 51 “क्या हमारी शरीअत किसी पर यूँ फ़ैसला
देने की इजाज़त देती है? नहीं, लाज़िम है कि उसे
पहले अदालत में पेश किया जाए ताकि मालूम हो
जाए कि उस से क्या कुछ सरज़द हुआ है।”
52 दूसरों ने एतिराज़ किया, “क्या तुम भी गलील के
रहने वाले हो? कलाम-ए-मुक़द्दस में तफ़्तीश करके
ख़ुद देख लो कि गलील से कोई नबी नहीं आएगा।”
53 यह कह कर हर एक अपने अपने घर चला गया।

ज़िनाकार औरत पर पहला पत्थर

8 1 ईसा ख़ुद ज़ैतून के पहाड़ पर चला गया।
2 अगले दिन पौ फटते वक़्त वह दुबारा बैत-
उल-मुक़द्दस में आया। वहाँ सब लोग उस के गिर्द
जमा हुए और वह बैठ कर उन्हें तालीम देने लगा।
3 इस दौरान शरीअत के उलमा और फ़रीसी एक
औरत को ले कर आए जिसे ज़िना करते वक़्त पकड़ा
गया था। उसे बीच में खड़ा करके 4 उन्हों ने ईसा
से कहा, “उस्ताद, इस औरत को ज़िना करते वक़्त
पकड़ा गया है। 5 मूसा ने शरीअत में हमें हुक्म दिया
है कि ऐसे लोगों को संगसार करना है। आप क्या
कहते हैं?” 6 इस सवाल से वह उसे फंसाना चाहते
थे ताकि उस पर इल्ज़ाम लगाने का कोई बहाना उन
के हाथ आ जाए। लेकिन ईसा झुक गया और अपनी
उंगली से ज़मीन पर लिखने लगा।
7 जब वह उस से जवाब का तक़ाज़ा करते रहे तो
वह खड़ा हो कर उन से मुख़ातिब हुआ, “तुम में से
जिस ने कभी गुनाह नहीं किया, वह पहला पत्थर
मारे।” 8 फिर वह दुबारा झुक कर ज़मीन पर लिखने
लगा। 9 यह जवाब सुन कर इल्ज़ाम लगाने वाले यके
बाद दीगरे वहाँ से खिसक गए, पहले बुज़ुर्ग, फिर
बाक़ी सब। आख़िरकार ईसा और दरमियान में खड़ी
वह औरत अकेले रह गए। 10 फिर उस ने खड़े हो कर
कहा, “ऐ औरत, वह सब कहाँ गए? क्या किसी ने
तुझ पर फ़त्वा नहीं लगाया?”
11 औरत ने जवाब दिया, “नहीं ख़ुदावन्द।”
ईसा ने कहा, “मैं भी तुझ पर फ़त्वा नहीं लगाता।
जा, आइन्दा गुनाह न करना।”

ईसा दुनिया का नूर है

12 फिर ईसा दुबारा लोगों से मुख़ातिब हुआ,
“दुनिया का नूर मैं हूँ। जो मेरी पैरवी करे वह तारीकी
में नहीं चलेगा, क्यूँकि उसे ज़िन्दगी का नूर हासिल
होगा।”
13 फ़रीसियों ने एतिराज़ किया, “आप तो अपने बारे
में गवाही दे रहे हैं। ऐसी गवाही मोतबर नहीं होती।”
14 ईसा ने जवाब दिया, “अगरचे मैं अपने बारे में
ही गवाही दे रहा हूँ तो भी वह मोतबर है। क्यूँकि मैं
जानता हूँ कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ को जा
रहा हूँ। लेकिन तुम को तो मालूम नहीं कि मैं कहाँ
से आया हूँ और कहाँ जा रहा हूँ। 15 तुम इन्सानी

सोच के मुताबिक़ लोगों का फ़ैसला करते हो, लेकिन
मैं किसी का भी फ़ैसला नहीं करता। 16 और अगर
फ़ैसला करूँ भी तो मेरा फ़ैसला दुरुस्त है, क्यूँकि मैं
अकेला नहीं हूँ। बाप जिस ने मुझे भेजा है मेरे साथ है।
17 तुम्हारी शरीअत में लिखा है कि दो आदमियों की
गवाही मोतबर है। 18 मैं ख़ुद अपने बारे में गवाही देता
हूँ जबकि दूसरा गवाह बाप है जिस ने मुझे भेजा।"
19 उन्हों ने पूछा, "आप का बाप कहाँ है?" ईसा
ने जवाब दिया, "तुम न मुझे जानते हो, न मेरे बाप
को। अगर तुम मुझे जानते तो फिर मेरे बाप को भी
जानते।"
20 ईसा ने यह बातें उस वक़्त कीं जब वह उस जगह
के क़रीब तालीम दे रहा था जहाँ लोग अपना हदिया
डालते थे। लेकिन किसी ने उसे गिरिफ़्तार न किया
क्यूँकि अभी उस का वक़्त नहीं आया था।

जहाँ मैं जा रहा हूँ तुम वहाँ नहीं जा सकते

21 एक और बार ईसा उन से मुख़ातिब हुआ, "मैं
जा रहा हूँ और तुम मुझे ढूँड ढूँड कर अपने गुनाहों में
मर जाओगे। जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं पहुँच
सकते।"
22 यहूदियों ने पूछा, "क्या वह ख़ुदकुशी करना
चाहता है? क्या वह इसी वजह से कहता है, 'जहाँ
मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं पहुँच सकते'?"
23 ईसा ने अपनी बात जारी रखी, "तुम नीचे से हो
जबकि मैं ऊपर से हूँ। तुम इस दुनिया के हो जबकि
मैं इस दुनिया का नहीं हूँ। 24 मैं तुम को बता चुका
हूँ कि तुम अपने गुनाहों में मर जाओगे। क्यूँकि अगर
तुम ईमान नहीं लाते कि मैं वही हूँ तो तुम यक़ीनन
अपने गुनाहों में मर जाओगे।"
25 उन्हों ने सवाल किया, "आप कौन हैं?"
ईसा ने जवाब दिया, "मैं वही हूँ जो मैं शुरू से ही
बताता आया हूँ। 26 मैं तुम्हारे बारे में बहुत कुछ कह
सकता हूँ। बहुत सी ऐसी बातें हैं जिन की बिना पर
मैं तुम को मुजरिम ठहरा सकता हूँ। लेकिन जिस ने
मुझे भेजा है वही सच्चा और मोतबर है और मैं दुनिया
को सिर्फ़ वह कुछ सुनाता हूँ जो मैं ने उस से सुना
है।"
27 सुनने वाले न समझे कि ईसा बाप का ज़िक्र कर
रहा है। 28 चुनाँचे उस ने कहा, "जब तुम इब्न-ए-
आदम को ऊँचे पर चढ़ाओगे तब ही तुम जान लोगे
कि मैं वही हूँ, कि मैं अपनी तरफ़ से कुछ नहीं करता
बल्कि सिर्फ़ वही सुनाता हूँ जो बाप ने मुझे सिखाया
है। 29 और जिस ने मुझे भेजा है वह मेरे साथ है। उस
ने मुझे अकेला नहीं छोड़ा, क्यूँकि मैं हर वक़्त वही
कुछ करता हूँ जो उसे पसन्द आता है।"
30 यह बातें सुन कर बहुत से लोग उस पर ईमान
लाए।

सच्चाई तुम को आज़ाद करेगी

31 जो यहूदी उस का यक़ीन करते थे ईसा अब उन
से हमकलाम हुआ, "अगर तुम मेरी तालीम के ताबे
रहोगे तब ही तुम मेरे सच्चे शागिर्द होगे। 32 फिर तुम
सच्चाई को जान लोगे और सच्चाई तुम को आज़ाद कर
देगी।"
33 उन्हों ने एतिराज़ किया, "हम तो इब्राहीम की
औलाद हैं, हम कभी भी किसी के ग़ुलाम नहीं रहे।
फिर आप किस तरह कह सकते हैं कि हम आज़ाद
हो जाएंगे?"
34 ईसा ने जवाब दिया, "मैं तुम को सच बताता
हूँ कि जो भी गुनाह करता है वह गुनाह का ग़ुलाम
है। 35 ग़ुलाम तो आरिज़ी तौर पर घर में रहता है,
लेकिन मालिक का बेटा हमेशा तक। 36 इस लिए
अगर फ़र्ज़न्द तुम को आज़ाद करे तो तुम हक़ीक़तन
आज़ाद होगे। 37 मुझे मालूम है कि तुम इब्राहीम की
औलाद हो। लेकिन तुम मुझे क़त्ल करने के दरपै हो,
क्यूँकि तुम्हारे अन्दर मेरे पैग़ाम के लिए गुन्जाइश नहीं
है। 38 मैं तुम को वही कुछ बताता हूँ जो मैं ने बाप
के हाँ देखा है, जबकि तुम वही कुछ सुनाते हो जो
तुम ने अपने बाप से सुना है।"
39 उन्हों ने कहा, "हमारा बाप इब्राहीम है।" ईसा
ने जवाब दिया, "अगर तुम इब्राहीम की औलाद होते

तो तुम उस के नमूने पर चलते। 40 इस के बजाय तुम
मुझे क़त्ल करने की तलाश में हो, इस लिए कि मैं ने
तुम को वही सच्चाई सुनाई है जो मैं ने अल्लाह के हुज़ूर
सुनी है। इब्राहीम ने कभी भी इस क़िस्म का काम
न किया। 41 नहीं, तुम अपने बाप का काम कर रहे
हो।"

उन्हों ने एतिराज़ किया, "हम हरामज़ादे नहीं हैं।
अल्लाह ही हमारा वाहिद बाप है।"

42 ईसा ने उन से कहा, "अगर अल्लाह तुम्हारा बाप
होता तो तुम मुझ से मुहब्बत रखते, क्यूँकि मैं अल्लाह
में से निकल आया हूँ। मैं अपनी तरफ़ से नहीं आया
बल्कि उसी ने मुझे भेजा है। 43 तुम मेरी ज़बान क्यूँ
नहीं समझते? इस लिए कि तुम मेरी बात सुन नहीं
सकते। 44 तुम अपने बाप इब्लीस से हो और अपने
बाप की ख़्वाहिशों पर अमल करने के ख़्वाहाँ रहते
हो। वह शुरू ही से क़ातिल है और सच्चाई पर क़ाइम
न रहा, क्यूँकि उस में सच्चाई है नहीं। जब वह झूट
बोलता है तो यह फ़ित्री बात है, क्यूँकि वह झूट बोलने
वाला और झूट का बाप है। 45 लेकिन मैं सच्ची बातें
सुनाता हूँ और यही वजह है कि तुम को मुझ पर
यक़ीन नहीं आता। 46 क्या तुम में से कोई साबित
कर सकता है कि मुझ से कोई गुनाह सरज़द हुआ
है? मैं तो तुम को हक़ीक़त बता रहा हूँ। फिर तुम को
मुझ पर यक़ीन क्यूँ नहीं आता? 47 जो अल्लाह से है
वह अल्लाह की बातें सुनता है। तुम यह इस लिए नहीं
सुनते कि तुम अल्लाह से नहीं हो।"

ईसा और इब्राहीम

48 यहूदियों ने जवाब दिया, "क्या हम ने ठीक नहीं
कहा कि तुम सामरी हो और किसी बदरुह के क़ब्ज़े
में हो?"

49 ईसा ने कहा, "मैं बदरुह के क़ब्ज़े में नहीं हूँ
बल्कि अपने बाप की इज़्ज़त करता हूँ जबकि तुम
मेरी बेइज़्ज़ती करते हो। 50 मैं ख़ुद अपनी इज़्ज़त का
ख़्वाहाँ नहीं हूँ। लेकिन एक है जो मेरी इज़्ज़त और
जलाल का ख़याल रखता और इन्साफ़ करता है।
51 मैं तुम को सच बताता हूँ कि जो भी मेरे कलाम
पर अमल करता रहे वह मौत को कभी नहीं देखेगा।"

52 यह सुन कर लोगों ने कहा, "अब हमें पता चल
गया है कि तुम किसी बदरुह के क़ब्ज़े में हो। इब्राहीम
और नबी सब इन्तिक़ाल कर गए जबकि तुम दावा
करते हो, 'जो भी मेरे कलाम पर अमल करता रहे वह
मौत का मज़ा कभी नहीं चखेगा।' 53 क्या तुम हमारे
बाप इब्राहीम से बड़े हो? वह मर गया, और नबी भी
मर गए। तुम अपने आप को क्या समझते हो?"

54 ईसा ने जवाब दिया, "अगर में अपनी इज़्ज़त
और जलाल बढ़ाता तो मेरा जलाल बातिल होता।
लेकिन मेरा बाप ही मेरी इज़्ज़त-ओ-जलाल बढ़ाता
है, वही जिस के बारे में तुम दावा करते हो कि 'वह
हमारा ख़ुदा है।' 55 लेकिन हक़ीक़त में तुम ने उसे
नहीं जाना जबकि मैं उसे जानता हूँ। अगर मैं कहता
कि मैं उसे नहीं जानता तो मैं तुम्हारी तरह झूटा होता।
लेकिन मैं उसे जानता और उस के कलाम पर अमल
करता हूँ। 56 तुम्हारे बाप इब्राहीम ने ख़ुशी मनाई जब
उसे मालूम हुआ कि वह मेरी आमद का दिन देखेगा,
और वह उसे देख कर मसरूर हुआ।"

57 यहूदियों ने एतिराज़ किया, "तुम्हारी उम्र तो अभी
पचास साल भी नहीं, तो फिर तुम किस तरह कह
सकते हो कि तुम ने इब्राहीम को देखा है?"

58 ईसा ने उन से कहा, "मैं तुम को सच बताता हूँ,
इब्राहीम की पैदाइश से पेशतर 'मैं हूँ'।"

59 इस पर लोग उसे संगसार करने के लिए पत्थर
उठाने लगे। लेकिन ईसा ग़ाइब हो कर बैत-उल-
मुक़द्दस से निकल गया।

अंधे की शिफ़ा

9 1 चलते चलते ईसा ने एक आदमी को देखा जो
पैदाइश का अंधा था। 2 उस के शागिर्दों ने उस
से पूछा, "उस्ताद, यह आदमी अंधा क्यूँ पैदा हुआ?
क्या इस का कोई गुनाह है या इस के वालिदैन का?"

3 ईसा ने जवाब दिया, "न इस का कोई गुनाह है
और न इस के वालिदैन का। यह इस लिए हुआ कि

इस की ज़िन्दगी में अल्लाह का काम ज़ाहिर हो जाए।
4 अभी दिन है। लाज़िम है कि हम जितनी देर तक
दिन है उस का काम करते रहें जिस ने मुझे भेजा है।
क्यूँकि रात आने वाली है, उस वक़्त कोई काम नहीं
कर सकेगा। 5 लेकिन जितनी देर तक मैं दुनिया में हूँ
उतनी देर तक मैं दुनिया का नूर हूँ।"

6 यह कह कर उस ने ज़मीन पर थूक कर मिट्टी सानी
और उस की आँखों पर लगा दी। 7 उस ने उस से
कहा, "जा, शिलोख़ के हौज़ में नहा ले।" (शिलोख़
का मतलब 'भेजा हुआ' है।) अंधे ने जा कर नहा
लिया। जब वापस आया तो वह देख सकता था।

8 उस के हमसाय और वह जिन्हों ने पहले उसे भीक
माँगते देखा था पूछने लगे, "क्या यह वही नहीं जो
बैठा भीक माँगा करता था?"

9 बाज़ ने कहा, "हाँ, वही है।"

औरों ने इन्कार किया, "नहीं, यह सिर्फ़ उस का
हमशक्ल है।"

लेकिन आदमी ने ख़ुद इसरार किया, "मैं वही हूँ।"

10 उन्हों ने उस से सवाल किया, "तेरी आँखें किस
तरह बहाल हुईं?"

11 उस ने जवाब दिया, "वह आदमी जो ईसा
कहलाता है उस ने मिट्टी सान कर मेरी आँखों पर
लगा दी। फिर उस ने मुझे कहा, 'शिलोख़ के हौज़
पर जा और नहा ले।' मैं वहाँ गया और नहाते ही मेरी
आँखें बहाल हो गईं।"

12 उन्हों ने पूछा, "वह कहाँ है?"

उस ने जवाब दिया, "मुझे नहीं मालूम।"

फ़रीसी शिफ़ा की तफ़्तीश करते हैं

13 तब वह शिफ़ायाब अंधे को फ़रीसियों के पास
ले गए। 14 जिस दिन ईसा ने मिट्टी सान कर उस की
आँखों को बहाल किया था वह सबत का दिन था।
15 इस लिए फ़रीसियों ने भी उस से पूछगछ की कि
उसे किस तरह बसारत मिल गई। आदमी ने जवाब
दिया, "उस ने मेरी आँखों पर मिट्टी लगा दी, फिर मैं
ने नहा लिया और अब देख सकता हूँ।"

16 फ़रीसियों में से बाज़ ने कहा, "यह शख़्स अल्लाह
की तरफ़ से नहीं है, क्यूँकि सबत के दिन काम करता
है।"

दूसरों ने एतिराज़ किया, "गुनाहगार इस क़िस्म के
इलाही निशान किस तरह दिखा सकता है?" यूँ उन
में फूट पड़ गई।

17 फिर वह दुबारा उस आदमी से मुख़ातिब हुए जो
पहले अंधा था, "तू ख़ुद इस के बारे में क्या कहता
है? उस ने तो तेरी ही आँखों को बहाल किया है।"

उस ने जवाब दिया, "वह नबी है।"

18 यहूदियों को यक़ीन नहीं आ रहा था कि वह
वाक़ई अंधा था और फिर बहाल हो गया है। इस
लिए उन्हों ने उस के वालिदैन को बुलाया। 19 उन्हों
ने उन से पूछा, "क्या यह तुम्हारा बेटा है, वही जिस
के बारे में तुम कहते हो कि वह अंधा पैदा हुआ था?
अब यह किस तरह देख सकता है?"

20 उस के वालिदैन ने जवाब दिया, "हम जानते हैं
कि यह हमारा बेटा है और कि यह पैदा होते वक़्त
अंधा था। 21 लेकिन हमें मालूम नहीं कि अब यह
किस तरह देख सकता है या कि किस ने इस की
आँखों को बहाल किया है। इस से ख़ुद पता करें, यह
बालिग़ है। यह ख़ुद अपने बारे में बता सकता है।"
22 उस के वालिदैन ने यह इस लिए कहा कि वह
यहूदियों से डरते थे। क्यूँकि वह फ़ैसला कर चुके
थे कि जो भी ईसा को मसीह क़रार दे उसे यहूदी
जमाअत से निकाल दिया जाए। 23 यही वजह थी कि
उस के वालिदैन ने कहा था, "यह बालिग़ है, इस से
ख़ुद पूछ लें।"

24 एक बार फिर उन्हों ने शिफ़ायाब अंधे को
बुलाया, "अल्लाह को जलाल दे, हम तो जानते हैं कि
यह आदमी गुनाहगार है।"

25 आदमी ने जवाब दिया, "मुझे क्या पता है कि
वह गुनाहगार है या नहीं, लेकिन एक बात मैं जानता
हूँ, पहले मैं अंधा था, और अब मैं देख सकता हूँ!"

26 फिर उन्हों ने उस से सवाल किया, “उस ने तेरे
साथ क्या किया? उस ने किस तरह तेरी आँखों को
बहाल कर दिया?”
27 उस ने जवाब दिया, “मैं पहले भी आप को बता
चुका हूँ और आप ने सुना नहीं। क्या आप भी उस
के शागिर्द बनना चाहते हैं?”
28 इस पर उन्हों ने उसे बुरा-भला कहा, “तू ही उस
का शागिर्द है, हम तो मूसा के शागिर्द हैं। 29 हम तो
जानते हैं कि अल्लाह ने मूसा से बात की है, लेकिन
इस के बारे में हम यह भी नहीं जानते कि वह कहाँ
से आया है।”
30 आदमी ने जवाब दिया, “अजीब बात है, उस
ने मेरी आँखों को शिफ़ा दी है और फिर भी आप
नहीं जानते कि वह कहाँ से है। 31 हम जानते हैं कि
अल्लाह गुनाहगारों की नहीं सुनता। वह तो उस की
सुनता है जो उस का ख़ौफ़ मानता और उस की मर्ज़ी
के मुताबिक़ चलता है। 32 इब्तिदा ही से यह बात
सुनने में नहीं आई कि किसी ने पैदाइशी अंधे की
आँखों को बहाल कर दिया हो। 33 अगर यह आदमी
अल्लाह की तरफ़ से न होता तो कुछ न कर सकता।”
34 जवाब में उन्हों ने उसे बताया, “तू जो
गुनाहआलूदा हालत में पैदा हुआ है क्या तू हमारा
उस्ताद बनना चाहता है?” यह कह कर उन्हों ने उसे
जमाअत में से निकाल दिया।

रुहानी अंधापन

35 जब ईसा को पता चला कि उसे निकाल दिया
गया है तो वह उस को मिला और पूछा, “क्या तू
इब्न-ए-आदम पर ईमान रखता है?”
36 उस ने कहा, “ख़ुदावन्द, वह कौन है? मुझे
बताएँ ताकि मैं उस पर ईमान लाऊँ।”
37 ईसा ने जवाब दिया, “तू ने उसे देख लिया है
बल्कि वह तुझ से बात कर रहा है।”
38 उस ने कहा, “ख़ुदावन्द, मैं ईमान रखता हूँ” और
उसे सिज्दा किया।
39 ईसा ने कहा, “मैं अदालत करने के लिए इस
दुनिया में आया हूँ, इस लिए कि अंधे देखें और देखने
वाले अंधे हो जाएँ।”
40 कुछ फ़रीसी जो साथ खड़े थे यह कुछ सुन कर
पूछने लगे, “अच्छा, हम भी अंधे हैं?”
41 ईसा ने उन से कहा, “अगर तुम अंधे होते तो
तुम क़ुसूरवार न ठहरते। लेकिन अब चूँकि तुम दावा
करते हो कि हम देख सकते हैं इस लिए तुम्हारा गुनाह
क़ाइम रहता है।

चरवाहे की तम्सील

10 1 मैं तुम को सच बताता हूँ कि जो दरवाज़े
से भेड़ों के बाड़े में दाख़िल नहीं होता
बल्कि फलाँग कर अन्दर घुस आता है वह चोर और
डाकू है। 2 लेकिन जो दरवाज़े से दाख़िल होता है
वह भेड़ों का चरवाहा है। 3 चौकीदार उस के लिए
दरवाज़ा खोल देता है और भेड़ें उस की आवाज़
सुनती हैं। वह अपनी हर एक भेड़ का नाम ले कर
उन्हें बुलाता और बाहर ले जाता है। 4 अपने पूरे गल्ले
को बाहर निकालने के बाद वह उन के आगे आगे
चलने लगता है और भेड़ें उस के पीछे पीछे चल
पड़ती हैं, क्यूँकि वह उस की आवाज़ पहचानती हैं।
5 लेकिन वह किसी अजनबी के पीछे नहीं चलेंगी
बल्कि उस से भाग जाएँगी, क्यूँकि वह उस की
आवाज़ नहीं पहचानतीं।”
6 ईसा ने उन्हें यह तम्सील पेश की, लेकिन वह न
समझे कि वह उन्हें क्या बताना चाहता है।

अच्छा चरवाहा

7 इस लिए ईसा दुबारा इस पर बात करने लगा, “मैं
तुम को सच बताता हूँ कि भेड़ों के लिए दरवाज़ा मैं
हूँ। 8 जितने भी मुझ से पहले आए वह चोर और डाकू
हैं। लेकिन भेड़ों ने उन की न सुनी। 9 मैं ही दरवाज़ा हूँ।
जो भी मेरे ज़रीए अन्दर आए उसे नजात मिलेगी। वह
आता जाता और हरी चरागाहें पाता रहेगा। 10 चोर तो
सिर्फ़ चोरी करने, ज़बह करने और तबाह करने आता

है। लेकिन मैं इस लिए आया हूँ कि वह ज़िन्दगी पाएँ,
बल्कि कस्रत की ज़िन्दगी पाएँ।
11 अच्छा चरवाहा मैं हूँ। अच्छा चरवाहा अपनी
भेड़ों के लिए अपनी जान देता है। 12 मज़दूर चरवाहे
का किरदार अदा नहीं करता, क्यूँकि भेड़ें उस की
अपनी नहीं होतीं। इस लिए जूँ ही कोई भेड़िया आता
है तो मज़दूर उसे देखते ही भेड़ों को छोड़ कर भाग
जाता है। नतीजे में भेड़िया कुछ भेड़ें पकड़ लेता और
बाक़ियों को मुन्तशिर कर देता है। 13 वजह यह है
कि वह मज़दूर ही है और भेड़ों की फ़िक्र नहीं करता।
14 अच्छा चरवाहा मैं हूँ। मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ
और वह मुझे जानती हैं, 15 बिलकुल उसी तरह जिस
तरह बाप मुझे जानता है और मैं बाप को जानता हूँ।
और मैं भेड़ों के लिए अपनी जान देता हूँ। 16 मेरी और
भी भेड़ें हैं जो इस बाड़े में नहीं हैं। लाज़िम है कि उन्हें
भी ले आऊँ। वह भी मेरी आवाज़ सुनेंगी। फिर एक
ही गल्ला और एक ही गल्लाबान होगा।
17 मेरा बाप मुझे इस लिए प्यार करता है कि मैं
अपनी जान देता हूँ ताकि उसे फिर ले लूँ। 18 कोई
मेरी जान मुझ से छीन नहीं सकता बल्कि मैं उसे
अपनी मर्ज़ी से दे देता हूँ। मुझे उसे देने का इख़तियार
है और उसे वापस लेने का भी। यह हुक्म मुझे अपने
बाप की तरफ़ से मिला है।"
19 इन बातों पर यहूदियों में दुबारा फूट पड़ गई।
20 बहुतों ने कहा, "यह बदरुह की गिरिफ़्त में है, यह
दीवाना है। इस की क्यूँ सुनें!"
21 लेकिन औरों ने कहा, "यह ऐसी बातें नहीं हैं जो
बदरुह-गिरिफ़्ता शख़्स कर सके। क्या बदरुहें अंधों
की आँखें बहाल कर सकती हैं?"

ईसा को रद्द किया जाता है

22 सर्दियों का मौसम था और ईसा बैत-उल-मुक़द्दस
की मख़्सूसियत की ईद बनाम हनूका के दौरान
यरूशलम में था। 23 वह बैत-उल-मुक़द्दस के उस
बरामदे में फिर रहा था जिस का नाम सुलेमान का
बरामदा था। 24 यहूदी उसे घेर कर कहने लगे, "आप
हमें कब तक उलझन में रखेंगे? अगर आप मसीह हैं
तो हमें साफ़ साफ़ बता दें।"
25 ईसा ने जवाब दिया, "मैं तुम को बता चुका हूँ,
लेकिन तुम को यक़ीन नहीं आया। जो काम मैं अपने
बाप के नाम से करता हूँ वह मेरे गवाह हैं। 26 लेकिन
तुम ईमान नहीं रखते क्यूँकि तुम मेरी भेड़ें नहीं हो।
27 मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं। मैं उन्हें जानता
हूँ और वह मेरे पीछे चलती हैं। 28 मैं उन्हें अबदी
ज़िन्दगी देता हूँ, इस लिए वह कभी हलाक नहीं
होंगी। कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा, 29 क्यूँकि
मेरे बाप ने उन्हें मेरे सपुर्द किया है और वही सब से
बड़ा है। कोई उन्हें बाप के हाथ से छीन नहीं सकता।
30 मैं और बाप एक हैं।"
31 यह सुन कर यहूदी दुबारा पत्थर उठाने लगे
ताकि ईसा को संगसार करें। 32 उस ने उन से कहा,
"मैं ने तुम्हें बाप की तरफ़ से कई इलाही निशान
दिखाए हैं। तुम मुझे इन में से किस निशान की वजह
से संगसार कर रहे हो?"
33 यहूदियों ने जवाब दिया, "हम तुम को किसी
अच्छे काम की वजह से संगसार नहीं कर रहे बल्कि
कुफ़्र बकने की वजह से। तुम जो सिर्फ़ इन्सान हो
अल्लाह होने का दावा करते हो।"
34 ईसा ने कहा, "क्या यह तुम्हारी शरीअत में नहीं
लिखा है कि अल्लाह ने फ़रमाया, 'तुम ख़ुदा हो'?
35 उन्हें 'ख़ुदा' कहा गया जिन तक अल्लाह का यह
पैग़ाम पहुँचाया गया। और हम जानते हैं कि कलाम-
ए-मुक़द्दस को मन्सूख़ नहीं किया जा सकता। 36 तो
फिर तुम कुफ़्र बकने की बात क्यूँ करते हो जब मैं
कहता हूँ कि मैं अल्लाह का फ़र्ज़न्द हूँ? आख़िर बाप
ने ख़ुद मुझे मख़्सूस करके दुनिया में भेजा है। 37 अगर
मैं अपने बाप के काम न करूँ तो मेरी बात न मानो।
38 लेकिन अगर उस के काम करूँ तो बेशक मेरी बात
न मानो, लेकिन कम अज़ कम उन कामों की गवाही
तो मानो। फिर तुम जान लोगे और समझ जाओगे कि
बाप मुझ में है और मैं बाप में हूँ।"

39 एक बार फिर उन्हों ने उसे गिरिफ़्तार करने की
कोशिश की, लेकिन वह उन के हाथ से निकल गया।
40 फिर ईसा दुबारा दरया-ए-यर्दन के पार उस जगह
चला गया जहाँ यहया शुरू में बपतिस्मा दिया करता
था। वहाँ वह कुछ देर ठहरा। 41 बहुत से लोग उस
के पास आते रहे। उन्हों ने कहा, "यहया ने कभी
कोई इलाही निशान न दिखाया, लेकिन जो कुछ उस
ने इस के बारे में बयान किया, वह बिलकुल सहीह
निकला।" 42 और वहाँ बहुत से लोग ईसा पर ईमान
लाए।

लाज़र की मौत

11 1 उन दिनों में एक आदमी बीमार पड़ गया
जिस का नाम लाज़र था। वह अपनी बहनों
मरियम और मर्था के साथ बैत-अनियाह में रहता था।
2 यह वही मरियम थी जिस ने बाद में ख़ुदावन्द पर
ख़ुश्बू उंडेल कर उस के पाँओ अपने बालों से ख़ुश्क
किए थे। उसी का भाई लाज़र बीमार था। 3 चुनाँचे
बहनों ने ईसा को इत्तिला दी, "ख़ुदावन्द, जिसे आप
प्यार करते हैं वह बीमार है।"
4 जब ईसा को यह ख़बर मिली तो उस ने कहा,
"इस बीमारी का अन्जाम मौत नहीं है, बल्कि यह
अल्लाह के जलाल के वास्ते हुआ है, ताकि इस से
अल्लाह के फ़र्ज़न्द को जलाल मिले।"
5 ईसा मर्था, मरियम और लाज़र से मुहब्बत रखता
था। 6 तो भी वह लाज़र के बारे में इत्तिला मिलने के
बाद दो दिन और वहीं ठहरा। 7 फिर उस ने अपने
शागिर्दों से बात की, "आओ, हम दुबारा यहूदिया
चले जाएँ।"
8 शागिर्दों ने एतिराज़ किया, "उस्ताद, अभी अभी
वहाँ के यहूदी आप को संगसार करने की कोशिश
कर रहे थे, फिर भी आप वापस जाना चाहते हैं?"
9 ईसा ने जवाब दिया, "क्या दिन में रौशनी के बारह
घंटे नहीं होते? जो शख़्स दिन के वक़्त चलता फिरता
है वह किसी भी चीज़ से नहीं टकराएगा, क्यूँकि
वह इस दुनिया की रौशनी के ज़रीए देख सकता है।
10 लेकिन जो रात के वक़्त चलता है वह चीज़ों से
टकरा जाता है, क्यूँकि उस के पास रौशनी नहीं है।"
11 फिर उस ने कहा, "हमारा दोस्त लाज़र सो गया
है। लेकिन मैं जा कर उसे जगा दूँगा।"
12 शागिर्दों ने कहा, "ख़ुदावन्द, अगर वह सो रहा
है तो वह बच जाएगा।"
13 उन का ख़याल था कि ईसा लाज़र की फ़ित्री नींद
का ज़िक्र कर रहा है जबकि हक़ीक़त में वह उस की
मौत की तरफ़ इशारा कर रहा था। 14 इस लिए उस
ने उन्हें साफ़ बता दिया, "लाज़र वफ़ात पा गया है।
15 और तुम्हारी ख़ातिर मैं ख़ुश हूँ कि मैं उस के मरते
वक़्त वहाँ नहीं था, क्यूँकि अब तुम ईमान लाओगे।
आओ, हम उस के पास जाएँ।"
16 तोमा ने जिस का लक़ब जुड़वाँ था अपने साथी
शागिर्दों से कहा, "चलो, हम भी वहाँ जा कर उस के
साथ मर जाएँ।"

ईसा क़ियामत और ज़िन्दगी है

17 वहाँ पहुँच कर ईसा को मालूम हुआ कि लाज़र
को क़ब्र में रखे चार दिन हो गए हैं। 18 बैत-अनियाह
का यरूशलम से फ़ासिला तीन किलोमीटर से कम
था, 19 और बहुत से यहूदी मर्था और मरियम को उन
के भाई के बारे में तसल्ली देने के लिए आए हुए थे।
20 यह सुन कर कि ईसा आ रहा है मर्था उसे मिलने
गई। लेकिन मरियम घर में बैठी रही। 21 मर्था ने कहा,
"ख़ुदावन्द, अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न
मरता। 22 लेकिन मैं जानती हूँ कि अब भी अल्लाह
आप को जो भी माँगेंगे देगा।"
23 ईसा ने उसे बताया, "तेरा भाई जी उठेगा।"
24 मर्था ने जवाब दिया, "जी, मुझे मालूम है कि वह
क़ियामत के दिन जी उठेगा, जब सब जी उठेंगे।"
25 ईसा ने उसे बताया, "क़ियामत और ज़िन्दगी तो
मैं हूँ। जो मुझ पर ईमान रखे वह ज़िन्दा रहेगा, चाहे
वह मर भी जाए। 26 और जो ज़िन्दा है और मुझ पर
ईमान रखता है वह कभी नहीं मरेगा। मर्था, क्या तुझे
इस बात का यक़ीन है?"

27 मर्था ने जवाब दिया, “जी ख़ुदावन्द, मैं ईमान
रखती हूँ कि आप ख़ुदा के फ़र्ज़न्द मसीह हैं, जिसे
दुनिया में आना था।”

ईसा रोता है

28 यह कह कर मर्था वापस चली गई और चुपके
से मरियम को बुलाया, “उस्ताद आ गए हैं, वह तुझे
बुला रहे हैं।” 29 यह सुनते ही मरियम उठ कर ईसा
के पास गई। 30 वह अभी गाँव के बाहर उसी जगह
ठहरा था जहाँ उस की मुलाक़ात मर्था से हुई थी।
31 जो यहूदी घर में मरियम के साथ बैठे उसे तसल्ली
दे रहे थे, जब उन्हों ने देखा कि वह जल्दी से उठ कर
निकल गई है तो वह उस के पीछे हो लिए। क्यूँकि
वह समझ रहे थे कि वह मातम करने के लिए अपने
भाई की क़ब्र पर जा रही है।
32 मरियम ईसा के पास पहुँच गई। उसे देखते ही
वह उस के पाँओ में गिर गई और कहने लगी,
“ख़ुदावन्द, अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न
मरता।”
33 जब ईसा ने मरियम और उस के साथियों को
रोते देखा तो उसे बड़ी रंजिश हुई। मुज़्तरिब हालत में
34 उस ने पूछा, “तुम ने उसे कहाँ रखा है?”
उन्हों ने जवाब दिया, “आएँ ख़ुदावन्द, और देख
लें।”
35 ईसा रो पड़ा। 36 यहूदियों ने कहा, “देखो, वह
उसे कितना अज़ीज़ था।”
37 लेकिन उन में से बाज़ ने कहा, “इस आदमी ने
अंधे को शिफ़ा दी। क्या यह लाज़र को मरने से नहीं
बचा सकता था?”

लाज़र को ज़िन्दा कर दिया जाता है

38 फिर ईसा दुबारा निहायत रंजीदा हो कर क़ब्र पर
आया। क़ब्र एक ग़ार थी जिस के मुँह पर पत्थर रखा
गया था। 39 ईसा ने कहा, “पत्थर को हटा दो।”
लेकिन मरहूम की बहन मर्था ने एतिराज़ किया,
“ख़ुदावन्द, बदबू आएगी, क्यूँकि उसे यहाँ पड़े चार
दिन हो गए हैं।”
40 ईसा ने उस से कहा, “क्या मैं ने तुझे नहीं
बताया कि अगर तू ईमान रखे तो अल्लाह का जलाल
देखेगी?” 41 चुनाँचे उन्हों ने पत्थर को हटा दिया।
फिर ईसा ने अपनी नज़र उठा कर कहा, “ऐ बाप, मैं
तेरा शुक्र करता हूँ कि तू ने मेरी सुन ली है। 42 मैं तो
जानता हूँ कि तू हमेशा मेरी सुनता है। लेकिन मैं ने
यह बात पास खड़े लोगों की ख़ातिर की, ताकि वह
ईमान लाएँ कि तू ने मुझे भेजा है।” 43 फिर ईसा ज़ोर
से पुकार उठा, “लाज़र, निकल आ!” 44 और मुर्दा
निकल आया। अभी तक उस के हाथ और पाँओ
पट्टियों से बंधे हुए थे जबकि उस का चिहरा कपड़े
में लिपटा हुआ था। ईसा ने उन से कहा, “इस के
कफ़न को खोल कर इसे जाने दो।”

ईसा के ख़िलाफ़ मन्सूबाबन्दी

45 उन यहूदियों में से जो मरियम के पास आए थे
बहुत से ईसा पर ईमान लाए जब उन्हों ने वह देखा जो
उस ने किया। 46 लेकिन बाज़ फ़रीसियों के पास गए
और उन्हें बताया कि ईसा ने क्या किया है। 47 तब
राहनुमा इमामों और फ़रीसियों ने यहूदी अदालत-ए-
आलिया का इज्लास मुनअक़िद किया। उन्हों ने एक
दूसरे से पूछा, “हम क्या कर रहे हैं? यह आदमी
बहुत से इलाही निशान दिखा रहा है। 48 अगर हम
उसे खुला छोड़ें तो आख़िरकार सब उस पर ईमान
ले आएँगे। फिर रोमी आ कर हमारे बैत-उल-मुक़द्दस
और हमारे मुल्क को तबाह कर देंगे।”
49 उन में से एक काइफ़ा था जो उस साल इमाम-
ए-आज़म था। उस ने कहा, “आप कुछ नहीं समझते
50 और इस का ख़याल भी नहीं करते कि इस से पहले
कि पूरी क़ौम हलाक हो जाए बेहतर यह है कि एक
आदमी उम्मत के लिए मर जाए।” 51 उस ने यह बात
अपनी तरफ़ से नहीं की थी। उस साल के इमाम-
ए-आज़म की हैसियत से ही उस ने यह पेशगोई की

कि ईसा यहूदी क़ौम के लिए मरेगा। 52 और न सिर्फ़
इस के लिए बल्कि अल्लाह के बिखरे हुए फ़र्ज़न्दों को
जमा करके एक करने के लिए भी।
53 उस दिन से उन्हों ने ईसा को क़त्ल करने
का इरादा कर लिया। 54 इस लिए उस ने अब से
अलानिया यहूदियों के दरमियान वक़्त न गुज़ारा,
बल्कि उस जगह को छोड़ कर रेगिस्तान के क़रीब
एक इलाक़े में गया। वहाँ वह अपने शागिर्दों समेत
एक गाँव बनाम इफ़्राईम में रहने लगा।
55 फिर यहूदियों की ईद-ए-फ़सह क़रीब आ गई।
दीहात से बहुत से लोग अपने आप को पाक करवाने
के लिए ईद से पहले पहले यरूशलम पहुँचे। 56 वहाँ
वह ईसा का पता करते और बैत-उल-मुक़द्दस में खड़े
आपस में बात करते रहे, "क्या ख़याल है? क्या वह
तहवार पर नहीं आएगा?" 57 लेकिन राहनुमा इमामों
और फ़रीसियों ने हुक्म दिया था, "अगर किसी को
मालूम हो जाए कि ईसा कहाँ है तो वह इत्तिला दे
ताकि हम उसे गिरिफ़्तार कर लें।"

ईसा को बैत-अनियाह में मसह किया जाता है

12 1 फ़सह की ईद में अभी छः दिन बाक़ी
थे कि ईसा बैत-अनियाह पहुँचा। यह वह
जगह थी जहाँ उस लाज़र का घर था जिसे ईसा ने मुर्दों
में से ज़िन्दा किया था। 2 वहाँ उस के लिए एक ख़ास
खाना बनाया गया। मर्था खाने वालों की ख़िदमत
कर रही थी जबकि लाज़र ईसा और बाक़ी मेहमानों
के साथ खाने में शरीक था। 3 फिर मरियम ने आधा
लिटर ख़ालिस जटामासी का निहायत क़ीमती इत्र ले
कर ईसा के पाँओ पर उंडेल दिया और उन्हें अपने
बालों से पोंछ कर ख़ुश्क किया। ख़ुश्बू पूरे घर में फैल
गई। 4 लेकिन ईसा के शागिर्द यहूदाह इस्करियोती
ने एतिराज़ किया (बाद में उसी ने ईसा को दुश्मन
के हवाले कर दिया)। उस ने कहा, 5 "इस इत्र की
क़ीमत चाँदी के 300 सिक्के थी। इसे क्यूँ नहीं बेचा
गया ताकि इस के पैसे ग़रीबों को दिए जाते?" 6 उस
ने यह बात इस लिए नहीं की कि उसे ग़रीबों की
फ़िक्र थी। असल में वह चोर था। वह शागिर्दों का
ख़ज़ान्ची था और जमाशुदा पैसों में से बददियानती
करता रहता था।
7 लेकिन ईसा ने कहा, "उसे छोड़ दे! उस ने मेरी
तद्फ़ीन की तय्यारी के लिए यह किया है। 8 ग़रीब
तो हमेशा तुम्हारे पास रहेंगे, लेकिन मैं हमेशा तुम्हारे
पास नहीं रहूँगा।"

लाज़र के ख़िलाफ़ मन्सूबाबन्दी

9 इतने में यहूदियों की बड़ी तादाद को मालूम हुआ
कि ईसा वहाँ है। वह न सिर्फ़ ईसा से मिलने के लिए
आए बल्कि लाज़र से भी जिसे उस ने मुर्दों में से ज़िन्दा
किया था। 10 इस लिए राहनुमा इमामों ने लाज़र को
भी क़त्ल करने का मन्सूबा बनाया। 11 क्यूँकि उस
की वजह से बहुत से यहूदी उन में से चले गए और
ईसा पर ईमान ले आए थे।

यरूशलम में ईसा का पुरजोश इस्तिक़्बाल

12 अगले दिन ईद के लिए आए हुए लोगों को पता
चला कि ईसा यरूशलम आ रहा है। एक बड़ा हुजूम
13 खजूर की डालियाँ पकड़े शहर से निकल कर उस
से मिलने आया। चलते चलते वह चिल्ला कर नारे लगा
रहे थे,

"होशाना! [c]
मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है!
इस्राईल का बादशाह मुबारक है!"

14 ईसा को कहीं से एक जवान गधा मिल गया और
वह उस पर बैठ गया, जिस तरह कलाम-ए-मुक़द्दस
में लिखा है,

15 "ऐ सिय्यून बेटी, मत डर!
देख, तेरा बादशाह गधे के बच्चे पर सवार आ रहा
है।"

---

[c] होशाना (इब्रानी : मेहरबानी करके हमें बचा)। यहाँ इस में हम्द-ओ-सना का उन्सुर भी पाया जाता है।

16 उस वक़्त उस के शागिर्दों को इस बात की समझ
न आई। लेकिन बाद में जब ईसा अपने जलाल को
पहुँचा तो उन्हें याद आया कि लोगों ने उस के साथ
यह कुछ किया था और वह समझ गए कि कलाम-
ए-मुक़द्दस में इस का ज़िक्र भी है।
17 जो हुजूम उस वक़्त ईसा के साथ था जब उस ने
लाज़र को मुर्दों में से ज़िन्दा किया था, वह दूसरों को
इस के बारे में बताता रहा था। 18 इसी वजह से इतने
लोग ईसा से मिलने के लिए आए थे, उन्हों ने उस के
इस इलाही निशान के बारे में सुना था। 19 यह देख
कर फ़रीसी आपस में कहने लगे, "आप देख रहे हैं
कि बात नहीं बन रही। देखो, तमाम दुनिया उस के
पीछे हो ली है।"

कुछ यूनानी ईसा को तलाश करते हैं

20 कुछ यूनानी भी उन में थे जो फ़सह की ईद के
मौक़े पर परस्तिश करने के लिए आए हुए थे। 21 अब
वह फ़िलिप्पुस से मिलने आए जो गलील के बैत-सैदा
से था। उन्हों ने कहा, "जनाब, हम ईसा से मिलना
चाहते हैं।"
22 फ़िलिप्पुस ने अन्द्रियास को यह बात बताई और
फिर वह मिल कर ईसा के पास गए और उसे यह
ख़बर पहुँचाई। 23 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, "अब
वक़्त आ गया है कि इब्न-ए-आदम को जलाल मिले।
24 मैं तुम को सच बताता हूँ कि जब तक गन्दुम का
दाना ज़मीन में गिर कर मर न जाए वह अकेला ही
रहता है। लेकिन जब वह मर जाता है तो बहुत सा
फल लाता है। 25 जो अपनी जान को प्यार करता
है वह उसे खो देगा, और जो इस दुनिया में अपनी
जान से दुश्मनी रखता है वह उसे अबद तक महफ़ूज़
रखेगा। 26 अगर कोई मेरी ख़िदमत करना चाहे तो वह
मेरे पीछे हो ले, क्यूँकि जहाँ मैं हूँ वहाँ मेरा ख़ादिम
भी होगा। और जो मेरी ख़िदमत करे मेरा बाप उस
की इज़्ज़त करेगा।

ईसा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

27 अब मेरा दिल मुज़्तरिब है। मैं क्या कहूँ? क्या मैं
कहूँ, 'ऐ बाप, मुझे इस वक़्त से बचाए रख'? नहीं,
मैं तो इसी लिए आया हूँ। 28 ऐ बाप, अपने नाम को
जलाल दे।"
तब आसमान से एक आवाज़ सुनाई दी, "मैं उसे
जलाल दे चुका हूँ और दुबारा भी जलाल दूँगा।"
29 हुजूम के जो लोग वहाँ खड़े थे उन्हों ने यह सुन
कर कहा, "बादल गरज रहे हैं।" औरों ने ख़याल पेश
किया, "कोई फ़रिश्ता उस से हमकलाम हुआ है।"
30 ईसा ने उन्हें बताया, "यह आवाज़ मेरे वास्ते नहीं
बल्कि तुम्हारे वास्ते थी। 31 अब दुनिया की अदालत
करने का वक़्त आ गया है, अब दुनिया के हुक्मरान
को निकाल दिया जाएगा। 32 और मैं ख़ुद ज़मीन से
ऊँचे पर चढ़ाए जाने के बाद सब को अपने पास खैंच
लूँगा।" 33 इन अल्फ़ाज़ से उस ने इस तरफ़ इशारा
किया कि वह किस तरह की मौत मरेगा।
34 हुजूम बोल उठा, "कलाम-ए-मुक़द्दस से हम ने
सुना है कि मसीह अबद तक क़ाइम रहेगा। तो फिर
आप की यह कैसी बात है कि इब्न-ए-आदम को
ऊँचे पर चढ़ाया जाना है? आख़िर इब्न-ए-आदम है
कौन?"
35 ईसा ने जवाब दिया, "नूर थोड़ी देर और तुम्हारे
पास रहेगा। जितनी देर वह मौजूद है इस नूर में चलते
रहो ताकि तारीकी तुम पर छा न जाए। जो अंधेरे में
चलता है उसे नहीं मालूम कि वह कहाँ जा रहा है।
36 नूर के तुम्हारे पास से चले जाने से पहले पहले
उस पर ईमान लाओ ताकि तुम नूर के फ़र्ज़न्द बन
जाओ।"

लोग ईमान नहीं रखते

यह कहने के बाद ईसा चला गया और ग़ाइब हो
गया। 37 अगरचे ईसा ने यह तमाम इलाही निशान उन
के सामने ही दिखाए तो भी वह उस पर ईमान न लाए।
38 यूँ यसायाह नबी की पेशगोई पूरी हुई,

"ऐ रब, कौन हमारे पैग़ाम पर ईमान लाया?
और रब की क़ुदरत किस पर ज़ाहिर हुई?"
39 चुनाँचे वह ईमान न ला सके, जिस तरह यसायाह
नबी ने कहीं और फ़रमाया है,
40 "अल्लाह ने उन की आँखों को अंधा
और उन के दिल को बेहिस्स कर दिया है,
ऐसा न हो कि वह अपनी आँखों से देखें,
अपने दिल से समझें,
मेरी तरफ़ रुजू करें
और मैं उन्हें शिफ़ा दूँ।"
41 यसायाह ने यह इस लिए फ़रमाया क्यूँकि उस ने
ईसा का जलाल देख कर उस के बारे में बात की।
42 तो भी बहुत से लोग ईसा पर ईमान रखते थे।
उन में कुछ राहनुमा भी शामिल थे। लेकिन वह इस
का अलानिया इक़्रार नहीं करते थे, क्यूँकि वह डरते
थे कि फ़रीसी हमें यहूदी जमाअत से ख़ारिज कर
देंगे। 43 असल में वह अल्लाह की इज़्ज़त की निस्बत
इन्सान की इज़्ज़त को ज़्यादा अज़ीज़ रखते थे।

ईसा का कलाम लोगों की अदालत करेगा

44 फिर ईसा पुकार उठा, "जो मुझ पर ईमान रखता
है वह न सिर्फ़ मुझ पर बल्कि उस पर ईमान रखता
है जिस ने मुझे भेजा है। 45 और जो मुझे देखता है
वह उसे देखता है जिस ने मुझे भेजा है। 46 मैं नूर
की हैसियत से इस दुनिया में आया हूँ ताकि जो भी
मुझ पर ईमान लाए वह तारीकी में न रहे। 47 जो मेरी
बातें सुन कर उन पर अमल नहीं करता मैं उस की
अदालत नहीं करूँगा, क्यूँकि मैं दुनिया की अदालत
करने के लिए नहीं आया बल्कि उसे नजात देने के
लिए। 48 तो भी एक है जो उस की अदालत करता
है। जो मुझे रद्द करके मेरी बातें क़बूल नहीं करता
मेरा पेश किया गया कलाम ही क़ियामत के दिन उस
की अदालत करेगा। 49 क्यूँकि जो कुछ मैं ने बयान
किया है वह मेरी तरफ़ से नहीं है। मेरे भेजने वाले
बाप ही ने मुझे हुक्म दिया कि क्या कहना और क्या
सुनाना है। 50 और मैं जानता हूँ कि उस का हुक्म
अबदी ज़िन्दगी तक पहुँचाता है। चुनाँचे जो कुछ मैं
सुनाता हूँ वही कुछ है जो बाप ने मुझे बताया है।"

ईसा अपने शागिर्दों के पाँओ धोता है

13 1 फ़सह की ईद अब शुरू होने वाली थी।
ईसा जानता था कि वह वक़्त आ गया है
कि मुझे इस दुनिया को छोड़ कर बाप के पास जाना
है। गो उस ने हमेशा दुनिया में अपने लोगों से मुहब्बत
रखी थी, लेकिन अब उस ने आख़िरी हद तक उन पर
अपनी मुहब्बत का इज़हार किया।
2 फिर शाम का खाना तय्यार हुआ। उस वक़्त
इब्लीस शमाऊन इस्करियोती के बेटे यहूदाह के दिल
में ईसा को दुश्मन के हवाले करने का इरादा डाल
चुका था। 3 ईसा जानता था कि बाप ने सब कुछ मेरे
सपुर्द कर दिया है और कि मैं अल्लाह में से निकल
आया और अब उस के पास वापस जा रहा हूँ।
4 चुनाँचे उस ने दस्तरख़्वान से उठ कर अपना लिबास
उतार दिया और कमर पर तौलिया बांध लिया। 5 फिर
वह बासन में पानी डाल कर शागिर्दों के पाँओ धोने
और बंधे हुए तौलिया से पोंछ कर ख़ुश्क करने
लगा। 6 जब पतरस की बारी आई तो उस ने कहा,
"ख़ुदावन्द, आप मेरे पाँओ धोना चाहते हैं?"
7 ईसा ने जवाब दिया, "इस वक़्त तू नहीं समझता
कि मैं क्या कर रहा हूँ, लेकिन बाद में यह तेरी समझ
में आ जाएगा।"
8 पतरस ने एतिराज़ किया, "मैं कभी भी आप को
मेरे पाँओ धोने नहीं दूँगा!"
ईसा ने जवाब दिया, "अगर मैं तुझे न धोऊँ तो मेरे
साथ तेरा कोई हिस्सा नहीं होगा।"
9 यह सुन कर पतरस ने कहा, "तो फिर ख़ुदावन्द,
न सिर्फ़ मेरे पाँओ बल्कि मेरे हाथों और सर को भी
धोएँ!"
10 ईसा ने जवाब दिया, "जिस शख़्स ने नहा लिया है
उसे सिर्फ़ अपने पाँओ को धोने की ज़रूरत होती है,
क्यूँकि वह पूरे तौर पर पाक-साफ़ है। तुम पाक-साफ़
हो, लेकिन सब के सब नहीं।" 11 (ईसा को मालूम

था कि कौन उसे दुश्मन के हवाले करेगा। इस लिए
उस ने कहा कि सब के सब पाक-साफ़ नहीं हैं।)
12 उन सब के पाँओ धोने के बाद ईसा दुबारा अपना
लिबास पहन कर बैठ गया। उस ने सवाल किया,
"क्या तुम समझते हो कि मैं ने तुम्हारे लिए क्या किया
है? 13 तुम मुझे 'उस्ताद' और 'ख़ुदावन्द' कह कर
मुख़ातिब करते हो और यह सहीह है, क्यूँकि मैं यही
कुछ हूँ। 14 मैं, तुम्हारे ख़ुदावन्द और उस्ताद ने तुम्हारे
पाँओ धोए। इस लिए अब तुम्हारा फ़र्ज़ भी है कि एक
दूसरे के पाँओ धोया करो। 15 मैं ने तुम को एक नमूना
दिया है ताकि तुम भी वही करो जो मैं ने तुम्हारे साथ
किया है। 16 मैं तुम को सच बताता हूँ कि ग़ुलाम
अपने मालिक से बड़ा नहीं होता, न पैग़म्बर अपने
भेजने वाले से। 17 अगर तुम यह जानते हो तो इस पर
अमल भी करो, फिर ही तुम मुबारक होगे।
18 मैं तुम सब की बात नहीं कर रहा। जिन्हें मैं ने चुन
लिया है उन्हें मैं जानता हूँ। लेकिन कलाम-ए-मुक़द्दस
की उस बात का पूरा होना ज़रूर है, 'जो मेरी रोटी
खाता है उस ने मुझ पर लात उठाई है।' 19 मैं तुम
को इस से पहले कि वह पेश आए यह अभी बता
रहा हूँ, ताकि जब वह पेश आए तो तुम ईमान लाओ
कि मैं वही हूँ। 20 मैं तुम को सच बताता हूँ कि जो
शख़्स उसे क़बूल करता है जिसे मैं ने भेजा है वह
मुझे क़बूल करता है। और जो मुझे क़बूल करता है
वह उसे क़बूल करता है जिस ने मुझे भेजा है।"

ईसा को दुश्मन के हवाले किया जाता है

21 इन अल्फ़ाज़ के बाद ईसा निहायत मुज़्तरिब
हुआ और कहा, "मैं तुम को सच बताता हूँ कि तुम
में से एक मुझे दुश्मन के हवाले कर देगा।"
22 शागिर्द उलझन में एक दूसरे को देख कर सोचने
लगे कि ईसा किस की बात कर रहा है। 23 एक
शागिर्द जिसे ईसा प्यार करता था उस के क़रीबतरीन
बैठा था। 24 पतरस ने उसे इशारा किया कि वह उस
से दरयाफ़्त करे कि वह किस की बात कर रहा है।
25 उस शागिर्द ने ईसा की तरफ़ सर झुका कर पूछा,
"ख़ुदावन्द, यह कौन है?"
26 ईसा ने जवाब दिया, "जिसे मैं रोटी का लुक़्मा
शोर्ब में डुबो कर दूँ, वही है।" फिर लुक़्मे को डुबो
कर उस ने शमाऊन इस्करियोती के बेटे यहूदाह को दे
दिया। 27 जूँ ही यहूदाह ने यह लुक़्मा ले लिया इब्लीस
उस में समा गया। ईसा ने उसे बताया, "जो कुछ
करना है वह जल्दी से कर ले।" 28 लेकिन मेज़ पर
बैठे लोगों में से किसी को मालूम न हुआ कि ईसा
ने यह क्यूँ कहा। 29 बाज़ का ख़याल था कि चूँकि
यहूदाह ख़ज़ान्ची था इस लिए वह उसे बता रहा है
कि ईद के लिए दरकार चीज़ें ख़रीद ले या ग़रीबों में
कुछ तक़्सीम कर दे।
30 चुनाँचे ईसा से यह लुक़्मा लेते ही यहूदाह बाहर
निकल गया। रात का वक़्त था।

ईसा का नया हुक्म

31 यहूदाह के चले जाने के बाद ईसा ने कहा, "अब
इब्न-ए-आदम ने जलाल पाया और अल्लाह ने उस
में जलाल पाया है। 32 हाँ, चूँकि अल्लाह को उस में
जलाल मिल गया है इस लिए अल्लाह अपने में फ़र्ज़न्द
को जलाल देगा। और वह यह जलाल फ़ौरन देगा।
33 मेरे बच्चो, मैं थोड़ी देर और तुम्हारे पास ठहरूँगा।
तुम मुझे तलाश करोगे, और जो कुछ मैं यहूदियों को
बता चुका हूँ वह अब तुम को भी बताता हूँ, जहाँ
मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते। 34 मैं तुम को
एक नया हुक्म देता हूँ, यह कि एक दूसरे से मुहब्बत
रखो। जिस तरह मैं ने तुम से मुहब्बत रखी उसी तरह
तुम भी एक दूसरे से मुहब्बत करो। 35 अगर तुम एक
दूसरे से मुहब्बत रखोगे तो सब जान लेंगे कि तुम मेरे
शागिर्द हो।"

पतरस के इन्कार की पेशगोई

36 पतरस ने पूछा, "ख़ुदावन्द, आप कहाँ जा रहे
हैं?"

ईसा ने जवाब दिया, “जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तू
मेरे पीछे नहीं आ सकता। लेकिन बाद में तू मेरे पीछे
आ जाएगा।”
37 पतरस ने सवाल किया, “ख़ुदावन्द, मैं आप के
पीछे अभी क्यूँ नहीं जा सकता? मैं आप के लिए
अपनी जान तक देने को तय्यार हूँ।”
38 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “तू मेरे लिए अपनी
जान देना चाहता है? मैं तुझे सच बताता हूँ कि मुर्ग़
के बाँग देने से पहले पहले तू तीन मर्तबा मुझे जानने
से इन्कार कर चुका होगा।

ईसा बाप के पास जाने की राह है

14 1 तुम्हारा दिल न घबराए। तुम अल्लाह पर
ईमान रखते हो, मुझ पर भी ईमान रखो।
2 मेरे बाप के घर में बेशुमार मकान हैं। अगर ऐसा न
होता तो क्या मैं तुम को बताता कि मैं तुम्हारे लिए
जगह तय्यार करने के लिए वहाँ जा रहा हूँ? 3 और
अगर मैं जा कर तुम्हारे लिए जगह तय्यार करूँ तो
वापस आ कर तुम को अपने साथ ले जाऊँगा ताकि
जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम भी हो। 4 और जहाँ मैं जा रहा हूँ
उस की राह तुम जानते हो।”
5 तोमा बोल उठा, “ख़ुदावन्द, हमें मालूम नहीं कि
आप कहाँ जा रहे हैं। तो फिर हम उस की राह किस
तरह जानें?”
6 ईसा ने जवाब दिया, “राह और हक़ और ज़िन्दगी
मैं हूँ। कोई मेरे वसीले के बग़ैर बाप के पास नहीं आ
सकता। 7 अगर तुम ने मुझे जान लिया है तो इस का
मतलब है कि तुम मेरे बाप को भी जान लोगे। और
अब से ऐसा है भी। तुम उसे जानते हो और तुम ने
उस को देख लिया है।”
8 फ़िलिप्पुस ने कहा, “ऐ ख़ुदावन्द, बाप को हमें
दिखाएँ। बस यही हमारे लिए काफ़ी है।”
9 ईसा ने जवाब दिया, “फ़िलिप्पुस, मैं इतनी देर
से तुम्हारे साथ हूँ, क्या इस के बावुजूद तू मुझे नहीं
जानता? जिस ने मुझे देखा उस ने बाप को देखा है।
तो फिर तू क्यूँकर कहता है, ‘बाप को हमें दिखाएँ’?
10 क्या तू ईमान नहीं रखता कि मैं बाप में हूँ और
बाप मुझ में है? जो बातें में तुम को बताता हूँ वह
मेरी नहीं बल्कि मुझ में रहने वाले बाप की तरफ़ से
हैं। वही अपना काम कर रहा है। 11 मेरी बात का
यक़ीन करो कि मैं बाप में हूँ और बाप मुझ में है। या
कम अज़ कम उन कामों की बिना पर यक़ीन करो जो
मैं ने किए हैं। 12 मैं तुम को सच बताता हूँ कि जो मुझ
पर ईमान रखे वह वही कुछ करेगा जो मैं करता हूँ।
न सिर्फ़ यह बल्कि वह इन से भी बड़े काम करेगा,
क्यूँकि मैं बाप के पास जा रहा हूँ। 13 और जो कुछ
तुम मेरे नाम में माँगो मैं दूँगा ताकि बाप को फ़र्ज़न्द
में जलाल मिल जाए। 14 जो कुछ तुम मेरे नाम में मुझ
से चाहो वह मैं करूँगा।

रूह-उल-क़ुद्स देने का वादा

15 अगर तुम मुझे प्यार करते हो तो मेरे अह्काम
के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारोगे। 16 और मैं बाप से
गुज़ारिश करूँगा तो वह तुम को एक और मददगार
देगा जो अबद तक तुम्हारे साथ रहेगा 17 यानी सच्चाई
का रूह, जिसे दुनिया पा नहीं सकती, क्यूँकि वह न
तो उसे देखती न जानती है। लेकिन तुम उसे जानते
हो, क्यूँकि वह तुम्हारे साथ रहता है और आइन्दा
तुम्हारे अन्दर रहेगा।
18 मैं तुम को यतीम छोड़ कर नहीं जाऊँगा बल्कि
तुम्हारे पास वापस आऊँगा। 19 थोड़ी देर के बाद
दुनिया मुझे नहीं देखेगी, लेकिन तुम मुझे देखते रहोगे।
चूँकि मैं ज़िन्दा हूँ इस लिए तुम भी ज़िन्दा रहोगे।
20 जब वह दिन आएगा तो तुम जान लोगे कि मैं अपने
बाप में हूँ, तुम मुझ में हो और मैं तुम में।
21 जिस के पास मेरे अह्काम हैं और जो उन के
मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारता है, वही मुझे प्यार करता
है। और जो मुझे प्यार करता है उसे मेरा बाप प्यार
करेगा। मैं भी उसे प्यार करूँगा और अपने आप को
उस पर ज़ाहिर करूँगा।”

22 यहूदाह (यहूदाह इस्करियोती नहीं) ने पूछा,
“ख़ुदावन्द, क्या वजह है कि आप अपने आप को
सिर्फ़ हम पर ज़ाहिर करेंगे और दुनिया पर नहीं?”
23 ईसा ने जवाब दिया, “अगर कोई मुझे प्यार करे
तो वह मेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारेगा।
मेरा बाप ऐसे शख़्स को प्यार करेगा और हम उस के
पास आ कर उस के साथ सुकूनत करेंगे। 24 जो मुझ
से मुहब्बत नहीं करता वह मेरी बातों के मुताबिक़
ज़िन्दगी नहीं गुज़ारता। और जो कलाम तुम मुझ से
सुनते हो वह मेरा अपना कलाम नहीं है बल्कि बाप
का है जिस ने मुझे भेजा है।
25 यह सब कुछ मैं ने तुम्हारे साथ रहते हुए तुम को
बताया है। 26 लेकिन बाद में रूह-उल-क़ुद्स, जिसे
बाप मेरे नाम से भेजेगा तुम को सब कुछ सिखाएगा।
यह मददगार तुम को हर बात की याद दिलाएगा जो
मैं ने तुम को बताई है।
27 मैं तुम्हारे पास सलामती छोड़े जाता हूँ, अपनी
ही सलामती तुम को दे देता हूँ। और मैं इसे यूँ नहीं
देता जिस तरह दुनिया देती है। तुम्हारा दिल न घबराए
और न डरे। 28 तुम ने मुझ से सुन लिया है कि ‘मैं जा
रहा हूँ और तुम्हारे पास वापस आऊँगा।’ अगर तुम
मुझ से मुहब्बत रखते तो तुम इस बात पर ख़ुश होते
कि मैं बाप के पास जा रहा हूँ, क्यूँकि बाप मुझ से
बड़ा है। 29 मैं ने तुम को पहले से बता दिया है, इस
से पेशतर कि यह हो, ताकि जब पेश आए तो तुम
ईमान लाओ। 30 अब से मैं तुम से ज़्यादा बातें नहीं
करूँगा, क्यूँकि इस दुनिया का हुक्मरान आ रहा है।
उसे मुझ पर कोई क़ाबू नहीं है, 31 लेकिन दुनिया यह
जान ले कि मैं बाप को प्यार करता हूँ और वही कुछ
करता हूँ जिस का हुक्म वह मुझे देता है।
अब उठो, हम यहाँ से चलें।

ईसा अंगूर की हक़ीक़ी बेल है

15 1 मैं अंगूर की हक़ीक़ी बेल हूँ और मेरा बाप
माली है। 2 वह मेरी हर शाख़ को जो फल
नहीं लाती काट कर फैंक देता है। लेकिन जो शाख़
फल लाती है उस की वह काँट-छाँट करता है ताकि
ज़्यादा फल लाए। 3 उस कलाम के ज़रीए जो मैं ने
तुम को सुनाया है तुम तो पाक-साफ़ हो चुके हो।
4 मुझ में क़ाइम रहो तो मैं भी तुम में क़ाइम रहूँगा।
जो शाख़ बेल से कट गई है वह फल नहीं ला सकती।
बिलकुल इसी तरह तुम भी अगर तुम मुझ में क़ाइम
नहीं रहते फल नहीं ला सकते।
5 मैं ही अंगूर की बेल हूँ, और तुम उस की शाख़ें
हो। जो मुझ में क़ाइम रहता है और मैं उस में वह
बहुत सा फल लाता है, क्यूँकि मुझ से अलग हो कर
तुम कुछ नहीं कर सकते। 6 जो मुझ में क़ाइम नहीं
रहता और न मैं उस में उसे बेफ़ाइदा शाख़ की तरह
बाहर फैंक दिया जाता है। ऐसी शाख़ें सूख जाती हैं
और लोग उन का ढेर लगा कर उन्हें आग में झोंक
देते हैं जहाँ वह जल जाती हैं। 7 अगर तुम मुझ में
क़ाइम रहो और मैं तुम में तो जो जी चाहे माँगो, वह
तुम को दिया जाएगा। 8 जब तुम बहुत सा फल लाते
और यूँ मेरे शागिर्द साबित होते हो तो इस से मेरे बाप
को जलाल मिलता है। 9 जिस तरह बाप ने मुझ से
मुहब्बत रखी है उसी तरह मैं ने तुम से भी मुहब्बत
रखी है। अब मेरी मुहब्बत में क़ाइम रहो। 10 जब तुम
मेरे अह्काम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारते हो तो तुम
मुझ में क़ाइम रहते हो। मैं भी इसी तरह अपने बाप
के अह्काम के मुताबिक़ चलता हूँ और यूँ उस की
मुहब्बत में क़ाइम रहता हूँ।
11 मैं ने तुम को यह इस लिए बताया है ताकि मेरी
ख़ुशी तुम में हो बल्कि तुम्हारा दिल ख़ुशी से भर कर
छलक उठे। 12 मेरा हुक्म यह है कि एक दूसरे को वैसे
प्यार करो जैसे मैं ने तुम को प्यार किया है। 13 इस से
बड़ी मुहब्बत है नहीं कि कोई अपने दोस्तों के लिए
अपनी जान दे दे। 14 तुम मेरे दोस्त हो अगर तुम वह
कुछ करो जो मैं तुम को बताता हूँ। 15 अब से मैं नहीं
कहता कि तुम ग़ुलाम हो, क्यूँकि ग़ुलाम नहीं जानता
कि उस का मालिक क्या करता है। इस के बजाय मैं
ने कहा है कि तुम दोस्त हो, क्यूँकि मैं ने तुम को सब
कुछ बताया है जो मैं ने अपने बाप से सुना है। 16 तुम

ने मुझे नहीं चुना बल्कि मैं ने तुम को चुन लिया है।
मैं ने तुम को मुक़र्रर किया कि जा कर फल लाओ,
ऐसा फल जो क़ाइम रहे। फिर बाप तुम को वह कुछ
देगा जो तुम मेरे नाम में माँगोगे। 17 मेरा हुक्म यही है
कि एक दूसरे से मुहब्बत रखो।

दुनिया की दुश्मनी

18 अगर दुनिया तुम से दुश्मनी रखे तो यह बात
ज़हन में रखो कि उस ने तुम से पहले मुझ से दुश्मनी
रखी है। 19 अगर तुम दुनिया के होते तो दुनिया तुम
को अपना समझ कर प्यार करती। लेकिन तुम दुनिया
के नहीं हो। मैं ने तुम को दुनिया से अलग करके
चुन लिया है। इस लिए दुनिया तुम से दुश्मनी रखती
है। 20 वह बात याद करो जो मैं ने तुम को बताई
कि ग़ुलाम अपने मालिक से बड़ा नहीं होता। अगर
उन्हों ने मुझे सताया है तो तुम्हें भी सताएँगे। और
अगर उन्हों ने मेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारी
तो वह तुम्हारी बातों पर भी अमल करेंगे। 21 लेकिन
तुम्हारे साथ जो कुछ भी करेंगे, मेरे नाम की वजह
से करेंगे, क्यूँकि वह उसे नहीं जानते जिस ने मुझे
भेजा है। 22 अगर मैं आया न होता और उन से बात
न की होती तो वह क़ुसूरवार न ठहरते। लेकिन अब
उन के गुनाह का कोई भी उज़्र बाक़ी नहीं रहा। 23 जो
मुझ से दुश्मनी रखता है वह मेरे बाप से भी दुश्मनी
रखता है। 24 अगर मैं ने उन के दरमियान ऐसा काम
न किया होता जो किसी और ने नहीं किया तो वह
क़ुसूरवार न ठहरते। लेकिन अब उन्हों ने सब कुछ
देखा है और फिर भी मुझ से और मेरे बाप से दुश्मनी
रखी है। 25 और ऐसा होना भी था ताकि कलाम-ए-
मुक़द्दस की यह पेशगोई पूरी हो जाए कि 'उन्हों ने
बिलावजह मुझ से कीना रखा है।'

26 जब वह मददगार आएगा जिसे मैं बाप की तरफ़
से तुम्हारे पास भेजूँगा तो वह मेरे बारे में गवाही देगा।
वह सच्चाई का रूह है जो बाप में से निकलता है।
27 तुम को भी मेरे बारे में गवाही देना है, क्यूँकि तुम
इब्तिदा से मेरे साथ रहे हो।

16 1 मैं ने तुम को यह इस लिए बताया है ताकि
तुम गुमराह न हो जाओ। 2 वह तुम को
यहूदी जमाअतों से निकाल देंगे, बल्कि वह वक़्त
भी आने वाला है कि जो भी तुम को मार डालेगा वह
समझेगा, 'मैं ने अल्लाह की ख़िदमत की है।' 3 वह इस
क़िस्म की हरकतें इस लिए करेंगे कि उन्हों ने न बाप
को जाना है, न मुझे। 4 मैं ने तुम को यह बातें इस लिए
बताई हैं कि जब उन का वक़्त आ जाए तो तुम को
याद आए कि मैं ने तुम्हें आगाह कर दिया था।

रूह-उल-क़ुद्स की ख़िदमत

मैं ने अब तक तुम को यह नहीं बताया क्यूँकि मैं
तुम्हारे साथ था। 5 लेकिन अब मैं उस के पास जा
रहा हूँ जिस ने मुझे भेजा है। तो भी तुम में से कोई
मुझ से नहीं पूछता, 'आप कहाँ जा रहे हैं?' 6 इस के
बजाय तुम्हारे दिल ग़मज़दा हैं कि मैं ने तुम को ऐसी
बातें बताई हैं। 7 लेकिन मैं तुम को सच बताता हूँ कि
तुम्हारे लिए फ़ाइदामन्द है कि मैं जा रहा हूँ। अगर मैं
न जाऊँ तो मददगार तुम्हारे पास नहीं आएगा। लेकिन
अगर मैं जाऊँ तो मैं उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा। 8 और
जब वह आएगा तो गुनाह, रास्तबाज़ी और अदालत
के बारे में दुनिया की ग़लती को बेनिक़ाब करके यह
ज़ाहिर करेगा : 9 गुनाह के बारे में यह कि लोग मुझ
पर ईमान नहीं रखते, 10 रास्तबाज़ी के बारे में यह
कि मैं बाप के पास जा रहा हूँ और तुम मुझे अब से
नहीं देखोगे, 11 और अदालत के बारे में यह कि इस
दुनिया के हुक्मरान की अदालत हो चुकी है।

12 मुझे तुम को मज़ीद बहुत कुछ बताना है, लेकिन
इस वक़्त तुम उसे बर्दाश्त नहीं कर सकते। 13 जब
सच्चाई का रूह आएगा तो वह पूरी सच्चाई की तरफ़
तुम्हारी राहनुमाई करेगा। वह अपनी मर्ज़ी से बात
नहीं करेगा बल्कि सिर्फ़ वही कुछ कहेगा जो वह
ख़ुद सुनेगा। वही तुम को मुस्तक़बिल के बारे में भी
बताएगा। 14 और वह इस में मुझे जलाल देगा कि
वह तुम को वही कुछ सुनाएगा जो उसे मुझ से मिला
होगा। 15 जो कुछ भी बाप का है वह मेरा है। इस

लिए मैं ने कहा, 'रूह तुम को वही कुछ सुनाएगा जो उसे मुझ से मिला होगा।'

अब दुख फिर सुख

16 थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे। फिर
थोड़ी देर के बाद तुम मुझे दुबारा देख लोगे।"
17 उस के कुछ शागिर्द आपस में बात करने लगे,
"ईसा के यह कहने से क्या मुराद है कि 'थोड़ी देर के
बाद तुम मुझे नहीं देखोगे, फिर थोड़ी देर के बाद मुझे
दुबारा देख लोगे'? और इस का क्या मतलब है, 'मैं
बाप के पास जा रहा हूँ'?" 18 और वह सोचते रहे,
"यह किस क़िस्म की 'थोड़ी देर' है जिस का ज़िक्र
वह कर रहे हैं? हम उन की बात नहीं समझते।"
19 ईसा ने जान लिया कि वह मुझ से इस के बारे
में सवाल करना चाहते हैं। इस लिए उस ने कहा,
"क्या तुम एक दूसरे से पूछ रहे हो कि मेरी इस बात
का क्या मतलब है कि 'थोड़ी देर के बाद तुम मुझे
नहीं देखोगे, फिर थोड़ी देर के बाद मुझे दुबारा देख
लोगे'? 20 मैं तुम को सच बताता हूँ कि तुम रो रो
कर मातम करोगे जबकि दुनिया ख़ुश होगी। तुम ग़म
करोगे, लेकिन तुम्हारा ग़म ख़ुशी में बदल जाएगा।
21 जब किसी औरत के बच्चा पैदा होने वाला होता
है तो उसे ग़म और तक्लीफ़ होती है क्यूँकि उस का
वक़्त आ गया है। लेकिन जूँ ही बच्चा पैदा हो जाता है
तो माँ ख़ुशी के मारे कि एक इन्सान दुनिया में आ गया
है अपनी तमाम मुसीबत भूल जाती है। 22 यही तुम्हारी
हालत है। क्यूँकि अब तुम ग़मज़दा हो, लेकिन मैं तुम
से दुबारा मिलूँगा। उस वक़्त तुम को ख़ुशी होगी, ऐसी
ख़ुशी जो तुम से कोई छीन न लेगा।
23 उस दिन तुम मुझ से कुछ नहीं पूछोगे। मैं तुम
को सच बताता हूँ कि जो कुछ तुम मेरे नाम में बाप
से माँगोगे वह तुम को देगा। 24 अब तक तुम ने मेरे
नाम में कुछ नहीं माँगा। माँगो तो तुम को मिलेगा।
फिर तुम्हारी ख़ुशी पूरी हो जाएगी।

दुनिया पर फ़त्ह

25 मैं ने तुम को यह तम्सीलों में बताया है। लेकिन
एक दिन आएगा जब मैं ऐसा नहीं करूँगा। उस वक़्त
मैं तम्सीलों में बात नहीं करूँगा बल्कि तुम को बाप
के बारे में साफ़ साफ़ बता दूँगा। 26 उस दिन तुम मेरा
नाम ले कर माँगोगे। मेरे कहने का मतलब यह नहीं
कि मैं ही तुम्हारी ख़ातिर बाप से दरख़्वास्त करूँगा।
27 क्यूँकि बाप ख़ुद तुम को प्यार करता है, इस लिए
कि तुम ने मुझे प्यार किया है और ईमान लाए हो
कि मैं अल्लाह में से निकल आया हूँ। 28 मैं बाप में से
निकल कर दुनिया में आया हूँ। और अब मैं दुनिया
को छोड़ कर बाप के पास वापस जाता हूँ।"
29 इस पर उस के शागिर्दों ने कहा, "अब आप
तम्सीलों में नहीं बल्कि साफ़ साफ़ बात कर रहे हैं।
30 अब हमें समझ आई है कि आप सब कुछ जानते
हैं और कि इस की ज़रूरत नहीं कि कोई आप की
पूछगछ करे। इस लिए हम ईमान रखते हैं कि आप
अल्लाह में से निकल कर आए हैं।"
31 ईसा ने जवाब दिया, "अब तुम ईमान रखते हो?
32 देखो, वह वक़्त आ रहा है बल्कि आ चुका है जब
तुम तित्तर-बित्तर हो जाओगे। मुझे अकेला छोड़ कर
हर एक अपने घर चला जाएगा। तो भी मैं अकेला
नहीं हूँगा क्यूँकि बाप मेरे साथ है। 33 मैं ने तुम को
इस लिए यह बात बताई ताकि तुम मुझ में सलामती
पाओ। दुनिया में तुम मुसीबत में फंसे रहते हो। लेकिन
हौसला रखो, मैं दुनिया पर ग़ालिब आया हूँ।"

ईसा अपने शागिर्दों के लिए दुआ करता है

17 1 यह कह कर ईसा ने अपनी नज़र आसमान
की तरफ़ उठाई और दुआ की, "ऐ बाप,
वक़्त आ गया है। अपने फ़र्ज़न्द को जलाल दे ताकि
फ़र्ज़न्द तुझे जलाल दे। 2 क्यूँकि तू ने उसे तमाम
इन्सानों पर इख़तियार दिया है ताकि वह उन सब को
अबदी ज़िन्दगी दे जो तू ने उसे दिए हैं। 3 और अबदी
ज़िन्दगी यह है कि वह तुझे जान लें जो वाहिद और

सच्चा ख़ुदा है और ईसा मसीह को भी जान लें जिसे
तू ने भेजा है। 4 मैं ने तुझे ज़मीन पर जलाल दिया और
उस काम की तक्मील की जिस की ज़िम्मादारी तू ने
मुझे दी थी। 5 और अब मुझे अपने हुज़ूर जलाल दे,
ऐ बाप, वही जलाल जो मैं दुनिया की तख़्लीक़ से
पेशतर तेरे हुज़ूर रखता था।

6 मैं ने तेरा नाम उन लोगों पर ज़ाहिर किया जिन्हें
तू ने दुनिया से अलग करके मुझे दिया है। वह तेरे
ही थे। तू ने उन्हें मुझे दिया और उन्हों ने तेरे कलाम
के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारी है। 7 अब उन्हों ने जान
लिया है कि जो कुछ भी तू ने मुझे दिया है वह तेरी
तरफ़ से है। 8 क्यूँकि जो बातें तू ने मुझे दीं मैं ने उन्हें दी
हैं। नतीजे में उन्हों ने यह बातें क़बूल करके हक़ीक़ी
तौर पर जान लिया कि मैं तुझ में से निकल कर आया
हूँ। साथ साथ वह ईमान भी लाए कि तू ने मुझे भेजा
है।

9 मैं उन के लिए दुआ करता हूँ, दुनिया के लिए नहीं
बल्कि उन के लिए जिन्हें तू ने मुझे दिया है, क्यूँकि
वह तेरे ही हैं। 10 जो भी मेरा है वह तेरा है और जो
तेरा है वह मेरा है। चुनाँचे मुझे उन में जलाल मिला है।
11 अब से मैं दुनिया में नहीं हूँगा। लेकिन यह दुनिया
में रह गए हैं जबकि मैं तेरे पास आ रहा हूँ। क़ुद्दूस
बाप, अपने नाम में उन्हें महफ़ूज़ रख, उस नाम में जो
तू ने मुझे दिया है, ताकि वह एक हों जैसे हम एक हैं।
12 जितनी देर मैं उन के साथ रहा मैं ने उन्हें तेरे नाम में
महफ़ूज़ रखा, उसी नाम में जो तू ने मुझे दिया था। मैं ने
यूँ उन की निगहबानी की कि उन में से एक भी हलाक
नहीं हुआ सिवाए हलाकत के फ़र्ज़न्द के। यूँ कलाम
की पेशगोई पूरी हुई। 13 अब तो मैं तेरे पास आ रहा
हूँ। लेकिन मैं दुनिया में होते हुए यह बयान कर रहा हूँ
ताकि उन के दिल मेरी ख़ुशी से भर कर छलक उठें।
14 मैं ने उन्हें तेरा कलाम दिया है और दुनिया ने उन से
दुश्मनी रखी, क्यूँकि यह दुनिया के नहीं हैं, जिस तरह
मैं भी दुनिया का नहीं हूँ। 15 मेरी दुआ यह नहीं है कि
तू उन्हें दुनिया से उठा ले बल्कि यह कि उन्हें इब्लीस
से महफ़ूज़ रखे। 16 वह दुनिया के नहीं हैं जिस तरह
मैं भी दुनिया का नहीं हूँ। 17 उन्हें सच्चाई के वसीले से
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस कर। तेरा कलाम ही सच्चाई है।
18 जिस तरह तू ने मुझे दुनिया में भेजा है उसी तरह
मैं ने भी उन्हें दुनिया में भेजा है। 19 उन की ख़ातिर
मैं अपने आप को मख़्सूस करता हूँ, ताकि उन्हें भी
सच्चाई के वसीले से मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस किया जाए।

20 मेरी दुआ न सिर्फ़ इन ही के लिए है, बल्कि उन
सब के लिए भी जो इन का पैग़ाम सुन कर मुझ पर
ईमान लाएँगे 21 ताकि सब एक हों। जिस तरह तू ऐ
बाप, मुझ में है और मैं तुझ में हूँ उसी तरह वह भी हम
में हों ताकि दुनिया यक़ीन करे कि तू ने मुझे भेजा है।
22 मैं ने उन्हें वह जलाल दिया है जो तू ने मुझे दिया
है ताकि वह एक हों जिस तरह हम एक हैं, 23 मैं उन
में और तू मुझ में। वह कामिल तौर पर एक हों ताकि
दुनिया जान ले कि तू ने मुझे भेजा और कि तू ने उन
से मुहब्बत रखी है जिस तरह मुझ से रखी है।

24 ऐ बाप, मैं चाहता हूँ कि जो तू ने मुझे दिए हैं वह
भी मेरे साथ हों, वहाँ जहाँ मैं हूँ, कि वह मेरे जलाल
को देखें, वह जलाल जो तू ने इस लिए मुझे दिया
है कि तू ने मुझे दुनिया की तख़्लीक़ से पेशतर प्यार
किया है। 25 ऐ रास्त बाप, दुनिया तुझे नहीं जानती,
लेकिन मैं तुझे जानता हूँ। और यह शागिर्द जानते हैं
कि तू ने मुझे भेजा है। 26 मैं ने तेरा नाम उन पर ज़ाहिर
किया और इसे ज़ाहिर करता रहूँगा ताकि तेरी मुझ
से मुहब्बत उन में हो और मैं उन में हूँ।”

ईसा की गिरिफ़्तारी

18 1 यह कह कर ईसा अपने शागिर्दों के
साथ निकला और वादी-ए-क़िद्रोन को पार
करके एक बाग़ में दाख़िल हुआ। 2 यहूदाह जो उसे
दुश्मन के हवाले करने वाला था वह भी इस जगह से
वाक़िफ़ था, क्यूँकि ईसा वहाँ अपने शागिर्दों के साथ
जाया करता था। 3 राहनुमा इमामों और फ़रीसियों ने
यहूदाह को रोमी फ़ौजियों का दस्ता और बैत-उल-
मुक़द्दस के कुछ पहरेदार दिए थे। अब यह मशअलें,
लालटैन और हथियार लिए बाग़ में पहुँचे। 4 ईसा को

मालूम था कि उसे क्या पेश आएगा। चुनाँचे उस ने
निकल कर उन से पूछा, “तुम किस को ढूँड रहे हो?”
5 उन्हों ने जवाब दिया, “ईसा नासरी को।”
ईसा ने उन्हें बताया, “मैं ही हूँ।”
यहूदाह जो उसे दुश्मन के हवाले करना चाहता था,
वह भी उन के साथ खड़ा था। 6 जब ईसा ने एलान
किया, “मैं ही हूँ,” तो सब पीछे हट कर ज़मीन पर
गिर पड़े। 7 एक और बार ईसा ने उन से सवाल किया,
“तुम किस को ढूँड रहे हो?”
उन्हों ने जवाब दिया, “ईसा नासरी को।”
8 उस ने कहा, “मैं तुम को बता चुका हूँ कि मैं ही
हूँ। अगर तुम मुझे ढूँड रहे हो तो इन को जाने दो।”
9 यूँ उस की यह बात पूरी हुई, “मैं ने उन में से जो तू
ने मुझे दिए हैं एक को भी नहीं खोया।”
10 शमाऊन पतरस के पास तलवार थी। अब उस ने
उसे मियान से निकाल कर इमाम-ए-आज़म के ग़ुलाम
का दहना कान उड़ा दिया (ग़ुलाम का नाम मलख़ुस
था)। 11 लेकिन ईसा ने पतरस से कहा, “तलवार को
मियान में रख। क्या मैं वह प्याला न पियूँ जो बाप ने
मुझे दिया है?”

ईसा हन्ना के सामने

12 फिर फ़ौजी दस्ते, उन के अफ़्सर और बैत-उल-
मुक़द्दस के यहूदी पहरेदारों ने ईसा को गिरिफ़्तार
करके बांध लिया। 13 पहले वह उसे हन्ना के पास ले
गए। हन्ना उस साल के इमाम-ए-आज़म काइफ़ा का
सुसर था। 14 काइफ़ा ही ने यहूदियों को यह मश्वरा
दिया था कि बेहतर यह है कि एक ही आदमी उम्मत
के लिए मर जाए।

पतरस ईसा को जानने से इन्कार करता है

15 शमाऊन पतरस किसी और शागिर्द के साथ ईसा
के पीछे हो लिया था। यह दूसरा शागिर्द इमाम-
ए-आज़म का जानने वाला था, इस लिए वह ईसा
के साथ इमाम-ए-आज़म के सहन में दाख़िल हुआ।
16 पतरस बाहर दरवाज़े पर खड़ा रहा। फिर इमाम-ए-
आज़म का जानने वाला शागिर्द दुबारा निकल आया।
उस ने गेट की निगरानी करने वाली औरत से बात
की तो उसे पतरस को अपने साथ अन्दर ले जाने की
इजाज़त मिली। 17 उस औरत ने पतरस से पूछा, “तुम
भी इस आदमी के शागिर्द हो कि नहीं?”
उस ने जवाब दिया, “नहीं, मैं नहीं हूँ।”
18 ठंड थी, इस लिए ग़ुलामों और पहरेदारों ने
लकड़ी के कोएलों से आग जलाई। अब वह उस
के पास खड़े ताप रहे थे। पतरस भी उन के साथ
खड़ा ताप रहा था।

इमाम-ए-आज़म ईसा की पूछगछ करता है

19 इतने में इमाम-ए-आज़म ईसा की पूछगछ करके
उस के शागिर्दों और तालीम के बारे में तफ़्तीश करने
लगा। 20 ईसा ने जवाब में कहा, “मैं ने दुनिया में
खुल कर बात की है। मैं हमेशा यहूदी इबादतख़ानों
और बैत-उल-मुक़द्दस में तालीम देता रहा, वहाँ जहाँ
तमाम यहूदी जमा हुआ करते हैं। पोशीदगी में तो मैं
ने कुछ नहीं कहा। 21 आप मुझ से क्यूँ पूछ रहे हैं?
उन से दरयाफ़्त करें जिन्हों ने मेरी बातें सुनी हैं। उन
को मालूम है कि मैं ने क्या कुछ कहा है।”
22 इस पर साथ खड़े बैत-उल-मुक़द्दस के पहरेदारों
में से एक ने ईसा के मुँह पर थप्पड़ मार कर कहा,
“क्या यह इमाम-ए-आज़म से बात करने का तरीक़ा
है जब वह तुम से कुछ पूछे?”
23 ईसा ने जवाब दिया, “अगर मैं ने बुरी बात की
है तो साबित कर। लेकिन अगर सच कहा, तो तू ने
मुझे क्यूँ मारा?”
24 फिर हन्ना ने ईसा को बंधी हुई हालत में इमाम-
ए-आज़म काइफ़ा के पास भेज दिया।

पतरस दुबारा ईसा को जानने से इन्कार करता है

25 शमाऊन पतरस अब तक आग के पास खड़ा
ताप रहा था। इतने में दूसरे उस से पूछने लगे, “तुम
भी उस के शागिर्द हो कि नहीं?”
लेकिन पतरस ने इन्कार किया, “नहीं, मैं नहीं हूँ।”

26 फिर इमाम-ए-आज़म का एक ग़ुलाम बोल उठा
जो उस आदमी का रिश्तेदार था जिस का कान पतरस
ने उड़ा दिया था, “क्या मैं ने तुम को बाग़ में उस के
साथ नहीं देखा था?”
27 पतरस ने एक बार फिर इन्कार किया, और
इन्कार करते ही मुर्ग़ की बाँग सुनाई दी।

ईसा को पीलातुस के सामने पेश किया जाता है

28 फिर यहूदी ईसा को काइफ़ा से ले कर रोमी
गवर्नर के महल बनाम प्रैटोरियुम के पास पहुँच गए।
अब सुब्ह हो चुकी थी और चूँकि यहूदी फ़सह की
ईद के खाने में शरीक होना चाहते थे, इस लिए वह
महल में दाख़िल न हुए, वर्ना वह नापाक हो जाते।
29 चुनाँचे पीलातुस निकल कर उन के पास आया
और पूछा, “तुम इस आदमी पर क्या इल्ज़ाम लगा
रहे हो?”
30 उन्हों ने जवाब दिया, “अगर यह मुजरिम न होता
तो हम इसे आप के हवाले न करते।”
31 पीलातुस ने कहा, “फिर इसे ले जाओ और
अपनी शरई अदालतों में पेश करो।”
लेकिन यहूदियों ने एतिराज़ किया, “हमें किसी को
सज़ा-ए-मौत देने की इजाज़त नहीं।” 32 ईसा ने इस
तरफ़ इशारा किया था कि वह किस तरह मरेगा और
अब उस की यह बात पूरी हुई।
33 तब पीलातुस फिर अपने महल में गया। वहाँ से
उस ने ईसा को बुलाया और उस से पूछा, “क्या तुम
यहूदियों के बादशाह हो?”
34 ईसा ने पूछा, “क्या आप अपनी तरफ़ से यह
सवाल कर रहे हैं, या औरों ने आप को मेरे बारे में
बताया है?”
35 पीलातुस ने जवाब दिया, “क्या मैं यहूदी हूँ?
तुम्हारी अपनी क़ौम और राहनुमा इमामों ही ने तुम्हें
मेरे हवाले किया है। तुम से क्या कुछ सरज़द हुआ
है?”
36 ईसा ने कहा, “मेरी बादशाही इस दुनिया की नहीं
है। अगर वह इस दुनिया की होती तो मेरे ख़ादिम
सख़्त जिद्द-ओ-जह्द करते ताकि मुझे यहूदियों के
हवाले न किया जाता। लेकिन ऐसा नहीं है। अब मेरी
बादशाही यहाँ की नहीं है।”
37 पीलातुस ने कहा, “तो फिर तुम वाक़ई बादशाह
हो?”
ईसा ने जवाब दिया, “आप सहीह कहते हैं, मैं
बादशाह हूँ। मैं इसी मक़्सद के लिए पैदा हो कर
दुनिया में आया कि सच्चाई की गवाही दूँ। जो भी
सच्चाई की तरफ़ से है वह मेरी सुनता है।”
38 पीलातुस ने पूछा, “सच्चाई क्या है?”

ईसा को सज़ा-ए-मौत सुनाई जाती है

फिर वह दुबारा निकल कर यहूदियों के पास गया।
उस ने एलान किया, “मुझे उसे मुजरिम ठहराने की
कोई वजह नहीं मिली। 39 लेकिन तुम्हारी एक रस्म
है जिस के मुताबिक़ मुझे ईद-ए-फ़सह के मौक़े पर
तुम्हारे लिए एक क़ैदी को रिहा करना है। क्या तुम
चाहते हो कि मैं ‘यहूदियों के बादशाह’ को रिहा कर
दूँ?”
40 लेकिन जवाब में लोग चिल्लाने लगे, “नहीं, इस
को नहीं बल्कि बर-अब्बा को।” (बर-अब्बा डाकू
था।)

19 1 फिर पीलातुस ने ईसा को कोड़े लगवाए।
2 फ़ौजियों ने काँटेदार टहनियों का एक
ताज बना कर उस के सर पर रख दिया। उन्हों ने उसे
अर्ग़वानी रंग का लिबास भी पहनाया। 3 फिर उस के
सामने आ कर वह कहते, “ऐ यहूदियों के बादशाह,
आदाब!” और उसे थप्पड़ मारते थे।
4 एक बार फिर पीलातुस निकल आया और
यहूदियों से बात करने लगा, “देखो, मैं इसे तुम्हारे
पास बाहर ला रहा हूँ ताकि तुम जान लो कि मुझे इसे
मुजरिम ठहराने की कोई वजह नहीं मिली।” 5 फिर
ईसा काँटेदार ताज और अर्ग़वानी रंग का लिबास
पहने बाहर आया। पीलातुस ने उन से कहा, “लो यह
है वह आदमी।”

6 उसे देखते ही राहनुमा इमाम और उन के मुलाज़िम
चीख़ने लगे, “इसे मस्लूब करें, इसे मस्लूब करें!”
पीलातुस ने उन से कहा, “तुम ही इसे ले जा कर
मस्लूब करो। क्यूँकि मुझे इसे मुजरिम ठहराने की
कोई वजह नहीं मिली।”
7 यहूदियों ने इसरार किया, “हमारे पास शरीअत
है और इस शरीअत के मुताबिक़ लाज़िम है कि वह
मारा जाए। क्यूँकि इस ने अपने आप को अल्लाह का
फ़र्ज़न्द क़रार दिया है।”
8 यह सुन कर पीलातुस मज़ीद डर गया। 9 दुबारा
महल में जा कर ईसा से पूछा, “तुम कहाँ से आए
हो?”
लेकिन ईसा ख़ामोश रहा। 10 पीलातुस ने उस से
कहा, “अच्छा, तुम मेरे साथ बात नहीं करते? क्या
तुम्हें मालूम नहीं कि मुझे तुम्हें रिहा करने और मस्लूब
करने का इख़तियार है?”
11 ईसा ने जवाब दिया, “आप को मुझ पर
इख़तियार न होता अगर वह आप को ऊपर से न
दिया गया होता। इस वजह से उस शख़्स से ज़्यादा
संगीन गुनाह हुआ है जिस ने मुझे दुश्मन के हवाले
कर दिया है।”
12 इस के बाद पीलातुस ने उसे आज़ाद करने
की कोशिश की। लेकिन यहूदी चीख़ चीख़ कर
कहने लगे, “अगर आप इसे रिहा करें तो आप
रोमी शहन्शाह क़ैसर के दोस्त साबित नहीं होंगे। जो
भी बादशाह होने का दावा करे वह शहन्शाह की
मुख़ालफ़त करता है।”
13 इस तरह की बातें सुन कर पीलातुस ईसा को
बाहर ले आया। फिर वह जज की कुर्सी पर बैठ
गया। उस जगह का नाम “पच्चीकारी” था। (अरामी
ज़बान में वह गब्बता कहलाती थी।) 14 अब दोपहर
के तक़रीबन बारह बज गए थे। उस दिन ईद के
लिए तय्यारियाँ की जाती थीं, क्यूँकि अगले दिन ईद
का आग़ाज़ था। पीलातुस बोल उठा, “लो, तुम्हारा
बादशाह!”
15 लेकिन वह चिल्लाते रहे, “ले जाएँ इसे, ले जाएँ!
इसे मस्लूब करें!”
पीलातुस ने सवाल किया, “क्या मैं तुम्हारे बादशाह
को सलीब पर चढ़ाऊँ?”
राहनुमा इमामों ने जवाब दिया, “सिवाए शहन्शाह
के हमारा कोई बादशाह नहीं है।”
16 फिर पीलातुस ने ईसा को उन के हवाले कर दिया
ताकि उसे मस्लूब किया जाए।

ईसा को मस्लूब किया जाता है

चुनाँचे वह ईसा को ले कर चले गए। 17 वह अपनी
सलीब उठाए शहर से निकला और उस जगह पहुँचा
जिस का नाम खोपड़ी (अरामी ज़बान में गुल्गुता)
था। 18 वहाँ उन्हों ने उसे सलीब पर चढ़ा दिया।
साथ साथ उन्हों ने उस के बाएँ और दाएँ हाथ दो
और आदमियों को मस्लूब किया। 19 पीलातुस ने एक
तख़्ती बनवा कर उसे ईसा की सलीब पर लगवा
दिया। तख़्ती पर लिखा था, ‘ईसा नासरी, यहूदियों
का बादशाह।’ 20 बहुत से यहूदियों ने यह पढ़ लिया,
क्यूँकि मस्लूबियत का मक़ाम शहर के क़रीब था
और यह जुमला अरामी, लातीनी और यूनानी ज़बानों
में लिखा था। 21 यह देख कर यहूदियों के राहनुमा
इमामों ने एतिराज़ किया, “‘यहूदियों का बादशाह’
न लिखें बल्कि यह कि ‘इस आदमी ने यहूदियों का
बादशाह होने का दावा किया’।”
22 पीलातुस ने जवाब दिया, “जो कुछ मैं ने लिख
दिया सो लिख दिया।”
23 ईसा को सलीब पर चढ़ाने के बाद फ़ौजियों ने
उस के कपड़े ले कर चार हिस्सों में बाँट लिए, हर
फ़ौजी के लिए एक हिस्सा। लेकिन चोग़ा बेजोड़ था।
वह ऊपर से ले कर नीचे तक बुना हुआ एक ही
टुकड़े का था। 24 इस लिए फ़ौजियों ने कहा, “आओ,
इसे फाड़ कर तक़्सीम न करें बल्कि इस पर क़ुरआ
डालें।” यूँ कलाम-ए-मुक़द्दस की यह पेशगोई पूरी
हुई, “उन्हों ने आपस में मेरे कपड़े बाँट लिए और

मेरे लिबास पर क़ुरआ डाला।” फ़ौजियों ने यही कुछ
किया।
25 कुछ ख़वातीन भी ईसा की सलीब के क़रीब
खड़ी थीं : उस की माँ, उस की ख़ाला, क्लोपास की
बीवी मरियम और मरियम मग्दलीनी। 26 जब ईसा ने
अपनी माँ को उस शागिर्द के साथ खड़े देखा जो उसे
प्यारा था तो उस ने कहा, “ऐ ख़ातून, देखें आप का
बेटा यह है।”
27 और उस शागिर्द से उस ने कहा, “देख, तेरी माँ
यह है।” उस वक़्त से उस शागिर्द ने ईसा की माँ को
अपने घर रखा।

ईसा की मौत

28 इस के बाद जब ईसा ने जान लिया कि मेरा मिशन
तक्मील तक पहुँच चुका है तो उस ने कहा, “मुझे
प्यास लगी है।” (इस से भी कलाम-ए-मुक़द्दस की
एक पेशगोई पूरी हुई।)
29 क़रीब मै के सिरके से भरा बर्तन पड़ा था। उन्हों
ने एक इस्पंज सिरके में डुबो कर उसे ज़ूफ़े की
शाख़ पर लगा दिया और उठा कर ईसा के मुँह तक
पहुँचाया। 30 यह सिरका पीने के बाद ईसा बोल उठा,
“काम मुकम्मल हो गया है।” और सर झुका कर उस
ने अपनी जान अल्लाह के सपुर्द कर दी।

ईसा का पहलू छेदा जाता है

31 फ़सह की तय्यारी का दिन था और अगले दिन
ईद का आग़ाज़ और एक ख़ास सबत था। इस लिए
यहूदी नहीं चाहते थे कि मस्लूब हुई लाशें अगले दिन
तक सलीबों पर लटकी रहें। चुनाँचे उन्हों ने पीलातुस
से गुज़ारिश की कि वह उन की टाँगें तुड़वा कर उन्हें
सलीबों से उतारने दे। 32 तब फ़ौजियों ने आ कर ईसा
के साथ मस्लूब किए जाने वाले आदमियों की टाँगें
तोड़ दीं, पहले एक की फिर दूसरे की। 33 जब वह
ईसा के पास आए तो उन्हों ने देखा कि वह फ़ौत हो
चुका है, इस लिए उन्हों ने उस की टाँगें न तोड़ीं।
34 इस के बजाय एक ने नेज़े से ईसा का पहलू छेद
दिया। ज़ख़्म से फ़ौरन ख़ून और पानी बह निकला।
35 (जिस ने यह देखा है उस ने गवाही दी है और उस
की गवाही सच्ची है। वह जानता है कि वह हक़ीक़त
बयान कर रहा है और उस की गवाही का मक़्सद
यह है कि आप भी ईमान लाएँ।) 36 यह यूँ हुआ ताकि
कलाम-ए-मुक़द्दस की यह पेशगोई पूरी हो जाए, “उस
की एक हड्डी भी तोड़ी नहीं जाएगी।” 37 कलाम-ए-
मुक़द्दस में यह भी लिखा है, “वह उस पर नज़र डालेंगे
जिसे उन्हों ने छेदा है।”

ईसा को दफ़नाया जाता है

38 बाद में अरिमतियाह के रहने वाले यूसुफ़ ने
पीलातुस से ईसा की लाश उतारने की इजाज़त माँगी।
(यूसुफ़ ईसा का ख़ुफ़िया शागिर्द था, क्यूँकि वह
यहूदियों से डरता था।) इस की इजाज़त मिलने पर
वह आया और लाश को उतार लिया। 39 नीकुदेमुस
भी साथ था, वह आदमी जो गुज़रे दिनों में रात के
वक़्त ईसा से मिलने आया था। नीकुदेमुस अपने
साथ मुर और ऊद की तक़रीबन 34 किलोग्राम ख़ुश्बू
ले कर आया था। 40 यहूदी जनाज़े की रुसूमात के
मुताबिक़ उन्हों ने लाश पर ख़ुश्बू लगा कर उसे
पट्टियों से लपेट दिया। 41 सलीबों के क़रीब एक
बाग़ था और बाग़ में एक नई क़ब्र थी जो अब तक
इस्तेमाल नहीं की गई थी। 42 उस के क़रीब होने के
सबब से उन्हों ने ईसा को उस में रख दिया, क्यूँकि
फ़सह की तय्यारी का दिन था और अगले दिन ईद
का आग़ाज़ था।

ख़ाली क़ब्र

20 1 हफ़्ते का दिन गुज़र गया तो इत्वार को
मरियम मग्दलीनी सुब्ह-सवेरे क़ब्र के पास
आई। अभी अंधेरा था। वहाँ पहुँच कर उस ने देखा
कि क़ब्र के मुँह पर का पत्थर एक तरफ़ हटाया गया
है। 2 मरियम दौड़ कर शमाऊन पतरस और ईसा को
प्यारे शागिर्द के पास आई। उस ने इत्तिला दी, “वह

ख़ुदावन्द को क़ब्र से ले गए हैं, और हमें मालूम नहीं
कि उन्हों ने उसे कहाँ रख दिया है।”
3 तब पतरस दूसरे शागिर्द समेत क़ब्र की तरफ़
चल पड़ा। 4 दोनों दौड़ रहे थे, लेकिन दूसरा शागिर्द
ज़्यादा तेज़रफ़्तार था। वह पहले क़ब्र पर पहुँच गया।
5 उस ने झुक कर अन्दर झाँका तो कफ़न की पट्टियाँ
वहाँ पड़ी नज़र आईं। लेकिन वह अन्दर न गया।
6 फिर शमाऊन पतरस उस के पीछे पहुँच कर क़ब्र
में दाख़िल हुआ। उस ने भी देखा कि कफ़न की
पट्टियाँ वहाँ पड़ी हैं 7 और साथ वह कपड़ा भी जिस
में ईसा का सर लिपटा हुआ था। यह कपड़ा तह
किया गया था और पट्टियों से अलग पड़ा था। 8 फिर
दूसरा शागिर्द जो पहले पहुँच गया था, वह भी दाख़िल
हुआ। जब उस ने यह देखा तो वह ईमान लाया।
9 (लेकिन अब भी वह कलाम-ए-मुक़द्दस की यह
पेशगोई नहीं समझते थे कि उसे मुर्दों में से जी उठना
है।) 10 फिर दोनों शागिर्द घर वापस चले गए।

ईसा मरियम मग्दलीनी पर ज़ाहिर होता है

11 लेकिन मरियम रो रो कर क़ब्र के सामने खड़ी
रही। और रोते हुए उस ने झुक कर क़ब्र में झाँका
12 तो क्या देखती है कि दो फ़रिश्ते सफ़ेद लिबास
पहने हुए वहाँ बैठे हैं जहाँ पहले ईसा की लाश पड़ी
थी, एक उस के सिरहाने और दूसरा वहाँ जहाँ पहले
उस के पाँओ थे। 13 उन्हों ने मरियम से पूछा, “ऐ
ख़ातून, तू क्यूँ रो रही है?”
उस ने कहा, “वह मेरे ख़ुदावन्द को ले गए हैं, और
मालूम नहीं कि उन्हों ने उसे कहाँ रख दिया है।”
14 फिर उस ने पीछे मुड़ कर ईसा को वहाँ खड़े
देखा, लेकिन उस ने उसे न पहचाना। 15 ईसा ने पूछा,
“ऐ ख़ातून, तू क्यूँ रो रही है, किस को ढूँड रही है?”
यह सोच कर कि वह माली है उस ने कहा, “जनाब,
अगर आप उसे ले गए हैं तो मुझे बता दें कि उसे कहाँ
रख दिया है ताकि उसे ले जाऊँ।”
16 ईसा ने उस से कहा, “मरियम!”
वह उस की तरफ़ मुड़ी और बोल उठी, “रब्बूनी!”
(इस का मतलब अरामी ज़बान में उस्ताद है।)
17 ईसा ने कहा, “मेरे साथ चिमटी न रह, क्यूँकि
अभी मैं ऊपर, बाप के पास नहीं गया। लेकिन भाइयों
के पास जा और उन्हें बता, ‘मैं अपने बाप और तुम्हारे
बाप के पास वापस जा रहा हूँ, अपने ख़ुदा और
तुम्हारे ख़ुदा के पास’।”
18 चुनाँचे मरियम मग्दलीनी शागिर्दों के पास गई
और उन्हें इत्तिला दी, “मैं ने ख़ुदावन्द को देखा है
और उस ने मुझ से यह बातें कहीं।”

ईसा अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर होता है

19 उस इत्वार की शाम को शागिर्द जमा थे। उन्हों
ने दरवाज़ों पर ताले लगा दिए थे क्यूँकि वह यहूदियों
से डरते थे। अचानक ईसा उन के दरमियान आ खड़ा
हुआ और कहा, “तुम्हारी सलामती हो,” 20 और उन्हें
अपने हाथों और पहलू को दिखाया। ख़ुदावन्द को
देख कर वह निहायत ख़ुश हुए। 21 ईसा ने दुबारा
कहा, “तुम्हारी सलामती हो! जिस तरह बाप ने मुझे
भेजा उसी तरह मैं तुम को भेज रहा हूँ।” 22 फिर उन
पर फूँक कर उस ने फ़रमाया, “रूह-उल-क़ुद्स को
पा लो। 23 अगर तुम किसी के गुनाहों को मुआफ़
करो तो वह मुआफ़ किए जाएंगे। और अगर तुम उन्हें
मुआफ़ न करो तो वह मुआफ़ नहीं किए जाएंगे।”

तोमा शक करता है

24 बारह शागिर्दों में से तोमा जिस का लक़ब जुड़वाँ
था ईसा के आने पर मौजूद न था। 25 चुनाँचे दूसरे
शागिर्दों ने उसे बताया, “हम ने ख़ुदावन्द को देखा
है!” लेकिन तोमा ने कहा, “मुझे यक़ीन नहीं आता।
पहले मुझे उस के हाथों में कीलों के निशान नज़र
आएँ और मैं उन में अपनी उंगली डालूँ, पहले मैं
अपने हाथ को उस के पहलू के ज़ख़्म में डालूँ। फिर
ही मुझे यक़ीन आएगा।”
26 एक हफ़्ता गुज़र गया। शागिर्द दुबारा मकान
में जमा थे। इस मर्तबा तोमा भी साथ था। अगरचे

दरवाज़ों पर ताले लगे थे फिर भी ईसा उन के
दरमियान आ कर खड़ा हुआ। उस ने कहा, “तुम्हारी
सलामती हो!” 27 फिर वह तोमा से मुख़ातिब हुआ,
“अपनी उंगली को मेरे हाथों और अपने हाथ को मेरे
पहलू के ज़ख़्म में डाल और बेएतिक़ाद न हो बल्कि
ईमान रख।”
28 तोमा ने जवाब में उस से कहा, “ऐ मेरे ख़ुदावन्द!
ऐ मेरे ख़ुदा!”
29 फिर ईसा ने उसे बताया, “क्या तू इस लिए ईमान
लाया है कि तू ने मुझे देखा है? मुबारक हैं वह जो
मुझे देखे बग़ैर मुझ पर ईमान लाते हैं।”

इस किताब का मक़्सद

30 ईसा ने अपने शागिर्दों की मौजूदगी में मज़ीद
बहुत से ऐसे इलाही निशान दिखाए जो इस किताब में
दर्ज नहीं हैं। 31 लेकिन जितने दर्ज हैं उन का मक़्सद
यह है कि आप ईमान लाएँ कि ईसा ही मसीह यानी
अल्लाह का फ़र्ज़न्द है और आप को इस ईमान के
वसीले से उस के नाम से ज़िन्दगी हासिल हो।

ईसा झील पर शागिर्दों पर ज़ाहिर होता है

21 1 इस के बाद ईसा एक बार फिर
अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर हुआ जब वह
तिबरियास यानी गलील की झील पर थे। यह यूँ
हुआ। 2 कुछ शागिर्द शमाऊन पतरस के साथ जमा
थे, तोमा जो जुड़वाँ कहलाता था, नतन-एल जो
गलील के क़ाना से था, ज़ब्दी के दो बेटे और मज़ीद
दो शागिर्द।
3 शमाऊन पतरस ने कहा, “मैं मछली पकड़ने जा
रहा हूँ।”
दूसरों ने कहा, “हम भी साथ जाएंगे।” चुनाँचे वह
निकल कर कश्ती पर सवार हुए। लेकिन उस पूरी
रात एक भी मछली हाथ न आई। 4 सुब्ह-सवेरे ईसा
झील के किनारे पर आ खड़ा हुआ। लेकिन शागिर्दों
को मालूम नहीं था कि वह ईसा ही है। 5 उस ने उन
से पूछा, “बच्चो, क्या तुम्हें खाने के लिए कुछ मिल
गया?”
उन्हों ने जवाब दिया, “नहीं।”
6 उस ने कहा, “अपना जाल कश्ती के दाएँ हाथ
डालो, फिर तुम को कुछ मिलेगा।” उन्हों ने ऐसा
किया तो मछलियों की इतनी बड़ी तादाद थी कि
वह जाल कश्ती तक न ला सके।
7 इस पर ख़ुदावन्द के प्यारे शागिर्द ने पतरस से
कहा, “यह तो ख़ुदावन्द है।” यह सुनते ही कि
ख़ुदावन्द है शमाऊन पतरस अपनी चादर ओढ़ कर
पानी में कूद पड़ा (उस ने चादर को काम करने
के लिए उतार लिया था।) 8 दूसरे शागिर्द कश्ती पर
सवार उस के पीछे आए। वह किनारे से ज़्यादा दूर
नहीं थे, तक़रीबन सौ मीटर के फ़ासिले पर थे। इस
लिए वह मछलियों से भरे जाल को पानी में खैंच खैंच
कर ख़ुश्की तक लाए। 9 जब वह कश्ती से उतरे तो
देखा कि लकड़ी के कोएलों की आग पर मछलियाँ
भुनी जा रही हैं और साथ रोटी भी है। 10 ईसा ने उन
से कहा, “उन मछलियों में से कुछ ले आओ जो तुम
ने अभी पकड़ी हैं।”
11 शमाऊन पतरस कश्ती पर गया और जाल
को ख़ुश्की पर घसीट लाया। यह जाल 153 बड़ी
मछलियों से भरा हुआ था, तो भी वह न फटा। 12 ईसा
ने उन से कहा, “आओ, नाशता कर लो।” किसी भी
शागिर्द ने सवाल करने की जुरअत न की कि “आप
कौन हैं?” क्यूँकि वह तो जानते थे कि यह ख़ुदावन्द
ही है। 13 फिर ईसा आया और रोटी ले कर उन्हें दी
और इसी तरह मछली भी उन्हें खिलाई।
14 ईसा के जी उठने के बाद यह तीसरी बार थी कि
वह अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर हुआ।

ईसा का पतरस से सवाल

15 नाशते के बाद ईसा शमाऊन पतरस से मुख़ातिब
हुआ, “यूहन्ना के बेटे शमाऊन, क्या तू इन की निस्बत
मुझ से ज़्यादा मुहब्बत करता है?”

उस ने जवाब दिया, “जी ख़ुदावन्द, आप तो जानते
हैं कि मैं आप को प्यार करता हूँ।”
ईसा बोला, “फिर मेरे लेलों को चरा।” 16 तब ईसा
ने एक और मर्तबा पूछा, “शमाऊन यूहन्ना के बेटे,
क्या तू मुझ से मुहब्बत करता है?”
उस ने जवाब दिया, “जी ख़ुदावन्द, आप तो जानते
हैं कि मैं आप को प्यार करता हूँ।”
ईसा बोला, “फिर मेरी भेड़ों की गल्लाबानी कर।”
17 तीसरी बार ईसा ने उस से पूछा, “शमाऊन यूहन्ना
के बेटे, क्या तू मुझे प्यार करता है?”
तीसरी दफ़ा यह सवाल सुनने से पतरस को बड़ा
दुख हुआ। उस ने कहा, “ख़ुदावन्द, आप को सब
कुछ मालूम है। आप तो जानते हैं कि मैं आप को
प्यार करता हूँ।”
ईसा ने उस से कहा, “मेरी भेड़ों को चरा।
18 मैं तुझे सच बताता हूँ कि जब तू जवान था तो
तू ख़ुद अपनी कमर बांध कर जहाँ जी चाहता घूमता
फिरता था। लेकिन जब तू बूढ़ा होगा तो तू अपने
हाथों को आगे बढ़ाएगा और कोई और तेरी कमर
बांध कर तुझे ले जाएगा जहाँ तेरा दिल नहीं करेगा।”
19 (ईसा की यह बात इस तरफ़ इशारा था कि पतरस
किस क़िस्म की मौत से अल्लाह को जलाल देगा।)
फिर उस ने उसे बताया, “मेरे पीछे चल।”

ईसा और दूसरा शागिर्द

20 पतरस ने मुड़ कर देखा कि जो शागिर्द ईसा को
प्यारा था वह उन के पीछे चल रहा है। यह वही
शागिर्द था जिस ने शाम के खाने के दौरान ईसा की
तरफ़ सर झुका कर पूछा था, “ख़ुदावन्द, कौन आप
को दुश्मन के हवाले करेगा?” 21 अब उसे देख कर
पतरस ने सवाल किया, “ख़ुदावन्द, इस के साथ क्या
होगा?”
22 ईसा ने जवाब दिया, “अगर मैं चाहूँ कि यह मेरे
वापस आने तक ज़िन्दा रहे तो तुझे क्या? बस तू मेरे
पीछे चलता रह।”
23 नतीजे में भाइयों में यह ख़याल फैल गया कि यह
शागिर्द नहीं मरेगा। लेकिन ईसा ने यह बात नहीं की
थी। उस ने सिर्फ़ यह कहा था, “अगर मैं चाहूँ कि
यह मेरे वापस आने तक ज़िन्दा रहे तो तुझे क्या?”
24 यह वह शागिर्द है जिस ने इन बातों की गवाही
दे कर इन्हें क़लमबन्द कर दिया है। और हम जानते
हैं कि उस की गवाही सच्ची है।

ख़ुलासा

25 ईसा ने इस के इलावा भी बहुत कुछ किया।
अगर उस का हर काम क़लमबन्द किया जाता तो
मेरे ख़याल में पूरी दुनिया में यह किताबें रखने की
गुन्जाइश न होती।

आमाल

1 [1] मुअज़्ज़ज़ थियुफ़िलुस, पहली किताब में मैं
ने सब कुछ बयान किया जो ईसा ने शुरू से
ले कर [2] उस दिन तक किया और सिखाया, जब
उसे आसमान पर उठाया गया। जाने से पहले उस ने
अपने चुने हुए रसूलों को रूह-उल-क़ुद्स की मारिफ़त
मज़ीद हिदायात दीं। [3] अपने दुख उठाने और मौत
सहने के बाद उस ने अपने आप को ज़ाहिर करके
उन्हें बहुत सी दलीलों से क़ाइल किया कि वह वाक़ई
ज़िन्दा है। वह चालीस दिन के दौरान उन पर ज़ाहिर
होता और उन्हें अल्लाह की बादशाही के बारे में बताता
रहा। [4] जब वह अभी उन के साथ था उस ने उन्हें
हुक्म दिया, "यरूशलम को न छोड़ना बल्कि इस
इन्तिज़ार में यहीं ठहरो कि बाप का वादा पूरा हो
जाए, वह वादा जिस के बारे में मैं ने तुम को आगाह
किया है। [5] क्यूँकि यहया ने तो पानी से बपतिस्मा
दिया, लेकिन तुम को थोड़े दिनों के बाद रूह-उल-
क़ुद्स से बपतिस्मा दिया जाएगा।"

ईसा को उठाया जाता है

[6] जो वहाँ जमा थे उन्हों ने उस से पूछा, "ख़ुदावन्द,
क्या आप इसी वक़्त इस्राईल के लिए उस की
बादशाही दुबारा क़ाइम करेंगे?"
[7] ईसा ने जवाब दिया, "यह जानना तुम्हारा काम
नहीं है बल्कि सिर्फ़ बाप का जो ऐसे औक़ात
और तारीखें मुक़र्रर करने का इख़तियार रखता है।
[8] लेकिन तुम्हें रूह-उल-क़ुद्स की क़ुव्वत मिलेगी
जो तुम पर नाज़िल होगा। फिर तुम यरूशलम, पूरे
यहूदिया और सामरिया बल्कि दुनिया की इन्तिहा
तक मेरे गवाह होगे।" [9] यह कह कर वह उन के
देखते देखते उठा लिया गया। और एक बादल ने
उसे उन की नज़रों से ओझल कर दिया।
[10] वह अभी आसमान की तरफ़ देख ही रहे थे कि
अचानक दो आदमी उन के पास आ खड़े हुए। दोनों
सफ़ेद लिबास पहने हुए थे। [11] उन्हों ने कहा, "गलील
के मर्दो, आप क्यूँ खड़े आसमान की तरफ़ देख रहे
हैं? यही ईसा जिसे आप के पास से आसमान पर
उठाया गया है उसी तरह वापस आएगा जिस तरह
आप ने उसे ऊपर जाते हुए देखा है।"

यहूदाह का जानशीन

[12] फिर वह ज़ैतून के पहाड़ से यरूशलम शहर
वापस चले गए। (यह पहाड़ शहर से तक़रीबन
एक किलोमीटर दूर है।) [13] वहाँ पहुँच कर वह उस
बालाख़ाने में दाख़िल हुए जिस में वह ठहरे हुए
थे, यानी पतरस, यूहन्ना, याक़ूब और अन्द्रियास,
फ़िलिप्पुस और तोमा, बरतुल्माई और मत्ती, याक़ूब
बिन हल्फ़ई, शमाऊन मुजाहिद और यहूदाह बिन
याक़ूब। [14] यह सब यकदिल हो कर दुआ में लगे
रहे। कुछ औरतें, ईसा की माँ मरियम और उस के
भाई भी साथ थे।
[15] उन दिनों में पतरस भाइयों में खड़ा हुआ। उस
वक़्त तक़रीबन 120 लोग जमा थे। उस ने कहा,
[16] "भाइयो, लाज़िम था कि कलाम-ए-मुक़द्दस की
वह पेशगोई पूरी हो जो रूह-उल-क़ुद्स ने दाऊद
की मारिफ़त यहूदाह के बारे में की। यहूदाह उन का
राहनुमा बन गया जिन्हों ने ईसा को गिरिफ़्तार किया,
[17] गो उसे हम में शुमार किया जाता था और वह इसी
ख़िदमत में हमारे साथ शरीक था।"
[18] (जो पैसे यहूदाह को उस के ग़लत काम के लिए
मिल गए थे उन से उस ने एक खेत ख़रीद लिया
था। वहाँ वह सर के बल गिर गया, उस का पेट
फट गया और उस की तमाम अंतड़ियाँ बाहर निकल
पड़ीं। [19] इस का चर्चा यरूशलम के तमाम बाशिन्दों

में फैल गया, इस लिए यह खेत उन की मादरी ज़बान
में हक़ल्दमा के नाम से मश्हूर हुआ जिस का मतलब
है ख़ून का खेत।)
20 पतरस ने अपनी बात जारी रखी, "यही बात
ज़बूर की किताब में लिखी है, 'उस की रिहाइशगाह
सुन्सान हो जाए, कोई उस में आबाद न हो।' यह
भी लिखा है, 'कोई और उस की ज़िम्मादारी उठाए।'
21 चुनाँचे अब ज़रूरी है कि हम यहूदाह की जगह
किसी और को चुन लें। यह शख़्स उन मर्दों में से
एक हो जो उस पूरे वक़्त के दौरान हमारे साथ सफ़र
करते रहे जब ख़ुदावन्द ईसा हमारे साथ था, 22 यानी
उस के यहया के हाथ से बपतिस्मा लेने से ले कर
उस वक़्त तक जब उसे हमारे पास से उठाया गया।
लाज़िम है कि उन में से एक हमारे साथ ईसा के जी
उठने का गवाह हो।"
23 चुनाँचे उन्हों ने दो आदमी पेश किए, यूसुफ़ जो
बर्सब्बा कहलाता था (उस का दूसरा नाम यूस्तुस
था) और मत्तियाह। 24 फिर उन्हों ने दुआ की, "ऐ
ख़ुदावन्द, तू हर एक के दिल से वाक़िफ़ है। हम पर
ज़ाहिर कर कि तू ने इन दोनों में से किस को चुना है
25 ताकि वह उस ख़िदमत की ज़िम्मादारी उठाए जो
यहूदाह छोड़ कर वहाँ चला गया जहाँ उसे जाना ही
था।" 26 यह कह कर उन्हों ने दोनों का नाम ले कर
क़ुरआ डाला तो मत्तियाह का नाम निकला। लिहाज़ा
उसे भी ग्यारह रसूलों में शामिल कर लिया गया।

रूह-उल-क़ुद्स की आमद

2 1 फिर ईद-ए-पन्तिकुस्त का दिन आया। सब
एक जगह जमा थे 2 कि अचानक आसमान से
ऐसी आवाज़ आई जैसे शदीद आँधी चल रही हो।
पूरा मकान जिस में वह बैठे थे इस आवाज़ से गूँज
उठा। 3 और उन्हें शोले की लौएँ जैसी नज़र आईं
जो अलग अलग हो कर उन में से हर एक पर उतर
कर ठहर गईं। 4 सब रूह-उल-क़ुद्स से भर गए और
मुख़्तलिफ़ ग़ैरमुल्की ज़बानों में बोलने लगे, हर एक
उस ज़बान में जो बोलने की रूह-उल-क़ुद्स ने उसे
तौफ़ीक़ दी।
5 उस वक़्त यरूशलम में ऐसे ख़ुदातरस यहूदी
ठहरे हुए थे जो आसमान तले की हर क़ौम में से थे।
6 जब यह आवाज़ सुनाई दी तो एक बड़ा हुजूम जमा
हुआ। सब घबरा गए क्यूँकि हर एक ने ईमानदारों
को अपनी मादरी ज़बान में बोलते सुना। 7 सख़्त
हैरतज़दा हो कर वह कहने लगे, "क्या यह सब
गलील के रहने वाले नहीं हैं? 8 तो फिर यह किस
तरह हो सकता है कि हम में से हर एक उन्हें अपनी
मादरी ज़बान में बातें करते सुन रहा है 9 जबकि
हमारे ममालिक यह हैं : पार्थिया, मादिया, ऐलाम,
मसोपुतामिया, यहूदिया, कप्पदुकिया, पुन्तुस,
आसिया, 10 फ़रूगिया, पम्फ़ीलिया, मिस्र और
लिबिया का वह इलाक़ा जो कुरेन के इर्दगिर्द है।
रोम से भी लोग मौजूद हैं। 11 यहाँ यहूदी भी हैं और
ग़ैरयहूदी नौमुरीद भी, क्रेते के लोग और अरब के
बाशिन्दे भी। और अब हम सब के सब इन को
अपनी अपनी ज़बान में अल्लाह के अज़ीम कामों का
ज़िक्र करते सुन रहे हैं।" 12 सब दंग रह गए। उलझन
में पड़ कर वह एक दूसरे से पूछने लगे, "इस का
क्या मतलब है?"
13 लेकिन कुछ लोग उन का मज़ाक़ उड़ा कर कहने
लगे, "यह बस नई मै पी कर नशे में धुत हो गए हैं।"

पतरस का पैग़ाम

14 फिर पतरस बाक़ी ग्यारह रसूलों समेत खड़ा हो
कर ऊँची आवाज़ से उन से मुख़ातिब हुआ, "सुनें,
यहूदी भाइयो और यरूशलम के तमाम रहने वालो!
जान लें और ग़ौर से मेरी बात सुन लें! 15 आप का
ख़याल है कि यह लोग नशे में हैं। लेकिन ऐसा नहीं है।
देखें, अभी तो सुब्ह के नौ बजे का वक़्त है। 16 अब
वह कुछ हो रहा है जिस की पेशगोई योएल नबी ने
की थी,
17 'अल्लाह फ़रमाता है कि आख़िरी दिनों में
मैं अपने रूह को तमाम इन्सानों पर उंडेल दूँगा।

तुम्हारे बेटे-बेटियाँ नबुव्वत करेंगे,
तुम्हारे नौजवान रोयाएँ और
तुम्हारे बुज़ुर्ग ख़्वाब देखेंगे।
18 उन दिनों में
मैं अपने रूह को अपने ख़ादिमों और ख़ादिमाओं
पर भी उंडेल दूँगा,
और वह नबुव्वत करेंगे।
19 मैं ऊपर आसमान पर मोजिज़े दिखाऊँगा
और नीचे ज़मीन पर इलाही निशान ज़ाहिर करूँगा,
ख़ून, आग और धुएँ के बादल।
20 सूरज तारीक हो जाएगा,
चाँद का रंग ख़ून सा हो जाएगा,
और फिर रब का अज़ीम और जलाली दिन आएगा।
21 उस वक़्त जो भी रब का नाम लेगा
नजात पाएगा।'

22 इस्राईल के मर्दो, मेरी बात सुनें! अल्लाह ने आप के सामने ही ईसा नासरी की तस्दीक़ की, क्यूँकि उस ने उस के वसीले से आप के दरमियान अजूबे, मोजिज़े और इलाही निशान दिखाए। आप ख़ुद इस बात से वाक़िफ़ हैं। 23 लेकिन अल्लाह को पहले ही इल्म था कि क्या होना है, क्यूँकि उस ने ख़ुद अपनी मर्ज़ी से मुक़र्रर किया था कि ईसा को दुश्मन के हवाले कर दिया जाए। चुनाँचे आप ने बेदीन लोगों के ज़रीए उसे सलीब पर चढ़वा कर क़त्ल किया। 24 लेकिन अल्लाह ने उसे मौत की अज़ियतनाक गिरिफ़्त से आज़ाद करके ज़िन्दा कर दिया, क्यूँकि मुमकिन ही नहीं था कि मौत उसे अपने क़ब्ज़े में रखे। 25 चुनाँचे दाऊद ने उस के बारे में कहा,

'रब हर वक़्त मेरी आँखों के सामने रहा।
वह मेरे दहने हाथ रहता है
ताकि मैं न डगमगाऊँ।
26 इस लिए मेरा दिल शादमान है,
और मेरी ज़बान ख़ुशी के नारे लगाती है।
हाँ, मेरा बदन पुरउम्मीद ज़िन्दगी गुज़ारेगा।
27 क्यूँकि तू मेरी जान को पाताल में नहीं छोड़ेगा,
और न अपने मुक़द्दस को गलने सड़ने की नौबत तक पहुँचने देगा।
28 तू ने मुझे ज़िन्दगी की राहों से आगाह कर दिया है,
और तू अपने हुज़ूर मुझे ख़ुशी से सरशार करेगा।'

29 मेरे भाइयो, अगर इजाज़त हो तो मैं आप को दिलेरी से अपने बुज़ुर्ग दाऊद के बारे में कुछ बताऊँ। वह तो फ़ौत हो कर दफ़नाया गया और उस की क़ब्र आज तक हमारे दरमियान मौजूद है। 30 लेकिन वह नबी था और जानता था कि अल्लाह ने क़सम खा कर मुझ से वादा किया है कि वह मेरी औलाद में से एक को मेरे तख़्त पर बिठाएगा। 31 मज़कूरा आयात में दाऊद मुस्तक़बिल में देख कर मसीह के जी उठने का ज़िक्र कर रहा है, यानी कि न उसे पाताल में छोड़ा गया, न उस का बदन गलने सड़ने की नौबत तक पहुँचा। 32 अल्लाह ने इसी ईसा को ज़िन्दा कर दिया है और हम सब इस के गवाह हैं। 33 अब उसे सरफ़राज़ करके ख़ुदा के दहने हाथ बिठाया गया और बाप की तरफ़ से उसे मौऊदा रूह-उल-क़ुद्स मिल गया है। इसी को उस ने हम पर उंडेल दिया, जिस तरह आप देख और सुन रहे हैं। 34 दाऊद ख़ुद तो आसमान पर नहीं चढ़ा, तो भी उस ने फ़रमाया,

'रब ने मेरे रब से कहा,
मेरे दहने हाथ बैठ
35 जब तक मैं तेरे दुश्मनों को
तेरे पाँओ की चौकी न बना दूँ।'

36 चुनाँचे पूरा इस्राईल यक़ीन जाने कि जिस ईसा को आप ने मस्लूब किया है उसे ही अल्लाह ने ख़ुदावन्द और मसीह बना दिया है।"

37 पतरस की यह बातें सुन कर लोगों के दिल छिद गए। उन्हों ने पतरस और बाक़ी रसूलों से पूछा, "भाइयो, फिर हम क्या करें?"

38 पतरस ने जवाब दिया, "आप में से हर एक तौबा करके ईसा के नाम पर बपतिस्मा ले ताकि आप के गुनाह मुआफ़ कर दिए जाएँ। फिर आप को रूह-उल-क़ुद्स की नेमत मिल जाएगी। 39 क्यूँकि यह देने का

वादा आप से और आप के बच्चों से किया गया है,
बल्कि उन से भी जो दूर के हैं, उन सब से जिन्हें रब
हमारा ख़ुदा अपने पास बुलाएगा।”
40 पतरस ने मज़ीद बहुत सी बातों से उन्हें नसीहत
की और समझाया कि “इस टेढ़ी नस्ल से निकल
कर नजात पाएँ।” 41 जिन्हों ने पतरस की बात क़बूल
की उन का बपतिस्मा हुआ। यूँ उस दिन जमाअत में
तक़रीबन 3,000 अफ़राद का इज़ाफ़ा हुआ। 42 यह
ईमानदार रसूलों से तालीम पाने, रिफ़ाक़त रखने और
रिफ़ाक़ती खानों और दुआओं में शरीक होते रहे।

ईमानदारों की हैरतअंगेज़ ज़िन्दगी

43 सब पर ख़ौफ़ छा गया और रसूलों की तरफ़
से बहुत से मोजिज़े और इलाही निशान दिखाए गए।
44 जो भी ईमान लाते थे वह एक जगह जमा होते
थे। उन की हर चीज़ मुश्तरका होती थी। 45 अपनी
मिलकियत और माल फ़रोख़्त करके उन्हों ने हर एक
को उस की ज़रूरत के मुताबिक़ दिया। 46 रोज़ाना
वह यकदिली से बैत-उल-मुक़द्दस में जमा होते रहे।
साथ साथ वह मसीह की याद में अपने घरों में
रोटी तोड़ते, बड़ी ख़ुशी और सादगी से रिफ़ाक़ती
खाना खाते 47 और अल्लाह की तम्जीद करते रहे।
उस वक़्त वह तमाम लोगों के मन्ज़ूर-ए-नज़र थे। और
ख़ुदावन्द रोज़-ब-रोज़ जमाअत में नजातयाफ़्ता लोगों
का इज़ाफ़ा करता रहा।

लंगड़े आदमी की शिफ़ा

3 1 एक दोपहर पतरस और यूहन्ना दुआ करने
के लिए बैत-उल-मुक़द्दस की तरफ़ चल पड़े।
तीन बज गए थे। 2 उस वक़्त लोग एक पैदाइशी
लंगड़े को उठा कर वहाँ ला रहे थे। रोज़ाना उसे
सहन के उस दरवाज़े के पास लाया जाता था जो
‘ख़ूबसूरत दरवाज़ा’ कहलाता था ताकि वह बैत-
उल-मुक़द्दस के सहनों में दाख़िल होने वालों से भीक
माँग सके। 3 पतरस और यूहन्ना बैत-उल-मुक़द्दस में
दाख़िल होने वाले थे तो लंगड़ा उन से भीक माँगने
लगा। 4 पतरस और यूहन्ना ग़ौर से उस की तरफ़ देखने
लगे। फिर पतरस ने कहा, “हमारी तरफ़ देखें।” 5 इस
तवक़्क़ो से कि उसे कुछ मिलेगा लंगड़ा उन की तरफ़
मुतवज्जिह हुआ। 6 लेकिन पतरस ने कहा, “मेरे पास
न तो चाँदी है, न सोना, लेकिन जो कुछ है वह आप
को दे देता हूँ। नासरत के ईसा मसीह के नाम से उठें
और चलें फिरें!” 7 उस ने उस का दहना हाथ पकड़
कर उसे खड़ा किया। उसी वक़्त लंगड़े के पाँओ और
टख़ने मज़बूत हो गए। 8 वह उछल कर खड़ा हुआ
और चलने फिरने लगा। फिर वह चलते, कूदते और
अल्लाह की तम्जीद करते हुए उन के साथ बैत-उल-
मुक़द्दस में दाख़िल हुआ। 9 और तमाम लोगों ने उसे
चलते फिरते और अल्लाह की तम्जीद करते हुए देखा।
10 जब उन्हों ने जान लिया कि यह वही आदमी है जो
ख़ूबसूरत नामी दरवाज़े पर बैठा भीक माँगा करता
था तो वह उस की तब्दीली देख कर दंग रह गए।

बैत-उल-मुक़द्दस में पतरस का पैग़ाम

11 वह सब दौड़ कर सुलेमान के बरामदे में आए
जहाँ भीक माँगने वाला अब तक पतरस और यूहन्ना
से लिपटा हुआ था। 12 यह देख कर पतरस उन से
मुख़ातिब हुआ, “इस्राईल के हज़रात, आप यह देख
कर क्यूँ हैरान हैं? आप क्यूँ घूर घूर कर हमारी
तरफ़ देख रहे हैं गोया हम ने अपनी ज़ाती ताक़त या
दीनदारी के बाइस यह किया है कि यह आदमी चल
फिर सके? 13 यह हमारे बापदादा के ख़ुदा, इब्राहीम,
इस्हाक़ और याक़ूब के ख़ुदा की तरफ़ से है जिस ने
अपने बन्दे ईसा को जलाल दिया है। यह वही ईसा
है जिसे आप ने दुश्मन के हवाले करके पीलातुस
के सामने रद्द किया, अगरचे वह उसे रिहा करने का
फ़ैसला कर चुका था। 14 आप ने उस क़ुद्दूस और
रास्तबाज़ को रद्द करके तक़ाज़ा किया कि पीलातुस
उस के इवज़ एक क़ातिल को रिहा करके आप को
दे दे। 15 आप ने ज़िन्दगी के सरदार को क़त्ल किया,
लेकिन अल्लाह ने उसे मुर्दों में से ज़िन्दा कर दिया।
हम इस बात के गवाह हैं। 16 आप तो इस आदमी से

वाक़िफ़ हैं जिसे देख रहे हैं। अब वह ईसा के नाम पर ईमान लाने से बहाल हो गया है, क्यूँकि जो ईमान ईसा के ज़रीए मिलता है उसी ने इस आदमी को आप के सामने पूरी सेहतमन्दी अता की।

17 मेरे भाइयो, मैं जानता हूँ कि आप और आप के राहनुमाओं को सहीह इल्म नहीं था, इस लिए आप ने ऐसा किया। 18 लेकिन अल्लाह ने वह कुछ पूरा किया जिस की पेशगोई उस ने तमाम नबियों की मारिफ़त की थी, यानी यह कि उस का मसीह दुख उठाएगा। 19 अब तौबा करें और अल्लाह की तरफ़ रुजू लाएँ ताकि आप के गुनाहों को मिटाया जाए। 20 फिर आप को रब के हुज़ूर से ताज़गी के दिन मुयस्सर आएँगे और वह दुबारा ईसा यानी मसीह को भेज देगा जिसे आप के लिए मुक़र्रर किया गया है। 21 लाज़िम है कि वह उस वक़्त तक आसमान पर रहे जब तक अल्लाह सब कुछ बहाल न कर दे, जिस तरह वह इब्तिदा से अपने मुक़द्दस नबियों की ज़बानी फ़रमाता आया है। 22 क्यूँकि मूसा ने कहा, 'रब तुम्हारा ख़ुदा तुम्हारे वास्ते तुम्हारे भाइयों में से मुझ जैसे नबी को बरपा करेगा। जो भी बात वह कहे उस की सुनना। 23 जो नहीं सुनेगा उसे मिटा कर क़ौम से निकाल दिया जाएगा।' 24 और समूएल से ले कर हर नबी ने इन दिनों की पेशगोई की है। 25 आप तो इन नबियों की औलाद और उस अह्द के वारिस हैं जो अल्लाह ने आप के बापदादा से क़ाइम किया था, क्यूँकि उस ने इब्राहीम से कहा था, 'तेरी औलाद से दुनिया की तमाम क़ौमें बरकत पाएँगी।' 26 जब अल्लाह ने अपने बन्दे ईसा को बरपा किया तो पहले उसे आप के पास भेज दिया ताकि वह आप में से हर एक को उस की बुरी राहों से फेर कर बरकत दे।"

पतरस और यूहन्ना यहूदी अदालत-ए-आलिया के सामने

4 1 पतरस और यूहन्ना लोगों से बात कर ही रहे थे कि इमाम, बैत-उल-मुक़द्दस के पहरेदारों का कप्तान और सदूक़ी उन के पास पहुँचे। 2 वह नाराज़ थे कि रसूल ईसा के जी उठने की मुनादी करके लोगों को मुर्दों में से जी उठने की तालीम दे रहे हैं। 3 उन्हों ने उन्हें गिरिफ़्तार करके अगले दिन तक जेल में डाल दिया, क्यूँकि शाम हो चुकी थी। 4 लेकिन जिन्हों ने उन का पैग़ाम सुन लिया था उन में से बहुत से लोग ईमान लाए। यूँ ईमानदारों में मर्दों की तादाद बढ़ कर तक़रीबन 5,000 तक पहुँच गई।

5 अगले दिन यरूशलम में यहूदी अदालत-ए-अलिया के सरदारों, बुज़ुर्गों और शरीअत के उलमा का इज्लास मुनअक़िद हुआ। 6 इमाम-ए-आज़म हन्ना और इसी तरह काइफ़ा, यूहन्ना, सिकन्दर और इमाम-ए-आज़म के ख़ानदान के दीगर मर्द भी शामिल थे। 7 उन्हों ने दोनों को अपने दरमियान खड़ा करके पूछा, "तुम ने यह काम किस क़ुव्वत और नाम से किया?"

8 पतरस ने रूह-उल-क़ुद्स से मामूर हो कर उन से कहा, "क़ौम के राहनुमाओ और बुज़ुर्गो, 9 आज हमारी पूछगछ की जा रही है कि हम ने माज़ूर आदमी पर रहम का इज़हार किस के वसीले से किया कि उसे शिफ़ा मिल गई है। 10 तो फिर आप सब और पूरी क़ौम इस्राईल जान ले कि यह नासरत के ईसा मसीह के नाम से हुआ है, जिसे आप ने मस्लूब किया और जिसे अल्लाह ने मुर्दों में से ज़िन्दा कर दिया। यह आदमी उसी के वसीले से सेहत पा कर यहाँ आप के सामने खड़ा है। 11 ईसा वह पत्थर है जिस के बारे में कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है, 'जिस पत्थर को मकान बनाने वालों ने रद्द किया वह कोने का बुन्यादी पत्थर बन गया।' और आप ही ने उसे रद्द कर दिया है। 12 किसी दूसरे के वसीले से नजात हासिल नहीं होती, क्यूँकि आसमान के तले हम इन्सानों को कोई और नाम नहीं बख़्शा गया जिस के वसीले से हम नजात पा सकें।"

13 पतरस और यूहन्ना की बातें सुन कर लोग हैरान हुए क्यूँकि वह दिलेरी से बात कर रहे थे अगरचे वह न तो आलिम थे, न उन्हों ने शरीअत की ख़ास तालीम पाई थी। साथ साथ सुनने वालों ने यह भी जान लिया कि दोनों ईसा के साथी हैं। 14 लेकिन चूँकि

वह अपनी आँखों से उस आदमी को देख रहे थे जो
शिफ़ा पा कर उन के साथ खड़ा था इस लिए वह इस
के ख़िलाफ़ कोई बात न कर सके। 15 चुनाँचे उन्हों
ने उन दोनों को इज्लास में से बाहर जाने को कहा
और आपस में सलाह-मश्वरा करने लगे, 16 "हम इन
लोगों के साथ क्या सुलूक करें? बात वाज़िह है कि
उन के ज़रीए एक इलाही निशान दिखाया गया है।
इस का यरूशलम के तमाम बाशिन्दों को इल्म हुआ
है। हम इस का इन्कार नहीं कर सकते। 17 लेकिन
लाज़िम है कि उन्हें धमकी दे कर हुक्म दें कि वह
किसी भी शख़्स से यह नाम ले कर बात न करें, वर्ना
यह मुआमला क़ौम में मज़ीद फैल जाएगा।"

18 चुनाँचे उन्हों ने दोनों को बुला कर हुक्म दिया
कि वह आइन्दा ईसा के नाम से न कभी बोलें और
न तालीम दें।

19 लेकिन पतरस और यूहन्ना ने जवाब में कहा,
"आप ख़ुद फ़ैसला कर लें, क्या यह अल्लाह के
नज़्दीक ठीक है कि हम उस की निस्बत आप की
बात मानें? 20 मुमकिन ही नहीं कि जो कुछ हम ने
देख और सुन लिया है उसे दूसरों को सुनाने से बाज़
रहें।"

21 तब इज्लास के मैम्बरान ने दोनों को मज़ीद
धमकियाँ दे कर छोड़ दिया। वह फ़ैसला न कर सके
कि क्या सज़ा दें, क्यूँकि तमाम लोग पतरस और
यूहन्ना के इस काम की वजह से अल्लाह की तम्जीद
कर रहे थे। 22 क्यूँकि जिस आदमी को मोजिज़ाना
तौर पर शिफ़ा मिली थी वह चालीस साल से ज़्यादा
लंगड़ा रहा था।

दिलेरी के लिए दुआ

23 उन की रिहाई के बाद पतरस और यूहन्ना अपने
साथियों के पास वापस गए और सब कुछ सुनाया
जो राहनुमा इमामों और बुज़ुर्गों ने उन्हें बताया था।
24 यह सुन कर तमाम ईमानदारों ने मिल कर ऊँची
आवाज़ से दुआ की, "ऐ आक़ा, तू ने आसमान-ओ-
ज़मीन और समुन्दर को और जो कुछ उन में है ख़ल्क़
किया है। 25 और तू ने अपने ख़ादिम हमारे बाप दाऊद
के मुँह से रूह-उल-क़ुद्स की मारिफ़त कहा,

'अक़्वाम क्यूँ तैश में आ गई हैं?
उम्मतें क्यूँ बेकार साज़िशें कर रही हैं?
26 दुनिया के बादशाह उठ खड़े हुए,
हुक्मरान रब और उस के मसीह के ख़िलाफ़ जमा
हो गए हैं।'

27 और वाक़ई यही कुछ इस शहर में हुआ। हेरोदेस
अनतिपास, पुन्तियुस पीलातुस, ग़ैरयहूदी और यहूदी
सब तेरे मुक़द्दस ख़ादिम ईसा के ख़िलाफ़ जमा हुए
जिसे तू ने मसह किया था। 28 लेकिन जो कुछ उन्हों
ने किया वह तू ने अपनी क़ुदरत और मर्ज़ी से पहले ही
से मुक़र्रर किया था। 29 ऐ रब, अब उन की धमकियों
पर ग़ौर कर। अपने ख़ादिमों को अपना कलाम सुनाने
की बड़ी दिलेरी अता फ़रमा। 30 अपनी क़ुदरत का
इज़हार कर ताकि हम तेरे मुक़द्दस ख़ादिम ईसा के
नाम से शिफ़ा, इलाही निशान और मोजिज़े दिखा
सकें।"

31 दुआ के इख़तिताम पर वह जगह हिल गई जहाँ
वह जमा थे। सब रूह-उल-क़ुद्स से मामूर हो गए
और दिलेरी से अल्लाह का कलाम सुनाने लगे।

ईमानदारों की मुश्तरका मिलकियत

32 ईमानदारों की पूरी जमाअत यकदिल थी। किसी
ने भी अपनी मिलकियत की किसी चीज़ के बारे में
नहीं कहा कि यह मेरी है बल्कि उन की हर चीज़
मुश्तरका थी। 33 और रसूल बड़े इख़तियार के साथ
ख़ुदावन्द ईसा के जी उठने की गवाही देते रहे।
अल्लाह की बड़ी मेहरबानी उन सब पर थी। 34 उन में
से कोई भी ज़रूरतमन्द नहीं था, क्यूँकि जिस के पास
भी ज़मीनें या मकान थे उस ने उन्हें फ़रोख़्त करके
रक़म 35 रसूलों के पाँओ में रख दी। यूँ जमाशुदा पैसों
में से हर एक को उतने दिए जाते जितनों की उसे
ज़रूरत होती थी।

36 मसलन यूसुफ़ नामी एक आदमी था जिस का
नाम रसूलों ने बर्नबास (हौसलाअफ़्ज़ाई का बेटा)

रखा था। वह लावी क़बीले से और जज़ीरा-ए-क़ुब्रुस
का रहने वाला था। 37 उस ने अपना एक खेत फ़रोख़्त
करके पैसे रसूलों के पाँओ में रख दिए।

हननियाह और सफ़ीरा

5 1 एक और आदमी था जिस ने अपनी बीवी के
साथ मिल कर अपनी कोई ज़मीन बेच दी। उन
के नाम हननियाह और सफ़ीरा थे। 2 लेकिन हननियाह
पूरी रक़म रसूलों के पास न लाया बल्कि उस में से
कुछ अपने लिए रख छोड़ा और बाक़ी रसूलों के
पाँओ में रख दिया। उस की बीवी भी इस बात से
वाक़िफ़ थी। 3 लेकिन पतरस ने कहा, "हननियाह,
इब्लीस ने आप के दिल को यूँ क्यूँ भर दिया है कि
आप ने रूह-उल-क़ुद्स से झूट बोला है? क्यूँकि आप
ने ज़मीन की रक़म के कुछ पैसे अपने पास रख लिए
हैं। 4 क्या यह ज़मीन फ़रोख़्त करने से पहले आप की
नहीं थी? और उसे बेच कर क्या आप पैसे जैसे चाहते
इस्तेमाल नहीं कर सकते थे? आप ने क्यूँ अपने दिल
में यह ठान लिया? आप ने हमें नहीं बल्कि अल्लाह
को धोका दिया है।"

5 यह सुनते ही हननियाह फ़र्श पर गिर कर मर गया।
और तमाम सुनने वालों पर बड़ी दहशत तारी हो गई।
6 जमाअत के नौजवानों ने उठ कर लाश को कफ़न
में लपेट दिया और उसे बाहर ले जा कर दफ़न कर
दिया।

7 तक़रीबन तीन घंटे गुज़र गए तो उस की बीवी
अन्दर आई। उसे मालूम न था कि शौहर को क्या
हुआ है।

8 पतरस ने उस से पूछा, "मुझे बताएँ, क्या आप को
अपनी ज़मीन के लिए इतनी ही रक़म मिली थी?"

सफ़ीरा ने जवाब दिया, "जी, इतनी ही रक़म थी।"

9 पतरस ने कहा, "क्यूँ आप दोनों रब के रूह को
आज़माने पर मुत्तफ़िक़ हुए? देखो, जिन्हों ने आप के
ख़ावन्द को दफ़नाया है वह दरवाज़े पर खड़े हैं और
आप को भी उठा कर बाहर ले जाएंगे।" 10 उसी लम्हे
सफ़ीरा पतरस के पाँओ में गिर कर मर गई। नौजवान
अन्दर आए तो उस की लाश देख कर उसे भी बाहर
ले गए और उस के शौहर के पास दफ़न कर दिया।
11 पूरी जमाअत बल्कि हर सुनने वाले पर बड़ा ख़ौफ़
तारी हो गया।

मोजिज़े

12 रसूलों की मारिफ़त अवाम में बहुत से इलाही
निशान और मोजिज़े ज़ाहिर हुए। उस वक़्त तमाम
ईमानदार यकदिली से बैत-उल-मुक़द्दस में सुलेमान
के बरामदे में जमा हुआ करते थे। 13 बाक़ी लोग उन
से क़रीबी ताल्लुक़ रखने की जुरअत नहीं करते थे,
अगरचे अवाम उन की बहुत इज़्ज़त करते थे। 14 तो
भी ख़ुदावन्द पर ईमान रखने वाले मर्द-ओ-ख़वातीन
की तादाद बढ़ती गई। 15 लोग अपने मरीज़ों को
चारपाइयों और चटाइयों पर रख कर सड़कों पर
लाते थे ताकि जब पतरस वहाँ से गुज़रे तो कम अज़
कम उस का साया किसी न किसी पर पड़ जाए।
16 बहुत से लोग यरूशलम के इर्दगिर्द की आबादियों
से भी अपने मरीज़ों और बदरुह-गिरिफ़्ता अज़ीज़ों
को लाते, और सब शिफ़ा पाते थे।

रसूलों की ईज़ारसानी

17 फिर इमाम-ए-आज़म सदूक़ी फ़िर्क़े के तमाम
साथियों के साथ हरकत में आया। हसद से जल कर
18 उन्हों ने रसूलों को गिरिफ़्तार करके अवामी जेल
में डाल दिया। 19 लेकिन रात को रब का एक फ़रिश्ता
क़ैदख़ाने के दरवाज़ों को खोल कर उन्हें बाहर लाया।
उस ने कहा, 20 "जाओ, बैत-उल-मुक़द्दस में खड़े हो
कर लोगों को इस नई ज़िन्दगी से मुताल्लिक़ सब बातें
सुनाओ।" 21 फ़रिश्ते की सुन कर रसूल सुब्ह-सवेरे
बैत-उल-मुक़द्दस में जा कर तालीम देने लगे।

अब ऐसा हुआ कि इमाम-ए-आज़म अपने साथियों
समेत पहुँचा और यहूदी अदालत-ए-आलिया का
इज्लास मुनअक़िद किया। इस में इस्राईल के तमाम
बुज़ुर्ग शरीक हुए। फिर उन्हों ने अपने मुलाज़िमों को
क़ैदख़ाने में भेज दिया ताकि रसूलों को ला कर उन के

सामने पेश किया जाए। 22 लेकिन जब वह वहाँ पहुँचे
तो पता चला कि रसूल जेल में नहीं हैं। वह वापस
आए और कहने लगे, 23 "जब हम पहुँचे तो जेल बड़ी
एहतियात से बन्द थी और दरवाज़ों पर पहरेदार खड़े
थे। लेकिन जब हम दरवाज़ों को खोल कर अन्दर
गए तो वहाँ कोई नहीं था!" 24 यह सुन कर बैत-
उल-मुक़द्दस के पहरेदारों का कप्तान और राहनुमा
इमाम बड़ी उलझन में पड़ गए और सोचने लगे कि
अब क्या होगा? 25 इतने में कोई आ कर कहने लगा,
"बात सुनें, जिन आदमियों को आप ने जेल में डाला
था वह बैत-उल-मुक़द्दस में खड़े लोगों को तालीम
दे रहे हैं।" 26 तब बैत-उल-मुक़द्दस के पहरेदारों का
कप्तान अपने मुलाज़िमों के साथ रसूलों के पास गया
और उन्हें लाया, लेकिन ज़बरदस्ती नहीं, क्यूँकि वह
डरते थे कि जमाशुदा लोग उन्हें संगसार न कर दें।

27 चुनाँचे उन्हों ने रसूलों को ला कर इज्लास के
सामने खड़ा किया। इमाम-ए-आज़म उन से मुख़ातिब
हुआ, 28 "हम ने तो तुम को सख़्ती से मना किया था
कि इस आदमी का नाम ले कर तालीम न दो। इस
के बरअक्स तुम ने न सिर्फ़ अपनी तालीम यरूशलम
की हर जगह तक पहुँचा दी है बल्कि हमें इस आदमी
की मौत के ज़िम्मादार भी ठहराना चाहते हो।"

29 पतरस और बाक़ी रसूलों ने जवाब दिया,
"लाज़िम है कि हम पहले अल्लाह की सुनें, फिर
इन्सान की। 30 हमारे बापदादा के ख़ुदा ने ईसा को
ज़िन्दा कर दिया, उसी शख़्स को जिसे आप ने
सलीब पर चढ़वा कर मार डाला था। 31 अल्लाह ने
उसी को हुक्मरान और नजातदहिन्दा की हैसियत से
सरफ़राज़ करके अपने दहने हाथ बिठा लिया ताकि
वह इस्राईल को तौबा और गुनाहों की मुआफ़ी का
मौक़ा फ़राहम करे। 32 हम ख़ुद इन बातों के गवाह
हैं और रूह-उल-क़ुद्स भी, जिसे अल्लाह ने अपने
फ़रमाँबर्दारों को दे दिया है।"

33 यह सुन कर अदालत के लोग तैश में आ कर
उन्हें क़त्ल करना चाहते थे। 34 लेकिन एक फ़रीसी
आलिम इज्लास में खड़ा हुआ जिस का नाम जम्लीएल
था। पूरी क़ौम में वह इज़्ज़तदार था। उस ने हुक्म
दिया कि रसूलों को थोड़ी देर के लिए इज्लास
से निकाल दिया जाए। 35 फिर उस ने कहा, "मेरे
इस्राईली भाइयो, ग़ौर से सोचें कि आप इन आदमियों
के साथ क्या करेंगे। 36 क्यूँकि कुछ देर हुई थियूदास
उठ कर कहने लगा कि मैं कोई ख़ास शख़्स हूँ।
तक़रीबन 400 आदमी उस के पीछे लग गए। लेकिन
उसे क़त्ल किया गया और उस के पैरोकार बिखर
गए। उन की सरगर्मियों से कुछ न हुआ। 37 इस के
बाद मर्दुमशुमारी के दिनों में यहूदाह गलीली उठा।
उस ने भी काफ़ी लोगों को अपने पैरोकार बना कर
बग़ावत करने पर उकसाया। लेकिन उसे भी मार
दिया गया और उस के पैरोकार मुन्तशिर हुए। 38 यह
पेश-ए-नज़र रख कर मेरा मश्वरा यह है कि इन लोगों
को छोड़ दें, इन्हें जाने दें। अगर इन का इरादा या
सरगर्मियाँ इन्सानी हैं तो सब कुछ ख़ुद-ब-ख़ुद ख़त्म
हो जाएगा। 39 लेकिन अगर यह अल्लाह की तरफ़ से
है तो आप इन्हें ख़त्म नहीं कर सकेंगे। ऐसा न हो
कि आख़िरकार आप अल्लाह ही के ख़िलाफ़ लड़ रहे
हों।"

हाज़िरीन ने उस की बात मान ली। 40 उन्हों ने रसूलों
को बुला कर उन को कोड़े लगवाए। फिर उन्हों ने
उन्हें ईसा का नाम ले कर बोलने से मना किया और
फिर जाने दिया। 41 रसूल यहूदी अदालत-ए-आलिया
से निकल कर चले गए। यह बात उन के लिए बड़ी
ख़ुशी का बाइस थी कि अल्लाह ने हमें इस लाइक़
समझा है कि ईसा के नाम की ख़ातिर बेइज़्ज़त हो
जाएँ। 42 इस के बाद भी वह रोज़ाना बैत-उल-मुक़द्दस
और मुख़्तलिफ़ घरों में जा जा कर सिखाते और इस
ख़ुशख़बरी की मुनादी करते रहे कि ईसा ही मसीह
है।

रसूलों के सात मददगार

6 1 उन दिनों में जब ईसा के शागिर्दों की तादाद
बढ़ती गई तो यूनानी ज़बान बोलने वाले
ईमानदार इब्रानी बोलने वाले ईमानदारों के बारे

में बुड़बुड़ाने लगे। उन्हों ने कहा, “जब रोज़मर्रा
का खाना तक़्सीम होता है तो हमारी बेवाओं को
नज़रअन्दाज़ किया जाता है।” 2 तब बारह रसूलों ने
शागिर्दों की पूरी जमाअत को इकट्ठा करके कहा,
“यह ठीक नहीं कि हम अल्लाह का कलाम सिखाने
की ख़िदमत को छोड़ कर खाना तक़्सीम करने में
मसरूफ़ रहें। 3 भाइयो, यह बात पेश-ए-नज़र रख कर
अपने में से सात आदमी चुन लें, जिन के नेक किरदार
की आप तस्दीक़ कर सकते हैं और जो रूह-उल-
क़ुद्स और हिक्मत से मामूर हैं। फिर हम उन्हें खाना
तक़्सीम करने की यह ज़िम्मादारी दे कर 4 अपना पूरा
वक़्त दुआ और कलाम की ख़िदमत में सर्फ़ कर
सकेंगे।”

5 यह बात पूरी जमाअत को पसन्द आई और उन्हों
ने सात आदमी चुन लिए : स्तिफ़नुस (जो ईमान और
रूह-उल-क़ुद्स से मामूर था), फ़िलिप्पुस, प्रुख़ुरुस,
नीकानोर, तीमोन, पर्मिनास और अन्ताकिया का
नीकुलाउस। (नीकलाओस ग़ैरयहूदी था जिस ने ईसा
पर ईमान लाने से पहले यहूदी मज़्हब को अपना लिया
था।) 6 इन सात आदमियों को रसूलों के सामने पेश
किया गया तो उन्हों ने इन पर हाथ रख कर दुआ
की।

7 यूँ अल्लाह का पैग़ाम फैलता गया। यरूशलम में
ईमानदारों की तादाद निहायत बढ़ती गई और बैत-
उल-मुक़द्दस के बहुत से इमाम भी ईमान ले आए।

स्तिफ़नुस की गिरिफ़्तारी

8 स्तिफ़नुस अल्लाह के फ़ज़्ल और क़ुव्वत से
मामूर था और लोगों के दरमियान बड़े बड़े मोजिज़े
और इलाही निशान दिखाता था। 9 एक दिन कुछ
यहूदी स्तिफ़नुस से बह्स करने लगे। (वह कुरेन,
इस्कन्दरिया, किलिकिया और सूबा आसिया के
रहने वाले थे और उन के इबादतख़ाने का नाम
लबरतीनियों यानी आज़ाद किए गए ग़ुलामों का
इबादतख़ाना था।) 10 लेकिन वह न उस की हिक्मत
का सामना कर सके, न उस रूह का जो कलाम करते
वक़्त उस की मदद करता था। 11 इस लिए उन्हों ने
बाज़ आदमियों को यह कहने को उकसाया कि “इस
ने मूसा और अल्लाह के बारे में कुफ़्र बका है। हम ख़ुद
इस के गवाह हैं।” 12 यूँ आम लोगों, बुज़ुर्गों और
शरीअत के उलमा में हलचल मच गई। वह स्तिफ़नुस
पर चढ़ आए और उसे घसीट कर यहूदी अदालत-ए-
आलिया के पास लाए। 13 वहाँ उन्हों ने झूटे गवाह
खड़े किए जिन्हों ने कहा, “यह आदमी बैत-उल-
मुक़द्दस और शरीअत के ख़िलाफ़ बातें करने से बाज़
नहीं आता। 14 हम ने इस के मुँह से सुना है कि
ईसा नासरी यह मक़ाम तबाह करेगा और वह रस्म-
ओ-रिवाज बदल देगा जो मूसा ने हमारे सपुर्द किए
हैं।” 15 जब इज्लास में बैठे तमाम लोग घूर घूर कर
स्तिफ़नुस की तरफ़ देखने लगे तो उस का चिहरा
फ़रिश्ते का सा नज़र आया।

स्तिफ़नुस की तक़रीर

7 1 इमाम-ए-आज़म ने पूछा, “क्या यह सच है?”
2 स्तिफ़नुस ने जवाब दिया, “भाइयो और
बुज़ुर्गो, मेरी बात सुनें। जलाल का ख़ुदा हमारे बाप
इब्राहीम पर ज़ाहिर हुआ जब वह अभी मसोपुतामिया
में आबाद था। उस वक़्त वह हारान में मुन्तक़िल नहीं
हुआ था। 3 अल्लाह ने उस से कहा, ‘अपने वतन और
अपनी क़ौम को छोड़ कर इस मुल्क में चला जा जो
मैं तुझे दिखाऊँगा।’ 4 चुनाँचे वह कस्दियों के मुल्क
को छोड़ कर हारान में रहने लगा। वहाँ उस का बाप
फ़ौत हुआ तो अल्लाह ने उसे इस मुल्क में मुन्तक़िल
किया जिस में आप आज तक आबाद हैं। 5 उस वक़्त
अल्लाह ने उसे इस मुल्क में कोई भी मौरूसी ज़मीन न
दी थी, एक मुरब्बा फ़ुट तक भी नहीं। लेकिन उस ने
उस से वादा किया, ‘मैं इस मुल्क को तेरे और तेरी
औलाद के क़ब्ज़े में कर दूँगा,’ अगरचे उस वक़्त
इब्राहीम के हाँ कोई बच्चा पैदा नहीं हुआ था। 6 अल्लाह
ने उसे यह भी बताया, ‘तेरी औलाद ऐसे मुल्क में
रहेगी जो उस का नहीं होगा। वहाँ वह अजनबी और
ग़ुलाम होगी, और उस पर 400 साल तक बहुत ज़ुल्म

किया जाएगा। 7 लेकिन मैं उस क़ौम की अदालत
करूँगा जिस ने उसे ग़ुलाम बनाया होगा। इस के
बाद वह उस मुल्क में से निकल कर इस मक़ाम
पर मेरी इबादत करेंगे।' 8 फिर अल्लाह ने इब्राहीम को
ख़तना का अह्द दिया। चुनाँचे जब इब्राहीम का बेटा
इस्हाक़ पैदा हुआ तो बाप ने आठवें दिन उस का
ख़तना किया। यह सिलसिला जारी रहा जब इस्हाक़
का बेटा याक़ूब पैदा हुआ और याक़ूब के बारह बेटे,
हमारे बारह क़बीलों के सरदार।

9 यह सरदार अपने भाई यूसुफ़ से हसद करने लगे
और इस लिए उसे बेच दिया। यूँ वह ग़ुलाम बन कर
मिस्र पहुँचा। लेकिन अल्लाह उस के साथ रहा 10 और
उसे उस की तमाम मुसीबतों से रिहाई दी। उस ने
उसे दानाई अता करके इस क़ाबिल बना दिया कि
वह मिस्र के बादशाह फ़िरऔन का मन्ज़ूर-ए-नज़र
हो जाए। यूँ फ़िरऔन ने उसे मिस्र और अपने पूरे
घराने पर हुक्मरान मुक़र्रर किया। 11 फिर तमाम मिस्र
और कनआन में काल पड़ा। लोग बड़ी मुसीबत में
पड़ गए और हमारे बापदादा के पास भी ख़ुराक
ख़त्म हो गई। 12 याक़ूब को पता चला कि मिस्र में
अब तक अनाज है, इस लिए उस ने अपने बेटों
को अनाज ख़रीदने को वहाँ भेज दिया। 13 जब उन्हें
दूसरी बार वहाँ जाना पड़ा तो यूसुफ़ ने अपने आप
को अपने भाइयों पर ज़ाहिर किया, और फ़िरऔन
को यूसुफ़ के ख़ानदान के बारे में आगाह किया
गया। 14 इस के बाद यूसुफ़ ने अपने बाप याक़ूब और
तमाम रिश्तेदारों को बुला लिया। कुल 75 अफ़राद
आए। 15 यूँ याक़ूब मिस्र पहुँचा। वहाँ वह और हमारे
बापदादा मर गए। 16 उन्हें सिकम में ला कर उस क़ब्र
में दफ़नाया गया जो इब्राहीम ने हमोर की औलाद से
पैसे दे कर ख़रीदी थी।

17 फिर वह वक़्त क़रीब आ गया जिस का वादा
अल्लाह ने इब्राहीम से किया था। मिस्र में हमारी
क़ौम की तादाद बहुत बढ़ चुकी थी। 18 लेकिन
होते होते एक नया बादशाह तख़्तनशीन हुआ जो
यूसुफ़ से नावाक़िफ़ था। 19 उस ने हमारी क़ौम का
इस्तेह्साल करके उन से बदसुलूकी की और उन्हें
अपने शीरख़्वार बच्चों को ज़ाए करने पर मज्बूर
किया। 20 उस वक़्त मूसा पैदा हुआ। वह अल्लाह के
नज़्दीक ख़ूबसूरत बच्चा था और तीन माह तक अपने
बाप के घर में पाला गया। 21 इस के बाद वालिदैन
को उसे छोड़ना पड़ा, लेकिन फ़िरऔन की बेटी ने
उसे लेपालक बना कर अपने बेटे के तौर पर पाला।
22 और मूसा को मिस्रियों की हिक्मत के हर शोबे
में तर्बियत मिली। उसे बोलने और अमल करने की
ज़बरदस्त क़ाबिलियत हासिल थी।

23 जब वह चालीस साल का था तो उसे अपनी
क़ौम इस्राईल के लोगों से मिलने का ख़याल आया।
24 जब उस ने उन के पास जा कर देखा कि एक
मिस्री किसी इस्राईली पर तशद्दुद कर रहा है तो उस ने
इस्राईली की हिमायत करके मज़्लूम का बदला लिया
और मिस्री को मार डाला। 25 उस का ख़याल तो यह
था कि मेरे भाइयों को समझ आएगी कि अल्लाह मेरे
वसीले से उन्हें रिहाई देगा, लेकिन ऐसा नहीं था।
26 अगले दिन वह दो इस्राईलियों के पास से गुज़रा
जो आपस में लड़ रहे थे। उस ने सुलह कराने की
कोशिश में कहा, 'मर्दो, आप तो भाई हैं। आप क्यूँ
एक दूसरे से ग़लत सुलूक कर रहे हैं?' 27 लेकिन जो
आदमी दूसरे से बदसुलूकी कर रहा था उस ने मूसा
को एक तरफ़ धकेल कर कहा, 'किस ने आप को
हम पर हुक्मरान और क़ाज़ी मुक़र्रर किया है? 28 क्या
आप मुझे भी क़त्ल करना चाहते हैं जिस तरह कल
मिस्री को मार डाला था?' 29 यह सुन कर मूसा फ़रार
हो कर मुल्क-ए-मिदियान में अजनबी के तौर पर रहने
लगा। वहाँ उस के दो बेटे पैदा हुए।

30 चालीस साल के बाद एक फ़रिश्ता जलती हुई
काँटेदार झाड़ी के शोले में उस पर ज़ाहिर हुआ। उस
वक़्त मूसा सीना पहाड़ के क़रीब रेगिस्तान में था।
31 यह मन्ज़र देख कर मूसा हैरान हुआ। जब वह
उस का मुआइना करने के लिए क़रीब पहुँचा तो
रब की आवाज़ सुनाई दी, 32 'मैं तेरे बापदादा का
ख़ुदा, इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब का ख़ुदा हूँ।'

मूसा थरथराने लगा और उस तरफ़ देखने की जुरअत
न की। 33 फिर रब ने उस से कहा, 'अपनी जूतियाँ
उतार, क्यूँकि तू मुक़द्दस ज़मीन पर खड़ा है। 34 मैं ने
मिस्र में अपनी क़ौम की बुरी हालत देखी और उन
की आहें सुनी हैं, इस लिए उन्हें बचाने के लिए उतर
आया हूँ। अब जा, मैं तुझे मिस्र भेजता हूँ।'

35 यूँ अल्लाह ने उस शख़्स को उन के पास भेज दिया
जिसे वह यह कह कर रद्द कर चुके थे कि 'किस ने
आप को हम पर हुक्मरान और क़ाज़ी मुक़र्रर किया
है?' जलती हुई काँटेदार झाड़ी में मौजूद फ़रिश्ते की
मारिफ़त अल्लाह ने मूसा को उन के पास भेज दिया
ताकि वह उन का हुक्मरान और नजातदहिन्दा बन
जाए। 36 और वह मोजिज़े और इलाही निशान दिखा
कर उन्हें मिस्र से निकाल लाया, फिर बहर-ए-क़ुल्ज़ुम
से गुज़र कर 40 साल के दौरान रेगिस्तान में उन की
राहनुमाई की। 37 मूसा ने ख़ुद इस्राईलियों को बताया,
'अल्लाह तुम्हारे वास्ते तुम्हारे भाइयों में से मुझ जैसे
नबी को बरपा करेगा।' 38 मूसा रेगिस्तान में क़ौम की
जमाअत में शरीक था। एक तरफ़ वह उस फ़रिश्ते
के साथ था जो सीना पहाड़ पर उस से बातें करता
था, दूसरी तरफ़ हमारे बापदादा के साथ। फ़रिश्ते से
उसे ज़िन्दगीबख़्श बातें मिल गईं जो उसे हमारे सपुर्द
करनी थीं।

39 लेकिन हमारे बापदादा ने उस की सुनने से
इन्कार करके उसे रद्द कर दिया। दिल ही दिल में
वह मिस्र की तरफ़ रुजू कर चुके थे। 40 वह हारून
से कहने लगे, 'आएँ, हमारे लिए देवता बना दें जो
हमारे आगे आगे चलते हुए हमारी राहनुमाई करें।
क्यूँकि क्या मालूम कि उस बन्दे मूसा को क्या हुआ
है जो हमें मिस्र से निकाल लाया।' 41 उसी वक़्त उन्हों
ने बछड़े का बुत बना कर उसे क़ुर्बानियाँ पेश कीं
और अपने हाथों के काम की ख़ुशी मनाई। 42 इस
पर अल्लाह ने अपना मुँह फेर लिया और उन्हें सितारों
की पूजा की गिरिफ़्त में छोड़ दिया, बिलकुल उसी
तरह जिस तरह नबियों के सहीफ़े में लिखा है,

'ऐ इस्राईल के घराने,
जब तुम रेगिस्तान में घूमते फिरते थे
तो क्या तुम ने उन 40 सालों के दौरान
कभी मुझे ज़बह और ग़ल्ला की क़ुर्बानियाँ पेश कीं?
43 नहीं, उस वक़्त भी तुम मलिक देवता का ताबूत
और रिफ़ान देवता का सितारा उठाए फिरते थे,
गो तुम ने अपने हाथों से यह बुत
पूजा करने के लिए बना लिए थे।
इस लिए मैं तुम्हें जिलावतन करके
बाबल के पार बसा दूँगा।'

44 रेगिस्तान में हमारे बापदादा के पास मुलाक़ात
का ख़ैमा था। उसे उस नमूने के मुताबिक़ बनाया
गया था जो अल्लाह ने मूसा को दिखाया था। 45 मूसा
की मौत के बाद हमारे बापदादा ने उसे विरसे में पा
कर अपने साथ ले लिया जब उन्हों ने यशूअ की
राहनुमाई में इस मुल्क में दाख़िल हो कर उस पर
क़ब्ज़ा कर लिया। उस वक़्त अल्लाह उस में आबाद
क़ौमों को उन के आगे आगे निकालता गया। यूँ
मुलाक़ात का ख़ैमा दाऊद बादशाह के ज़माने तक
मुल्क में रहा। 46 दाऊद अल्लाह का मन्ज़ूर-ए-नज़र
था। उस ने याक़ूब के ख़ुदा को एक सुकूनतगाह
मुहय्या करने की इजाज़त माँगी। 47 लेकिन सुलेमान
को उस के लिए मकान बनाने का एज़ाज़ हासिल
हुआ।

48 हक़ीक़त में अल्लाह तआला इन्सान के हाथ के
बनाए हुए मकानों में नहीं रहता। नबी रब का फ़रमान
यूँ बयान करता है,

49 'आसमान मेरा तख़्त है
और ज़मीन मेरे पाँओ की चौकी,
तो फिर तुम मेरे लिए किस क़िस्म का घर बनाओगे?
वह जगह कहाँ है जहाँ मैं आराम करूँगा?
50 क्या मेरे हाथ ने यह सब कुछ नहीं बनाया?'

51 ऐ गर्दनकश लोगो! बेशक आप का ख़तना हुआ
है जो अल्लाह की क़ौम का ज़ाहिरी निशान है। लेकिन
उस का आप के दिलों और कानों पर कुछ भी असर
नहीं हुआ। आप अपने बापदादा की तरह हमेशा रूह-
उल-क़ुद्स की मुख़ालफ़त करते रहते हैं। 52 क्या

कभी कोई नबी था जिसे आप के बापदादा ने न सताया? उन्हों ने उन्हें भी क़त्ल किया जिन्हों ने रास्तबाज़ मसीह की पेशगोई की, उस शख़्स की जिसे आप ने दुश्मनों के हवाले करके मार डाला। 53 आप ही को फ़रिश्तों के हाथ से अल्लाह की शरीअत हासिल हुई मगर उस पर अमल नहीं किया।”

स्तिफ़नुस को संगसार किया जाता है

54 स्तिफ़नुस की यह बातें सुन कर इज्लास के लोग तैश में आ कर दाँत पीसने लगे। 55 लेकिन स्तिफ़नुस रूह-उल-क़ुद्स से मामूर अपनी नज़र उठा कर आसमान की तरफ़ तकने लगा। वहाँ उसे अल्लाह का जलाल नज़र आया, और ईसा अल्लाह के दहने हाथ खड़ा था। 56 उस ने कहा, “देखो, मुझे आसमान खुला हुआ दिखाई दे रहा है और इब्न-ए-आदम अल्लाह के दहने हाथ खड़ा है!”

57 यह सुनते ही उन्हों ने चीख़ चीख़ कर हाथों से अपने कानों को बन्द कर लिया और मिल कर उस पर झपट पड़े। 58 फिर वह उसे शहर से निकाल कर संगसार करने लगे। और जिन लोगों ने उस के ख़िलाफ़ गवाही दी थी उन्हों ने अपनी चादरें उतार कर एक जवान आदमी के पाँओ में रख दीं। उस आदमी का नाम साऊल था। 59 जब वह स्तिफ़नुस को संगसार कर रहे थे तो उस ने दुआ करके कहा, “ऐ ख़ुदावन्द ईसा, मेरी रूह को क़बूल कर।” 60 फिर घुटने टेक कर उस ने ऊँची आवाज़ से कहा, “ऐ ख़ुदावन्द, उन्हें इस गुनाह के ज़िम्मादार न ठहरा।” यह कह कर वह इन्तिक़ाल कर गया।

8 1 और साऊल को भी स्तिफ़नुस का क़त्ल मन्ज़ूर था।

साऊल जमाअत को सताता है

उस दिन यरूशलम में मौजूद जमाअत सख़्त ईज़ारसानी की ज़द में आ गई। इस लिए सिवाए रसूलों के तमाम ईमानदार यहूदिया और सामरिया के इलाक़ों में तित्तर-बित्तर हो गए। 2 कुछ ख़ुदातरस आदमियों ने स्तिफ़नुस को दफ़न करके रो रो कर उस का मातम किया।

3 लेकिन साऊल ईसा की जमाअत को तबाह करने पर तुला हुआ था। उस ने घर घर जा कर ईमानदार मर्द-ओ-ख़वातीन को निकाल दिया और उन्हें घसीट कर क़ैदख़ाने में डलवा दिया।

ख़ुशख़बरी सामरिया में फैल जाती है

4 जो ईमानदार बिखर गए थे वह जगह जगह जा कर अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाते फिरे। 5 इस तरह फ़िलिप्पुस सामरिया के किसी शहर को गया और वहाँ के लोगों को मसीह के बारे में बताया। 6 जो कुछ भी फ़िलिप्पुस ने कहा और जो भी इलाही निशान उस ने दिखाए, उस पर सुनने वाले हुजूम ने यकदिल हो कर तवज्जुह दी। 7 बहुत से लोगों में से बदरुहें ज़ोरदार चीख़ें मार मार कर निकल गईं, और बहुत से मफ़्लूजों और लंगड़ों को शिफ़ा मिल गई। 8 यूँ उस शहर में बड़ी शादमानी फैल गई।

9 वहाँ काफ़ी अर्से से एक आदमी रहता था जिस का नाम शमाऊन था। वह जादूगर था और उस के हैरतअंगेज़ काम से सामरिया के लोग बहुत मुतअस्सिर थे। उस का अपना दावा था कि मैं कोई ख़ास शख़्स हूँ। 10 इस लिए सब लोग छोटे से ले कर बड़े तक उस पर ख़ास तवज्जुह देते थे। उन का कहना था, ‘यह आदमी वह इलाही क़ुव्वत है जो अज़ीम कहलाती है।’ 11 वह इस लिए उस के पीछे लग गए थे कि उस ने उन्हें बड़ी देर से अपने हैरतअंगेज़ कामों से मुतअस्सिर कर रखा था। 12 लेकिन अब लोग फ़िलिप्पुस की अल्लाह की बादशाही और ईसा के नाम के बारे में ख़ुशख़बरी पर ईमान ले आए, और मर्द-ओ-ख़वातीन ने बपतिस्मा लिया। 13 ख़ुद शमाऊन ने भी ईमान ला कर बपतिस्मा लिया और फ़िलिप्पुस के साथ रहा। जब उस ने वह बड़े इलाही निशान और मोजिज़े देखे जो फ़िलिप्पुस के हाथ से ज़ाहिर हुए तो वह हक्का-बक्का रह गया।

14 जब यरूशलम में रसूलों ने सुना कि सामरिया
ने अल्लाह का कलाम क़बूल कर लिया है तो उन्हों
ने पतरस और यूहन्ना को उन के पास भेज दिया।
15 वहाँ पहुँच कर उन्हों ने उन के लिए दुआ की कि
उन्हें रूह-उल-क़ुद्स मिल जाए, 16 क्यूँकि अभी रूह-
उल-क़ुद्स उन पर नाज़िल नहीं हुआ था बल्कि उन्हें
सिर्फ़ ख़ुदावन्द ईसा के नाम में बपतिस्मा दिया गया
था। 17 अब जब पतरस और यूहन्ना ने अपने हाथ उन
पर रखे तो उन्हें रूह-उल-क़ुद्स मिल गया।

18 शमाऊन ने देखा कि जब रसूल लोगों पर हाथ
रखते हैं तो उन को रूह-उल-क़ुद्स मिलता है। इस
लिए उस ने उन्हें पैसे पेश करके 19 कहा, "मुझे भी
यह इख़तियार दे दें कि जिस पर मैं हाथ रखूँ उसे
रूह-उल-क़ुद्स मिल जाए।"

20 लेकिन पतरस ने जवाब दिया, "आप के पैसे
आप के साथ ग़ारत हो जाएँ, क्यूँकि आप ने सोचा कि
अल्लाह की नेमत पैसों से ख़रीदी जा सकती है। 21 इस
ख़िदमत में आप का कोई हिस्सा नहीं है, क्यूँकि आप
का दिल अल्लाह के सामने ख़ालिस नहीं है। 22 अपनी
इस शरारत से तौबा करके ख़ुदावन्द से दुआ करें।
शायद वह आप को इस इरादे की मुआफ़ी दे जो आप
ने दिल में रखा है। 23 क्यूँकि मैं देखता हूँ कि आप
कड़वे पित से भरे और नारास्ती के बंधन में जकड़े
हुए हैं।"

24 शमाऊन ने कहा, "फिर ख़ुदावन्द से मेरे लिए
दुआ करें कि आप की मज़कूरा मुसीबतों में से मुझ
पर कोई न आए।"

25 ख़ुदावन्द के कलाम की गवाही देने और उस
की मुनादी करने के बाद पतरस और यूहन्ना वापस
यरूशलम के लिए रवाना हुए। रास्ते में उन्हों ने
सामरिया के बहुत से दीहातों में अल्लाह की ख़ुशख़बरी
सुनाई।

फ़िलिप्पुस और एथोपिया का अफ़्सर

26 एक दिन रब के फ़रिश्ते ने फ़िलिप्पुस से कहा,
"उठ कर जुनूब की तरफ़ उस राह पर जा जो
रेगिस्तान में से गुज़र कर यरूशलम से ग़ज़्ज़ा को
जाती है।" 27 फ़िलिप्पुस उठ कर रवाना हुआ। चलते
चलते उस की मुलाक़ात एथोपिया की मलिका
कन्दाके के एक ख़्वाजासरा से हुई। मलिका के पूरे
ख़ज़ाने पर मुक़र्रर यह दरबारी इबादत करने के लिए
यरूशलम गया था 28 और अब अपने मुल्क में वापस
जा रहा था। उस वक़्त वह रथ में सवार यसायाह नबी
की किताब की तिलावत कर रहा था। 29 रूह-उल-
क़ुद्स ने फ़िलिप्पुस से कहा, "उस के पास जा कर
रथ के साथ हो ले।" 30 फ़िलिप्पुस दौड़ कर रथ के
पास पहुँचा तो सुना कि वह यसायाह नबी की किताब
की तिलावत कर रहा है। उस ने पूछा, "क्या आप
को उस सब की समझ आती है जो आप पढ़ रहे हैं?"

31 दरबारी ने जवाब दिया, "मैं क्यूँकर समझूँ जब
तक कोई मेरी राहनुमाई न करे?" और उस ने
फ़िलिप्पुस को रथ में सवार होने की दावत दी।
32 कलाम-ए-मुक़द्दस का जो हवाला वह पढ़ रहा था
यह था,

'उसे भेड़ की तरह ज़बह करने के लिए ले गए।
जिस तरह लेला बाल कतरने वाले के सामने
ख़ामोश रहता है,
उसी तरह उस ने अपना मुँह न खोला।
33 उस की तज़्लील की गई और उसे इन्साफ़ न
मिला।
कौन उस की नस्ल बयान कर सकता है?
क्यूँकि उस की जान दुनिया से छीन ली गई।'

34 दरबारी ने फ़िलिप्पुस से पूछा, "मेहरबानी करके
मुझे बता दीजिए कि नबी यहाँ किस का ज़िक्र कर
रहा है, अपना या किसी और का?" 35 जवाब में
फ़िलिप्पुस ने कलाम-ए-मुक़द्दस के इसी हवाले से
शुरू करके उसे ईसा के बारे में ख़ुशख़बरी सुनाई।
36 सड़क पर सफ़र करते करते वह एक जगह से
गुज़रे जहाँ पानी था। ख़्वाजासरा ने कहा, "देखें, यहाँ
पानी है। अब मुझे बपतिस्मा लेने से कौन सी चीज़
रोक सकती है?" 37 [फ़िलिप्पुस ने कहा, "अगर
आप पूरे दिल से ईमान लाएँ तो ले सकते हैं।" उस

ने जवाब दिया, “मैं ईमान रखता हूँ कि ईसा मसीह अल्लाह का फ़र्ज़न्द है।”]

38 उस ने रथ को रोकने का हुक्म दिया। दोनों पानी में उतर गए और फ़िलिप्पुस ने उसे बपतिस्मा दिया। 39 जब वह पानी से निकल आए तो ख़ुदावन्द का रूह फ़िलिप्पुस को उठा ले गया। इस के बाद ख़्वाजासरा ने उसे फिर कभी न देखा, लेकिन उस ने ख़ुशी मनाते हुए अपना सफ़र जारी रखा। 40 इतने में फ़िलिप्पुस को अश्दूद शहर में पाया गया। वह वहाँ और क़ैसरिया तक के तमाम शहरों में से गुज़र कर अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाता गया।

पौलुस की तब्दीली

9 1 अब तक साऊल ख़ुदावन्द के शागिर्दों को धमकाने और क़त्ल करने के दरपै था। उस ने इमाम-ए-आज़म के पास जा कर 2 उस से गुज़ारिश की कि “मुझे दमिश्क़ में यहूदी इबादतख़ानों के लिए सिफ़ारिशी ख़त लिख कर दें ताकि वह मेरे साथ तआवुन करें। क्यूँकि मैं वहाँ मसीह की राह पर चलने वालों को ख़्वाह वह मर्द हों या ख़वातीन ढूँड कर और बांध कर यरूशलम लाना चाहता हूँ।”

3 वह इस मक़्सद से सफ़र करके दमिश्क़ के क़रीब पहुँचा ही था कि अचानक आसमान की तरफ़ से एक तेज़ रौशनी उस के गिर्द चमकी। 4 वह ज़मीन पर गिर पड़ा तो एक आवाज़ सुनाई दी, “साऊल, साऊल, तू मुझे क्यूँ सताता है?”

5 उस ने पूछा, “ख़ुदावन्द, आप कौन हैं?”

आवाज़ ने जवाब दिया, “मैं ईसा हूँ जिसे तू सताता है। 6 अब उठ कर शहर में जा। वहाँ तुझे बताया जाएगा कि तुझे क्या करना है।”

7 साऊल के पास खड़े हमसफ़र दम-ब-ख़ुद रह गए। आवाज़ तो वह सुन रहे थे, लेकिन उन्हें कोई नज़र न आया। 8 साऊल ज़मीन पर से उठा, लेकिन जब उस ने अपनी आँखें खोलीं तो मालूम हुआ कि वह अंधा है। चुनाँचे उस के साथी उस का हाथ पकड़ कर उसे दमिश्क़ ले गए। 9 वहाँ तीन दिन के दौरान वह अंधा रहा। इतने में उस ने न कुछ खाया, न पिया।

10 उस वक़्त दमिश्क़ में ईसा का एक शागिर्द रहता था जिस का नाम हननियाह था। अब ख़ुदावन्द रोया में उस से हमकलाम हुआ, “हननियाह!”

उस ने जवाब दिया, “जी ख़ुदावन्द, मैं हाज़िर हूँ।”

11 ख़ुदावन्द ने फ़रमाया, “उठ, उस गली में जा जो ‘सीधी’ कहलाती है। वहाँ यहूदाह के घर में तर्सुस के एक आदमी का पता करना जिस का नाम साऊल है। क्यूँकि देख, वह दुआ कर रहा है। 12 और रोया में उस ने देख लिया है कि एक आदमी बनाम हननियाह मेरे पास आ कर अपने हाथ मुझ पर रखेगा। इस से मेरी आँखें बहाल हो जाएँगी।”

13 हननियाह ने एतिराज़ किया, “ऐ ख़ुदावन्द, मैं ने बहुत से लोगों से उस शख़्स की शरीर हरकतों के बारे में सुना है। यरूशलम में उस ने तेरे मुक़द्दसों के साथ बहुत ज़ियादती की है। 14 अब उसे राहनुमा इमामों से इख़तियार मिल गया है कि यहाँ भी हर एक को गिरिफ़्तार करे जो तेरी इबादत करता है।”

15 लेकिन ख़ुदावन्द ने कहा, “जा, यह आदमी मेरा चुना हुआ वसीला है जो मेरा नाम ग़ैरयहूदियों, बादशाहों और इस्राईलियों तक पहुँचाएगा। 16 और मैं उसे दिखा दूँगा कि उसे मेरे नाम की ख़ातिर कितना दुख उठाना पड़ेगा।”

17 चुनाँचे हननियाह मज़कूरा घर के पास गया, उस में दाख़िल हुआ और अपने हाथ साऊल पर रख दिए। उस ने कहा, “साऊल भाई, ख़ुदावन्द ईसा जो आप पर ज़ाहिर हुआ जब आप यहाँ आ रहे थे उसी ने मुझे भेजा है ताकि आप दुबारा देख पाएँ और रूह-उल-क़ुद्स से मामूर हो जाएँ।” 18 यह कहते ही छिलकों जैसी कोई चीज़ साऊल की आँखों पर से गिरी और वह दुबारा देखने लगा। उस ने उठ कर बपतिस्मा लिया, 19 फिर कुछ खाना खा कर नए सिरे से तक़वियत पाई।

साऊल दमिश्क़ में अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाता है

साऊल कई दिन शागिर्दों के साथ दमिश्क़ में रहा।
20 उसी वक़्त वह सीधा यहूदी इबादतख़ानों में जा
कर एलान करने लगा कि ईसा अल्लाह का फ़र्ज़न्द
है।
21 और जिस ने भी उसे सुना वह हैरान रह गया
और पूछा, “क्या यह वह आदमी नहीं जो यरूशलम
में ईसा की इबादत करने वालों को हलाक कर रहा
था? और क्या वह इस मक़्सद से यहाँ नहीं आया
कि ऐसे लोगों को बांध कर राहनुमा इमामों के पास
ले जाए?”
22 लेकिन साऊल रोज़-ब-रोज़ ज़ोर पकड़ता गया,
और चूँकि उस ने साबित किया कि ईसा वादा किया
हुआ मसीह है इस लिए दमिश्क़ में आबाद यहूदी
उलझन में पड़ गए।
23 चुनाँचे काफ़ी दिनों के बाद उन्हों ने मिल कर उसे
क़त्ल करने का मन्सूबा बनाया। 24 लेकिन साऊल
को पता चल गया। यहूदी दिन रात शहर के दरवाज़ों
की पहरादारी करते रहे ताकि उसे क़त्ल करें, 25 इस
लिए उस के शागिर्दों ने उसे रात के वक़्त टोकरे में
बिठा कर शहर की चारदीवारी के एक सूराख़ में से
उतार दिया।

साऊल यरूशलम में

26 साऊल यरूशलम वापस चला गया। वहाँ उस
ने शागिर्दों से राबिता करने की कोशिश की, लेकिन
सब उस से डरते थे, क्यूँकि उन्हें यक़ीन नहीं आया
था कि वह वाक़ई ईसा का शागिर्द बन गया है।
27 फिर बर्नबास उसे रसूलों के पास ले आया। उस
ने उन्हें साऊल के बारे में सब कुछ बताया, कि
उस ने दमिश्क़ की तरफ़ सफ़र करते वक़्त रास्ते में
ख़ुदावन्द को देखा, कि ख़ुदावन्द उस से हमकलाम
हुआ था और उस ने दमिश्क़ में दिलेरी से ईसा के
नाम से बात की थी। 28 चुनाँचे साऊल उन के साथ
रह कर आज़ादी से यरूशलम में फिरने और दिलेरी
से ख़ुदावन्द ईसा के नाम से कलाम करने लगा।
29 उस ने यूनानी ज़बान बोलने वाले यहूदियों से भी
मुख़ातिब हो कर बह्स की, लेकिन जवाब में वह उसे
क़त्ल करने की कोशिश करने लगे। 30 जब भाइयों
को मालूम हुआ तो उन्हों ने उसे क़ैसरिया पहुँचा दिया
और जहाज़ में बिठा कर तर्सुस के लिए रवाना कर
दिया।
31 इस पर यहूदिया, गलील और सामरिया के पूरे
इलाक़े में फैली हुई जमाअत को अम्न-ओ-अमान
हासिल हुआ। रूह-उल-क़ुद्स की हिमायत से उस
की तामीर-ओ-तक़वियत हुई, वह ख़ुदा का ख़ौफ़
मान कर चलती रही और तादाद में भी बढ़ती गई।

पतरस लुद्दा और याफ़ा में

32 एक दिन जब पतरस जगह जगह सफ़र कर रहा
था तो वह लुद्दा में आबाद मुक़द्दसों के पास भी
आया। 33 वहाँ उस की मुलाक़ात एक आदमी बनाम
ऐनियास से हुई। ऐनियास मफ़्लूज था। वह आठ साल
से बिस्तर से उठ न सका था। 34 पतरस ने उस से
कहा, “ऐनियास, ईसा मसीह आप को शिफ़ा देता है।
उठ कर अपना बिस्तर समेट लें।” ऐनियास फ़ौरन
उठ खड़ा हुआ। 35 जब लुद्दा और मैदानी इलाक़े
शारून के तमाम रहने वालों ने उसे देखा तो उन्हों
ने ख़ुदावन्द की तरफ़ रुजू किया।
36 याफ़ा में एक औरत थी जो शागिर्द थी और नेक
काम करने और ख़ैरात देने में बहुत आगे थी। उस
का नाम तबीता (ग़ज़ाला) था। 37 उन ही दिनों में वह
बीमार हो कर फ़ौत हो गई। लोगों ने उसे ग़ुसल दे
कर बालाख़ाने में रख दिया। 38 लुद्दा याफ़ा के क़रीब
है, इस लिए जब शागिर्दों ने सुना कि पतरस लुद्दा
में है तो उन्हों ने उस के पास दो आदमियों को भेज
कर इल्तिमास की, “सीधे हमारे पास आएँ और देर
न करें।” 39 पतरस उठ कर उन के साथ चला गया।
वहाँ पहुँच कर लोग उसे बालाख़ाने में ले गए। तमाम
बेवाओं ने उसे घेर लिया और रोते चिल्लाते वह सारी
क़मीसें और बाक़ी लिबास दिखाने लगीं जो तबीता

ने उन के लिए बनाए थे जब वह अभी ज़िन्दा थी।
40 लेकिन पतरस ने उन सब को कमरे से निकाल
दिया और घुटने टेक कर दुआ की। फिर लाश की
तरफ़ मुड़ कर उस ने कहा, “तबीता, उठें!” औरत
ने अपनी आँखें खोल दीं। पतरस को देख कर वह
बैठ गई। 41 पतरस ने उस का हाथ पकड़ लिया और
उठने में उस की मदद की। फिर उस ने मुक़द्दसों
और बेवाओं को बुला कर तबीता को ज़िन्दा उन
के सपुर्द किया। 42 यह वाक़िआ पूरे याफ़ा में मश्हूर
हुआ, और बहुत से लोग ख़ुदावन्द ईसा पर ईमान
लाए। 43 पतरस काफ़ी दिनों तक याफ़ा में रहा। वहाँ
वह चमड़ा रंगने वाले एक आदमी के घर ठहरा जिस
का नाम शमाऊन था।

पतरस और कुर्नेलियुस

10 1 क़ैसरिया में एक रोमी अफ़सर [d]रहता था
जिस का नाम कुर्नेलियुस था। वह उस
पलटन के सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर था जो इतालवी
कहलाती थी। 2 कुर्नेलियुस अपने पूरे घराने समेत
दीनदार और ख़ुदातरस था। वह फ़य्याज़ी से ख़ैरात
देता और मुतवातिर दुआ में लगा रहता था। 3 एक
दिन उस ने तीन बजे दोपहर के वक़्त रोया देखी। उस
में उस ने साफ़ तौर पर अल्लाह का एक फ़रिश्ता देखा
जो उस के पास आया और कहा, “कुर्नेलियुस!”

4 वह घबरा गया और उसे ग़ौर से देखते हुए कहा,
“मेरे आक़ा, फ़रमाएँ।”

फ़रिश्ते ने कहा, “तुम्हारी दुआओं और ख़ैरात की
क़ुर्बानी अल्लाह के हुज़ूर पहुँच गई है और मन्ज़ूर है।
5 अब कुछ आदमी याफ़ा भेज दो। वहाँ एक आदमी
बनाम शमाऊन है जो पतरस कहलाता है। उसे बुला
कर ले आओ। 6 पतरस एक चमड़ा रंगने वाले का
मेहमान है जिस का नाम शमाऊन है। उस का घर
समुन्दर के क़रीब वाक़े है।”

7 जूँ ही फ़रिश्ता चला गया कुर्नेलियुस ने दो नौकरों
और अपने ख़िदमतगार फ़ौजियों में से एक ख़ुदातरस
आदमी को बुलाया। 8 सब कुछ सुना कर उस ने उन्हें
याफ़ा भेज दिया।

9 अगले दिन पतरस दोपहर तक़रीबन बारह बजे
दुआ करने के लिए छत पर चढ़ गया। उस वक़्त
कुर्नेलियुस के भेजे हुए आदमी याफ़ा शहर के क़रीब
पहुँच गए थे। 10 पतरस को भूक लगी और वह कुछ
खाना चाहता था। जब उस के लिए खाना तय्यार
किया जा रहा था तो वह वज्द की हालत में आ गया।
11 उस ने देखा कि आसमान खुल गया है और एक
चीज़ ज़मीन पर उतर रही है, कतान की बड़ी चादर
जैसी जो अपने चार कोनों से नीचे उतारी जा रही
है। 12 चादर में तमाम क़िस्म के जानवर हैं : चार
पाँओ रखने वाले, रेंगने वाले और परिन्दे। 13 फिर
एक आवाज़ उस से मुख़ातिब हुई, “उठ, पतरस।
कुछ ज़बह करके खा!”

14 पतरस ने एतिराज़ किया, “हरगिज़ नहीं
ख़ुदावन्द, मैं ने कभी भी हराम या नापाक खाना नहीं
खाया।”

15 लेकिन यह आवाज़ दुबारा उस से हमकलाम हुई,
“जो कुछ अल्लाह ने पाक कर दिया है उसे नापाक
क़रार न दे।” 16 यही कुछ तीन मर्तबा हुआ, फिर
चादर को अचानक आसमान पर वापस उठा लिया
गया।

17 पतरस बड़ी उलझन में पड़ गया। वह अभी सोच
रहा था कि इस रोया का क्या मतलब है तो कुर्नेलियुस
के भेजे हुए आदमी शमाऊन के घर का पता करके
उस के गेट पर पहुँच गए। 18 आवाज़ दे कर उन्हों ने
पूछा, “क्या शमाऊन जो पतरस कहलाता है आप के
मेहमान हैं?”

19 पतरस अभी रोया पर ग़ौर कर ही रहा था कि
रूह-उल-क़ुद्स उस से हमकलाम हुआ, “शमाऊन,
तीन मर्द तेरी तलाश में हैं। 20 उठ और छत से उतर

---

[d]सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

कर उन के साथ चला जा। मत झिजकना, क्यूँकि मैं
ही ने उन्हें तेरे पास भेजा है।” 21 चुनाँचे पतरस उन
आदमियों के पास गया और उन से कहा, “मैं वही हूँ
जिसे आप ढूँड रहे हैं। आप क्यूँ मेरे पास आए हैं?”
22 उन्हों ने जवाब दिया, “हम सौ फ़ौजियों पर
मुक़र्रर अफ़्सर कुर्नेलियुस के घर से आए हैं। वह
इन्साफ़पर्वर और ख़ुदातरस आदमी हैं। पूरी यहूदी
क़ौम इस की तस्दीक़ कर सकती है। एक मुक़द्दस
फ़रिश्ते ने उन्हें हिदायत दी कि वह आप को अपने
घर बुला कर आप का पैग़ाम सुनें।” 23 यह सुन कर
पतरस उन्हें अन्दर ले गया और उन की मेहमान-
नवाज़ी की। अगले दिन वह उठ कर उन के साथ
रवाना हुआ। याफ़ा के कुछ भाई भी साथ गए। 24 एक
दिन के बाद वह क़ैसरिया पहुँच गया। कुर्नेलियुस
उन के इन्तिज़ार में था। उस ने अपने रिश्तेदारों और
क़रीबी दोस्तों को भी अपने घर जमा कर रखा था।
25 जब पतरस घर में दाख़िल हुआ तो कुर्नेलियुस ने
उस के सामने गिर कर उसे सिज्दा किया। 26 लेकिन
पतरस ने उसे उठा कर कहा, “उठें। मैं भी इन्सान ही
हूँ।” 27 और उस से बातें करते करते वह अन्दर गया
और देखा कि बहुत से लोग जमा हो गए हैं। 28 उस
ने उन से कहा, “आप जानते हैं कि किसी यहूदी के
लिए किसी ग़ैरयहूदी से रिफ़ाक़त रखना या उस के
घर में जाना मना है। लेकिन अल्लाह ने मुझे दिखाया
है कि मैं किसी को भी हराम या नापाक क़रार न दूँ।
29 इस वजह से जब मुझे बुलाया गया तो मैं एतिराज़
किए बग़ैर चला आया। अब मुझे बता दीजिए कि
आप ने मुझे क्यूँ बुलाया है?”
30 कुर्नेलियुस ने जवाब दिया, “चार दिन की बात है
कि मैं इसी वक़्त दोपहर तीन बजे दुआ कर रहा था।
अचानक एक आदमी मेरे सामने आ खड़ा हुआ। उस
के कपड़े चमक रहे थे। 31 उस ने कहा, ‘कुर्नेलियुस,
अल्लाह ने तुम्हारी दुआ सुन ली और तुम्हारी ख़ैरात का
ख़याल किया है। 32 अब किसी को याफ़ा भेज कर
शमाऊन को बुला लो जो पतरस कहलाता है। वह
चमड़ा रंगने वाले शमाऊन का मेहमान है। शमाऊन
का घर समुन्दर के क़रीब वाक़े है।’ 33 यह सुनते ही
मैं ने अपने लोगों को आप को बुलाने के लिए भेज
दिया। अच्छा हुआ कि आप आ गए हैं। अब हम सब
अल्लाह के हुज़ूर हाज़िर हैं ताकि वह कुछ सुनें जो रब
ने आप को हमें बताने को कहा है।”

पतरस की तक़रीर

34 फिर पतरस बोल उठा, “अब मैं समझ गया
हूँ कि अल्लाह वाक़ई जानिबदार नहीं, 35 बल्कि हर
किसी को क़बूल करता है जो उस का ख़ौफ़ मानता
और रास्त काम करता है। 36 आप अल्लाह की उस
ख़ुशख़बरी से वाक़िफ़ हैं जो उस ने इस्राईलियों को
भेजी, यह ख़ुशख़बरी कि ईसा मसीह के वसीले से
सलामती आई है। ईसा मसीह सब का ख़ुदावन्द है।
37 आप को वह कुछ मालूम है जो गलील से शुरू
हो कर यहूदिया के पूरे इलाक़े में हुआ यानी उस
बपतिस्मे के बाद जिस की मुनादी यहया ने की।
38 और आप जानते हैं कि अल्लाह ने ईसा नासरी को
रूह-उल-क़ुद्स और क़ुव्वत से मसह किया और कि
इस पर उस ने जगह जगह जा कर नेक काम किया
और इब्लीस के दबे हुए तमाम लोगों को शिफ़ा दी,
क्यूँकि अल्लाह उस के साथ था। 39 जो कुछ भी उस ने
मुल्क-ए-यहूद और यरूशलम में किया, उस के गवाह
हम ख़ुद हैं। गो लोगों ने उसे लकड़ी पर लटका कर
क़त्ल कर दिया 40 लेकिन अल्लाह ने तीसरे दिन उसे
मुर्दों में से ज़िन्दा किया और उसे लोगों पर ज़ाहिर
किया। 41 वह पूरी क़ौम पर तो ज़ाहिर नहीं हुआ
बल्कि हम पर जिन को अल्लाह ने पहले से चुन लिया
था ताकि हम उस के गवाह हों। हम ने उस के जी
उठने के बाद उस के साथ खाने-पीने की रिफ़ाक़त
भी रखी। 42 उस वक़्त उस ने हमें हुक्म दिया कि
मुनादी करके क़ौम को गवाही दो कि ईसा वही है
जिसे अल्लाह ने ज़िन्दों और मुर्दों पर मुन्सिफ़ मुक़र्रर
किया है। 43 तमाम नबी उस की गवाही देते हैं कि जो
भी उस पर ईमान लाए उसे उस के नाम के वसीले से
गुनाहों की मुआफ़ी मिल जाएगी।”

रूह-उल-क़ुद्स ग़ैरयहूदियों पर नाज़िल होता है

44 पतरस अभी यह बात कर ही रहा था कि
तमाम सुनने वालों पर रूह-उल-क़ूदस नाज़िल हुआ।
45 जो यहूदी ईमानदार पतरस के साथ आए थे वह
हक्का-बक्का रह गए कि रूह-उल-क़ुद्स की नेमत
ग़ैरयहूदियों पर भी उंडेली गई है, 46 क्यूँकि उन्हों
ने देखा कि वह ग़ैरज़बानें बोल रहे और अल्लाह की
तम्जीद कर रहे हैं। तब पतरस ने कहा, 47 "अब कौन
इन को बपतिस्मा लेने से रोक सकता है? इन्हें तो
हमारी तरह रूह-उल-क़ुद्स हासिल हुआ है।" 48 और
उस ने हुक्म दिया कि उन्हें ईसा मसीह के नाम से
बपतिस्मा दिया जाए। इस के बाद उन्हों ने पतरस से
गुज़ारिश की कि कुछ दिन हमारे पास ठहरें।

यरूशलम की जमाअत में पतरस की रिपोर्ट

11 1 यह ख़बर रसूलों और यहूदिया के बाक़ी
भाइयों तक पहुँची कि ग़ैरयहूदियों ने भी
अल्लाह का कलाम क़बूल किया है। 2 चुनाँचे जब
पतरस यरूशलम वापस आया तो यहूदी ईमानदार
उस पर एतिराज़ करने लगे, 3 "आप ग़ैरयहूदियों के
घर में गए और उन के साथ खाना भी खाया।" 4 फिर
पतरस ने उन के सामने तर्तीब से सब कुछ बयान
किया जो हुआ था।

5 "मैं याफ़ा शहर में दुआ कर रहा था कि वज्द की
हालत में आ कर रोया देखी। आसमान से एक चीज़
ज़मीन पर उतर रही है, कतान की बड़ी चादर जैसी जो
अपने चारों कोनों से उतारी जा रही है। उतरती उतरती
वह मुझ तक पहुँच गई। 6 जब मैं ने ग़ौर से देखा तो
पता चला कि उस में तमाम क़िस्म के जानवर हैं :
चार पाँओ वाले, रेंगने वाले और परिन्दे। 7 फिर एक
आवाज़ मुझ से मुख़ातिब हुई, 'पतरस, उठ! कुछ
ज़बह करके खा!' 8 मैं ने एतिराज़ किया, 'हरगिज़
नहीं, ख़ुदावन्द, मैं ने कभी भी हराम या नापाक खाना
नहीं खाया।' 9 लेकिन यह आवाज़ दुबारा मुझ से
हमकलाम हुई, 'जो कुछ अल्लाह ने पाक कर दिया
है उसे नापाक क़रार न दे।' 10 तीन मर्तबा ऐसा हुआ,
फिर चादर को जानवरों समेत वापस आसमान पर
उठा लिया गया। 11 उसी वक़्त तीन आदमी उस घर
के सामने रुक गए जहाँ मैं ठहरा हुआ था। उन्हें
क़ैसरिया से मेरे पास भेजा गया था। 12 रूह-उल-
क़ुद्स ने मुझे बताया कि मैं बग़ैर झिजके उन के साथ
चला जाऊँ। यह मेरे छः भाई भी मेरे साथ गए। हम
रवाना हो कर उस आदमी के घर में दाख़िल हुए जिस
ने मुझे बुलाया था। 13 उस ने हमें बताया कि एक
फ़रिश्ता घर में उस पर ज़ाहिर हुआ था जिस ने उसे
कहा था, 'किसी को याफ़ा भेज कर शमाऊन को बुला
लो जो पतरस कहलाता है। 14 उस के पास वह पैग़ाम
है जिस के ज़रीए तुम अपने पूरे घराने समेत नजात
पाओगे।' 15 जब मैं वहाँ बोलने लगा तो रूह-उल-
क़ुद्स उन पर नाज़िल हुआ, बिलकुल उसी तरह जिस
तरह वह शुरू में हम पर हुआ था। 16 फिर मुझे वह
बात याद आई जो ख़ुदावन्द ने कही थी, 'यहया ने तुम
को पानी से बपतिस्मा दिया, लेकिन तुम्हें रूह-उल-
क़ुद्स से बपतिस्मा दिया जाएगा।' 17 अल्लाह ने उन्हें
वही नेमत दी जो उस ने हमें भी दी थी जो ख़ुदावन्द
ईसा मसीह पर ईमान लाए थे। तो फिर मैं कौन था
कि अल्लाह को रोकता?"

18 पतरस की यह बातें सुन कर यरूशलम के
ईमानदार एतिराज़ करने से बाज़ आए और अल्लाह
की तम्जीद करने लगे। उन्हों ने कहा, "तो इस का
मतलब है कि अल्लाह ने ग़ैरयहूदियों को भी तौबा
करने और अबदी ज़िन्दगी पाने का मौक़ा दिया है।"

अन्ताकिया में जमाअत

19 जो ईमानदार स्तिफ़नुस की मौत के बाद की
ईज़ारसानी से बिखर गए थे वह फ़ेनीके, क़ुब्रुस और
अन्ताकिया तक पहुँच गए। जहाँ भी वह जाते वहाँ
अल्लाह का पैग़ाम सुनाते अलबत्ता सिर्फ़ यहूदियों
को। 20 लेकिन उन में से कुरेन और क़ुब्रुस के कुछ
आदमी अन्ताकिया शहर जा कर यूनानियों को भी
ख़ुदावन्द ईसा के बारे में ख़ुशख़बरी सुनाने लगे।

21 ख़ुदावन्द की क़ुदरत उन के साथ थी, और बहुत
से लोगों ने ईमान ला कर ख़ुदावन्द की तरफ़ रुजू
किया। 22 इस की ख़बर यरूशलम की जमाअत तक
पहुँच गई तो उन्हों ने बर्नबास को अन्ताकिया भेज
दिया। 23 जब वह वहाँ पहुँचा और देखा कि अल्लाह
के फ़ज़्ल से क्या कुछ हुआ है तो वह ख़ुश हुआ।
उस ने उन सब की हौसलाअफ़्ज़ाई की कि वह पूरी
लगन से ख़ुदावन्द के साथ लिपटे रहें। 24 बर्नबास
नेक आदमी था जो रूह-उल-क़ुद्स और ईमान से
मामूर था। चुनाँचे उस वक़्त बहुत से लोग ख़ुदावन्द
की जमाअत में शामिल हुए।

25 इस के बाद वह साऊल की तलाश में तर्सुस चला
गया। 26 जब उसे मिला तो वह उसे अन्ताकिया ले
आया। वहाँ वह दोनों एक पूरे साल तक जमाअत
में शामिल होते और बहुत से लोगों को सिखाते रहे।
अन्ताकिया पहला मक़ाम था जहाँ ईमानदार मसीही
कहलाने लगे।

27 उन दिनों कुछ नबी यरूशलम से आ कर
अन्ताकिया पहुँच गए। 28 एक का नाम अगबुस था।
वह खड़ा हुआ और रूह-उल-क़ुद्स की मारिफ़त
पेशगोई की कि रोम की पूरी मम्लकत में सख़्त काल
पड़ेगा। (यह बात उस वक़्त पूरी हुई जब शहन्शाह
क्लौदियुस की हुकूमत थी।) 29 अगबुस की बात सुन
कर अन्ताकिया के शागिर्दों ने फ़ैसला किया कि हम
में से हर एक अपनी माली गुन्जाइश के मुताबिक़
कुछ दे ताकि उसे यहूदिया में रहने वाले भाइयों की
इम्दाद के लिए भेजा जा सके। 30 उन्हों ने अपने इस
हदिए को बर्नबास और साऊल के सपुर्द करके वहाँ
के बुज़ुर्गों को भेज दिया।

मज़ीद ईज़ारसानी

12 1 उन दिनों में बादशाह हेरोदेस अग्रिप्पा
जमाअत के कुछ ईमानदारों को गिरिफ़्तार
करके उन से बदसुलूकी करने लगा। 2 इस सिलसिले
में उस ने याक़ूब रसूल (यूहन्ना के भाई) को तलवार
से क़त्ल करवाया। 3 जब उस ने देखा कि यह हरकत
यहूदियों को पसन्द आई है तो उस ने पतरस को भी
गिरिफ़्तार कर लिया। उस वक़्त बेख़मीरी रोटी की
ईद मनाई जा रही थी। 4 उस ने उसे जेल में डाल कर
चार दस्तों के हवाले कर दिया कि उस की पहरादारी
करें (हर दस्ते में चार फ़ौजी थे)। ख़याल था कि ईद
के बाद ही पतरस को अवाम के सामने खड़ा करके
उस की अदालत की जाए। 5 यूँ पतरस क़ैदख़ाने में
रहा। लेकिन ईमानदारों की जमाअत लगातार उस के
लिए दुआ करती रही।

पतरस की रिहाई

6 फिर अदालत का दिन क़रीब आ गया। पतरस
रात के वक़्त सो रहा था। अगले दिन हेरोदेस उसे पेश
करना चाहता था। पतरस दो फ़ौजियों के दरमियान
लेटा हुआ था जो दो ज़न्जीरों से उस के साथ बंधे
हुए थे। दीगर फ़ौजी दरवाज़े के सामने पहरा दे रहे
थे। 7 अचानक एक तेज़ रौशनी कोठड़ी में चमक
उठी और रब का एक फ़रिश्ता पतरस के सामने आ
खड़ा हुआ। उस ने उस के पहलू को झटका दे कर
उसे जगा दिया और कहा, “जल्दी करो! उठो!” तब
पतरस की कलाइयों पर की ज़न्जीरें गिर गईं। 8 फिर
फ़रिश्ते ने उसे बताया, “अपने कपड़े और जूते पहन
लो।” पतरस ने ऐसा ही किया। फ़रिश्ते ने कहा, “अब
अपनी चादर ओढ़ कर मेरे पीछे हो लो।” 9 चुनाँचे
पतरस कोठड़ी से निकल कर फ़रिश्ते के पीछे हो
लिया अगरचे उसे अब तक समझ नहीं आई थी कि
जो कुछ हो रहा है हक़ीक़ी है। उस का ख़याल था
कि मैं रोया देख रहा हूँ। 10 दोनों पहले पहरे से गुज़र
गए, फिर दूसरे से और यूँ शहर में पहुँचाने वाले लोहे
के गेट के पास आए। यह ख़ुद-ब-ख़ुद खुल गया और
वह दोनों निकल कर एक गली में चलने लगे। चलते
चलते फ़रिश्ते ने अचानक पतरस को छोड़ दिया।

11 फिर पतरस होश में आ गया। उस ने कहा,
“वाक़ई, ख़ुदावन्द ने अपने फ़रिश्ते को मेरे पास भेज
कर मुझे हेरोदेस के हाथ से बचाया है। अब यहूदी
क़ौम की तवक़्क़ो पूरी नहीं होगी।”

12 जब यह बात उसे समझ आई तो वह यूहन्ना
मर्क़ुस की माँ मरियम के घर चला गया। वहाँ बहुत
से अफ़राद जमा हो कर दुआ कर रहे थे। 13 पतरस
ने गेट खटखटाया तो एक नौकरानी देखने के लिए
आई। उस का नाम रुदी था। 14 जब उस ने पतरस
की आवाज़ पहचान ली तो वह ख़ुशी के मारे गेट
को खोलने के बजाय दौड़ कर अन्दर चली गई और
बताया, "पतरस गेट पर खड़े हैं!" 15 हाज़िरीन ने
कहा, "होश में आओ!" लेकिन वह अपनी बात पर
अड़ी रही। फिर उन्हों ने कहा, "यह उस का फ़रिश्ता
होगा।"

16 अब तक पतरस बाहर खड़ा खटखटा रहा था।
चुनाँचे उन्हों ने गेट को खोल दिया। पतरस को देख
कर वह हैरान रह गए। 17 लेकिन उस ने अपने हाथ
से ख़ामोश रहने का इशारा किया और उन्हें सारा
वाक़िआ सुनाया कि ख़ुदावन्द मुझे किस तरह जेल
से निकाल लाया है। "याक़ूब और बाक़ी भाइयों को
भी यह बताना," यह कह कर वह कहीं और चला
गया।

18 अगली सुब्ह जेल के फ़ौजियों में बड़ी हलचल
मच गई कि पतरस का क्या हुआ है। 19 जब हेरोदेस
ने उसे ढूँडा और न पाया तो उस ने पहरेदारों का
बयान ले कर उन्हें सज़ा-ए-मौत दे दी।

इस के बाद वह यहूदिया से चला गया और
क़ैसरिया में रहने लगा।

हेरोदेस अग्रिप्पा की मौत

20 उस वक़्त वह सूर और सैदा के बाशिन्दों से
निहायत नाराज़ था। इस लिए दोनों शहरों के नुमाइन्दे
मिल कर सुलह की दरख़्वास्त करने के लिए उस के
पास आए। वजह यह थी कि उन की ख़ुराक हेरोदेस
के मुल्क से हासिल होती थी। उन्हों ने बादशाह के
महल के इंचार्ज ब्लस्तुस को इस पर आमादा किया
कि वह उन की मदद करे 21 और बादशाह से मिलने
का दिन मुक़र्रर किया। जब वह दिन आया तो हेरोदेस
अपना शाही लिबास पहन कर तख़्त पर बैठ गया
और एक अलानिया तक़रीर की। 22 अवाम ने नारे
लगा लगा कर पुकारा, "यह अल्लाह की आवाज़ है,
इन्सान की नहीं।" 23 वह अभी यह कह रहे थे कि
रब के फ़रिश्ते ने हेरोदेस को मारा, क्यूँकि उस ने
लोगों की परस्तिश क़बूल करके अल्लाह को जलाल
नहीं दिया था। वह बीमार हुआ और कीड़ों ने उस के
जिस्म को खा खा कर ख़त्म कर दिया। इसी हालत
में वह मर गया।

24 लेकिन अल्लाह का कलाम बढ़ता और फैलता
गया।

25 इतने में बर्नबास और साऊल अन्ताकिया का
हदिया ले कर यरूशलम पहुँच चुके थे। उन्हों ने पैसे
वहाँ के बुज़ुर्गों के सपुर्द कर दिए और फिर यूहन्ना
मर्क़ुस को साथ ले कर वापस चले गए।

बर्नबास और साऊल को तब्लीग़ी ख़िदमत के लिए चुना जाता है

13 1 अन्ताकिया की जमाअत में कई नबी
और उस्ताद थे : बर्नबास, शमाऊन जो
काला कहलाता था, लूकियुस कुरेनी, मनाहेम जिस
ने बादशाह हेरोदेस अनतिपास के साथ परवरिश पाई
थी और साऊल। 2 एक दिन जब वह रोज़ा रख कर
ख़ुदावन्द की परस्तिश कर रहे थे तो रूह-उल-क़ुद्स
उन से हमकलाम हुआ, "बर्नबास और साऊल को
उस ख़ास काम के लिए अलग करो जिस के लिए मैं
ने उन्हें बुलाया है।"

3 इस पर उन्हों ने मज़ीद रोज़े रखे और दुआ की,
फिर उन पर अपने हाथ रख कर उन्हें रुख़्सत कर
दिया।

क़ुब्रुस में

4 यूँ बर्नबास और साऊल को रूह-उल-क़ुद्स
की तरफ़ से भेजा गया। पहले वह साहिली शहर
सलूकिया गए और वहाँ जहाज़ में बैठ कर जज़ीरा-ए-
क़ुब्रुस के लिए रवाना हुए। 5 जब वह सलमीस शहर
पहुँचे तो उन्हों ने यहूदियों के इबादतख़ानों में जा कर

अल्लाह का कलाम सुनाया। यूहन्ना मर्क़ुस मददगार के
तौर पर उन के साथ था।
6 पूरे जज़ीरे में से सफ़र करते करते वह पाफ़ुस शहर
तक पहुँच गए। वहाँ उन की मुलाक़ात एक यहूदी
जादूगर से हुई जिस का नाम बरईसा था। वह झूटा
नबी था 7 और जज़ीरे के गवर्नर सिरगियुस पौलुस
की ख़िदमत के लिए हाज़िर रहता था। सिरगियुस
एक समझदार आदमी था। उस ने बर्नबास और
साऊल को अपने पास बुला लिया क्यूँकि वह अल्लाह
का कलाम सुनने का ख़्वाहिशमन्द था। 8 लेकिन
जादूगर इलीमास (बरईसा का दूसरा नाम) ने उन की
मुख़ालफ़त करके गवर्नर को ईमान से बाज़ रखने की
कोशिश की। 9 फिर साऊल जो पौलुस भी कहलाता
है रूह-उल-क़ुद्स से मामूर हुआ और ग़ौर से उस
की तरफ़ देखने लगा। 10 उस ने कहा, "इब्लीस के
फ़र्ज़न्द! तू हर क़िस्म के धोके और बदी से भरा हुआ
है और हर इन्साफ़ का दुश्मन है। क्या तू ख़ुदावन्द
की सीधी राहों को बिगाड़ने की कोशिश से बाज़ न
आएगा? 11 अब ख़ुदावन्द तुझे सज़ा देगा। तू अंधा हो
कर कुछ देर के लिए सूरज की रौशनी नहीं देखेगा।"
उसी लम्हे धुन्द और तारीकी जादूगर पर छा गई
और वह टटोल टटोल कर किसी को तलाश करने
लगा जो उस की राहनुमाई करे। 12 यह माजरा देख
कर गवर्नर ईमान लाया, क्यूँकि ख़ुदावन्द की तालीम
ने उसे हैरतज़दा कर दिया था।

पिसिदिया के शहर अन्ताकिया में मुनादी

13 फिर पौलुस और उस के साथी जहाज़ पर सवार
हुए और पाफ़ुस से रवाना हो कर पिर्गा शहर पहुँच
गए जो पम्फ़ीलिया में है। वहाँ यूहन्ना मर्क़ुस उन्हें
छोड़ कर यरूशलम वापस चला गया। 14 लेकिन
पौलुस और बर्नबास आगे निकल कर पिसिदिया में
वाक़े शहर अन्ताकिया पहुँचे जहाँ वह सबत के दिन
यहूदी इबादतख़ाने में जा कर बैठ गए। 15 तौरेत और
नबियों के सहीफ़ों की तिलावत के बाद इबादतख़ाने
के राहनुमाओं ने उन्हें कहला भेजा, "भाइयो, अगर
आप के पास लोगों के लिए कोई नसीहत की बात
है तो उसे पेश करें।" 16 पौलुस खड़ा हुआ और हाथ
का इशारा करके बोलने लगा,
"इस्राईल के मर्दो और ख़ुदातरस ग़ैरयहूदियो, मेरी
बात सुनें! 17 इस क़ौम इस्राईल के ख़ुदा ने हमारे
बापदादा को चुन कर उन्हें मिस्र में ही ताक़तवर
बना दिया जहाँ वह अजनबी थे। फिर वह उन्हें बड़ी
क़ुदरत के साथ वहाँ से निकाल लाया। 18 जब वह
रेगिस्तान में फिर रहे थे तो वह चालीस साल तक
उन्हें बर्दाश्त करता रहा। 19 इस के बाद उस ने मुल्क-
ए-कनआन में सात क़ौमों को तबाह करके उन की
ज़मीन इस्राईल को विरसे में दी। 20 इतने में तक़रीबन
450 साल गुज़र गए।
यशूअ की मौत पर अल्लाह ने उन्हें समूएल नबी के
दौर तक क़ाज़ी दिए ताकि उन की राहनुमाई करें।
21 फिर इन से तंग आ कर उन्हों ने बादशाह माँगा,
इस लिए उस ने उन्हें साऊल बिन क़ीस दे दिया जो
बिनयमीन के क़बीले का था। साऊल चालीस साल
तक उन का बादशाह रहा, 22 फिर अल्लाह ने उसे हटा
कर दाऊद को तख़्त पर बिठा दिया। दाऊद वही
आदमी है जिस के बारे में अल्लाह ने गवाही दी, 'मैं
ने दाऊद बिन यस्सी में एक ऐसा आदमी पाया है
जो मेरी सोच रखता है। जो कुछ भी मैं चाहता हूँ
उसे वह करेगा।' 23 इसी बादशाह की औलाद में
से ईसा निकला जिस का वादा अल्लाह कर चुका
था और जिसे उस ने इस्राईल को नजात देने के
लिए भेज दिया। 24 उस के आने से पेशतर यहया
बपतिस्मा देने वाले ने एलान किया कि इस्राईल की
पूरी क़ौम को तौबा करके बपतिस्मा लेने की ज़रूरत
है। 25 अपनी ख़िदमत के इख़तिताम पर उस ने कहा,
'तुम्हारे नज़्दीक मैं कौन हूँ? मैं वह नहीं हूँ जो तुम
समझते हो। लेकिन मेरे बाद वह आ रहा है जिस के
जूतों के तस्मे मैं खोलने के लाइक़ भी नहीं हूँ।'
26 भाइयो, इब्राहीम के फ़र्ज़न्दो और ख़ुदा का ख़ौफ़
मानने वाले ग़ैरयहूदियो! नजात का पैग़ाम हमें ही भेज
दिया गया है। 27 यरूशलम के रहने वालों और उन

के राहनुमाओं ने ईसा को न पहचाना बल्कि उसे
मुजरिम ठहराया। यूँ उन की मारिफ़त नबियों की
वह पेशगोइयाँ पूरी हुईं जिन की तिलावत हर सबत
को की जाती है। 28 और अगरचे उन्हें सज़ा-ए-मौत
देने की वजह न मिली तो भी उन्हों ने पीलातुस से
गुज़ारिश की कि वह उसे सज़ा-ए-मौत दे। 29 जब उन
की मारिफ़त ईसा के बारे में तमाम पेशगोइयाँ पूरी हुईं
तो उन्हों ने उसे सलीब से उतार कर क़ब्र में रख दिया।
30 लेकिन अल्लाह ने उसे मुर्दों में से ज़िन्दा कर दिया
31 और वह बहुत दिनों तक अपने उन पैरोकारों पर
ज़ाहिर होता रहा जो उस के साथ गलील से यरूशलम
आए थे। यह अब हमारी क़ौम के सामने उस के गवाह
हैं। 32 और अब हम आप को यह ख़ुशख़बरी सुनाने
आए हैं कि जो वादा अल्लाह ने हमारे बापदादा के
साथ किया, 33 उसे उस ने ईसा को ज़िन्दा करके
हमारे लिए जो उन की औलाद हैं पूरा कर दिया है।
यूँ दूसरे ज़बूर में लिखा है, 'तू मेरा फ़र्ज़न्द है, आज मैं
तेरा बाप बन गया हूँ।' 34 इस हक़ीक़त का ज़िक्र भी
कलाम-ए-मुक़द्दस में किया गया है कि अल्लाह उसे
मुर्दों में से ज़िन्दा करके कभी गलने सड़ने नहीं देगा
: 'मैं तुम्हें उन मुक़द्दस और अनमिट मेहरबानियों से
नवाज़ूँगा जिन का वादा दाऊद से किया था।' 35 यह
बात एक और हवाले में पेश की गई है, 'तू अपने
मुक़द्दस को गलने सड़ने की नौबत तक पहुँचने नहीं
देगा।' 36 इस हवाले का ताल्लुक़ दाऊद के साथ नहीं
है, क्यूँकि दाऊद अपने ज़माने में अल्लाह की मर्ज़ी की
ख़िदमत करने के बाद फ़ौत हो कर अपने बापदादा
से जा मिला। उस की लाश गल कर ख़त्म हो गई।
37 बल्कि यह हवाला किसी और का ज़िक्र करता है,
उस का जिसे अल्लाह ने ज़िन्दा कर दिया और जिस का
जिस्म गलने सड़ने से दोचार न हुआ। 38 भाइयो, अब
मेरी यह बात जान लें, हम इस की मुनादी करने आए
हैं कि आप को इस शख़्स ईसा के वसीले से अपने
गुनाहों की मुआफ़ी मिलती है। मूसा की शरीअत आप
को किसी तरह भी रास्तबाज़ क़रार नहीं दे सकती
थी, 39 लेकिन अब जो भी ईसा पर ईमान लाए उसे
हर लिहाज़ से रास्तबाज़ क़रार दिया जाता है। 40 इस
लिए ख़बरदार! ऐसा न हो कि वह बात आप पर पूरी
उतरे जो नबियों के सहीफ़ों में लिखी है,

41 'ग़ौर करो, मज़ाक़ उड़ाने वालो!
हैरतज़दा हो कर हलाक हो जाओ।
क्यूँकि मैं तुम्हारे जीते जी एक ऐसा काम करूँगा
जिस की जब ख़बर सुनोगे
तो तुम्हें यक़ीन नहीं आएगा'।"

42 जब पौलुस और बर्नबास इबादतख़ाने से
निकलने लगे तो लोगों ने उन से गुज़ारिश की, "अगले
सबत हमें इन बातों के बारे में मज़ीद कुछ बताएँ।"
43 इबादत के बाद बहुत से यहूदी और यहूदी ईमान के
नौमुरीद पौलुस और बर्नबास के पीछे हो लिए, और
दोनों ने उन से बात करके उन की हौसलाअफ़ज़ाई
की कि अल्लाह के फ़ज़्ल पर क़ाइम रहें।

44 अगले सबत के दिन तक़रीबन तमाम शहर
ख़ुदावन्द का कलाम सुनने को जमा हुआ। 45 लेकिन
जब यहूदियों ने हुजूम को देखा तो वह हसद से
जल गए और पौलुस की बातों की तरदीद करके
कुफ़्र बकने लगे। 46 इस पर पौलुस और बर्नबास
ने उन से साफ़ साफ़ कह दिया, "लाज़िम था कि
अल्लाह का कलाम पहले आप को सुनाया जाए।
लेकिन चूँकि आप उसे मुस्तरद करके अपने आप को
अबदी ज़िन्दगी के लाइक़ नहीं समझते इस लिए हम
अब ग़ैरयहूदियों की तरफ़ रुख़ करते हैं। 47 क्यूँकि
ख़ुदावन्द ने हमें यही हुक्म दिया जब उस ने फ़रमाया,
'मैं ने तुझे दीगर अक़्वाम की रौशनी बना दी है ताकि
तू मेरी नजात को दुनिया की इन्तिहा तक पहुँचाए'।"

48 यह सुन कर ग़ैरयहूदी ख़ुश हुए और ख़ुदावन्द
के कलाम की तम्जीद करने लगे। और जितने अबदी
ज़िन्दगी के लिए मुक़र्रर किए गए थे वह ईमान लाए।

49 यूँ ख़ुदावन्द का कलाम पूरे इलाक़े में फैल गया।
50 फिर यहूदियों ने शहर के लीडरों और यहूदी ईमान
रखने वाली कुछ बारसूख ग़ैरयहूदी ख़वातीन को
उकसा कर लोगों को पौलुस और बर्नबास को सताने
पर उभारा। आख़िरकार उन्हें शहर की सरहद्दों से

निकाल दिया गया। 51 इस पर वह उन के ख़िलाफ़
गवाही के तौर पर अपने जूतों से गर्द झाड़कर
आगे बढ़े और इकुनियुम शहर पहुँच गए। 52 और
अन्ताकिया के शागिर्द ख़ुशी और रूह-उल-क़ुद्स से
भरे रहे।

इकुनियुम में

14 1 इकुनियुम में पौलुस और बर्नबास यहूदी
इबादतख़ाने में जा कर इतने इख़तियार से
बोले कि यहूदियों और ग़ैरयहूदियों की बड़ी तादाद
ईमान ले आई। 2 लेकिन जिन यहूदियों ने ईमान लाने
से इन्कार किया उन्हों ने ग़ैरयहूदियों को उकसा
कर भाइयों के बारे में उन के ख़यालात ख़राब कर
दिए। 3 तो भी रसूल काफ़ी देर तक वहाँ ठहरे। उन्हों
ने दिलेरी से ख़ुदावन्द के बारे में तालीम दी और
ख़ुदावन्द ने अपने फ़ज़्ल के पैग़ाम की तस्दीक़ की।
उस ने उन के हाथों इलाही निशान और मोजिज़े रूनुमा
होने दिए। 4 लेकिन शहर में आबाद लोग दो गुरोहों
में बट गए। कुछ यहूदियों के हक़ में थे और कुछ
रसूलों के हक़ में।

5 फिर कुछ ग़ैरयहूदियों और यहूदियों में जोश आ
गया। उन्हों ने अपने लीडरों समेत फ़ैसला किया कि
हम पौलुस और बर्नबास की तज़्लील करके उन्हें
संगसार करेंगे। 6 लेकिन जब रसूलों को पता चला तो
वह हिज्रत करके लुकाउनिया के शहरों लुस्तरा, दिर्बे
और इर्दगिर्द के इलाक़े में 7 अल्लाह की ख़ुशख़बरी
सुनाते रहे।

लुस्तरा और दिर्बे

8 लुस्तरा में पौलुस और बर्नबास की मुलाक़ात एक
आदमी से हुई जिस के पाँओ में ताक़त नहीं थी। वह
पैदाइश ही से लंगड़ा था और कभी भी चल फिर न
सका था। वह वहाँ बैठा 9 उन की बातें सुन रहा था
कि पौलुस ने ग़ौर से उस की तरफ़ देखा। उस ने जान
लिया कि उस आदमी में रिहाई पाने के लाइक़ ईमान
है। 10 इस लिए वह ऊँची आवाज़ से बोला, "अपने
पाँओ पर खड़े हो जाएँ!" वह उछल कर खड़ा हुआ
और चलने फिरने लगा। 11 पौलुस का यह काम देख
कर हुजूम अपनी मक़ामी ज़बान में चिल्ला उठा, "इन
आदमियों की शक्ल में देवता हमारे पास उतर आए
हैं।" 12 उन्हों ने बर्नबास को यूनानी देवता ज़ियूस
क़रार दिया और पौलुस को देवता हिर्मेस, क्यूँकि
कलाम सुनाने की ख़िदमत ज़्यादातर वह अन्जाम
देता था। 13 इस पर शहर से बाहर वाक़े ज़ियूस के
मन्दिर का पुजारी शहर के दरवाज़े पर बैल और फूलों
के हार ले आया और हुजूम के साथ क़ुर्बानियाँ चढ़ाने
की तय्यारियाँ करने लगा।

14 यह सुन कर बर्नबास और साऊल अपने कपड़ों
को फाड़ कर हुजूम में जा घुसे और चिल्लाने लगे,
15 "मर्दो, यह आप क्या कर रहे हैं? हम भी आप जैसे
इन्सान हैं। हम तो आप को अल्लाह की यह ख़ुशख़बरी
सुनाने आए हैं कि आप इन बेकार चीज़ों को छोड़ कर
ज़िन्दा ख़ुदा की तरफ़ रुजू फ़रमाएँ जिस ने आसमान-
ओ-ज़मीन, समुन्दर और जो कुछ उन में है पैदा किया
है। 16 माज़ी में उस ने तमाम ग़ैरयहूदी क़ौमों को खुला
छोड़ दिया था कि वह अपनी अपनी राह पर चलें।
17 तो भी उस ने ऐसी चीज़ें आप के पास रहने दी
हैं जो उस की गवाही देती हैं। उस की मेहरबानी
इस से ज़ाहिर होती है कि वह आप को बारिश भेज
कर हर मौसम की फ़सलें मुहय्या करता है और आप
सेर हो कर ख़ुशी से भर जाते हैं।" 18 इन अल्फ़ाज़
के बावुजूद पौलुस और बर्नबास ने बड़ी मुश्किल से
हुजूम को उन्हें क़ुर्बानियाँ चढ़ाने से रोका।

19 फिर कुछ यहूदी पिसिदिया के अन्ताकिया और
इकुनियुम से वहाँ आए और हुजूम को अपनी तरफ़
माइल किया। उन्हों ने पौलुस को संगसार किया और
शहर से बाहर घसीट कर ले गए। उन का ख़याल था
कि वह मर गया है, 20 लेकिन जब शागिर्द उस के
गिर्द जमा हुए तो वह उठ कर शहर की तरफ़ वापस
चल पड़ा। अगले दिन वह बर्नबास समेत दिर्बे चला
गया।

शाम के अन्ताकिया में वापसी

21 दिर्बे में उन्हों ने अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुना कर
बहुत से शागिर्द बनाए। फिर वह मुड़ कर लुस्तरा,
इकुनियुम और पिसिदिया के अन्ताकिया वापस
आए। 22 हर जगह उन्हों ने शागिर्दों के दिल मज़बूत
करके उन की हौसलाअफ़्ज़ाई की कि वह ईमान
में साबितक़दम रहें। उन्हों ने कहा, "लाज़िम है कि
हम बहुत सी मुसीबतों में से गुज़र कर अल्लाह की
बादशाही में दाख़िल हों।" 23 पौलुस और बर्नबास ने
हर जमाअत में बुज़ुर्ग भी मुक़र्रर किए। उन्हों ने रोज़े
रख कर दुआ की और उन्हें उस ख़ुदावन्द के सपुर्द
किया जिस पर वह ईमान लाए थे।

24 यूँ पिसिदिया के इलाक़े में से सफ़र करते करते
वह पम्फ़ीलिया पहुँचे। 25 उन्हों ने पिर्गा में कलाम-ए-
मुक़द्दस सुनाया और फिर उतर कर अत्तलिया पहुँचे।
26 वहाँ से वह जहाज़ में बैठ कर शाम के शहर
अन्ताकिया के लिए रवाना हुए, उस शहर के लिए
जहाँ ईमानदारों ने उन्हें इस तब्लीग़ी सफ़र के लिए
अल्लाह के फ़ज़्ल के सपुर्द किया था। यूँ उन्हों ने
अपनी इस ख़िदमत को पूरा किया।

27 अन्ताकिया पहुँच कर उन्हों ने ईमानदारों को
जमा करके उन तमाम कामों का बयान किया जो
अल्लाह ने उन के वसीले से किए थे। साथ साथ उन्हों
ने यह भी बताया कि अल्लाह ने किस तरह ग़ैरयहूदियों
के लिए भी ईमान का दरवाज़ा खोल दिया है। 28 और
वह काफ़ी देर तक वहाँ के शागिर्दों के पास ठहरे रहे।

यरूशलम में मुशावरती इजतिमा

15 1 उस वक़्त कुछ आदमी यहूदिया से आ
कर शाम के अन्ताकिया में भाइयों को यह
तालीम देने लगे, "लाज़िम है कि आप का मूसा की
शरीअत के मुताबिक़ ख़तना किया जाए, वर्ना आप
नजात नहीं पा सकेंगे।" 2 इस से उन के और बर्नबास
और पौलुस के दरमियान नाइत्तिफ़ाक़ी पैदा हो गई
और दोनों उन के साथ ख़ूब बह्स-मुबाहसा करने
लगे। आख़िरकार जमाअत ने पौलुस और बर्नबास
को मुक़र्रर किया कि वह चन्द एक और मक़ामी
ईमानदारों के साथ यरूशलम जाएँ और वहाँ के
रसूलों और बुज़ुर्गों को यह मुआमला पेश करें।

3 चुनाँचे जमाअत ने उन्हें रवाना किया और वह
फ़ेनीके और सामरिया में से गुज़रे। रास्ते में उन्हों
ने मक़ामी ईमानदारों को तफ़्सील से बताया कि
ग़ैरयहूदी किस तरह ख़ुदावन्द की तरफ़ रुजू ला रहे
हैं। यह सुन कर तमाम भाई निहायत ख़ुश हुए। 4 जब
वह यरूशलम पहुँच गए तो जमाअत ने अपने रसूलों
और बुज़ुर्गों समेत उन का इस्तिक़्बाल किया। फिर
पौलुस और बर्नबास ने सब कुछ बयान किया जो उन
की मारिफ़त हुआ था। 5 यह सुन कर कुछ ईमानदार
खड़े हुए जो फ़रीसी फ़िर्क़े में से थे। उन्हों ने कहा,
"लाज़िम है कि ग़ैरयहूदियों का ख़तना किया जाए
और उन्हें हुक्म दिया जाए कि वह मूसा की शरीअत
के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारें।"

6 रसूल और बुज़ुर्ग इस मुआमले पर ग़ौर करने के
लिए जमा हुए। 7 बहुत बह्स-मुबाहसा के बाद पतरस
खड़ा हुआ और कहा, "भाइयो, आप जानते हैं कि
अल्लाह ने बहुत देर हुई आप में से मुझे चुन लिया कि
ग़ैरयहूदियों को अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाऊँ ताकि
वह ईमान लाएँ। 8 और अल्लाह ने जो दिलों को जानता
है इस बात की तस्दीक़ की है, क्यूँकि उस ने उन्हें
वही रूह-उल-क़ुद्स बख़्शा है जो उस ने हमें भी दिया
था। 9 उस ने हम में और उन में कोई भी फ़र्क़ न रखा
बल्कि ईमान से उन के दिलों को भी पाक कर दिया।
10 चुनाँचे आप अल्लाह को इस में क्यूँ आज़मा रहे
हैं कि आप ग़ैरयहूदी शागिर्दों की गर्दन पर एक ऐसा
जूआ रखना चाहते हैं जो न हम और न हमारे बापदादा
उठा सकते थे? 11 देखें, हम तो ईमान रखते हैं कि हम
सब एक ही तरीक़े यानी ख़ुदावन्द ईसा के फ़ज़्ल ही
से नजात पाते हैं।"

12 तमाम लोग चुप रहे तो पौलुस और बर्नबास उन्हें
उन इलाही निशानों और मोजिज़ों के बारे में बताने
लगे जो अल्लाह ने उन की मारिफ़त ग़ैरयहूदियों के

दरमियान किए थे। 13 जब उन की बात ख़त्म हुई तो
याक़ूब ने कहा, “भाइयो, मेरी बात सुनें! 14 शमाऊन
ने बयान किया है कि अल्लाह ने किस तरह पहला
क़दम उठा कर ग़ैरयहूदियों पर अपनी फ़िक्रमन्दी का
इज़हार किया और उन में से अपने लिए एक क़ौम
चुन ली। 15 और यह बात नबियों की पेशगोइयों के
भी मुताबिक़ है। चुनाँचे लिखा है,

16 ‘इस के बाद मैं वापस आ कर
दाऊद के तबाहशुदा घर को नए सिरे से तामीर
करूँगा,
मैं उस के खंडरात दुबारा तामीर करके बहाल
करूँगा
17 ताकि लोगों का बचा-खुचा हिस्सा और वह
तमाम क़ौमें
मुझे ढूँडें जिन पर मेरे नाम का ठप्पा लगा है।
यह रब का फ़रमान है, और वह यह करेगा भी’
18 बल्कि यह उसे अज़ल से मालूम है।

19 यही पेश-ए-नज़र रख कर मेरी राय यह है कि हम
उन ग़ैरयहूदियों को जो अल्लाह की तरफ़ रुजू कर रहे
हैं ग़ैरज़रूरी तक्लीफ़ न दें। 20 इस के बजाय बेहतर
यह है कि हम उन्हें लिख कर हिदायत दें कि वह इन
चीज़ों से पर्हेज़ करें : ऐसे खानों से जो बुतों को पेश
किए जाने से नापाक हैं, ज़िनाकारी से, ऐसे जानवरों
का गोश्त खाने से जिन्हें गला घूँट कर मार दिया गया
हो और ख़ून खाने से। 21 क्यूँकि मूसवी शरीअत की
मुनादी करने वाले कई नस्लों से हर शहर में रह रहे
हैं। जिस शहर में भी जाएँ हर सबत के दिन शरीअत
की तिलावत की जाती है।”

ग़ैरयहूदी ईमानदारों के नाम ख़त

22 फिर रसूलों और बुज़ुर्गों ने पूरी जमाअत समेत
फ़ैसला किया कि हम अपने में से कुछ आदमी चुन
कर पौलुस और बर्नबास के हमराह शाम के शहर
अन्ताकिया भेज दें। दो को चुना गया जो भाइयों में
राहनुमा थे, यहूदाह बर्सब्बा और सीलास। 23 उन के
हाथ उन्हों ने यह ख़त भेजा,

“यरूशलम के रसूलों और बुज़ुर्गों की तरफ़ से जो
आप के भाई हैं।

अज़ीज़ ग़ैरयहूदी भाइयो जो अन्ताकिया, शाम और
किलिकिया में रहते हैं, अस्सलामु अलैकुम!

24 सुना है कि हम में से कुछ लोगों ने आप के पास
आ कर आप को परेशान करके बेचैन कर दिया है,
हालाँकि हम ने उन्हें नहीं भेजा था। 25 इस लिए हम
सब इस पर मुत्तफ़िक़ हुए कि कुछ आदमियों को
चुन कर अपने प्यारे भाइयों बर्नबास और पौलुस के
हमराह आप के पास भेजें। 26 बर्नबास और पौलुस
ऐसे लोग हैं जिन्हों ने हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह की
ख़ातिर अपनी जान ख़तरे में डाल दी है। 27 उन के
साथी यहूदाह और सीलास हैं जिन को हम ने इस
लिए भेजा कि वह ज़बानी भी उन बातों की तस्दीक़
करें जो हम ने लिखी हैं।

28 हम और रूह-उल-क़ुद्स इस पर मुत्तफ़िक़ हुए हैं
कि आप पर सिवाए इन ज़रूरी बातों के कोई बोझ न
डालें : 29 बुतों को पेश किया गया खाना मत खाना,
ख़ून मत खाना, ऐसे जानवरों का गोश्त मत खाना
जो गला घूँट कर मार दिए गए हों। इस के इलावा
ज़िनाकारी न करें। इन चीज़ों से बाज़ रहेंगे तो अच्छा
करेंगे। ख़ुदा हाफ़िज़।”

30 पौलुस, बर्नबास और उन के साथी रुख़्सत हो
कर अन्ताकिया चले गए। वहाँ पहुँच कर उन्हों ने
जमाअत इकट्ठी करके उसे ख़त दे दिया। 31 उसे पढ़
कर ईमानदार उस के हौसलाअफ़्ज़ा पैग़ाम पर ख़ुश
हुए। 32 यहूदाह और सीलास ने भी जो ख़ुद नबी थे
भाइयों की हौसलाअफ़्ज़ाई और मज़बूती के लिए
काफ़ी बातें कीं। 33 वह कुछ देर के लिए वहाँ ठहरे,
फिर मक़ामी भाइयों ने उन्हें सलामती से अलविदा
कहा ताकि वह भेजने वालों के पास वापस जा सकें।
34 [लेकिन सीलास को वहाँ ठहरना अच्छा लगा।]

35 पौलुस और बर्नबास ख़ुद कुछ और देर
अन्ताकिया में रहे। वहाँ वह बहुत से और लोगों के
साथ ख़ुदावन्द के कलाम की तालीम देते और उस
की मुनादी करते रहे।

पौलुस और बर्नबास जुदा हो जाते हैं

36 कुछ दिनों के बाद पौलुस ने बर्नबास से कहा,
"आओ, हम मुड़ कर उन तमाम शहरों में जाएँ जहाँ
हम ने ख़ुदावन्द के कलाम की मुनादी की है और वहाँ
के भाइयों से मुलाक़ात करके उन का हाल मालूम
करें।" 37 बर्नबास मुत्तफ़िक़ हो कर यूहन्ना मर्क़ुस को
साथ ले जाना चाहता था, 38 लेकिन पौलुस ने इसरार
किया कि वह साथ न जाए, क्यूँकि यूहन्ना मर्क़ुस
पहले दौरे के दौरान ही पम्फ़ीलिया में उन्हें छोड़ कर
उन के साथ ख़िदमत करने से बाज़ आया था। 39 इस
से उन में इतना सख़्त इख़तिलाफ़ पैदा हुआ कि वह
एक दूसरे से जुदा हो गए। बर्नबास यूहन्ना मर्क़ुस को
साथ ले कर जहाज़ में बैठ गया और क़ुब्रुस चला
गया, 40 जबकि पौलुस ने सीलास को ख़िदमत के
लिए चुन लिया। मक़ामी भाइयों ने उन्हें ख़ुदावन्द
के फ़ज़्ल के सपुर्द किया और वह रवाना हुए। 41 यूँ
पौलुस जमाअतों को मज़बूत करते करते शाम और
किलिकिया में से गुज़रा।

तीमुथियुस का चुनाओ

16 1 चलते चलते वह दिर्बे पहुँचा, फिर
लुस्तरा। वहाँ एक शागिर्द बनाम
तीमुथियुस रहता था। उस की यहूदी माँ ईमान लाई
थी जबकि बाप यूनानी था। 2 लुस्तरा और इकुनियुम
के भाइयों ने उस की अच्छी रिपोर्ट दी, 3 इस लिए
पौलुस उसे सफ़र पर अपने साथ ले जाना चाहता
था। उस इलाक़े के यहूदियों का लिहाज़ करके उस
ने तीमुथियुस का ख़तना करवाया, क्यूँकि सब लोग
इस से वाक़िफ़ थे कि उस का बाप यूनानी है। 4 फिर
शहर-ब-शहर जा कर उन्हों ने मक़ामी जमाअतों
को यरूशलम के रसूलों और बुज़ुर्गों के वह फ़ैसले
पहुँचाए जिन के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारनी थी।
5 यूँ जमाअतें ईमान में मज़बूत हुईं और तादाद में
रोज़-ब-रोज़ बढ़ती गईं।

त्रोआस में पौलुस की रोया

6 रूह-उल-क़ुद्स ने उन्हें सूबा आसिया में कलाम-
ए-मुक़द्दस की मुनादी करने से रोक लिया, इस लिए
वह फ़रूगिया और गलतिया के इलाक़े में से गुज़रे।
7 मूसिया के क़रीब आ कर उन्हों ने शिमाल की तरफ़
सूबा बिथुनिया में दाख़िल होने की कोशिश की।
लेकिन ईसा के रूह ने उन्हें वहाँ भी जाने न दिया,
8 इस लिए वह मूसिया में से गुज़र कर बन्दरगाह
त्रोआस पहुँचे। 9 वहाँ पौलुस ने रात के वक़्त रोया
देखी जिस में शिमाली यूनान में वाक़े सूबा मकिदुनिया
का एक आदमी खड़ा उस से इल्तिमास कर रहा
था, "समुन्दर को पार करके मकिदुनिया आएँ और
हमारी मदद करें!" 10 जूँ ही उस ने यह रोया देखी हम
मकिदुनिया जाने की तय्यारियाँ करने लगे। क्यूँकि
हम ने रोया से यह नतीजा निकाला कि अल्लाह ने हमें
उस इलाक़े के लोगों को ख़ुशख़बरी सुनाने के लिए
बुलाया है।

फ़िलिप्पी में लुदिया की तब्दीली

11 हम त्रोआस में जहाज़ पर सवार हो कर सीधे
जज़ीरा-ए-समुत्राके के लिए रवाना हुए। फिर अगले
दिन आगे निकल कर नयापुलिस पहुँचे। 12 वहाँ
जहाज़ से उतर कर हम फ़िलिप्पी चले गए, जो सूबा
मकिदुनिया के उस ज़िला का सदर शहर था और
रोमी नौआबादी था। इस शहर में हम कुछ दिन ठहरे।
13 सबत के दिन हम शहर से निकल कर दरया के
किनारे गए, जहाँ हमारी तवक़्क़ो थी कि यहूदी दुआ
के लिए जमा होंगे। वहाँ हम बैठ कर कुछ ख़वातीन
से बात करने लगे जो इकट्ठी हुई थीं। 14 उन में से
थुआतीरा शहर की एक औरत थी जिस का नाम
लुदिया था। उस का पेशा क़ीमती अर्ग़वानी रंग के
कपड़े की तिजारत था और वह अल्लाह की परस्तिश
करने वाली ग़ैरयहूदी थी। ख़ुदावन्द ने उस के दिल
को खोल दिया, और उस ने पौलुस की बातों पर
तवज्जुह दी। 15 उस के और उस के घर वालों के

बपतिस्मा लेने के बाद उस ने हमें अपने घर में ठहरने
की दावत दी। उस ने कहा, “अगर आप समझते हैं
कि मैं वाक़ई ख़ुदावन्द पर ईमान लाई हूँ तो मेरे घर
आ कर ठहरें।” यूँ उस ने हमें मज्बूर किया।

फ़िलिप्पी की जेल में

16 एक दिन हम दुआ की जगह की तरफ़ जा रहे थे
कि हमारी मुलाक़ात एक लौंडी से हुई जो एक बदरुह
के ज़रीए लोगों की क़िस्मत का हाल बताती थी। इस
से वह अपने मालिकों के लिए बहुत से पैसे कमाती
थी। 17 वह पौलुस और हमारे पीछे पड़ कर चीख़
चीख़ कर कहने लगी, “यह आदमी अल्लाह तआला
के ख़ादिम हैं जो आप को नजात की राह बताने
आए हैं।” 18 यह सिलसिला रोज़-ब-रोज़ जारी रहा।
आख़िरकार पौलुस तंग आ कर मुड़ा और बदरुह से
कहा, “मैं तुझे ईसा मसीह के नाम से हुक्म देता हूँ
कि लड़की में से निकल जा!” उसी लम्हे वह निकल
गई।

19 उस के मालिकों को मालूम हुआ कि पैसे कमाने
की उम्मीद जाती रही तो वह पौलुस और सीलास
को पकड़ कर चौक में बैठे इक़तिदार रखने वालों
के सामने घसीट ले गए। 20 उन्हें मजिस्ट्रेटों के सामने
पेश करके वह चिल्लाने लगे, “यह आदमी हमारे शहर
में हलचल पैदा कर रहे हैं। यह यहूदी हैं 21 और
ऐसे रस्म-ओ-रिवाज का प्रचार कर रहे हैं जिन्हें
क़बूल करना और अदा करना हम रोमियों के लिए
जाइज़ नहीं।” 22 हुजूम भी आ मिला और पौलुस और
सीलास के ख़िलाफ़ बातें करने लगा।

इस पर मजिस्ट्रेटों ने हुक्म दिया कि उन के कपड़े
उतारे और उन्हें लाठी से मारा जाए। 23 उन्हों ने उन
की ख़ूब पिटाई करवा कर उन्हें क़ैदख़ाने में डाल
दिया और दारोग़े से कहा कि एहतियात से उन की
पहरादारी करो। 24 चुनाँचे उस ने उन्हें जेल के सब से
अन्दरूनी हिस्से में ले जा कर उन के पाँओ काठ में
डाल दिए।

25 अब ऐसा हुआ कि पौलुस और सीलास आधी
रात के क़रीब दुआ कर रहे और अल्लाह की तम्जीद
के गीत गा रहे थे और बाक़ी क़ैदी सुन रहे थे।
26 अचानक बड़ा ज़ल्ज़ला आया और क़ैदख़ाने की
पूरी इमारत बुन्यादों तक हिल गई। फ़ौरन तमाम
दरवाज़े खुल गए और तमाम क़ैदियों की ज़न्जीरें खुल
गईं। 27 दारोग़ा जाग उठा। जब उस ने देखा कि जेल
के दरवाज़े खुले हैं तो वह अपनी तलवार निकाल
कर ख़ुदकुशी करने लगा, क्यूँकि ऐसा लग रहा था
कि क़ैदी फ़रार हो गए हैं। 28 लेकिन पौलुस चिल्ला
उठा, “मत करें! अपने आप को नुक़्सान न पहुँचाएँ।
हम सब यहीं हैं।”

29 दारोग़े ने चराग़ मंगवा लिया और भाग कर अन्दर
आया। लरज़ते लरज़ते वह पौलुस और सीलास के
सामने गिर गया। 30 फिर उन्हें बाहर ले जा कर उस ने
पूछा, “साहिबो, मुझे नजात पाने के लिए क्या करना
है?”

31 उन्हों ने जवाब दिया, “ख़ुदावन्द ईसा पर ईमान
लाएँ तो आप और आप के घराने को नजात
मिलेगी।” 32 फिर उन्हों ने उसे और उस के तमाम
घर वालों को ख़ुदावन्द का कलाम सुनाया। 33 और
रात की उसी घड़ी दारोग़े ने उन्हें ले जा कर उन के
ज़ख़्मों को धोया। इस के बाद उस का और उस के
सारे घर वालों का बपतिस्मा हुआ। 34 फिर उस ने
उन्हें अपने घर में ला कर खाना खिलाया। अल्लाह पर
ईमान लाने के बाइस उस ने और उस के तमाम घर
वालों ने बड़ी ख़ुशी मनाई।

35 जब दिन चढ़ा तो मजिस्ट्रेटों ने अपने अफ़्सरों
को दारोग़े के पास भिजवा दिया कि वह पौलुस और
सीलास को रिहा करे।

36 चुनाँचे दारोग़े ने पौलुस को उन का पैग़ाम पहुँचा
दिया, “मजिस्ट्रेटों ने हुक्म दिया है कि आप और
सीलास को रिहा कर दिया जाए। अब निकल कर
सलामती से चले जाएँ।”

37 लेकिन पौलुस ने एतिराज़ किया। उस ने उन
से कहा, “उन्हों ने हमें अवाम के सामने ही और

अदालत में पेश किए बग़ैर मार कर जेल में डाल
दिया है हालाँकि हम रोमी शहरी हैं। और अब वह
हमें चुपके से निकालना चाहते हैं? हरगिज़ नहीं! अब
वह ख़ुद आएँ और हमें बाहर ले जाएँ।”
38 अफ़सरों ने मजिस्ट्रेटों को यह ख़बर पहुँचाई। जब
उन्हें मालूम हुआ कि पौलुस और सीलास रोमी शहरी
हैं तो वह घबरा गए। 39 वह ख़ुद उन्हें समझाने के
लिए आए और जेल से बाहर ला कर गुज़ारिश की कि
शहर को छोड़ दें। 40 चुनाँचे पौलुस और सीलास जेल
से निकल आए। लेकिन पहले वह लुदिया के घर गए
जहाँ वह भाइयों से मिले और उन की हौसलाअफ़ज़ाई
की। फिर वह चले गए।

थिस्सलुनीके में

17 1 अम्फ़िपुलिस और अपुल्लोनिया से हो कर
पौलुस और सीलास थिस्सलुनीके शहर
पहुँच गए जहाँ यहूदी इबादतख़ाना था। 2 अपनी
आदत के मुताबिक़ पौलुस उस में गया और लगातार
तीन सबतों के दौरान कलाम-ए-मुक़द्दस से दलाइल दे
दे कर यहूदियों को क़ाइल करने की कोशिश करता
रहा। 3 उस ने कलाम-ए-मुक़द्दस की तश्रीह करके
साबित किया कि मसीह का दुख उठाना और मुर्दों में
से जी उठना लाज़िम था। उस ने कहा, “जिस ईसा की
मैं ख़बर दे रहा हूँ, वही मसीह है।” 4 यहूदियों में से
कुछ क़ाइल हो कर पौलुस और सीलास से वाबस्ता
हो गए, जिन में ख़ुदातरस यूनानियों की बड़ी तादाद
और बारसूख ख़वातीन भी शरीक थीं।
5 यह देख कर बाक़ी यहूदी हसद करने लगे। उन्हों
ने गलियों में आवारा फिरने वाले कुछ शरीर आदमी
इकट्ठे करके जुलूस निकाला और शहर में हलचल
मचा दी। फिर यासोन के घर पर हम्ला करके उन्हों
ने पौलुस और सीलास को ढूँडा ताकि उन्हें अवामी
इज्लास के सामने पेश करें। 6 लेकिन वह वहाँ नहीं
थे, इस लिए वह यासोन और चन्द एक और ईमानदार
भाइयों को शहर के मजिस्ट्रेटों के सामने लाए। उन्हों
ने चीख़ कर कहा, “यह लोग पूरी दुनिया में गड़बड़
पैदा कर रहे हैं और अब यहाँ भी आ गए हैं। 7 यासोन
ने उन्हें अपने घर में ठहराया है। यह सब शहन्शाह
के अह्काम की ख़िलाफ़वरज़ी कर रहे हैं, क्यूँकि
यह किसी और को बादशाह मानते हैं जिस का नाम
ईसा है।” 8 इस तरह की बातों से उन्हों ने हुजूम
और मजिस्ट्रेटों में बड़ा हंगामा पैदा किया। 9 चुनाँचे
मजिस्ट्रेटों ने यासोन और दूसरों से ज़मानत ली और
फिर उन्हें छोड़ दिया।

बेरिया में

10 उसी रात भाइयों ने पौलुस और सीलास को
बेरिया भेज दिया। वहाँ पहुँच कर वह यहूदी
इबादतख़ाने में गए। 11 यह लोग थिस्सलुनीके के
यहूदियों की निस्बत ज़्यादा खुले ज़हन के थे। यह
बड़े शौक़ से पौलुस और सीलास की बातें सुनते और
रोज़-ब-रोज़ कलाम-ए-मुक़द्दस की तफ़्तीश करते रहे
कि क्या वाक़ई ऐसा है जैसा हमें बताया जा रहा है?
12 नतीजे में इन में से बहुत से यहूदी ईमान लाए और
साथ साथ बहुत सी बारसूख यूनानी ख़वातीन और
मर्द भी। 13 लेकिन फिर थिस्सलुनीके के यहूदियों
को यह ख़बर मिली कि पौलुस बेरिया में अल्लाह
का कलाम सुना रहा है। वह वहाँ भी पहुँचे और
लोगों को उकसा कर हलचल मचा दी। 14 इस पर
भाइयों ने पौलुस को फ़ौरन साहिल पर भेज दिया,
लेकिन सीलास और तीमुथियुस बेरिया में पीछे रह
गए। 15 जो आदमी पौलुस को साहिल तक पहुँचाने
आए थे वह उस के साथ अथेने तक गए। वहाँ वह
उसे छोड़ कर वापस चले गए। उन के हाथ पौलुस ने
सीलास और तीमुथियुस को ख़बर भेजी कि जितनी
जल्दी हो सके बेरिया को छोड़ कर मेरे पास आ जाएँ।

अथेने में

16 अथेने शहर में सीलास और तीमुथियुस का
इन्तिज़ार करते करते पौलुस बड़े जोश में आ गया,
क्यूँकि उस ने देखा कि पूरा शहर बुतों से भरा हुआ
है। 17 वह यहूदी इबादतख़ाने में जा कर यहूदियों

और ख़ुदातरस ग़ैरयहूदियों से बह्स करने लगा।
साथ साथ वह रोज़ाना चौक में भी जा कर वहाँ
पर मौजूद लोगों से गुफ़्तगु करता रहा। 18 इपिकूरी
और स्तोइकी फ़ल्सफ़ी [e]भी उस से बह्स करने लगे।
जब पौलुस ने उन्हें ईसा और उस के जी उठने की
ख़ुशख़बरी सुनाई तो बाज़ ने पूछा, "यह बकवासी
इन बातों से क्या कहना चाहता है जो इस ने इधर
उधर से चुन कर जोड़ दी हैं?"

दूसरों ने कहा, "लगता है कि वह अजनबी
देवताओं की ख़बर दे रहा है।" 19 वह उसे साथ ले
कर शहर की मजलिस-ए-शूरा में गए जो अरियोपगुस
नामी पहाड़ी पर मुनअक़िद होती थी। उन्हों ने
दरख़्वास्त की, "क्या हमें मालूम हो सकता है कि
आप कौन सी नई तालीम पेश कर रहे हैं? 20 आप
तो हमें अजीब-ओ-ग़रीब बातें सुना रहे हैं। अब हम
उन का सहीह मतलब जानना चाहते हैं।" 21 (बात
यह थी कि अथेने के तमाम बाशिन्दे शहर में रहने
वाले परदेसियों समेत अपना पूरा वक़्त इस में सर्फ़
करते थे कि ताज़ा ताज़ा ख़यालात सुनें या सुनाएँ।)

22 पौलुस मजलिस में खड़ा हुआ और कहा, "अथेने
के हज़रात, मैं देखता हूँ कि आप हर लिहाज़ से
बहुत मज़्हबी लोग हैं। 23 क्यूँकि जब मैं शहर में से
गुज़र रहा था तो उन चीज़ों पर ग़ौर किया जिन की
पूजा आप करते हैं। चलते चलते मैं ने एक ऐसी
क़ुर्बानगाह भी देखी जिस पर लिखा था, 'नामालूम
ख़ुदा की क़ुर्बानगाह।' अब मैं आप को उस ख़ुदा की
ख़बर देता हूँ जिस की पूजा आप करते तो हैं मगर
आप उसे जानते नहीं। 24 यह वह ख़ुदा है जिस ने
दुनिया और उस में मौजूद हर चीज़ की तख़्लीक़ की।
वह आसमान-ओ-ज़मीन का मालिक है, इस लिए
वह इन्सानी हाथों के बनाए हुए मन्दिरों में सुकूनत
नहीं करता। 25 और इन्सानी हाथ उस की ख़िदमत
नहीं कर सकते, क्यूँकि उसे कोई भी चीज़ दरकार
नहीं होती। इस के बजाय वही सब को ज़िन्दगी और
साँस मुहय्या करके उन की तमाम ज़रूरियात पूरी
करता है। 26 उसी ने एक शख़्स को ख़ल्क़ किया
ताकि दुनिया की तमाम क़ौमें उस से निकल कर पूरी
दुनिया में फैल जाएँ। उस ने हर क़ौम के औक़ात
और सरहदें भी मुक़र्रर कीं। 27 मक़्सद यह था कि
वह ख़ुदा को तलाश करें। उम्मीद यह थी कि वह
टटोल टटोल कर उसे पाएँ, अगरचे वह हम में से
किसी से दूर नहीं होता। 28 क्यूँकि उस में हम जीते,
हरकत करते और वुजूद रखते हैं। आप के अपने
कुछ शाइरों ने भी फ़रमाया है, 'हम भी उस के फ़र्ज़न्द
हैं।' 29 अब चूँकि हम अल्लाह के फ़र्ज़न्द हैं इस लिए
हमारा उस के बारे में तसव्वुर यह नहीं होना चाहिए
कि वह सोने, चाँदी या पत्थर का कोई मुजस्समा हो
जो इन्सान की महारत और डिज़ाइन से बनाया गया
हो। 30 माज़ी में ख़ुदा ने इस क़िस्म की जहालत को
नज़रअन्दाज़ किया, लेकिन अब वह हर जगह के
लोगों को तौबा का हुक्म देता है। 31 क्यूँकि उस ने
एक दिन मुक़र्रर किया है जब वह इन्साफ़ से दुनिया
की अदालत करेगा। और वह यह अदालत एक
शख़्स की मारिफ़त करेगा जिस को वह मुतअय्यिन
कर चुका है और जिस की तस्दीक़ उस ने इस से की
है कि उस ने उसे मुर्दों में से ज़िन्दा कर दिया है।"

32 मुर्दों की क़ियामत का ज़िक्र सुन कर बाज़ ने
पौलुस का मज़ाक़ उड़ाया। लेकिन बाज़ ने कहा,
"हम किसी और वक़्त इस के बारे में आप से मज़ीद
सुनना चाहते हैं।" 33 फिर पौलुस मजलिस से निकल
कर चला गया। 34 कुछ लोग उस से वाबस्ता हो कर
ईमान ले आए। उन में से मजलिस-ए-शूरा का मैम्बर
दियोनीसियुस था और एक औरत बनाम दमरिस।
कुछ और भी थे।

कुरिन्थुस में

18 1 इस के बाद पौलुस अथेने को छोड़
कर कुरिन्थुस शहर आया। 2 वहाँ उस की

[e]यानी रवाक़ीत के फ़ल्सफ़ी।

मुलाक़ात एक यहूदी से हुई जिस का नाम अक्विला
था। वह पुन्तुस का रहने वाला था और थोड़ी देर
पहले अपनी बीवी प्रिस्किल्ला समेत इटली से आया
था। वजह यह थी कि शहन्शाह क्लौदियुस ने हुक्म
सादिर किया था कि तमाम यहूदी रोम को छोड़ कर
चले जाएँ। उन लोगों के पास पौलुस गया 3 और चूँकि
उन का पेशा भी ख़ैमे सिलाई करना था इस लिए वह
उन के घर ठहर कर रोज़ी कमाने लगा। 4 साथ साथ
उस ने हर सबत को यहूदी इबादतख़ाने में तालीम
दे कर यहूदियों और यूनानियों को क़ाइल करने की
कोशिश की।

5 जब सीलास और तीमुथियुस मकिदुनिया से आए
तो पौलुस अपना पूरा वक़्त कलाम सुनाने में सर्फ़
करने लगा। उस ने यहूदियों को गवाही दी कि ईसा
कलाम-ए-मुक़द्दस में बयान किया गया मसीह है।
6 लेकिन जब वह उस की मुख़ालफ़त करके उस की
तज़्लील करने लगे तो उस ने एहतिजाज में अपने
कपड़ों से गर्द झाड़कर कहा, "आप ख़ुद अपनी
हलाकत के ज़िम्मादार हैं, मैं बेक़ुसूर हूँ। अब से
मैं ग़ैरयहूदियों के पास जाया करूँगा।" 7 फिर वह
वहाँ से निकल कर इबादतख़ाने के साथ वाले घर में
गया। वहाँ तितुस यूस्तुस रहता था जो यहूदी नहीं था,
लेकिन ख़ुदा का ख़ौफ़ मानता था। 8 और क्रिस्पुस
जो इबादतख़ाने का राहनुमा था अपने घराने समेत
ख़ुदावन्द पर ईमान लाया। कुरिन्थुस के बहुत सारे
और लोगों ने भी जब पौलुस की बातें सुनीं तो ईमान
लाए और बपतिस्मा लिया।

9 एक रात ख़ुदावन्द रोया में पौलुस से हमकलाम
हुआ, "मत डर! कलाम करता जा और ख़ामोश न
हो, 10 क्यूँकि मैं तेरे साथ हूँ। कोई हम्ला करके तुझे
नुक़्सान नहीं पहुँचाएगा, क्यूँकि इस शहर में मेरे बहुत
से लोग हैं।" 11 फिर पौलुस मज़ीद डेढ़ साल वहाँ
ठहर कर लोगों को अल्लाह का कलाम सिखाता रहा।

12 उन दिनों में जब गल्लियो सूबा अख़या का गवर्नर
था तो यहूदी मुत्तहिद हो कर पौलुस के ख़िलाफ़ जमा
हुए और उसे अदालत में गल्लियो के सामने लाए।
13 उन्हों ने कहा, "यह आदमी लोगों को ऐसे तरीक़े
से अल्लाह की इबादत करने पर उकसा रहा है जो
हमारी शरीअत के ख़िलाफ़ है।"

14 पौलुस जवाब में कुछ कहने को था कि गल्लियो
ख़ुद यहूदियों से मुख़ातिब हुआ, "सुनें, यहूदी मर्दो!
अगर आप का इल्ज़ाम कोई नाइन्साफ़ी या संगीन
जुर्म होता तो आप की बात क़ाबिल-ए-बर्दाश्त होती।
15 लेकिन आप का झगड़ा मज़्हबी तालीम, नामों और
आप की यहूदी शरीअत से ताल्लुक़ रखता है, इस
लिए उसे ख़ुद हल करें। मैं इस मुआमले में फ़ैसला
करने के लिए तय्यार नहीं हूँ।" 16 यह कह कर उस
ने उन्हें अदालत से भगा दिया। 17 इस पर हुजूम ने
यहूदी इबादतख़ाने के राहनुमा सोस्थिनेस को पकड़
कर अदालत के सामने उस की पिटाई की। लेकिन
गल्लियो ने पर्वा न की।

अन्ताकिया तक वापसी का सफ़र

18 इस के बाद भी पौलुस बहुत दिन कुरिन्थुस में
रहा। फिर भाइयों को ख़ैरबाद कह कर वह क़रीब
के शहर किन्ख़रिया गया जहाँ उस ने किसी मन्नत
के पूरे होने पर अपने सर के बाल मुंडवा दिए।
इस के बाद वह प्रिस्किल्ला और अक्विला के साथ
जहाज़ पर सवार हो कर मुल्क-ए-शाम के लिए रवाना
हुआ। 19 पहले वह इफ़िसुस पहुँचे जहाँ पौलुस ने
प्रिस्किल्ला और अक्विला को छोड़ दिया। वहाँ भी
उस ने यहूदी इबादतख़ाने में जा कर यहूदियों से बह्स
की। 20 उन्हों ने उस से दरख़्वास्त की कि मज़ीद
वक़्त उन के साथ गुज़ारे, लेकिन उस ने इन्कार किया
21 और उन्हें ख़ैरबाद कह कर कहा, "अगर अल्लाह
की मर्ज़ी हो तो मैं आप के पास वापस आऊँगा।"
फिर वह जहाज़ पर सवार हो कर इफ़िसुस से रवाना
हुआ।

22 सफ़र करते करते वह क़ैसरिया पहुँच गया, जहाँ
से वह यरूशलम जा कर मक़ामी जमाअत से मिला।
इस के बाद वह अन्ताकिया वापस चला गया 23 जहाँ
वह कुछ देर ठहरा। फिर आगे निकल कर वह

गलतिया और फ़रूगिया के इलाक़े में से गुज़रते हुए वहाँ के तमाम ईमानदारों को मज़बूत करता गया।

अपुल्लोस इफ़िसुस और कुरिन्थुस में

24 इतने में एक फ़सीह यहूदी जिसे कलाम-ए-मुक़द्दस का ज़बरदस्त इल्म था इफ़िसुस पहुँच गया था। उस का नाम अपुल्लोस था। वह मिस्र के शहर इस्कन्दरिया का रहने वाला था। 25 उसे ख़ुदावन्द की राह के बारे में तालीम दी गई थी और वह बड़ी सरगर्मी से लोगों को ईसा के बारे में सिखाता रहा। उस की यह तालीम सहीह थी अगरचे वह अभी तक सिर्फ़ यहया का बपतिस्मा जानता था। 26 इफ़िसुस के यहूदी इबादतख़ाने में वह बड़ी दिलेरी से कलाम करने लगा। यह सुन कर प्रिस्किल्ला और अक्विला ने उसे एक तरफ़ ले जा कर उस के सामने अल्लाह की राह को मज़ीद तफ़सील से बयान किया। 27 अपुल्लोस सूबा अख़या जाने का ख़याल रखता था तो इफ़िसुस के भाइयों ने उस की हौसलाअफ़ज़ाई की। उन्हों ने वहाँ के शागिर्दों को ख़त लिखा कि वह उस का इस्तिक़्बाल करें। जब वह वहाँ पहुँचा तो उन के लिए बड़ी मदद का बाइस बना जो अल्लाह के फ़ज़्ल से ईमान लाए थे, 28 क्यूँकि वह अलानिया मुबाहिसों में ज़बरदस्त दलाइल से यहूदियों पर ग़ालिब आया और कलाम-ए-मुक़द्दस से साबित किया कि ईसा मसीह है।

पौलुस इफ़िसुस में

19 1 जब अपुल्लोस कुरिन्थुस में ठहरा हुआ था तो पौलुस एशिया-ए-कूचक के अन्दरूनी इलाक़े में से सफ़र करते करते साहिली शहर इफ़िसुस में आया। वहाँ उसे कुछ शागिर्द मिले 2 जिन से उस ने पूछा, "क्या आप को ईमान लाते वक़्त रूह-उल-क़ुद्स मिला?"

उन्हों ने जवाब दिया, "नहीं, हम ने तो रूह-उल-क़ुद्स का ज़िक्र तक नहीं सुना।"

3 उस ने पूछा, "तो आप को कौन सा बपतिस्मा दिया गया?"

उन्हों ने जवाब दिया, "यहया का।"

4 पौलुस ने कहा, "यहया ने बपतिस्मा दिया जब लोगों ने तौबा की। लेकिन उस ने ख़ुद उन्हें बताया, 'मेरे बाद आने वाले पर ईमान लाओ, यानी ईसा पर'।"

5 यह सुन कर उन्हों ने ख़ुदावन्द ईसा के नाम पर बपतिस्मा लिया। 6 और जब पौलुस ने अपने हाथ उन पर रखे तो उन पर रूह-उल-क़ूदस नाज़िल हुआ, और वह ग़ैरज़बानें बोलने और नबुव्वत करने लगे। 7 इन आदमियों की कुल तादाद तक़रीबन बारह थी।

8 पौलुस यहूदी इबादतख़ाने में गया और तीन महीने के दौरान यहूदियों से दिलेरी से बात करता रहा। उन के साथ बहस करके उस ने उन्हें अल्लाह की बादशाही के बारे में क़ाइल करने की कोशिश की। 9 लेकिन कुछ अड़ गए। वह अल्लाह के ताबे न हुए बल्कि अवाम के सामने ही अल्लाह की राह को बुरा-भला कहने लगे। इस पर पौलुस ने उन्हें छोड़ दिया। शागिर्दों को भी अलग करके वह उन के साथ तुरन्नुस के लैक्चर हाल में जमा हुआ करता था जहाँ वह रोज़ाना उन्हें तालीम देता रहा। 10 यह सिलसिला दो साल तक जारी रहा। यूँ सूबा आसिया के तमाम लोगों को ख़ुदावन्द का कलाम सुनने का मौक़ा मिला, ख़्वाह वह यहूदी थे या यूनानी।

राहनुमा इमाम स्किवा के सात बेटे

11 अल्लाह ने पौलुस की मारिफ़त ग़ैरमामूली मोजिज़े किए, 12 यहाँ तक कि जब रूमाल या एप्रन उस के बदन से लगाने के बाद मरीज़ों पर रखे जाते तो उन की बीमारियाँ जाती रहतीं और बदरुहें निकल जातीं। 13 वहाँ कुछ ऐसे यहूदी भी थे जो जगह जगह जा कर बदरुहें निकालते थे। अब वह बदरूहों के बंधन में फंसे लोगों पर ख़ुदावन्द ईसा का नाम इस्तेमाल करने की कोशिश करके कहने लगे, "मैं तुझे उस ईसा के नाम से निकलने का हुक्म देता हूँ जिस की मुनादी

पौलुस करता है।” 14 एक यहूदी राहनुमा इमाम बनाम
स्किवा के सात बेटे ऐसा करते थे।
15 लेकिन एक दफ़ा जब यही कोशिश कर रहे थे
तो बदरुह ने जवाब दिया, “ईसा को तो मैं जानती हूँ
और पौलुस को भी, लेकिन तुम कौन हो?”
16 फिर वह आदमी जिस में बदरुह थी उन पर झपट
कर सब पर ग़ालिब आ गया। उस का उन पर इतना
सख़्त हम्ला हुआ कि वह नंगे और ज़ख़्मी हालत में
भाग कर उस घर से निकल गए। 17 इस वाकिए की
ख़बर इफ़िसुस के तमाम रहने वाले यहूदियों और
यूनानियों में फैल गई। उन पर ख़ौफ़ तारी हुआ और
ख़ुदावन्द ईसा के नाम की ताज़ीम हुई। 18 जो ईमान
लाए थे उन में से बहुतेरों ने आ कर अलानिया अपने
गुनाहों का इक़्रार किया। 19 जादूगरी करने वालों की
बड़ी तादाद ने अपनी जादूमंत्र की किताबें इकट्ठी
करके अवाम के सामने जला दीं। पूरी किताबों का
हिसाब किया गया तो उन की कुल रक़म चाँदी के
पचास हज़ार सिक्के थी। 20 यूँ ख़ुदावन्द का कलाम
ज़बरदस्त तरीक़े से बढ़ता और ज़ोर पकड़ता गया।

इफ़िसुस में हंगामा

21 इन वाक़िआत के बाद पौलुस ने मकिदुनिया और
अख़या में से गुज़र कर यरूशलम जाने का फ़ैसला
किया। उस ने कहा, “इस के बाद लाज़िम है कि
मैं रोम भी जाऊँ।” 22 उस ने अपने दो मददगारों
तीमुथियुस और इरास्तुस को आगे मकिदुनिया भेज
दिया जबकि वह ख़ुद मज़ीद कुछ देर के लिए सूबा
आसिया में ठहरा रहा।
23 तक़रीबन उस वक़्त अल्लाह की राह एक शदीद
हंगामे का बाइस हो गई। 24 यह यूँ हुआ, इफ़िसुस
में एक चाँदी की अश्या बनाने वाला रहता था जिस
का नाम देमेत्रियुस था। वह चाँदी से अर्तमिस देवी के
मन्दिर बनवाता था, और उस के काम से दस्तकारों
का कारोबार ख़ूब चलता था। 25 अब उस ने इस काम
से ताल्लुक़ रखने वाले दीगर दस्तकारों को जमा करके
उन से कहा, “हज़रात, आप को मालूम है कि हमारी
दौलत इस कारोबार पर मुन्हसिर है। 26 आप ने यह
भी देख और सुन लिया है कि इस आदमी पौलुस ने न
सिर्फ़ इफ़िसुस बल्कि तक़रीबन पूरे सूबा आसिया में
बहुत से लोगों को भटका कर क़ाइल कर लिया है कि
हाथों के बने देवता हक़ीक़त में देवता नहीं होते। 27 न
सिर्फ़ यह ख़तरा है कि हमारे कारोबार की बदनामी
हो बल्कि यह भी कि अज़ीम देवी अर्तमिस के मन्दिर
का असर-ओ-रसूख़ जाता रहेगा, कि अर्तमिस ख़ुद
जिस की पूजा सूबा आसिया और पूरी दुनिया में की
जाती है अपनी अज़मत खो बैठे।”
28 यह सुन कर वह तैश में आ कर चीख़ने-चिल्लाने
लगे, “इफ़िसियों की अर्तमिस देवी अज़ीम है!” 29 पूरे
शहर में हलचल मच गई। लोगों ने पौलुस के मकिदुनी
हमसफ़र गयुस और अरिस्तर्ख़ुस को पकड़ लिया
और मिल कर तमाशागाह में दौड़े आए। 30 यह देख
कर पौलुस भी अवाम के इस इज्लास में जाना चाहता
था, लेकिन शागिर्दों ने उसे रोक लिया। 31 इसी तरह
उस के कुछ दोस्तों ने भी जो सूबा आसिया के अफ़सर
थे उसे ख़बर भेज कर मिन्नत की कि वह न जाए।
32 इज्लास में बड़ी अफ़्रा-तफ़्री थी। कुछ यह चीख़
रहे थे, कुछ वह। ज़्यादातर लोग जमा होने की वजह
जानते भी न थे। 33 यहूदियों ने सिकन्दर को आगे कर
दिया। साथ साथ हुजूम के कुछ लोग उसे हिदायात
देते रहे। उस ने हाथ से ख़ामोश हो जाने का इशारा
किया ताकि वह इज्लास के सामने अपना दिफ़ा करे।
34 लेकिन जब उन्हों ने जान लिया कि वह यहूदी है
तो वह तक़रीबन दो घंटों तक चिल्ला कर नारा लगाते
रहे, “इफ़िसुस की अर्तमिस देवी अज़ीम है!”
35 आख़िरकार बलदिया का चीफ़ सैक्रटरी उन्हें
ख़ामोश कराने में कामयाब हुआ। फिर उस ने
कहा, “इफ़िसुस के हज़रात, किस को मालूम नहीं
कि इफ़िसुस अज़ीम अर्तमिस देवी के मन्दिर का
मुहाफ़िज़ है! पूरी दुनिया जानती है कि हम उस के उस
मुजस्समे के निगरान हैं जो आसमान से गिर कर हमारे
पास पहुँच गया। 36 यह हक़ीक़त तो नाक़ाबिल-ए-
इन्कार है। चुनाँचे लाज़िम है कि आप चुप-चाप रहें

और जल्दबाज़ी न करें। 37 आप यह आदमी यहाँ लाए
हैं हालाँकि न तो वह मन्दिरों को लूटने वाले हैं, न
उन्हों ने देवी की बेहुरमती की है। 38 अगर देमेत्रियुस
और उस के साथ वाले दस्तकारों का किसी पर
इल्ज़ाम है तो इस के लिए कचहरियाँ और गवर्नर
होते हैं। वहाँ जा कर वह एक दूसरे से मुक़द्दमा लड़ें।
39 अगर आप मज़ीद कोई मुआमला पेश करना चाहते
हैं तो उसे हल करने के लिए क़ानूनी मजलिस होती
है। 40 अब हम इस ख़तरे में हैं कि आज के वाक़िआत
के बाइस हम पर फ़साद का इल्ज़ाम लगाया जाएगा।
क्यूँकि जब हम से पूछा जाएगा तो हम इस क़िस्म के
बेतर्तीब और नाजाइज़ इजतिमा का कोई जवाज़ पेश
नहीं कर सकेंगे।" 41 यह कह कर उस ने इज्लास को
बर्ख़ास्त कर दिया।

मकिदुनिया और अख़या में

20 1 जब शहर में अफ़्रा-तफ़्री ख़त्म हुई तो
पौलुस ने शागिर्दों को बुला कर उन की
हौसलाअफ़्ज़ाई की। फिर वह उन्हें ख़ैरबाद कह
कर मकिदुनिया के लिए रवाना हुआ। 2 वहाँ पहुँच
कर उस ने जगह-ब-जगह जा कर बहुत सी बातों
से ईमानदारों की हौसलाअफ़्ज़ाई की। यूँ चलते
चलते वह यूनान पहुँच गया 3 जहाँ वह तीन माह
तक ठहरा। वह मुल्क-ए-शाम के लिए जहाज़ पर
सवार होने वाला था कि पता चला कि यहूदियों
ने उस के ख़िलाफ़ साज़िश की है। इस पर उस
ने मकिदुनिया से हो कर वापस जाने का फ़ैसला
किया। 4 उस के कई हमसफ़र थे : बेरिया से पुरुस
का बेटा सोपत्रुस, थिस्सलुनीके से अरिस्तर्ख़ुस और
सिकुन्दुस, दिर्बे से गयुस, तीमुथियुस और सूबा
आसिया से तुख़िकुस और त्रुफ़िमुस। 5 यह आदमी
आगे निकल कर त्रोआस चले गए जहाँ उन्हों ने
हमारा इन्तिज़ार किया। 6 बेख़मीरी रोटी की ईद के
बाद हम फ़िलिप्पी के क़रीब जहाज़ पर सवार हुए
और पाँच दिन के बाद उन के पास त्रोआस पहुँच
गए। वहाँ हम सात दिन रहे।

त्रोआस में पौलुस की अलविदाई मीटिंग

7 इत्वार को हम अशा-ए-रब्बानी मनाने के लिए
जमा हुए। पौलुस लोगों से बात करने लगा और चूँकि
वह अगले दिन रवाना होने वाला था इस लिए वह
आधी रात तक बोलता रहा। 8 ऊपर की मन्ज़िल में
जिस कमरे में हम जमा थे वहाँ बहुत से चराग़ जल
रहे थे। 9 एक जवान खिड़की की दहलीज़ पर बैठा
था। उस का नाम यूतिख़ुस था। जूँ जूँ पौलुस की बातें
लम्बी होती जा रही थीं उस पर नींद ग़ालिब आती
जा रही थी। आख़िरकार वह गहरी नींद में तीसरी
मन्ज़िल से ज़मीन पर गिर गया। जब लोगों ने नीचे
पहुँच कर उसे ज़मीन पर से उठाया तो वह जाँ-ब-
हक़ हो चुका था। 10 लेकिन पौलुस उतर कर उस पर
झुक गया और उसे अपने बाज़ूओं में ले लिया। उस
ने कहा, "मत घबराएँ, वह ज़िन्दा है।" 11 फिर वह
वापस ऊपर आ गया, अशा-ए-रब्बानी मनाई और
खाना खाया। उस ने अपनी बातें पौ फटने तक जारी
रखीं, फिर रवाना हुआ। 12 और उन्हों ने जवान को
ज़िन्दा हालत में वहाँ से ले कर बहुत तसल्ली पाई।

त्रोआस से मीलेतुस तक

13 हम आगे निकल कर अस्सुस के लिए जहाज़
पर सवार हुए। ख़ुद पौलुस ने इन्तिज़ाम करवाया
था कि वह पैदल जा कर अस्सुस में हमारे जहाज़
पर आएगा। 14 वहाँ वह हम से मिला और हम उसे
जहाज़ पर ला कर मतुलेने पहुँचे। 15 अगले दिन हम
ख़ियुस के जज़ीरे से गुज़रे। उस से अगले दिन हम
सामुस के जज़ीरे के क़रीब आए। इस के बाद के दिन
हम मीलेतुस पहुँच गए। 16 पौलुस पहले से फ़ैसला
कर चुका था कि मैं इफ़िसुस में नहीं ठहरूँगा बल्कि
आगे निकलूँगा, क्यूँकि वह जल्दी में था। वह जहाँ
तक मुमकिन था पन्तिकुस्त की ईद से पहले पहले
यरूशलम पहुँचना चाहता था।

इफ़िसुस के बुज़ुर्गों के लिए पौलुस की अलविदाई तक़रीर

17 मीलेतुस से पौलुस ने इफ़िसुस की जमाअत के
बुज़ुर्गों को बुला लिया। 18 जब वह पहुँचे तो उस ने
उन से कहा, “आप जानते हैं कि मैं सूबा आसिया में
पहला क़दम उठाने से ले कर पूरा वक़्त आप के साथ
किस तरह रहा। 19 मैं ने बड़ी इनकिसारी से ख़ुदावन्द
की ख़िदमत की है। मुझे बहुत आँसू बहाने पड़े और
यहूदियों की साज़िशों से मुझ पर बहुत आज़माइशें
आईं। 20 मैं ने आप के फ़ाइदे की कोई भी बात आप
से छुपाए न रखी बल्कि आप को अलानिया और
घर घर जा कर तालीम देता रहा। 21 मैं ने यहूदियों
को यूनानियों समेत गवाही दी कि उन्हें तौबा करके
अल्लाह की तरफ़ रुजू करने और हमारे ख़ुदावन्द ईसा
पर ईमान लाने की ज़रूरत है। 22 और अब मैं रूह-
उल-क़ुद्स से बंधा हुआ यरूशलम जा रहा हूँ। मैं नहीं
जानता कि मेरे साथ क्या कुछ होगा, 23 लेकिन इतना
मुझे मालूम है कि रूह-उल-क़ुद्स मुझे शहर-ब-शहर
इस बात से आगाह कर रहा है कि मुझे क़ैद और
मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा। 24 ख़ैर, मैं अपनी
ज़िन्दगी को किसी तरह भी अहम नहीं समझता।
अहम बात सिर्फ़ यह है कि मैं अपना वह मिशन और
ज़िम्मादारी पूरी करूँ जो ख़ुदावन्द ईसा ने मेरे सपुर्द
की है। और वह ज़िम्मादारी यह है कि मैं लोगों को
गवाही दे कर यह ख़ुशख़बरी सुनाऊँ कि अल्लाह ने
अपने फ़ज़्ल से उन के लिए क्या कुछ किया है।

25 और अब मैं जानता हूँ कि आप सब जिन्हें मैं
ने अल्लाह की बादशाही का पैग़ाम सुना दिया है मुझे
इस के बाद कभी नहीं देखेंगे। 26 इस लिए मैं आज
ही आप को बताता हूँ कि अगर आप में से कोई
भी हलाक हो जाए तो मैं बेक़ुसूर हूँ, 27 क्यूँकि मैं
आप को अल्लाह की पूरी मर्ज़ी बताने से न झिजका।
28 चुनाँचे ख़बरदार रह कर अपना और उस पूरे गल्ले
का ख़याल रखना जिस पर रूह-उल-क़ूदस ने आप
को मुक़र्रर किया है। निगरानों और चरवाहों की
हैसियत से अल्लाह की जमाअत की ख़िदमत करें, उस
जमाअत की जिसे उस ने अपने ही फ़र्ज़न्द के ख़ून से
हासिल किया है। 29 मुझे मालूम है कि मेरे जाने के
बाद वहशी भेड़िए आप में घुस आएँगे जो गल्ले को
नहीं छोड़ेंगे। 30 आप के दरमियान से भी आदमी उठ
कर सच्चाई को तोड़-मरोड़ कर बयान करेंगे ताकि
शागिर्दों को अपने पीछे लगा लें। 31 इस लिए जागते
रहें! यह बात ज़हन में रखें कि मैं तीन साल के दौरान
दिन रात हर एक को समझाने से बाज़ न आया। मेरे
आँसूओं को याद रखें जो मैं ने आप के लिए बहाए
हैं।

32 और अब मैं आप को अल्लाह और उस के फ़ज़्ल
के कलाम के सपुर्द करता हूँ। यही कलाम आप की
तामीर करके आप को वह मीरास मुहय्या करने के
क़ाबिल है जो अल्लाह तमाम मुक़द्दस किए गए लोगों
को देता है। 33 मैं ने किसी के भी सोने, चाँदी या
कपड़ों का लालच न किया। 34 आप ख़ुद जानते हैं
कि मैं ने अपने इन हाथों से काम करके न सिर्फ़
अपनी बल्कि अपने साथियों की ज़रूरियात भी पूरी
कीं। 35 अपने हर काम में मैं आप को दिखाता
रहा कि लाज़िम है कि हम इस क़िस्म की मेहनत
करके कमज़ोरों की मदद करें। क्यूँकि हमारे सामने
ख़ुदावन्द ईसा के यह अल्फ़ाज़ होने चाहिएँ कि देना
लेने से मुबारक है।”

36 यह सब कुछ कह कर पौलुस ने घुटने टेक कर
उन सब के साथ दुआ की। 37 सब ख़ूब रोए और उस
को गले लगा लगा कर बोसे दिए। 38 उन्हें ख़ासकर
पौलुस की इस बात से तक्लीफ़ हुई कि ‘आप इस
के बाद मुझे कभी नहीं देखेंगे।’ फिर वह उस के साथ
जहाज़ तक गए।

पौलुस यरूशलम जाता है

21 1 मुश्किल से इफ़िसुस के बुज़ुर्गों से अलग
हो कर हम रवाना हुए और सीधे जज़ीरा-ए-
कोस पहुँच गए। अगले दिन हम रुदुस आए और वहाँ
से पतरा पहुँचे। 2 पतरा में फ़ेनीके के लिए जहाज़ मिल

गया तो हम उस पर सवार हो कर रवाना हुए। 3 जब
क़ुब्रुस दूर से नज़र आया तो हम उस के जुनूब में से
गुज़र कर शाम के शहर सूर पहुँच गए जहाँ जहाज़ को
अपना सामान उतारना था। 4 जहाज़ से उतर कर हम
ने मक़ामी शागिर्दों को तलाश किया और सात दिन
उन के साथ ठहरे। उन ईमानदारों ने रूह-उल-क़ुद्स
की हिदायत से पौलुस को समझाने की कोशिश की
कि वह यरूशलम न जाए। 5 जब हम एक हफ़्ते के
बाद जहाज़ पर वापस चले गए तो पूरी जमाअत बाल-
बच्चों समेत हमारे साथ शहर से निकल कर साहिल
तक आई। वहीं हम ने घुटने टेक कर दुआ की 6 और
एक दूसरे को अलविदा कहा। फिर हम दुबारा जहाज़
पर सवार हुए जबकि वह अपने घरों को लौट गए।

7 सूर से अपना सफ़र जारी रख कर हम
पतुलिमयिस पहुँचे जहाँ हम ने मक़ामी ईमानदारों को
सलाम किया और एक दिन उन के साथ गुज़ारा।
8 अगले दिन हम रवाना हो कर क़ैसरिया पहुँच गए।
वहाँ हम फ़िलिप्पुस के घर ठहरे। यह वही फ़िलिप्पुस
था जो अल्लाह की ख़ुशख़बरी का मुनाद था और जिसे
इब्तिदाई दिनों में यरूशलम में खाना तक़्सीम करने
के लिए छः और आदमियों के साथ मुक़र्रर किया
गया था। 9 उस की चार ग़ैरशादीशुदा बेटियाँ थीं जो
नबुव्वत की नेमत रखती थीं। 10 कई दिन गुज़र गए
तो यहूदिया से एक नबी आया जिस का नाम अगबुस
था। 11 जब वह हम से मिलने आया तो उस ने पौलुस
की पेटी ले कर अपने पाँओ और हाथों को बांध
लिया और कहा, "रूह-उल-क़ुद्स फ़रमाता है कि
यरूशलम में यहूदी इस पेटी के मालिक को यूँ बांध
कर ग़ैरयहूदियों के हवाले करेंगे।"

12 यह सुन कर हम ने मक़ामी ईमानदारों समेत
पौलुस को समझाने की ख़ूब कोशिश की कि वह
यरूशलम न जाए। 13 लेकिन उस ने जवाब दिया,
"आप क्यूँ रोते और मेरा दिल तोड़ते हैं? देखें, मैं
ख़ुदावन्द ईसा के नाम की ख़ातिर यरूशलम में न
सिर्फ़ बांधे जाने बल्कि उस के लिए अपनी जान तक
देने को तय्यार हूँ।"

14 हम उसे क़ाइल न कर सके, इस लिए हम यह
कहते हुए ख़ामोश हो गए कि "ख़ुदावन्द की मर्ज़ी
पूरी हो।"

15 इस के बाद हम तय्यारियाँ करके यरूशलम चले
गए। 16 क़ैसरिया के कुछ शागिर्द भी हमारे साथ
चले और हमें मनासोन के घर पहुँचा दिया जहाँ हमें
ठहरना था। मनासोन क़ुब्रुस का था और जमाअत के
इब्तिदाई दिनों में ईमान लाया था।

पौलुस याक़ूब से मिलता है

17 जब हम यरूशलम पहुँचे तो मक़ामी भाइयों ने
गर्मजोशी से हमारा इस्तिक़्बाल किया। 18 अगले दिन
पौलुस हमारे साथ याक़ूब से मिलने गया। तमाम
मक़ामी बुज़ुर्ग भी हाज़िर हुए। 19 उन्हें सलाम करके
पौलुस ने तफ़्सील से बयान किया कि अल्लाह ने उस
की ख़िदमत की मारिफ़त ग़ैरयहूदियों में क्या किया
था। 20 यह सुन कर उन्हों ने अल्लाह की तम्जीद की।
फिर उन्हों ने कहा, "भाई, आप को मालूम है कि
हज़ारों यहूदी ईमान लाए हैं। और सब बड़ी सरगर्मी
से शरीअत पर अमल करते हैं। 21 उन्हें आप के बारे
में ख़बर दी गई है कि आप ग़ैरयहूदियों के दरमियान
रहने वाले यहूदियों को तालीम देते हैं कि वह मूसा
की शरीअत को छोड़ कर न अपने बच्चों का ख़तना
करवाएँ और न हमारे रस्म-ओ-रिवाज के मुताबिक़
ज़िन्दगी गुज़ारें। 22 अब हम क्या करें? वह तो ज़रूर
सुनेंगे कि आप यहाँ आ गए हैं। 23 इस लिए हम चाहते
हैं कि आप यह करें : हमारे पास चार मर्द हैं जिन्हों
ने मन्नत मान कर उसे पूरा कर लिया है। 24 अब उन्हें
साथ ले कर उन की तहारत की रुसूमात में शरीक हो
जाएँ। उन के अख़्राजात भी आप बर्दाश्त करें ताकि
वह अपने सरों को मुंडवा सकें। फिर सब जान लेंगे
कि जो कुछ आप के बारे में कहा जाता है वह झूट
है और कि आप भी शरीअत के मुताबिक़ ज़िन्दगी
गुज़ार रहे हैं। 25 जहाँ तक ग़ैरयहूदी ईमानदारों की
बात है हम उन्हें अपना फ़ैसला ख़त के ज़रीए भेज
चुके हैं कि वह इन चीज़ों से पर्हेज़ करें : बुतों को पेश

किया गया खाना, ख़ून, ऐसे जानवरों का गोश्त जिन्हें गला घूँट कर मार दिया गया हो और ज़िनाकारी।”

26 चुनाँचे अगले दिन पौलुस उन आदमियों को साथ ले कर उन की तहारत की रुसूमात में शरीक हुआ। फिर वह बैत-उल-मुक़द्दस में उस दिन का एलान करने गया जब तहारत के दिन पूरे हो जाएंगे और उन सब के लिए क़ुर्बानी पेश की जाएगी।

बैत-उल-मुक़द्दस में पौलुस की गिरिफ़्तारी

27 इस रस्म के लिए मुक़र्ररा सात दिन ख़त्म होने को थे कि सूबा आसिया के कुछ यहूदियों ने पौलुस को बैत-उल-मुक़द्दस में देखा। उन्हों ने पूरे हुजूम में हलचल मचा कर उसे पकड़ लिया 28 और चीख़ने लगे, “इस्राईल के हज़रात, हमारी मदद करें! यह वही आदमी है जो हर जगह तमाम लोगों को हमारी क़ौम, हमारी शरीअत और इस मक़ाम के ख़िलाफ़ तालीम देता है। न सिर्फ़ यह बल्कि इस ने बैत-उल-मुक़द्दस में ग़ैरयहूदियों को ला कर इस मुक़द्दस जगह की बेहुरमती भी की है।” 29 (यह आख़िरी बात उन्हों ने इस लिए की क्यूँकि उन्हों ने शहर में इफ़िसुस के ग़ैरयहूदी त्रुफ़िमुस को पौलुस के साथ देखा और ख़याल किया था कि वह उसे बैत-उल-मुक़द्दस में लाया है।)

30 पूरे शहर में हंगामा बरपा हुआ और लोग चारों तरफ़ से दौड़ कर आए। पौलुस को पकड़ कर उन्हों ने उसे बैत-उल-मुक़द्दस से बाहर घसीट लिया। जूँ ही वह निकल गए बैत-उल-मुक़द्दस के सहन के दरवाज़ों को बन्द कर दिया गया। 31 वह उसे मार डालने की कोशिश कर रहे थे कि रोमी पलटन के कमाँडर को ख़बर मिल गई, “पूरे यरूशलम में हलचल मच गई है।” 32 यह सुनते ही उस ने अपने फ़ौजियों और अफ़सरों को इकट्ठा किया और दौड़ कर उन के साथ हुजूम के पास उतर गया। जब हुजूम ने कमाँडर और उस के फ़ौजियों को देखा तो वह पौलुस की पिटाई करने से रुक गया। 33 कमाँडर ने नज़्दीक आ कर उसे गिरिफ़्तार किया और दो ज़न्जीरों से बांधने का हुक्म दिया। फिर उस ने पूछा, “यह कौन है? इस ने क्या किया है?” 34 हुजूम में से बाज़ कुछ चिल्लाए और बाज़ कुछ। कमाँडर कोई यक़ीनी बात मालूम न कर सका, क्यूँकि अफ़्रा-तफ़्री और शोर-शराबा बहुत था। इस लिए उस ने हुक्म दिया कि पौलुस को क़िले में ले जाया जाए। 35 वह क़िले की सीढ़ी तक पहुँच तो गए, लेकिन फिर हुजूम इतना बेकाबू हो गया कि फ़ौजियों को उसे अपने कंधों पर उठा कर चलना पड़ा। 36 लोग उन के पीछे पीछे चलते और चीख़ते चिल्लाते रहे, “उसे मार डालो! उसे मार डालो!”

पौलुस अपना दिफ़ा करता है

37 वह पौलुस को क़िले में ले जा रहे थे कि उस ने कमाँडर से पूछा, “क्या आप से एक बात करने की इजाज़त है?”

कमाँडर ने कहा, “अच्छा, आप यूनानी बोल लेते हैं? 38 तो क्या आप वही मिस्री नहीं हैं जो कुछ देर पहले हुकूमत के ख़िलाफ़ उठ कर चार हज़ार दहशतगरदों को रेगिस्तान में लाया था?”

39 पौलुस ने जवाब दिया, “मैं यहूदी और किलिकिया के मर्कज़ी शहर तर्सुस का शहरी हूँ। मेहरबानी करके मुझे लोगों से बात करने दें।”

40 कमाँडर मान गया और पौलुस ने सीढ़ी पर खड़े हो कर हाथ से इशारा किया। जब सब ख़ामोश हो गए तो पौलुस अरामी ज़बान में उन से मुख़ातिब हुआ,

22 1 “भाइयो और बुज़ुर्गो, मेरी बात सुनें कि मैं अपने दिफ़ा में कुछ बताऊँ।” 2 जब उन्हों ने सुना कि वह अरामी ज़बान में बोल रहा है तो वह मज़ीद ख़ामोश हो गए। पौलुस ने अपनी बात जारी रखी।

3 “मैं यहूदी हूँ और किलिकिया के शहर तर्सुस में पैदा हुआ। लेकिन मैं ने इसी शहर यरूशलम में परवरिश पाई और जम्लीएल के ज़ेर-ए-निगरानी तालीम हासिल की। उन्हों ने मुझे तफ़्सील और एहतियात से हमारे बापदादा की शरीअत सिखाई। उस वक़्त मैं भी आप की तरह अल्लाह के लिए सरगर्म

था। 4 इस लिए मैं ने इस नई राह के पैरोकारों का
पीछा किया और मर्दों और ख़वातीन को गिरिफ़्तार
करके जेल में डलवा दिया यहाँ तक कि मरवा
भी दिया। 5 इमाम-ए-आज़म और यहूदी अदालत-ए-
आलिया के मैम्बरान इस बात की तस्दीक़ कर सकते
हैं। उन ही से मुझे दमिश्क़ में रहने वाले यहूदी भाइयों
के लिए सिफ़ारिशी ख़त मिल गए ताकि मैं वहाँ भी
जा कर इस नए फ़िर्क़े के लोगों को गिरिफ़्तार करके
सज़ा देने के लिए यरूशलम लाऊँ।

पौलुस की तब्दीली का बयान

6 मैं इस मक़्सद के लिए दमिश्क़ के क़रीब पहुँच
गया था कि अचानक आसमान की तरफ़ से एक
तेज़ रौशनी मेरे गिर्द चमकी। 7 मैं ज़मीन पर गिर
पड़ा तो एक आवाज़ सुनाई दी, 'साऊल, साऊल, तू
मुझे क्यूँ सताता है?' 8 मैं ने पूछा, 'ख़ुदावन्द, आप
कौन हैं?' आवाज़ ने जवाब दिया, 'मैं ईसा नासरी हूँ
जिसे तू सताता है।' 9 मेरे हमसफ़रों ने रौशनी को तो
देखा, लेकिन मुझ से मुख़ातिब होने वाले की आवाज़
न सुनी। 10 मैं ने पूछा, 'ख़ुदावन्द, मैं क्या करूँ?'
ख़ुदावन्द ने जवाब दिया, 'उठ कर दमिश्क़ में जा।
वहाँ तुझे वह सारा काम बताया जाएगा जो अल्लाह
तेरे ज़िम्मे लगाने का इरादा रखता है।' 11 रौशनी की
तेज़ी ने मुझे अंधा कर दिया था, इस लिए मेरे साथी
मेरा हाथ पकड़ कर मुझे दमिश्क़ ले गए।

12 वहाँ एक आदमी रहता था जिस का नाम
हननियाह था। वह शरीअत का कट्टर पैरोकार था
और वहाँ के रहने वाले यहूदियों में नेकनाम। 13 वह
आया और मेरे पास खड़े हो कर कहा, 'साऊल भाई,
दुबारा बीना हो जाएँ!' उसी लम्हे मैं उसे देख सका।
14 फिर उस ने कहा, 'हमारे बापदादा के ख़ुदा ने आप
को इस मक़्सद के लिए चुन लिया है कि आप उस
की मर्ज़ी जान कर उस के रास्त ख़ादिम को देखें और
उस के अपने मुँह से उस की आवाज़ सुनें। 15 जो कुछ
आप ने देख और सुन लिया है उस की गवाही आप
तमाम लोगों को देंगे। 16 चुनाँचे आप क्यूँ देर कर रहे
हैं? उठें और उस के नाम में बपतिस्मा लें ताकि आप
के गुनाह धुल जाएँ।'

पौलुस की ग़ैरयहूदियों में ख़िदमत का बुलावा

17 जब मैं यरूशलम वापस आया तो मैं एक दिन
बैत-उल-मुक़द्दस में गया। वहाँ दुआ करते करते मैं
वज्द की हालत में आ गया 18 और ख़ुदावन्द को
देखा। उस ने फ़रमाया, 'जल्दी कर! यरूशलम को
फ़ौरन छोड़ दे क्यूँकि लोग मेरे बारे में तेरी गवाही
को क़बूल नहीं करेंगे।' 19 मैं ने एतिराज़ किया, 'ऐ
ख़ुदावन्द, वह तो जानते हैं कि मैं ने जगह-ब-जगह
इबादतख़ाने में जा कर तुझ पर ईमान रखने वालों
को गिरिफ़्तार किया और उन की पिटाई करवाई।
20 और उस वक़्त भी जब तेरे शहीद स्तिफ़नुस को
क़त्ल किया जा रहा था मैं साथ खड़ा था। मैं राज़ी था
और उन लोगों के कपड़ों की निगरानी कर रहा था जो
उसे संगसार कर रहे थे।' 21 लेकिन ख़ुदावन्द ने कहा,
'जा, क्यूँकि मैं तुझे दूरदराज़ इलाक़ों में ग़ैरयहूदियों
के पास भेज दूँगा'।"

22 यहाँ तक हुजूम पौलुस की बातें सुनता रहा।
लेकिन अब वह चिल्ला उठे, "इसे हटा दो! इसे जान
से मार दो! यह ज़िन्दा रहने के लाइक़ नहीं!" 23 वह
चीख़ें मार मार कर अपनी चादरें उतारने और हवा में
गर्द उड़ाने लगे। 24 इस पर कमाँडर ने हुक्म दिया कि
पौलुस को क़िले में ले जाया जाए और कोड़े लगा
कर उस की पूछगछ की जाए। क्यूँकि वह मालूम
करना चाहता था कि लोग किस वजह से पौलुस के
ख़िलाफ़ यूँ चीख़ें मार रहे हैं। 25 जब वह उसे कोड़े
लगाने के लिए ले कर जा रहे थे तो पौलुस ने साथ
खड़े अफ़्सर [f]से कहा, "क्या आप के लिए जाइज़ है
कि एक रोमी शहरी के कोड़े लगवाएँ और वह भी
अदालत में पेश किए बग़ैर?"

---

[f]सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़्सर।

26 अफ़सर ने जब यह सुना तो कमाँडर के पास जा
कर उसे इत्तिला दी, “आप क्या करने को हैं? यह
आदमी तो रोमी शहरी है!”
27 कमाँडर पौलुस के पास आया और पूछा, “मुझे
सहीह बताएँ, क्या आप रोमी शहरी हैं?”
पौलुस ने जवाब दिया, “जी हाँ।”
28 कमाँडर ने कहा, “मैं तो बड़ी रक़म दे कर शहरी
बना हूँ।”
पौलुस ने जवाब दिया, “लेकिन मैं तो पैदाइशी
शहरी हूँ।”
29 यह सुनते ही वह फ़ौजी जो उस की पूछगछ करने
को थे पीछे हट गए। कमाँडर ख़ुद घबरा गया कि मैं
ने एक रोमी शहरी को ज़न्जीरों में जकड़ रखा है।

पौलुस यहूदी अदालत-ए-आलिया के सामने

30 अगले दिन कमाँडर साफ़ मालूम करना चाहता
था कि यहूदी पौलुस पर क्यूँ इल्ज़ाम लगा रहे हैं। इस
लिए उस ने राहनुमा इमामों और यहूदी अदालत-ए-
आलिया के तमाम मैम्बरान का इज्लास मुनअक़िद
करने का हुक्म दिया। फिर पौलुस को आज़ाद करके
क़िले से नीचे लाया और उन के सामने खड़ा किया।

23 1 पौलुस ने ग़ौर से अदालत-ए-आलिया के
मैम्बरान की तरफ़ देख कर कहा, “भाइयो,
आज तक मैं ने साफ़ ज़मीर के साथ अल्लाह के
सामने ज़िन्दगी गुज़ारी है।” 2 इस पर इमाम-ए-आज़म
हननियाह ने पौलुस के क़रीब खड़े लोगों से कहा कि
वह उस के मुँह पर थप्पड़ मारें। 3 पौलुस ने उस से
कहा, “मक्कार! [8]अल्लाह तुम को ही मारेगा, क्यूँकि तुम
यहाँ बैठे शरीअत के मुताबिक़ मेरा फ़ैसला करना
चाहते हो जबकि मुझे मारने का हुक्म दे कर ख़ुद
शरीअत की ख़िलाफ़वरज़ी कर रहे हो!”
4 पौलुस के क़रीब खड़े आदमियों ने कहा, “तुम
अल्लाह के इमाम-ए-आज़म को बुरा कहने की जुरअत
क्यूँकर करते हो?”
5 पौलुस ने जवाब दिया, “भाइयो, मुझे मालूम न
था कि वह इमाम-ए-आज़म हैं, वर्ना ऐसे अल्फ़ाज़
इस्तेमाल न करता। क्यूँकि कलाम-ए-मुक़द्दस में
लिखा है कि अपनी क़ौम के हाकिमों को बुरा-भला
मत कहना।”
6 पौलुस को इल्म था कि अदालत-ए-आलिया के
कुछ लोग सदूक़ी हैं जबकि दीगर फ़रीसी हैं। इस
लिए वह इज्लास में पुकार उठा, “भाइयो, मैं फ़रीसी
बल्कि फ़रीसी का बेटा भी हूँ। मुझे इस लिए अदालत
में पेश किया गया है कि मैं मुर्दों में से जी उठने की
उम्मीद रखता हूँ।”
7 इस बात से फ़रीसी और सदूक़ी एक दूसरे से
झगड़ने लगे और इज्लास के अफ़राद दो गुरोहों में
बट गए। 8 वजह यह थी कि सदूक़ी नहीं मानते कि
हम जी उठेंगे। वह फ़रिश्तों और रूहों का भी इन्कार
करते हैं। इस के मुक़ाबले में फ़रीसी यह सब कुछ
मानते हैं। 9 होते होते बड़ा शोर मच गया। फ़रीसी
फ़िर्क़े के कुछ आलिम खड़े हो कर जोश से बह्स
करने लगे, “हमें इस आदमी में कोई ग़लती नज़र नहीं
आती, शायद कोई रूह या फ़रिश्ता इस से हमकलाम
हुआ हो।”
10 झगड़े ने इतना ज़ोर पकड़ा कि कमाँडर डर गया,
क्यूँकि ख़तरा था कि वह पौलुस के टुकड़े कर डालें।
इस लिए उस ने अपने फ़ौजियों को हुक्म दिया कि
वह उतरें और पौलुस को यहूदियों के बीच में से छीन
कर क़िले में वापस लाएँ।
11 उसी रात ख़ुदावन्द पौलुस के पास आ खड़ा
हुआ और कहा, “हौसला रख, क्यूँकि जिस तरह तू
ने यरूशलम में मेरे बारे में गवाही दी है लाज़िम है कि
इसी तरह रोम शहर में भी गवाही दे।”

पौलुस के ख़िलाफ़ साज़िश

12 अगले दिन कुछ यहूदियों ने साज़िश करके
क़सम खाई, “हम न तो कुछ खाएँगे, न पिएँगे जब

---

[8]लफ़्ज़ी तर्जुमा : सफेदी की हुई दीवार।

तक पौलुस को क़त्ल न कर लें।” 13 चालीस से
ज़्यादा मर्दों ने इस साज़िश में हिस्सा लिया। 14 वह
राहनुमा इमामों और बुज़ुर्गों के पास गए और कहा,
“हम ने पक्की क़सम खाई है कि कुछ नहीं खाएँगे जब
तक पौलुस को क़त्ल न कर लें। 15 अब ज़रा यहूदी
अदालत-ए-आलिया के साथ मिल कर कमाँडर से
गुज़ारिश करें कि वह उसे दुबारा आप के पास लाएँ।
बहाना यह पेश करें कि आप मज़ीद तफ़सील से उस
के मुआमले का जाइज़ा लेना चाहते हैं। जब उसे
लाया जाएगा तो हम उस के यहाँ पहुँचने से पहले
पहले उसे मार डालने के लिए तय्यार होंगे।”

16 लेकिन पौलुस के भान्जे को इस बात का पता
चल गया। उस ने क़िले में जा कर पौलुस को इत्तिला
दी। 17 इस पर पौलुस ने रोमी अफ़सरों [h]में से एक को
बुला कर कहा, “इस जवान को कमाँडर के पास ले
जाएँ। इस के पास उन के लिए ख़बर है।” 18 अफ़सर
भान्जे को कमाँडर के पास ले गया और कहा, “क़ैदी
पौलुस ने मुझे बुला कर मुझ से गुज़ारिश की कि इस
नौजवान को आप के पास ले आऊँ। उस के पास
आप के लिए ख़बर है।”

19 कमाँडर नौजवान का हाथ पकड़ कर दूसरों से
अलग हो गया। फिर उस ने पूछा, “क्या ख़बर है जो
आप मुझे बताना चाहते हैं?”

20 उस ने जवाब दिया, “यहूदी आप से दरख़्वास्त
करने पर मुत्तफ़िक़ हो गए हैं कि आप कल पौलुस को
दुबारा यहूदी अदालत-ए-आलिया के सामने लाएँ।
बहाना यह होगा कि वह और ज़्यादा तफ़सील से
उस के बारे में मालूमात हासिल करना चाहते हैं।
21 लेकिन उन की बात न मानें, क्यूँकि उन में से
चालीस से ज़्यादा आदमी उस की ताक में बैठे हैं।
उन्हों ने क़सम खाई है कि हम न कुछ खाएँगे न पिएँगे
जब तक उसे क़त्ल न कर लें। वह अभी तय्यार बैठे
हैं और सिर्फ़ इस इन्तिज़ार में हैं कि आप उन की
बात मानें।”

22 कमाँडर ने नौजवान को रुख़्सत करके कहा,
“जो कुछ आप ने मुझे बता दिया है उस का किसी
से ज़िक्र न करना।”

पौलुस को गवर्नर फ़ेलिक्स के पास भेजा जाता है

23 फिर कमाँडर ने अपने अफ़सरों में से दो को
बुलाया जो सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर थे। उस ने
हुक्म दिया, “दो सौ फ़ौजी, सत्तर घुड़सवार और दो
सौ नेज़ाबाज़ तय्यार करें। उन्हें आज रात को नौ
बजे क़ैसरिया जाना है। 24 पौलुस के लिए भी घोड़े
तय्यार रखना ताकि वह सहीह-सलामत गवर्नर के
पास पहुँचे।” 25 फिर उस ने यह ख़त लिखा,

26 “अज़ : क्लौदियुस लूसियास
मुअज़्ज़ज़ गवर्नर फ़ेलिक्स को सलाम। 27 यहूदी
इस आदमी को पकड़ कर क़त्ल करने को थे। मुझे
पता चला कि यह रोमी शहरी है, इस लिए मैं ने अपने
दस्तों के साथ आ कर इसे निकाल कर बचा लिया।
28 मैं मालूम करना चाहता था कि वह क्यूँ इस पर
इल्ज़ाम लगा रहे हैं, इस लिए मैं उतर कर इसे उन की
अदालत-ए-आलिया के सामने लाया। 29 मुझे मालूम
हुआ कि उन का इल्ज़ाम उन की शरीअत से ताल्लुक़
रखता है। लेकिन इस ने ऐसा कुछ नहीं किया जिस
की बिना पर यह जेल में डालने या सज़ा-ए-मौत के
लाइक़ हो। 30 फिर मुझे इत्तिला दी गई कि इस आदमी
को क़त्ल करने की साज़िश की गई है, इस लिए मैं
ने इसे फ़ौरन आप के पास भेज दिया। मैं ने इल्ज़ाम
लगाने वालों को भी हुक्म दिया कि वह इस पर अपना
इल्ज़ाम आप को ही पेश करें।”

31 फ़ौजियों ने उसी रात कमाँडर का हुक्म पूरा
किया। पौलुस को साथ ले कर वह अन्तीपत्रिस तक
पहुँच गए। 32 अगले दिन पयादे क़िले को वापस चले
जबकि घुड़सवारों ने पौलुस को ले कर सफ़र जारी
रखा। 33 क़ैसरिया पहुँच कर उन्हों ने पौलुस को ख़त
समेत गवर्नर फ़ेलिक्स के सामने पेश किया। 34 उस ने

---

[h]सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

ख़त पढ़ लिया और फिर पौलुस से पूछा, “आप किस
सूबे के हैं?” पौलुस ने कहा, “किलिकिया का।”
35 इस पर गवर्नर ने कहा, “मैं आप की समाअत
उस वक़्त करूँगा जब आप पर इल्ज़ाम लगाने वाले
पहुँचेंगे।” और उस ने हुक्म दिया कि हेरोदेस के महल
में पौलुस की पहरादारी की जाए।

पौलुस पर मुक़द्दमा

24 1 पाँच दिन के बाद इमाम-ए-आज़म
हननियाह, कुछ यहूदी बुज़ुर्ग और एक
वकील बनाम तिर्तुल्लुस क़ैसरिया आए ताकि गवर्नर
के सामने पौलुस पर अपना इल्ज़ाम पेश करें।
2 पौलुस को बुलाया गया तो तिर्तुल्लुस ने फ़ेलिक्स को
यहूदियों का इल्ज़ाम पेश किया,

“आप के ज़ेर-ए-हुकूमत हमें बड़ा अम्न-ओ-अमान
हासिल है, और आप की दूरअन्देशी से इस मुल्क
में बहुत तरक़्क़ी हुई है। 3 मुअज़्ज़ज़ फ़ेलिक्स, इन
तमाम बातों के लिए हम आप के ख़ास ममनून हैं।
4 लेकिन मैं नहीं चाहता कि आप मेरी बातों से हद से
ज़्यादा थक जाएँ। अर्ज़ सिर्फ़ यह है कि आप हम पर
मेहरबानी का इज़हार करके एक लम्हे के लिए हमारे
मुआमले पर तवज्जुह दें। 5 हम ने इस आदमी को
अवाम दुश्मन पाया है जो पूरी दुनिया के यहूदियों
में फ़साद पैदा करता रहता है। यह नासरी फ़िर्क़े
का एक सरग़ना है 6 और हमारे बैत-उल-मुक़द्दस की
बेहुरमती करने की कोशिश कर रहा था जब हम ने
इसे पकड़ा [ताकि अपनी शरीअत के मुताबिक़ इस
पर मुक़द्दमा चलाएँ। 7 मगर लूसियास कमाँडर आ
कर इसे ज़बरदस्ती हम से छीन कर ले गया और
हुक्म दिया कि इस के मुद्दई आप के पास हाज़िर हों।]
8 इस की पूछगछ करके आप ख़ुद हमारे इल्ज़ामात
की तस्दीक़ करा सकते हैं।” 9 फिर बाक़ी यहूदियों
ने उस की हाँ में हाँ मिला कर कहा कि यह वाक़ई
ऐसा ही है।

पौलुस का दिफ़ा

10 गवर्नर ने इशारा किया कि पौलुस अपनी बात
पेश करे। उस ने जवाब में कहा,

“मैं जानता हूँ कि आप कई सालों से इस क़ौम के
जज मुक़र्रर हैं, इस लिए ख़ुशी से आप को अपना
दिफ़ा पेश करता हूँ। 11 आप ख़ुद मालूम कर सकते
हैं कि मुझे यरूशलम गए सिर्फ़ बारह दिन हुए हैं। जाने
का मक़्सद इबादत में शरीक होना था। 12 वहाँ न मैं ने
बैत-उल-मुक़द्दस में किसी से बह्स-मुबाहसा किया,
न शहर के किसी इबादतख़ाने में या किसी और जगह
हलचल मचाई। इन लोगों ने भी मेरी कोई ऐसी हरकत
नहीं देखी। 13 जो इल्ज़ाम यह मुझ पर लगा रहे हैं उस
का कोई भी सबूत पेश नहीं कर सकते। 14 बेशक मैं
तस्लीम करता हूँ कि मैं उसी राह पर चलता हूँ जिसे
यह बिदअत क़रार देते हैं। लेकिन मैं अपने बापदादा
के ख़ुदा की परस्तिश करता हूँ। जो कुछ भी शरीअत
और नबियों के सहीफ़ों में लिखा है उसे मैं मानता हूँ।
15 और मैं अल्लाह पर वही उम्मीद रखता हूँ जो यह भी
रखते हैं, कि क़ियामत का एक दिन होगा जब वह
रास्तबाज़ों और नारास्तों को मुर्दों में से ज़िन्दा कर
देगा। 16 इस लिए मेरी पूरी कोशिश यही होती है कि
हर वक़्त मेरा ज़मीर अल्लाह और इन्सान के सामने
साफ़ हो।

17 कई सालों के बाद मैं यरूशलम वापस आया।
मेरे पास क़ौम के ग़रीबों के लिए ख़ैरात थी और मैं
बैत-उल-मुक़द्दस में क़ुर्बानियाँ भी पेश करना चाहता
था। 18 मुझ पर इल्ज़ाम लगाने वालों ने मुझे बैत-उल-
मुक़द्दस में देखा जब मैं तहारत की रुसूमात अदा
कर रहा था। उस वक़्त न कोई हुजूम था, न फ़साद।
19 लेकिन सूबा आसिया के कुछ यहूदी वहाँ थे।
अगर उन्हें मेरे ख़िलाफ़ कोई शिकायत है तो उन्हें ही
यहाँ हाज़िर हो कर मुझ पर इल्ज़ाम लगाना चाहिए।
20 या यह लोग ख़ुद बताएँ कि जब मैं यहूदी अदालत-
ए-आलिया के सामने खड़ा था तो उन्हों ने मेरा क्या
जुर्म मालूम किया। 21 सिर्फ़ यह एक जुर्म हो सकता है

कि मैं ने उस वक़्त उन के हुज़ूर पुकार कर यह बात
बयान की, ‘आज मुझ पर इस लिए इल्ज़ाम लगाया
जा रहा है कि मैं ईमान रखता हूँ कि मुर्दे जी उठेंगे’।”
22 फ़ेलिक्स ने जो ईसा की राह से ख़ूब वाक़िफ़
था मुक़द्दमा मुल्तवी कर दिया। उस ने कहा, “जब
कमाँडर लूसियास आएँगे फिर मैं फ़ैसला दूँगा।”
23 उस ने पौलुस पर मुक़र्रर अफ़्सर [i]को हुक्म दिया
कि वह उस की पहरादारी तो करे लेकिन उसे कुछ
सहूलियात भी दे और उस के अज़ीज़ों को उस से
मिलने और उस की ख़िदमत करने से न रोके।

पौलुस फ़ेलिक्स और द्रूसिल्ला के सामने

24 कुछ दिनों के बाद फ़ेलिक्स अपनी अहलिया
द्रूसिल्ला के हमराह वापस आया। द्रूसिल्ला यहूदी थी।
पौलुस को बुला कर उन्हों ने ईसा पर ईमान के बारे में
उस की बातें सुनीं। 25 लेकिन जब रास्तबाज़ी, ज़ब्त-
ए-नफ़्स और आने वाली अदालत के मज़ामीन छिड़
गए तो फ़ेलिक्स ने घबरा कर उस की बात काटी,
“फ़िलहाल काफ़ी है। अब इजाज़त है, जब मेरे पास
वक़्त होगा मैं आप को बुला लूँगा।” 26 साथ साथ
वह यह उम्मीद भी रखता था कि पौलुस रिश्वत देगा,
इस लिए वह कई बार उसे बुला कर उस से बात
करता रहा।
27 दो साल गुज़र गए तो फ़ेलिक्स की जगह
पुरकियुस फ़ेस्तुस आ गया। ताहम उस ने पौलुस को
क़ैदख़ाने में छोड़ दिया, क्यूँकि वह यहूदियों के साथ
रिआयत बरतना चाहता था।

पौलुस शहन्शाह से अपील करता है

25 1 क़ैसरिया पहुँचने के तीन दिन बाद फ़ेस्तुस
यरूशलम चला गया। 2 वहाँ राहनुमा
इमामों और बाक़ी यहूदी राहनुमाओं ने उस के सामने
पौलुस पर अपने इल्ज़ामात पेश किए। उन्हों ने बड़े
ज़ोर से 3 मिन्नत की कि वह उन की रिआयत करके
पौलुस को यरूशलम मुन्तक़िल करे। वजह यह थी
कि वह घात में बैठ कर रास्ते में पौलुस को क़त्ल
करना चाहते थे। 4 लेकिन फ़ेस्तुस ने जवाब दिया,
“पौलुस को क़ैसरिया में रखा गया है और मैं ख़ुद
वहाँ जाने को हूँ। 5 अगर उस से कोई जुर्म सरज़द
हुआ है तो आप के कुछ राहनुमा मेरे साथ वहाँ जा
कर उस पर इल्ज़ाम लगाएँ।”
6 फ़ेस्तुस ने मज़ीद आठ दस दिन उन के साथ
गुज़ारे, फिर क़ैसरिया चला गया। अगले दिन वह
अदालत करने के लिए बैठा और पौलुस को लाने
का हुक्म दिया। 7 जब पौलुस पहुँचा तो यरूशलम से
आए हुए यहूदी उस के इर्दगिर्द खड़े हुए और उस पर
कई सन्जीदा इल्ज़ामात लगाए, लेकिन वह कोई भी
बात साबित न कर सके। 8 पौलुस ने अपना दिफ़ा
करके कहा, “मुझ से न यहूदी शरीअत, न बैत-उल-
मुक़द्दस और न शहन्शाह के ख़िलाफ़ जुर्म सरज़द
हुआ है।”
9 लेकिन फ़ेस्तुस यहूदियों के साथ रिआयत बरतना
चाहता था, इस लिए उस ने पूछा, “क्या आप
यरूशलम जा कर वहाँ की अदालत में मेरे सामने
पेश किए जाने के लिए तय्यार हैं?”
10 पौलुस ने जवाब दिया, “मैं शहन्शाह की रोमी
अदालत में खड़ा हूँ और लाज़िम है कि यहीं मेरा
फ़ैसला किया जाए। आप भी इस से ख़ूब वाक़िफ़
हैं कि मैं ने यहूदियों से कोई नाइन्साफ़ी नहीं की।
11 अगर मुझ से कोई ऐसा काम सरज़द हुआ हो जो
सज़ा-ए-मौत के लाइक़ हो तो मैं मरने से इन्कार नहीं
करूँगा। लेकिन अगर बेक़ुसूर हूँ तो किसी को भी
मुझे इन आदमियों के हवाले करने का हक़ नहीं है।
मैं शहन्शाह से अपील करता हूँ!”
12 यह सुन कर फ़ेस्तुस ने अपनी कौंसल से मश्वरा
करके कहा, “आप ने शहन्शाह से अपील की है, इस
लिए आप शहन्शाह ही के पास जाएंगे।”

---

[i]सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़्सर।

पौलुस अग्रिप्पा और बिरनीके के सामने

13 कुछ दिन गुज़र गए तो अग्रिप्पा बादशाह अपनी
बहन बिरनीके के साथ फ़ेस्तुस से मिलने आया।
14 वह कई दिन वहाँ ठहरे रहे। इतने में फ़ेस्तुस
ने पौलुस के मुआमले पर बादशाह के साथ बात
की। उस ने कहा, "यहाँ एक क़ैदी है जिसे फ़ेलिक्स
छोड़ कर चला गया है। 15 जब मैं यरूशलम गया
तो राहनुमा इमामों और यहूदी बुज़ुर्गों ने उस पर
इल्ज़ामात लगा कर उसे मुजरिम क़रार देने का
तक़ाज़ा किया। 16 मैं ने उन्हें जवाब दिया, 'रोमी
क़ानून किसी को अदालत में पेश किए बग़ैर मुजरिम
क़रार नहीं देता। लाज़िम है कि उसे पहले इल्ज़ाम
लगाने वालों का सामना करने का मौक़ा दिया जाए
ताकि अपना दिफ़ा कर सके।' 17 जब उस पर इल्ज़ाम
लगाने वाले यहाँ पहुँचे तो मैं ने ताख़ीर न की। मैं
ने अगले ही दिन अदालत मुनअक़िद करके पौलुस
को पेश करने का हुक्म दिया। 18 लेकिन जब उस
के मुख़ालिफ़ इल्ज़ाम लगाने के लिए खड़े हुए तो
वह ऐसे जुर्म नहीं थे जिन की तवक़्क़ो मैं कर रहा
था। 19 उन का उस के साथ कोई और झगड़ा था
जो उन के अपने मज़्हब और एक मुर्दा आदमी बनाम
ईसा से ताल्लुक़ रखता है। इस ईसा के बारे में पौलुस
दावा करता है कि वह ज़िन्दा है। 20 मैं उलझन में पड़
गया क्यूँकि मुझे मालूम नहीं था कि किस तरह इस
मुआमले का सहीह जाइज़ा लूँ। चुनाँचे मैं ने पूछा,
'क्या आप यरूशलम जा कर वहाँ अदालत में पेश
किए जाने के लिए तय्यार हैं?' 21 लेकिन पौलुस ने
अपील की, 'शहन्शाह ही मेरा फ़ैसला करे।' फिर मैं
ने हुक्म दिया कि उसे उस वक़्त तक क़ैद में रखा जाए
जब तक उसे शहन्शाह के पास भेजने का इन्तिज़ाम
न करवा सकूँ।"

22 अग्रिप्पा ने फ़ेस्तुस से कहा, "मैं भी उस शख़्स
को सुनना चाहता हूँ।"

उस ने जवाब दिया, "कल ही आप उस को सुन
लेंगे।"

23 अगले दिन अग्रिप्पा और बिरनीके बड़ी धूमधाम
के साथ आए और बड़े फ़ौजी अफ़सरों और शहर के
नामवर आदमियों के साथ दीवान-ए-आम में दाख़िल
हुए। फ़ेस्तुस के हुक्म पर पौलुस को अन्दर लाया
गया। 24 फ़ेस्तुस ने कहा, "अग्रिप्पा बादशाह और
तमाम ख़वातीन-ओ-हज़रात! आप यहाँ एक आदमी
को देखते हैं जिस के बारे में तमाम यहूदी ख़्वाह वह
यरूशलम के रहने वाले हों, ख़्वाह यहाँ के, शोर
मचा कर सज़ा-ए-मौत का तक़ाज़ा कर रहे हैं। 25 मेरी
दानिस्त में तो इस ने कोई ऐसा काम नहीं किया जो
सज़ा-ए-मौत के लाइक़ हो। लेकिन इस ने शहन्शाह
से अपील की है, इस लिए मैं ने इसे रोम भेजने का
फ़ैसला किया है। 26 लेकिन मैं शहन्शाह को क्या
लिख दूँ? क्यूँकि इस पर कोई साफ़ इल्ज़ाम नहीं
लगाया गया। इस लिए मैं इसे आप सब के सामने
लाया हूँ, ख़ासकर अग्रिप्पा बादशाह आप के सामने,
ताकि आप इस की तफ़्तीश करें और मैं कुछ लिख
सकूँ। 27 क्यूँकि मुझे बेतुकी सी बात लग रही है कि
हम एक क़ैदी को रोम भेजें जिस पर अब तक साफ़
इल्ज़ामात नहीं लगाए गए हैं।"

पौलुस का अग्रिप्पा के सामने दिफ़ा

26 1 अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, "आप को
अपने दिफ़ा में बोलने की इजाज़त है।"
पौलुस ने हाथ से इशारा करके अपने दिफ़ा में बोलने
का आग़ाज़ किया,

2 "अग्रिप्पा बादशाह, मैं अपने आप को ख़ुशनसीब
समझता हूँ कि आज आप ही मेरा यह दिफ़ाई बयान
सुन रहे हैं जो मुझे यहूदियों के तमाम इल्ज़ामात के
जवाब में देना पड़ रहा है। 3 ख़ासकर इस लिए कि
आप यहूदियों के रस्म-ओ-रिवाज और तनाज़ुओं से
वाक़िफ़ हैं। मेरी अर्ज़ है कि आप सब्र से मेरी बात
सुनें।

4 तमाम यहूदी जानते हैं कि मैं ने जवानी से ले कर
अब तक अपनी क़ौम बल्कि यरूशलम में किस तरह
ज़िन्दगी गुज़ारी। 5 वह मुझे बड़ी देर से जानते हैं और

अगर चाहें तो इस की गवाही भी दे सकते हैं कि मैं
फ़रीसी की ज़िन्दगी गुज़ारता था, हमारे मज़्हब के
उसी फ़िर्क़े की जो सब से कट्टर है। 6 और आज
मेरी अदालत इस वजह से की जा रही है कि मैं
उस वादे पर उम्मीद रखता हूँ जो अल्लाह ने हमारे
बापदादा से किया। 7 हक़ीक़त में यह वही उम्मीद
है जिस की वजह से हमारे बारह क़बीले दिन रात
और बड़ी लगन से अल्लाह की इबादत करते रहते हैं
और जिस की तक्मील के लिए वह तड़पते हैं। तो
भी ऐ बादशाह, यह लोग मुझ पर यह उम्मीद रखने
का इल्ज़ाम लगा रहे हैं। 8 लेकिन आप सब को यह
ख़याल क्यूँ नाक़ाबिल-ए-यक़ीन लगता है कि अल्लाह
मुर्दों को ज़िन्दा कर देता है?

9 पहले मैं भी समझता था कि हर मुमकिन तरीक़े
से ईसा नासरी की मुख़ालफ़त करना मेरा फ़र्ज़ है।
10 और यह मैं ने यरूशलम में किया भी। राहनुमा
इमामों से इख़तियार ले कर मैं ने वहाँ के बहुत से
मुक़द्दसों को जेल में डलवा दिया। और जब कभी
उन्हें सज़ा-ए-मौत देने का फ़ैसला करना था तो मैं ने
भी इस हक़ में वोट दिया। 11 मैं तमाम इबादतख़ानों
में गया और बहुत दफ़ा उन्हें सज़ा दिला कर ईसा
के बारे में कुफ़्र बकने पर मज्बूर करने की कोशिश
करता रहा। मैं इतने तैश में आ गया था कि उन की
ईज़ारसानी की ग़रज़ से बैरून-ए-मुल्क भी गया।

पौलुस अपनी तब्दीली का ज़िक्र करता है

12 एक दिन मैं राहनुमा इमामों से इख़तियार और
इजाज़तनामा ले कर दमिश्क़ जा रहा था। 13 दोपहर
तक़रीबन बारह बजे मैं सड़क पर चल रहा था
कि एक रौशनी देखी जो सूरज से ज़्यादा तेज़ थी।
वह आसमान से आ कर मेरे और मेरे हमसफ़रों
के गिर्दागिर्द चमकी। 14 हम सब ज़मीन पर गिर
गए और मैं ने अरामी ज़बान में एक आवाज़ सुनी,
'साऊल, साऊल, तू मुझे क्यूँ सताता है? यूँ मेरे
आँकुस के ख़िलाफ़ पाँओ मारना तेरे लिए ही दुश्वारी
का बाइस है।' 15 मैं ने पूछा, 'ख़ुदावन्द, आप कौन
हैं?' ख़ुदावन्द ने जवाब दिया, 'मैं ईसा हूँ, वही जिसे
तू सताता है। 16 लेकिन अब उठ कर खड़ा हो जा,
क्यूँकि मैं तुझे अपना ख़ादिम और गवाह मुक़र्रर करने
के लिए तुझ पर ज़ाहिर हुआ हूँ। जो कुछ तू ने देखा
है उस की तुझे गवाही देनी है और उस की भी जो
मैं आइन्दा तुझ पर ज़ाहिर करूँगा। 17 मैं तुझे तेरी
अपनी क़ौम से बचाए रखूँगा और उन ग़ैरयहूदी क़ौमों
से भी जिन के पास तुझे भेजूँगा। 18 तू उन की आँखों
को खोल देगा ताकि वह तारीकी और इब्लीस के
इख़तियार से नूर और अल्लाह की तरफ़ रुजू करें।
फिर उन के गुनाहों को मुआफ़ कर दिया जाएगा और
वह उन के साथ आसमानी मीरास में शरीक होंगे जो
मुझ पर ईमान लाने से मुक़द्दस किए गए हैं।'

पौलुस अपनी ख़िदमत का बयान करता है

19 ऐ अग्रिप्पा बादशाह, जब मैं ने यह सुना तो
मैं ने इस आसमानी रोया की नाफ़रमानी न की
20 बल्कि इस बात की मुनादी की कि लोग तौबा
करके अल्लाह की तरफ़ रुजू करें और अपने अमल
से अपनी तब्दीली का इज़हार भी करें। मैं ने इस की
तब्लीग़ पहले दमिश्क़ में की, फिर यरूशलम और पूरे
यहूदिया में और इस के बाद ग़ैरयहूदी क़ौमों में भी।
21 इसी वजह से यहूदियों ने मुझे बैत-उल-मुक़द्दस में
पकड़ कर क़त्ल करने की कोशिश की। 22 लेकिन
अल्लाह ने आज तक मेरी मदद की है, इस लिए मैं यहाँ
खड़ा हो कर छोटों और बड़ों को अपनी गवाही दे
सकता हूँ। जो कुछ मैं सुनाता हूँ वह वही कुछ है जो
मूसा और नबियों ने कहा है, 23 कि मसीह दुख उठा
कर पहला शख़्स होगा जो मुर्दों में से जी उठेगा और
कि वह यूँ अपनी क़ौम और ग़ैरयहूदियों के सामने
अल्लाह के नूर का प्रचार करेगा।"

24 अचानक फ़ेस्तुस पौलुस की बात काट कर चिल्ला
उठा, "पौलुस, होश में आओ! इल्म की ज़ियादती ने
तुम्हें दीवाना कर दिया है।"

25 पौलुस ने जवाब दिया, "मुअज़्ज़ज़ फ़ेस्तुस, मैं
दीवाना नहीं हूँ। मेरी यह बातें हक़ीक़ी और माक़ूल

हैं। 26 बादशाह सलामत इन से वाक़िफ़ हैं, इस लिए
मैं उन से खुल कर बात कर सकता हूँ। मुझे यक़ीन
है कि यह सब कुछ उन से छुपा नहीं रहा, क्यूँकि
यह पोशीदगी में या किसी कोने में नहीं हुआ। 27 ऐ
अग्रिप्पा बादशाह, क्या आप नबियों पर ईमान रखते
हैं? बल्कि मैं जानता हूँ कि आप उन पर ईमान रखते
हैं।"

28 अग्रिप्पा ने कहा, "आप तो बड़ी जल्दी से मुझे
क़ाइल करके मसीही बनाना चाहते हैं।"

29 पौलुस ने जवाब दिया, "जल्द या बदेर मैं अल्लाह
से दुआ करता हूँ कि न सिर्फ़ आप बल्कि तमाम
हाज़िरीन मेरी मानिन्द बन जाएँ, सिवाए मेरी ज़न्जीरों
के।"

30 फिर बादशाह, गवर्नर, बिरनीके और बाक़ी सब
उठ कर चले गए। 31 वहाँ से निकल कर वह एक
दूसरे से बात करने लगे। सब इस पर मुत्तफ़िक़ थे
कि "इस आदमी ने कुछ नहीं किया जो सज़ा-ए-मौत
या क़ैद के लाइक़ हो।" 32 और अग्रिप्पा ने फ़ेस्तुस से
कहा, "अगर इस ने शहन्शाह से अपील न की होती
तो इसे रिहा किया जा सकता था।"

पौलुस का रोम की तरफ़ सफ़र

27 1 जब हमारा इटली के लिए सफ़र
मुतअय्यिन किया गया तो पौलुस को चन्द
एक और क़ैदियों समेत एक रोमी अफ़सर [j]के हवाले
किया गया जिस का नाम यूलियुस था जो शाही
पलटन पर मुक़र्रर था। 2 अरिस्तर्ख़ुस भी हमारे साथ
था। वह थिस्सलुनीके शहर का मकिदुनी आदमी था।
हम अद्रमित्तियुम शहर के एक जहाज़ पर सवार हुए
जिसे सूबा आसिया की चन्द बन्दरगाहों को जाना
था। 3 अगले दिन हम सैदा पहुँचे तो यूलियुस ने
मेहरबानी करके पौलुस को शहर में उस के दोस्तों
के पास जाने की इजाज़त दी ताकि वह उस की
ज़रूरियात पूरी कर सकें। 4 जब हम वहाँ से रवाना
हुए तो मुख़ालिफ़ हवाओं की वजह से जज़ीरा-ए-
क़ुब्रुस और सूबा आसिया के दरमियान से गुज़रे।
5 फिर खुले समुन्दर पर चलते चलते हम किलिकिया
और पम्फ़ीलिया के समुन्दर से गुज़र कर सूबा
लूकिया के शहर मूरा पहुँचे। 6 वहाँ क़ैदियों पर मुक़र्रर
अफ़सर को पता चला कि इस्कन्दरिया का एक मिस्री
जहाज़ इटली जा रहा है। उस पर उस ने हमें सवार
किया।

7 कई दिन हम आहिस्ता आहिस्ता चले और
बड़ी मुश्किल से कनिदुस के क़रीब पहुँचे। लेकिन
मुख़ालिफ़ हवा की वजह से हम ने जज़ीरा-ए-क्रेते की
तरफ़ रुख़ किया और सल्मोने शहर के क़रीब से गुज़र
कर क्रेते की आड़ में सफ़र किया। 8 लेकिन वहाँ हम
साहिल के साथ साथ चलते हुए बड़ी मुश्किल से एक
जगह पहुँचे जिस का नाम 'हसीन-बन्दर' था। शहर
लसया उस के क़रीब वाक़े था।

9 बहुत वक़्त ज़ाए हो गया था और अब बहरी
सफ़र ख़तरनाक भी हो चुका था, क्यूँकि कफ़्फ़ारा का
दिन (तक़रीबन नवम्बर के शुरू में) गुज़र चुका था।
इस लिए पौलुस ने उन्हें आगाह किया, 10 "हज़रात,
मुझे पता है कि आगे जा कर हम पर बड़ी मुसीबत
आएगी। हमें जहाज़, माल-ओ-अस्बाब और जानों
का नुक़्सान उठाना पड़ेगा।" 11 लेकिन क़ैदियों पर
मुक़र्रर रोमी अफ़सर ने उस की बात नज़रअन्दाज़
करके जहाज़ के नाख़ुदा और मालिक की बात मानी।
12 चूँकि 'हसीन-बन्दर' में जहाज़ को सर्दियों के
मौसम के लिए रखना मुश्किल था इस लिए अक्सर
लोग आगे फ़ेनिक्स तक पहुँच कर सर्दियों का मौसम
गुज़ारना चाहते थे। क्यूँकि फ़ेनिक्स जज़ीरा-ए-क्रेते
की अच्छी बन्दरगाह थी जो सिर्फ़ जुनूब-मग़रिब और
शिमाल-मग़रिब की तरफ़ खुली थी।

---

[j]सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

समुन्दर पर तूफ़ान

13 चुनाँचे एक दिन जब जुनूब की सिम्त से हल्की
सी हवा चलने लगी तो मल्लाहों ने सोचा कि हमारा
इरादा पूरा हो गया है। वह लंगर उठा कर क्रेते के
साहिल के साथ साथ चलने लगे। 14 लेकिन थोड़ी
ही देर के बाद मौसम बदल गया और उन पर जज़ीरे
की तरफ़ से एक तूफ़ानी हवा टूट पड़ी जो बाद-
ए-शिमाल-मशरिक़ी कहलाती है। 15 जहाज़ हवा के
क़ाबू में आ गया और हवा की तरफ़ रुख़ न कर
सका, इस लिए हम ने हार मान कर जहाज़ को हवा
के साथ साथ चलने दिया। 16 जब हम एक छोटे
जज़ीरा बनाम कौदा की आड़ में से गुज़रने लगे तो
हम ने बड़ी मुश्किल से बचाओ-कश्ती को जहाज़
पर उठा कर महफ़ूज़ रखा। (अब तक वह रस्से से
जहाज़ के साथ खैंची जा रही थी।) 17 फिर मल्लाहों ने
जहाज़ के ढाँचे को ज़्यादा मज़बूत बनाने की ख़ातिर
उस के इर्दगिर्द रस्से बांधे। ख़ौफ़ यह था कि जहाज़
शिमाली अफ़्रीक़ा के क़रीब पड़े चोरबालू में धँस
जाए। (इन रेतों का नाम सूरतिस था।) इस से बचने
के लिए उन्हों ने लंगर डाल दिया [k]ताकि जहाज़ कुछ
आहिस्ता चले। यूँ जहाज़ हवा के साथ चलते चलते
आगे बढ़ा। 18 अगले दिन भी तूफ़ान जहाज़ को इतनी
शिद्दत से झंझोड़ रहा था कि मल्लाह माल-ओ-अस्बाब
को समुन्दर में फैंकने लगे। 19 तीसरे दिन उन्हों ने
अपने ही हाथों से जहाज़ चलाने का कुछ सामान
समुन्दर में फैंक दिया। 20 तूफ़ान की शिद्दत बहुत
दिनों के बाद भी ख़त्म न हुई। न सूरज और न सितारे
नज़र आए यहाँ तक कि आख़िरकार हमारे बचने की
हर उम्मीद जाती रही।

21 काफ़ी देर से दिल नहीं चाहता था कि खाना
खाया जाए। आख़िरकार पौलुस ने लोगों के बीच में
खड़े हो कर कहा, “हज़रात, बेहतर होता कि आप
मेरी बात मान कर क्रेते से रवाना न होते। फिर आप
इस मुसीबत और ख़सारे से बच जाते। 22 लेकिन
अब मैं आप को नसीहत करता हूँ कि हौसला रखें।
आप में से एक भी नहीं मरेगा। सिर्फ़ जहाज़ तबाह
हो जाएगा। 23 क्यूँकि पिछली रात एक फ़रिश्ता मेरे
पास आ खड़ा हुआ, उसी ख़ुदा का फ़रिश्ता जिस
का मैं बन्दा हूँ और जिस की इबादत मैं करता हूँ।
24 उस ने कहा, ‘पौलुस, मत डर। लाज़िम है कि तुझे
शहन्शाह के सामने पेश किया जाए। और अल्लाह
अपनी मेहरबानी से तेरे वास्ते तमाम हमसफ़रों की
जानें भी बचाए रखेगा।’ 25 इस लिए हौसला रखें,
क्यूँकि मेरा अल्लाह पर ईमान है कि ऐसा ही होगा
जिस तरह उस ने फ़रमाया है। 26 लेकिन जहाज़ को
किसी जज़ीरे के साहिल पर चढ़ जाना है।”

27 तूफ़ान की चौधवीं रात जहाज़ बहीरा-ए-अद्रिया
पर बहे चला जा रहा था कि तक़रीबन आधी रात
को मल्लाहों ने महसूस किया कि साहिल नज़्दीक आ
रहा है। 28 पानी की गहराई की पैमाइश करके उन्हें
मालूम हुआ कि वह 120 फ़ुट थी। थोड़ी देर के बाद
उस की गहराई 90 फ़ुट हो चुकी थी। 29 वह डर गए,
क्यूँकि उन्हों ने अन्दाज़ा लगाया कि ख़तरा है कि
हम साहिल पर पड़ी चटानों से टकरा जाएँ। इस लिए
उन्हों ने जहाज़ के पिछले हिस्से से चार लंगर डाल
कर दुआ की कि दिन जल्दी से चढ़ जाए। 30 उस
वक़्त मल्लाहों ने जहाज़ से फ़रार होने की कोशिश
की। उन्हों ने यह बहाना बना कर कि हम जहाज़ के
सामने से भी लंगर डालना चाहते हैं बचाओ-कश्ती
पानी में उतरने दी। 31 इस पर पौलुस ने क़ैदियों पर
मुक़र्रर अफ़्सर और फ़ौजियों से कहा, “अगर यह
आदमी जहाज़ पर न रहें तो आप सब मर जाएंगे।”
32 चुनाँचे उन्हों ने बचाओ कश्ती के रस्से को काट
कर उसे खुला छोड़ दिया।

33 पौ फटने वाली थी कि पौलुस ने सब को
समझाया कि वह कुछ खा लें। उस ने कहा, “आप
ने चौदह दिन से इज़्तिराब की हालत में रह कर कुछ

---

[k]लंगर यानी छोटा लंगर जिस की मदद से जहाज़ का रुख़ एक ही सिम्त में रखा जाता है।

नहीं खाया। 34 अब मेहरबानी करके कुछ खा लें। यह
आप के बचाओ के लिए ज़रूरी है, क्यूँकि आप न
सिर्फ़ बच जाएंगे बल्कि आप का एक बाल भी बीका
नहीं होगा।” 35 यह कह कर उस ने कुछ रोटी ली और
उन सब के सामने अल्लाह से शुक्रगुज़ारी की दुआ
की। फिर उसे तोड़ कर खाने लगा। 36 इस से दूसरों
की हौसलाअफ़्ज़ाई हुई और उन्हों ने भी कुछ खाना
खाया। 37 जहाज़ पर हम 276 अफ़राद थे। 38 जब
सब सेर हो गए तो गन्दुम को भी समुन्दर में फैंका
गया ताकि जहाज़ और हल्का हो जाए।

जहाज़ टुकड़े टुकड़े हो जाता है

39 जब दिन चढ़ गया तो मल्लाहों ने साहिली इलाक़े
को न पहचाना। लेकिन एक ख़लीज नज़र आई जिस
का साहिल अच्छा था। उन्हें ख़याल आया कि शायद
हम जहाज़ को वहाँ ख़ुश्की पर चढ़ा सकें। 40 चुनाँचे
उन्हों ने लंगरों के रस्से काट कर उन्हें समुन्दर में
छोड़ दिया। फिर उन्हों ने वह रस्से खोल दिए जिन
से पतवार बंधे होते थे और सामने वाले बादबान
को चढ़ा कर हवा के ज़ोर से साहिल की तरफ़ रुख़
किया। 41 लेकिन चलते चलते जहाज़ एक चोरबालू
से टकरा कर उस पर चढ़ गया। जहाज़ का माथा धँस
गया यहाँ तक कि वह हिल भी न सका जबकि उस
का पिछला हिस्सा मौजों की टक्करों से टुकड़े टुकड़े
होने लगा।

42 फ़ौजी क़ैदियों को क़त्ल करना चाहते थे ताकि
वह जहाज़ से तैर कर फ़रार न हो सकें। 43 लेकिन उन
पर मुक़र्रर अफ़्सर पौलुस को बचाना चाहता था, इस
लिए उस ने उन्हें ऐसा करने न दिया। उस ने हुक्म दिया
कि पहले वह सब जो तैर सकते हैं पानी में छलाँग
लगा कर किनारे तक पहुँचें। 44 बाक़ियों को तख़्तों
या जहाज़ के किसी टुकड़े को पकड़ कर पहुँचना
था। यूँ सब सहीह-सलामत साहिल तक पहुँचे।

जज़ीरा-ए-मिलिते में

28 1 तूफ़ान से बचने पर हमें मालूम हुआ कि
जज़ीरे का नाम मिलिते है। 2 मक़ामी लोगों
ने हमें ग़ैरमामूली मेहरबानी दिखाई। उन्हों ने आग
जला कर हमारा इस्तिक़्बाल किया, क्यूँकि बारिश
शुरू हो चुकी थी और ठंड थी। 3 पौलुस ने भी लकड़ी
का ढेर जमा किया। लेकिन जूँ ही उस ने उसे आग
में फैंका एक ज़हरीला साँप आग की तपिश से भाग
कर निकल आया और पौलुस के हाथ से चिमट कर
उसे डस लिया। 4 मक़ामी लोगों ने साँप को पौलुस
के हाथ से लगे देखा तो एक दूसरे से कहने लगे,
“यह आदमी ज़रूर क़ातिल होगा। गो यह समुन्दर
से बच गया, लेकिन इन्साफ़ की देवी इसे जीने नहीं
देती।” 5 लेकिन पौलुस ने साँप को झटक कर आग
में फैंक दिया, और साँप का कोई बुरा असर उस पर
न हुआ। 6 लोग इस इन्तिज़ार में रहे कि वह सूज जाए
या अचानक गिर पड़े, लेकिन काफ़ी देर के बाद भी
कुछ न हुआ। इस पर उन्हों ने अपना ख़याल बदल
कर उसे देवता क़रार दिया।

7 क़रीब ही जज़ीरे के सब से बड़े आदमी की ज़मीनें
थीं। उस का नाम पुब्लियुस था। उस ने अपने घर में
हमारा इस्तिक़्बाल किया और तीन दिन तक हमारी
ख़ूब मेहमान-नवाज़ी की। 8 उस का बाप बीमार पड़ा
था, वह बुख़ार और पेचिश के मर्ज़ में मुब्तला था।
पौलुस उस के कमरे में गया, उस के लिए दुआ की
और अपने हाथ उस पर रख दिए। इस पर मरीज़
को शिफ़ा मिली। 9 जब यह हुआ तो जज़ीरे के बाक़ी
तमाम मरीज़ों ने पौलुस के पास आ कर शिफ़ा पाई।
10 नतीजे में उन्हों ने कई तरह से हमारी इज़्ज़त की।
और जब रवाना होने का वक़्त आ गया तो उन्हों ने
हमें वह सब कुछ मुहय्या किया जो सफ़र के लिए
दरकार था।

जज़ीरा-ए-मिलिते से रोम तक

11 जज़ीरे पर तीन माह गुज़र गए। फिर हम एक
जहाज़ पर सवार हुए जो सर्दियों के मौसम के लिए
वहाँ ठहर गया था। यह जहाज़ इस्कन्दरिया का था
और उस के माथे पर जुड़वाँ देवताओं 'कास्टर' और
'पोल्लुक्स' की मूरत नसब थी। हम वहाँ से रुख़्सत
हो कर 12 सुरकूसा शहर पहुँचे। तीन दिन के बाद
13 हम वहाँ से रेगियुम शहर गए जहाँ हम सिर्फ़ एक
दिन ठहरे। फिर जुनूब से हवा उठी, इस लिए हम
अगले दिन पुतियोली पहुँचे। 14 इस शहर में हमारी
मुलाक़ात कुछ भाइयों से हुई। उन्हों ने हमें अपने
पास एक हफ़्ता रहने की दावत दी। यूँ हम रोम
पहुँच गए। 15 रोम के भाइयों ने हमारे बारे में सुन
रखा था, और कुछ हमारा इस्तिक़्बाल करने के लिए
क़स्बा बनाम अप्पियुस के चौक तक आए जबकि
कुछ सिर्फ़ 'तीन-सराय' तक आ सके। उन्हें देख कर
पौलुस ने अल्लाह का शुक्र किया और नया हौसला
पाया।

रोम में

16 हमारे रोम में पहुँचने पर पौलुस को अपने किराए
के मकान में रहने की इजाज़त मिली, गो एक फ़ौजी
उस की पहरादारी करने के लिए उस के साथ रहा।
17 तीन दिन गुज़र गए तो पौलुस ने यहूदी राहनुमाओं
को बुलाया। जब वह जमा हुए तो उस ने उन से कहा,
"भाइयो, मुझे यरूशलम में गिरिफ़्तार करके रोमियों
के हवाले कर दिया गया हालाँकि मैं ने अपनी क़ौम
या अपने बापदादा के रस्म-ओ-रिवाज के ख़िलाफ़
कुछ नहीं किया था। 18 रोमी मेरा जाइज़ा ले कर मुझे
रिहा करना चाहते थे, क्यूँकि उन्हें मुझे सज़ा-ए-मौत
देने का कोई सबब न मिला था। 19 लेकिन यहूदियों ने
एतिराज़ किया और यूँ मुझे शहन्शाह से अपील करने
पर मज्बूर कर दिया गया, गो मेरा यह इरादा नहीं है
कि मैं अपनी क़ौम पर कोई इल्ज़ाम लगाऊँ। 20 मैं ने
इस लिए आप को बुलाया ताकि आप से मिलों और
गुफ़्तगु करूँ। मैं उस शख़्स की ख़ातिर इन ज़न्जीरों
से जकड़ा हुआ हूँ जिस के आने की उम्मीद इस्राईल
रखता है।"
21 यहूदियों ने उसे जवाब दिया, "हमें यहूदिया से
आप के बारे में कोई भी ख़त नहीं मिला। और जितने
भाई वहाँ से आए हैं उन में से एक ने भी आप के
बारे में न तो कोई मन्फ़ी रिपोर्ट दी न कोई बुरी बात
बताई। 22 लेकिन हम आप से सुनना चाहते हैं कि
आप के ख़यालात क्या हैं, क्यूँकि हम इतना जानते
हैं कि हर जगह लोग इस फ़िर्क़े के ख़िलाफ़ बातें कर
रहे हैं।"
23 चुनाँचे उन्हों ने मिलने का एक दिन मुक़र्रर
किया। जब यहूदी दुबारा उस जगह आए जहाँ पौलुस
रहता था तो उन की तादाद बहुत ज़्यादा थी। सुब्ह से
ले कर शाम तक उस ने अल्लाह की बादशाही बयान
की और उस की गवाही दी। उस ने उन्हें मूसा की
शरीअत और नबियों के हवालाजात पेश कर करके
ईसा के बारे में क़ाइल करने की कोशिश की। 24 कुछ
तो क़ाइल हो गए, लेकिन बाक़ी ईमान न लाए। 25 उन
में नाइत्तिफ़ाक़ी पैदा हुई तो वह चले गए। जब वह
जाने लगे तो पौलुस ने उन से कहा, "रूह-उल-क़ुद्स
ने यसायाह नबी की मारिफ़त आप के बापदादा से
ठीक कहा कि
26 जा, इस क़ौम को बता, 'तुम अपने कानों से
सुनोगे
मगर कुछ नहीं समझोगे,
तुम अपनी आँखों से देखोगे
मगर कुछ नहीं जानोगे।
27 क्यूँकि इस क़ौम का दिल बेहिस्स हो गया है।
वह मुश्किल से अपने कानों से सुनते हैं,
उन्हों ने अपनी आँखों को बन्द कर रखा है,
ऐसा न हो कि वह अपनी आँखों से देखें,
अपने कानों से सुनें,
अपने दिल से समझें,
मेरी तरफ़ रुजू करें
और मैं उन्हें शिफ़ा दूँ'।"

28 पौलुस ने अपनी बात इन अल्फ़ाज़ से ख़त्म की,
“अब जान लें कि अल्लाह की तरफ़ से यह नजात
ग़ैरयहूदियों को भी पेश की गई है और वह सुनेंगे
भी!”
29 [जब उस ने यह कहा तो यहूदी आपस में बह्स-
मुबाहसा करते हुए चले गए।]
30 पौलुस पूरे दो साल अपने किराए के घर में रहा।
जो भी उस के पास आया उस का उस ने इस्तिक़्बाल
करके 31 दिलेरी से अल्लाह की बादशाही की मुनादी
की और ख़ुदावन्द ईसा मसीह की तालीम दी। और
किसी ने मुदाख़लत न की।

रोमियों

सलाम

1 1 यह ख़त मसीह ईसा के ग़ुलाम पौलुस की
तरफ़ से है जिसे रसूल होने के लिए बुलाया
और अल्लाह की ख़ुशख़बरी की मुनादी करने के लिए
अलग किया गया है।
2 पाक नविश्तों में दर्ज इस ख़ुशख़बरी का वादा
अल्लाह ने पहले ही अपने नबियों से कर रखा था।
3 और यह पैग़ाम उस के फ़र्ज़न्द ईसा के बारे में है।
इन्सानी लिहाज़ से वह दाऊद की नस्ल से पैदा हुआ,
4 जबकि रूह-उल-क़ुद्स के लिहाज़ से वह क़ुदरत
के साथ अल्लाह का फ़र्ज़न्द ठहरा जब वह मुर्दों में
से जी उठा। यह है हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह के
बारे में अल्लाह की ख़ुशख़बरी। 5 मसीह से हमें रसूली
इख़तियार का यह फ़ज़्ल हासिल हुआ है कि हम
तमाम ग़ैरयहूदियों में मुनादी करें ताकि वह ईमान ला
कर उस के ताबे हो जाएँ और यूँ मसीह के नाम को
जलाल मिले। 6 आप भी उन ग़ैरयहूदियों में से हैं, जो
ईसा मसीह के बुलाए हुए हैं।
7 मैं आप सब को लिख रहा हूँ जो रोम में अल्लाह के
प्यारे हैं और मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस होने के लिए बुलाए
गए हैं।
ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावन्द ईसा मसीह आप
को फ़ज़्ल और सलामती अता करें।

रोम जाने की आर्ज़ू

8 अव्वल, मैं आप सब के लिए ईसा मसीह के
वसीले से अपने ख़ुदा का शुक्र करता हूँ, क्यूँकि पूरी
दुनिया में आप के ईमान का चर्चा हो रहा है। 9 ख़ुदा
ही मेरा गवाह है जिस की ख़िदमत मैं अपनी रूह में
करता हूँ जब मैं उस के फ़र्ज़न्द के बारे में ख़ुशख़बरी
फैलाता हूँ, मैं लगातार आप को याद करता रहता हूँ
10 और हर वक़्त अपनी दुआओं में मिन्नत करता हूँ
कि अल्लाह मुझे आख़िरकार आप के पास आने की
कामयाबी अता करे। 11 क्यूँकि मैं आप से मिलने का
आरज़ूमन्द हूँ। मैं चाहता हूँ कि मेरे ज़रीए आप को
कुछ रुहानी बरकत मिल जाए और यूँ आप मज़बूत
हो जाएँ। 12 यानी आने का मक़्सद यह है कि मेरे
ईमान से आप की हौसलाअफ़्ज़ाई की जाए और इसी
तरह आप के ईमान से मेरा हौसला भी बढ़ जाए।
13 भाइयो, आप के इल्म में हो कि मैं ने बहुत दफ़ा
आप के पास आने का इरादा किया। क्यूँकि जिस
तरह दीगर ग़ैरयहूदी अक़्वाम में मेरी ख़िदमत से फल
पैदा हुआ है उसी तरह आप में भी फल देखना चाहता
हूँ। लेकिन आज तक मुझे रोका गया है। 14 बात यह है
कि यह ख़िदमत सरअन्जाम देना मेरा फ़र्ज़ है, ख़्वाह
यूनानियों में हो या ग़ैरयूनानियों में, ख़्वाह दानाओं में
हो या नादानों में। 15 यही वजह है कि मैं आप को भी
जो रोम में रहते हैं अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाने का
मुश्ताक़ हूँ।

अल्लाह की ख़ुशख़बरी की क़ुदरत

16 मैं तो ख़ुशख़बरी के सबब से शर्माता नहीं, क्यूँकि
यह अल्लाह की क़ुदरत है जो हर एक को जो ईमान
लाता है नजात देती है, पहले यहूदियों को, फिर
ग़ैरयहूदियों को। 17 क्यूँकि इस ख़ुशख़बरी में अल्लाह
की ही रास्तबाज़ी ज़ाहिर होती है, वह रास्तबाज़ी जो
शुरू से आख़िर तक ईमान पर मब्नी है। यही बात
कलाम-ए-मुक़द्दस में दर्ज है जब लिखा है, “रास्तबाज़
ईमान ही से जीता रहेगा।”

इन्सान पर अल्लाह का ग़ज़ब

18 लेकिन अल्लाह का ग़ज़ब आसमान पर से उन
तमाम बेदीन और नारास्त लोगों पर नाज़िल होता है

जो सच्चाई को अपनी नारास्ती से दबाए रखते हैं।
19 जो कुछ अल्लाह के बारे में मालूम हो सकता है
वह तो उन पर ज़ाहिर है, हाँ अल्लाह ने ख़ुद यह उन
पर ज़ाहिर किया है। 20 क्यूँकि दुनिया की तख़्लीक़
से ले कर आज तक इन्सान अल्लाह की अनदेखी
फ़ित्रत यानी उस की अज़ली क़ुदरत और उलूहियत
मख़्लूक़ात का मुशाहदा करने से पहचान सकता है।
इस लिए उन के पास कोई उज़्र नहीं। 21 अल्लाह को
जानने के बावुजूद उन्हों ने उसे वह जलाल न दिया
जो उस का हक़ है, न उस का शुक्र अदा किया बल्कि
वह बातिल ख़यालात में पड़ गए और उन के बेसमझ
दिलों पर तारीकी छा गई। 22 वह दावा तो करते थे
कि हम दाना हैं, लेकिन अहमक़ साबित हुए। 23 यूँ
उन्हों ने ग़ैरफ़ानी ख़ुदा को जलाल देने के बजाय
ऐसे बुतों की पूजा की जो फ़ानी इन्सान, परिन्दों,
चौपाइयों और रेंगने वाले जानवरों की सूरत में बनाए
गए थे।

24 इस लिए अल्लाह ने उन्हें उन नजिस कामों में छोड़
दिया जो उन के दिल करना चाहते थे। नतीजे में उन
के जिस्म एक दूसरे से बेहुर्मत होते रहे। 25 हाँ, उन्हों ने
अल्लाह के बारे में सच्चाई को रद्द करके झूट को अपना
लिया और मख़्लूक़ात की परस्तिश और ख़िदमत की,
न कि ख़ालिक़ की, जिस की तारीफ़ अबद तक होती
रहे, आमीन।

26 यही वजह है कि अल्लाह ने उन्हें उन की शर्मनाक
शहवतों में छोड़ दिया। उन की ख़वातीन ने फ़ित्रती
जिन्सी ताल्लुक़ात के बजाय ग़ैरफ़ित्रती ताल्लुक़ात रखे।
27 इसी तरह मर्द ख़वातीन के साथ फ़ित्रती ताल्लुक़ात
छोड़ कर एक दूसरे की शहवत में मस्त हो गए। मर्दों
ने मर्दों के साथ बेहया हरकतें करके अपने बदनों में
अपनी इस गुमराही का मुनासिब बदला पाया।

28 और चूँकि उन्हों ने अल्लाह को जानने से इन्कार
कर दिया इस लिए उस ने उन्हें उन की मकरूह सोच
में छोड़ दिया। और इस लिए वह ऐसी हरकतें करते
रहते हैं जो कभी नहीं करनी चाहिएँ। 29 वह हर तरह
की नारास्ती, शर, लालच और बुराई से भरे हुए हैं।
वह हसद, ख़ूँरेज़ी, झगड़े, फ़रेब और कीनावरी से
लबरेज़ हैं। वह चुग़ली खाने वाले, 30 तुहमत लगाने
वाले, अल्लाह से नफ़रत करने वाले, सरकश, मग़ुरूर,
शेख़ीबाज़, बदी को ईजाद करने वाले, माँ-बाप के
नाफ़रमान, 31 बेसमझ, बेवफ़ा, संगदिल और बेरहम
हैं। 32 अगरचे वह अल्लाह का फ़रमान जानते हैं कि
ऐसा करने वाले सज़ा-ए-मौत के मुस्तहिक़ हैं तो भी
वह ऐसा करते हैं। न सिर्फ़ यह बल्कि वह ऐसा करने
वाले दीगर लोगों को शाबाश भी देते हैं।

अल्लाह की रास्त अदालत

2 1 ऐ इन्सान, क्या तू दूसरों को मुजरिम ठहराता
है? तू जो कोई भी हो तेरा कोई उज़्र नहीं। क्यूँकि
तू ख़ुद भी वही कुछ करता है जिस में तू दूसरों को
मुजरिम ठहराता है और यूँ अपने आप को भी मुजरिम
क़रार देता है। 2 अब हम जानते हैं कि ऐसे काम करने
वालों पर अल्लाह का फ़ैसला मुन्सिफ़ाना है। 3 ताहम
तू वही कुछ करता है जिस में तू दूसरों को मुजरिम
ठहराता है। क्या तू समझता है कि ख़ुद अल्लाह की
अदालत से बच जाएगा? 4 या क्या तू उस की वसी
मेहरबानी, तहम्मुल और सब्र को हक़ीर जानता है?
क्या तुझे मालूम नहीं कि अल्लाह की मेहरबानी तुझे
तौबा तक ले जाना चाहती है? 5 लेकिन तू हटधर्म
है, तू तौबा करने के लिए तय्यार नहीं और यूँ अपनी
सज़ा में इज़ाफ़ा करता जा रहा है, वह सज़ा जो उस
दिन दी जाएगी जब अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल होगा,
जब उस की रास्त अदालत ज़ाहिर होगी। 6 अल्लाह हर
एक को उस के कामों का बदला देगा। 7 कुछ लोग
साबितक़दमी से नेक काम करते और जलाल, इज़्ज़त
और बक़ा के तालिब रहते हैं। उन्हें अल्लाह अबदी
ज़िन्दगी अता करेगा। 8 लेकिन कुछ लोग ख़ुदग़रज़
हैं और सच्चाई की नहीं बल्कि नारास्ती की पैरवी
करते हैं। उन पर अल्लाह का ग़ज़ब और क़हर नाज़िल
होगा। 9 मुसीबत और परेशानी हर उस इन्सान पर
आएगी जो बुराई करता है, पहले यहूदी पर, फिर
यूनानी पर। 10 लेकिन जलाल, इज़्ज़त और सलामती

हर उस इन्सान को हासिल होगी जो नेकी करता है,
पहले यहूदी को, फिर यूनानी को। 11 क्यूँकि अल्लाह
किसी का भी तरफ़दार नहीं।

12 ग़ैरयहूदियों के पास मूसवी शरीअत नहीं है, इस
लिए वह शरीअत के बग़ैर ही गुनाह करके हलाक
हो जाते हैं। यहूदियों के पास शरीअत है, लेकिन
वह भी नहीं बचेंगे। क्यूँकि जब वह गुनाह करते हैं
तो शरीअत ही उन्हें मुजरिम ठहराती है। 13 क्यूँकि
अल्लाह के नज़्दीक यह काफ़ी नहीं कि हम शरीअत
की बातें सुनें बल्कि वह हमें उस वक़्त ही रास्तबाज़
क़रार देता है जब शरीअत पर अमल भी करते हैं।
14 और गो ग़ैरयहूदियों के पास शरीअत नहीं होती
लेकिन जब भी वह फ़ित्रती तौर पर वह कुछ करते
हैं जो शरीअत फ़रमाती है तो ज़ाहिर करते हैं कि गो
हमारे पास शरीअत नहीं तो भी हम अपने आप के
लिए ख़ुद शरीअत हैं। 15 इस में वह साबित करते
हैं कि शरीअत के तक़ाज़े उन के दिल पर लिखे हुए
हैं। उन का ज़मीर भी इस की गवाही देता है, क्यूँकि
उन के ख़यालात कभी एक दूसरे की मज़म्मत और
कभी एक दूसरे का दिफ़ा भी करते हैं। 16 ग़रज़, मेरी
ख़ुशख़बरी के मुताबिक़ हर एक को उस दिन अपना
अज्र मिलेगा जब अल्लाह ईसा मसीह की मारिफ़त
इन्सानों की पोशीदा बातों की अदालत करेगा।

यहूदी और शरीअत

17 अच्छा, तू अपने आप को यहूदी कहता है। तू
शरीअत पर इन्हिसार करता और अल्लाह के साथ
अपने ताल्लुक़ पर फ़ख़र करता है। 18 तू उस की
मर्ज़ी को जानता है और शरीअत की तालीम पाने
के बाइस सहीह राह की पहचान रखता है। 19 तुझे
पूरा यक़ीन है, 'मैं अंधों का क़ाइद, तारीकी में बसने
वालों की रौशनी, 20 बेसमझों का मुअल्लिम और बच्चों
का उस्ताद हूँ।' एक लिहाज़ से यह दुरुस्त भी है,
क्यूँकि शरीअत की सूरत में तेरे पास इल्म-ओ-इर्फ़ान
और सच्चाई मौजूद है। 21 अब बता, तू जो औरों को
सिखाता है अपने आप को क्यूँ नहीं सिखाता? तू
जो चोरी न करने की मुनादी करता है, ख़ुद चोरी
क्यूँ करता है? 22 तू जो औरों को ज़िना करने से
मना करता है, ख़ुद ज़िना क्यूँ करता है? तू जो बुतों
से घिन खाता है, ख़ुद मन्दिरों को क्यूँ लूटता है?
23 तू जो शरीअत पर फ़ख़र करता है, क्यूँ इस की
ख़िलाफ़वरज़ी करके अल्लाह की बेइज़्ज़ती करता है?
24 यह वही बात है जो कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखी है,
"तुम्हारे सबब से ग़ैरयहूदियों में अल्लाह के नाम पर
कुफ़्र बका जाता है।"

25 ख़तने का फ़ाइदा तो उस वक़्त होता है जब तू
शरीअत पर अमल करता है। लेकिन अगर तू उस
की हुक्मअदूली करता है तो तू नामख़्तून जैसा है।
26 इस के बरअक्स अगर नामख़्तून ग़ैरयहूदी शरीअत
के तक़ाज़ों को पूरा करता है तो क्या अल्लाह उसे
मख़्तून यहूदी के बराबर नहीं ठहराएगा? 27 चुनाँचे
जो नामख़्तून ग़ैरयहूदी शरीअत पर अमल करते हैं वह
आप यहूदियों को मुजरिम ठहराएँगे जिन का ख़तना
हुआ है और जिन के पास शरीअत है, क्यूँकि आप
शरीअत पर अमल नहीं करते। 28 आप इस बिना पर
हक़ीक़ी यहूदी नहीं हैं कि आप के वालिदैन यहूदी थे
या आप के बदन का ख़तना ज़ाहिरी तौर पर हुआ
है। 29 बल्कि हक़ीक़ी यहूदी वह है जो बातिन में
यहूदी है। और हक़ीक़ी ख़तना उस वक़्त होता है जब
दिल का ख़तना हुआ है। ऐसा ख़तना शरीअत से नहीं
बल्कि रूह-उल-क़ुद्स के वसीले से किया जाता है।
और ऐसे यहूदी को इन्सान की तरफ़ से नहीं बल्कि
अल्लाह की तरफ़ से तारीफ़ मिलती है।

3 1 तो क्या यहूदी होने का या ख़तना का कोई
फ़ाइदा है? 2 जी हाँ, हर तरह का! अव्वल तो
यह कि अल्लाह का कलाम उन के सपुर्द किया गया
है। 3 अगर उन में से बाज़ बेवफ़ा निकले तो क्या
हुआ? क्या इस से अल्लाह की वफ़ादारी भी ख़त्म
हो जाएगी? 4 कभी नहीं! लाज़िम है कि अल्लाह सच्चा
ठहरे गो हर इन्सान झूटा है। यूँ कलाम-ए-मुक़द्दस में
लिखा है, "लाज़िम है कि तू बोलते वक़्त रास्त ठहरे
और अदालत करते वक़्त ग़ालिब आए।"

5 कोई कह सकता है, “हमारी नारास्ती का एक
अच्छा मक़्सद होता है, क्यूँकि इस से लोगों पर
अल्लाह की रास्ती ज़ाहिर होती है। तो क्या अल्लाह
बेइन्साफ़ नहीं होगा अगर वह अपना ग़ज़ब हम पर
नाज़िल करे?” (मैं इन्सानी ख़याल पेश कर रहा हूँ)।
6 हरगिज़ नहीं! अगर अल्लाह रास्त न होता तो फिर
वह दुनिया की अदालत किस तरह कर सकता?
7 शायद कोई और एतिराज़ करे, “अगर मेरा झूट
अल्लाह की सच्चाई को कस्रत से नुमायाँ करता है
और यूँ उस का जलाल बढ़ता है तो वह मुझे क्यूँकर
गुनाहगार क़रार दे सकता है?” 8 कुछ लोग हम पर
यह कुफ़्र भी बकते हैं कि हम कहते हैं, “आओ,
हम बुराई करें ताकि भलाई निकले।” इन्साफ़ का
तक़ाज़ा है कि ऐसे लोगों को मुजरिम ठहराया जाए।

कोई रास्तबाज़ नहीं

9 अब हम क्या कहें? क्या हम यहूदी दूसरों से
बरतर हैं? बिलकुल नहीं। हम तो पहले ही यह
इल्ज़ाम लगा चुके हैं कि यहूदी और यूनानी सब
ही गुनाह के क़ब्ज़े में हैं। 10 कलाम-ए-मुक़द्दस में यूँ
लिखा है,

“कोई नहीं जो रास्तबाज़ है, एक भी नहीं।
11 कोई नहीं जो समझदार है,
कोई नहीं जो अल्लाह का तालिब है।
12 अफ़्सोस, सब सहीह राह से भटक गए,
सब के सब बिगड़ गए हैं।
कोई नहीं जो भलाई करता हो, एक भी नहीं।
13 उन का गला खुली क़ब्र है,
उन की ज़बान फ़रेब देती है।
उन के होंटों में साँप का ज़हर है।
14 उन का मुँह लानत और कड़वाहट से भरा है।
15 उन के पाँओ ख़ून बहाने के लिए जल्दी करते हैं।
16 अपने पीछे वह तबाही-ओ-बर्बादी छोड़ जाते हैं,
17 और वह सलामती की राह नहीं जानते।
18 उन की आँखों के सामने ख़ुदा का ख़ौफ़ नहीं
होता।”

19 अब हम जानते हैं कि शरीअत जो कुछ फ़रमाती
है उन्हें फ़रमाती है जिन के सपुर्द वह की गई है।
मक़्सद यह है कि हर इन्सान के बहाने ख़त्म किए
जाएँ और तमाम दुनिया अल्लाह के सामने मुजरिम
ठहरे। 20 क्यूँकि शरीअत के तक़ाज़े पूरे करने से कोई
भी उस के सामने रास्तबाज़ नहीं ठहर सकता, बल्कि
शरीअत का काम यह है कि हमारे अन्दर गुनाहगार
होने का एहसास पैदा करे।

रास्तबाज़ होने के लिए ईमान ज़रूरी है

21 लेकिन अब अल्लाह ने हम पर एक राह का
इन्किशाफ़ किया है जिस से हम शरीअत के बग़ैर
ही उस के सामने रास्तबाज़ ठहर सकते हैं। तौरेत
और नबियों के सहीफ़े भी इस की तस्दीक़ करते
हैं। 22 राह यह है कि जब हम ईसा मसीह पर ईमान
लाते हैं तो अल्लाह हमें रास्तबाज़ क़रार देता है। और
यह राह सब के लिए है। क्यूँकि कोई भी फ़र्क़ नहीं,
23 सब ने गुनाह किया, सब अल्लाह के उस जलाल
से महरूम हैं जिस का वह तक़ाज़ा करता है, 24 और
सब मुफ़्त में अल्लाह के फ़ज़्ल ही से रास्तबाज़ ठहराए
जाते हैं, उस फ़िदिए के वसीले से जो मसीह ईसा ने
दिया। 25 क्यूँकि अल्लाह ने ईसा को उस के ख़ून के
बाइस कफ़्फ़ारा का वसीला बना कर पेश किया,
ऐसा कफ़्फ़ारा जिस से ईमान लाने वालों को गुनाहों
की मुआफ़ी मिलती है। यूँ अल्लाह ने अपनी रास्ती
ज़ाहिर की, पहले माज़ी में जब वह अपने सब्र-ओ-
तहम्मुल में गुनाहों की सज़ा देने से बाज़ रहा 26 और
अब मौजूदा ज़माने में भी। इस से वह ज़ाहिर करता है
कि वह रास्त है और हर एक को रास्तबाज़ ठहराता
है जो ईसा पर ईमान लाया है।

27 अब हमारा फ़ख़र कहाँ रहा? उसे तो ख़त्म कर
दिया गया है। किस शरीअत से? क्या आमाल की
शरीअत से? नहीं, बल्कि ईमान की शरीअत से।
28 क्यूँकि हम कहते हैं कि इन्सान को ईमान से
रास्तबाज़ ठहराया जाता है, न कि आमाल से। 29 क्या
अल्लाह सिर्फ़ यहूदियों का ख़ुदा है? ग़ैरयहूदियों का

नहीं? हाँ, ग़ैरयहूदियों का भी है। 30 क्यूँकि अल्लाह
एक ही है जो मख़्तून और नामख़्तून दोनों को ईमान
ही से रास्तबाज़ ठहराएगा। 31 फिर क्या हम शरीअत
को ईमान से मन्सूख़ करते हैं? हरगिज़ नहीं, बल्कि
हम शरीअत को क़ाइम रखते हैं।

इब्राहीम ईमान से रास्तबाज़ ठहरा

4 1 इब्राहीम जिस्मानी लिहाज़ से हमारा बाप था।
तो रास्तबाज़ ठहरने के सिलसिले में उस का
क्या तजरिबा था? 2 हम कह सकते हैं कि अगर वह
शरीअत पर अमल करने से रास्तबाज़ ठहरता तो वह
अपने आप पर फ़ख़र कर सकता था। लेकिन अल्लाह
के नज़्दीक उस के पास अपने आप पर फ़ख़र करने
का कोई सबब न था। 3 क्यूँकि कलाम-ए-मुक़द्दस
में लिखा है, "इब्राहीम ने अल्लाह पर भरोसा रखा।
इस बिना पर अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ क़रार दिया।"
4 जब लोग काम करते हैं तो उन की मज़दूरी कोई
ख़ास मेहरबानी क़रार नहीं दी जाती, बल्कि यह तो
उन का हक़ बनता है। 5 लेकिन जब लोग काम नहीं
करते बल्कि अल्लाह पर ईमान रखते हैं जो बेदीनों को
रास्तबाज़ क़रार देता है तो उन का कोई हक़ नहीं
बनता। वह उन के ईमान ही की बिना पर रास्तबाज़
क़रार दिए जाते हैं। 6 दाऊद यही बात बयान करता
है जब वह उस शख़्स को मुबारक कहता है जिसे
अल्लाह बग़ैर आमाल के रास्तबाज़ ठहराता है,

7 "मुबारक हैं वह जिन के जराइम मुआफ़ किए गए,
जिन के गुनाह ढाँपे गए हैं।
8 मुबारक है वह जिस का गुनाह रब हिसाब में नहीं
लाएगा।"

9 क्या यह मुबारकबादी सिर्फ़ मख़्तूनों के लिए
है या नामख़्तूनों के लिए भी? हम तो बयान कर
चुके हैं कि इब्राहीम ईमान की बिना पर रास्तबाज़
ठहरा। 10 उसे किस हालत में रास्तबाज़ ठहराया
गया? ख़तना कराने के बाद या पहले? ख़तने के
बाद नहीं बल्कि पहले। 11 और ख़तना का जो निशान
उसे मिला वह उस की रास्तबाज़ी की मुहर थी, वह
रास्तबाज़ी जो उसे ख़तना कराने से पेशतर मिली,
उस वक़्त जब वह ईमान लाया। यूँ वह उन सब का
बाप है जो बग़ैर ख़तना कराए ईमान लाए हैं और इस
बिना पर रास्तबाज़ ठहरते हैं। 12 साथ ही वह ख़तना
कराने वालों का बाप भी है, लेकिन उन का जिन का
न सिर्फ़ ख़तना हुआ है बल्कि जो हमारे बाप इब्राहीम
के उस ईमान के नक़्श-ए-क़दम पर चलते हैं जो वह
ख़तना कराने से पेशतर रखता था।

अल्लाह का वादा ईमान से हासिल होता है

13 जब अल्लाह ने इब्राहीम और उस की औलाद से
वादा किया कि वह दुनिया का वारिस होगा तो उस ने
यह इस लिए नहीं किया कि इब्राहीम ने शरीअत की
पैरवी की बल्कि इस लिए कि वह ईमान लाया और यूँ
रास्तबाज़ ठहराया गया। 14 क्यूँकि अगर वह वारिस
हैं जो शरीअत के पैरोकार हैं तो फिर ईमान बेअसर
ठहरा और अल्लाह का वादा मिट गया। 15 शरीअत
अल्लाह का ग़ज़ब ही पैदा करती है। लेकिन जहाँ कोई
शरीअत नहीं वहाँ उस की ख़िलाफ़वरज़ी भी नहीं।

16 चुनाँचे यह मीरास ईमान से मिलती है ताकि इस
की बुन्याद अल्लाह का फ़ज़्ल हो और इस का वादा
इब्राहीम की तमाम नस्ल के लिए हो, न सिर्फ़ शरीअत
के पैरोकारों के लिए बल्कि उन के लिए भी जो
इब्राहीम का सा ईमान रखते हैं। यही हम सब का बाप
है। 17 यूँ अल्लाह कलाम-ए-मुक़द्दस में उस से वादा
करता है, "मैं ने तुझे बहुत क़ौमों का बाप बना दिया
है।" अल्लाह ही के नज़्दीक इब्राहीम हम सब का बाप
है। क्यूँकि उस का ईमान उस ख़ुदा पर था जो मुर्दों
को ज़िन्दा करता और जिस के हुक्म पर वह कुछ
पैदा होता है जो पहले नहीं था। 18 उम्मीद की कोई
किरन दिखाई नहीं देती थी, फिर भी इब्राहीम उम्मीद
के साथ ईमान रखता रहा कि मैं ज़रूर बहुत क़ौमों
का बाप बनूँगा। और आख़िरकार ऐसा ही हुआ, जैसा
कलाम-ए-मुक़द्दस में वादा किया गया था कि "तेरी
औलाद इतनी ही बेशुमार होगी।" 19 और इब्राहीम
का ईमान कमज़ोर न पड़ा, हालाँकि उसे मालूम था

कि मैं तक़रीबन सौ साल का हूँ और मेरा और सारा
के बदन गोया मुर्दा हैं, अब बच्चे पैदा करने की उम्र
सारा के लिए गुज़र चुकी है। 20 तो भी इब्राहीम का
ईमान ख़त्म न हुआ, न उस ने अल्लाह के वादे पर शक
किया बल्कि ईमान में वह मज़ीद मज़बूत हुआ और
अल्लाह को जलाल देता रहा। 21 उसे पुख़्ता यक़ीन
था कि अल्लाह अपने वादे को पूरा करने की क़ुदरत
रखता है। 22 उस के इस ईमान की वजह से अल्लाह
ने उसे रास्तबाज़ क़रार दिया। 23 कलाम-ए-मुक़द्दस
में यह बात कि अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ क़रार दिया
न सिर्फ़ उस की ख़ातिर लिखी गई 24 बल्कि हमारी
ख़ातिर भी। क्यूँकि अल्लाह हमें भी रास्तबाज़ क़रार
देगा अगर हम उस पर ईमान रखें जिस ने हमारे
ख़ुदावन्द ईसा को मुर्दों में से ज़िन्दा किया। 25 हमारी
ही ख़ताओं की वजह से उसे मौत के हवाले किया
गया, और हमें ही रास्तबाज़ क़रार देने के लिए उसे
ज़िन्दा किया गया।

रास्तबाज़ी का अन्जाम

5 1 अब चूँकि हमें ईमान से रास्तबाज़ क़रार दिया
गया है इस लिए अल्लाह के साथ हमारी सुलह
है। इस सुलह का वसीला हमारा ख़ुदावन्द ईसा
मसीह है। 2 हमारे ईमान लाने पर उस ने हमें फ़ज़्ल
के उस मक़ाम तक पहुँचाया जहाँ हम आज क़ाइम
हैं। और यूँ हम इस उम्मीद पर फ़ख़र करते हैं कि हम
अल्लाह के जलाल में शरीक होंगे। 3 न सिर्फ़ यह बल्कि
हम उस वक़्त भी फ़ख़र करते हैं जब हम मुसीबतों
में फंसे होते हैं। क्यूँकि हम जानते हैं कि मुसीबत
से साबितक़दमी पैदा होती है, 4 साबितक़दमी से
पुख़्तगी और पुख़्तगी से उम्मीद। 5 और उम्मीद हमें
शर्मिन्दा होने नहीं देती, क्यूँकि अल्लाह ने हमें रूह-
उल-क़ुद्स दे कर उस के वसीले से हमारे दिलों में
अपनी मुहब्बत उंडेली है।

6 क्यूँकि हम अभी कमज़ोर ही थे तो मसीह ने हम
बेदीनों की ख़ातिर अपनी जान दे दी। 7 मुश्किल से ही
कोई किसी रास्तबाज़ की ख़ातिर अपनी जान देगा।
हाँ, मुमकिन है कि कोई किसी नेकोकार के लिए
अपनी जान देने की जुरअत करे। 8 लेकिन अल्लाह ने
हम से अपनी मुहब्बत का इज़हार यूँ किया कि मसीह
ने उस वक़्त हमारी ख़ातिर अपनी जान दी जब हम
गुनाहगार ही थे। 9 हमें मसीह के ख़ून से रास्तबाज़
ठहराया गया है। तो यह बात कितनी यक़ीनी है कि
हम उस के वसीले से अल्लाह के ग़ज़ब से बचेंगे।
10 हम अभी अल्लाह के दुश्मन ही थे जब उस के
फ़र्ज़न्द की मौत के वसीले से हमारी उस के साथ
सुलह हो गई। तो फिर यह बात कितनी यक़ीनी है कि
हम उस की ज़िन्दगी के वसीले से नजात भी पाएँगे।
11 न सिर्फ़ यह बल्कि अब हम अल्लाह पर फ़ख़र करते
हैं और यह हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह के वसीले से
है, जिस ने हमारी सुलह कराई है।

आदम और मसीह

12 जब आदम ने गुनाह किया तो उस एक ही शख़्स
से गुनाह दुनिया में आया। इस गुनाह के साथ साथ
मौत भी आ कर सब आदमियों में फैल गई, क्यूँकि
सब ने गुनाह किया। 13 शरीअत के इन्किशाफ़ से
पहले गुनाह तो दुनिया में था, लेकिन जहाँ शरीअत
नहीं होती वहाँ गुनाह का हिसाब नहीं किया जाता।
14 ताहम आदम से ले कर मूसा तक मौत की हुकूमत
जारी रही, उन पर भी जिन्हों ने आदम की सी
हुक्मअदूली न की।

अब आदम आने वाले ईसा मसीह की तरफ़ इशारा
था। 15 लेकिन इन दोनों में बड़ा फ़र्क़ है। जो नेमत
अल्लाह मुफ़्त में देता है वह आदम के गुनाह से
मुताबिक़त नहीं रखती। क्यूँकि इस एक शख़्स आदम
की ख़िलाफ़वरज़ी से बहुत से लोग मौत की ज़द
में आ गए, लेकिन अल्लाह का फ़ज़्ल कहीं ज़्यादा
मुअस्सिर है, वह मुफ़्त नेमत जो बहुतों को उस एक
शख़्स ईसा मसीह में मिली है। 16 हाँ, अल्लाह की इस
नेमत और आदम के गुनाह में बहुत फ़र्क़ है। उस एक
शख़्स आदम के गुनाह के नतीजे में हमें तो मुजरिम
क़रार दिया गया, लेकिन अल्लाह की मुफ़्त नेमत का

असर यह है कि हमें रास्तबाज़ क़रार दिया जाता
है, गो हम से बेशुमार गुनाह सरज़द हुए हैं। 17 इस
एक शख़्स आदम के गुनाह के नतीजे में मौत सब
पर हुकूमत करने लगी। लेकिन इस एक शख़्स ईसा
मसीह का काम कितना ज़्यादा मुअस्सिर था। जितने
भी अल्लाह का वाफ़िर फ़ज़्ल और रास्तबाज़ी की नेमत
पाते हैं वह मसीह के वसीले से अबदी ज़िन्दगी में
हुकूमत करेंगे।

18 चुनाँचे जिस तरह एक ही शख़्स के गुनाह के
बाइस सब लोग मुजरिम ठहरे उसी तरह एक ही
शख़्स के रास्त अमल से वह दरवाज़ा खुल गया
जिस में दाख़िल हो कर सब लोग रास्तबाज़ ठहर
सकते और ज़िन्दगी पा सकते हैं। 19 जिस तरह एक
ही शख़्स की नाफ़रमानी से बहुत से लोग गुनाहगार
बन गए, उसी तरह एक ही शख़्स की फ़रमाँबरदारी
से बहुत से लोग रास्तबाज़ बन जाएंगे।

20 शरीअत इस लिए दरमियान में आ गई कि
ख़िलाफ़वरज़ी बढ़ जाए। लेकिन जहाँ गुनाह ज़्यादा
हुआ वहाँ अल्लाह का फ़ज़्ल इस से भी ज़्यादा हो गया।
21 चुनाँचे जिस तरह गुनाह मौत की सूरत में हुकूमत
करता था उसी तरह अब अल्लाह का फ़ज़्ल हमें
रास्तबाज़ ठहरा कर हुकूमत करता है। यूँ हमें अपने
ख़ुदावन्द ईसा मसीह की बदौलत अबदी ज़िन्दगी
हासिल होती है।

मसीह में नई ज़िन्दगी

6 1 क्या इस का मतलब यह है कि हम गुनाह
करते रहें ताकि अल्लाह के फ़ज़्ल में इज़ाफ़ा हो?
2 हरगिज़ नहीं! हम तो मर कर गुनाह से लाताल्लुक़ हो
गए हैं। तो फिर हम किस तरह गुनाह को अपने आप
पर हुकूमत करने दे सकते हैं? 3 या क्या आप को
मालूम नहीं कि हम सब जिन्हें बपतिस्मा दिया गया
है इस से मसीह ईसा की मौत में शामिल हो गए हैं?
4 क्यूँकि बपतिस्मे से हमें दफ़नाया गया और उस की
मौत में शामिल किया गया ताकि हम मसीह की तरह
नई ज़िन्दगी गुज़ारें, जिसे बाप की जलाली क़ुदरत ने
मुर्दों में से ज़िन्दा किया।

5 चूँकि इस तरह हम उस की मौत में उस के साथ
पैवस्त हो गए हैं इस लिए हम उस के जी उठने में भी
उस के साथ पैवस्त होंगे। 6 क्यूँकि हम जानते हैं कि
हमारा पुराना इन्सान मसीह के साथ मस्लूब हो गया
ताकि गुनाह के क़ब्ज़े में यह जिस्म नेस्त हो जाए और
यूँ हम गुनाह के ग़ुलाम न रहें। 7 क्यूँकि जो मर गया
वह गुनाह से आज़ाद हो गया है। 8 और हमारा ईमान
है कि चूँकि हम मसीह के साथ मर गए हैं इस लिए
हम उस के साथ ज़िन्दा भी होंगे, 9 क्यूँकि हम जानते
हैं कि मसीह मुर्दों में से जी उठा है और अब कभी
नहीं मरेगा। अब मौत का उस पर कोई इख़तियार
नहीं। 10 मरते वक़्त वह हमेशा के लिए गुनाह की
हुकूमत से निकल गया, और अब जब वह दुबारा
ज़िन्दा है तो उस की ज़िन्दगी अल्लाह के लिए मख़्सूस
है। 11 आप भी अपने आप को ऐसा समझें। आप भी
मर कर गुनाह की हुकूमत से निकल गए हैं और अब
आप की मसीह में ज़िन्दगी अल्लाह के लिए मख़्सूस
है।

12 चुनाँचे गुनाह आप के फ़ानी बदन में हुकूमत न
करे। ध्यान दें कि आप उस की बुरी ख़्वाहिशात के
ताबे न हो जाएँ। 13 अपने बदन के किसी भी उज़्ू को
गुनाह की ख़िदमत के लिए पेश न करें, न उसे नारास्ती
का हथियार बनने दें। इस के बजाय अपने आप को
अल्लाह की ख़िदमत के लिए पेश करें। क्यूँकि पहले
आप मुर्दा थे, लेकिन अब आप ज़िन्दा हो गए हैं।
चुनाँचे अपने तमाम आज़ा को अल्लाह की ख़िदमत
के लिए पेश करें और उन्हें रास्ती के हथियार बनने
दें। 14 आइन्दा गुनाह आप पर हुकूमत नहीं करेगा,
क्यूँकि आप अपनी ज़िन्दगी शरीअत के तहत नहीं
गुज़ारते बल्कि अल्लाह के फ़ज़्ल के तहत।

रास्तबाज़ी के ग़ुलाम

15 अब सवाल यह है, चूँकि हम शरीअत के तहत
नहीं बल्कि फ़ज़्ल के तहत हैं तो क्या इस का मतलब

यह है कि हमें गुनाह करने के लिए खुला छोड़ दिया
गया है? हरगिज़ नहीं! 16 क्या आप को मालूम नहीं
कि जब आप अपने आप को किसी के ताबे करके
उस के ग़ुलाम बन जाते हैं तो आप उस मालिक के
ग़ुलाम हैं जिस के ताबे आप हैं? या तो गुनाह आप
का मालिक बन कर आप को मौत तक ले जाएगा,
या फ़रमाँबरदारी आप की मालिकन बन कर आप
को रास्तबाज़ी तक ले जाएगी। 17 दरहक़ीक़त आप
पहले गुनाह के ग़ुलाम थे, लेकिन ख़ुदा का शुक्र है
कि अब आप पूरे दिल से उसी तालीम के ताबे हो
गए हैं जो आप के सपुर्द की गई है। 18 अब आप को
गुनाह से आज़ाद कर दिया गया है, रास्तबाज़ी ही
आप की मालिकन बन गई है। 19 (आप की फ़ित्रती
कमज़ोरी की वजह से मैं ग़ुलामी की यह मिसाल दे
रहा हूँ ताकि आप मेरी बात समझ पाएँ।) पहले आप
ने अपने आज़ा को नजासत और बेदीनी की ग़ुलामी में
दे रखा था जिस के नतीजे में आप की बेदीनी बढ़ती
गई। लेकिन अब आप अपने आज़ा को रास्तबाज़ी
की ग़ुलामी में दे दें ताकि आप मुक़द्दस बन जाएँ।
20 जब गुनाह आप का मालिक था तो आप
रास्तबाज़ी से आज़ाद थे। 21 और इस का नतीजा क्या
था? जो कुछ आप ने उस वक़्त किया उस से आप
को आज शर्म आती है और उस का अन्जाम मौत है।
22 लेकिन अब आप गुनाह की ग़ुलामी से आज़ाद हो
कर अल्लाह के ग़ुलाम बन गए हैं, जिस के नतीजे में
आप मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस बन जाते हैं और जिस का
अन्जाम अबदी ज़िन्दगी है। 23 क्यूँकि गुनाह का अज्र
मौत है जबकि अल्लाह हमारे ख़ुदावन्द मसीह ईसा के
वसीले से हमें अबदी ज़िन्दगी की मुफ़्त नेमत अता
करता है।

शादी की मिसाल

7 1 भाइयो, आप तो शरीअत से वाक़िफ़ हैं। तो
क्या आप नहीं जानते कि शरीअत उस वक़्त
तक इन्सान पर इख़तियार रखती है जब तक वह
ज़िन्दा है? 2 शादी की मिसाल लें। जब किसी औरत
की शादी होती है तो शरीअत उस का शौहर के साथ
बंधन उस वक़्त तक क़ाइम रखती है जब तक शौहर
ज़िन्दा है। अगर शौहर मर जाए तो फिर वह इस बंधन
से आज़ाद हो गई। 3 चुनाँचे अगर वह अपने ख़ावन्द
के जीते जी किसी और मर्द की बीवी बन जाए तो उसे
ज़िनाकार क़रार दिया जाता है। लेकिन अगर उस का
शौहर मर जाए तो वह शरीअत से आज़ाद हुई। अब
वह किसी दूसरे मर्द की बीवी बने तो ज़िनाकार नहीं
ठहरती। 4 मेरे भाइयो, यह बात आप पर भी सादिक़
आती है। जब आप मसीह के बदन का हिस्सा बन
गए तो आप मर कर शरीअत के इख़तियार से आज़ाद
हो गए। अब आप उस के साथ पैवस्त हो गए हैं
जिसे मुर्दों में से ज़िन्दा किया गया ताकि हम अल्लाह
की ख़िदमत में फल लाएँ। 5 क्यूँकि जब हम अपनी
पुरानी फ़ित्रत के तहत ज़िन्दगी गुज़ारते थे तो शरीअत
हमारी गुनाहआलूदा रग़बतों को उकसाती थी। फिर
यही रग़बतें हमारे आज़ा पर असरअन्दाज़ होती थीं
और नतीजे में हम ऐसा फल लाते थे जिस का अन्जाम
मौत है। 6 लेकिन अब हम मर कर शरीअत के बंधन
से आज़ाद हो गए हैं। अब हम शरीअत की पुरानी
ज़िन्दगी के तहत ख़िदमत नहीं करते बल्कि रूह-
उल-क़ुद्स की नई ज़िन्दगी के तहत।

शरीअत और गुनाह

7 क्या इस का मतलब यह है कि शरीअत ख़ुद गुनाह
है? हरगिज़ नहीं! बात तो यह है कि अगर शरीअत
मुझ पर मेरे गुनाह ज़ाहिर न करती तो मुझे इन का
कुछ पता न चलता। मसलन अगर शरीअत न बताती,
“लालच न करना” तो मुझे दरहक़ीक़त मालूम न होता
कि लालच क्या है। 8 लेकिन गुनाह ने इस हुक्म से
फ़ाइदा उठा कर मुझ में हर तरह का लालच पैदा
कर दिया। इस के बरअक्स जहाँ शरीअत नहीं होती
वहाँ गुनाह मुर्दा है और ऐसा काम नहीं कर पाता।
9 एक वक़्त था जब मैं शरीअत के बग़ैर ज़िन्दगी
गुज़ारता था। लेकिन जूँ ही हुक्म मेरे सामने आया तो
गुनाह में जान आ गई 10 और मैं मर गया। इस तरह

मालूम हुआ कि जिस हुक्म का मक़्सद मेरी ज़िन्दगी
को क़ाइम रखना था वही मेरी मौत का बाइस बन
गया। 11 क्यूँकि गुनाह ने हुक्म से फ़ाइदा उठा कर
मुझे बहकाया और हुक्म से ही मुझे मार डाला।
12 लेकिन शरीअत ख़ुद मुक़द्दस है और इस के
अह्काम मुक़द्दस, रास्त और अच्छे हैं। 13 क्या इस
का मतलब यह है कि जो अच्छा है वही मेरे लिए
मौत का बाइस बन गया? हरगिज़ नहीं! गुनाह ही ने
यह किया। इस अच्छी चीज़ को इस्तेमाल करके उस
ने मेरे लिए मौत पैदा कर दी ताकि गुनाह ज़ाहिर हो
जाए। यूँ हुक्म के ज़रीए गुनाह की सन्जीदगी हद से
ज़्यादा बढ़ जाती है।

हमारे अन्दर की कश-म-कश

14 हम जानते हैं कि शरीअत रुहानी है। लेकिन मेरी
फ़ित्रत इन्सानी है, मुझे गुनाह की ग़ुलामी में बेचा गया
है। 15 दरहक़ीक़त मैं नहीं समझता कि क्या करता हूँ।
क्यूँकि मैं वह काम नहीं करता जो करना चाहता हूँ
बल्कि वह जिस से मुझे नफ़रत है। 16 लेकिन अगर मैं
वह करता हूँ जो नहीं करना चाहता तो ज़ाहिर है कि
मैं मुत्तफ़िक़ हूँ कि शरीअत अच्छी है। 17 और अगर
ऐसा है तो फिर मैं यह काम ख़ुद नहीं कर रहा बल्कि
गुनाह जो मेरे अन्दर सुकूनत करता है। 18 मुझे मालूम
है कि मेरे अन्दर यानी मेरी पुरानी फ़ित्रत में कोई
अच्छी चीज़ नहीं बसती। अगरचे मुझ में नेक काम
करने का इरादा तो मौजूद है लेकिन मैं उसे अमली
जामा नहीं पहना सकता। 19 जो नेक काम मैं करना
चाहता हूँ वह नहीं करता बल्कि वह बुरा काम करता
हूँ जो करना नहीं चाहता। 20 अब अगर मैं वह काम
करता हूँ जो मैं नहीं करना चाहता तो इस का मतलब
है कि मैं ख़ुद नहीं कर रहा बल्कि वह गुनाह जो मेरे
अन्दर बसता है।
21 चुनाँचे मुझे एक और तरह की शरीअत काम
करती हुई नज़र आती है, और वह यह है कि जब
मैं नेक काम करने का इरादा रखता हूँ तो बुराई आ
मौजूद होती है। 22 हाँ, अपने बातिन में तो मैं ख़ुशी
से अल्लाह की शरीअत को मानता हूँ। 23 लेकिन मुझे
अपने आज़ा में एक और तरह की शरीअत दिखाई
देती है, ऐसी शरीअत जो मेरी समझ की शरीअत के
ख़िलाफ़ लड़ कर मुझे गुनाह की शरीअत का क़ैदी
बना देती है, उस शरीअत का जो मेरे आज़ा में मौजूद
है। 24 हाय, मेरी हालत कितनी बुरी है! मुझे इस बदन
से जिस का अन्जाम मौत है कौन छुड़ाएगा? 25 ख़ुदा
का शुक्र है जो हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह के वसीले
से यह काम करता है।

ग़रज़ यही मेरी हालत है, मसीह के बग़ैर मैं अल्लाह
की शरीअत की ख़िदमत सिर्फ़ अपनी समझ से
कर सकता हूँ जबकि मेरी पुरानी फ़ित्रत गुनाह की
शरीअत की ग़ुलाम रह कर उसी की ख़िदमत करती
है।

रूह में ज़िन्दगी

8 1 अब जो मसीह ईसा में हैं उन्हें मुजरिम नहीं
ठहराया जाता। 2 क्यूँकि रूह की शरीअत ने जो
हमें मसीह में ज़िन्दगी अता करती है तुझे गुनाह और
मौत की शरीअत से आज़ाद कर दिया है। 3 मूसवी
शरीअत हमारी पुरानी फ़ित्रत की कमज़ोर हालत की
वजह से हमें न बचा सकी। इस लिए अल्लाह ने वह
कुछ किया जो शरीअत के बस में न था। उस ने अपना
फ़र्ज़न्द भेज दिया ताकि वह गुनाहगार का सा जिस्म
इख़तियार करके हमारे गुनाहों का कफ़्फ़ारा दे। इस
तरह अल्लाह ने पुरानी फ़ित्रत में मौजूद गुनाह को
मुजरिम ठहराया 4 ताकि हम में शरीअत का तक़ाज़ा
पूरा हो जाए, हम जो पुरानी फ़ित्रत के मुताबिक़ नहीं
बल्कि रूह के मुताबिक़ चलते हैं। 5 जो पुरानी फ़ित्रत
के इख़तियार में हैं वह पुरानी सोच रखते हैं जबकि
जो रूह के इख़तियार में हैं वह रुहानी सोच रखते हैं।
6 पुरानी फ़ित्रत की सोच का अन्जाम मौत है जबकि
रूह की सोच ज़िन्दगी और सलामती पैदा करती है।
7 पुरानी फ़ित्रत की सोच अल्लाह से दुश्मनी रखती है।
यह अपने आप को अल्लाह की शरीअत के ताबे नहीं
रखती, न ही ऐसा कर सकती है। 8 इस लिए वह लोग

अल्लाह को पसन्द नहीं आ सकते जो पुरानी फ़ित्रत के इख़तियार में हैं।

9 लेकिन आप पुरानी फ़ित्रत के इख़तियार में नहीं बल्कि रूह के इख़तियार में हैं। शर्त यह है कि रूह-उल-क़ुद्स आप में बसा हुआ हो। अगर किसी में मसीह का रूह नहीं तो वह मसीह का नहीं। 10 लेकिन अगर मसीह आप में है तो फिर आप का बदन गुनाह की वजह से मुर्दा है जबकि रूह-उल-क़ुद्स आप को रास्तबाज़ ठहराने की वजह से आप के लिए ज़िन्दगी का बाइस है। 11 उस का रूह आप में बसता है जिस ने ईसा को मुर्दों में से ज़िन्दा किया। और चूँकि रूह-उल-क़ुद्स आप में बसता है इस लिए अल्लाह इस के ज़रीए आप के फ़ानी बदनों को भी मसीह की तरह ज़िन्दा करेगा।

12 चुनाँचे मेरे भाइयो, हमारी पुरानी फ़ित्रत का कोई हक़ न रहा कि हमें अपने मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने पर मज्बूर करे। 13 क्यूँकि अगर आप अपनी पुरानी फ़ित्रत के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारें तो आप हलाक हो जाएंगे। लेकिन अगर आप रूह-उल-क़ुद्स की क़ुव्वत से अपनी पुरानी फ़ित्रत के ग़लत कामों को नेस्त-ओ-नाबूद करें तो फिर आप ज़िन्दा रहेंगे। 14 जिस की भी राहनुमाई रूह-उल-क़ुद्स करता है वह अल्लाह का फ़र्ज़न्द है। 15 क्यूँकि अल्लाह ने जो रूह आप को दिया है उस ने आप को ग़ुलाम बना कर ख़ौफ़ज़दा हालत में नहीं रखा बल्कि आप को अल्लाह के फ़र्ज़न्द बना दिया है, और उसी के ज़रीए हम पुकार कर अल्लाह को "अब्बा" यानी "ऐ बाप" कह सकते हैं। 16 रूह-उल-क़ुद्स ख़ुद हमारी रूह के साथ मिल कर गवाही देता है कि हम अल्लाह के फ़र्ज़न्द हैं। 17 और चूँकि हम उस के फ़र्ज़न्द हैं इस लिए हम वारिस हैं, अल्लाह के वारिस और मसीह के हममीरास। क्यूँकि अगर हम मसीह के दुख में शरीक हों तो उस के जलाल में भी शरीक होंगे।

आइन्दा का जलाल

18 मेरे ख़याल में हमारा मौजूदा दुख उस आने वाले जलाल की निस्बत कुछ भी नहीं जो हम पर ज़ाहिर होगा। 19 हाँ, तमाम काइनात यह देखने के लिए तड़पती है कि अल्लाह के फ़र्ज़न्द ज़ाहिर हो जाएँ, 20 क्यूँकि काइनात अल्लाह की लानत के तहत आ कर फ़ानी हो गई है। यह उस की अपनी नहीं बल्कि अल्लाह की मर्ज़ी थी जिस ने उस पर यह लानत भेजी। तो भी यह उम्मीद दिलाई गई 21 कि एक दिन काइनात को ख़ुद उस की फ़ानी हालत की ग़ुलामी से छुड़ाया जाएगा। उस वक़्त वह अल्लाह के फ़र्ज़न्दों की जलाली आज़ादी में शरीक हो जाएगी। 22 क्यूँकि हम जानते हैं कि आज तक तमाम काइनात कराहती और दर्द-ए-ज़ह में तड़पती रहती है। 23 न सिर्फ़ काइनात बल्कि हम ख़ुद भी अन्दर ही अन्दर कराहते हैं, गो हमें आने वाले जलाल का पहला फल रूह-उल-क़ुद्स की सूरत में मिल चुका है। हम कराहते कराहते शिद्दत से इस इन्तिज़ार में हैं कि यह बात ज़ाहिर हो जाए कि हम अल्लाह के फ़र्ज़न्द हैं और हमारे बदनों को नजात मिले। 24 क्यूँकि नजात पाते वक़्त हमें यह उम्मीद दिलाई गई। लेकिन अगर वह कुछ नज़र आ चुका होता जिस की उम्मीद हम रखते तो यह दरहक़ीक़त उम्मीद न होती। कौन उस की उम्मीद रखे जो उसे नज़र आ चुका है? 25 लेकिन चूँकि हम उस की उम्मीद रखते हैं जो अभी नज़र नहीं आया तो लाज़िम है कि हम सब्र से उस का इन्तिज़ार करें।

26 इसी तरह रूह-उल-क़ुद्स भी हमारी कमज़ोर हालत में हमारी मदद करता है, क्यूँकि हम नहीं जानते कि किस तरह मुनासिब दुआ माँगें। लेकिन रूह-उल-क़ुद्स ख़ुद नाक़ाबिल-ए-बयान आहें भरते हुए हमारी शफ़ाअत करता है। 27 और ख़ुदा बाप जो तमाम दिलों की तहक़ीक़ करता है रूह-उल-क़ुद्स की सोच को जानता है, क्यूँकि पाक रूह अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ मुक़द्दसीन की शफ़ाअत करता है।

28 और हम जानते हैं कि जो अल्लाह से मुहब्बत
रखते हैं उन के लिए सब कुछ मिल कर भलाई का
बाइस बनता है, उन के लिए जो उस के इरादे के
मुताबिक़ बुलाए गए हैं। 29 क्यूँकि अल्लाह ने पहले
से अपने लोगों को चुन लिया, उस ने पहले से उन्हें
इस के लिए मुक़र्रर किया कि वह उस के फ़र्ज़न्द के
हमशक्ल बन जाएँ और यूँ मसीह बहुत से भाइयों में
पहलौठा हो। 30 लेकिन जिन्हें उस ने पहले से मुक़र्रर
किया उन्हें उस ने बुलाया भी, जिन्हें उस ने बुलाया
उन्हें उस ने रास्तबाज़ भी ठहराया और जिन्हें उस ने
रास्तबाज़ ठहराया उन्हें उस ने जलाल भी बख़्शा।

अल्लाह की मसीह में मुहब्बत

31 इन तमाम बातों के जवाब में हम क्या कहें?
अगर अल्लाह हमारे हक़ में है तो कौन हमारे ख़िलाफ़
हो सकता है? 32 उस ने अपने फ़र्ज़न्द को भी दरेग़
न किया बल्कि उसे हम सब के लिए दुश्मन के
हवाले कर दिया। जिस ने हमें अपने फ़र्ज़न्द को
दे दिया क्या वह हमें उस के साथ सब कुछ मुफ़्त
नहीं देगा? 33 अब कौन अल्लाह के चुने हुए लोगों
पर इल्ज़ाम लगाएगा जब अल्लाह ख़ुद उन्हें रास्तबाज़
क़रार देता है? 34 कौन हमें मुजरिम ठहराएगा जब
मसीह ईसा ने हमारे लिए अपनी जान दी? बल्कि
हमारी ख़ातिर इस से भी ज़्यादा हुआ। उसे ज़िन्दा
किया गया और वह अल्लाह के दहने हाथ बैठ गया,
जहाँ वह हमारी शफ़ाअत करता है। 35 ग़रज़ कौन
हमें मसीह की मुहब्बत से जुदा करेगा? क्या कोई
मुसीबत, तंगी, ईज़ारसानी, काल, नंगापन, ख़तरा
या तलवार? 36 जैसे कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है,
"तेरी ख़ातिर हमें दिन भर मौत का सामना करना
पड़ता है, लोग हमें ज़बह होने वाली भेड़ों के बराबर
समझते हैं।" 37 कोई बात नहीं, क्यूँकि मसीह हमारे
साथ है और हम से मुहब्बत रखता है। उस के वसीले
से हम इन सब खतरों के रू-ब-रू ज़बरदस्त फ़त्ह
पाते हैं। 38 क्यूँकि मुझे यक़ीन है कि हमें उस की
मुहब्बत से कोई चीज़ जुदा नहीं कर सकती : न मौत
और न ज़िन्दगी, न फ़रिश्ते और न हुक्मरान, न हाल
और न मुस्तक़बिल, न ताक़तें, 39 न नशेब और न
फ़राज़, न कोई और मख़्लूक़ हमें अल्लाह की उस
मुहब्बत से जुदा कर सकेगी जो हमें हमारे ख़ुदावन्द
मसीह ईसा में हासिल है।

अल्लाह और उस की क़ौम

9 1 मैं मसीह में सच कहता हूँ, झूट नहीं बोलता,
और मेरा ज़मीर भी रूह-उल-क़ुद्स में इस की
गवाही देता है 2 कि मैं दिल में अपने यहूदी हमवतनों
के लिए शदीद ग़म और मुसलसल दर्द महसूस करता
हूँ। 3 काश मेरे भाई और ख़ूनी रिश्तेदार नजात पाएँ!
इस के लिए मैं ख़ुद मलऊन और मसीह से जुदा होने
के लिए भी तय्यार हूँ। 4 अल्लाह ने उन ही को जो
इस्राईली हैं अपने फ़र्ज़न्द बनने के लिए मुक़र्रर किया
था। उन ही पर उस ने अपना जलाल ज़ाहिर किया,
उन ही के साथ अपने अह्द बांधे और उन ही को
शरीअत अता की। वही हक़ीक़ी इबादत और अल्लाह
के वादों के हक़दार हैं, 5 वही इब्राहीम और याक़ूब
की औलाद हैं और उन ही में से जिस्मानी लिहाज़ से
मसीह आया। अल्लाह की तम्जीद-ओ-तारीफ़ अबद
तक हो जो सब पर हुकूमत करता है! आमीन।

6 कहने का मतलब यह नहीं कि अल्लाह अपना
वादा पूरा न कर सका। बात यह नहीं है बल्कि यह
कि वह सब हक़ीक़ी इस्राईली नहीं हैं जो इस्राईली
क़ौम से हैं। 7 और सब इब्राहीम की हक़ीक़ी औलाद
नहीं हैं जो उस की नस्ल से हैं। क्यूँकि अल्लाह
ने कलाम-ए-मुक़द्दस में इब्राहीम से फ़रमाया, "तेरी
नस्ल इस्हाक़ ही से क़ाइम रहेगी।" 8 चुनाँचे लाज़िम
नहीं कि इब्राहीम की तमाम फ़ित्रती औलाद अल्लाह
के फ़र्ज़न्द हों बल्कि सिर्फ़ वही इब्राहीम की हक़ीक़ी
औलाद समझे जाते हैं जो अल्लाह के वादे के मुताबिक़
उस के फ़र्ज़न्द बन गए हैं। 9 और वादा यह था,
"मुक़र्ररा वक़्त पर मैं वापस आऊँगा तो सारा के बेटा
होगा।"

10 लेकिन न सिर्फ़ सारा के साथ ऐसा हुआ बल्कि
इस्हाक़ की बीवी रिब्क़ा के साथ भी। एक ही मर्द
यानी हमारे बाप इस्हाक़ से उस के जुड़वाँ बच्चे पैदा
हुए। 11 लेकिन बच्चे अभी पैदा नहीं हुए थे न उन्हों ने
कोई नेक या बुरा काम किया था कि माँ को अल्लाह
से एक पैग़ाम मिला। इस पैग़ाम से ज़ाहिर होता है कि
अल्लाह लोगों को अपने इरादे के मुताबिक़ चुन लेता
है। 12 और उस का यह चुनाओ उन के नेक आमाल
पर मब्नी नहीं होता बल्कि उस के बुलावे पर। पैग़ाम
यह था, "बड़ा छोटे की ख़िदमत करेगा।" 13 यह भी
कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है, "याक़ूब मुझे प्यारा
था, जबकि एसौ से मैं मुतनफ़्फ़िर रहा।"

14 क्या इस का मतलब यह है कि अल्लाह बेइन्साफ़
है? हरगिज़ नहीं! 15 क्यूँकि उस ने मूसा से कहा, "मैं
जिस पर मेहरबान होना चाहूँ उस पर मेहरबान होता
हूँ और जिस पर रहम करना चाहूँ उस पर रहम करता
हूँ।" 16 चुनाँचे सब कुछ अल्लाह के रहम पर ही मब्नी
है। इस में इन्सान की मर्ज़ी या कोशिश का कोई
दख़ल नहीं। 17 यूँ अल्लाह अपने कलाम में मिस्र के
बादशाह फ़िरऔन से मुख़ातिब हो कर फ़रमाता है,
"मैं ने तुझे इस लिए बरपा किया है कि तुझ में अपनी
क़ुदरत का इज़हार करूँ और यूँ तमाम दुनिया में मेरे
नाम का प्रचार किया जाए।" 18 ग़रज़, यह अल्लाह ही
की मर्ज़ी है कि वह किस पर रहम करे और किस को
सख़्त कर दे।

अल्लाह का ग़ज़ब और रहम

19 शायद कोई कहे, "अगर यह बात है तो फिर
अल्लाह किस तरह हम पर इल्ज़ाम लगा सकता है
जब हम से ग़लतियाँ होती हैं? हम तो उस की मर्ज़ी
का मुक़ाबला नहीं कर सकते।" 20 यह न कहें। आप
इन्सान होते हुए कौन हैं कि अल्लाह के साथ बहस-
मुबाहसा करें? क्या जिस को तश्कील दिया गया है
वह तश्कील देने वाले से कहता है, "तू ने मुझे इस
तरह क्यूँ बना दिया?" 21 क्या कुम्हार का हक़ नहीं है
कि गारे के एक ही लौंदे से मुख़्तलिफ़ क़िस्म के बर्तन
बनाए, कुछ बाइज़्ज़त इस्तेमाल के लिए और कुछ
ज़िल्लतआमेज़ इस्तेमाल के लिए? 22 यह बात अल्लाह
पर भी सादिक़ आती है। गो वह अपना ग़ज़ब नाज़िल
करना और अपनी क़ुदरत ज़ाहिर करना चाहता था,
लेकिन उस ने बड़े सब्र-ओ-तहम्मुल से वह बर्तन
बर्दाश्त किए जिन पर उस का ग़ज़ब आना है और
जो हलाकत के लिए तय्यार किए गए हैं। 23 उस ने
यह इस लिए किया ताकि अपना जलाल कस्रत से
उन बर्तनों पर ज़ाहिर करे जिन पर उस का फ़ज़्ल है
और जो पहले से जलाल पाने के लिए तय्यार किए
गए हैं। 24 और हम उन में से हैं जिन को उस ने चुन
लिया है, न सिर्फ़ यहूदियों में से बल्कि ग़ैरयहूदियों
में से भी। 25 यूँ वह ग़ैरयहूदियों के नाते से होसेअ की
किताब में फ़रमाता है,

"मैं उसे 'मेरी क़ौम' कहूँगा
जो मेरी क़ौम न थी,
और उसे 'मेरी प्यारी' कहूँगा
जो मुझे प्यारी न थी।"

26 और "जहाँ उन्हें बताया गया कि 'तुम मेरी क़ौम
नहीं'
वहाँ वह 'ज़िन्दा ख़ुदा के फ़र्ज़न्द' कहलाएँगे।"

27 और यसायाह नबी इस्राईल के बारे में पुकारता
है, "गो इस्राईली साहिल पर की रेत जैसे बेशुमार
क्यूँ न हों तो भी सिर्फ़ एक बचे हुए हिस्से को नजात
मिलेगी। 28 क्यूँकि रब अपना फ़रमान मुकम्मल तौर
पर और तेज़ी से दुनिया में पूरा करेगा।" 29 यसायाह
ने यह बात एक और पेशगोई में भी की, "अगर रब्ब-
उल-अफ़्वाज हमारी कुछ औलाद ज़िन्दा न छोड़ता
तो हम सदूम की तरह मिट जाते, हमारा अमूरा जैसा
सत्यानास हो जाता।"

इस्राईल के लिए पौलुस की दुआ

30 इस से हम क्या कहना चाहते हैं? यह कि गो
ग़ैरयहूदी रास्तबाज़ी की तलाश में न थे तो भी उन्हें
रास्तबाज़ी हासिल हुई, ऐसी रास्तबाज़ी जो ईमान से
पैदा हुई। 31 इस के बरअक्स इस्राईलियों को यह

हासिल न हुई, हालाँकि वह ऐसी शरीअत की तलाश
में रहे जो उन्हें रास्तबाज़ ठहराए। 32 इस की क्या
वजह थी? यह कि वह अपनी तमाम कोशिशों में
ईमान पर इन्हिसार नहीं करते थे बल्कि अपने नेक
आमाल पर। उन्हों ने राह में पड़े पत्थर से ठोकर
खाई। 33 यह बात कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखी भी है,

"देखो मैं सिय्यून में एक पत्थर रख देता हूँ
जो ठोकर का बाइस बनेगा,
एक चटान जो ठेस लगने का सबब होगी।
लेकिन जो उस पर ईमान लाएगा
उसे शर्मिन्दा नहीं किया जाएगा।"

10 1 भाइयो, मेरी दिली आर्ज़ू और मेरी अल्लाह
से दुआ यह है कि इस्राईलियों को नजात
मिले। 2 मैं इस की तस्दीक़ कर सकता हूँ कि वह
अल्लाह की ग़ैरत रखते हैं। लेकिन इस ग़ैरत के पीछे
रुहानी समझ नहीं होती। 3 वह उस रास्तबाज़ी से
नावाक़िफ़ रहे हैं जो अल्लाह की तरफ़ से है। इस की
बजाय वह अपनी ज़ाती रास्तबाज़ी क़ाइम करने की
कोशिश करते रहे हैं। यूँ उन्हों ने अपने आप को
अल्लाह की रास्तबाज़ी के ताबे नहीं किया। 4 क्यूँकि
मसीह में शरीअत का मक़्सद पूरा हो गया, हाँ वह
अन्जाम तक पहुँच गई है। चुनाँचे जो भी मसीह पर
ईमान रखता है वही रास्तबाज़ ठहरता है।

सब के लिए रास्तबाज़ी

5 मूसा ने उस रास्तबाज़ी के बारे में लिखा जो
शरीअत से हासिल होती है, "जो शख़्स यूँ करेगा
वह जीता रहेगा।" 6 लेकिन जो रास्तबाज़ी ईमान से
हासिल होती है वह कहती है, "अपने दिल में न
कहना कि 'कौन आसमान पर चढ़ेगा?' (ताकि मसीह
को नीचे ले आए)। 7 यह भी न कहना कि 'कौन
पाताल में उतरेगा?' (ताकि मसीह को मुर्दों में से
वापस ले आए)।" 8 तो फिर क्या करना चाहिए?
ईमान की रास्तबाज़ी फ़रमाती है, "यह कलाम तेरे
क़रीब बल्कि तेरे मुँह और दिल में मौजूद है।" कलाम
से मुराद ईमान का वह पैग़ाम है जो हम सुनाते हैं।
9 यानी यह कि अगर तू अपने मुँह से इक़्रार करे कि
ईसा ख़ुदावन्द है और दिल से ईमान लाए कि अल्लाह
ने उसे मुर्दों में से ज़िन्दा कर दिया तो तुझे नजात
मिलेगी। 10 क्यूँकि जब हम दिल से ईमान लाते हैं
तो अल्लाह हमें रास्तबाज़ क़रार देता है, और जब हम
अपने मुँह से इक़्रार करते हैं तो हमें नजात मिलती है।
11 यूँ कलाम-ए-मुक़द्दस फ़रमाता है, "जो भी उस पर
ईमान लाए उसे शर्मिन्दा नहीं किया जाएगा।" 12 इस
में कोई फ़र्क़ नहीं कि वह यहूदी हो या ग़ैरयहूदी।
क्यूँकि सब का एक ही ख़ुदावन्द है, जो फ़य्याज़ी से
हर एक को देता है जो उसे पुकारता है। 13 क्यूँकि
"जो भी ख़ुदावन्द का नाम लेगा नजात पाएगा।"

14 लेकिन वह किस तरह उसे पुकार सकेंगे अगर
वह उस पर कभी ईमान नहीं लाए? और वह किस
तरह उस पर ईमान ला सकते हैं अगर उन्हों ने कभी
उस के बारे में सुना नहीं? और वह किस तरह उस
के बारे में सुन सकते हैं अगर किसी ने उन्हें यह
पैग़ाम सुनाया नहीं? 15 और सुनाने वाले किस तरह
दूसरों के पास जाएंगे अगर उन्हें भेजा न गया? इस
लिए कलाम-ए-मुक़द्दस फ़रमाता है, "उन के क़दम
कितने प्यारे हैं जो ख़ुशख़बरी सुनाते हैं।" 16 लेकिन
सब ने अल्लाह की यह ख़ुशख़बरी क़बूल नहीं की। यूँ
यसायाह नबी फ़रमाता है, "ऐ रब, कौन हमारे पैग़ाम
पर ईमान लाया?" 17 ग़रज़, ईमान पैग़ाम सुनने से पैदा
होता है, यानी मसीह का कलाम सुनने से।

18 तो फिर सवाल यह है कि क्या इस्राईलियों ने यह
पैग़ाम नहीं सुना? उन्हों ने इसे ज़रूर सुना। कलाम-
ए-मुक़द्दस में लिखा है,

"उन की आवाज़ निकल कर पूरी दुनिया में सुनाई
दी,
उन के अल्फ़ाज़ दुनिया की इन्तिहा तक पहुँच
गए।"

19 तो क्या इस्राईल को इस बात की समझ न आई?
नहीं, उसे ज़रूर समझ आई। पहले मूसा इस का
जवाब देता है,

"मैं ख़ुद ही तुम्हें ग़ैरत दिलाऊँगा,

एक ऐसी क़ौम के ज़रीए जो हक़ीक़त में क़ौम नहीं है।

एक नादान क़ौम के ज़रीए मैं तुम्हें ग़ुस्सा दिलाऊँगा।”

20 और यसायाह नबी यह कहने की जुरअत करता है,

“जो मुझे तलाश नहीं करते थे
उन्हें मैं ने मुझे पाने का मौक़ा दिया,
जो मेरे बारे में दरयाफ़्त नहीं करते थे
उन पर मैं ज़ाहिर हुआ।”

21 लेकिन इस्राईल के बारे में वह फ़रमाता है,

“दिन भर मैं ने अपने हाथ फैलाए रखे
ताकि एक नाफ़रमान और सरकश क़ौम का इस्तिक़्बाल करूँ।”

इस्राईल पर अल्लाह का रहम

11 1 तो क्या इस का यह मतलब है कि अल्लाह ने अपनी क़ौम को रद्द किया है? हरगिज़ नहीं! मैं तो ख़ुद इस्राईली हूँ। इब्राहीम मेरा भी बाप है, और मैं बिनयमीन के क़बीले का हूँ। 2 अल्लाह ने अपनी क़ौम को पहले से चुन लिया था। वह किस तरह उसे रद्द करेगा! क्या आप को मालूम नहीं कि कलाम-ए-मुक़द्दस में इल्यास नबी के बारे में क्या लिखा है? इल्यास ने अल्लाह के सामने इस्राईली क़ौम की शिकायत करके कहा, 3 “ऐ रब, उन्हों ने तेरे नबियों को क़त्ल किया और तेरी क़ुर्बानगाहों को गिरा दिया है। मैं अकेला ही बचा हूँ, और वह मुझे भी मार डालने के दरपै हैं।” 4 इस पर अल्लाह ने उसे क्या जवाब दिया? “मैं ने अपने लिए 7,000 मर्दों को बचा लिया है जिन्हों ने अपने घुटने बाल देवता के सामने नहीं टेके।” 5 आज भी यही हालत है। इस्राईल का एक छोटा हिस्सा बच गया है जिसे अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से चुन लिया है। 6 और चूँकि यह अल्लाह के फ़ज़्ल से हुआ है इस लिए यह उन की अपनी कोशिशों से नहीं हुआ। वर्ना फ़ज़्ल फ़ज़्ल ही न रहता।

7 ग़रज़, जिस चीज़ की तलाश में इस्राईल रहा वह पूरी क़ौम को हासिल नहीं हुई बल्कि सिर्फ़ उस के एक चुने हुए हिस्से को। बाक़ी सब को फ़ज़्ल के बारे में बेहिस्स कर दिया गया, 8 जिस तरह कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है,

“आज तक अल्लाह ने उन्हें ऐसी हालत में रखा है
कि उन की रूह मदहोश है,
उन की आँखें देख नहीं सकतीं
और उन के कान सुन नहीं सकते।”

9 और दाऊद फ़रमाता है,

“उन की मेज़ उन के लिए फंदा और जाल बन जाए,
इस से वह ठोकर खा कर अपने ग़लत कामों का मुआवज़ा पाएँ।
10 उन की आँखें तारीक हो जाएँ ताकि वह देख न सकें,
उन की कमर हमेशा झुकी रहे।”

11 तो क्या अल्लाह की क़ौम ठोकर खा कर यूँ गिर गई कि कभी बहाल नहीं होगी? हरगिज़ नहीं! उस की ख़ताओं की वजह से अल्लाह ने ग़ैरयहूदियों को नजात पाने का मौक़ा दिया ताकि इस्राईली ग़ैरत खाएँ। 12 यूँ यहूदियों की ख़ताएँ दुनिया के लिए भरपूर बरकत का बाइस बन गईं, और उन का नुक़्सान ग़ैरयहूदियों के लिए भरपूर बरकत का बाइस बन गया। तो फिर यह बरकत कितनी और ज़्यादा होगी जब यहूदियों की पूरी तादाद इस में शामिल हो जाएगी!

ग़ैरयहूदियों की नजात

13 आप को जो ग़ैरयहूदी हैं मैं यह बताता हूँ, अल्लाह ने मुझे ग़ैरयहूदियों के लिए रसूल बनाया है, इस लिए मैं अपनी इस ख़िदमत पर ज़ोर देता हूँ। 14 क्यूँकि मैं चाहता हूँ कि मेरी क़ौम के लोग यह देख कर ग़ैरत खाएँ और उन में से कुछ बच जाएँ। 15 जब उन्हें रद्द किया गया तो बाक़ी दुनिया की अल्लाह के साथ सुलह हो गई। तो फिर क्या होगा जब उन्हें दुबारा क़बूल किया जाएगा? यह मुर्दों में से जी उठने के बराबर होगा!

16 जब आप फ़सल के पहले आटे से रोटी बना
कर अल्लाह के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करते हैं तो
बाक़ी सारा आटा भी मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस है। और
जब दरख़्त की जड़ें मुक़द्दस हैं तो उस की शाख़ें भी
मुक़द्दस हैं। 17 ज़ैतून के दरख़्त की कुछ शाख़ें तोड़
दी गई हैं और उन की जगह जंगली ज़ैतून के दरख़्त
की एक शाख़ पैवन्द की गई है। आप ग़ैरयहूदी इस
जंगली शाख़ से मुताबिक़त रखते हैं। जिस तरह यह
दूसरे दरख़्त की जड़ से रस और तक़वियत पाती है
उसी तरह आप भी यहूदी क़ौम की रुहानी जड़ से
तक़वियत पाते हैं। 18 चुनाँचे आप का दूसरी शाख़ों
के सामने शेख़ी मारने का हक़ नहीं। और अगर आप
शेख़ी मारें तो यह ख़याल करें कि आप जड़ को क़ाइम
नहीं रखते बल्कि जड़ आप को।

19 शायद आप इस पर एतिराज़ करें, "हाँ, लेकिन
दूसरी शाख़ें तोड़ी गईं ताकि मैं पैवन्द किया जाऊँ।"
20 बेशक, लेकिन याद रखें, दूसरी शाख़ें इस लिए
तोड़ी गईं कि वह ईमान नहीं रखती थीं और आप इस
लिए उन की जगह लगे हैं कि आप ईमान रखते हैं।
चुनाँचे अपने आप पर फ़ख़र न करें बल्कि ख़ौफ़ रखें।
21 अल्लाह ने असली शाख़ें बचने न दीं। अगर आप
इस तरह की हरकतें करें तो क्या वह आप को छोड़
देगा? 22 यहाँ हमें अल्लाह की मेहरबानी और सख़्ती
नज़र आती है - जो गिर गए हैं उन के सिलसिले में
उस की सख़्ती, लेकिन आप के सिलसिले में उस की
मेहरबानी। और यह मेहरबानी रहेगी जब तक आप
उस की मेहरबानी से लिपटे रहेंगे। वर्ना आप को भी
दरख़्त से काट डाला जाएगा। 23 और अगर यहूदी
अपने कुफ़्र से बाज़ आएँ तो उन की पैवन्दकारी
दुबारा दरख़्त के साथ की जाएगी, क्यूँकि अल्लाह ऐसा
करने पर क़ादिर है। 24 आख़िर आप ख़ुद क़ुदरती तौर
पर ज़ैतून के जंगली दरख़्त की शाख़ थे जिसे अल्लाह
ने तोड़ कर क़ुदरती क़वानीन के ख़िलाफ़ ज़ैतून के
असल दरख़्त पर लगाया। तो फिर वह कितनी ज़्यादा
आसानी से यहूदियों की तोड़ी गई शाख़ें दुबारा उन
के अपने दरख़्त में लगा देगा!

अल्लाह का रहम सब पर

25 भाइयो, मैं चाहता हूँ कि आप एक भेद से
वाक़िफ़ हो जाएँ, क्यूँकि यह आप को अपने आप को
दाना समझने से बाज़ रखेगा। भेद यह है कि इस्राईल
का एक हिस्सा अल्लाह के फ़ज़्ल के बारे में बेहिस्स
हो गया है, और उस की यह हालत उस वक़्त तक
रहेगी जब तक ग़ैरयहूदियों की पूरी तादाद अल्लाह की
बादशाही में दाख़िल न हो जाए। 26 फिर पूरा इस्राईल
नजात पाएगा। यह कलाम-ए-मुक़द्दस में भी लिखा है,

"छुड़ाने वाला सिय्यून से आएगा।
वह बेदीनी को याक़ूब से हटा देगा।
27 और यह मेरा उन के साथ अह्द होगा
जब मैं उन के गुनाहों को उन से दूर करूँगा।"

28 चूँकि यहूदी अल्लाह की ख़ुशख़बरी क़बूल नहीं
करते इस लिए वह अल्लाह के दुश्मन हैं, और यह
बात आप के लिए फ़ाइदे का बाइस बन गई है।
तो भी वह अल्लाह को प्यारे हैं, इस लिए कि उस ने
उन के बापदादा इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब को
चुन लिया था। 29 क्यूँकि जब भी अल्लाह किसी को
अपनी नेमतों से नवाज़ कर बुलाता है तो उस की यह
नेमतें और बुलावे कभी नहीं मिटने की। 30 माज़ी में
ग़ैरयहूदी अल्लाह के ताबे नहीं थे, लेकिन अब अल्लाह
ने आप पर यहूदियों की नाफ़रमानी की वजह से रहम
किया है। 31 अब इस के उलट है कि यहूदी ख़ुद आप
पर किए गए रहम की वजह से अल्लाह के ताबे नहीं
हैं, और लाज़िम है कि अल्लाह उन पर भी रहम करे।
32 क्यूँकि उस ने सब को नाफ़रमानी के क़ैदी बना
दिया है ताकि सब पर रहम करे।

अल्लाह की तम्जीद

33 वाह! अल्लाह की दौलत, हिक्मत और इल्म क्या
ही गहरा है। कौन उस के फ़ैसलों की तह तक पहुँच
सकता है! कौन उस की राहों का खोज लगा सकता
है! 34 कलाम-ए-मुक़द्दस यूँ फ़रमाता है,

"किस ने रब की सोच को जाना?

या कौन इतना इल्म रखता है
कि वह उसे मश्वरा दे? 35 क्या किसी ने कभी उसे कुछ दिया
कि उसे इस का मुआवज़ा देना पड़े?”
36 क्यूँकि सब कुछ उसी ने पैदा किया है, सब कुछ उसी के ज़रीए और उसी के जलाल के लिए क़ाइम है। उसी की तम्जीद अबद तक होती रहे! आमीन।

पूरी ज़िन्दगी अल्लाह की ख़िदमत में

12 1 भाइयो, अल्लाह ने आप पर कितना रहम किया है! अब ज़रूरी है कि आप अपने बदनों को अल्लाह के लिए मख़्सूस करें, कि वह एक ऐसी ज़िन्दा और मुक़द्दस क़ुर्बानी बन जाएँ जो उसे पसन्द आए। ऐसा करने से आप उस की माक़ूल इबादत करेंगे। 2 इस दुनिया के साँचे में न ढल जाएँ बल्कि अल्लाह को आप की सोच की तज्दीद करने दें ताकि आप वह शक्ल-ओ-सूरत अपना सकें जो उसे पसन्द है। फिर आप अल्लाह की मर्ज़ी को पहचान सकेंगे, वह कुछ जो अच्छा, पसन्दीदा और कामिल है।

3 उस रहम की बिना पर जो अल्लाह ने मुझ पर किया मैं आप में से हर एक को हिदायत देता हूँ कि अपनी हक़ीक़ी हैसियत को जान कर अपने आप को इस से ज़्यादा न समझें। क्यूँकि जिस पैमाने से अल्लाह ने हर एक को ईमान बख़्शा है उसी के मुताबिक़ वह समझदारी से अपनी हक़ीक़ी हैसियत को जान ले। 4 हमारे एक ही जिस्म में बहुत से आज़ा हैं, और हर एक उज़ू का फ़र्क़ फ़र्क़ काम होता है। 5 इसी तरह गो हम बहुत हैं, लेकिन मसीह में एक ही बदन हैं, जिस में हर उज़ू दूसरों के साथ जुड़ा हुआ है। 6 अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से हर एक को मुख़्तलिफ़ नेमतों से नवाज़ा है। अगर आप की नेमत नबुव्वत करना है तो अपने ईमान के मुताबिक़ नबुव्वत करें। 7 अगर आप की नेमत ख़िदमत करना है तो ख़िदमत करें। अगर आप की नेमत तालीम देना है तो तालीम दें। 8 अगर आप की नेमत हौसलाअफ़्ज़ाई करना है तो हौसलाअफ़्ज़ाई करें। अगर आप की नेमत दूसरों की ज़रूरियात पूरी करना है तो ख़ुलूसदिली से यही करें। अगर आप की नेमत राहनुमाई करना है तो सरगर्मी से राहनुमाई करें। अगर आप की नेमत रहम करना है तो ख़ुशी से रहम करें।

9 आप की मुहब्बत महज़ दिखावे की न हो। जो कुछ बुरा है उस से नफ़रत करें और जो कुछ अच्छा है उस के साथ लिपटे रहें। 10 आप की एक दूसरे के लिए बरादराना मुहब्बत सरगर्म हो। एक दूसरे की इज़्ज़त करने में आप ख़ुद पहला क़दम उठाएँ। 11 आप का जोश ढीला न पड़ जाए बल्कि रुहानी सरगर्मी से ख़ुदावन्द की ख़िदमत करें। 12 उम्मीद में ख़ुश, मुसीबत में साबितक़दम और दुआ में लगे रहें। 13 जब मुक़द्दसीन ज़रूरतमन्द हैं तो उन की मदद करने में शरीक हों। मेहमान-नवाज़ी में लगे रहें।

14 जो आप को ईज़ा पहुँचाएँ उन को बरकत दें। उन पर लानत मत करें बल्कि बरकत चाहें। 15 ख़ुशी मनाने वालों के साथ ख़ुशी मनाएँ और रोने वालों के साथ रोएँ। 16 एक दूसरे के साथ अच्छे ताल्लुक़ात रखें। ऊँची सोच न रखें बल्कि दबे हुओं से रिफ़ाक़त रखें। अपने आप को दाना मत समझें।

17 अगर कोई आप से बुरा सुलूक करे तो बदले में उस से बुरा सुलूक न करना। ध्यान रखें कि जो कुछ सब की नज़र में अच्छा है वही अमल में लाएँ। 18 अपनी तरफ़ से पूरी कोशिश करें कि जहाँ तक मुमकिन हो सब के साथ मेल-मिलाप रखें। 19 अज़ीज़ो, इन्तिक़ाम मत लें बल्कि अल्लाह के ग़ज़ब को बदला लेने का मौक़ा दें। क्यूँकि कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है, “रब फ़रमाता है, इन्तिक़ाम लेना मेरा ही काम है, मैं ही बदला लूँगा।” 20 इस के बजाय “अगर तेरा दुश्मन भूका हो तो उसे खाना खिला, अगर प्यासा हो तो पानी पिला। क्यूँकि ऐसा करने से तू उस के सर पर जलते हुए कोएलों का ढेर लगाएगा।” 21 अपने पर बुराई को ग़ालिब न आने दें बल्कि भलाई से आप बुराई पर ग़ालिब आएँ।

रआया के फ़राइज़

13 1 हर शख़्स इख़तियार रखने वाले हुक्मरानों
के ताबे रहे, क्यूँकि तमाम इख़तियार
अल्लाह की तरफ़ से है। जो इख़तियार रखते हैं उन्हें
अल्लाह की तरफ़ से मुक़र्रर किया गया है। 2 चुनाँचे
जो हुक्मरान की मुख़ालफ़त करता है वह अल्लाह के
फ़रमान की मुख़ालफ़त करता और यूँ अपने आप पर
अल्लाह की अदालत लाता है। 3 क्यूँकि हुक्मरान उन
के लिए ख़ौफ़ का बाइस नहीं होते जो सहीह काम
करते हैं बल्कि उन के लिए जो ग़लत काम करते
हैं। क्या आप हुक्मरान से ख़ौफ़ खाए बग़ैर ज़िन्दगी
गुज़ारना चाहते हैं? तो फिर वह कुछ करें जो अच्छा
है तो वह आप को शाबाश देगा। 4 क्यूँकि वह अल्लाह
का ख़ादिम है जो आप की बेहतरी के लिए ख़िदमत
करता है। लेकिन अगर आप ग़लत काम करें तो डरें,
क्यूँकि वह अपनी तलवार को ख़्वाह-म-ख़्वाह थामे
नहीं रखता। वह अल्लाह का ख़ादिम है और उस का
ग़ज़ब ग़लत काम करने वाले पर नाज़िल होता है।
5 इस लिए लाज़िम है कि आप हुकूमत के ताबे रहें,
न सिर्फ़ सज़ा से बचने के लिए बल्कि इस लिए भी
कि आप के ज़मीर पर दाग़ न लगे।

6 यही वजह है कि आप टैक्स अदा करते हैं,
क्यूँकि सरकारी मुलाज़िम अल्लाह के ख़ादिम हैं जो
इस ख़िदमत को सरअन्जाम देने में लगे रहते हैं।
7 चुनाँचे हर एक को वह कुछ दें जो उस का हक़
है, टैक्स लेने वाले को टैक्स और कस्टम ड्यूटी लेने
वाले को कस्टम ड्यूटी। जिस का ख़ौफ़ रखना आप
पर फ़र्ज़ है उस का ख़ौफ़ मानें और जिस का एहतिराम
करना आप पर फ़र्ज़ है उस का एहतिराम करें।

एक दूसरे के लिए फ़राइज़

8 किसी के भी क़र्ज़दार न रहें। सिर्फ़ एक क़र्ज़ है जो
आप कभी नहीं उतार सकते, एक दूसरे से मुहब्बत
रखने का क़र्ज़। यह करते रहें क्यूँकि जो दूसरों से
मुहब्बत रखता है उस ने शरीअत के तमाम तक़ाज़े
पूरे किए हैं। 9 मसलन शरीअत में लिखा है, "क़त्ल
न करना, ज़िना न करना, चोरी न करना, लालच न
करना।" और दीगर जितने अह्काम हैं इस एक ही
हुक्म में समाए हुए हैं कि "अपने पड़ोसी से वैसी
मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आप से रखता है।"
10 जो किसी से मुहब्बत रखता है वह उस से ग़लत
सुलूक नहीं करता। यूँ मुहब्बत शरीअत के तमाम
तक़ाज़े पूरे करती है।

11 ऐसा करना लाज़िम है, क्यूँकि आप ख़ुद इस
वक़्त की अहमियत को जानते हैं कि नींद से जाग
उठने की घड़ी आ चुकी है। क्यूँकि जब हम ईमान
लाए थे तो हमारी नजात इतनी क़रीब नहीं थी जितनी
कि अब है। 12 रात ढलने वाली है और दिन निकलने
वाला है। इस लिए आएँ, हम तारीकी के काम गन्दे
कपड़ों की तरह उतार कर नूर के हथियार बांध लें।
13 हम शरीफ़ ज़िन्दगी गुज़ारें, ऐसे लोगों की तरह जो
दिन की रौशनी में चलते हैं। इस लिए लाज़िम है कि
हम इन चीज़ों से बाज़ रहें : बदमस्तों की रंगरलियों
और शराबनोशी से, ज़िनाकारी और अय्याशी से,
और झगड़े और हसद से। 14 इस के बजाय ख़ुदावन्द
ईसा मसीह को पहन लें और अपनी पुरानी फ़ित्रत
की परवरिश यूँ न करें कि गुनाहआलूदा ख़्वाहिशात
बेदार हो जाएँ।

एक दूसरे को मुजरिम मत ठहराना

14 1 जिस का ईमान कमज़ोर है उसे क़बूल
करें, और उस के साथ बह्स-मुबाहसा न
करें। 2 एक का ईमान तो उसे हर चीज़ खाने की
इजाज़त देता है जबकि कमज़ोर ईमान रखने वाला
सिर्फ़ सब्ज़ियाँ खाता है। 3 जो सब कुछ खाता है वह
उसे हक़ीर न जाने जो यह नहीं कर सकता। और
जो यह नहीं कर सकता वह उसे मुजरिम न ठहराए
जो सब कुछ खाता है, क्यूँकि अल्लाह ने उसे क़बूल
किया है। 4 आप कौन हैं कि किसी और के ग़ुलाम का
फ़ैसला करें? उस का अपना मालिक फ़ैसला करेगा
कि वह खड़ा रहे या गिर जाए। और वह ज़रूर खड़ा

रहेगा, क्यूँकि ख़ुदावन्द उसे क़ाइम रखने पर क़ादिर है।

5 कुछ लोग एक दिन को दूसरे दिनों की निस्बत ज़्यादा अहम क़रार देते हैं जबकि दूसरे तमाम दिनों की अहमियत बराबर समझते हैं। आप जो भी ख़याल रखें, हर एक उसे पूरे यक़ीन के साथ रखे। 6 जो एक दिन को ख़ास क़रार देता है वह इस से ख़ुदावन्द की ताज़ीम करना चाहता है। इसी तरह जो सब कुछ खाता है वह इस से ख़ुदावन्द को जलाल देना चाहता है। यह इस से ज़ाहिर होता है कि वह इस के लिए ख़ुदा का शुक्र करता है। लेकिन जो कुछ खानों से पर्हेज़ करता है वह भी ख़ुदा का शुक्र करके इस से उस की ताज़ीम करना चाहता है। 7 बात यह है कि हम में से कोई नहीं जो सिर्फ़ अपने वास्ते ज़िन्दगी गुज़ारता है और कोई नहीं जो सिर्फ़ अपने वास्ते मरता है। 8 अगर हम ज़िन्दा हैं तो इस लिए कि ख़ुदावन्द को जलाल दें, और अगर हम मरें तो इस लिए कि हम ख़ुदावन्द को जलाल दें। ग़रज़ हम ख़ुदावन्द ही के हैं, ख़्वाह ज़िन्दा हों या मुर्दा। 9 क्यूँकि मसीह इसी मक़्सद के लिए मुआ और जी उठा कि वह मुर्दों और ज़िन्दों दोनों का मालिक हो। 10 तो फिर आप जो सिर्फ़ सब्ज़ी खाते हैं अपने भाई को मुजरिम क्यूँ ठहराते हैं? और आप जो सब कुछ खाते हैं अपने भाई को हक़ीर क्यूँ जानते हैं? याद रखें कि एक दिन हम सब अल्लाह के तख़्त-ए-अदालत के सामने खड़े होंगे। 11 कलाम-ए-मुक़द्दस में यही लिखा है,

रब फ़रमाता है, "मेरी हयात की क़सम,
हर घुटना मेरे सामने झुकेगा
और हर ज़बान अल्लाह की तम्जीद करेगी।"

12 हाँ, हम में से हर एक को अल्लाह के सामने अपनी ज़िन्दगी का जवाब देना पड़ेगा।

दूसरों के लिए गिरने का बाइस न बनना

13 चुनाँचे आएँ, हम एक दूसरे को मुजरिम न ठहराएँ। पूरे अज़म के साथ इस का ख़याल रखें कि आप अपने भाई के लिए ठोकर खाने या गुनाह में गिरने का बाइस न बनें। 14 मुझे ख़ुदावन्द मसीह में इल्म और यक़ीन है कि कोई भी खाना बज़ात-ए-ख़ुद नापाक नहीं है। लेकिन जो किसी खाने को नापाक समझता है उस के लिए वह खाना नापाक ही है। 15 अगर आप अपने भाई को अपने किसी खाने के बाइस परेशान कर रहे हैं तो आप मुहब्बत की रूह में ज़िन्दगी नहीं गुज़ार रहे। अपने भाई को अपने खाने से हलाक न करें। याद रखें कि मसीह ने उस के लिए अपनी जान दी है। 16 ऐसा न हो कि लोग उस अच्छी चीज़ पर कुफ़्र बकें जो आप को मिल गई है। 17 क्यूँकि अल्लाह की बादशाही खाने-पीने की चीज़ों पर क़ाइम नहीं है बल्कि रास्तबाज़ी, सुलह-सलामती और रूह-उल-क़ुद्स में ख़ुशी पर। 18 जो यूँ मसीह की ख़िदमत करता है वह अल्लाह को पसन्द और इन्सानों को मन्ज़ूर है।

19 चुनाँचे आएँ, हम पूरी जिद्द-ओ-जह्द के साथ वह कुछ करने की कोशिश करें जो सुलह-सलामती और एक दूसरे की रुहानी तामीर-ओ-तरक़्क़ी का बाइस है। 20 अल्लाह का काम किसी खाने की ख़ातिर बर्बाद न करें। हर खाना पाक है, लेकिन अगर आप कुछ खाते हैं जिस से दूसरे को ठेस लगे तो यह ग़लत है। 21 बेहतर यह है कि न आप गोश्त खाएँ, न मै पिएँ और न कोई और क़दम उठाएँ जिस से आप का भाई ठोकर खाए। 22 जो भी ईमान आप इस नाते से रखते हैं वह आप और अल्लाह तक मह्दूद रहे। मुबारक है वह जो किसी चीज़ को जाइज़ क़रार दे कर अपने आप को मुजरिम नहीं ठहराता। 23 लेकिन जो शक करते हुए कोई खाना खाता है उसे मुजरिम ठहराया जाता है, क्यूँकि उस का यह अमल ईमान पर मब्नी नहीं है। और जो भी अमल ईमान पर मब्नी नहीं होता वह गुनाह है।

बुर्दबारी

15 1 हम ताक़तवरों का फ़र्ज़ है कि कमज़ोरों की कमज़ोरियाँ बर्दाश्त करें। हम सिर्फ़ अपने आप को ख़ुश करने की ख़ातिर ज़िन्दगी न

गुज़ारें 2 बल्कि हर एक अपने पड़ोसी को उस की
बेहतरी और रुहानी तामीर-ओ-तरक़्क़ी के लिए ख़ुश
करे। 3 क्यूँकि मसीह ने भी ख़ुद को ख़ुश रखने
के लिए ज़िन्दगी नहीं गुज़ारी। कलाम-ए-मुक़द्दस में
उस के बारे में यही लिखा है, "जो तुझे गालियाँ
देते हैं उन की गालियाँ मुझ पर आ गई हैं।"
4 यह सब कुछ हमें हमारी नसीहत के लिए लिखा
गया ताकि हम साबितक़दमी और कलाम-ए-मुक़द्दस
की हौसलाअफ़्ज़ा बातों से उम्मीद पाएँ। 5 अब
साबितक़दमी और हौसला देने वाला ख़ुदा आप को
तौफ़ीक़ दे कि आप मसीह ईसा का नमूना अपना
कर यगानगत की रूह में एक दूसरे के साथ ज़िन्दगी
गुज़ारें। 6 तब ही आप मिल कर एक ही आवाज़ के
साथ ख़ुदा, हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह के बाप को
जलाल दे सकेंगे।

ग़ैरयहूदियों के लिए ख़ुशख़बरी

7 चुनाँचे जिस तरह मसीह ने आप को क़बूल किया
है उसी तरह एक दूसरे को भी क़बूल करें ताकि
अल्लाह को जलाल मिले। 8 याद रखें कि मसीह अल्लाह
की सदाक़त का इज़हार करके यहूदियों का ख़ादिम
बना ताकि उन वादों की तस्दीक़ करे जो इब्राहीम,
इस्हाक़ और याक़ूब से किए गए थे। 9 वह इस लिए
भी ख़ादिम बना कि ग़ैरयहूदी अल्लाह को उस रहम के
लिए जलाल दें जो उस ने उन पर किया है। कलाम-
ए-मुक़द्दस में यही लिखा है,

"इस लिए मैं अक़्वाम में तेरी हम्द-ओ-सना करूँगा,
तेरे नाम की तारीफ़ में गीत गाऊँगा।"

10 यह भी लिखा है,

"ऐ दीगर क़ौमो, उस की उम्मत के साथ ख़ुशी
मनाओ!"

11 फिर लिखा है,

"ऐ तमाम अक़्वाम, रब की तम्जीद करो!
ऐ तमाम उम्मतो, उस की सताइश करो!"

12 और यसायाह नबी यह फ़रमाता है,

"यस्सी की जड़ से एक कोंपल फूट निकलेगी,
एक ऐसा आदमी उठेगा
जो क़ौमों पर हुकूमत करेगा।
ग़ैरयहूदी उस पर आस रखेंगे।"

13 उम्मीद का ख़ुदा आप को ईमान रखने के बाइस
हर ख़ुशी और सलामती से मामूर करे ताकि रूह-उल-
क़ुद्स की क़ुदरत से आप की उम्मीद बढ़ कर दिल
से छलक जाए।

दिलेरी से लिखने की वजह

14 मेरे भाइयो, मुझे पूरा यक़ीन है कि आप ख़ुद
भलाई से मामूर हैं, कि आप हर तरह का इल्म-ओ-
इर्फ़ान रखते हैं और एक दूसरे को नसीहत करने
के क़ाबिल भी हैं। 15 तो भी मैं ने याद दिलाने की
ख़ातिर आप को कई बातें लिखने की दिलेरी की है।
क्यूँकि मैं अल्लाह के फ़ज़्ल से 16 आप ग़ैरयहूदियों के
लिए मसीह ईसा का ख़ादिम हूँ। और मैं अल्लाह की
ख़ुशख़बरी फैलाने में बैत-उल-मुक़द्दस के इमाम की
सी ख़िदमत सरअन्जाम देता हूँ ताकि आप एक ऐसी
क़ुर्बानी बन जाएँ जो अल्लाह को पसन्द आए और
जिसे रूह-उल-क़ुद्स ने उस के लिए मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस किया हो। 17 चुनाँचे मैं मसीह ईसा में अल्लाह
के सामने अपनी ख़िदमत पर फ़ख़र कर सकता हूँ।
18 क्यूँकि मैं सिर्फ़ उस काम के बारे में बात करने
की जुरअत करूँगा जो मसीह ने मेरी मारिफ़त किया
है और जिस से ग़ैरयहूदी अल्लाह के ताबे हो गए हैं।
हाँ, मसीह ही ने यह काम कलाम और अमल से,
19 इलाही निशानों और मोजिज़ों की क़ुव्वत से और
अल्लाह के रूह की क़ुदरत से सरअन्जाम दिया है।
यूँ मैं ने यरूशलम से ले कर सूबा इल्लुरिकुम तक
सफ़र करते करते अल्लाह की ख़ुशख़बरी फैलाने की
ख़िदमत पूरी की है। 20 और मैं इसे अपनी इज़्ज़त का
बाइस समझा कि ख़ुशख़बरी वहाँ सुनाऊँ जहाँ मसीह
के बारे में ख़बर नहीं पहुँची। क्यूँकि मैं ऐसी बुन्याद
पर तामीर नहीं करना चाहता था जो किसी और ने
डाली थी। 21 कलाम-ए-मुक़द्दस यही फ़रमाता है,

"जिन्हें उस के बारे में नहीं बताया गया

वह देखेंगे,
और जिन्हों ने नहीं सुना
उन्हें समझ आएगी।”

पौलुस का रोम जाने का इरादा

22 यही वजह है कि मुझे इतनी दफ़ा आप के पास
आने से रोका गया है। 23 लेकिन अब मेरी इन इलाक़ों
में ख़िदमत पूरी हो चुकी है। और चूँकि मैं इतने
सालों से आप के पास आने का आरज़ूमन्द रहा हूँ
24 इस लिए अब यह ख़्वाहिश पूरी करने की उम्मीद
रखता हूँ। क्यूँकि मैं ने स्पेन जाने का मन्सूबा बनाया
है। उम्मीद है कि रास्ते में आप से मिलूँगा और
आप आगे के सफ़र के लिए मेरी मदद कर सकेंगे।
लेकिन पहले मैं कुछ देर के लिए आप की रिफ़ाक़त
से लुत्फ़अन्दोज़ होना चाहता हूँ। 25 इस वक़्त मैं
यरूशलम जा रहा हूँ ताकि वहाँ के मुक़द्दसीन की
ख़िदमत करूँ। 26 क्यूँकि मकिदुनिया और अख़या
की जमाअतों ने यरूशलम के उन मुक़द्दसीन के लिए
हदिया जमा करने का फ़ैसला किया है जो ग़रीब हैं।
27 उन्हों ने यह ख़ुशी से किया और दरअसल यह
उन का फ़र्ज़ भी है। ग़ैरयहूदी तो यहूदियों की रुहानी
बरकतों में शरीक हुए हैं, इस लिए ग़ैरयहूदियों का
फ़र्ज़ है कि वह यहूदियों को भी अपनी माली बरकतों
में शरीक करके उन की ख़िदमत करें। 28 चुनाँचे
अपना यह फ़र्ज़ अदा करने और मक़ामी भाइयों का
यह सारा फल यरूशलम के ईमानदारों तक पहुँचाने
के बाद मैं आप के पास से होता हुआ स्पेन जाऊँगा।
29 और मैं जानता हूँ कि जब मैं आप के पास आऊँगा
तो मसीह की पूरी बरकत ले कर आऊँगा।

30 भाइयो, मैं हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह और रूह-
उल-क़ुद्स की मुहब्बत को याद दिला कर आप से
मिन्नत करता हूँ कि आप मेरे लिए अल्लाह से दुआ करें
और यूँ मेरी रुहानी जंग में शरीक हो जाएँ। 31 इस के
लिए दुआ करें कि मैं सूबा यहूदिया के ग़ैरईमानदारों
से बचा रहूँ और कि मेरी यरूशलम में ख़िदमत वहाँ
के मुक़द्दसीन को पसन्द आए। 32 क्यूँकि मैं चाहता हूँ
कि जब मैं अल्लाह की मर्ज़ी से आप के पास आऊँगा
तो मेरे दिल में ख़ुशी हो और हम एक दूसरे की
रिफ़ाक़त से तर-ओ-ताज़ा हो जाएँ। 33 सलामती का
ख़ुदा आप सब के साथ हो। आमीन।

सलाम-ओ-दुआ

16 1 हमारी बहन फ़ीबे आप के पास आ रही
है। वह किन्ख़रिया शहर की जमाअत में
ख़ादिमा है। मैं उस की सिफ़ारिश करता हूँ 2 बल्कि
ख़ुदावन्द में अर्ज़ है कि आप उस का वैसे ही
इस्तिक़्बाल करें जैसे कि मुक़द्दसीन को करना
चाहिए। जिस मुआमले में भी उसे आप की मदद की
ज़रूरत हो उस में उस का साथ दें, क्यूँकि उस ने
बहुत लोगों की बल्कि मेरी भी मदद की है।

3 प्रिस्किल्ला और अक्विला को मेरा सलाम देना
जो मसीह ईसा में मेरे हमख़िदमत रहे हैं। 4 उन्हों ने
मेरे लिए अपनी जान पर खेला। न सिर्फ़ मैं बल्कि
ग़ैरयहूदियों की जमाअतें उन की एह्सानमन्द हैं।
5 उन के घर में जमा होने वाली जमाअत को भी मेरा
सलाम देना।

मेरे अज़ीज़ दोस्त इपिनेतुस को मेरा सलाम देना।
वह सूबा आसिया में मसीह का पहला पैरोकार यानी
उस इलाक़े की फ़सल का पहला फल था। 6 मरियम
को मेरा सलाम जिस ने आप के लिए बड़ी मेहनत-
मशक़्क़त की है। 7 अन्द्रूनीकुस और यूनिया को मेरा
सलाम। वह मेरे हमवतन हैं और जेल में मेरे साथ
वक़्त गुज़ारा है। रसूलों में वह नुमायाँ हैसियत रखते
हैं, और वह मुझ से पहले मसीह के पीछे हो लिए थे।

8 अम्पलियातुस को सलाम। वह ख़ुदावन्द में मुझे
अज़ीज़ है। 9 मसीह में हमारे हमख़िदमत उर्बानुस को
सलाम और इसी तरह मेरे अज़ीज़ दोस्त इस्तख़ुस को
भी। 10 अपेल्लिस को सलाम जिस की मसीह के साथ
वफ़ादारी को आज़माया गया है। अरिस्तुबूलुस के
घर वालों को सलाम। 11 मेरे हमवतन हेरोदियोन को
सलाम और इसी तरह नरकिस्सुस के उन घर वालों
को भी जो मसीह के पीछे हो लिए हैं।

12 त्रूफ़ेना और त्रूफ़ोसा को सलाम जो ख़ुदावन्द
की ख़िदमत में मेहनत-मशक़्क़त करती हैं। मेरी
अज़ीज़ बहन पर्सिस को सलाम जिस ने ख़ुदावन्द की
ख़िदमत में बड़ी मेहनत-मशक़्क़त की है। 13 हमारे
ख़ुदावन्द के चुने हुए भाई रूफ़ुस को सलाम और
इसी तरह उस की माँ को भी जो मेरी माँ भी है।
14 असिन्क्रितुस, फ़लिगोन, हिर्मेस, पत्रोबास, हिर्मास
और उन के साथी भाइयों को मेरा सलाम देना।
15 फ़िलुलुगुस और यूलिया, नेरियूस और उस की
बहन, उलिम्पास और उन के साथ तमाम मुक़द्दसीन
को सलाम।

16 एक दूसरे को मुक़द्दस बोसा दे कर सलाम करें।
मसीह की तमाम जमाअतों की तरफ़ से आप को
सलाम।

आख़िरी हिदायात

17 भाइयो, मैं आप को ताकीद करता हूँ कि आप
उन से ख़बरदार रहें जो पार्टीबाज़ी और ठोकर का
बाइस बनते हैं। यह उस तालीम के ख़िलाफ़ है जो
आप को दी गई है। उन से किनारा करें 18 क्यूँकि ऐसे
लोग हमारे ख़ुदावन्द मसीह की ख़िदमत नहीं कर रहे
बल्कि अपने पेट की। वह अपनी मीठी और चिकनी-
चुपड़ी बातों से सादालौह लोगों के दिलों को धोका
देते हैं। 19 आप की फ़रमाँबरदारी की ख़बर सब तक
पहुँच गई है। यह देख कर मैं आप के बारे में ख़ुश
हूँ। लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप अच्छा काम करने
के लिहाज़ से दानिशमन्द और बुरा काम करने के
लिहाज़ से बेक़ुसूर हों। 20 सलामती का ख़ुदा जल्द ही
इब्लीस को आप के पाँओ तले कुचलवा डालेगा।

हमारे ख़ुदावन्द ईसा का फ़ज़्ल आप के साथ हो।

21 मेरा हमख़िदमत तीमुथियुस आप को सलाम देता
है, और इसी तरह मेरे हमवतन लूकियुस, यासोन और
सोसिपात्रुस।

22 मैं, तिर्तियुस इस ख़त का कातिब हूँ। मेरी तरफ़
से भी ख़ुदावन्द में आप को सलाम।

23 गयुस की तरफ़ से आप को सलाम। मैं और पूरी
जमाअत उस के मेहमान रहे हैं। शहर के ख़ज़ान्ची
इरास्तुस और हमारे भाई क्वार्तुस भी आप को सलाम
कहते हैं। 24 [हमारे ख़ुदावन्द ईसा का फ़ज़्ल आप
सब के साथ होता रहे।]

आख़िरी दुआ

25 अल्लाह की तम्जीद हो, जो आप को मज़बूत
करने पर क़ादिर है, क्यूँकि ईसा मसीह के बारे में
उस ख़ुशख़बरी से जो मैं सुनाता हूँ और उस भेद के
इन्किशाफ़ से जो अज़ल से पोशीदा रहा वह आप को
क़ाइम रख सकता है। 26 अब इस भेद की हक़ीक़त
नबियों के सहीफ़ों से ज़ाहिर की गई है और अबदी
ख़ुदा के हुक्म पर तमाम क़ौमों को मालूम हो गई है
ताकि सब ईमान ला कर अल्लाह के ताबे हो जाएँ।

27 अल्लाह की तम्जीद हो जो वाहिद दानिशमन्द है।
उसी का ईसा मसीह के वसीले से अबद तक जलाल
होता रहे! आमीन।

१-कुरिन्थियों

सलाम

1 1 यह ख़त पौलुस की तरफ़ से है, जो अल्लाह के
इरादे से मसीह ईसा का बुलाया हुआ रसूल है,
और हमारे भाई सोस्थिनेस की तरफ़ से।
2 मैं कुरिन्थुस में मौजूद अल्लाह की जमाअत को
लिख रहा हूँ, आप को जिन्हें मसीह ईसा में मुक़द्दस
किया गया है, जिन्हें मुक़द्दस होने के लिए बुलाया
गया है। साथ ही यह ख़त उन तमाम लोगों के नाम
भी है जो हर जगह हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह का
नाम लेते हैं जो उन का और हमारा ख़ुदावन्द है।
3 हमारा ख़ुदा बाप और ख़ुदावन्द ईसा मसीह आप
को फ़ज़्ल और सलामती अता करें।

शुक्र

4 मैं हमेशा आप के लिए ख़ुदा का शुक्र करता हूँ
कि उस ने आप को मसीह ईसा में इतना फ़ज़्ल
बख़्शा है। 5 आप को उस में हर लिहाज़ से दौलतमन्द
किया गया है, हर क़िस्म की तक़रीर और इल्म-ओ-
इर्फ़ान में। 6 क्यूँकि मसीह की गवाही ने आप के
दरमियान ज़ोर पकड़ लिया है, 7 इस लिए आप को
हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह के ज़ुहूर का इन्तिज़ार
करते करते किसी भी बरकत में कमी नहीं। 8 वही
आप को आख़िर तक मज़बूत बनाए रखेगा, इस लिए
आप हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह की दूसरी आमद
के दिन बेइल्ज़ाम ठहरेंगे। 9 अल्लाह पर पूरा एतिमाद
किया जा सकता है जिस ने आप को बुला कर अपने
फ़र्ज़न्द हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह की रिफ़ाक़त में
शरीक किया है।

कुरिन्थियों की पार्टीबाज़ी

10 भाइयो, मैं अपने ख़ुदावन्द ईसा मसीह के नाम में
आप को ताकीद करता हूँ कि आप सब एक ही बात
कहें। आप के दरमियान पार्टीबाज़ी नहीं बल्कि एक
ही सोच और एक ही राय होनी चाहिए। 11 क्यूँकि
मेरे भाइयो, आप के बारे में मुझे ख़लोए के घर वालों
से मालूम हुआ है कि आप झगड़ों में उलझ गए हैं।
12 मतलब यह है कि आप में से कोई कहता है, "मैं
पौलुस की पार्टी का हूँ," कोई "मैं अपुल्लोस की पार्टी
का हूँ," कोई "मैं कैफ़ा की पार्टी का हूँ" और कोई
कि "मैं मसीह की पार्टी का हूँ।" 13 क्या मसीह बट
गया? क्या आप की ख़ातिर पौलुस को सलीब पर
चढ़ाया गया? या क्या आप को पौलुस के नाम से
बपतिस्मा दिया गया?
14 ख़ुदा का शुक्र है कि मैं ने आप में से किसी को
बपतिस्मा नहीं दिया सिवाए क्रिस्पुस और गयुस के।
15 इस लिए कोई नहीं कह सकता कि मैं ने पौलुस के
नाम से बपतिस्मा पाया है। 16 हाँ मैं ने स्तिफ़नास के
घराने को भी बपतिस्मा दिया। लेकिन जहाँ तक मेरा
ख़याल है इस के इलावा किसी और को बपतिस्मा
नहीं दिया। 17 मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने के लिए
रसूल बना कर नहीं भेजा बल्कि इस लिए कि अल्लाह
की ख़ुशख़बरी सुनाऊँ। और यह काम मुझे दुनियावी
हिक्मत से आरास्ता तक़रीर से नहीं करना है ताकि
मसीह की सलीब की ताक़त बेअसर न हो जाए।

सलीब का पैग़ाम

18 क्यूँकि सलीब का पैग़ाम उन के लिए जिन का
अन्जाम हलाकत है बेवुक़ूफ़ी है जबकि हमारे लिए
जिन का अन्जाम नजात है यह अल्लाह की क़ुदरत है।
19 चुनाँचे पाक नविश्तों में लिखा है,

"मैं दानिशमन्दों की दानिश को तबाह करूँगा
और समझदारों की समझ को रद्द करूँगा।"

20 अब दानिशमन्द शख़्स कहाँ है? आलिम कहाँ
है? इस जहान का मुनाज़रे का माहिर कहाँ है? क्या
अल्लाह ने दुनिया की हिक्मत-ओ-दानाई को बेवुक़ूफ़ी
साबित नहीं किया?
21 क्यूँकि अगरचे दुनिया अल्लाह की दानाई से घिरी
हुई है तो भी दुनिया ने अपनी दानाई की बदौलत
अल्लाह को न पहचाना। इस लिए अल्लाह को पसन्द
आया कि वह सलीब के पैग़ाम की बेवुक़ूफ़ी के ज़रीए
ही ईमान रखने वालों को नजात दे। 22 यहूदी तक़ाज़ा
करते हैं कि इलाही बातों की तस्दीक़ इलाही निशानों
से की जाए जबकि यूनानी दानाई के वसीले से इन
की तस्दीक़ के ख़्वाहाँ हैं। 23 इस के मुक़ाबले में हम
मसीह-ए-मस्लूब की मुनादी करते हैं। यहूदी इस से
ठोकर खा कर नाराज़ हो जाते हैं जबकि ग़ैरयहूदी
इसे बेवुक़ूफ़ी क़रार देते हैं। 24 लेकिन जो अल्लाह के
बुलाए हुए हैं, ख़्वाह वह यहूदी हों ख़्वाह यूनानी,
उन के लिए मसीह अल्लाह की क़ुदरत और अल्लाह
की दानाई होता है। 25 क्यूँकि अल्लाह की जो बात
बेवुक़ूफ़ी लगती है वह इन्सान की दानाई से ज़्यादा
दानिशमन्द है। और अल्लाह की जो बात कमज़ोर
लगती है वह इन्सान की ताक़त से ज़्यादा ताक़तवर
है।
26 भाइयो, इस पर ग़ौर करें कि आप का क्या हाल
था जब ख़ुदा ने आप को बुलाया। आप में से कम
हैं जो दुनिया के मेयार के मुताबिक़ दाना हैं, कम हैं
जो ताक़तवर हैं, कम हैं जो आली ख़ानदान से हैं।
27 बल्कि जो दुनिया की निगाह में बेवुक़ूफ़ है उसे
अल्लाह ने चुन लिया ताकि दानाओं को शर्मिन्दा करे।
और जो दुनिया में कमज़ोर है उसे अल्लाह ने चुन लिया
ताकि ताक़तवरों को शर्मिन्दा करे। 28 इसी तरह जो
दुनिया के नज़्दीक ज़लील और हक़ीर है उसे अल्लाह
ने चुन लिया। हाँ, जो कुछ भी नहीं है उसे उस ने
चुन लिया ताकि उसे नेस्त करे जो बज़ाहिर कुछ है।
29 चुनाँचे कोई भी अल्लाह के सामने अपने पर फ़ख़र
नहीं कर सकता। 30 यह अल्लाह की तरफ़ से है कि
आप मसीह ईसा में हैं। अल्लाह की बख़्शिश से ईसा
ख़ुद हमारी दानाई, हमारी रास्तबाज़ी, हमारी तक़दीस
और हमारी मख़्लसी बन गया है। 31 इस लिए जिस
तरह कलाम-ए-मुक़द्दस फ़रमाता है, "फ़ख़र करने
वाला ख़ुदावन्द ही पर फ़ख़र करे।"

पौलुस की सादा मुनादी

2 1 भाइयो, मुझ पर भी ग़ौर करें। जब मैं आप के
पास आया तो मैं ने आप को अल्लाह का भेद
मोटे मोटे अल्फ़ाज़ में या फ़ल्सफ़ियाना हिक्मत का
इज़हार करते हुए न सुनाया। 2 वजह क्या थी? यह
कि मैं ने इरादा कर रखा था कि आप के दरमियान
होते हुए मैं ईसा मसीह के सिवा और कुछ न जानूँ,
ख़ासकर यह कि उसे मस्लूब किया गया। 3 हाँ मैं
कमज़ोरहाल, ख़ौफ़ खाते और बहुत थरथराते हुए
आप के पास आया। 4 और गुफ़्तगु और मुनादी करते
हुए मैं ने दुनियावी हिक्मत के बड़े ज़ोरदार अल्फ़ाज़
की मारिफ़त आप को क़ाइल करने की कोशिश न
की, बल्कि रूह-उल-क़ुद्स और अल्लाह की क़ुदरत
ने मेरी बातों की तस्दीक़ की, 5 ताकि आप का ईमान
इन्सानी हिक्मत पर मब्नी न हो बल्कि अल्लाह की
क़ुदरत पर।

ग़लत और सहीह दानाई

6 दानाई की बातें हम उस वक़्त करते हैं जब
कामिल ईमान रखने वालों के दरमियान होते हैं।
लेकिन यह दानाई मौजूदा जहान की नहीं और न
इस जहान के हाकिमों ही की है जो मिटने वाले हैं।
7 बल्कि हम ख़ुदा ही की दानाई की बातें करते हैं जो
भेद की सूरत में छुपी रही है। अल्लाह ने तमाम ज़मानों
से पेशतर मुक़र्रर किया है कि यह दानाई हमारे जलाल
का बाइस बने। 8 इस जहान के किसी भी हाकिम ने
इस दानाई को न पहचाना, क्यूँकि अगर वह पहचान
लेते तो फिर वह हमारे जलाली ख़ुदावन्द को मस्लूब

न करते। 9 दानाई के बारे में पाक नविश्ते भी यही
कहते हैं,
"जो न किसी आँख ने देखा, न किसी कान ने सुना,
और न इन्सान के ज़हन में आया,
उसे अल्लाह ने उन के लिए तय्यार कर दिया
जो उस से मुहब्बत रखते हैं।"
10 लेकिन अल्लाह ने यही कुछ अपने रूह की
मारिफ़त हम पर ज़ाहिर किया क्यूँकि उस का रूह
हर चीज़ का खोज लगाता है, यहाँ तक कि अल्लाह
की गहराइयों का भी। 11 इन्सान के बातिन से कौन
वाक़िफ़ है सिवाए इन्सान की रूह के जो उस के
अन्दर है? इसी तरह अल्लाह से ताल्लुक़ रखने वाली
बातों को कोई नहीं जानता सिवाए अल्लाह के रूह
के। 12 और हमें दुनिया की रूह नहीं मिली बल्कि
वह रूह जो अल्लाह की तरफ़ से है ताकि हम उस की
अताकरदा बातों को जान सकें।
13 यही कुछ हम बयान करते हैं, लेकिन ऐसे
अल्फ़ाज़ में नहीं जो इन्सानी हिक्मत से हमें सिखाया
गया बल्कि रूह-उल-क़ुद्स से। यूँ हम रुहानी
हक़ीक़तों की तश्रीह रुहानी लोगों के लिए करते
हैं। 14 जो शख़्स रुहानी नहीं है वह अल्लाह के रूह
की बातों को क़बूल नहीं करता क्यूँकि वह उस के
नज़्दीक बेवुक़ूफ़ी हैं। वह उन्हें पहचान नहीं सकता
क्यूँकि उन की परख सिर्फ़ रुहानी शख़्स ही कर
सकता है। 15 वही हर चीज़ परख लेता है जबकि
उस की अपनी परख कोई नहीं कर सकता। 16 चुनाँचे
पाक कलाम में लिखा है,
"किस ने रब की सोच को जाना?
कौन उस को तालीम देगा?"
लेकिन हम मसीह की सोच रखते हैं।

कुरिन्थुस की बचगाना हालत

3 1 भाइयो, मैं आप से रुहानी लोगों की बातें न
कर सका बल्कि सिर्फ़ जिस्मानी लोगों की।
क्यूँकि आप अब तक मसीह में छोटे बच्चे हैं। 2 मैं ने
आप को दूध पिलाया, ठोस ग़िज़ा न खिलाई, क्यूँकि
आप उस वक़्त इस क़ाबिल नहीं थे बल्कि अब तक
नहीं हैं। 3 अभी तक आप जिस्मानी हैं, क्यूँकि आप
में हसद और झगड़ा पाया जाता है। क्या इस से यह
साबित नहीं होता कि आप जिस्मानी हैं और रूह के
बग़ैर चलते हैं? 4 जब कोई कहता है, "मैं पौलुस की
पार्टी का हूँ" और दूसरा, "मैं अपुल्लोस की पार्टी का
हूँ" तो क्या इस से यह ज़ाहिर नहीं होता कि आप
रुहानी नहीं बल्कि इन्सानी सोच रखते हैं?

पौलुस और अपुल्लोस की हैसियत

5 अपुल्लोस की क्या हैसियत है और पौलुस की
क्या? दोनों नौकर हैं जिन के वसीले से आप ईमान
लाए। और हम में से हर एक ने वही ख़िदमत अन्जाम
दी जो ख़ुदावन्द ने उस के सपुर्द की। 6 मैं ने पौदे
लगाए, अपुल्लोस पानी देता रहा, लेकिन अल्लाह ने
उन्हें उगने दिया। 7 लिहाज़ा पौदा लगाने वाला और
आबपाशी करने वाला दोनों कुछ भी नहीं, बल्कि
ख़ुदा ही सब कुछ है जो पौदे को फलने फूलने देता
है। 8 पौदा लगाने और पानी देने वाला एक जैसे हैं,
अलबत्ता हर एक को उस की मेहनत के मुताबिक़
मज़दूरी मिलेगी। 9 क्यूँकि हम अल्लाह के मुआविन हैं
जबकि आप अल्लाह का खेत और उस की इमारत हैं।
10 अल्लाह के उस फ़ज़्ल के मुताबिक़ जो मुझे बख़्शा
गया मैं ने एक दानिशमन्द ठेकेदार की तरह बुन्याद
रखी। इस के बाद कोई और उस पर इमारत तामीर
कर रहा है। लेकिन हर एक ध्यान रखे कि वह
बुन्याद पर इमारत किस तरह बना रहा है। 11 क्यूँकि
बुन्याद रखी जा चुकी है और वह है ईसा मसीह।
इस के इलावा कोई भी मज़ीद कोई बुन्याद नहीं रख
सकता। 12 जो भी इस बुन्याद पर कुछ तामीर करे
वह मुख़्तलिफ़ मवाद तो इस्तेमाल कर सकता है,
मसलन सोना, चाँदी, क़ीमती पत्थर, लकड़ी, सूखी
घास या भूसा, 13 लेकिन आख़िर में हर एक का काम
ज़ाहिर हो जाएगा। क़ियामत के दिन कुछ पोशीदा
नहीं रहेगा बल्कि आग सब कुछ ज़ाहिर कर देगी।
वह साबित कर देगी कि हर किसी ने कैसा काम

किया है। 14 अगर उस का तामीरी काम न जला जो
उस ने इस बुन्याद पर किया तो उसे अज्र मिलेगा।
15 अगर उस का काम जल गया तो उसे नुक़्सान
पहुँचेगा। ख़ुद तो वह बच जाएगा मगर जलते जलते।
16 क्या आप को मालूम नहीं कि आप अल्लाह का
घर हैं, और आप में अल्लाह का रूह सुकूनत करता है?
17 अगर कोई अल्लाह के घर को तबाह करे तो अल्लाह
उसे तबाह करेगा, क्यूँकि अल्लाह का घर मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस है और यह घर आप ही हैं।

अपने बारे में शेख़ी न मारना

18 कोई अपने आप को फ़रेब न दे। अगर आप
में से कोई समझे कि वह इस दुनिया की नज़र में
दानिशमन्द है तो फिर ज़रूरी है कि वह बेवुक़ूफ़
बने ताकि वाक़ई दानिशमन्द हो जाए। 19 क्यूँकि इस
दुनिया की हिक्मत अल्लाह की नज़र में बेवुक़ूफ़ी
है। चुनाँचे मुक़द्दस नविश्तों में लिखा है, "वह
दानिशमन्दों को उन की अपनी चालाकी के फंदे में
फंसा देता है।" 20 यह भी लिखा है, "रब दानिशमन्दों
के ख़यालात को जानता है कि वह बातिल हैं।"
21 ग़रज़ कोई किसी इन्सान के बारे में शेख़ी न
मारे। सब कुछ तो आप का है। 22 पौलुस, अपुल्लोस,
कैफ़ा, दुनिया, ज़िन्दगी, मौत, मौजूदा जहान के और
मुस्तक़बिल के उमूर सब कुछ आप का है। 23 लेकिन
आप मसीह के हैं और मसीह अल्लाह का है।

ख़ुदावन्द के ख़ादिम और उन का काम

4 1 ग़रज़ लोग हमें मसीह के ख़ादिम समझें, ऐसे
निगरान जिन्हें अल्लाह के भेदों को खोलने की
ज़िम्मादारी दी गई है। 2 अब निगरानों का फ़र्ज़ यह
है कि उन पर पूरा एतिमाद किया जा सके। 3 मुझे
इस बात की ज़्यादा फ़िक्र नहीं कि आप या कोई
दुनियावी अदालत मेरा एहतिसाब करे, बल्कि मैं ख़ुद
भी अपना एहतिसाब नहीं करता। 4 मुझे किसी ग़लती
का इल्म नहीं है अगरचे यह बात मुझे रास्तबाज़
क़रार देने के लिए काफ़ी नहीं है। ख़ुदावन्द ख़ुद मेरा
एहतिसाब करता है। 5 इस लिए वक़्त से पहले किसी
बात का फ़ैसला न करें। उस वक़्त तक इन्तिज़ार
करें जब तक ख़ुदावन्द न आए। क्यूँकि वही तारीकी
में छुपी हुई चीज़ों को रौशनी में लाएगा और दिलों
की मन्सूबाबन्दियों को ज़ाहिर कर देगा। उस वक़्त
अल्लाह ख़ुद हर फ़र्द की मुनासिब तारीफ़ करेगा।

कुरिन्थियों की शेख़ीबाज़ी

6 भाइयो, मैं ने इन बातों का इत्लाक़ अपने और
अपुल्लोस पर किया ताकि आप हम पर ग़ौर करते हुए
अल्लाह के कलाम की हुदूद जान लें जिन से तजावुज़
करना मुनासिब नहीं। फिर आप फूल कर एक शख़्स
की हिमायत करके दूसरे की मुख़ालफ़त नहीं करेंगे।
7 क्यूँकि कौन आप को किसी दूसरे से अफ़्ज़ल क़रार
देता है? जो कुछ आप के पास है क्या वह आप
को मुफ़्त नहीं मिला? और अगर मुफ़्त मिला तो इस
पर शेख़ी क्यूँ मारते हैं गोया कि आप ने उसे अपनी
मेहनत से हासिल किया हो?
8 वाह जी वाह! आप सेर हो चुके हैं। आप अमीर
बन चुके हैं। आप हमारे बग़ैर बादशाह बन चुके हैं।
काश आप बादशाह बन चुके होते ताकि हम भी
आप के साथ हुकूमत करते! 9 इस के बजाय मुझे
लगता है कि अल्लाह ने हमारे लिए जो उस के रसूल
हैं रोमी तमाशागाह में सब से निचला दर्जा मुक़र्रर
किया है, जो उन लोगों के लिए मख़्सूस होता है जिन्हें
सज़ा-ए-मौत का फ़ैसला सुनाया गया हो। हाँ, हम
दुनिया, फ़रिश्तों और इन्सानों के सामने तमाशा बन
गए हैं। 10 हम तो मसीह की ख़ातिर बेवुक़ूफ़ बन गए
हैं जबकि आप मसीह में समझदार ख़याल किए जाते
हैं। हम कमज़ोर हैं जबकि आप ताक़तवर। आप की
इज़्ज़त की जाती है जबकि हमारी बेइज़्ज़ती। 11 अब
तक हमें भूक और प्यास सताती है। हम चीथड़ों
में मल्बूस गोया नंगे फिरते हैं। हमें मुक्के मारे जाते
हैं। हमारी कोई मुस्तक़िल रिहाइशगाह नहीं। 12 और
बड़ी मशक़्क़त से हम अपने हाथों से रोज़ी कमाते हैं।
लान-तान करने वालों को हम बरकत देते हैं, ईज़ा

देने वालों को बर्दाश्त करते हैं। 13 जो हमें बुरा-भला
कहते हैं उन्हें हम दुआ देते हैं। अब तक हम दुनिया
का कूड़ा-कर्कट और ग़िलाज़त बने फिरते हैं।

पौलुस कुरिन्थियों का रुहानी बाप है

14 मैं आप को शर्मिन्दा करने के लिए यह नहीं लिख
रहा, बल्कि अपने प्यारे बच्चे जान कर समझाने की
ग़रज़ से। 15 बेशक मसीह ईसा में आप के उस्ताद तो
बेशुमार हैं, लेकिन बाप कम हैं। क्यूँकि मसीह ईसा में
मैं ही आप को अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुना कर आप
का बाप बना। 16 अब मैं ताकीद करता हूँ कि आप
मेरे नमूने पर चलें। 17 इस लिए मैं ने तीमुथियुस को
आप के पास भेज दिया जो ख़ुदावन्द में मेरा प्यारा
और वफ़ादार बेटा है। वह आप को मसीह ईसा में
मेरी उन हिदायात की याद दिलाएगा जो मैं हर जगह
और ईमानदारों की हर जमाअत में देता हूँ।

18 आप में से बाज़ यूँ फूल गए हैं जैसे मैं अब
आप के पास कभी नहीं आऊँगा। 19 लेकिन अगर
ख़ुदावन्द की मर्ज़ी हुई तो जल्द आ कर मालूम
करूँगा कि क्या यह फूले हुए लोग सिर्फ़ बातें कर
रहे हैं या कि अल्लाह की क़ुदरत उन में काम कर
रही है। 20 क्यूँकि अल्लाह की बादशाही ख़ाली बातों
से ज़ाहिर नहीं होती बल्कि अल्लाह की क़ुदरत से।
21 क्या आप चाहते हैं कि मैं छड़ी ले कर आप के
पास आऊँ या प्यार और हलीमी की रूह में?

ज़िनाकारी

5 1 यह बात हमारे कानों तक पहुँची है कि आप
के दरमियान ज़िनाकारी हो रही है, बल्कि ऐसी
ज़िनाकारी जिसे ग़ैरयहूदी भी रवा नहीं समझते।
कहते हैं कि आप में से किसी ने अपनी सौतेली
माँ [l]से शादी कर रखी है। 2 कमाल है कि आप इस
फ़ेल पर नादिम नहीं बल्कि फूले फिर रहे हैं! क्या
मुनासिब न होता कि आप दुख महसूस करके इस
बदी के मुर्तकिब को अपने दरमियान से ख़ारिज कर
देते? 3 गो मैं जिस्म के लिहाज़ से आप के पास नहीं,
लेकिन रूह के लिहाज़ से ज़रूर हूँ। और मैं उस शख़्स
पर फ़त्वा इस तरह दे चुका हूँ जैसे कि मैं आप के
दरमियान मौजूद हूँ। 4 जब आप हमारे ख़ुदावन्द ईसा
के नाम में जमा होंगे तो मैं रूह में आप के साथ
हूँगा और हमारे ख़ुदावन्द ईसा की क़ुदरत भी। 5 उस
वक़्त ऐसे शख़्स को इब्लीस के हवाले करें ताकि
सिर्फ़ उस का जिस्म हलाक हो जाए, लेकिन उस की
रूह ख़ुदावन्द के दिन रिहाई पाए।

6 आप का फ़ख़र करना अच्छा नहीं। क्या आप को
मालूम नहीं कि जब हम थोड़ा सा ख़मीर ताज़ा गुंधे
हुए आटे में मिलाते हैं तो वह सारे आटे को ख़मीर
कर देता है? 7 अपने आप को ख़मीर से पाक-साफ़
करके ताज़ा गुंधा हुआ आटा बन जाएँ। दरहक़ीक़त
आप हैं भी पाक, क्यूँकि हमारा ईद-ए-फ़सह का लेला
मसीह हमारे लिए ज़बह हो चुका है। 8 इस लिए आइए
हम पुराने ख़मीरी आटे यानी बुराई और बदी को दूर
करके ताज़ा गुंधे हुए आटे यानी ख़ुलूस और सच्चाई
की रोटियाँ बना कर फ़सह की ईद मनाएँ।

9 मैं ने ख़त में लिखा था कि आप ज़िनाकारों से
ताल्लुक़ न रखें। 10 मेरा मतलब यह नहीं था कि आप
इस दुनिया के ज़िनाकारों से ताल्लुक़ मुन्क़ते कर लें
या इस दुनिया के लालचियों, लुटेरों और बुतपरस्तों
से। अगर आप ऐसा करते तो लाज़िम होता कि आप
दुनिया ही से कूच कर जाते। 11 नहीं, मेरा मतलब यह
था कि आप ऐसे शख़्स से ताल्लुक़ न रखें जो मसीह में
तो भाई कहलाता है मगर है वह ज़िनाकार या लालची
या बुतपरस्त या गाली-गलोच करने वाला या शराबी
या लुटेरा। ऐसे शख़्स के साथ खाना तक भी न खाएँ।

12 मैं उन लोगों की अदालत क्यूँ करता फिरूँ जो
ईमानदारों की जमाअत से बाहर हैं? क्या आप ख़ुद
भी सिर्फ़ उन की अदालत नहीं करते जो जमाअत के
अन्दर हैं? 13 बाहर वालों की अदालत तो ख़ुदा ही

---

[l]लफ़्ज़ी तर्जुमा : बाप की बीवी, लेकिन ग़ालिबन इस से मुराद सौतेली माँ है।

करेगा। कलाम-ए-मुक़द्दस में यूँ लिखा है, ‘शरीर को अपने दरमियान से निकाल दो।’

मुक़द्दमाबाज़ी

6 1 आप में यह जुरअत कैसे पैदा हुई कि जब किसी का किसी दूसरे ईमानदार के साथ तनाज़ो हो तो वह अपना झगड़ा बेदीनों के सामने ले जाता है न कि मुक़द्दसों के सामने? 2 क्या आप नहीं जानते कि मुक़द्दसीन दुनिया की अदालत करेंगे? और अगर आप दुनिया की अदालत करेंगे तो क्या आप इस क़ाबिल नहीं कि छोटे मोटे झगड़ों का फ़ैसला कर सकें? 3 क्या आप को मालूम नहीं कि हम फ़रिश्तों की अदालत करेंगे? तो फिर क्या हम रोज़मर्रा के मुआमलात को नहीं निपटा सकते? 4 और इस क़िस्म के मुआमलात को फ़ैसल करने के लिए आप ऐसे लोगों को क्यूँ मुक़र्रर करते हैं जो जमाअत की निगाह में कोई हैसियत नहीं रखते? 5 यह बात मैं आप को शर्म दिलाने के लिए कहता हूँ। क्या आप में एक भी सयाना शख़्स नहीं जो अपने भाइयों के माबैन फ़ैसला करने के क़ाबिल हो? 6 लेकिन नहीं। भाई अपने ही भाई पर मुक़द्दमा चलाता है और वह भी ग़ैरईमानदारों के सामने।

7 अव्वल तो आप से यह ग़लती हुई कि आप एक दूसरे से मुक़द्दमाबाज़ी करते हैं। अगर कोई आप से नाइन्साफ़ी कर रहा हो तो क्या बेहतर नहीं कि आप उसे ऐसा करने दें? और अगर कोई आप को ठग रहा हो तो क्या यह बेहतर नहीं कि आप उसे ठिगने दें? 8 इस के बरअक्स आप का यह हाल है कि आप ख़ुद ही नाइन्साफ़ी करते और ठगते हैं और वह भी अपने भाइयों को। 9 क्या आप नहीं जानते कि नाइन्साफ़ अल्लाह की बादशाही मीरास में नहीं पाएँगे? फ़रेब न खाएँ! हरामकार, बुतपरस्त, ज़िनाकार, हमजिन्सपरस्त, लौंडेबाज़, 10 चोर, लालची, शराबी, बदज़बान, लुटेरे, यह सब अल्लाह की बादशाही मीरास में नहीं पाएँगे। 11 आप में से कुछ ऐसे थे भी। लेकिन आप को धोया गया, आप को मुक़द्दस किया गया, आप को ख़ुदावन्द ईसा मसीह के नाम और हमारे ख़ुदा के रूह से रास्तबाज़ बनाया गया है।

जिस्म अल्लाह का घर है

12 मेरे लिए सब कुछ जाइज़ है, लेकिन सब कुछ मुफ़ीद नहीं। मेरे लिए सब कुछ जाइज़ तो है, लेकिन मैं किसी भी चीज़ को इजाज़त नहीं दूँगा कि मुझ पर हुकूमत करे। 13 बेशक ख़ुराक पेट के लिए और पेट ख़ुराक के लिए है, मगर अल्लाह दोनों को नेस्त कर देगा। लेकिन हम इस से यह नतीजा नहीं निकाल सकते कि जिस्म ज़िनाकारी के लिए है। हरगिज़ नहीं! जिस्म ख़ुदावन्द के लिए है और ख़ुदावन्द जिस्म के लिए। 14 अल्लाह ने अपनी क़ुदरत से ख़ुदावन्द ईसा को ज़िन्दा किया और इसी तरह वह हमें भी ज़िन्दा करेगा।

15 क्या आप नहीं जानते कि आप के जिस्म मसीह के आज़ा हैं? तो क्या मैं मसीह के आज़ा को ले कर फ़ाहिशा के आज़ा बनाऊँ? हरगिज़ नहीं। 16 क्या आप को मालूम नहीं कि जो फ़ाहिशा से लिपट जाता है वह उस के साथ एक तन हो जाता है? जैसे पाक नविश्तों में लिखा है, “वह दोनों एक हो जाते हैं।” 17 इस के बरअक्स जो ख़ुदावन्द से लिपट जाता है वह उस के साथ एक रूह हो जाता है।

18 ज़िनाकारी से भागें! इन्सान से सरज़द होने वाला हर गुनाह उस के जिस्म से बाहर होता है सिवाए ज़िना के। ज़िनाकार तो अपने ही जिस्म का गुनाह करता है। 19 क्या आप नहीं जानते कि आप का बदन रूह-उल-क़ुद्स का घर है जो आप के अन्दर सुकूनत करता है और जो आप को अल्लाह की तरफ़ से मिला है? आप अपने मालिक नहीं हैं 20 क्यूँकि आप को क़ीमत अदा करके ख़रीदा गया है। अब अपने बदन से अल्लाह को जलाल दें।

इज़्दिवाजी ज़िन्दगी

7 1 अब मैं आप के सवालात का जवाब देता हूँ।
बेशक अच्छा है कि मर्द शादी न करे। 2 लेकिन
ज़िनाकारी से बचने की ख़ातिर हर मर्द की अपनी
बीवी और हर औरत का अपना शौहर हो। 3 शौहर
अपनी बीवी का हक़ अदा करे और इसी तरह बीवी
अपने शौहर का। 4 बीवी अपने जिस्म पर इख़तियार
नहीं रखती बल्कि उस का शौहर। इसी तरह शौहर
भी अपने जिस्म पर इख़तियार नहीं रखता बल्कि उस
की बीवी। 5 चुनाँचे एक दूसरे से जुदा न हों सिवाए
इस के कि आप दोनों बाहमी रज़ामन्दी से एक वक़्त
मुक़र्रर कर लें ताकि दुआ के लिए ज़्यादा फ़ुर्सत मिल
सके। लेकिन इस के बाद आप दुबारा इकट्ठे हो जाएँ
ताकि इब्लीस आप के बेज़ब्त नफ़्स से फ़ाइदा उठा
कर आप को आज़माइश में न डाले।

6 यह मैं हुक्म के तौर पर नहीं बल्कि आप के
हालात के पेश-ए-नज़र रिआयतन कह रहा हूँ। 7 मैं
चाहता हूँ कि तमाम लोग मुझ जैसे ही हों। लेकिन
हर एक को अल्लाह की तरफ़ से अलग नेमत मिली
है, एक को यह नेमत, दूसरे को वह।

तलाक़ और ग़ैरईमानदार से शादी

8 मैं ग़ैरशादीशुदा अफ़राद और बेवाओं से यह
कहता हूँ कि अच्छा हो अगर आप मेरी तरह
ग़ैरशादीशुदा रहें। 9 लेकिन अगर आप अपने आप
पर क़ाबू न रख सकें तो शादी कर लें। क्यूँकि इस से
पेशतर कि आप के शहवानी जज़्बात बेलगाम होने
लगें बेहतर यह है कि आप शादी कर लें।

10 शादीशुदा जोड़ों को मैं नहीं बल्कि ख़ुदावन्द
हुक्म देता है कि बीवी अपने शौहर से ताल्लुक़ मुन्क़ते
न करे। 11 अगर वह ऐसा कर चुकी हो तो दूसरी शादी
न करे या अपने शौहर से सुलह कर ले। इसी तरह
शौहर भी अपनी बीवी को तलाक़ न दे।

12 दीगर लोगों को ख़ुदावन्द नहीं बल्कि मैं नसीहत
करता हूँ कि अगर किसी ईमानदार भाई की बीवी
ईमान नहीं लाई, लेकिन वह शौहर के साथ रहने पर
राज़ी हो तो फिर वह अपनी बीवी को तलाक़ न दे।
13 इसी तरह अगर किसी ईमानदार ख़ातून का शौहर
ईमान नहीं लाया, लेकिन वह बीवी के साथ रहने पर
रज़ामन्द हो तो वह अपने शौहर को तलाक़ न दे।
14 क्यूँकि जो शौहर ईमान नहीं लाया उसे उस की
ईमानदार बीवी की मारिफ़त मुक़द्दस ठहराया गया है
और जो बीवी ईमान नहीं लाई उसे उस के ईमानदार
शौहर की मारिफ़त मुक़द्दस क़रार दिया गया है। अगर
ऐसा न होता तो आप के बच्चे नापाक होते, मगर अब
वह मुक़द्दस हैं। 15 लेकिन अगर ग़ैरईमानदार शौहर
या बीवी अपना ताल्लुक़ मुन्क़ते कर ले तो उसे जाने
दें। ऐसी सूरत में ईमानदार भाई या बहन इस बंधन
से आज़ाद हो गए। मगर अल्लाह ने आप को सुलह-
सलामती की ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए बुलाया है।
16 बहन, मुमकिन है आप अपने ख़ावन्द की नजात
का बाइस बन जाएँ। या भाई, मुमकिन है आप अपनी
बीवी की नजात का बाइस बन जाएँ।

अल्लाह की तरफ़ से मुक़र्ररा राह पर रहें

17 हर शख़्स उसी राह पर चले जो ख़ुदावन्द ने उस
के लिए मुक़र्रर की और उस हालत में जिस में अल्लाह
ने उसे बुलाया है। ईमानदारों की तमाम जमाअतों के
लिए मेरी यही हिदायत है। 18 अगर किसी को मख़्तून
हालत में बुलाया गया तो वह नामख़्तून होने की
कोशिश न करे। अगर किसी को नामख़्तूनी की हालत
में बुलाया गया तो वह अपना ख़तना न करवाए। 19 न
ख़तना कुछ चीज़ है और न ख़तने का न होना, बल्कि
अल्लाह के अह्काम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारना
ही सब कुछ है। 20 हर शख़्स उसी हैसियत में रहे
जिस में उसे बुलाया गया था। 21 क्या आप ग़ुलाम थे
जब ख़ुदावन्द ने आप को बुलाया? यह बात आप
को परेशान न करे। अलबत्ता अगर आप को आज़ाद
होने का मौक़ा मिले तो इस से ज़रूर फ़ाइदा उठाएँ।
22 क्यूँकि जो उस वक़्त ग़ुलाम था जब ख़ुदावन्द ने
उसे बुलाया वह अब ख़ुदावन्द का आज़ाद किया

हुआ है। इसी तरह जो आज़ाद था जब उसे बुलाया गया वह अब मसीह का ग़ुलाम है। 23 आप को क़ीमत दे कर ख़रीदा गया है, इस लिए इन्सान के ग़ुलाम न बनें। 24 भाइयो, हर शख़्स जिस हालत में बुलाया गया उसी में वह अल्लाह के सामने क़ाइम रहे।

ग़ैरशादीशुदा लोग

25 कुंवारियों के बारे में मुझे ख़ुदावन्द की तरफ़ से कोई ख़ास हुक्म नहीं मिला। तो भी मैं जिसे अल्लाह ने अपनी रहमत से क़ाबिल-ए-एतिमाद बनाया है आप पर अपनी राय का इज़हार करता हूँ।

26 मेरी दानिस्त में मौजूदा मुसीबत के पेश-ए-नज़र इन्सान के लिए अच्छा है कि ग़ैरशादीशुदा रहे। 27 अगर आप किसी ख़ातून के साथ शादी के बंधन में बंध चुके हैं तो फिर इस बंधन को तोड़ने की कोशिश न करें। लेकिन अगर आप शादी के बंधन में नहीं बंधे तो फिर इस के लिए कोशिश न करें। 28 ताहम अगर आप ने शादी कर ही ली है तो आप ने गुनाह नहीं किया। इसी तरह अगर कुंवारी शादी कर चुकी है तो यह गुनाह नहीं। मगर ऐसे लोग जिस्मानी तौर पर मुसीबत में पड़ जाएंगे जबकि मैं आप को इस से बचाना चाहता हूँ।

29 भाइयो, मैं तो यह कहता हूँ कि वक़्त थोड़ा है। आइन्दा शादीशुदा ऐसे ज़िन्दगी बसर करें जैसे कि ग़ैरशादीशुदा हैं। 30 रोने वाले ऐसे हों जैसे नहीं रो रहे। ख़ुशी मनाने वाले ऐसे हों जैसे ख़ुशी नहीं मना रहे। ख़रीदने वाले ऐसे हों जैसे उन के पास कुछ भी नहीं। 31 दुनिया से फ़ाइदा उठाने वाले ऐसे हों जैसे इस का कोई फ़ाइदा नहीं। क्यूँकि इस दुनिया की मौजूदा शक्ल-ओ-सूरत ख़त्म होती जा रही है।

32 मैं तो चाहता हूँ कि आप फ़िक्रों से आज़ाद रहें। ग़ैरशादीशुदा शख़्स ख़ुदावन्द के मुआमलों की फ़िक्र में रहता है कि किस तरह उसे ख़ुश करे। 33 इस के बरअक्स शादीशुदा शख़्स दुनियावी फ़िक्र में रहता है कि किस तरह अपनी बीवी को ख़ुश करे। 34 यूँ वह बड़ी कश-म-कश में मुब्तला रहता है। इसी तरह ग़ैरशादीशुदा ख़ातून और कुंवारी ख़ुदावन्द की फ़िक्र में रहती है कि वह जिस्मानी और रुहानी तौर पर उस के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हो। इस के मुक़ाबले में शादीशुदा ख़ातून दुनियावी फ़िक्र में रहती है कि अपने ख़ावन्द को किस तरह ख़ुश करे।

35 मैं यह आप ही के फ़ाइदे के लिए कहता हूँ। मक़्सद यह नहीं कि आप पर पाबन्दियाँ लगाई जाएँ बल्कि यह कि आप शराफ़त, साबितक़दमी और यकसूई के साथ ख़ुदावन्द की हुज़ूरी में चलें।

36 अगर कोई समझता है, 'मैं अपनी कुंवारी मंगेतर से शादी न करने से उस का हक़ मार रहा हूँ' या यह कि 'मेरी उस के लिए ख़्वाहिश हद से ज़्यादा है, इस लिए शादी होनी चाहिए' तो फिर वह अपने इरादे को पूरा करे, यह गुनाह नहीं। वह शादी कर ले। 37 लेकिन इस के बरअक्स अगर उस ने शादी न करने का पुख़्ता अज़्म कर लिया है और वह मज्बूर नहीं बल्कि अपने इरादे पर इख़तियार रखता है और उस ने अपने दिल में फ़ैसला कर लिया है कि अपनी कुंवारी लड़की को ऐसे ही रहने दे तो उस ने अच्छा किया। 38 ग़रज़ जिस ने अपनी कुंवारी मंगेतर से शादी कर ली है उस ने अच्छा किया है, लेकिन जिस ने नहीं की उस ने और भी अच्छा किया है।

39 जब तक ख़ावन्द ज़िन्दा है बीवी को उस से रिश्ता तोड़ने की इजाज़त नहीं। ख़ावन्द की वफ़ात के बाद वह आज़ाद है कि जिस से चाहे शादी कर ले, मगर सिर्फ़ ख़ुदावन्द में। 40 लेकिन मेरी दानिस्त में अगर वह ऐसे ही रहे तो ज़्यादा मुबारक होगी। और मैं समझता हूँ कि मुझ में भी अल्लाह का रूह है।

बुतों की क़ुर्बानियाँ

8 1 अब मैं बुतों की क़ुर्बानी के बारे में बात करता हूँ। हम जानते हैं कि हम सब साहिब-ए-इल्म हैं। इल्म इन्सान के फूलने का बाइस बनता है जबकि मुहब्बत उस की तामीर करती है। 2 जो समझता है कि उस ने कुछ जान लिया है उस ने अब तक उस तरह नहीं जाना जिस तरह उस को जानना चाहिए।

3 लेकिन जो अल्लाह से मुहब्बत रखता है उसे अल्लाह
ने जान लिया है।

4 बुतों की क़ुर्बानी खाने के ज़िम्न में हम जानते हैं
कि दुनिया में बुत कोई चीज़ नहीं और कि रब के
सिवा कोई और ख़ुदा नहीं है। 5 बेशक आसमान-
ओ-ज़मीन पर कई नाम-निहाद देवता होते हैं, हाँ
दरअसल बहुतेरे देवताओं और ख़ुदावन्दों की पूजा
की जाती है। 6 तो भी हम जानते हैं कि फ़क़त एक ही
ख़ुदा है, हमारा बाप जिस ने सब कुछ पैदा किया है
और जिस के लिए हम ज़िन्दगी गुज़ारते हैं। और एक
ही ख़ुदावन्द है यानी ईसा मसीह जिस के वसीले से
सब कुछ वुजूद में आया है और जिस से हमें ज़िन्दगी
हासिल है।

7 लेकिन हर किसी को इस का इल्म नहीं। बाज़
ईमानदार तो अब तक यह सोचने के आदी हैं कि
बुत का वुजूद है। इस लिए जब वह किसी बुत की
क़ुर्बानी का गोश्त खाते हैं तो वह समझते हैं कि हम
ऐसा करने से उस बुत की पूजा कर रहे हैं। यूँ उन का
ज़मीर कमज़ोर होने की वजह से आलूदा हो जाता
है। 8 हक़ीक़त तो यह है कि हमारा अल्लाह को पसन्द
आना इस बात पर मब्नी नहीं कि हम क्या खाते
हैं और क्या नहीं खाते। न पर्हेज़ करने से हमें कोई
नुक़्सान पहुँचता है और न खा लेने से कोई फ़ाइदा।

9 लेकिन ख़बरदार रहें कि आप की यह आज़ादी
कमज़ोरों के लिए ठोकर का बाइस न बने। 10 क्यूँकि
अगर कोई कमज़ोरज़मीर शख़्स आप को बुतख़ाने
में खाना खाते हुए देखे तो क्या उसे उस के ज़मीर
के ख़िलाफ़ बुतों की क़ुर्बानियाँ खाने पर उभारा नहीं
जाएगा? 11 इस तरह आप का कमज़ोर भाई जिस
की ख़ातिर मसीह क़ुर्बान हुआ आप के इल्म-ओ-
इर्फ़ान की वजह से हलाक हो जाएगा। 12 जब आप
इस तरह अपने भाइयों का गुनाह करते और उन के
कमज़ोर ज़मीर को मजरूह करते हैं तो आप मसीह
का ही गुनाह करते हैं। 13 इस लिए अगर ऐसा खाना
मेरे भाई को सहीह राह से भटकाने का बाइस बने
तो मैं कभी गोश्त नहीं खाऊँगा ताकि अपने भाई की
गुमराही का बाइस न बनूँ।

रसूल का हक़

9 1 क्या मैं आज़ाद नहीं? क्या मैं मसीह का रसूल
नहीं? क्या मैं ने ईसा को नहीं देखा जो हमारा
ख़ुदावन्द है? क्या आप ख़ुदावन्द में मेरी मेहनत का
फल नहीं हैं? 2 अगरचे मैं दूसरों के नज़्दीक मसीह
का रसूल नहीं, लेकिन आप के नज़्दीक तो ज़रूर हूँ।
ख़ुदावन्द में आप ही मेरी रिसालत पर मुहर हैं।

3 जो मेरी बाज़पुर्स करना चाहते हैं उन्हें मैं अपने
दिफ़ा में कहता हूँ, 4 क्या हमें खाने-पीने का हक़
नहीं? 5 क्या हमें हक़ नहीं कि शादी करके अपनी
बीवी को साथ लिए फिरें? दूसरे रसूल और ख़ुदावन्द
के भाई और कैफ़ा तो ऐसा ही करते हैं। 6 क्या मुझे
और बर्नबास ही को अपनी ख़िदमत के अज्र में कुछ
पाने का हक़ नहीं? 7 कौन सा फ़ौजी अपने ख़र्च पर
जंग लड़ता है? कौन अंगूर का बाग़ लगा कर उस के
फल से अपना हिस्सा नहीं पाता? या कौन रेवड़ की
गल्लाबानी करके उस के दूध से अपना हिस्सा नहीं
पाता?

8 क्या मैं यह फ़क़त इन्सानी सोच के तहत कह
रहा हूँ? क्या शरीअत भी यही नहीं कहती? 9 तौरेत
में लिखा है, “जब तू फ़सल गाहने के लिए उस
पर बैल चलने देता है तो उस का मुँह बांध कर न
रखना।” क्या अल्लाह सिर्फ़ बैलों की फ़िक्र करता है
10 या वह हमारी ख़ातिर यह फ़रमाता है? हाँ, ज़रूर
हमारी ख़ातिर क्यूँकि हल चलाने वाला इस उम्मीद
पर चलाता है कि उसे कुछ मिलेगा। इसी तरह गाहने
वाला इस उम्मीद पर गाहता है कि वह पैदावार में से
अपना हिस्सा पाएगा। 11 हम ने आप के लिए रुहानी
बीज बोया है। तो क्या यह नामुनासिब है अगर हम
आप से जिस्मानी फ़सल काटें? 12 अगर दूसरों को
आप से अपना हिस्सा लेने का हक़ है तो क्या हमारा
उन से ज़्यादा हक़ नहीं बनता?

लेकिन हम ने इस हक़ से फ़ाइदा नहीं उठाया।
हम सब कुछ बर्दाश्त करते हैं ताकि मसीह की
ख़ुशख़बरी के लिए किसी भी तरह से रुकावट का
बाइस न बनें। 13 क्या आप नहीं जानते कि बैत-उल-
मुक़द्दस में ख़िदमत करने वालों की ज़रूरियात बैत-
उल-मुक़द्दस ही से पूरी की जाती हैं? जो क़ुर्बानियाँ
चढ़ाने के काम में मसरूफ़ रहते हैं उन्हें क़ुर्बानियों
से ही हिस्सा मिलता है। 14 इसी तरह ख़ुदावन्द ने
मुक़र्रर किया है कि इंजील की ख़ुशख़बरी की मुनादी
करने वालों की ज़रूरियात उन से पूरी की जाएँ जो
इस ख़िदमत से फ़ाइदा उठाते हैं।

15 लेकिन मैं ने किसी तरह भी इस से फ़ाइदा नहीं
उठाया, और न इस लिए लिखा है कि मेरे साथ ऐसा
सुलूक किया जाए। नहीं, इस से पहले कि फ़ख़र
करने का मेरा यह हक़ मुझ से छीन लिया जाए
बेहतर यह है कि मैं मर जाऊँ। 16 लेकिन अल्लाह
की ख़ुशख़बरी की मुनादी करना मेरे लिए फ़ख़र का
बाइस नहीं। मैं तो यह करने पर मज्बूर हूँ। मुझ पर
अफ़्सोस अगर इस ख़ुशख़बरी की मुनादी न करूँ।
17 अगर मैं यह अपनी मर्ज़ी से करता तो फिर अज्र
का मेरा हक़ बनता। लेकिन ऐसा नहीं है बल्कि ख़ुदा
ही ने मुझे यह ज़िम्मादारी दी है। 18 तो फिर मेरा अज्र
क्या है? यह कि मैं इंजील की ख़ुशख़बरी मुफ़्त सुनाऊँ
और अपने उस हक़ से फ़ाइदा न उठाऊँ जो मुझे उस
की मुनादी करने से हासिल है।

19 अगरचे मैं सब लोगों से आज़ाद हूँ फिर भी मैं
ने अपने आप को सब का ग़ुलाम बना लिया ताकि
ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को जीत लूँ। 20 में यहूदियों
के दरमियान यहूदी की मानिन्द बना ताकि यहूदियों
को जीत लूँ। मूसवी शरीअत के तहत ज़िन्दगी गुज़ारने
वालों के दरमियान मैं उन की मानिन्द बना ताकि उन्हें
जीत लूँ, गो मैं शरीअत के मातहत नहीं। 21 मूसवी
शरीअत के बग़ैर ज़िन्दगी गुज़ारने वालों के दरमियान
मैं उन ही की मानिन्द बना ताकि उन्हें जीत लूँ। इस
का मतलब यह नहीं कि मैं अल्लाह की शरीअत के
ताबे नहीं हूँ। हक़ीक़त में मैं मसीह की शरीअत के
तहत ज़िन्दगी गुज़ारता हूँ। 22 मैं कमज़ोरों के लिए
कमज़ोर बना ताकि उन्हें जीत लूँ। सब के लिए मैं सब
कुछ बना ताकि हर मुमकिन तरीक़े से बाज़ को बचा
सकूँ। 23 जो कुछ भी करता हूँ अल्लाह की ख़ुशख़बरी
के वास्ते करता हूँ ताकि इस की बरकात में शरीक
हो जाऊँ।

24 क्या आप नहीं जानते कि स्टेडियम में दौड़ते तो
सब ही हैं, लेकिन इनआम एक ही शख़्स हासिल
करता है? चुनाँचे ऐसे दौड़ें कि आप ही जीतें।
25 खेलों में शरीक होने वाला हर शख़्स अपने आप
को सख़्त नज़्म-ओ-ज़ब्त का पाबन्द रखता है। वह
फ़ानी ताज पाने के लिए ऐसा करते हैं, लेकिन हम
ग़ैरफ़ानी ताज पाने के लिए। 26 चुनाँचे मैं हर वक़्त
मन्ज़िल-ए-मक़सूद को पेश-ए-नज़र रखते हुए दौड़ता
हूँ। और मैं इसी तरह बाक्सिंग भी करता हूँ, मैं हवा में
मुक्के नहीं मारता बल्कि निशाने को। 27 मैं अपने बदन
को मारता कूटता और इसे अपना ग़ुलाम बनाता हूँ,
ऐसा न हो कि दूसरों में मुनादी करके ख़ुद नामक़्बूल
ठहरूँ।

इस्राईल का इब्रतनाक तजरिबा

10 1 भाइयो, मैं नहीं चाहता कि आप इस बात
से नावाक़िफ़ रहें कि हमारे बापदादा सब
बादल के नीचे थे। वह सब समुन्दर में से गुज़रे। 2 उन
सब ने बादल और समुन्दर में मूसा का बपतिस्मा
लिया। 3 सब ने एक ही रुहानी ख़ुराक खाई 4 और
सब ने एक ही रुहानी पानी पिया। क्यूँकि मसीह
रुहानी चटान की सूरत में उन के साथ साथ चलता
रहा और वही उन सब को पानी पिलाता रहा। 5 इस
के बावुजूद उन में से बेशतर लोग अल्लाह को पसन्द
न आए, इस लिए वह रेगिस्तान में हलाक हो गए।

6 यह सब कुछ हमारी इब्रत के लिए वाक़े हुआ
ताकि हम उन लोगों की तरह बुरी चीज़ों की हवस न
करें। 7 उन में से बाज़ की तरह बुतपरस्त न बनें, जैसे
मुक़द्दस नविश्तों में लिखा है, “लोग खाने-पीने के
लिए बैठ गए और फिर उठ कर रंगरलियों में अपने

दिल बहलाने लगे।” 8 हम ज़िना भी न करें जैसे उन में
से बाज़ ने किया और नतीजे में एक ही दिन में 23,000
अफ़राद ढेर हो गए। 9 हम ख़ुदावन्द की आज़माइश
भी न करें जिस तरह उन में से बाज़ ने की और नतीजे
में साँपों से हलाक हुए। 10 और न बुड़बुड़ाएँ जिस
तरह उन में से बाज़ बुड़बुड़ाने लगे और नतीजे में
हलाक करने वाले फ़रिश्ते के हाथों मारे गए।
11 यह माजरे इब्रत की ख़ातिर उन पर वाक़े हुए और
हम अख़ीर ज़माने में रहने वालों की नसीहत के लिए
लिखे गए।
12 ग़रज़ जो समझता है कि वह मज़बूती से खड़ा
है, ख़बरदार रहे कि गर न पड़े। 13 आप सिर्फ़ ऐसी
आज़माइशों में पड़े हैं जो इन्सान के लिए आम होती
हैं। और अल्लाह वफ़ादार है। वह आप को आप की
ताक़त से ज़्यादा आज़माइश में नहीं पड़ने देगा। जब
आप आज़माइश में पड़ जाएंगे तो वह उस में से
निकलने की राह भी पैदा कर देगा ताकि आप उसे
बर्दाश्त कर सकें।

अशा-ए-रब्बानी और बुतपरस्ती में तज़ाद

14 ग़रज़ मेरे प्यारो, बुतपरस्ती से भागें। 15 मैं आप
को समझदार जान कर बात कर रहा हूँ। आप ख़ुद
मेरी इस बात का फ़ैसला करें। 16 जब हम अशा-ए-
रब्बानी के मौक़े पर बरकत के प्याले को बरकत दे
कर उस में से पीते हैं तो क्या हम यूँ मसीह के ख़ून में
शरीक नहीं होते? और जब हम रोटी तोड़ कर खाते हैं
तो क्या मसीह के बदन में शरीक नहीं होते? 17 रोटी
तो एक ही है, इस लिए हम जो बहुत से हैं एक ही
बदन हैं, क्यूँकि हम सब एक ही रोटी में शरीक होते
हैं।
18 बनी इस्राईल पर ग़ौर करें। क्या बैत-उल-मुक़द्दस
में क़ुर्बानियाँ खाने वाले क़ुर्बानगाह की रिफ़ाक़त में
शरीक नहीं होते? 19 क्या मैं यह कहना चाहता हूँ
कि बुतों के चढ़ावे की कोई हैसियत है? या कि बुत
की कोई हैसियत है? हरगिज़ नहीं। 20 मैं यह कहता
हूँ कि जो क़ुर्बानियाँ वह गुज़राँते हैं अल्लाह को नहीं
बल्कि शयातीन को गुज़राँते हैं। और मैं नहीं चाहता
कि आप शयातीन की रिफ़ाक़त में शरीक हों। 21 आप
ख़ुदावन्द के प्याले और साथ ही शयातीन के प्याले
से नहीं पी सकते। आप ख़ुदावन्द के रिफ़ाक़ती खाने
और साथ ही शयातीन के रिफ़ाक़ती खाने में शरीक
नहीं हो सकते। 22 या क्या हम अल्लाह की ग़ैरत को
उकसाना चाहते हैं? क्या हम उस से ताक़तवर हैं?

दूसरों के ज़मीर का लिहाज़ करना

23 सब कुछ रवा तो है, लेकिन सब कुछ मुफ़ीद
नहीं। सब कुछ जाइज़ तो है, लेकिन सब कुछ हमारी
तामीर-ओ-तरक़्क़ी का बाइस नहीं होता। 24 हर कोई
अपने ही फ़ाइदे की तलाश में न रहे बल्कि दूसरे के।
25 बाज़ार में जो कुछ बिकता है उसे खाएँ और
अपने ज़मीर को मुत्मइन करने की ख़ातिर पूछगछ
न करें, 26 क्यूँकि “ज़मीन और जो कुछ उस पर है
रब का है।”
27 अगर कोई ग़ैरईमानदार आप की दावत करे और
आप उस दावत को क़बूल कर लें तो आप के सामने
जो कुछ भी रखा जाए उसे खाएँ। अपने ज़मीर के
इत्मीनान के लिए तफ़्तीश न करें। 28 लेकिन अगर
कोई आप को बता दे, “यह बुतों का चढ़ावा है”
तो फिर उस शख़्स की ख़ातिर जिस ने आप को
आगाह किया है और ज़मीर की ख़ातिर उसे न खाएँ।
29 मतलब है अपने ज़मीर की ख़ातिर नहीं बल्कि
दूसरे के ज़मीर की ख़ातिर। क्यूँकि यह किस तरह
हो सकता है कि किसी दूसरे का ज़मीर मेरी आज़ादी
के बारे में फ़ैसला करे? 30 अगर मैं ख़ुदा का शुक्र
करके किसी खाने में शरीक होता हूँ तो फिर मुझे
क्यूँ बुरा कहा जाए? मैं तो उसे ख़ुदा का शुक्र करके
खाता हूँ।
31 चुनाँचे सब कुछ अल्लाह के जलाल की ख़ातिर
करें, ख़्वाह आप खाएँ, पिएँ या और कुछ करें।
32 किसी के लिए ठोकर का बाइस न बनें, न यहूदियों
के लिए, न यूनानियों के लिए और न अल्लाह की
जमाअत के लिए। 33 इसी तरह मैं भी सब को पसन्द

आने की हर मुमकिन कोशिश करता हूँ। मैं अपने ही फ़ाइदे के ख़याल में नहीं रहता बल्कि दूसरों के ताकि बहुतेरे नजात पाएँ।

11 1 मेरे नमूने पर चलें जिस तरह मैं मसीह के नमूने पर चलता हूँ।

इबादत में ख़वातीन का किरदार

2 शाबाश कि आप हर तरह से मुझे याद रखते हैं। आप ने रिवायात को यूँ मह्फ़ूज़ रखा है जिस तरह मैं ने उन्हें आप के सपुर्द किया था। 3 लेकिन मैं आप को एक और बात से आगाह करना चाहता हूँ। हर मर्द का सर मसीह है जबकि औरत का सर मर्द और मसीह का सर अल्लाह है। 4 अगर कोई मर्द सर ढाँक कर दुआ या नबुव्वत करे तो वह अपने सर की बेइज़्ज़ती करता है। 5 और अगर कोई ख़ातून नंगे सर दुआ या नबुव्वत करे तो वह अपने सर की बेइज़्ज़ती करती है, गोया वह सर मुंडी है। 6 जो औरत अपने सर पर दोपट्टा नहीं लेती वह टिंड करवाए। लेकिन अगर टिंड करवाना या सर मुंडवाना उस के लिए बेइज़्ज़ती का बाइस है तो फिर वह अपने सर को ज़रूर ढाँके। 7 लेकिन मर्द के लिए लाज़िम है कि वह अपने सर को न ढाँके क्यूँकि वह अल्लाह की सूरत और जलाल को मुनअकिस करता है। लेकिन औरत मर्द का जलाल मुनअकिस करती है, 8 क्यूँकि पहला मर्द औरत से नहीं निकला बल्कि औरत मर्द से निकली है। 9 मर्द को औरत के लिए ख़ल्क़ नहीं किया गया बल्कि औरत को मर्द के लिए। 10 इस वजह से औरत फ़रिश्तों को पेश-ए-नज़र रख कर अपने सर पर दोपट्टा ले जो उस पर इख़तियार का निशान है। 11 लेकिन याद रहे कि ख़ुदावन्द में न औरत मर्द के बग़ैर कुछ है और न मर्द औरत के बग़ैर। 12 क्यूँकि अगरचे इब्तिदा में औरत मर्द से निकली, लेकिन अब मर्द औरत ही से पैदा होता है। और हर शय अल्लाह से निकलती है।

13 आप ख़ुद फ़ैसला करें। क्या मुनासिब है कि कोई औरत अल्लाह के सामने नंगे सर दुआ करे? 14 क्या फ़ित्रत भी यह नहीं सिखाती कि लम्बे बाल मर्द की बेइज़्ज़ती का बाइस हैं 15 जबकि औरत के लम्बे बाल उस की इज़्ज़त का मूजिब हैं? क्यूँकि बाल उसे ढाँपने के लिए दिए गए हैं। 16 लेकिन इस सिलसिले में अगर कोई झगड़ने का शौक़ रखे तो जान ले कि न हमारा यह दस्तूर है, न अल्लाह की जमाअतों का।

अशा-ए-रब्बानी

17 मैं आप को एक और हिदायत देता हूँ। लेकिन इस सिलसिले में मेरे पास आप के लिए तारीफ़ी अल्फ़ाज़ नहीं, क्यूँकि आप का जमा होना आप की बेहतरी का बाइस नहीं होता बल्कि नुक़्सान का बाइस। 18 अव्वल तो मैं सुनता हूँ कि जब आप जमाअत की सूरत में इकट्ठे होते हैं तो आप के दरमियान पार्टीबाज़ी नज़र आती है। और किसी हद तक मुझे इस का यक़ीन भी है। 19 लाज़िम है कि आप के दरमियान मुख़्तलिफ़ पार्टियाँ नज़र आएँ ताकि आप में से वह ज़ाहिर हो जाएँ जो आज़माने के बाद भी सच्चे निकलें। 20 जब आप जमा होते हैं तो जो खाना आप खाते हैं उस का अशा-ए-रब्बानी से कोई ताल्लुक़ नहीं रहा। 21 क्यूँकि हर शख़्स दूसरों का इन्तिज़ार किए बग़ैर अपना खाना खाने लगता है। नतीजे में एक भूका रहता है जबकि दूसरे को नशा हो जाता है। 22 ताज्जुब है! क्या खाने-पीने के लिए आप के घर नहीं? या क्या आप अल्लाह की जमाअत को हक़ीर जान कर उन को जो ख़ाली हाथ आए हैं शर्मिन्दा करना चाहते हैं? मैं क्या कहूँ? क्या आप को शाबाश दूँ? इस में मैं आप को शाबाश नहीं दे सकता।

23 क्यूँकि जो कुछ मैं ने आप के सपुर्द किया है वह मुझे ख़ुदावन्द ही से मिला है। जिस रात ख़ुदावन्द ईसा को दुश्मन के हवाले कर दिया गया उस ने रोटी ले कर 24 शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उसे टुकड़े करके कहा, “यह मेरा बदन है जो तुम्हारे लिए दिया जाता है। मुझे याद करने के लिए यही किया करो।” 25 इसी तरह उस ने खाने के बाद प्याला ले कर कहा,

“मै का यह प्याला वह नया अह्द है जो मेरे ख़ून के
ज़रीए क़ाइम किया जाता है। जब कभी इसे पियो
तो मुझे याद करने के लिए पियो।” 26 क्यूँकि जब
भी आप यह रोटी खाते और यह प्याला पीते हैं तो
ख़ुदावन्द की मौत का एलान करते हैं, जब तक वह
वापस न आए।

27 चुनाँचे जो नालाइक़ तौर पर ख़ुदावन्द की रोटी
खाए और उस का प्याला पिए वह ख़ुदावन्द के
बदन और ख़ून का गुनाह करता है और क़ुसूरवार
ठहरेगा। 28 हर शख़्स अपने आप को परख कर
ही इस रोटी में से खाए और प्याले में से पिए।
29 जो रोटी खाते और प्याला पीते वक़्त ख़ुदावन्द
के बदन का एहतिराम नहीं करता वह अपने आप
पर अल्लाह की अदालत लाता है। 30 इसी लिए आप
के दरमियान बहुतेरे कमज़ोर और बीमार हैं बल्कि
बहुत से मौत की नींद सो चुके हैं। 31 अगर हम अपने
आप को जाँचते तो अल्लाह की अदालत से बचे रहते।
32 लेकिन ख़ुदावन्द हमारी अदालत करने से हमारी
तर्बियत करता है ताकि हम दुनिया के साथ मुजरिम
न ठहरें।

33 ग़रज़ मेरे भाइयो, जब आप खाने के लिए जमा
होते हैं तो एक दूसरे का इन्तिज़ार करें। 34 अगर
किसी को भूक लगी हो तो वह अपने घर में ही खाना
खा ले ताकि आप का जमा होना आप की अदालत
का बाइस न ठहरे। दीगर हिदायात मैं आप को उस
वक़्त दूँगा जब आप के पास आऊँगा।

एक रूह और मुख़्तलिफ़ नेमतें

12 1 भाइयो, मैं नहीं चाहता कि आप रुहानी
नेमतों के बारे में नावाक़िफ़ रहें। 2 आप
जानते हैं कि ईमान लाने से पेशतर आप को बार
बार बहकाया और गूँगे बुतों की तरफ़ खैंचा जाता
था। 3 इसी के पेश-ए-नज़र मैं आप को आगाह करता
हूँ कि अल्लाह के रूह की हिदायत से बोलने वाला
कभी नहीं कहेगा, “ईसा पर लानत।” और रूह-उल-
क़ुद्स की हिदायत से बोलने वाले के सिवा कोई नहीं
कहेगा, “ईसा ख़ुदावन्द है।”

4 गो तरह तरह की नेमतें होती हैं, लेकिन रूह एक
ही है। 5 तरह तरह की ख़िदमतें होती हैं, लेकिन
ख़ुदावन्द एक ही है। 6 अल्लाह अपनी क़ुदरत का
इज़हार मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ से करता है, लेकिन ख़ुदा
एक ही है जो सब में हर तरह का काम करता है।
7 हम में से हर एक में रूह-उल-क़ुद्स का इज़हार
किसी नेमत से होता है। यह नेमतें इस लिए दी जाती
हैं ताकि हम एक दूसरे की मदद करें। 8 एक को रूह-
उल-क़ुद्स हिक्मत का कलाम अता करता है, दूसरे
को वही रूह इल्म-ओ-इर्फ़ान का कलाम। 9 तीसरे
को वही रूह पुख़्ता ईमान देता है और चौथे को वही
एक रूह शिफ़ा देने की नेमतें। 10 वह एक को मोजिज़े
करने की ताक़त देता है, दूसरे को नबुव्वत करने
की सलाहियत और तीसरे को मुख़्तलिफ़ रूहों में
इम्तियाज़ करने की नेमत। एक को उस से ग़ैरज़बानें
बोलने की नेमत मिलती है और दूसरे को इन का
तर्जुमा करने की। 11 वही एक रूह यह तमाम नेमतें
तक़्सीम करता है। और वही फ़ैसला करता है कि
किस को क्या नेमत मिलनी है।

एक जिस्म और मुख़्तलिफ़ आज़ा

12 इन्सानी जिस्म के बहुत से आज़ा होते हैं, लेकिन
यह तमाम आज़ा एक ही बदन को तश्कील देते हैं।
मसीह का बदन भी ऐसा है। 13 ख़्वाह हम यहूदी थे या
यूनानी, ग़ुलाम थे या आज़ाद, बपतिस्मे से हम सब
को एक ही रूह की मारिफ़त एक ही बदन में शामिल
किया गया है, हम सब को एक ही रूह पिलाया गया
है।

14 बदन के बहुत से हिस्से होते हैं, न सिर्फ़ एक।
15 फ़र्ज़ करें कि पाँओ कहे, “मैं हाथ नहीं हूँ इस लिए
बदन का हिस्सा नहीं।” क्या यह कहने पर उस का
बदन से ताल्लुक़ ख़त्म हो जाएगा? 16 या फ़र्ज़ करें
कि कान कहे, “मैं आँख नहीं हूँ इस लिए बदन का
हिस्सा नहीं।” क्या यह कहने पर उस का बदन से

नाता टूट जाएगा? 17 अगर पूरा जिस्म आँख ही होता
तो फिर सुनने की सलाहियत कहाँ होती? अगर सारा
बदन कान ही होता तो फिर सूँघने का क्या बनता?
18 लेकिन अल्लाह ने जिस्म के मुख़्तलिफ़ आज़ा बना
कर हर एक को वहाँ लगाया जहाँ वह चाहता था।
19 अगर एक ही उज़ू पूरा जिस्म होता तो फिर यह
किस क़िस्म का जिस्म होता? 20 नहीं, बहुत से आज़ा
होते हैं, लेकिन जिस्म एक ही है।

21 आँख हाथ से नहीं कह सकती, "मुझे तेरी
ज़रूरत नहीं," न सर पाँओ से कह सकता है, "मुझे
तुम्हारी ज़रूरत नहीं।" 22 बल्कि अगर देखा जाए
तो अक्सर ऐसा होता है कि जिस्म के जो आज़ा
ज़्यादा कमज़ोर लगते हैं उन की ज़्यादा ज़रूरत होती
है। 23 वह आज़ा जिन्हें हम कम इज़्ज़त के लाइक़
समझते हैं उन्हें हम ज़्यादा इज़्ज़त के साथ ढाँप लेते
हैं, और वह आज़ा जिन्हें हम शर्म से छुपा कर रखते
हैं उन ही का हम ज़्यादा एहतिराम करते हैं। 24 इस के
बरअक्स हमारे इज़्ज़तदार आज़ा को इस की ज़रूरत
ही नहीं होती कि हम उन का ख़ास एहतिराम करें।
लेकिन अल्लाह ने जिस्म को इस तरह तर्तीब दिया
कि उस ने कमक़दर आज़ा को ज़्यादा इज़्ज़तदार
ठहराया, 25 ताकि जिस्म के आज़ा में तफ़रिक़ा न हो
बल्कि वह एक दूसरे की फ़िक्र करें। 26 अगर एक
उज़ू दुख में हो तो उस के साथ दीगर तमाम आज़ा भी
दुख महसूस करते हैं। अगर एक उज़ू सरफ़राज़ हो
जाए तो उस के साथ बाक़ी तमाम आज़ा भी मसरूर
होते हैं।

27 आप सब मिल कर मसीह का बदन हैं और
इन्फ़िरादी तौर पर उस के मुख़्तलिफ़ आज़ा। 28 और
अल्लाह ने अपनी जमाअत में पहले रसूल, दूसरे नबी
और तीसरे उस्ताद मुक़र्रर किए हैं। फिर उस ने ऐसे
लोग भी मुक़र्रर किए हैं जो मोजिज़े करते, शिफ़ा
देते, दूसरों की मदद करते, इन्तिज़ाम चलाते और
मुख़्तलिफ़ क़िस्म की ग़ैरज़बानें बोलते हैं। 29 क्या
सब रसूल हैं? क्या सब नबी हैं? क्या सब उस्ताद
हैं? क्या सब मोजिज़े करते हैं? 30 क्या सब को शिफ़ा
देने की नेमतें हासिल हैं? क्या सब ग़ैरज़बानें बोलते
हैं? क्या सब इन का तर्जुमा करते हैं? 31 लेकिन आप
उन नेमतों की तलाश में रहें जो अफ़ज़ल हैं।

अब मैं आप को इस से कहीं उम्दा राह बताता हूँ।

मुहब्बत

13 1 अगर मैं इन्सानों और फ़रिश्तों की ज़बानें
बोलूँ, लेकिन मुहब्बत न रखूँ तो फिर मैं
बस गूँजता हुआ घड़ियाल या ठनठनाती हुई झाँझ
ही हूँ। 2 अगर मेरी नबुव्वत की नेमत हो और मुझे
तमाम भेदों और हर इल्म से वाक़फ़ियत हो, साथ
ही मेरा ऐसा ईमान हो कि पहाड़ों को खिसका सकूँ,
लेकिन मेरा दिल मुहब्बत से ख़ाली हो तो मैं कुछ भी
नहीं। 3 अगर मैं अपना सारा माल ग़रीबों में तक़्सीम
कर दूँ बल्कि अपना बदन जलाए जाने के लिए दे दूँ,
लेकिन मेरा दिल मुहब्बत से ख़ाली हो तो मुझे कुछ
फ़ाइदा नहीं। 4 मुहब्बत सब्र से काम लेती है, मुहब्बत
मेहरबान है। न यह हसद करती है न डींगें मारती है।
यह फूलती भी नहीं।

5 मुहब्बत बदतमीज़ी नहीं करती न अपने ही फ़ाइदे
की तलाश में रहती है। यह जल्दी से ग़ुस्से में नहीं
आ जाती और दूसरों की ग़लतियों का रिकार्ड नहीं
रखती। 6 यह नाइन्साफ़ी देख कर ख़ुश नहीं होती
बल्कि सच्चाई के ग़ालिब आने पर ही ख़ुशी मनाती
है। 7 यह हमेशा दूसरों की कमज़ोरियाँ बर्दाश्त करती
है, हमेशा एतिमाद करती है, हमेशा उम्मीद रखती है,
हमेशा साबितक़दम रहती है।

8 मुहब्बत कभी ख़त्म नहीं होती। इस के मुक़ाबले
में नबुव्वतें ख़त्म हो जाएँगी, ग़ैरज़बानें जाती रहेंगी,
इल्म मिट जाएगा। 9 क्यूँकि इस वक़्त हमारा इल्म
नामुकम्मल है और हमारी नबुव्वत सब कुछ ज़ाहिर
नहीं करती। 10 लेकिन जब वह कुछ आएगा जो
कामिल है तो यह अधूरी चीज़ें जाती रहेंगी। 11 जब मैं
बच्चा था तो बच्चे की तरह बोलता, बच्चे की सी सोच
रखता और बच्चे की सी समझ से काम लेता था।
लेकिन अब मैं बालिग़ हूँ, इस लिए मैं ने बच्चे का

सा अन्दाज़ छोड़ दिया है। 12 इस वक़्त हमें आईने
में धुन्दला सा दिखाई देता है, लेकिन उस वक़्त हम
रू-ब-रू देखेंगे। अब मैं जुज़्वी तौर पर जानता हूँ,
लेकिन उस वक़्त कामिल तौर से जान लूँगा, ऐसे ही
जैसे अल्लाह ने मुझे पहले से जान लिया है।
13 ग़रज़ ईमान, उम्मीद और मुहब्बत तीनों क़ाइम
रहते हैं, लेकिन इन में अफ़्ज़ल मुहब्बत है।

नबुव्वत और ग़ैरज़बानें

14 1 मुहब्बत का दामन थामे रखें। लेकिन
साथ ही रुहानी नेमतों को सरगर्मी से
इस्तेमाल में लाएँ, ख़ुसूसन नबुव्वत की नेमत
को। 2 ग़ैरज़बान बोलने वाला लोगों से नहीं बल्कि
अल्लाह से बात करता है। कोई उस की बात नहीं
समझता क्यूँकि वह रूह में भेद की बातें करता है।
3 इस के बरअक्स नबुव्वत करने वाला लोगों से
ऐसी बातें करता है जो उन की तामीर-ओ-तरक़्क़ी,
हौसलाअफ़्ज़ाई और तसल्ली का बाइस बनती हैं।
4 ग़ैरज़बान बोलने वाला अपनी तामीर-ओ-तरक़्क़ी
करता है जबकि नबुव्वत करने वाला जमाअत की।
5 मैं चाहता हूँ कि आप सब ग़ैरज़बानें बोलें, लेकिन
इस से ज़्यादा यह ख़्वाहिश रखता हूँ कि आप
नबुव्वत करें। नबुव्वत करने वाला ग़ैरज़बानें बोलने
वाले से अहम है। हाँ, ग़ैरज़बानें बोलने वाला भी
अहम है बशर्तेकि अपनी ज़बान का तर्जुमा करे,
क्यूँकि इस से ख़ुदा की जमाअत की तामीर-ओ-
तरक़्क़ी होती है।
6 भाइयो, अगर मैं आप के पास आ कर ग़ैरज़बानें
बोलूँ, लेकिन मुकाशफ़े, इल्म, नबुव्वत और तालीम
की कोई बात न करूँ तो आप को क्या फ़ाइदा होगा?
7 बेजान साज़ों पर ग़ौर करने से भी यही बात सामने
आती है। अगर बाँसरी या सरोद को किसी ख़ास सुर
के मुताबिक़ न बजाया जाए तो फिर सुनने वाले किस
तरह पहचान सकेंगे कि इन पर क्या क्या पेश किया
जा रहा है? 8 इसी तरह अगर बिगुल की आवाज़ जंग
के लिए तय्यार हो जाने के लिए साफ़ तौर से न बजे
तो क्या फ़ौजी कमरबस्ता हो जाएंगे? 9 अगर आप
साफ़ साफ़ बात न करें तो आप की हालत भी ऐसी
ही होगी। फिर आप की बात कौन समझेगा? क्यूँकि
आप लोगों से नहीं बल्कि हवा से बातें करेंगे। 10 इस
दुनिया में बहुत ज़्यादा ज़बानें बोली जाती हैं और
इन में से कोई भी नहीं जो बेमानी हो। 11 अगर मैं
किसी ज़बान से वाक़िफ़ नहीं तो मैं उस ज़बान में
बोलने वाले के नज़्दीक अजनबी ठहरूँगा और वह
मेरे नज़्दीक। 12 यह उसूल आप पर भी लागू होता है।
चूँकि आप रुहानी नेमतों के लिए तड़पते हैं तो फिर
ख़ासकर उन नेमतों में माहिर बनने की कोशिश करें
जो ख़ुदा की जमाअत को तामीर करती हैं।
13 चुनाँचे ग़ैरज़बान बोलने वाला दुआ करे कि इस
का तर्जुमा भी कर सके। 14 क्यूँकि अगर मैं ग़ैरज़बान
में दुआ करूँ तो मेरी रूह तो दुआ करती है मगर मेरी
अक़्ल बेअमल रहती है। 15 तो फिर क्या करूँ? मैं
रूह में दुआ करूँगा, लेकिन अक़्ल को भी इस्तेमाल
करूँगा। मैं रूह में हम्द-ओ-सना करूँगा, लेकिन
अक़्ल को भी इस्तेमाल में लाऊँगा। 16 अगर आप
सिर्फ़ रूह में हम्द-ओ-सना करें तो हाज़िरीन में से जो
आप की बात नहीं समझता वह किस तरह आप की
शुक्रगुज़ारी पर "आमीन" कह सकेगा? उसे तो आप
की बातों की समझ ही नहीं आई। 17 बेशक आप
अच्छी तरह ख़ुदा का शुक्र कर रहे होंगे, लेकिन इस
से दूसरे शख़्स की तामीर-ओ-तरक़्क़ी नहीं होगी।
18 मैं ख़ुदा का शुक्र करता हूँ कि आप सब की
निस्बत ज़्यादा ग़ैरज़बानों में बात करता हूँ। 19 फिर
भी मैं ख़ुदा की जमाअत में ऐसी बातें पेश करना
चाहता हूँ जो दूसरे समझ सकें और जिन से वह
तर्बियत हासिल कर सकें। क्यूँकि ग़ैरज़बानों में बोली
गई बेशुमार बातों की निस्बत पाँच तर्बियत देने वाले
अल्फ़ाज़ कहीं बेहतर हैं।
20 भाइयो, बच्चों जैसी सोच से बाज़ आएँ। बुराई
के लिहाज़ से तो ज़रूर बच्चे बने रहें, लेकिन समझ
में बालिग़ बन जाएँ। 21 शरीअत में लिखा है, "रब
फ़रमाता है कि मैं ग़ैरज़बानों और अजनबियों के होंटों

की मारिफ़त इस क़ौम से बात करूँगा। लेकिन वह फिर भी मेरी नहीं सुनेंगे।” 22 इस से ज़ाहिर होता है कि ग़ैरज़बानें ईमानदारों के लिए इम्तियाज़ी निशान नहीं होतीं बल्कि ग़ैरईमानदारों के लिए। इस के बरअक्स नबुव्वत ग़ैरईमानदारों के लिए इम्तियाज़ी निशान नहीं होती बल्कि ईमानदारों के लिए।

23 अब फ़र्ज़ करें कि ईमानदार एक जगह जमा हैं और तमाम हाज़िरीन ग़ैरज़बानें बोल रहे हैं। इसी अस्ना में ग़ैरज़बान को न समझने वाले या ग़ैरईमानदार आ शामिल होते हैं। आप को इस हालत में देख कर क्या वह आप को दीवाना क़रार नहीं देंगे? 24 इस के मुक़ाबले में अगर तमाम लोग नबुव्वत कर रहे हों और कोई ग़ैरईमानदार अन्दर आए तो क्या होगा? वह सब उसे क़ाइल कर लेंगे कि गुनाहगार है और सब उसे परख लेंगे। 25 यूँ उस के दिल की पोशीदा बातें ज़ाहिर हो जाएँगी, वह गिर कर अल्लाह को सिज्दा करेगा और तस्लीम करेगा कि फ़िलहक़ीक़त अल्लाह आप के दरमियान मौजूद है।

जमाअत में तर्तीब की ज़रूरत

26 भाइयो, फिर क्या होना चाहिए? जब आप जमा होते हैं तो हर एक के पास कोई गीत या तालीम या मुकाशफ़ा या ग़ैरज़बान या इस का तर्जुमा हो। इन सब का मक़्सद ख़ुदा की जमाअत की तामीर-ओ-तरक़्क़ी हो। 27 ग़ैरज़बान में बोलते वक़्त सिर्फ़ दो या ज़्यादा से ज़्यादा तीन अश्ख़ास बोलें और वह भी बारी बारी। साथ ही कोई उन का तर्जुमा भी करे। 28 अगर कोई तर्जुमा करने वाला न हो तो ग़ैरज़बान बोलने वाला जमाअत में ख़ामोश रहे, अलबत्ता उसे अपने आप से और अल्लाह से बात करने की आज़ादी है। 29 नबियों में से दो या तीन नबुव्वत करें और दूसरे उन की बातों की सेहत को परखें। 30 अगर इस दौरान किसी बैठे हुए शख़्स को कोई मुकाशफ़ा मिले तो पहला शख़्स ख़ामोश हो जाए। 31 क्यूँकि आप सब बारी बारी नबुव्वत कर सकते हैं ताकि तमाम लोग सीखें और उन की हौसलाअफ़्ज़ाई हो। 32 नबियों की रूहें नबियों के ताबे रहती हैं, 33 क्यूँकि अल्लाह बेतर्तीबी का नहीं बल्कि सलामती का ख़ुदा है।

जैसा मुक़द्दसीन की तमाम जमाअतों का दस्तूर है 34 ख़वातीन जमाअत में ख़ामोश रहें। उन्हें बोलने की इजाज़त नहीं, बल्कि वह फ़रमाँबरदार रहें। शरीअत भी यही फ़रमाती है। 35 अगर वह कुछ सीखना चाहें तो अपने घर पर अपने शौहर से पूछ लें, क्यूँकि औरत का ख़ुदा की जमाअत में बोलना शर्म की बात है।

36 क्या अल्लाह का कलाम आप में से निकला है, या क्या वह सिर्फ़ आप ही तक पहुँचा है? 37 अगर कोई ख़याल करे कि मैं नबी हूँ या ख़ास रुहानी हैसियत रखता हूँ तो वह जान ले कि जो कुछ मैं आप को लिख रहा हूँ वह ख़ुदावन्द का हुक्म है। 38 जो यह नज़रअन्दाज़ करता है उसे ख़ुद भी नज़रअन्दाज़ किया जाएगा।

39 ग़रज़ भाइयो, नबुव्वत करने के लिए तड़पते रहें, अलबत्ता किसी को ग़ैरज़बानें बोलने से न रोकें। 40 लेकिन सब कुछ शाइस्तगी और तर्तीब से अमल में आए।

मसीह का जी उठना

15 1 भाइयो, मैं आप की तवज्जुह उस ख़ुशख़बरी की तरफ़ दिलाता हूँ जो मैं ने आप को सुनाई, वही ख़ुशख़बरी जिसे आप ने क़बूल किया और जिस पर आप क़ाइम भी हैं। 2 इसी पैग़ाम के वसीले से आप को नजात मिलती है। शर्त यह है कि आप वह बातें जूँ की तूँ थामे रखें जिस तरह मैं ने आप तक पहुँचाई हैं। बेशक यह बात इस पर मुन्हसिर है कि आप का ईमान लाना बेमक़्सद नहीं था।

3 क्यूँकि मैं ने इस पर ख़ास ज़ोर दिया कि वही कुछ आप के सपुर्द करूँ जो मुझे भी मिला है। यह कि मसीह ने पाक नविश्तों के मुताबिक़ हमारे गुनाहों की ख़ातिर अपनी जान दी, 4 फिर वह दफ़न हुआ और तीसरे दिन पाक नविश्तों के मुताबिक़ जी उठा। 5 वह पतरस को दिखाई दिया, फिर बारह शागिर्दों

को। 6 इस के बाद वह एक ही वक़्त पाँच सौ से
ज़्यादा भाइयों पर ज़ाहिर हुआ। उन में से बेशतर अब
तक ज़िन्दा हैं अगरचे चन्द एक इन्तिक़ाल कर चुके
हैं। 7 फिर याक़ूब ने उसे देखा, फिर तमाम रसूलों ने।
8 और सब के बाद वह मुझ पर भी ज़ाहिर हुआ, मुझ
पर जो गोया क़बल अज़ वक़्त पैदा हुआ। 9 क्यूँकि
रसूलों में मेरा दर्जा सब से छोटा है, बल्कि मैं तो
रसूल कहलाने के भी लाइक़ नहीं, इस लिए कि मैं ने
अल्लाह की जमाअत को ईज़ा पहुँचाई। 10 लेकिन मैं
जो कुछ हूँ अल्लाह के फ़ज़्ल ही से हूँ। और जो फ़ज़्ल
उस ने मुझ पर किया वह बेअसर न रहा, क्यूँकि मैं
ने उन सब से ज़्यादा जाँफ़िशानी से काम किया है।
अलबत्ता यह काम मैं ने ख़ुद नहीं बल्कि अल्लाह के
फ़ज़्ल ने किया है जो मेरे साथ था। 11 ख़ैर, यह काम मैं
ने किया या उन्हों ने, हम सब उसी पैग़ाम की मुनादी
करते हैं जिस पर आप ईमान लाए हैं।

जी उठने पर एतिराज़

12 अब मुझे यह बताएँ, हम तो मुनादी करते हैं कि
मसीह मुर्दों में से जी उठा है। तो फिर आप में से कुछ
लोग कैसे कह सकते हैं कि मुर्दे जी नहीं उठते?
13 अगर मुर्दे जी नहीं उठते तो मतलब यह हुआ कि
मसीह भी नहीं जी उठा। 14 और अगर मसीह जी नहीं
उठा तो फिर हमारी मुनादी अबस होती और आप का
ईमान लाना भी बेफ़ाइदा होता। 15 नीज़ हम अल्लाह के
बारे में झूटे गवाह साबित होते। क्यूँकि हम गवाही
देते हैं कि अल्लाह ने मसीह को ज़िन्दा किया जबकि
अगर वाक़ई मुर्दे नहीं जी उठते तो वह भी ज़िन्दा नहीं
हुआ। 16 ग़रज़ अगर मुर्दे जी नहीं उठते तो फिर मसीह
भी नहीं जी उठा। 17 और अगर मसीह नहीं जी उठा
तो आप का ईमान बेफ़ाइदा है और आप अब तक
अपने गुनाहों में गिरिफ़्तार हैं। 18 हाँ, इस के मुताबिक़
जिन्हों ने मसीह में होते हुए इन्तिक़ाल किया है वह
सब हलाक हो गए हैं। 19 चुनाँचे अगर मसीह पर
हमारी उम्मीद सिर्फ़ इसी ज़िन्दगी तक महदूद है तो
हम इन्सानों में सब से ज़्यादा क़ाबिल-ए-रहम हैं।

मसीह वाक़ई जी उठा है

20 लेकिन मसीह वाक़ई मुर्दों में से जी उठा है। वह
इन्तिक़ाल किए हुओं की फ़सल का पहला फल है।
21 चूँकि इन्सान के वसीले से मौत आई, इस लिए
इन्सान ही के वसीले से मुर्दों के जी उठने की भी
राह खुली। 22 जिस तरह सब इस लिए मरते हैं कि
वह आदम के फ़र्ज़न्द हैं उसी तरह सब ज़िन्दा किए
जाएंगे जो मसीह के हैं। 23 लेकिन जी उठने की एक
तर्तीब है। मसीह तो फ़सल के पहले फल की हैसियत
से जी उठ चुका है जबकि उस के लोग उस वक़्त जी
उठेंगे जब वह वापस आएगा। 24 इस के बाद ख़ातमा
होगा। तब हर हुकूमत, इख़तियार और क़ुव्वत को
नेस्त करके वह बादशाही को ख़ुदा बाप के हवाले
कर देगा। 25 क्यूँकि लाज़िम है कि मसीह उस वक़्त
तक हुकूमत करे जब तक अल्लाह तमाम दुश्मनों को
उस के पाँओ के नीचे न कर दे। 26 आख़िरी दुश्मन
जिसे नेस्त किया जाएगा मौत होगी। 27 क्यूँकि अल्लाह
के बारे में कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है, "उस ने सब
कुछ उस (यानी मसीह) के पाँओ के नीचे कर दिया।"
जब कहा गया है कि सब कुछ मसीह के मातहत कर
दिया गया है, तो ज़ाहिर है कि इस में अल्लाह शामिल
नहीं जिस ने सब कुछ मसीह के मातहत किया है।
28 जब सब कुछ मसीह के मातहत कर दिया गया
तब फ़र्ज़न्द ख़ुद भी उसी के मातहत हो जाएगा जिस
ने सब कुछ उस के मातहत किया। यूँ अल्लाह सब में
सब कुछ होगा।

जी उठने के पेश-ए-नज़र ज़िन्दगी गुज़ारना

29 अगर मुर्दे वाक़ई जी नहीं उठते तो फिर वह लोग
क्या करेंगे जो मुर्दों की ख़ातिर बपतिस्मा लेते हैं?
अगर मुर्दे जी नहीं उठेंगे तो फिर वह उन की ख़ातिर
क्यूँ बपतिस्मा लेते हैं? 30 और हम भी हर वक़्त
अपनी जान ख़तरे में क्यूँ डाले हुए हैं? 31 भाइयो,
मैं रोज़ाना मरता हूँ। यह बात उतनी ही यक़ीनी है
जितनी यह कि आप हमारे ख़ुदावन्द मसीह ईसा में

मेरा फ़ख़र हैं। 32 अगर मैं सिर्फ़ इसी ज़िन्दगी की
उम्मीद रखते हुए इफ़िसुस में वहशी दरिन्दों से लड़ा
तो मुझे क्या फ़ाइदा हुआ? अगर मुर्दे जी नहीं उठते
तो इस क़ौल के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारना बेहतर
होगा कि "आओ, हम खाएँ पिएँ, क्यूँकि कल तो
मर ही जाना है।"
33 फ़रेब न खाएँ, बुरी सोह्बत अच्छी आदतों को
बिगाड़ देती है। 34 पूरे तौर पर होश में आएँ और गुनाह
न करें। आप में से बाज़ ऐसे हैं जो अल्लाह के बारे में
कुछ नहीं जानते। यह बात मैं आप को शर्म दिलाने
के लिए कहता हूँ।

मुर्दे किस तरह जी उठेंगे

35 शायद कोई सवाल उठाए, "मुर्दे किस तरह जी
उठते हैं? और जी उठने के बाद उन का जिस्म कैसा
होगा?" 36 भई, अक़्ल से काम लें। जो बीज आप
बोते हैं वह उस वक़्त तक नहीं उगता जब तक कि
मर न जाए। 37 जो आप बोते हैं वह वही पौदा नहीं
है जो बाद में उगेगा बल्कि महज़ एक नंगा सा दाना
है, ख़्वाह गन्दुम का हो या किसी और चीज़ का।
38 लेकिन अल्लाह उसे ऐसा जिस्म देता है जैसा वह
मुनासिब समझता है। हर क़िस्म के बीज को वह उस
का ख़ास जिस्म अता करता है।
39 तमाम जानदारों को एक जैसा जिस्म नहीं मिला
बल्कि इन्सानों को और क़िस्म का, मवेशियों को
और क़िस्म का, परिन्दों को और क़िस्म का, और
मछलियों को और क़िस्म का।
40 इस के इलावा आसमानी जिस्म भी हैं और
ज़मीनी जिस्म भी। आसमानी जिस्मों की शान और
है और ज़मीनी जिस्मों की शान और। 41 सूरज की
शान और है, चाँद की शान और, और सितारों की
शान और, बल्कि एक सितारा शान में दूसरे सितारे
से फ़र्क़ है।
42 मुर्दों का जी उठना भी ऐसा ही है। जिस्म फ़ानी
हालत में बोया जाता है और लाफ़ानी हालत में जी
उठता है। 43 वह ज़लील हालत में बोया जाता है और
जलाली हालत में जी उठता है। वह कमज़ोर हालत
में बोया जाता है और क़वी हालत में जी उठता है।
44 फ़ित्रती जिस्म बोया जाता है और रुहानी जिस्म जी
उठता है। जहाँ फ़ित्रती जिस्म है वहाँ रुहानी जिस्म
भी होता है। 45 पाक नविश्तों में भी लिखा है कि
पहले इन्सान आदम में जान आ गई। लेकिन आख़िरी
आदम ज़िन्दा करने वाली रूह बना। 46 रुहानी जिस्म
पहले नहीं था बल्कि फ़ित्रती जिस्म, फिर रुहानी
जिस्म हुआ। 47 पहला इन्सान ज़मीन की मिट्टी से बना
था, लेकिन दूसरा आसमान से आया। 48 जैसा पहला
ख़ाकी इन्सान था वैसे ही दीगर ख़ाकी इन्सान भी हैं,
और जैसा आसमान से आया हुआ इन्सान है वैसे ही
दीगर आसमानी इन्सान भी हैं। 49 यूँ हम इस वक़्त
ख़ाकी इन्सान की शक्ल-ओ-सूरत रखते हैं जबकि
हम उस वक़्त आसमानी इन्सान की शक्ल-ओ-सूरत
रखेंगे।

मौत पर फ़त्ह

50 भाइयो, मैं यह कहना चाहता हूँ कि ख़ाकी
इन्सान का मौजूदा जिस्म अल्लाह की बादशाही को
मीरास में नहीं पा सकता। जो कुछ फ़ानी है वह
लाफ़ानी चीज़ों को मीरास में नहीं पा सकता।
51 देखो मैं आप को एक भेद बताता हूँ। हम सब
वफ़ात नहीं पाएँगे, लेकिन सब ही बदल जाएंगे।
52 और यह अचानक, आँख झपकते में, आख़िरी
बिगुल बजते ही रूनुमा होगा। क्यूँकि बिगुल बजने
पर मुर्दे लाफ़ानी हालत में जी उठेंगे और हम बदल
जाएंगे। 53 क्यूँकि लाज़िम है कि यह फ़ानी जिस्म
बक़ा का लिबास पहन ले और मरने वाला जिस्म
अबदी ज़िन्दगी का। 54 जब इस फ़ानी और मरने वाले
जिस्म ने बक़ा और अबदी ज़िन्दगी का लिबास पहन
लिया होगा तो फिर वह कलाम पूरा होगा जो पाक
नविश्तों में लिखा है कि

"मौत इलाही फ़त्ह का लुक़्मा हो गई है।
55 ऐ मौत, तेरी फ़त्ह कहाँ रही?
ए मौत, तेरा डंक कहाँ रहा?"

56 मौत का डंक गुनाह है और गुनाह शरीअत से
तक़वियत पाता है। 57 लेकिन ख़ुदा का शुक्र है जो
हमें हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह के वसीले से फ़त्ह
बख़्शता है।

58 ग़रज़, मेरे प्यारे भाइयो, मज़बूत बने रहें। कोई
चीज़ आप को डाँवाँडोल न कर दे। हमेशा ख़ुदावन्द
की ख़िदमत जाँफ़िशानी से करें, यह जानते हुए कि
ख़ुदावन्द के लिए आप की मेहनत-मशक़्क़त रायगाँ
नहीं जाएगी।

यरूशलम की जमाअत के लिए चन्दा

16 1 रही चन्दे की बात जो यरूशलम के
मुक़द्दसीन के लिए जमा किया जा रहा है
तो उसी हिदायत पर अमल करें जो मैं गलतिया की
जमाअतों को दे चुका हूँ। 2 हर इत्वार को आप में
से हर कोई अपने कमाए हुए पैसों में से कुछ इस
चन्दे के लिए मख़्सूस करके अपने पास रख छोड़े।
फिर मेरे आने पर हदियाजात जमा करने की ज़रूरत
नहीं पड़ेगी। 3 जब मैं आऊँगा तो ऐसे अफ़राद को
जो आप के नज़्दीक क़ाबिल-ए-एतिमाद हैं ख़ुतूत दे
कर यरूशलम भेजूँगा ताकि वह आप का हदिया वहाँ
तक पहुँचा दें। 4 अगर मुनासिब हो कि मैं भी जाऊँ
तो वह मेरे साथ जाएंगे।

5 मैं मकिदुनिया से हो कर आप के पास आऊँगा
क्यूँकि मकिदुनिया में से सफ़र करने का इरादा रखता
हूँ। 6 शायद आप के पास थोड़े अर्से के लिए ठहरूँ,
लेकिन यह भी मुमकिन है कि सर्दियों का मौसम आप
ही के साथ काटूँ ताकि मेरे बाद के सफ़र के लिए
आप मेरी मदद कर सकें। 7 मैं नहीं चाहता कि इस
दफ़ा मुख़्तसर मुलाक़ात के बाद चलता बनूँ, बल्कि
मेरी ख़्वाहिश है कि कुछ वक़्त आप के साथ गुज़ारूँ।
शर्त यह है कि ख़ुदावन्द मुझे इजाज़त दे।

8 लेकिन ईद-ए-पन्तिकुस्त तक मैं इफ़िसुस में ही
ठहरूँगा, 9 क्यूँकि यहाँ मेरे सामने मुअस्सिर काम के
लिए एक बड़ा दरवाज़ा खुल गया है और साथ ही
बहुत से मुख़ालिफ़ भी पैदा हो गए हैं।

10 अगर तीमुथियुस आए तो इस का ख़याल रखें
कि वह बिलाख़ौफ़ आप के पास रह सके। मेरी तरह
वह भी ख़ुदावन्द के खेत में फ़सल काट रहा है।
11 इस लिए कोई उसे हक़ीर न जाने। उसे सलामती
से सफ़र पर रवाना करें ताकि वह मुझ तक पहुँचे,
क्यूँकि मैं और दीगर भाई उस के मुन्तज़िर हैं।

12 भाई अपुल्लोस की मैं ने बड़ी हौसलाअफ़्ज़ाई की
है कि वह दीगर भाइयों के साथ आप के पास आए,
लेकिन अल्लाह को क़तअन मन्ज़ूर न था। ताहम मौक़ा
मिलने पर वह ज़रूर आएगा।

नसीहतें और सलाम

13 जागते रहें, ईमान में साबितक़दम रहें, मर्दानगी
दिखाएँ, मज़बूत बने रहें। 14 सब कुछ मुहब्बत से
करें।

15 भाइयो, मैं एक बात में आप को नसीहत करना
चाहता हूँ। आप जानते हैं कि स्तिफ़नास का घराना
अख़या का पहला फल है और कि उन्हों ने अपने
आप को मुक़द्दसीन की ख़िदमत के लिए वक़्फ़ कर
रखा है। 16 आप ऐसे लोगों के ताबे रहें और साथ ही
हर उस शख़्स के जो उन के साथ ख़िदमत के काम
में जाँफ़िशानी करता है।

17 स्तिफ़नास, फ़ुर्तूनातुस और अख़ीकुस के पहुँचने
पर मैं बहुत ख़ुश हुआ, क्यूँकि उन्हों ने वह कमी
पूरी कर दी जो आप की गैरहाज़िरी से पैदा हुई थी।
18 उन्हों ने मेरी रूह को और साथ ही आप की रूह
को भी ताज़ा किया है। ऐसे लोगों की क़दर करें।

19 आसिया की जमाअतें आप को सलाम कहती
हैं। अक्विला और प्रिस्किल्ला आप को ख़ुदावन्द
में पुरजोश सलाम कहते हैं और उन के साथ वह
जमाअत भी जो उन के घर में जमा होती है। 20 तमाम
भाई आप को सलाम कहते हैं। एक दूसरे को मुक़द्दस
बोसा देते हुए सलाम कहें।

21 यह सलाम मैं यानी पौलुस अपने हाथ से लिखता
हूँ।

22 लानत उस शख़्स पर जो ख़ुदावन्द से मुहब्बत
नहीं रखता।
ऐ हमारे ख़ुदावन्द, आ! 23 ख़ुदावन्द ईसा का फ़ज़्ल
आप के साथ रहे।
24 मसीह ईसा में आप सब को मेरा प्यार।

२-कुरिन्थियों

1 1 यह ख़त पौलुस की तरफ़ से है, जो अल्लाह की
मर्ज़ी से मसीह ईसा का रसूल है। साथ ही यह
भाई तीमुथियुस की तरफ़ से भी है।
मैं कुरिन्थुस में अल्लाह की जमाअत और सूबा
अख़या में मौजूद तमाम मुक़द्दसीन को यह लिख रहा
हूँ।
2 ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावन्द ईसा मसीह आप
को फ़ज़्ल और सलामती अता करें।

अल्लाह की हम्द-ओ-सना

3 हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह के ख़ुदा और बाप
की तम्जीद हो, जो रहम का बाप और तमाम तरह की
तसल्ली का ख़ुदा है। 4 जब भी हम मुसीबत में फंस जाते
हैं तो वह हमें तसल्ली देता है ताकि हम औरों को भी
तसल्ली दे सकें। फिर जब वह किसी मुसीबत से दोचार
होते हैं तो हम भी उन को उसी तरह तसल्ली दे सकते
हैं जिस तरह अल्लाह ने हमें तसल्ली दी है। 5 क्यूँकि
जितनी कस्रत से मसीह की सी मुसीबतें हम पर आ
जाती हैं उतनी कस्रत से अल्लाह मसीह के ज़रीए हमें
तसल्ली देता है। 6 जब हम मुसीबतों से दोचार होते हैं
तो यह बात आप की तसल्ली और नजात का बाइस
बनती है। जब हमारी तसल्ली होती है तो यह आप की
भी तसल्ली का बाइस बनती है। यूँ आप भी सब्र से
वह कुछ बर्दाश्त करने के क़ाबिल बन जाते हैं जो
हम बर्दाश्त कर रहे हैं। 7 चुनाँचे हमारी आप के बारे
में उम्मीद पुख़्ता रहती है। क्यूँकि हम जानते हैं कि
जिस तरह आप हमारी मुसीबतों में शरीक हैं उसी
तरह आप उस तसल्ली में भी शरीक हैं जो हमें हासिल
होती है।
8 भाइयो, हम आप को उस मुसीबत से आगाह
करना चाहते हैं जिस में हम सूबा आसिया में फंस
गए। हम पर दबाओ इतना शदीद था कि उसे बर्दाश्त
करना नामुमकिन सा हो गया और हम जान से हाथ
धो बैठे। 9 हम ने महसूस किया कि हमें सज़ा-ए-मौत
दी गई है। लेकिन यह इस लिए हुआ ताकि हम अपने
आप पर भरोसा न करें बल्कि अल्लाह पर जो मुर्दों को
ज़िन्दा कर देता है। 10 उसी ने हमें ऐसी हैबतनाक
मौत से बचाया और वह आइन्दा भी हमें बचाएगा।
और हम ने उस पर उम्मीद रखी है कि वह हमें एक
बार फिर बचाएगा। 11 आप भी अपनी दुआओं से
हमारी मदद कर रहे हैं। यह कितनी ख़ूबसूरत बात
है कि अल्लाह बहुतों की दुआओं को सुन कर हम
पर मेहरबानी करेगा और नतीजे में बहुतेरे हमारे लिए
शुक्र करेंगे।

पौलुस के मन्सूबों में तब्दीली

12 यह बात हमारे लिए फ़ख़र का बाइस है कि
हमारा ज़मीर साफ़ है। क्यूँकि हम ने अल्लाह के सामने
सादादिली और ख़ुलूस से ज़िन्दगी गुज़ारी है, और हम
ने अपनी इन्सानी हिक्मत पर इन्हिसार नहीं किया
बल्कि अल्लाह के फ़ज़्ल पर। दुनिया में और ख़ासकर
आप के साथ हमारा रवय्या ऐसा ही रहा है। 13 हम
तो आप को ऐसी कोई बात नहीं लिखते जो आप
पढ़ या समझ नहीं सकते। और मुझे उम्मीद है कि
आप को पूरे तौर पर समझ आएगी, 14 अगरचे आप
फ़िलहाल सब कुछ नहीं समझते। क्यूँकि जब आप
को सब कुछ समझ आएगा तब आप ख़ुदावन्द ईसा
के दिन हम पर उतना फ़ख़र कर सकेंगे जितना हम
आप पर।
15 चूँकि मुझे इस का पूरा यक़ीन था इस लिए मैं
पहले आप के पास आना चाहता था ताकि आप को
दुगनी बरकत मिल जाए। 16 ख़याल यह था कि मैं
आप के हाँ से हो कर मकिदुनिया जाऊँ और वहाँ से
आप के पास वापस आऊँ। फिर आप सूबा यहूदिया

के सफ़र के लिए तय्यारियाँ करने में मेरी मदद करके
मुझे आगे भेज सकते थे। 17 आप मुझे बताएँ कि
क्या मैं ने यह मन्सूबा यूँ ही बनाया था? क्या मैं
दुनियावी लोगों की तरह मन्सूबे बना लेता हूँ जो
एक ही लम्हे में "जी हाँ" और "जी नहीं" कहते हैं?
18 लेकिन अल्लाह वफ़ादार है और वह मेरा गवाह है
कि हम आप के साथ बात करते वक़्त "नहीं" को
"हाँ" के साथ नहीं मिलाते। 19 क्यूँकि अल्लाह का
फ़र्ज़न्द ईसा मसीह जिस की मुनादी मैं, सीलास और
तीमुथियुस ने की वह भी ऐसा नहीं है। उस ने कभी भी
"हाँ" को "नहीं" के साथ नहीं मिलाया बल्कि उस में
अल्लाह की हत्मी "जी हाँ" वुजूद में आई। 20 क्यूँकि
वही अल्लाह के तमाम वादों की "हाँ" है। इस लिए
हम उसी के वसीले से "आमीन" (जी हाँ) कह कर
अल्लाह को जलाल देते हैं। 21 और अल्लाह ख़ुद हमें
और आप को मसीह में मज़बूत कर देता है। उसी ने
हमें मसह करके मख़्सूस किया है। 22 उसी ने हम पर
अपनी मुहर लगा कर ज़ाहिर किया है कि हम उस
की मिलकियत हैं और उसी ने हमें रूह-उल-क़ुद्स दे
कर अपने वादों का बैआना अदा किया है।

23 अगर मैं झूट बोलूँ तो अल्लाह मेरे ख़िलाफ़ गवाही
दे। बात यह है कि मैं आप को बचाने के लिए
कुरिन्थुस वापस न आया। 24 मतलब यह नहीं कि
हम ईमान के मुआमले में आप पर हुकूमत करना
चाहते हैं। नहीं, हम आप के साथ मिल कर ख़िदमत
करते हैं ताकि आप ख़ुशी से भर जाएँ, क्यूँकि आप
तो ईमान की मारिफ़त क़ाइम हैं।

2 1 चुनाँचे मैं ने फ़ैसला किया कि मैं दुबारा आप
के पास नहीं आऊँगा, वर्ना आप को बहुत
ग़म खाना पड़ेगा। 2 क्यूँकि अगर मैं आप को दुख
पहुँचाऊँ तो कौन मुझे ख़ुश करेगा? यह वह शख़्स
नहीं करेगा जिसे मैं ने दुख पहुँचाया है। 3 यही वजह है
कि मैं ने आप को यह लिख दिया। मैं नहीं चाहता था
कि आप के पास आ कर उन ही लोगों से ग़म खाऊँ
जिन्हें मुझे ख़ुश करना चाहिए। क्यूँकि मुझे आप सब
के बारे में यक़ीन है कि मेरी ख़ुशी आप सब की
ख़ुशी है। 4 मैं ने आप को निहायत रंजीदा और परेशान
हालत में आँसू बहा बहा कर लिख दिया। मक़्सद यह
नहीं था कि आप ग़मगीन हो जाएँ बल्कि मैं चाहता
था कि आप जान लें कि मैं आप से कितनी गहरी
मुहब्बत रखता हूँ।

मुजरिम को मुआफ़ कर दिया जाए

5 अगर किसी ने दुख पहुँचाया है तो मुझे नहीं बल्कि
किसी हद तक आप सब को (मैं ज़्यादा सख़्ती से बात
नहीं करना चाहता)। 6 लेकिन मज़कूरा शख़्स के लिए
यह काफ़ी है कि उसे जमाअत के अक्सर लोगों ने
सज़ा दी है। 7 अब ज़रूरी है कि आप उसे मुआफ़
करके तसल्ली दें, वर्ना वह ग़म खा खा कर तबाह हो
जाएगा। 8 चुनाँचे मैं इस पर ज़ोर देना चाहता हूँ कि
आप उसे अपनी मुहब्बत का एहसास दिलाएँ। 9 मैं
ने यह मालूम करने के लिए आप को लिखा कि क्या
आप इम्तिहान में पूरे उतरेंगे और हर बात में ताबे
रहेंगे। 10 जिसे आप कुछ मुआफ़ करते हैं उसे मैं भी
मुआफ़ करता हूँ। और जो कुछ मैं ने मुआफ़ किया,
अगर मुझे कुछ मुआफ़ करने की ज़रूरत थी, वह मैं
ने आप की ख़ातिर मसीह के हुज़ूर मुआफ़ किया है
11 ताकि इब्लीस हम से फ़ाइदा न उठाए। क्यूँकि हम
उस की चालों से ख़ूब वाक़िफ़ हैं।

त्रोआस में पौलुस की परेशानी

12 जब मैं मसीह की ख़ुशख़बरी सुनाने के लिए
त्रोआस गया तो ख़ुदावन्द ने मेरे लिए आगे ख़िदमत
करने का एक दरवाज़ा खोल दिया। 13 लेकिन जब
मुझे अपना भाई तितुस वहाँ न मिला तो मैं बेचैन हो
गया और उन्हें ख़ैरबाद कह कर सूबा मकिदुनिया
चला गया।

मसीह में फ़त्ह

14 लेकिन ख़ुदा का शुक्र है! वही हमारे आगे आगे
चलता है और हम मसीह के क़ैदी बन कर उस की
फ़त्ह मनाते हुए उस के पीछे पीछे चलते हैं। यूँ अल्लाह

हमारे वसीले से हर जगह मसीह के बारे में इल्म
ख़ुश्बू की तरह फैलाता है। 15 क्यूँकि हम मसीह की
ख़ुश्बू हैं जो अल्लाह तक पहुँचती है और साथ साथ
लोगों में भी फैलती है, नजात पाने वालों में भी और
हलाक होने वालों में भी। 16 बाज़ लोगों के लिए
हम मौत की मोहलिक बू हैं जबकि बाज़ के लिए
हम ज़िन्दगीबख़्श ख़ुश्बू हैं। तो कौन यह ज़िम्मादारी
निभाने के लाइक़ है? 17 क्यूँकि हम अक्सर लोगों
की तरह अल्लाह के कलाम की तिजारत नहीं करते,
बल्कि यह जान कर कि हम अल्लाह के हुज़ूर में हैं
और उस के भेजे हुए हैं हम ख़ुलूसदिली से लोगों से
बात करते हैं।

नए अह्द के ख़ादिम

3 1 क्या हम दुबारा अपनी ख़ूबियों का ढंडोरा पीट
रहे हैं? या क्या हम बाज़ लोगों की मानिन्द हैं
जिन्हें आप को सिफ़ारिशी ख़त देने या आप से ऐसे
ख़त लिखवाने की ज़रूरत होती है? 2 नहीं, आप तो
ख़ुद हमारा ख़त हैं जो हमारे दिलों पर लिखा हुआ
है। सब इसे पहचान और पढ़ सकते हैं। 3 यह साफ़
ज़ाहिर है कि आप मसीह का ख़त हैं जो उस ने
हमारी ख़िदमत के ज़रीए लिख दिया है। और यह ख़त
सियाही से नहीं बल्कि ज़िन्दा ख़ुदा के रूह से लिखा
गया, पत्थर की तख़्तियों पर नहीं बल्कि इन्सानी
दिलों पर।

4 हम यह इस लिए यक़ीन से कह सकते हैं क्यूँकि
हम मसीह के वसीले से अल्लाह पर एतिमाद रखते हैं।
5 हमारे अन्दर तो कुछ नहीं है जिस की बिना पर हम
दावा कर सकते कि हम यह काम करने के लाइक़ हैं।
नहीं, हमारी लियाक़त अल्लाह की तरफ़ से है। 6 उसी
ने हमें नए अह्द के ख़ादिम होने के लाइक़ बना दिया
है। और यह अह्द लिखी हुई शरीअत पर मब्नी नहीं
है बल्कि रूह पर, क्यूँकि लिखी हुई शरीअत के असर
से हम मर जाते हैं जबकि रूह हमें ज़िन्दा कर देता
है।

7 शरीअत के हुरूफ़ पत्थर की तख़्तियों पर कन्दा
किए गए और जब उसे दिया गया तो अल्लाह का
जलाल ज़ाहिर हुआ। यह जलाल इतना तेज़ था कि
इस्राईली मूसा के चिहरे को लगातार देख न सके।
अगर उस चीज़ का जलाल इतना तेज़ था जो अब
मन्सूख़ है 8 तो क्या रूह के निज़ाम का जलाल इस
से कहीं ज़्यादा नहीं होगा? 9 अगर पुराना निज़ाम जो
हमें मुजरिम ठहराता था जलाली था तो फिर नया
निज़ाम जो हमें रास्तबाज़ क़रार देता है कहीं ज़्यादा
जलाली होगा। 10 हाँ, पहले निज़ाम का जलाल नए
निज़ाम के ज़बरदस्त जलाल की निस्बत कुछ भी नहीं
है। 11 और अगर उस पुराने निज़ाम का जलाल बहुत
था जो अब मन्सूख़ है तो फिर उस नए निज़ाम का
जलाल कहीं ज़्यादा होगा जो क़ाइम रहेगा।

12 पस चूँकि हम ऐसी उम्मीद रखते हैं इस लिए बड़ी
दिलेरी से ख़िदमत करते हैं। 13 हम मूसा की मानिन्द
नहीं हैं जिस ने शरीअत सुनाने के इख़तिताम पर
अपने चिहरे पर निक़ाब डाल लिया ताकि इस्राईली
उसे तकते न रहें जो अब मन्सूख़ है। 14 तो भी वह
ज़हनी तौर पर अड़ गए, क्यूँकि आज तक जब
पुराने अह्दनामे की तिलावत की जाती है तो यही
निक़ाब क़ाइम है। आज तक निक़ाब को हटाया
नहीं गया क्यूँकि यह अह्द सिर्फ़ मसीह में मन्सूख़
होता है। 15 हाँ, आज तक जब मूसा की शरीअत
पढ़ी जाती है तो यह निक़ाब उन के दिलों पर
पड़ा रहता है। 16 लेकिन जब भी कोई ख़ुदावन्द की
तरफ़ रुजू करता है तो यह निक़ाब हटाया जाता है,
17 क्यूँकि ख़ुदावन्द रूह है और जहाँ ख़ुदावन्द का
रूह है वहाँ आज़ादी है। 18 चुनाँचे हम सब जिन के
चिहरों से निक़ाब हटाया गया है ख़ुदावन्द का जलाल
मुनअकिस करते और क़दम-ब-क़दम जलाल पाते
हुए मसीह की सूरत में बदलते जाते हैं। यह ख़ुदावन्द
ही का काम है जो रूह है।

मिट्टी के बर्तनों में रुहानी ख़ज़ाना

4 1 पस चूँकि हमें अल्लाह के रहम से यह ख़िदमत
सौंपी गई है इस लिए हम बेदिल नहीं हो जाते।
2 हम ने छुपी हुई शर्मनाक बातें मुस्तरद कर दी हैं। न
हम चालाकी से काम करते, न अल्लाह के कलाम में
तहरीफ़ करते हैं। बल्कि हमें अपनी सिफ़ारिश की
ज़रूरत भी नहीं, क्यूँकि जब हम अल्लाह के हुज़ूर
लोगों पर हक़ीक़त को ज़ाहिर करते हैं तो हमारी
नेकनामी ख़ुद-ब-ख़ुद हर एक के ज़मीर पर ज़ाहिर
हो जाती है। 3 और अगर हमारी ख़ुशख़बरी निक़ाब
तले छुपी हुई भी हो तो वह सिर्फ़ उन के लिए छुपी
हुई है जो हलाक हो रहे हैं। 4 इस जहान के शरीर
ख़ुदा ने उन के ज़हनों को अंधा कर दिया है जो ईमान
नहीं रखते। इस लिए वह अल्लाह की ख़ुशख़बरी की
जलाली रौशनी नहीं देख सकते। वह यह पैग़ाम नहीं
समझ सकते जो मसीह के जलाल के बारे में है, उस
के बारे में जो अल्लाह की सूरत है। 5 क्यूँकि हम अपना
प्रचार नहीं करते बल्कि ईसा मसीह का पैग़ाम सुनाते
हैं कि वह ख़ुदावन्द है। अपने आप को हम ईसा की
ख़ातिर आप के ख़ादिम क़रार देते हैं। 6 क्यूँकि जिस
ख़ुदा ने फ़रमाया, "अंधेरे में से रौशनी चमके," उस
ने हमारे दिलों में अपनी रौशनी चमकने दी ताकि हम
अल्लाह का वह जलाल जान लें जो ईसा मसीह के
चिहरे से चमकता है।

7 लेकिन हम जिन के अन्दर यह ख़ज़ाना है आम
मिट्टी के बर्तनों की मानिन्द हैं ताकि ज़ाहिर हो कि यह
ज़बरदस्त क़ुव्वत हमारी तरफ़ से नहीं बल्कि अल्लाह
की तरफ़ से है। 8 लोग हमें चारों तरफ़ से दबाते हैं,
लेकिन कोई हमें कुचल कर ख़त्म नहीं कर सकता।
हम उलझन में पड़ जाते हैं, लेकिन उम्मीद का दामन
हाथ से जाने नहीं देते। 9 लोग हमें ईज़ा देते हैं, लेकिन
हमें अकेला नहीं छोड़ा जाता। लोगों के धक्कों से हम
ज़मीन पर गिर जाते हैं, लेकिन हम तबाह नहीं होते।
10 हर वक़्त हम अपने बदन में ईसा की मौत लिए
फिरते हैं ताकि ईसा की ज़िन्दगी भी हमारे बदन में
ज़ाहिर हो जाए। 11 क्यूँकि हर वक़्त हमें ज़िन्दा हालत
में ईसा की ख़ातिर मौत के हवाले कर दिया जाता है
ताकि उस की ज़िन्दगी हमारे फ़ानी बदन में ज़ाहिर
हो जाए। 12 यूँ हम में मौत का असर काम करता है
जबकि आप में ज़िन्दगी का असर।

13 कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है, "मैं ईमान लाया
और इस लिए बोला।" हमें ईमान का यही रूह
हासिल है इस लिए हम भी ईमान लाने की वजह
से बोलते हैं। 14 क्यूँकि हम जानते हैं कि जिस ने
ख़ुदावन्द ईसा को मुर्दों में से ज़िन्दा कर दिया है वह
ईसा के साथ हमें भी ज़िन्दा करके आप लोगों समेत
अपने हुज़ूर खड़ा करेगा। 15 यह सब कुछ आप के
फ़ाइदे के लिए है। यूँ अल्लाह का फ़ज़्ल आगे बढ़ते
बढ़ते मज़ीद बहुत से लोगों तक पहुँच रहा है और
नतीजे में वह अल्लाह को जलाल दे कर शुक्रगुज़ारी
की दुआओं में बहुत इज़ाफ़ा कर रहे हैं।

ईमान की ज़िन्दगी

16 इसी वजह से हम बेदिल नहीं हो जाते। बेशक
ज़ाहिरी तौर पर हम ख़त्म हो रहे हैं, लेकिन अन्दर ही
अन्दर रोज़-ब-रोज़ हमारी तज्दीद होती जा रही है।
17 क्यूँकि हमारी मौजूदा मुसीबत हल्की और पल भर
की है, और वह हमारे लिए एक ऐसा अबदी जलाल
पैदा कर रही है जिस की निस्बत मौजूदा मुसीबत
कुछ भी नहीं। 18 इस लिए हम देखी हुई चीज़ों पर ग़ौर
नहीं करते बल्कि अनदेखी चीज़ों पर। क्यूँकि देखी
हुई चीज़ें आरिज़ी हैं, जबकि अनदेखी चीज़ें अबदी
हैं।

5 1 हम तो जानते हैं कि जब हमारी दुनियावी
झोंपड़ी जिस में हम रहते हैं गिराई जाएगी
तो अल्लाह हमें आसमान पर एक मकान देगा, एक
ऐसा अबदी घर जिसे इन्सानी हाथों ने नहीं बनाया
होगा। 2 इस लिए हम इस झोंपड़ी में कराहते हैं और
आसमानी घर पहन लेने की शदीद आर्ज़ू रखते हैं,
3 क्यूँकि जब हम उसे पहन लेंगे तो हम नंगे नहीं
पाए जाएंगे। 4 इस झोंपड़ी में रहते हुए हम बोझ तले

कराहते हैं। क्यूँकि हम अपना फ़ानी लिबास उतारना
नहीं चाहते बल्कि उस पर आसमानी घर का लिबास
पहन लेना चाहते हैं ताकि ज़िन्दगी वह कुछ निगल
जाए जो फ़ानी है। 5 अल्लाह ने ख़ुद हमें इस मक़्सद के
लिए तय्यार किया है और उसी ने हमें रूह-उल-क़ुद्स
को आने वाले जलाल के बैआने के तौर पर दे दिया
है।

6 चुनाँचे हम हमेशा हौसला रखते हैं। हम जानते
हैं कि जब तक अपने बदन में रिहाइशपज़ीर हैं उस
वक़्त तक ख़ुदावन्द के घर से दूर हैं। 7 हम ज़ाहिरी
चीज़ों पर भरोसा नहीं करते बल्कि ईमान पर चलते
हैं। 8 हाँ, हमारा हौसला बुलन्द है बल्कि हम ज़्यादा
यह चाहते हैं कि अपने जिस्मानी घर से रवाना हो कर
ख़ुदावन्द के घर में रहें। 9 लेकिन ख़्वाह हम अपने
बदन में हों या न, हम इसी कोशिश में रहते हैं कि
ख़ुदावन्द को पसन्द आएँ। 10 क्यूँकि लाज़िम है कि
हम सब मसीह के तख़्त-ए-अदालत के सामने हाज़िर
हो जाएँ। वहाँ हर एक को उस काम का अज्र मिलेगा
जो उस ने अपने बदन में रहते हुए किया है, ख़्वाह
वह अच्छा था या बुरा।

मसीह के वसीले से हमारी अल्लाह के साथ दोस्ती

11 अब हम ख़ुदावन्द के ख़ौफ़ को जान कर लोगों
को समझाने की कोशिश करते हैं। हम तो अल्लाह के
सामने पूरे तौर पर ज़ाहिर हैं। और मैं उम्मीद रखता
हूँ कि हम आप के ज़मीर के सामने भी ज़ाहिर हैं।
12 क्या हम यह बात करके दुबारा अपनी सिफ़ारिश
कर रहे हैं? नहीं, आप को हम पर फ़ख़र करने का
मौक़ा दे रहे हैं ताकि आप उन के जवाब में कुछ कह
सकें जो ज़ाहिरी बातों पर शेख़ी मारते और दिली बातें
नज़रअन्दाज़ करते हैं। 13 क्यूँकि अगर हम बेख़ुद हुए
तो अल्लाह की ख़ातिर, और अगर होश में हैं तो आप
की ख़ातिर। 14 बात यह है कि मसीह की मुहब्बत हमें
मज्बूर कर देती है, क्यूँकि हम इस नतीजे पर पहुँच
गए हैं कि एक सब के लिए मुआ। इस का मतलब
है कि सब ही मर गए हैं। 15 और वह सब के लिए
इस लिए मुआ ताकि जो ज़िन्दा हैं वह अपने लिए
न जिएँ बल्कि उस के लिए जो उन की ख़ातिर मुआ
और फिर जी उठा।

16 इस वजह से हम अब से किसी को भी दुनियावी
निगाह से नहीं देखते। पहले तो हम मसीह को भी
इस ज़ावीए से देखते थे, लेकिन यह वक़्त गुज़र गया
है। 17 चुनाँचे जो मसीह में है वह नया मख़्लूक़ है।
पुरानी ज़िन्दगी जाती रही और नई ज़िन्दगी शुरू हो
गई है। 18 यह सब कुछ अल्लाह की तरफ़ से है जिस ने
मसीह के वसीले से अपने साथ हमारा मेल-मिलाप
कर लिया है। और उसी ने हमें मेल-मिलाप कराने
की ख़िदमत की ज़िम्मादारी दी है। 19 इस ख़िदमत
के तहत हम यह पैग़ाम सुनाते हैं कि अल्लाह ने मसीह
के वसीले से अपने साथ दुनिया की सुलह कराई और
लोगों के गुनाहों को उन के ज़िम्मे न लगाया। सुलह
कराने का यह पैग़ाम उस ने हमारे सपुर्द कर दिया।

20 पस हम मसीह के एलची हैं और अल्लाह हमारे
वसीले से लोगों को समझाता है। हम मसीह के वास्ते
आप से मिन्नत करते हैं कि अल्लाह की सुलह की
पेशकश को क़बूल करें ताकि उस की आप के साथ
सुलह हो जाए। 21 मसीह बेगुनाह था, लेकिन अल्लाह
ने उसे हमारी ख़ातिर गुनाह ठहराया ताकि हमें उस
में रास्तबाज़ क़रार दिया जाए।

6 1 अल्लाह के हमख़िदमत होते हुए हम आप से
मिन्नत करते हैं कि जो फ़ज़्ल आप को मिला
है वह ज़ाए न जाए। 2 क्यूँकि अल्लाह फ़रमाता है,
“क़बूलियत के वक़्त मैं ने तेरी सुनी, नजात के दिन
तेरी मदद की।” सुनें! अब क़बूलियत का वक़्त आ
गया है, अब नजात का दिन है।

3 हम किसी के लिए भी ठोकर का बाइस नहीं
बनते ताकि लोग हमारी ख़िदमत में नुक़्स न निकाल
सकें। 4 हाँ, हमें सिफ़ारिश की ज़रूरत ही नहीं,
क्यूँकि अल्लाह के ख़ादिम होते हुए हम हर हालत
में अपनी नेकनामी ज़ाहिर करते हैं : जब हम सब्र
से मुसीबतें, मुश्किलात और आफ़तें बर्दाश्त करते
हैं, 5 जब लोग हमें मारते और क़ैद में डालते हैं,

जब हम बेकाबू हुजूमों का सामना करते हैं, जब
हम मेहनत-मशक़्क़त करते, रात के वक़्त जागते और
भूके रहते हैं, 6 जब हम अपनी पाकीज़गी, इल्म, सब्र
और मेहरबान सुलूक का इज़हार करते हैं, जब हम
रूह-उल-क़ुद्स के वसीले से हक़ीक़ी मुहब्बत रखते,
7 सच्ची बातें करते और अल्लाह की क़ुदरत से लोगों
की ख़िदमत करते हैं। हम अपनी नेकनामी इस में
भी ज़ाहिर करते हैं कि हम दोनों हाथों से रास्तबाज़ी
के हथियार थामे रखते हैं। 8 हम अपनी ख़िदमत जारी
रखते हैं, चाहे लोग हमारी इज़्ज़त करें चाहे बेइज़्ज़ती,
चाहे वह हमारी बुरी रिपोर्ट दें चाहे अच्छी। अगरचे
हमारी ख़िदमत सच्ची है, लेकिन लोग हमें दग़ाबाज़
क़रार देते हैं। 9 अगरचे लोग हमें जानते हैं तो भी हमें
नज़रअन्दाज़ किया जाता है। हम मरते मरते ज़िन्दा
रहते हैं और लोग हमें मार मार कर क़त्ल नहीं कर
सकते। 10 हम ग़म खा खा कर हर वक़्त ख़ुश रहते
हैं, हम ग़रीब हालत में बहुतों को दौलतमन्द बना
देते हैं। हमारे पास कुछ नहीं है, तो भी हमें सब कुछ
हासिल है।

11 कुरिन्थुस के अज़ीज़ो, हम ने खुल कर आप से
बात की है, हमारा दिल आप के लिए कुशादा हो
गया है। 12 जो जगह हम ने दिल में आप को दी है
वह अब तक कम नहीं हुई। लेकिन आप के दिलों में
हमारे लिए कोई जगह नहीं रही। 13 अब मैं आप से
जो मेरे बच्चे हैं दरख़्वास्त करता हूँ कि जवाब में हमें
भी अपने दिलों में जगह दें।

ग़ैरमसीही असरात से ख़बरदार

14 ग़ैरईमानदारों के साथ मिल कर एक जूए तले
ज़िन्दगी न गुज़ारें, क्यूँकि रास्ती का नारास्ती से
क्या वास्ता है? या रौशनी तारीकी के साथ क्या
ताल्लुक़ रख सकती है? 15 मसीह और इब्लीस के
दरमियान क्या मुताबिक़त हो सकती है? ईमानदार
का ग़ैरईमानदार के साथ क्या वास्ता है? 16 अल्लाह
के मक़्दिस और बुतों में क्या इत्तिफ़ाक़ हो सकता है?
हम तो ज़िन्दा ख़ुदा का घर हैं। अल्लाह ने यूँ फ़रमाया
है,

"मैं उन के दरमियान सुकूनत करूँगा
और उन में फिरूँगा।
मैं उन का ख़ुदा हूँगा,
और वह मेरी क़ौम होंगे।"
17 चुनाँचे रब फ़रमाता है,
"इस लिए उन में से निकल आओ
और उन से अलग हो जाओ।
किसी नापाक चीज़ को न छूना,
तो फिर मैं तुम्हें क़बूल करूँगा।
18 मैं तुम्हारा बाप हूँगा
और तुम मेरे बेटे-बेटियाँ होगे,
रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है।"

7 1 मेरे अज़ीज़ो, यह तमाम वादे हम से किए गए
हैं। इस लिए आएँ, हम अपने आप को हर
उस चीज़ से पाक-साफ़ करें जो जिस्म और रूह
को आलूदा कर देती है। और हम ख़ुदा के ख़ौफ़ में
मुकम्मल तौर पर मुक़द्दस बनने के लिए कोशाँ रहें।

पौलुस की ख़ुशी

2 हमें अपने दिल में जगह दें। न हम ने किसी से
नाइन्साफ़ी की, न किसी को बिगाड़ा या उस से
ग़लत फ़ाइदा उठाया। 3 मैं यह बात आप को मुजरिम
ठहराने के लिए नहीं कह रहा। मैं आप को पहले बता
चुका हूँ कि आप हमें इतने अज़ीज़ हैं कि हम आप
के साथ मरने और जीने के लिए तय्यार हैं। 4 इस लिए
मैं आप से खुल कर बात करता हूँ और मैं आप पर
बड़ा फ़ख़र भी करता हूँ। इस नाते से मुझे पूरी तसल्ली
है, और हमारी तमाम मुसीबतों के बावुजूद मेरी ख़ुशी
की इन्तिहा नहीं।

5 क्यूँकि जब हम मकिदुनिया पहुँचे तो हम जिस्म
के लिहाज़ से आराम न कर सके। मुसीबतों ने हमें
हर तरफ़ से घेर लिया। दूसरों की तरफ़ से झगड़ों
से और दिल में तरह तरह के डर से निपटना पड़ा।
6 लेकिन अल्लाह ने जो दबे हुओं को तसल्ली बख़्शता

है तितुस के आने से हमारी हौसलाअफ़ज़ाई की।
7 हमारा हौसला न सिर्फ़ उस के आने से बढ़ गया
बल्कि उन हौसलाअफ़ज़ा बातों से भी जिन से आप
ने उसे तसल्ली दी। उस ने हमें आप की आर्ज़ू, आप
की आह-ओ-ज़ारी और मेरे लिए आप की सरगर्मी के
बारे में रिपोर्ट दी। यह सुन कर मेरी ख़ुशी मज़ीद बढ़
गई।

8 क्यूँकि अगरचे मैं ने आप को अपने ख़त से दुख
पहुँचाया तो भी मैं पछताता नहीं। पहले तो मैं ख़त
लिखने से पछताया, लेकिन अब मैं देखता हूँ कि जो
दुख उस ने आप को पहुँचाया वह सिर्फ़ आरिज़ी था
9 और उस ने आप को तौबा तक पहुँचाया। यह सुन
कर मैं अब ख़ुशी मनाता हूँ, इस लिए नहीं कि आप
को दुख उठाना पड़ा है बल्कि इस लिए कि इस दुख
ने आप को तौबा तक पहुँचाया। अल्लाह ने यह दुख
अपनी मर्ज़ी पूरी कराने के लिए इस्तेमाल किया, इस
लिए आप को हमारी तरफ़ से कोई नुक़्सान न पहुँचा।
10 क्यूँकि जो दुख अल्लाह अपनी मर्ज़ी पूरी कराने के
लिए इस्तेमाल करता है उस से तौबा पैदा होती है
और उस का अन्जाम नजात है। इस में पछताने की
गुन्जाइश ही नहीं। इस के बरअक्स दुनियावी दुख का
अन्जाम मौत है। 11 आप ख़ुद देखें कि अल्लाह के इस
दुख ने आप में क्या पैदा किया है : कितनी सन्जीदगी,
अपना दिफ़ा करने का कितना जोश, ग़लत हरकतों
पर कितना ग़ुस्सा, कितना ख़ौफ़, कितनी चाहत,
कितनी सरगर्मी। आप सज़ा देने के लिए कितने
तय्यार थे! आप ने हर लिहाज़ से साबित किया है
कि आप इस मुआमले में बेक़ुसूर हैं।

12 ग़रज़, अगरचे मैं ने आप को लिखा, लेकिन
मक़्सद यह नहीं था कि ग़लत हरकतें करने वाले के
बारे में लिखूँ या उस के बारे में जिस के साथ ग़लत
काम किया गया। नहीं, मक़्सद यह था कि अल्लाह के
हुज़ूर आप पर ज़ाहिर हो जाए कि आप हमारे लिए
कितने सरगर्म हैं। 13 यही वजह है कि हमारा हौसला
बढ़ गया है।

लेकिन न सिर्फ़ हमारी हौसलाअफ़ज़ाई हुई है बल्कि
हम यह देख कर बेइन्तिहा ख़ुश हुए कि तितुस कितना
ख़ुश था। वह क्यूँ ख़ुश था? इस लिए कि उस की रूह
आप सब से तर-ओ-ताज़ा हुई। 14 उस के सामने मैं ने
आप पर फ़ख़र किया था, और मैं शर्मिन्दा नहीं हुआ
क्यूँकि यह बात दुरुस्त साबित हुई है। जिस तरह
हम ने आप को हमेशा सच्ची बातें बताई हैं उसी तरह
तितुस के सामने आप पर हमारा फ़ख़र भी दुरुस्त
निकला। 15 आप उसे निहायत अज़ीज़ हैं क्यूँकि वह
आप सब की फ़रमाँबरदारी याद करता है, कि आप
ने डरते और काँपते हुए उसे ख़ुशआमदीद कहा। 16 मैं
ख़ुश हूँ कि मैं हर लिहाज़ से आप पर एतिमाद कर
सकता हूँ।

यहूदिया के ग़रीबों के लिए हदिया

8 1 भाइयो, हम आप की तवज्जुह उस फ़ज़्ल
की तरफ़ दिलाना चाहते हैं जो अल्लाह ने सूबा
मकिदुनिया की जमाअतों पर किया। 2 जिस मुसीबत
में वह फंसे हुए हैं उस से उन की सख़्त आज़माइश
हुई। तो भी उन की बेइन्तिहा ख़ुशी और शदीद
ग़ुर्बत का नतीजा यह निकला कि उन्हों ने बड़ी
फ़य्याज़दिली से हदिया दिया। 3 मैं गवाह हूँ कि
जितना वह दे सके उतना उन्हों ने दे दिया बल्कि
इस से भी ज़्यादा। अपनी ही तरफ़ से 4 उन्हों ने बड़े
ज़ोर से हम से मिन्नत की कि हमें भी यहूदिया के
मुक़द्दसीन की ख़िदमत करने का मौक़ा दें, हम भी
देने के फ़ज़्ल में शरीक होना चाहते हैं। 5 और उन्हों
ने हमारी उम्मीद से कहीं ज़्यादा किया! अल्लाह की
मर्ज़ी से उन का पहला क़दम यह था कि उन्हों ने
अपने आप को ख़ुदावन्द के लिए मख़्सूस किया।
उन का दूसरा क़दम यह था कि उन्हों ने अपने आप
को हमारे लिए मख़्सूस किया। 6 इस पर हम ने तितुस
की हौसलाअफ़ज़ाई की कि वह आप के पास भी
हदिया जमा करने का वह सिलसिला अन्जाम तक
पहुँचाए जो उस ने शुरू किया था। 7 आप के पास
सब कुछ कस्रत से पाया जाता है, ख़्वाह ईमान हो,

ख़्वाह कलाम, इल्म, मुकम्मल सरगर्मी या हम से मुहब्बत हो। अब इस बात का ख़याल रखें कि आप यह हदिया देने में भी अपनी कसीर दौलत का इज़हार करें।

8 मेरी तरफ़ से यह कोई हुक्म नहीं है। लेकिन दूसरों की सरगर्मी के पेश-ए-नज़र मैं आप की भी मुहब्बत परख रहा हूँ कि वह कितनी हक़ीक़ी है। 9 आप तो जानते हैं कि हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह ने आप पर कैसा फ़ज़्ल किया है, कि अगरचे वह दौलतमन्द था तो भी वह आप की ख़ातिर ग़रीब बन गया ताकि आप उस की ग़ुर्बत से दौलतमन्द बन जाएँ।

10 इस मुआमले में मेरा मश्वरा सुनें, क्यूँकि वह आप के लिए मुफ़ीद साबित होगा। पिछले साल आप पहली जमाअत थे जो न सिर्फ़ हदिया देने लगी बल्कि इसे देना भी चाहती थी। 11 अब उसे तक्मील तक पहुँचाएँ जो आप ने शुरू कर रखा है। देने का जो शौक़ आप रखते हैं वह अमल में लाया जाए। उतना दें जितना आप दे सकें। 12 क्यूँकि अगर आप देने का शौक़ रखते हैं तो फिर अल्लाह आप का हदिया उस बिना पर क़बूल करेगा जो आप दे सकते हैं, उस बिना पर नहीं जो आप नहीं दे सकते।

13 कहने का मतलब यह नहीं कि दूसरों को आराम दिलाने के बाइस आप ख़ुद मुसीबत में पड़ जाएँ। बात सिर्फ़ यह है कि लोगों के हालात कुछ बराबर होने चाहिएँ। 14 इस वक़्त तो आप के पास बहुत है और आप उन की ज़रूरत पूरी कर सकते हैं। बाद में किसी वक़्त जब उन के पास बहुत होगा तो वह आप की ज़रूरत भी पूरी कर सकेंगे। यूँ आप के हालात कुछ बराबर रहेंगे, 15 जिस तरह कलाम-ए-मुक़द्दस में भी लिखा है, "जिस ने ज़्यादा जमा किया था उस के पास कुछ न बचा। लेकिन जिस ने कम जमा किया था उस के पास भी काफ़ी था।"

तितुस और उस के साथी

16 ख़ुदा का शुक्र है जिस ने तितुस के दिल में वही जोश पैदा किया है जो मैं आप के लिए रखता हूँ। 17 जब हम ने उस की हौसलाअफ़ज़ाई की कि वह आप के पास जाए तो वह न सिर्फ़ इस के लिए तय्यार हुआ बल्कि बड़ा सरगर्म हो कर ख़ुद-ब-ख़ुद आप के पास जाने के लिए रवाना हुआ। 18 हम ने उस के साथ उस भाई को भेज दिया जिस की ख़िदमत की तारीफ़ तमाम जमाअतें करती हैं, क्यूँकि उसे अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाने की नेमत मिली है। 19 उसे न सिर्फ़ आप के पास जाना है बल्कि जमाअतों ने उसे मुक़र्रर किया है कि जब हम हदिए को यरूशलम ले जाएंगे तो वह हमारे साथ जाए। यूँ हम यह ख़िदमत अदा करते वक़्त ख़ुदावन्द को जलाल देंगे और अपनी सरगर्मी का इज़हार करेंगे।

20 क्यूँकि उस बड़े हदिए के पेश-ए-नज़र जो हम ले जाएंगे हम इस से बचना चाहते हैं कि किसी को हम पर शक करने का मौक़ा मिले। 21 हमारी पूरी कोशिश यह है कि वही कुछ करें जो न सिर्फ़ ख़ुदावन्द की नज़र में दुरुस्त है बल्कि इन्सान की नज़र में भी।

22 उन के साथ हम ने एक और भाई को भी भेज दिया जिस की सरगर्मी हम ने कई मौक़ों पर परखी है। अब वह मज़ीद सरगर्म हो गया है, क्यूँकि वह आप पर बड़ा एतिमाद करता है। 23 जहाँ तक तितुस का ताल्लुक़ है, वह मेरा साथी और हमख़िदमत है। और जो भाई उस के साथ हैं उन्हें जमाअतों ने भेजा है। वह मसीह के लिए इज़्ज़त का बाइस हैं। 24 उन पर अपनी मुहब्बत का इज़हार करके यह ज़ाहिर करें कि हम आप पर क्यूँ फ़ख़र करते हैं। फिर यह बात ख़ुदा की दीगर जमाअतों को भी नज़र आएगी।

मक़द्दसीन की मदद

9 1 असल में इस की ज़रूरत नहीं कि मैं आप को उस काम के बारे में लिखूँ जो हमें यहूदिया के मुक़द्दसीन की ख़िदमत में करना है। 2 क्यूँकि मैं आप की गर्मजोशी जानता हूँ, और मैं मकिदुनिया के ईमानदारों के सामने आप पर फ़ख़र करता रहा हूँ कि "अख़या के लोग पिछले साल से देने के लिए तय्यार थे।" यूँ आप की सरगर्मी ने ज़्यादातर

लोगों को ख़ुद देने के लिए उभारा। 3 अब मैं ने इन
भाइयों को भेज दिया है ताकि हमारा आप पर फ़ख़र
बेबुन्याद न निकले बल्कि जिस तरह मैं ने कहा था
आप तय्यार रहें। 4 ऐसा न हो कि जब मैं मकिदुनिया
के कुछ भाइयों को साथ ले कर आप के पास पहुँचूँगा
तो आप तय्यार न हूँ। उस वक़्त मैं, बल्कि आप
भी शर्मिन्दा होंगे कि मैं ने आप पर इतना एतिमाद
किया है। 5 इस लिए मैं ने इस बात पर ज़ोर देना
ज़रूरी समझा कि भाई पहले ही आप के पास आ कर
उस हदिए का इन्तिज़ाम करें जिस का वादा आप ने
किया है। क्यूँकि मैं चाहता हूँ कि मेरे आने तक यह
हदिया जमा किया गया हो और ऐसा न लगे जैसा इसे
मुश्किल से आप से निकालना पड़ा। इस के बजाय
आप की सख़ावत ज़ाहिर हो जाए।

6 याद रहे कि जो शख़्स बीज को बचा बचा कर
बोता है उस की फ़सल भी उतनी कम होगी। लेकिन
जो बहुत बीज बोता है उस की फ़सल भी बहुत
ज़्यादा होगी। 7 हर एक उतना दे जितना देने के लिए
उस ने पहले अपने दिल में ठहरा लिया है। वह
इस में तक्लीफ़ या मज्बूरी महसूस न करे, क्यूँकि
अल्लाह उस से मुहब्बत रखता है जो ख़ुशी से देता है।
8 और अल्लाह इस क़ाबिल है कि आप को आप की
ज़रूरियात से कहीं ज़्यादा दे। फिर आप के पास हर
वक़्त और हर लिहाज़ से काफ़ी होगा बल्कि इतना
ज़्यादा कि आप हर क़िस्म का नेक काम कर सकेंगे।
9 चुनाँचे कलाम-ए-मुक़द्दस में यह भी लिखा है, "उस
ने फ़य्याज़ी से ज़रूरतमन्दों में ख़ैरात बिखेर दी, उस
की रास्तबाज़ी हमेशा तक क़ाइम रहेगी।" 10 ख़ुदा
ही बीज बोने वाले को बीज मुहय्या करता और उसे
खाने के लिए रोटी देता है। और वह आप को भी
बीज दे कर उस में इज़ाफ़ा करेगा और आप की
रास्तबाज़ी की फ़सल उगने देगा। 11 हाँ, वह आप
को हर लिहाज़ से दौलतमन्द बना देगा और आप
हर मौक़े पर फ़य्याज़ी से दे सकेंगे। चुनाँचे जब हम
आप का हदिया उन के पास ले जाएंगे जो ज़रूरतमन्द
हैं तो वह ख़ुदा का शुक्र करेंगे। 12 यूँ आप न सिर्फ़
मुक़द्दसीन की ज़रूरियात पूरी करेंगे बल्कि वह आप
की इस ख़िदमत से इतने मुतअस्सिर हो जाएंगे कि
वह बड़े जोश से ख़ुदा का भी शुक्रिया अदा करेंगे।
13 आप की ख़िदमत के नतीजे में वह अल्लाह को
जलाल देंगे। क्यूँकि आप की उन पर और तमाम
ईमानदारों पर सख़ावत का इज़हार साबित करेगा कि
आप मसीह की ख़ुशख़बरी न सिर्फ़ तस्लीम करते हैं
बल्कि उस के ताबे भी रहते हैं। 14 और जब वह आप
के लिए दुआ करेंगे तो आप के आरज़ूमन्द रहेंगे, इस
लिए कि अल्लाह ने आप को कितना बड़ा फ़ज़्ल दे
दिया है। 15 अल्लाह का उस की नाक़ाबिल-ए-बयान
बख़्शिश के लिए शुक्र हो!

पौलुस अपनी ख़िदमत का दिफ़ा करता है

10 1 मैं आप से अपील करता हूँ, मैं पौलुस
जिस के बारे में कहा जाता है कि मैं आप
के रू-ब-रू आजिज़ होता हूँ और सिर्फ़ आप से दूर हो
कर दिलेर होता हूँ। मसीह की हलीमी और नर्मी के
नाम में 2 मैं आप से मिन्नत करता हूँ कि मुझे आप के
पास आ कर इतनी दिलेरी से उन लोगों से निपटना न
पड़े जो समझते हैं कि हमारा चाल-चलन दुनियावी है।
क्यूँकि फ़िलहाल ऐसा लगता है कि इस की ज़रूरत
होगी। 3 बेशक हम इन्सान ही हैं, लेकिन हम दुनिया
की तरह जंग नहीं लड़ते। 4 और जो हथियार हम इस
जंग में इस्तेमाल करते हैं वह इस दुनिया के नहीं हैं,
बल्कि उन्हें अल्लाह की तरफ़ से क़िले ढा देने की
क़ुव्वत हासिल है। इन से हम ग़लत ख़यालात के
ढाँचे 5 और हर ऊँची चीज़ ढा देते हैं जो अल्लाह के
इल्म-ओ-इर्फ़ान के ख़िलाफ़ खड़ी हो जाती है। और
हम हर ख़याल को क़ैद करके मसीह के ताबे कर देते
हैं। 6 हाँ, आप के पूरे तौर पर ताबे हो जाने पर हम
हर नाफ़रमानी की सज़ा देने के लिए तय्यार होंगे।

7 आप सिर्फ़ ज़ाहिरी बातों पर ग़ौर कर रहे हैं। अगर
किसी को इस बात का एतिमाद हो कि वह मसीह का
है तो वह इस का भी ख़याल करे कि हम भी उसी की
तरह मसीह के हैं। 8 क्यूँकि अगर मैं उस इख़तियार

पर मज़ीद फ़ख़र भी करूँ जो ख़ुदावन्द ने हमें दिया
है तो भी मैं शर्मिन्दा नहीं हूँगा। ग़ौर करें कि उस ने
हमें आप को ढा देने का नहीं बल्कि आप की रुहानी
तामीर करने का इख़तियार दिया है। 9 मैं नहीं चाहता
कि ऐसा लगे जैसे मैं आप को अपने ख़तों से डराने
की कोशिश कर रहा हूँ। 10 क्यूँकि बाज़ कहते हैं,
"पौलुस के ख़त ज़ोरदार और ज़बरदस्त हैं, लेकिन
जब वह ख़ुद हाज़िर होता है तो वह कमज़ोर और उस
के बोलने का तर्ज़ हिक़ारतआमेज़ है।" 11 ऐसे लोग
इस बात का ख़याल करें कि जो बातें हम आप से
दूर होते हुए अपने ख़तों में पेश करते हैं उन ही बातों
पर हम अमल करेंगे जब आप के पास आएँगे।

12 हम तो अपने आप को उन में शुमार नहीं करते
जो अपनी तारीफ़ करके अपनी सिफ़ारिश करते रहते
हैं, न अपना उन के साथ मुवाज़ना करते हैं। वह
कितने बेसमझ हैं जब वह अपने आप को मेयार
बना कर उसी पर अपने आप को जाँचते हैं और
अपना मुवाज़ना अपने आप से करते हैं। 13 लेकिन
हम मुनासिब हद से ज़्यादा फ़ख़र नहीं करेंगे बल्कि
सिर्फ़ उस हद तक जो अल्लाह ने हमारे लिए मुक़र्रर
किया है। और आप भी इस हद के अन्दर आ जाते हैं।
14 इस में हम मुनासिब हद से ज़्यादा फ़ख़र नहीं कर
रहे, क्यूँकि हम तो मसीह की ख़ुशख़बरी ले कर आप
तक पहुँच गए हैं। अगर ऐसा न होता तो फिर और
बात होती। 15 हम ऐसे काम पर फ़ख़र नहीं करते जो
दूसरों की मेहनत से सरअन्जाम दिया गया है। इस में
भी हम मुनासिब हद्दों के अन्दर रहते हैं, बल्कि हम
यह उम्मीद रखते हैं कि आप का ईमान बढ़ जाए और
यूँ हमारी क़दर-ओ-क़ीमत भी अल्लाह की मुक़र्ररा हद
तक बढ़ जाए। ख़ुदा करे कि आप में हमारा यह काम
इतना बढ़ जाए 16 कि हम अल्लाह की ख़ुशख़बरी आप
से आगे जा कर भी सुना सकें। क्यूँकि हम उस काम
पर फ़ख़र नहीं करना चाहते जिसे दूसरे कर चुके हैं।

17 कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है, "फ़ख़र करने
वाला ख़ुदावन्द ही पर फ़ख़र करे।" 18 जब लोग
अपनी तारीफ़ करके अपनी सिफ़ारिश करते हैं तो
इस में क्या है! इस से वह सहीह साबित नहीं होते,
बल्कि अहम बात यह है कि ख़ुदावन्द ही इस की
तस्दीक़ करे।

पौलुस और झूटे रसूल

11 1 ख़ुदा करे कि जब मैं अपनी हमाक़त का
कुछ इज़हार करता हूँ तो आप मुझे बर्दाश्त
करें। हाँ, ज़रूर मुझे बर्दाश्त करें, 2 क्यूँकि मैं आप
के लिए अल्लाह की सी ग़ैरत रखता हूँ। मैं ने आप
का रिश्ता एक ही मर्द के साथ बांधा, और मैं आप
को पाकदामन कुंवारी की हैसियत से उस मर्द मसीह
के हुज़ूर पेश करना चाहता था। 3 लेकिन अफ़सोस,
मुझे डर है कि आप हव्वा की तरह गुनाह में गिर
जाएंगे, कि जिस तरह साँप ने अपनी चालाकी से
हव्वा को धोका दिया उसी तरह आप की सोच भी
बिगड़ जाएगी और वह ख़ुलूसदिली और पाक लगन
ख़त्म हो जाएगी जो आप मसीह के लिए महसूस करते
हैं। 4 क्यूँकि आप ख़ुशी से हर एक को बर्दाश्त करते
हैं जो आप के पास आ कर एक फ़र्क़ क़िस्म का
ईसा पेश करता है, एक ऐसा ईसा जो हम ने आप को
पेश नहीं किया था। और आप एक ऐसी रूह और
ऐसी "ख़ुशख़बरी" क़बूल करते हैं जो उस रूह और
ख़ुशख़बरी से बिलकुल फ़र्क़ है जो आप को हम से
मिली थी।

5 मेरा नहीं ख़याल कि मैं इन नाम-निहाद 'ख़ास'
रसूलों की निस्बत कम हूँ। 6 हो सकता है कि मैं
बोलने में माहिर नहीं हूँ, लेकिन यह मेरे इल्म के बारे
में नहीं कहा जा सकता। यह हम ने आप को साफ़
साफ़ और हर लिहाज़ से दिखाया है।

7 मैं ने अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाने के लिए आप
से कोई भी मुआवज़ा न लिया। यूँ मैं ने अपने आप
को नीचा कर दिया ताकि आप को सरफ़राज़ कर
दिया जाए। क्या इस में मुझ से ग़लती हुई? 8 जब
मैं आप की ख़िदमत कर रहा था तो मुझे ख़ुदा की
दीगर जमाअतों से पैसे मिल रहे थे, यानी आप की
मदद करने के लिए मैं उन्हें लूट रहा था। 9 और जब

मैं आप के पास था और ज़रूरतमन्द था तो मैं किसी
पर बोझ न बना, क्यूँकि जो भाई मकिदुनिया से आए
उन्हों ने मेरी ज़रूरियात पूरी कीं। माज़ी में मैं आप पर
बोझ न बना और आइन्दा भी नहीं बनूँगा। 10 मसीह
की उस सच्चाई की क़सम जो मेरे अन्दर है, अख़या
के पूरे सूबे में कोई मुझे इस पर फ़ख़र करने से नहीं
रोकेगा। 11 मैं यह क्यूँ कह रहा हूँ? इस लिए कि मैं
आप से मुहब्बत नहीं रखता? ख़ुदा ही जानता है कि
मैं आप से मुहब्बत रखता हूँ।

12 और जो कुछ मैं अब कर रहा हूँ वही करता
रहूँगा, ताकि मैं नाम-निहाद रसूलों को वह मौक़ा न दूँ
जो वह ढूँड रहे हैं। क्यूँकि यही उन का मक़सद है कि
वह फ़ख़र करके यह कह सकें कि वह हम जैसे हैं।
13 ऐसे लोग तो झूटे रसूल हैं, धोकेबाज़ मज़दूर जिन्हों
ने मसीह के रसूलों का रूप धार लिया है। 14 और
क्या अजब, क्यूँकि इब्लीस भी नूर के फ़रिश्ते का
रूप धार कर घूमता फिरता है। 15 तो फिर यह बड़ी
बात नहीं कि उस के चेले रास्तबाज़ी के ख़ादिम का
रूप धार कर घूमते फिरते हैं। उन का अन्जाम उन के
आमाल के मुताबिक़ ही होगा।

रसूल होने की वजह से पौलुस की ईज़ारसानी

16 मैं दुबारा कहता हूँ कि कोई मुझे अहमक़ न
समझे। लेकिन अगर आप यह सोचें भी तो कम
अज़ कम मुझे अहमक़ की हैसियत से क़बूल करें
ताकि मैं भी थोड़ा बहुत अपने आप पर फ़ख़र करूँ।
17 असल में जो कुछ मैं अब बयान कर रहा हूँ वह
ख़ुदावन्द को पसन्द नहीं है, बल्कि मैं अहमक़ की
तरह बात कर रहा हूँ। 18 लेकिन चूँकि इतने लोग
जिस्मानी तौर पर फ़ख़र कर रहे हैं इस लिए मैं भी
फ़ख़र करूँगा। 19 बेशक आप ख़ुद इतने दानिशमन्द
हैं कि आप अहमक़ों को ख़ुशी से बर्दाश्त करते
हैं। 20 हाँ, बल्कि आप यह भी बर्दाश्त करते हैं जब
लोग आप को ग़ुलाम बनाते, आप को लूटते, आप
से ग़लत फ़ाइदा उठाते, नख़रे करते और आप को
थप्पड़ मारते हैं। 21 यह कह कर मुझे शर्म आती है
कि हम इतने कमज़ोर थे कि हम ऐसा न कर सके।

लेकिन अगर कोई किसी बात पर फ़ख़र करने की
जुरअत करे (मैं अहमक़ की सी बात कर रहा हूँ) तो
मैं भी उतनी ही जुरअत करूँगा। 22 क्या वह इब्रानी
हैं? मैं भी हूँ। क्या वह इस्राईली हैं? मैं भी हूँ। क्या
वह इब्राहीम की औलाद हैं? मैं भी हूँ। 23 क्या वह
मसीह के ख़ादिम हैं? (अब तो मैं गोया बेख़ुद हो
गया हूँ कि इस तरह की बातें कर रहा हूँ!) मैं उन
से ज़्यादा मसीह की ख़िदमत करता हूँ। मैं ने उन से
कहीं ज़्यादा मेहनत-मशक़्क़त की, ज़्यादा दफ़ा जेल
में रहा, मेरे ज़्यादा सख़्ती से कोड़े लगाए गए और मैं
बार बार मरने के खतरों में रहा हूँ। 24 मुझे यहूदियों
से पाँच दफ़ा 39 कोड़ों की सज़ा मिली है। 25 तीन
दफ़ा रोमियों ने मुझे लाठी से मारा। एक बार मुझे
संगसार किया गया। जब मैं समुन्दर में सफ़र कर
रहा था तो तीन मर्तबा मेरा जहाज़ तबाह हुआ। हाँ,
एक दफ़ा मुझे जहाज़ के तबाह होने पर एक पूरी रात
और दिन समुन्दर में गुज़ारना पड़ा। 26 मेरे बेशुमार
सफ़रों के दौरान मुझे कई तरह के खतरों का सामना
करना पड़ा, दरयाओं और डाकुओं का ख़तरा, अपने
हमवतनों और ग़ैरयहूदियों के हम्लों का ख़तरा। जहाँ
भी मैं गया हूँ वहाँ यह ख़तरे मौजूद रहे, ख़्वाह मैं
शहर में था, ख़्वाह ग़ैरआबाद इलाक़े में या समुन्दर
में। झूटे भाइयों की तरफ़ से भी ख़तरे रहे हैं। 27 मैं
ने जाँफ़िशानी से सख़्त मेहनत-मशक़्क़त की है और
कई रात जागता रहा हूँ, मैं भूका और प्यासा रहा हूँ,
मैं ने बहुत रोज़े रखे हैं। मुझे सर्दी और नंगेपन का
तजरिबा हुआ है। 28 और यह उन फ़िक्रों के इलावा
है जो मैं ख़ुदा की तमाम जमाअतों के लिए महसूस
करता हूँ और जो मुझे दबाती रहती हैं। 29 जब कोई
कमज़ोर है तो मैं अपने आप को भी कमज़ोर महसूस
करता हूँ। जब किसी को ग़लत राह पर लाया जाता
है तो मैं उस के लिए शदीद रंजिश महसूस करता हूँ।

30 अगर मुझे फ़ख़र करना पड़े तो मैं उन चीज़ों पर
फ़ख़र करूँगा जो मेरी कमज़ोर हालत ज़ाहिर करती

हैं। 31 हमारा ख़ुदा और ख़ुदावन्द ईसा का बाप (उस
की हम्द-ओ-सना अबद तक हो) जानता है कि मैं
झूट नहीं बोल रहा। 32 जब मैं दमिश्क़ शहर में था
तो बादशाह अरितास के गवर्नर ने शहर के तमाम
दरवाज़ों पर अपने पहरेदार मुक़र्रर किए ताकि वह
मुझे गिरिफ़्तार करें। 33 लेकिन शहर की फ़सील में
एक दरीचा था, और मुझे एक टोकरे में रख कर वहाँ
से उतारा गया। यूँ मैं उस के हाथों से बच निकला।

पौलुस पर कई बातों का इन्किशाफ़

12 1 लाज़िम है कि मैं कुछ और फ़ख़र करूँ।
अगरचे इस का कोई फ़ाइदा नहीं, लेकिन
अब मैं उन रोयाओं और इन्किशाफ़ात का ज़िक्र
करूँगा जो ख़ुदावन्द ने मुझ पर ज़ाहिर किए। 2 मैं
मसीह में एक आदमी को जानता हूँ जिसे चौदह साल
हुए छीन कर तीसरे आसमान तक पहुँचाया गया। मुझे
नहीं पता कि उसे यह तजरिबा जिस्म में या इस के
बाहर हुआ। ख़ुदा जानता है। 3 हाँ, ख़ुदा ही जानता है
कि वह जिस्म में था या नहीं। लेकिन यह मैं जानता
हूँ 4 कि उसे छीन कर फ़िर्दौस में लाया गया जहाँ उस
ने नाक़ाबिल-ए-बयान बातें सुनीं, ऐसी बातें जिन का
ज़िक्र करना इन्सान के लिए रवा नहीं। 5 इस क़िस्म
के आदमी पर मैं फ़ख़र करूँगा, लेकिन अपने आप
पर नहीं। मैं सिर्फ़ उन बातों पर फ़ख़र करूँगा जो मेरी
कमज़ोर हालत को ज़ाहिर करती हैं। 6 अगर मैं फ़ख़र
करना चाहता तो इस में अहमक़ न होता, क्यूँकि मैं
हक़ीक़त बयान करता। लेकिन मैं यह नहीं करूँगा,
क्यूँकि मैं चाहता हूँ कि सब की मेरे बारे में राय सिर्फ़
उस पर मुन्हसिर हो जो मैं करता या बयान करता हूँ।
कोई मुझे इस से ज़्यादा न समझे।

7 लेकिन मुझे इन आला इन्किशाफ़ात की वजह से
एक काँटा चुभो दिया गया, एक तक्लीफ़दिह चीज़
जो मेरे जिस्म में धंसी रहती है ताकि मैं फूल न जाऊँ।
इब्लीस का यह पैग़म्बर मेरे मुक्के मारता रहता है ताकि
मैं मग़रूर न हो जाऊँ। 8 तीन बार मैं ने ख़ुदावन्द से
इल्तिजा की कि वह इसे मुझ से दूर करे। 9 लेकिन
उस ने मुझे यही जवाब दिया, "मेरा फ़ज़्ल तेरे लिए
काफ़ी है, क्यूँकि मेरी क़ुदरत का पूरा इज़हार तेरी
कमज़ोर हालत ही में होता है।" इस लिए मैं मज़ीद
ख़ुशी से अपनी कमज़ोरियों पर फ़ख़र करूँगा ताकि
मसीह की क़ुदरत मुझ पर ठहरी रहे। 10 यही वजह
है कि मैं मसीह की ख़ातिर कमज़ोरियों, गालियों,
मज्बूरियों, ईज़ारसानियों और परेशानियों में ख़ुश हूँ,
क्यूँकि जब मैं कमज़ोर होता हूँ तब ही मैं ताक़तवर
होता हूँ।

पौलुस की कुरिन्थियों के लिए फ़िक्र

11 मैं बेवुक़ूफ़ बन गया हूँ, लेकिन आप ने मुझे
मज्बूर कर दिया है। चाहिए था कि आप ही दूसरों
के सामने मेरे हक़ में बात करते। क्यूँकि बेशक मैं
कुछ भी नहीं हूँ, लेकिन इन नाम-निहाद ख़ास रसूलों
के मुक़ाबले में मैं किसी भी लिहाज़ से कम नहीं
हूँ। 12 जो मुतअद्दिद इलाही निशान, मोजिज़े और
ज़बरदस्त काम मेरे वसीले से हुए वह साबित करते हैं
कि मैं रसूल हूँ। हाँ, वह बड़ी साबितक़दमी से आप
के दरमियान किए गए। 13 जो ख़िदमत मैं ने आप के
दरमियान की, क्या वह ख़ुदा की दीगर जमाअतों में
मेरी ख़िदमत की निस्बत कम थी? हरगिज़ नहीं! इस
में फ़र्क़ सिर्फ़ यह था कि मैं आप के लिए माली बोझ
न बना। मुझे मुआफ़ करें अगर मुझ से इस में ग़लती
हुई है।

14 अब मैं तीसरी बार आप के पास आने के लिए
तय्यार हूँ। इस मर्तबा भी मैं आप के लिए बोझ का
बाइस नहीं बनूँगा, क्यूँकि मैं आप का माल नहीं
बल्कि आप ही को चाहता हूँ। आख़िर बच्चों को माँ-
बाप की मदद के लिए माल जमा नहीं करना चाहिए
बल्कि माँ-बाप को बच्चों के लिए। 15 मैं तो बड़ी ख़ुशी
से आप के लिए हर ख़र्चा उठा लूँगा बल्कि अपने
आप को भी ख़र्च कर दूँगा। क्या आप मुझे कम प्यार
करेंगे अगर मैं आप से ज़्यादा मुहब्बत रखूँ?

16 ठीक है, मैं आप के लिए बोझ न बना। लेकिन
बाज़ सोचते हैं कि मैं चालाक हूँ और आप को धोके

से अपने जाल में फंसा लिया। 17 किस तरह? जिन
लोगों को मैं ने आप के पास भेजा क्या मैं ने उन में
से किसी के ज़रीए आप से ग़लत फ़ाइदा उठाया?
18 मैं ने तितुस की हौसलाअफ़्ज़ाई की कि वह आप
के पास जाए और दूसरे भाई को भी साथ भेज दिया।
क्या तितुस ने आप से ग़लत फ़ाइदा उठाया? हरगिज़
नहीं! क्यूँकि हम दोनों एक ही रूह में एक ही राह पर
चलते हैं।

19 आप काफ़ी देर से सोच रहे होंगे कि हम आप
के सामने अपना दिफ़ा कर रहे हैं। लेकिन ऐसा नहीं
है बल्कि हम मसीह में होते हुए अल्लाह के हुज़ूर ही
यह कुछ बयान कर रहे हैं। और मेरे अज़ीज़ो, जो
कुछ भी हम करते हैं हम आप की तामीर करने के
लिए करते हैं। 20 मुझे डर है कि जब मैं आऊँगा
तो न आप की हालत मुझे पसन्द आएगी, न मेरी
हालत आप को। मुझे डर है कि आप में झगड़ा,
हसद, ग़ुस्सा, ख़ुदग़रज़ी, बुह्तान, गपबाजी, ग़ुरूर
और बेतर्तीबी पाई जाएगी। 21 हाँ, मुझे डर है कि
अगली दफ़ा जब आऊँगा तो अल्लाह मुझे आप के
सामने नीचा दिखाएगा, और मैं उन बहुतों के लिए
ग़म खाऊँगा जिन्हों ने माज़ी में गुनाह करके अब तक
अपनी नापाकी, ज़िनाकारी और अय्याशी से तौबा
नहीं की।

आख़िरी तम्बीह और सलाम

13 1 अब मैं तीसरी दफ़ा आप के पास आ रहा
हूँ। कलाम-ए-मुक़द्दस के मुताबिक़ लाज़िम
है कि हर इल्ज़ाम की तस्दीक़ दो या तीन गवाहों से
की जाए। 2 जब मैं दूसरी दफ़ा आप के पास आया
था तो मैं ने पहले से आप को आगाह किया था। अब
मैं आप से दूर यह बात दुबारा कहता हूँ कि जब मैं
वापस आऊँगा तो न वह बचेंगे जिन्हों ने पहले गुनाह
किया था न दीगर लोग। 3 जो भी सबूत आप माँग रहे
हैं कि मसीह मेरे ज़रीए बोलता है वह मैं आप को
दूँगा। आप के साथ सुलूक में मसीह कमज़ोर नहीं
है। नहीं, वह आप के दरमियान ही अपनी क़ुव्वत
का इज़हार करता है। 4 क्यूँकि अगरचे उसे कमज़ोर
हालत में मस्लूब किया गया, लेकिन अब वह अल्लाह
की क़ुदरत से ज़िन्दा है। इसी तरह हम भी उस में
कमज़ोर हैं, लेकिन अल्लाह की क़ुदरत से हम आप
की ख़िदमत करते वक़्त उस के साथ ज़िन्दा हैं।

5 अपने आप को जाँच कर मालूम करें कि क्या
आप का ईमान क़ाइम है? ख़ुद अपने आप को परखें।
क्या आप नहीं जानते कि ईसा मसीह आप में है?
अगर नहीं तो इस का मतलब होता कि आप का
ईमान नामक़्बूल साबित होता। 6 लेकिन मुझे उम्मीद
है कि आप इतना पहचान लेंगे कि जहाँ तक हमारा
ताल्लुक़ है हम नामक़्बूल साबित नहीं हुए हैं। 7 हम
अल्लाह से दुआ करते हैं कि आप से कोई ग़लती न
हो जाए। बात यह नहीं कि लोगों के सामने हम सहीह
निकलें बल्कि यह कि आप सहीह काम करें, चाहे
लोग हमें ख़ुद नाकाम क्यूँ न क़रार दें। 8 क्यूँकि हम
हक़ीक़त के ख़िलाफ़ खड़े नहीं हो सकते बल्कि सिर्फ़
उस के हक़ में। 9 हम ख़ुश हैं जब आप ताक़तवर
हैं गो हम ख़ुद कमज़ोर हैं। और हमारी दुआ यह है
कि आप कामिल हो जाएँ। 10 यही वजह है कि मैं
आप से दूर रह कर लिखता हूँ। फिर जब मैं आऊँगा
तो मुझे अपना इख़तियार इस्तेमाल करके आप पर
सख़्ती नहीं करनी पड़ेगी। क्यूँकि ख़ुदावन्द ने मुझे
यह इख़तियार आप को ढा देने के लिए नहीं बल्कि
आप को तामीर करने के लिए दिया है।

11 भाइयो, आख़िर में मैं आप को सलाम कहता हूँ।
सुधर जाएँ, एक दूसरे की हौसलाअफ़्ज़ाई करें, एक
ही सोच रखें और सुलह-सलामती के साथ ज़िन्दगी
गुज़ारें। फिर मुहब्बत और सलामती का ख़ुदा आप
के साथ होगा।

12 एक दूसरे को मुक़द्दस बोसा देना। तमाम
मुक़द्दसीन आप को सलाम कहते हैं।

13 ख़ुदावन्द ईसा मसीह का फ़ज़्ल, अल्लाह की
मुहब्बत और रूह-उल-क़ुद्स की रिफ़ाक़त आप सब
के साथ होती रहे।

गलतियों

1 [1] यह ख़त पौलुस रसूल की तरफ़ से है। मुझे न
किसी गुरोह ने मुक़र्रर किया न किसी शख़्स ने
बल्कि ईसा मसीह और ख़ुदा बाप ने जिस ने उसे मुर्दों
में से ज़िन्दा कर दिया। [2] तमाम भाई भी जो मेरे साथ
हैं गलतिया की जमाअतों को सलाम कहते हैं।

[3] ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावन्द ईसा मसीह आप
को फ़ज़्ल और सलामती अता करें।

[4] मसीह वही है जिस ने अपने आप को हमारे गुनाहों
की ख़ातिर क़ुर्बान कर दिया और यूँ हमें इस मौजूदा
शरीर जहान से बचा लिया है, क्यूँकि यह अल्लाह हमारे
बाप की मर्ज़ी थी। [5] उसी का जलाल अबद तक होता
रहे! आमीन।

एक ही ख़ुशख़बरी

[6] मैं हैरान हूँ! आप इतनी जल्दी से उसे तर्क कर रहे
हैं जिस ने मसीह के फ़ज़्ल से आप को बुलाया। और
अब आप एक फ़र्क़ क़िस्म की "ख़ुशख़बरी" के पीछे
लग गए हैं। [7] असल में यह अल्लाह की ख़ुशख़बरी है
नहीं। बस कुछ लोग आप को उलझन में डाल कर
मसीह की ख़ुशख़बरी में तब्दीली लाना चाहते हैं।
[8] हम ने तो असली ख़ुशख़बरी सुनाई और जो इस से
फ़र्क़ पैग़ाम सुनाता है उस पर लानत, ख़्वाह हम ख़ुद
ऐसा करें ख़्वाह आसमान से कोई फ़रिश्ता उतर कर
यह ग़लत पैग़ाम सुनाए। [9] हम यह पहले बयान कर
चुके हैं और अब मैं दुबारा कहता हूँ कि अगर कोई
आप को ऐसी "ख़ुशख़बरी" सुनाए जो उस से फ़र्क़
है जिसे आप ने क़बूल किया है तो उस पर लानत!

[10] क्या मैं इस में यह कोशिश कर रहा हूँ कि लोग
मुझे क़बूल करें? हरगिज़ नहीं! मैं चाहता हूँ कि
अल्लाह मुझे क़बूल करे। क्या मेरी कोशिश यह है कि
मैं लोगों को पसन्द आऊँ? अगर मैं अब तक ऐसा
करता तो मसीह का ख़ादिम न होता।

पौलुस किस तरह रसूल बन गया

[11] भाइयो, मैं चाहता हूँ कि आप जान लें कि जो
ख़ुशख़बरी मैं ने सुनाई वह इन्सान की तरफ़ से नहीं
है। [12] न मुझे यह पैग़ाम किसी इन्सान से मिला, न
यह मुझे किसी ने सिखाया है बल्कि ईसा मसीह ने
ख़ुद मुझ पर यह पैग़ाम ज़ाहिर किया।

[13] आप ने तो ख़ुद सुन लिया है कि मैं उस वक़्त
किस तरह ज़िन्दगी गुज़ारता था जब यहूदी मज़्हब
का पैरोकार था। उस वक़्त मैं ने कितने जोश और
शिद्दत से अल्लाह की जमाअत को ईज़ा पहुँचाई।
मेरी पूरी कोशिश यह थी कि यह जमाअत ख़त्म हो
जाए। [14] यहूदी मज़्हब के लिहाज़ से मैं अक्सर दीगर
हमउम्र यहूदियों पर सब्क़त ले गया था। हाँ, मैं अपने
बापदादा की रिवायतों की पैरवी में हद से ज़्यादा
सरगर्म था।

[15] लेकिन अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से मुझे पैदा होने
से पेशतर ही चुन कर अपनी ख़िदमत करने के लिए
बुलाया। और जब उस ने अपनी मर्ज़ी से [16] अपने
फ़र्ज़न्द को मुझ पर ज़ाहिर किया ताकि मैं उस के
बारे में ग़ैरयहूदियों को ख़ुशख़बरी सुनाऊँ तो मैं ने
किसी भी शख़्स से मश्वरा न लिया। [17] उस वक़्त मैं
यरूशलम भी न गया ताकि उन से मिलूँ जो मुझ से
पहले रसूल थे बल्कि मैं सीधा अरब चला गया और
बाद में दमिश्क़ वापस आया। [18] इस के तीन साल
बाद ही मैं पतरस से शनासा होने के लिए यरूशलम
गया। वहाँ मैं पंद्रह दिन उस के साथ रहा। [19] इस के
इलावा मैं ने सिर्फ़ ख़ुदावन्द के भाई याक़ूब को देखा,
किसी और रसूल को नहीं।

[20] जो कुछ मैं लिख रहा हूँ अल्लाह गवाह है कि वह
सहीह है। मैं झूट नहीं बोल रहा।

21 बाद में मैं मुल्क-ए-शाम और किलिकिया चला
गया। 22 उस वक़्त सूबा यहूदिया में मसीह की
जमाअतें मुझे नहीं जानती थीं। 23 उन तक सिर्फ़ यह
ख़बर पहुँची थी कि जो आदमी पहले हमें ईज़ा पहुँचा
रहा था वह अब ख़ुद उस ईमान की ख़ुशख़बरी
सुनाता है जिसे वह पहले ख़त्म करना चाहता था।
24 यह सुन कर उन्हों ने मेरी वजह से अल्लाह की
तम्जीद की।

पौलुस और दीगर रसूल

2 1 चौदह साल के बाद मैं दुबारा यरूशलम गया।
इस दफ़ा बर्नबास साथ था। मैं तितुस को भी
साथ ले कर गया। 2 मैं एक मुकाशफ़े की वजह से
गया जो अल्लाह ने मुझ पर ज़ाहिर किया था। मेरी
अलाहिदगी में उन के साथ मीटिंग हुई जो असर-ओ-
रसूख़ रखते हैं। इस में मैं ने उन्हें वह ख़ुशख़बरी पेश
की जो मैं ग़ैरयहूदियों को सुनाता हूँ। मैं नहीं चाहता
था कि जो दौड़ मैं दौड़ रहा हूँ या माज़ी में दौड़ा था
वह आख़िरकार बेफ़ाइदा निकले। 3 उस वक़्त वह
यहाँ तक मेरे हक़ में थे कि उन्हों ने तितुस को भी
अपना ख़तना करवाने पर मज्बूर नहीं किया, अगरचे
वह ग़ैरयहूदी है। 4 और चन्द यही चाहते थे। लेकिन
यह झूटे भाई थे जो चुपके से अन्दर घुस आए थे
ताकि जासूस बन कर हमारी उस आज़ादी के बारे
में मालूमात हासिल कर लें जो हमें मसीह में मिली
है। यह हमें ग़ुलाम बनाना चाहते थे, 5 लेकिन हम ने
लम्हा भर उन की बात न मानी और न उन के ताबे
हुए ताकि अल्लाह की ख़ुशख़बरी की सच्चाई आप के
दरमियान क़ाइम रहे।

6 और जो राहनुमा समझे जाते थे उन्हों ने मेरी
बात में कोई इज़ाफ़ा न किया। (असल में मुझे कोई
पर्वा नहीं कि उन का असर-ओ-रसूख़ था कि नहीं।
अल्लाह तो इन्सान की ज़ाहिरी हालत का लिहाज़
नहीं करता।) 7 बहरहाल उन्हों ने देखा कि अल्लाह
ने मुझे ग़ैरयहूदियों को मसीह की ख़ुशख़बरी सुनाने
की ज़िम्मादारी दी थी, बिलकुल उसी तरह जिस तरह
उस ने पतरस को यहूदियों को यह पैग़ाम सुनाने की
ज़िम्मादारी दी थी। 8 क्यूँकि जो काम अल्लाह यहूदियों
के रसूल पतरस की ख़िदमत के वसीले से कर रहा
था वही काम वह मेरे वसीले से भी कर रहा था,
जो ग़ैरयहूदियों का रसूल हूँ। 9 याक़ूब, पतरस और
यूहन्ना को जमाअत के सतून माना जाता था। जब
उन्हों ने जान लिया कि अल्लाह ने इस नाते से मुझे
ख़ास फ़ज़्ल दिया है तो उन्हों ने मुझ से और बर्नबास
से दहना हाथ मिला कर इस का इज़हार किया कि वह
हमारे साथ हैं। यूँ हम मुत्तफ़िक़ हुए कि बर्नबास और
मैं ग़ैरयहूदियों में ख़िदमत करेंगे और वह यहूदियों
में। 10 उन्हों ने सिर्फ़ एक बात पर ज़ोर दिया कि हम
ज़रूरतमन्दों को याद रखें, वही बात जिसे मैं हमेशा
करने के लिए कोशाँ रहा हूँ।

अन्ताकिया में पौलुस पतरस को मलामत करता है

11 लेकिन जब पतरस अन्ताकिया शहर आया तो
मैं ने रू-ब-रू उस की मुख़ालफ़त की, क्यूँकि वह
अपने रवय्ये के सबब से मुजरिम ठहरा। 12 जब
वह आया तो पहले वह ग़ैरयहूदी ईमानदारों के
साथ खाना खाता रहा। लेकिन फिर याक़ूब के
कुछ अज़ीज़ आए। उसी वक़्त पतरस पीछे हट कर
ग़ैरयहूदियों से अलग हुआ, क्यूँकि वह उन से डरता
था जो ग़ैरयहूदियों का ख़तना करवाने के हक़ में
थे। 13 बाक़ी यहूदी भी इस रियाकारी में शामिल हुए,
यहाँ तक कि बर्नबास को भी उन की रियाकारी से
बहकाया गया। 14 जब मैं ने देखा कि वह उस सीधी
राह पर नहीं चल रहे हैं जो अल्लाह की ख़ुशख़बरी
की सच्चाई पर मब्नी है तो मैं ने सब के सामने पतरस
से कहा, “आप यहूदी हैं। लेकिन आप ग़ैरयहूदी की
तरह ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं, यहूदी की तरह नहीं। तो
फिर यह कैसी बात है कि आप ग़ैरयहूदियों को यहूदी
रिवायात की पैरवी करने पर मज्बूर कर रहे हैं?”

यहूदी और ग़ैरयहूदी ईमान से नजात पाते हैं

15 बेशक हम पैदाइशी यहूदी हैं और 'ग़ैरयहूदी
गुनाहगार' नहीं हैं। 16 लेकिन हम जानते हैं कि
इन्सान को शरीअत की पैरवी करने से रास्तबाज़
नहीं ठहराया जाता बल्कि ईसा मसीह पर ईमान लाने
से। हम भी मसीह ईसा पर ईमान लाए हैं ताकि हमें
रास्तबाज़ क़रार दिया जाए, शरीअत की पैरवी करने
से नहीं बल्कि मसीह पर ईमान लाने से। क्यूँकि
शरीअत की पैरवी करने से किसी को भी रास्तबाज़
क़रार नहीं दिया जाएगा। 17 लेकिन अगर मसीह में
रास्तबाज़ ठहरने की कोशिश करते करते हम ख़ुद
गुनाहगार साबित हो जाएँ तो क्या इस का मतलब
यह है कि मसीह गुनाह का ख़ादिम है? हरगिज़ नहीं!
18 अगर मैं शरीअत के उस निज़ाम को दुबारा तामीर
करूँ जो मैं ने ढा दिया तो फिर मैं ज़ाहिर करता हूँ
कि मैं मुजरिम हूँ। 19 क्यूँकि जहाँ तक शरीअत का
ताल्लुक़ है मैं मुर्दा हूँ। मुझे शरीअत ही से मारा गया है
ताकि अल्लाह के लिए जी सकूँ। मुझे मसीह के साथ
मस्लूब किया गया 20 और यूँ मैं ख़ुद ज़िन्दा न रहा
बल्कि मसीह मुझ में ज़िन्दा है। अब जो ज़िन्दगी मैं
इस जिस्म में गुज़ारता हूँ वह अल्लाह के फ़र्ज़न्द पर
ईमान लाने से गुज़ारता हूँ। उसी ने मुझ से मुहब्बत रख
कर मेरे लिए अपनी जान दी। 21 मैं अल्लाह का फ़ज़्ल
रद्द करने से इन्कार करता हूँ। क्यूँकि अगर किसी
को शरीअत की पैरवी करने से रास्तबाज़ ठहराया
जा सकता तो इस का मतलब यह होता कि मसीह
का मरना अबस था।

शरीअत या ईमान

3 1 नासमझ गलतियो! किस ने आप पर जादू कर
दिया? आप की आँखों के सामने ही ईसा मसीह
और उस की सलीबी मौत को साफ़ साफ़ पेश किया
गया। 2 मुझे एक बात बताएँ, क्या आप को शरीअत
की पैरवी करने से रूह-उल-क़ुद्स मिला? हरगिज़
नहीं! वह आप को उस वक़्त मिला जब आप मसीह
के बारे में पैग़ाम सुन कर उस पर ईमान लाए। 3 क्या
आप इतने बेसमझ हैं? आप की रुहानी ज़िन्दगी रूह-
उल-क़ुद्स के वसीले से शुरू हुई। तो अब आप यह
काम अपनी इन्सानी कोशिशों से किस तरह तक्मील
तक पहुँचाना चाहते हैं? 4 आप को कई तरह के
तजरिबे हासिल हुए हैं। क्या यह सब बेफ़ाइदा थे?
यक़ीनन यह बेफ़ाइदा नहीं थे। 5 क्या अल्लाह इस लिए
आप को अपना रूह देता और आप के दरमियान
मोजिज़े करता है कि आप शरीअत की पैरवी करते
हैं? हरगिज़ नहीं, बल्कि इस लिए कि आप मसीह के
बारे में पैग़ाम सुन कर ईमान लाए हैं।

6 इब्राहीम की मिसाल लें। उस ने अल्लाह पर भरोसा
किया और इस बिना पर अल्लाह ने उसे रास्तबाज़
क़रार दिया। 7 तो फिर आप को जान लेना चाहिए
कि इब्राहीम की हक़ीक़ी औलाद वह लोग हैं जो
ईमान रखते हैं। 8 कलाम-ए-मुक़द्दस ने इस बात की
पेशगोई की कि अल्लाह ग़ैरयहूदियों को ईमान के
ज़रीए रास्तबाज़ क़रार देगा। यूँ उस ने इब्राहीम
को यह ख़ुशख़बरी सुनाई, "तमाम क़ौमें तुझ से
बरकत पाएँगी।" 9 इब्राहीम ईमान लाया, इस लिए
उसे बरकत मिली। इसी तरह सब को ईमान लाने पर
इब्राहीम की सी बरकत मिलती है।

10 लेकिन जो भी इस पर तकिया करते हैं कि
हमें शरीअत की पैरवी करने से रास्तबाज़ क़रार
दिया जाएगा उन पर अल्लाह की लानत है। क्यूँकि
कलाम-ए-मुक़द्दस फ़रमाता है, "हर एक पर लानत
जो शरीअत की किताब की तमाम बातें क़ाइम न
रखे, न इन पर अमल करे।" 11 यह बात तो साफ़ है
कि अल्लाह किसी को भी शरीअत की पैरवी करने की
बिना पर रास्तबाज़ नहीं ठहराता, क्यूँकि कलाम-ए-
मुक़द्दस के मुताबिक़ रास्तबाज़ ईमान ही से जीता
रहेगा। 12 ईमान की यह राह शरीअत की राह से
बिलकुल फ़र्क़ है जो कहती है, "जो यूँ करेगा वह
जीता रहेगा।"

13 लेकिन मसीह ने हमारा फ़िद्या दे कर हमें शरीअत
की लानत से आज़ाद कर दिया है। यह उस ने

इस तरह किया कि वह हमारी ख़ातिर ख़ुद लानत बना। क्यूँकि कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है, “जिसे भी दरख़्त से लटकाया गया है उस पर अल्लाह की लानत है।” 14 इस का मक़्सद यह था कि जो बरकत इब्राहीम को हासिल हुई वह मसीह के वसीले से ग़ैरयहूदियों को भी मिले और यूँ हम ईमान ला कर वादा किया हुआ रूह पाएँ।

शरीअत और वादा

15 भाइयो, इन्सानी ज़िन्दगी की एक मिसाल लें। जब दो पार्टियाँ किसी मुआमले में मुत्तफ़िक़ हो कर मुआहदा करती हैं तो कोई इस मुआहदे को मन्सूख़ या इस में इज़ाफ़ा नहीं कर सकता। 16 अब ग़ौर करें कि अल्लाह ने अपने वादे इब्राहीम और उस की औलाद से ही किए। लेकिन जो लफ़्ज़ इब्रानी में औलाद के लिए इस्तेमाल हुआ है इस से मुराद बहुत से अफ़राद नहीं बल्कि एक फ़र्द है और वह है मसीह। 17 कहने से मुराद यह है कि अल्लाह ने इब्राहीम से अह्द बांध कर उसे क़ाइम रखने का वादा किया। शरीअत जो 430 साल के बाद दी गई इस अह्द को रद्द करके अल्लाह का वादा मन्सूख़ नहीं कर सकती। 18 क्यूँकि अगर इब्राहीम की मीरास शरीअत की पैरवी करने से मिलती तो फिर वह अल्लाह के वादे पर मुन्हसिर न होती। लेकिन ऐसा नहीं था। अल्लाह ने इसे अपने वादे की बिना पर इब्राहीम को दे दिया।

19 तो फिर शरीअत का क्या मक़्सद था? उसे इस लिए वादे के इलावा दिया गया ताकि लोगों के गुनाहों को ज़ाहिर करे। और उसे उस वक़्त तक क़ाइम रहना था जब तक इब्राहीम की वह औलाद न आ जाती जिस से वादा किया गया था। अल्लाह ने अपनी शरीअत फ़रिश्तों के वसीले से मूसा को दे दी जो अल्लाह और लोगों के बीच में दरमियानी रहा। 20 अब दरमियानी उस वक़्त ज़रूरी होता है जब एक से ज़्यादा पार्टियों में इत्तिफ़ाक़ कराने की ज़रूरत है। लेकिन अल्लाह जो एक ही है उस ने दरमियानी इस्तेमाल न किया जब उस ने इब्राहीम से वादा किया।

शरीअत का मक़्सद

21 तो क्या इस का मतलब यह है कि शरीअत अल्लाह के वादों के ख़िलाफ़ है? हरगिज़ नहीं! अगर इन्सान को ऐसी शरीअत मिली होती जो ज़िन्दगी दिला सकती तो फिर सब उस की पैरवी करने से रास्तबाज़ ठहरते। 22 लेकिन कलाम-ए-मुक़द्दस फ़रमाता है कि पूरी दुनिया गुनाह के क़ब्ज़े में है। चुनाँचे हमें अल्लाह का वादा सिर्फ़ ईसा मसीह पर ईमान लाने से हासिल होता है।

23 इस से पहले कि ईमान की यह राह दस्तयाब हुई शरीअत ने हमें क़ैद करके महफ़ूज़ रखा था। इस क़ैद में हम उस वक़्त तक रहे जब तक ईमान की राह ज़ाहिर नहीं हुई थी। 24 यूँ शरीअत को हमारी तर्बियत करने की ज़िम्मादारी दी गई। उसे हमें मसीह तक पहुँचाना था ताकि हमें ईमान से रास्तबाज़ क़रार दिया जाए। 25 अब चूँकि ईमान की राह आ गई है इस लिए हम शरीअत की तर्बियत के तहत नहीं रहे।

26 क्यूँकि मसीह ईसा पर ईमान लाने से आप सब अल्लाह के फ़र्ज़न्द बन गए हैं। 27 आप में से जितनों को मसीह में बपतिस्मा दिया गया उन्हों ने मसीह को पहन लिया। 28 अब न यहूदी रहा न ग़ैरयहूदी, न ग़ुलाम रहा न आज़ाद, न मर्द रहा न औरत। मसीह ईसा में आप सब के सब एक हैं। 29 शर्त यह है कि आप मसीह के हों। तब आप इब्राहीम की औलाद और उन चीज़ों के वारिस हैं जिन का वादा अल्लाह ने किया है।

4 1 देखें, जो बेटा अपने बाप की मिलकियत का वारिस है वह उस वक़्त तक ग़ुलामों से फ़र्क़ नहीं जब तक वह बालिग़ न हो, हालाँकि वह पूरी मिलकियत का मालिक है। 2 बाप की तरफ़ से मुक़र्रर की हुई उम्र तक दूसरे उस की देख-भाल करते और उस की मिलकियत सँभालते हैं। 3 इसी तरह हम भी जब बच्चे थे दुनिया की कुव्वतों के ग़ुलाम थे। 4 लेकिन जब मुक़र्ररा वक़्त आ गया तो अल्लाह ने अपने फ़र्ज़न्द को भेज दिया। एक औरत से पैदा हो

कर वह शरीअत के ताबे हुआ 5 ताकि फ़िद्या दे कर
हमें जो शरीअत के ताबे थे आज़ाद कर दे। यूँ हमें
अल्लाह के फ़र्ज़न्द होने का मर्तबा मिला है।
6 अब चूँकि आप उस के फ़र्ज़न्द हैं इस लिए अल्लाह
ने अपने फ़र्ज़न्द के रूह को हमारे दिलों में भेज
दिया, वह रूह जो "अब्बा" यानी "ऐ बाप" कह
कर पुकारता रहता है। 7 ग़रज़ अब आप ग़ुलाम न
रहे बल्कि बेटे की हैसियत रखते हैं। और बेटा होने
का यह मतलब है कि अल्लाह ने आप को वारिस भी
बना दिया है।

पौलुस की गलतियों के लिए फ़िक्र

8 माज़ी में जब आप अल्लाह को नहीं जानते थे तो
आप उन के ग़ुलाम थे जो हक़ीक़त में ख़ुदा नहीं हैं।
9 लेकिन अब आप अल्लाह को जानते हैं, बल्कि अब
अल्लाह ने आप को जान लिया है। तो फिर आप मुड़
कर इन कमज़ोर और घटिया उसूलों की तरफ़ क्यूँ
वापस जाने लगे हैं? क्या आप दुबारा इन की ग़ुलामी
में आना चाहते हैं? 10 आप बड़ी फ़िक्रमन्दी से ख़ास
दिन, माह, मौसम और साल मनाते हैं। 11 मुझे आप
के बारे में डर है, कहीं मेरी आप पर मेहनत-मशक़्क़त
ज़ाए न जाए।
12 भाइयो, मैं आप से इल्तिजा करता हूँ कि मेरी
मानिन्द बन जाएँ, क्यूँकि मैं तो आप की मानिन्द
बन गया हूँ। आप ने मेरे साथ कोई ग़लत सुलूक नहीं
किया। 13 आप को मालूम है कि जब मैं ने पहली दफ़ा
आप को अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाई तो इस की
वजह मेरे जिस्म की कमज़ोर हालत थी। 14 लेकिन
अगरचे मेरी यह हालत आप के लिए आज़माइश का
बाइस थी तो भी आप ने मुझे हक़ीर न जाना, न मुझे
नीच समझा, बल्कि आप ने मुझे यूँ ख़ुशआमदीद
कहा जैसा कि मैं अल्लाह का कोई फ़रिश्ता या मसीह
ईसा ख़ुद हूँ। 15 उस वक़्त आप इतने ख़ुश थे! अब
क्या हुआ है? मैं गवाह हूँ, उस वक़्त अगर आप को
मौक़ा मिलता तो आप अपनी आँखें निकाल कर मुझे
दे देते। 16 तो क्या अब मैं आप को हक़ीक़त बताने
की वजह से आप का दुश्मन बन गया हूँ?
17 वह दूसरे लोग आप की दोस्ती पाने की पूरी
जिद्द-ओ-जह्द कर रहे हैं, लेकिन उन की नीयत साफ़
नहीं है। बस वह आप को मुझ से जुदा करना चाहते
हैं ताकि आप उन ही के हक़ में जिद्द-ओ-जह्द करते
रहें। 18 जब लोग आप की दोस्ती पाने की जिद्द-ओ-
जह्द करते हैं तो यह है तो ठीक, लेकिन इस का
मक़्सद अच्छा होना चाहिए। हाँ, सहीह जिद्द-ओ-
जह्द हर वक़्त अच्छी होती है, न सिर्फ़ इस वक़्त
जब मैं आप के दरमियान हूँ। 19 मेरे प्यारे बच्चो! अब
मैं दुबारा आप को जन्म देने का सा दर्द महसूस कर
रहा हूँ और उस वक़्त तक करता रहूँगा जब तक
मसीह आप में सूरत न पकड़े। 20 काश मैं उस वक़्त
आप के पास होता ताकि फ़र्क़ अन्दाज़ में आप से
बात कर सकता, क्यूँकि मैं आप के सबब से बड़ी
उलझन में हूँ!

हाजिरा और सारा की मिसाल

21 आप जो शरीअत के ताबे रहना चाहते हैं मुझे
एक बात बताएँ, क्या आप वह बात नहीं सुनते जो
शरीअत कहती है? 22 वह कहती है कि इब्राहीम के
दो बेटे थे। एक लौंडी का बेटा था, एक आज़ाद
औरत का। 23 लौंडी के बेटे की पैदाइश हसब-ए-
मामूल थी, लेकिन आज़ाद औरत के बेटे की पैदाइश
ग़ैरमामूली थी, क्यूँकि उस में अल्लाह का वादा पूरा
हुआ। 24 जब यह किनायतन समझा जाए तो यह दो
ख़वातीन अल्लाह के दो अह्दों की नुमाइन्दगी करती
हैं। पहली ख़ातून हाजिरा सीना पहाड़ पर बंधे हुए
अह्द की नुमाइन्दगी करती है, और जो बच्चे उस से
पैदा होते हैं वह ग़ुलामी के लिए मुक़र्रर हैं। 25 हाजिरा
जो अरब में वाक़े पहाड़ सीना की अलामत है मौजूदा
शहर यरूशलम से मुताबिक़त रखती है। वह और
उस के तमाम बच्चे ग़ुलामी में ज़िन्दगी गुज़ारते हैं।
26 लेकिन आसमानी यरूशलम आज़ाद है और वही

हमारी माँ है। 27 क्यूँकि कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है,

"ख़ुश हो जा, तू जो बेऔलाद है,
जो बच्चे को जन्म ही नहीं दे सकती।
बुलन्द आवाज़ से शादियाना बजा,
तू जिसे पैदाइश का दर्द न हुआ।
क्यूँकि अब तर्क की हुई औरत के बच्चे
शादीशुदा औरत के बच्चों से ज़्यादा हैं।"

28 भाइयो, आप इस्हाक़ की तरह अल्लाह के वादे के फ़र्ज़न्द हैं। 29 उस वक़्त इस्माईल ने जो हसब-ए-मामूल पैदा हुआ था इस्हाक़ को सताया जो रूह-उल-क़ुद्स की क़ुदरत से पैदा हुआ था। आज भी ऐसा ही है। 30 लेकिन कलाम-ए-मुक़द्दस में क्या फ़रमाया गया है? "इस लौंडी और इस के बेटे को घर से निकाल दें, क्यूँकि वह आज़ाद औरत के बेटे के साथ विरसा नहीं पाएगा।" 31 ग़रज़ भाइयो, हम लौंडी के फ़र्ज़न्द नहीं हैं बल्कि आज़ाद औरत के।

अपनी आज़ादी महफ़ूज़ रखें

5 1 मसीह ने हमें आज़ाद रहने के लिए ही आज़ाद किया है। तो अब क़ाइम रहें और दुबारा अपने गले में ग़ुलामी का जूआ डालने न दें।

2 सुनें! मैं पौलुस आप को बताता हूँ कि अगर आप अपना ख़तना करवाएँ तो आप को मसीह का कोई फ़ाइदा नहीं होगा। 3 मैं एक बार फिर इस बात की तस्दीक़ करता हूँ कि जिस ने भी अपना ख़तना करवाया उस का फ़र्ज़ है कि वह पूरी शरीअत की पैरवी करे। 4 आप जो शरीअत की पैरवी करने से रास्तबाज़ बनना चाहते हैं आप का मसीह के साथ कोई वास्ता न रहा। हाँ, आप अल्लाह के फ़ज़्ल से दूर हो गए हैं। 5 लेकिन हमें एक फ़र्क़ उम्मीद दिलाई गई है। उम्मीद यह है कि ख़ुदा ही हमें रास्तबाज़ क़रार देता है। चुनाँचे हम रूह-उल-क़ुद्स के बाइस ईमान रख कर इसी रास्तबाज़ी के लिए तड़पते रहते हैं। 6 क्यूँकि जब हम मसीह ईसा में होते हैं तो ख़तना करवाने या न करवाने से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। फ़र्क़ सिर्फ़ उस ईमान से पड़ता है जो मुहब्बत करने से ज़ाहिर होता है।

7 आप ईमान की दौड़ में अच्छी तरक़्क़ी कर रहे थे! तो फिर किस ने आप को सच्चाई की पैरवी करने से रोक लिया? 8 किस ने आप को उभारा? अल्लाह तो नहीं था जो आप को बुलाता है। 9 देखें, थोड़ा सा ख़मीर तमाम गुंधे हुए आटे को ख़मीर कर देता है। 10 मुझे ख़ुदावन्द में आप पर इतना एतिमाद है कि आप यही सोच रखते हैं। जो भी आप में अफ़्रा-तफ़्री पैदा कर रहा है उसे सज़ा मिलेगी।

11 भाइयो, जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है, अगर मैं यह पैग़ाम देता कि अब तक ख़तना करवाने की ज़रूरत है तो मेरी ईज़ारसानी क्यूँ हो रही होती? अगर ऐसा होता तो लोग मसीह के मस्लूब होने के बारे में सुन कर ठोकर न खाते। 12 बेहतर है कि आप को परेशान करने वाले न सिर्फ़ अपना ख़तना करवाएँ बल्कि खोजे बन जाएँ।

13 भाइयो, आप को आज़ाद होने के लिए बुलाया गया है। लेकिन ख़बरदार रहें कि इस आज़ादी से आप की गुनाहआलूदा फ़ित्रत को अमल में आने का मौक़ा न मिले। इस के बजाय मुहब्बत की रूह में एक दूसरे की ख़िदमत करें। 14 क्यूँकि पूरी शरीअत एक ही हुक्म में समाई हुई है, "अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आप से रखता है।" 15 अगर आप एक दूसरे को काटते और फाड़ते हैं तो ख़बरदार! ऐसा न हो कि आप एक दूसरे को ख़त्म करके सब के सब तबाह हो जाएँ।

रूह-उल-क़ुद्स और इन्सानी फ़ित्रत

16 मैं तो यह कहता हूँ कि रूह-उल-क़ुद्स में ज़िन्दगी गुज़ारें। फिर आप अपनी पुरानी फ़ित्रत की ख़्वाहिशात पूरी नहीं करेंगे। 17 क्यूँकि जो कुछ हमारी पुरानी फ़ित्रत चाहती है वह उस के ख़िलाफ़ है जो रूह चाहता है, और जो कुछ रूह चाहता है वह उस के ख़िलाफ़ है जो हमारी पुरानी फ़ित्रत चाहती है। यह दोनों एक दूसरे के दुश्मन हैं, इस लिए आप वह कुछ

नहीं कर पाते जो आप करना चाहते हैं। 18 लेकिन
जब रूह-उल-क़ुद्स आप की राहनुमाई करता है तो
आप शरीअत के ताबे नहीं होते।

19 जो काम पुरानी फ़ित्रत करती है वह साफ़ ज़ाहिर
होता है। मसलन ज़िनाकारी, नापाकी, अय्याशी,
20 बुतपरस्ती, जादूगरी, दुश्मनी, झगड़ा, हसद,
ग़ुस्सा, ख़ुदग़रज़ी, अनबन, पार्टीबाज़ी, 21 जलन,
नशाबाज़ी, रंगरलियाँ वग़ैरा। मैं पहले भी आप को
आगाह कर चुका हूँ, लेकिन अब एक बार फिर
कहता हूँ कि जो इस तरह की ज़िन्दगी गुज़ारते हैं
वह अल्लाह की बादशाही मीरास में नहीं पाएँगे।

22 रूह-उल-क़ुद्स का फल फ़र्क़ है। वह मुहब्बत,
ख़ुशी, सुलह-सलामती, सब्र, मेहरबानी, नेकी,
वफ़ादारी, 23 नर्मी और ज़ब्त-ए-नफ़्स पैदा करता है।
शरीअत ऐसी चीज़ों के ख़िलाफ़ नहीं होती। 24 और
जो मसीह ईसा के हैं उन्हों ने अपनी पुरानी फ़ित्रत को
उस की रग़बतों और बुरी ख़्वाहिशों समेत मस्लूब
कर दिया है। 25 चूँकि हम रूह में ज़िन्दगी गुज़ारते हैं
इस लिए आएँ, हम क़दम-ब-क़दम उस के मुताबिक़
चलते भी रहें। 26 न हम मग़रूर हूँ, न एक दूसरे को
मुश्तइल करें या एक दूसरे से हसद करें।

एक दूसरे के बोझ उठाना

6 1 भाइयो, अगर कोई किसी गुनाह में फंस जाए
तो आप जो रुहानी हैं उसे नर्मदिली से बहाल
करें। लेकिन अपना भी ख़याल रखें, ऐसा न हो कि
आप भी आज़माइश में फंस जाएँ। 2 बोझ उठाने में
एक दूसरे की मदद करें, क्यूँकि इस तरह आप मसीह
की शरीअत पूरी करेंगे। 3 जो समझता है कि मैं कुछ
हूँ अगरचे वह हक़ीक़त में कुछ भी नहीं है तो वह
अपने आप को फ़रेब दे रहा है। 4 हर एक अपना
ज़ाती अमल परखे। फिर ही उसे अपने आप पर
फ़ख़र का मौक़ा होगा और उसे किसी दूसरे से अपना
मुवाज़ना करने की ज़रूरत न होगी। 5 क्यूँकि हर एक
को अपना ज़ाती बोझ उठाना होता है।

6 जिसे कलाम-ए-मुक़द्दस की तालीम दी जाती है
उस का फ़र्ज़ है कि वह अपने उस्ताद को अपनी
तमाम अच्छी चीज़ों में शरीक करे।

7 फ़रेब मत खाना, अल्लाह इन्सान को अपना मज़ाक़
उड़ाने नहीं देता। जो कुछ भी इन्सान बोता है उसी की
फ़सल वह काटेगा। 8 जो अपनी पुरानी फ़ित्रत के खेत
में बीज बोए वह हलाकत की फ़सल काटेगा। और
जो रूह-उल-क़ुद्स के खेत में बीज बोए वह अबदी
ज़िन्दगी की फ़सल काटेगा। 9 चुनाँचे हम नेक काम
करने में बेदिल न हो जाएँ, क्यूँकि हम मुक़र्ररा वक़्त
पर ज़रूर फ़सल की कटाई करेंगे। शर्त सिर्फ़ यह है
कि हम हथियार न डालें। 10 इस लिए आएँ, जितना
वक़्त रह गया है सब के साथ नेकी करें, ख़ासकर
उन के साथ जो ईमान में हमारे भाई और बहनें हैं।

आख़िरी आगाही और सलाम

11 देखें, मैं बड़े बड़े हुरूफ़ के साथ अपने हाथ
से आप को लिख रहा हूँ। 12 यह लोग जो दुनिया
के सामने इज़्ज़त हासिल करना चाहते हैं आप को
ख़तना करवाने पर मज्बूर करना चाहते हैं। मक़्सद
उन का सिर्फ़ एक ही है, कि वह उस ईज़ारसानी से
बचे रहें जो तब पैदा होती है जब हम मसीह की
सलीबी मौत की तालीम देते हैं। 13 बात यह है कि जो
अपना ख़तना कराते हैं वह ख़ुद शरीअत की पैरवी
नहीं करते। तो भी यह चाहते हैं कि आप अपना
ख़तना करवाएँ ताकि आप के जिस्म की हालत पर
वह फ़ख़र कर सकें। 14 लेकिन ख़ुदा करे कि मैं
सिर्फ़ हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह की सलीब ही पर
फ़ख़र करूँ। क्यूँकि उस की सलीब से दुनिया मेरे
लिए मस्लूब हुई है और मैं दुनिया के लिए। 15 ख़तना
करवाने या न करवाने से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता
बल्कि फ़र्क़ उस वक़्त पड़ता है जब अल्लाह किसी
को नए सिरे से ख़ल्क़ करता है। 16 जो भी इस उसूल
पर अमल करते हैं उन्हें सलामती और रहम हासिल
होता रहे, उन्हें भी और अल्लाह की क़ौम इस्राईल को
भी।

17 आइन्दा कोई मुझे तक्लीफ़ न दे, क्यूँकि मेरे
जिस्म पर ज़ख़्मों के निशान ज़ाहिर करते हैं कि मैं
ईसा का ग़ुलाम हूँ।

18 भाइयो, हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह का फ़ज़्ल
आप की रूह के साथ होता रहे। आमीन।

इफ़िसियों

1 1 यह ख़त पौलुस की तरफ़ से है, जो अल्लाह की
मर्ज़ी से मसीह ईसा का रसूल है।
मैं इफ़िसुस शहर के मुक़द्दसीन को लिख रहा हूँ,
उन्हें जो मसीह ईसा में ईमानदार हैं।
2 ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावन्द ईसा मसीह आप
को फ़ज़्ल और सलामती बख़्शें।

मसीह में रुहानी बरकतें

3 ख़ुदा हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह के बाप की हम्द-
ओ-सना हो! क्यूँकि मसीह में उस ने हमें आसमान
पर हर रुहानी बरकत से नवाज़ा है। 4 दुनिया की
तख़्लीक़ से पेशतर ही उस ने मसीह में हमें चुन लिया
ताकि हम मुक़द्दस और बेऐब हालत में उस के सामने
ज़िन्दगी गुज़ारें।
यह कितनी अज़ीम मुहब्बत थी! 5 पहले ही से उस
ने फ़ैसला कर लिया कि वह हमें मसीह में अपने बेटे-
बेटियाँ बना लेगा। यही उस की मर्ज़ी और ख़ुशी थी
6 ताकि हम उस के जलाली फ़ज़्ल की तम्जीद करें,
उस मुफ़्त नेमत के लिए जो उस ने हमें अपने प्यारे
फ़र्ज़न्द में दे दी। 7 क्यूँकि उस ने मसीह के ख़ून से
हमारा फ़िद्या दे कर हमें आज़ाद और हमारे गुनाहों
को मुआफ़ कर दिया है। अल्लाह का यह फ़ज़्ल कितना
वसी है 8 जो उस ने कस्रत से हमें अता किया है।
अपनी पूरी हिक्मत और दानाई का इज़्हार करके
9 अल्लाह ने हम पर अपनी पोशीदा मर्ज़ी ज़ाहिर कर
दी, यानी वह मन्सूबा जो उसे पसन्द था और जो उस
ने मसीह में पहले से बना रखा था। 10 मन्सूबा यह
है कि जब मुक़र्ररा वक़्त आएगा तो अल्लाह मसीह में
तमाम काइनात को जमा कर देगा। उस वक़्त सब
कुछ मिल कर मसीह के तहत हो जाएगा, ख़्वाह वह
आसमान पर हो या ज़मीन पर।
11 मसीह में हम आसमानी बादशाही के वारिस भी
बन गए हैं। अल्लाह ने पहले से हमें इस के लिए मुक़र्रर
किया, क्यूँकि वह सब कुछ यूँ सरअन्जाम देता है
कि उस की मर्ज़ी का इरादा पूरा हो जाए। 12 और वह
चाहता है कि हम उस के जलाल की सताइश का
बाइस बनें, हम जिन्हों ने पहले से मसीह पर उम्मीद
रखी।
13 आप भी मसीह में हैं, क्यूँकि आप सच्चाई का
कलाम और अपनी नजात की ख़ुशख़बरी सुन कर
ईमान लाए। और अल्लाह ने आप पर भी रूह-उल-
क़ुद्स की मुहर लगा दी जिस का वादा उस ने किया
था। 14 रूह-उल-क़ुद्स हमारी मीरास का बैआना है।
वह हमें यह ज़मानत देता है कि अल्लाह हमारा जो उस
की मिलकियत हैं फ़िद्या दे कर हमें पूरी मख़्लसी तक
पहुँचाएगा। क्यूँकि हमारी ज़िन्दगी का मक़्सद यह है
कि उस के जलाल की सताइश की जाए।

पौलुस की दुआ

15 भाइयो, मैं ख़ुदावन्द ईसा पर आप के ईमान और
आप की तमाम मुक़द्दसीन से मुहब्बत के बारे में सुन
कर 16 आप के लिए ख़ुदा का शुक्र करने से बाज़
नहीं आता बल्कि आप को अपनी दुआओं में याद
करता रहता हूँ। 17 मेरी ख़ास दुआ यह है कि हमारे
ख़ुदावन्द ईसा मसीह का ख़ुदा और जलाली बाप
आप को दानाई और मुकाशफ़ा की रूह दे ताकि
आप उसे बेहतर तौर पर जान सकें। 18 वह करे कि
आप के दिलों की आँखें रौशन हो जाएँ। क्यूँकि फिर
ही आप जान लेंगे कि यह कैसी उम्मीद है जिस के
लिए उस ने आप को बुलाया है, कि यह जलाली
मीरास कैसी दौलत है जो मुक़द्दसीन को हासिल
है, 19 और कि हम ईमान रखने वालों पर उस की
क़ुदरत का इज़्हार कितना ज़बरदस्त है। यह वही

बेहद क़ुदरत है 20 जिस से उस ने मसीह को मुर्दों
में से ज़िन्दा करके आसमान पर अपने दहने हाथ
बिठाया। 21 वहाँ मसीह हर हुक्मरान, इख़तियार,
क़ुव्वत, हुकूमत, हाँ हर नाम से कहीं सरफ़राज़
है, ख़्वाह इस दुनिया में हो या आने वाली दुनिया
में। 22 अल्लाह ने सब कुछ उस के पाँओ के नीचे
करके उसे सब का सर बना दिया। यह उस ने अपनी
जमाअत की ख़ातिर किया 23 जो मसीह का बदन है
और जिसे मसीह से पूरी मामूरी हासिल होती है यानी
उस से जो हर तरह से सब कुछ मामूर कर देता है।

मौत से ज़िन्दगी तक

2 1 आप भी अपनी ख़ताओं और गुनाहों की
वजह से रुहानी तौर पर मुर्दा थे। 2 क्यूँकि पहले
आप इन में फंसे हुए इस दुनिया के तौर-तरीक़ों के
मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारते थे। आप हवा की कुव्वतों
के सरदार के ताबे थे, उस रूह के जो इस वक़्त उन
में सरगर्म-ए-अमल है जो अल्लाह के नाफ़रमान हैं।
3 पहले तो हम भी सब उन में ज़िन्दगी गुज़ारते थे।
हम भी अपनी पुरानी फ़ित्रत की शहवतें, मर्ज़ी और
सोच पूरी करने की कोशिश करते रहे। दूसरों की तरह
हम पर भी फ़ित्री तौर पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल
होना था।

4 लेकिन अल्लाह का रहम इतना वसी है और वह
इतनी शिद्दत से हम से मुहब्बत रखता है 5 कि अगरचे
हम अपने गुनाहों में मुर्दा थे तो भी उस ने हमें मसीह
के साथ ज़िन्दा कर दिया। हाँ, आप को अल्लाह के
फ़ज़्ल ही से नजात मिली है। 6 जब हम मसीह ईसा
पर ईमान लाए तो उस ने हमें मसीह के साथ ज़िन्दा
करके आसमान पर बिठा दिया। 7 ईसा मसीह में हम
पर मेहरबानी करने से अल्लाह आने वाले ज़मानों में
अपने फ़ज़्ल की ला-महदूद दौलत दिखाना चाहता
था। 8 क्यूँकि यह उस का फ़ज़्ल ही है कि आप को
ईमान लाने पर नजात मिली है। यह आप की तरफ़
से नहीं है बल्कि अल्लाह की बख़्शिश है। 9 और यह
नजात हमें अपने किसी काम के नतीजे में नहीं मिली,
इस लिए कोई अपने आप पर फ़ख़्र नहीं कर सकता।
10 हाँ, हम उसी की मख़्लूक़ हैं जिन्हें उस ने मसीह
में नेक काम करने के लिए ख़ल्क़ किया है। और यह
काम उस ने पहले से हमारे लिए तय्यार कर रखे हैं,
क्यूँकि वह चाहता है कि हम उन्हें सरअन्जाम देते
हुए ज़िन्दगी गुज़ारें।

मसीह में एक

11 यह बात ज़हन में रखें कि माज़ी में आप क्या थे।
यहूदी सिर्फ़ अपने लिए लफ़्ज़ मख़्तून इस्तेमाल करते
थे अगरचे वह अपना ख़तना सिर्फ़ इन्सानी हाथों से
करवाते हैं। आप को जो ग़ैरयहूदी हैं वह नामख़्तून
क़रार देते थे। 12 उस वक़्त आप मसीह के बग़ैर ही
चलते थे। आप इस्राईल क़ौम के शहरी न बन सके
और जो वादे अल्लाह ने अह्दों के ज़रीए अपनी क़ौम
से किए थे वह आप के लिए नहीं थे। इस दुनिया में
आप की कोई उम्मीद नहीं थी, आप अल्लाह के बग़ैर
ही ज़िन्दगी गुज़ारते थे। 13 लेकिन अब आप मसीह
में हैं। पहले आप दूर थे, लेकिन अब आप को मसीह
के ख़ून के वसीले से क़रीब लाया गया है। 14 क्यूँकि
मसीह हमारी सुलह है और उसी ने यहूदियों और
ग़ैरयहूदियों को मिला कर एक क़ौम बना दिया है।
अपने जिस्म को क़ुर्बान करके उस ने वह दीवार गिरा
दी जिस ने उन्हें अलग करके एक दूसरे के दुश्मन
बना रखा था। 15 उस ने शरीअत को उस के अह्काम
और ज़वाबित समेत मन्सूख़ कर दिया ताकि दोनों
गुरोहों को मिला कर एक नया इन्सान ख़ल्क़ करे,
ऐसा इन्सान जो उस में एक हो और सुलह-सलामती
के साथ ज़िन्दगी गुज़ारे। 16 अपनी सलीबी मौत से
उस ने दोनों गुरोहों को एक बदन में मिला कर उन
की अल्लाह के साथ सुलह कराई। हाँ, उस ने अपने
आप में यह दुश्मनी ख़त्म कर दी। 17 उस ने आ
कर दोनों गुरोहों को सुलह-सलामती की ख़ुशख़बरी
सुनाई, आप ग़ैरयहूदियों को जो अल्लाह से दूर थे और
आप यहूदियों को भी जो उस के क़रीब थे। 18 अब

हम दोनों मसीह के ज़रीए एक ही रूह में बाप के हुज़ूर
आ सकते हैं।
19 नतीजे में अब आप परदेसी और अजनबी नहीं
रहे बल्कि मुक़द्दसीन के हमवतन और अल्लाह के
घराने के हैं। 20 आप को रसूलों और नबियों की
बुन्याद पर तामीर किया गया है जिस के कोने का
बुन्यादी पत्थर मसीह ईसा ख़ुद है। 21 उस में पूरी
इमारत जुड़ जाती और बढ़ती बढ़ती ख़ुदावन्द में
अल्लाह का मुक़द्दस घर बन जाती है। 22 दूसरों के
साथ साथ उस में आप की भी तामीर हो रही है ताकि
आप रूह में अल्लाह की सुकूनतगाह बन जाएँ।

पौलुस की ग़ैरयहूदियों में ख़िदमत

3 1 इस वजह से मैं पौलुस जो आप ग़ैरयहूदियों
की ख़ातिर मसीह ईसा का क़ैदी हूँ अल्लाह से
दुआ करता हूँ। 2 आप ने तो सुन लिया है कि मुझे
आप में अल्लाह के फ़ज़्ल का इन्तिज़ाम चलाने [m]की
ख़ास ज़िम्मादारी दी गई है। 3 जिस तरह मैं ने पहले
ही मुख़्तसर तौर पर लिखा है, अल्लाह ने ख़ुद मुझ पर
यह राज़ ज़ाहिर कर दिया। 4 जब आप वह पढ़ेंगे जो
मैं ने लिखा तो आप जान लेंगे कि मुझे मसीह के राज़
के बारे में क्या क्या समझ आई है। 5 गुज़रे ज़मानों में
अल्लाह ने यह बात ज़ाहिर नहीं की, लेकिन अब उस
ने इसे रूह-उल-क़ुद्स के ज़रीए अपने मुक़द्दस रसूलों
और नबियों पर ज़ाहिर कर दिया। 6 और अल्लाह का
राज़ यह है कि उस की ख़ुशख़बरी के ज़रीए ग़ैरयहूदी
इस्राईल के साथ आसमानी बादशाही के वारिस, एक
ही बदन के आज़ा और उसी वादे में शरीक हैं जो
अल्लाह ने मसीह ईसा में किया है।
7 मैं अल्लाह के मुफ़्त फ़ज़्ल और उस की क़ुदरत के
इज़हार से ख़ुशख़बरी का ख़ादिम बन गया। 8 अगरचे
मैं अल्लाह के तमाम मुक़द्दसीन से कमतर हूँ तो भी उस
ने मुझे यह फ़ज़्ल बख़्शा कि मैं ग़ैरयहूदियों को उस
ला-महदूद दौलत की ख़ुशख़बरी सुनाऊँ जो मसीह में
दस्तयाब है। 9 यही मेरी ज़िम्मादारी बन गई कि मैं
सब पर उस राज़ का इन्तिज़ाम ज़ाहिर करूँ जो गुज़रे
ज़मानों में सब चीज़ों के ख़ालिक़ ख़ुदा में पोशीदा
रहा। 10 क्यूँकि अल्लाह चाहता था कि अब मसीह की
जमाअत ही आसमानी हुक्मरानों और कुव्वतों को
अल्लाह की वसी हिक्मत के बारे में इल्म पहुँचाए।
11 यही उस का अज़ली मन्सूबा था जो उस ने हमारे
ख़ुदावन्द मसीह ईसा के वसीले से तक्मील तक
पहुँचाया। 12 उस में और उस पर ईमान रख कर हम
पूरी आज़ादी और एतिमाद के साथ अल्लाह के हुज़ूर
आ सकते हैं। 13 इस लिए मेरी आप से गुज़ारिश है
कि आप मेरी मुसीबतें देख कर बेदिल न हो जाएँ।
यह मैं आप की ख़ातिर बर्दाश्त कर रहा हूँ, और यह
आप की इज़्ज़त का बाइस हैं।

मसीह की मुहब्बत

14 इस वजह से मैं बाप के हुज़ूर अपने घुटने टेकता
हूँ, 15 उस बाप के सामने जिस से आसमान-ओ-ज़मीन
का हर ख़ानदान नामज़द है। 16 मेरी दुआ है कि वह
अपने जलाल की दौलत के मुवाफ़िक़ यह बख़्शे
कि आप उस के रूह के वसीले से बातिनी तौर पर
ज़बरदस्त तक़वियत पाएँ, 17 कि मसीह ईमान के
ज़रीए आप के दिलों में सुकूनत करे। हाँ, मेरी दुआ है
कि आप मुहब्बत में जड़ पकड़ें और इस बुन्याद पर
ज़िन्दगी यूँ गुज़ारें 18 कि आप बाक़ी तमाम मुक़द्दसीन
के साथ यह समझने के क़ाबिल बन जाएँ कि मसीह
की मुहब्बत कितनी चौड़ी, कितनी लम्बी, कितनी
ऊँची और कितनी गहरी है। 19 ख़ुदा करे कि आप
मसीह की यह मुहब्बत जान लें जो हर इल्म से कहीं
अफ़्ज़ल है और यूँ अल्लाह की पूरी मामूरी से भर जाएँ।
20 अल्लाह की तम्जीद हो जो अपनी उस क़ुदरत के
मुवाफ़िक़ जो हम में काम कर रही है ऐसा ज़बरदस्त
काम कर सकता है जो हमारी हर सोच और दुआ
से कहीं बाहर है। 21 हाँ, मसीह ईसा और उस की

---

[m]यानी ख़ुशख़बरी सुनाने।

जमाअत में अल्लाह की तम्जीद पुश्त-दर-पुश्त और अज़ल से अबद तक होती रहे। आमीन।

बदन की यगानगत

4 1 चुनाँचे मैं जो ख़ुदावन्द में क़ैदी हूँ आप को ताकीद करता हूँ कि उस ज़िन्दगी के मुताबिक़ चलें जिस के लिए ख़ुदा ने आप को बुलाया है। 2 हर वक़्त हलीम और नर्मदिल रहें, सब्र से काम लें और एक दूसरे से मुहब्बत रख कर उसे बर्दाश्त करें। 3 सुलह-सलामती के बंधन में रह कर रूह की यगानगत क़ाइम रखने की पूरी कोशिश करें। 4 एक ही बदन और एक ही रूह है। यूँ आप को भी एक ही उम्मीद के लिए बुलाया गया। 5 एक ख़ुदावन्द, एक ईमान, एक बपतिस्मा है। 6 एक ख़ुदा है, जो सब का वाहिद बाप है। वह सब का मालिक है, सब के ज़रीए काम करता है और सब में मौजूद है।

7 अब हम सब को अल्लाह का फ़ज़्ल बख़्शा गया। लेकिन मसीह हर एक को मुख़्तलिफ़ पैमाने से यह फ़ज़्ल अता करता है। 8 इस लिए कलाम-ए-मुक़द्दस फ़रमाता है, "उस ने बुलन्दी पर चढ़ कर क़ैदियों का हुजूम गिरिफ़्तार कर लिया और आदमियों को तुह्फ़े दिए।" 9 अब ग़ौर करें कि चढ़ने का ज़िक्र किया गया है। इस का मतलब है कि पहले वह ज़मीन की गहराइयों में उतरा। 10 जो उतरा वह वही है जो तमाम आसमानों से ऊँचा चढ़ गया ताकि तमाम काइनात को अपने आप से मामूर करे। 11 उसी ने अपनी जमाअत को तरह तरह के ख़ादिमों से नवाज़ा। बाज़ रसूल, बाज़ नबी, बाज़ मुबश्शिर, बाज़ चरवाहे और बाज़ उस्ताद हैं। 12 इन का मक़्सद यह है कि मुक़द्दसीन को ख़िदमत करने के लिए तय्यार किया जाए और यूँ मसीह के बदन की तामीर-ओ-तरक़्क़ी हो जाए। 13 इस तरीक़े से हम सब ईमान और अल्लाह के फ़र्ज़न्द की पहचान में एक हो कर बालिग़ हो जाएंगे, और हम मिल कर मसीह की मामूरी और बलूग़त को मुनअकिस करेंगे। 14 फिर हम बच्चे नहीं रहेंगे, और तालीम के हर एक झोंके से उछलते फिरते नहीं रहेंगे जब लोग अपनी चालाकी और धोकेबाज़ी से हमें अपने जालों में फंसाने की कोशिश करेंगे। 15 इस के बजाय हम मुहब्बत की रूह में सच्ची बात करके हर लिहाज़ से मसीह की तरफ़ बढ़ते जाएंगे जो हमारा सर है। 16 वही नसों के ज़रीए पूरे बदन के मुख़्तलिफ़ हिस्सों को एक दूसरे के साथ जोड़ कर मुत्तहिद कर देता है। हर हिस्सा अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ काम करता है, और यूँ पूरा बदन मुहब्बत की रूह में बढ़ता और अपनी तामीर करता रहता है।

मसीह में नई ज़िन्दगी

17 पस मैं ख़ुदावन्द के नाम में आप को आगाह करता हूँ कि अब से ग़ैरईमानदारों की तरह ज़िन्दगी न गुज़ारें जिन की सोच बेकार है 18 और जिन की समझ अंधेरे की गिरिफ़्त में है। उन का उस ज़िन्दगी में कोई हिस्सा नहीं जो अल्लाह देता है, क्यूँकि वह जाहिल हैं और उन के दिल सख़्त हो गए हैं। 19 बेहिस्स हो कर उन्हों ने अपने आप को अय्याशी के हवाले कर दिया। यूँ वह न बुझने वाली प्यास के साथ हर क़िस्म की नापाक हरकतें करते हैं।

20 लेकिन आप ने मसीह को यूँ नहीं जाना। 21 आप ने तो उस के बारे में सुन लिया है, और उस में हो कर आप को वह सच्चाई सिखाई गई जो ईसा में है। 22 चुनाँचे अपने पुराने इन्सान को उस के पुराने चाल-चलन समेत उतार देना, क्यूँकि वह अपनी धोकेबाज़ शहवतों से बिगड़ता जा रहा है। 23 अल्लाह को आप की सोच की तज्दीद करने दें 24 और नए इन्सान को पहन लें जो यूँ बनाया गया है कि वह हक़ीक़ी रास्तबाज़ी और क़ुद्दूसियत में अल्लाह के मुशाबेह है।

25 इस लिए हर शख़्स झूट से बाज़ रह कर दूसरों से सच बात करे, क्यूँकि हम सब एक ही बदन के आज़ा हैं। 26 ग़ुस्से में आते वक़्त गुनाह मत करना। आप का ग़ुस्सा सूरज के ग़ुरूब होने तक ठंडा हो जाए, 27 वर्ना आप इब्लीस को अपनी ज़िन्दगी में काम करने का मौक़ा देंगे। 28 चोर अब से चोरी न करे बल्कि ख़ूब मेहनत-मशक़्क़त करके अपने हाथों से अच्छा काम

करे। हाँ, वह इतना कमाए कि ज़रूरतमन्दों को भी
कुछ दे सके। 29 कोई भी बुरी बात आप के मुँह
से न निकले बल्कि सिर्फ़ ऐसी बातें जो दूसरों की
ज़रूरियात के मुताबिक़ उन की तामीर करें। यूँ सुनने
वालों को बरकत मिलेगी। 30 अल्लाह के मुक़द्दस रूह
को दुख न पहुँचाना, क्यूँकि उसी से अल्लाह ने आप पर
मुहर लगा कर यह ज़मानत दे दी है कि आप उसी के
हैं और नजात के दिन बच जाएंगे। 31 तमाम तरह की
तल्ख़ी, तैश, ग़ुस्से, शोर-शराबा, गाली-गलोच बल्कि
हर क़िस्म के बुरे रवय्ये से बाज़ आएँ। 32 एक दूसरे
पर मेहरबान और रहमदिल हों और एक दूसरे को यूँ
मुआफ़ करें जिस तरह अल्लाह ने आप को भी मसीह
में मुआफ़ कर दिया है।

रौशनी में ज़िन्दगी गुज़ारना

5 1 चूँकि आप अल्लाह के प्यारे बच्चे हैं इस लिए
उस के नमूने पर चलें। 2 मुहब्बत की रूह में
ज़िन्दगी यूँ गुज़ारें जैसे मसीह ने गुज़ारी। क्यूँकि उस
ने हम से मुहब्बत रख कर अपने आप को हमारे लिए
अल्लाह के हुज़ूर क़ुर्बान कर दिया और यूँ ऐसी क़ुर्बानी
बन गया जिस की ख़ुश्बू अल्लाह को पसन्द आई।
3 आप के दरमियान ज़िनाकारी, हर तरह की
नापाकी या लालच का ज़िक्र तक न हो, क्यूँकि यह
अल्लाह के मुक़द्दसीन के लिए मुनासिब नहीं है। 4 इसी
तरह शर्मनाक, अहमक़ाना या गन्दी बातें भी ठीक
नहीं। इन की जगह शुक्रगुज़ारी होनी चाहिए। 5 क्यूँकि
यक़ीन जानें कि ज़िनाकार, नापाक या लालची मसीह
और अल्लाह की बादशाही में मीरास नहीं पाएँगे
(लालच तो एक क़िस्म की बुतपरस्ती है)।
6 कोई आप को बेमानी अल्फ़ाज़ से धोका न दे।
ऐसी ही बातों की वजह से अल्लाह का ग़ज़ब उन
पर जो नाफ़रमान हैं नाज़िल होता है। 7 चुनाँचे उन
में शरीक न हो जाएँ जो यह करते हैं। 8 क्यूँकि
पहले आप तारीकी थे, लेकिन अब आप ख़ुदावन्द
में रौशनी हैं। रौशनी के फ़र्ज़न्द की तरह ज़िन्दगी
गुज़ारें, 9 क्यूँकि रौशनी का फल हर तरह की भलाई,
रास्तबाज़ी और सच्चाई है। 10 और मालूम करते रहें
कि ख़ुदावन्द को क्या कुछ पसन्द है। 11 तारीकी के
बेफल कामों में हिस्सा न लें बल्कि उन्हें रौशनी में
लाएँ। 12 क्यूँकि जो कुछ यह लोग पोशीदगी में करते
हैं उस का ज़िक्र करना भी शर्म की बात है। 13 लेकिन
सब कुछ बेनिक़ाब हो जाता है जब उसे रौशनी में
लाया जाता है। 14 क्यूँकि जो रौशनी में लाया जाता है
वह रौशन हो जाता है। इस लिए कहा जाता है,

"ऐ सोने वाले, जाग उठ!
मुर्दों में से जी उठ,
तो मसीह तुझ पर चमकेगा।"

15 चुनाँचे बड़ी एहतियात से इस पर ध्यान दें कि
आप ज़िन्दगी किस तरह गुज़ारते हैं - बेसमझ या
समझदार लोगों की तरह। 16 हर मौक़े से पूरा फ़ाइदा
उठाएँ, क्यूँकि दिन बुरे हैं। 17 इस लिए अहमक़ न बनें
बल्कि ख़ुदावन्द की मर्ज़ी को समझें।
18 शराब में मत्वाले न हो जाएँ, क्यूँकि इस का
अन्जाम अय्याशी है। इस के बजाय रूह-उल-क़ुद्स
से मामूर होते जाएँ। 19 ज़बूरों, हम्द-ओ-सना और
रुहानी गीतों से एक दूसरे की हौसलाअफ़्ज़ाई करें।
अपने दिलों में ख़ुदावन्द के लिए गीत गाएँ और
नग़मासराई करें। 20 हाँ, हर वक़्त हमारे ख़ुदावन्द
ईसा मसीह के नाम में हर चीज़ के लिए शुक्र करें।

मियाँ-बीवी का ताल्लुक़

21 मसीह के ख़ौफ़ में एक दूसरे के ताबे रहें।
22 बीवियो, जिस तरह आप ख़ुदावन्द के ताबे हैं उसी
तरह अपने शौहर के ताबे भी रहें। 23 क्यूँकि शौहर
वैसे ही अपनी बीवी का सर है जैसे मसीह अपनी
जमाअत का। हाँ, जमाअत मसीह का बदन है जिसे
उस ने नजात दी है। 24 अब जिस तरह जमाअत मसीह
के ताबे है उसी तरह बीवियाँ भी अपने शौहरों के ताबे
रहें।
25 शौहरो, अपनी बीवियों से मुहब्बत रखें,
बिलकुल उसी तरह जिस तरह मसीह ने अपनी
जमाअत से मुहब्बत रख कर अपने आप को उस

के लिए क़ुर्बान किया 26 ताकि उसे अल्लाह के लिए
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करे। उस ने उसे कलाम-ए-पाक
से धो कर पाक-साफ़ कर दिया 27 ताकि अपने आप
को एक ऐसी जमाअत पेश करे जो जलाली, मुक़द्दस
और बेइल्ज़ाम हो, जिस में न कोई दाग़ हो, न कोई
झुर्री, न किसी और क़िस्म का नुक़्स। 28 शौहरों का
फ़र्ज़ है कि वह अपनी बीवियों से ऐसी ही मुहब्बत
रखें। हाँ, वह उन से वैसी मुहब्बत रखें जैसी अपने
जिस्म से रखते हैं। क्यूँकि जो अपनी बीवी से मुहब्बत
रखता है वह अपने आप से ही मुहब्बत रखता है।
29 आख़िर कोई भी अपने जिस्म से नफ़रत नहीं
करता बल्कि उसे ख़ुराक मुहय्या करता और पालता
है। मसीह भी अपनी जमाअत के लिए यही कुछ
करता है। 30 क्यूँकि हम उस के बदन के आज़ा हैं।
31 कलाम-ए-मुक़द्दस में भी लिखा है, "इस लिए मर्द
अपने माँ-बाप को छोड़ कर अपनी बीवी के साथ
पैवस्त हो जाता है। वह दोनों एक हो जाते हैं।" 32 यह
राज़ बहुत गहरा है। मैं तो उस का इत्लाक़ मसीह
और उस की जमाअत पर करता हूँ। 33 लेकिन इस
का इत्लाक़ आप पर भी है। हर शौहर अपनी बीवी
से इस तरह मुहब्बत रखे जिस तरह वह अपने आप
से रखता है। और हर बीवी अपने शौहर की इज़्ज़त
करे।

बच्चों और वालिदैन का ताल्लुक़

6 1 बच्चो, ख़ुदावन्द में अपने माँ-बाप के ताबे
रहें, क्यूँकि यही रास्तबाज़ी का तक़ाज़ा है।
2 कलाम-ए-मुक़द्दस में लिखा है, "अपने बाप और
अपनी माँ की इज़्ज़त करना।" यह पहला हुक्म है
जिस के साथ एक वादा भी किया गया है, 3 "फिर तू
ख़ुशहाल और ज़मीन पर देर तक जीता रहेगा।"
4 ऐ वालिदो, अपने बच्चों से ऐसा सुलूक मत करें कि
वह ग़ुस्से हो जाएँ बल्कि उन्हें ख़ुदावन्द की तरफ़ से
तर्बियत और हिदायत दे कर पालें।

ग़ुलाम और मालिक

5 ग़ुलामो, डरते और काँपते हुए अपने इन्सानी
मालिकों के ताबे रहें। ख़ुलूसदिली से उन की ख़िदमत
यूँ करें जैसे मसीह की। 6 न सिर्फ़ उन के सामने ही
और उन्हें ख़ुश रखने के लिए ख़िदमत करें बल्कि
मसीह के ग़ुलामों की हैसियत से जो पूरी लगन
से अल्लाह की मर्ज़ी पूरी करना चाहते हैं। 7 ख़ुशी
से ख़िदमत करें, इस तरह जैसा कि आप न सिर्फ़
इन्सानों की बल्कि ख़ुदावन्द की ख़िदमत कर रहे
हों। 8 आप तो जानते हैं कि जो भी अच्छा काम
हम ने किया उस का अज्र ख़ुदावन्द देगा, ख़्वाह
हम ग़ुलाम हों या आज़ाद। 9 और मालिको, आप भी
अपने ग़ुलामों से ऐसा ही सुलूक करें। उन्हें धमकियाँ
न दें। आप को तो मालूम है कि आसमान पर आप
का भी मालिक है और कि वह जानिबदार नहीं होता।

रुहानी ज़िराबक्तर

10 एक आख़िरी बात, ख़ुदावन्द और उस की
ज़बरदस्त क़ुव्वत में ताक़तवर बन जाएँ। 11 अल्लाह
का पूरा ज़िराबक्तर पहन लें ताकि इब्लीस की चालों
का सामना कर सकें। 12 क्यूँकि हमारी जंग इन्सान के
साथ नहीं है बल्कि हुक्मरानों और इख़तियार वालों
के साथ, इस तारीक दुनिया के हाकिमों के साथ और
आसमानी दुनिया की शैतानी क़ुव्वतों के साथ है।
13 चुनाँचे अल्लाह का पूरा ज़िराबक्तर पहन लें ताकि
आप मुसीबत के दिन इब्लीस के हम्लों का सामना
कर सकें बल्कि सब कुछ सरअन्जाम देने के बाद
क़ाइम रह सकें।
14 अब यूँ खड़े हो जाएँ कि आप की कमर में सच्चाई
का पटका बंधा हुआ हो, आप के सीने पर रास्तबाज़ी
का सीनाबन्द लगा हो 15 और आप के पाँओ में ऐसे
जूते हों जो सुलह-सलामती की ख़ुशख़बरी सुनाने के
लिए तय्यार रहें। 16 इस के इलावा ईमान की ढाल
भी उठाए रखें, क्यूँकि इस से आप इब्लीस के जलते
हुए तीर बुझा सकते हैं। 17 अपने सर पर नजात का

ख़ोद पहन कर हाथ में रूह की तलवार जो अल्लाह
का कलाम है थामे रखें। 18 और हर मौक़े पर रूह
में हर तरह की दुआ और मिन्नत करते रहें। जागते
और साबितक़दमी से तमाम मुक़द्दसीन के लिए दुआ
करते रहें। 19 मेरे लिए भी दुआ करें कि जब भी मैं
अपना मुँह खोलूँ अल्लाह मुझे ऐसे अल्फ़ाज़ अता करे
कि पूरी दिलेरी से उस की ख़ुशख़बरी का राज़ सुना
सकूँ। 20 क्यूँकि मैं इसी पैग़ाम की ख़ातिर क़ैदी, हाँ
ज़न्जीरों में जकड़ा हुआ मसीह का एलची हूँ। दुआ
करें कि मैं मसीह में उतनी दिलेरी से यह पैग़ाम सुनाऊँ
जितना मुझे करना चाहिए।

आख़िरी सलाम

21 आप मेरे हाल और काम के बारे में भी जानना
चाहेंगे। ख़ुदावन्द में हमारा अज़ीज़ भाई और वफ़ादार
ख़ादिम तुख़िकुस आप को यह सब कुछ बता देगा।
22 मैं ने उसे इसी लिए आप के पास भेज दिया कि
आप को हमारे हाल का पता चले और आप को
तसल्ली मिले।

23 ख़ुदा बाप और ख़ुदावन्द ईसा मसीह आप
भाइयों को सलामती और ईमान के साथ मुहब्बत
अता करें। 24 अल्लाह का फ़ज़्ल उन सब के साथ हो
जो अनमिट मुहब्बत के साथ हमारे ख़ुदावन्द ईसा
मसीह को प्यार करते हैं।

फ़िलिप्पियों

सलाम

1 1 यह ख़त मसीह ईसा के ग़ुलामों पौलुस और
तीमुथियुस की तरफ़ से है।
मैं फ़िलिप्पी में मौजूद उन तमाम लोगों को लिख
रहा हूँ जिन्हें अल्लाह ने मसीह ईसा के ज़रीए मख़्सूस-
ओ-मुक़द्दस किया है। मैं उन के बुज़ुर्गों और ख़ादिमों
को भी लिख रहा हूँ।
2 ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावन्द ईसा मसीह आप
को फ़ज़्ल और सलामती अता करें।

जमाअत के लिए शुक्र-ओ-दुआ

3 जब भी मैं आप को याद करता हूँ तो अपने ख़ुदा
का शुक्र करता हूँ। 4 आप के लिए तमाम दुआओं में
मैं हमेशा ख़ुशी से दुआ करता हूँ, 5 इस लिए कि आप
पहले दिन से ले कर आज तक अल्लाह की ख़ुशख़बरी
फैलाने में मेरे शरीक रहे हैं। 6 और मुझे यक़ीन है कि
अल्लाह जिस ने आप में यह अच्छा काम शुरू किया है
इसे उस दिन तक्मील तक पहुँचाएगा जब मसीह ईसा
वापस आएगा। 7 और मुनासिब है कि आप सब के
बारे में मेरा यही ख़याल हो, क्यूँकि आप मुझे अज़ीज़
रखते हैं। हाँ, जब मुझे जेल में डाला गया या मैं अल्लाह
की ख़ुशख़बरी का दिफ़ा या उस की तस्दीक़ कर रहा
था तो आप भी मेरे इस ख़ास फ़ज़्ल में शरीक हुए।
8 अल्लाह मेरा गवाह है कि मैं कितनी शिद्दत से आप
सब का आरज़ूमन्द हूँ। हाँ, मैं मसीह की सी दिली
शफ़क़त के साथ आप का ख़्वाहिशमन्द हूँ।
9 और मेरी दुआ है कि आप की मुहब्बत में इल्म-
ओ-इर्फ़ान और हर तरह की रुहानी बसीरत का
यहाँ तक इज़ाफ़ा हो जाए कि वह बढ़ती बढ़ती
दिल से छलक उठे। 10 क्यूँकि यह ज़रूरी है ताकि
आप वह बातें क़बूल करें जो बुन्यादी अहमियत की
हामिल हैं और आप मसीह की आमद तक बेलौस
और बेइल्ज़ाम ज़िन्दगी गुज़ारें। 11 और यूँ आप उस
रास्तबाज़ी के फल से भरे रहेंगे जो आप को ईसा
मसीह के वसीले से हासिल होती है। फिर आप
अपनी ज़िन्दगी से अल्लाह को जलाल देंगे और उस
की तम्जीद करेंगे।

हर एक को मालूम हो जाए कि मसीह कौन है

12 भाइयो, मैं चाहता हूँ कि यह बात आप के इल्म
में हो कि जो कुछ भी मुझ पर गुज़रा है वह हक़ीक़त
में अल्लाह की ख़ुशख़बरी के फैलाओ का बाइस बन
गया है। 13 क्यूँकि प्रैटोरियुम [n]के तमाम अफ़राद और
बाक़ी सब को मालूम हो गया है कि मैं मसीह की
ख़ातिर क़ैदी हूँ। 14 और मेरे क़ैद में होने की वजह
से ख़ुदावन्द में ज़्यादातर भाइयों का एतिमाद इतना
बढ़ गया है कि वह मज़ीद दिलेरी के साथ बिलाख़ौफ़
अल्लाह का कलाम सुनाते हैं।
15 बेशक बाज़ तो हसद और मुख़ालफ़त के बाइस
मसीह की मुनादी कर रहे हैं, लेकिन बाक़ियों की
नीयत अच्छी है, 16 क्यूँकि वह जानते हैं कि मैं अल्लाह
की ख़ुशख़बरी के दिफ़ा की वजह से यहाँ पड़ा हूँ।
इस लिए वह मुहब्बत की रूह में तब्लीग़ करते हैं।
17 इस के मुक़ाबले में दूसरे ख़ुलूसदिली से मसीह के
बारे में पैग़ाम नहीं सुनाते बल्कि ख़ुदग़रज़ी से। यह
समझते हैं कि हम इस तरह पौलुस की गिरिफ़्तारी
को मज़ीद तक्लीफ़दिह बना सकते हैं।
18 लेकिन इस से क्या फ़र्क़ पड़ता है! अहम बात तो
यह है कि मसीह की मुनादी हर तरह से की जा रही है,

---

[n]गवर्नर का सरकारी महल प्रैटोरियुम कहलाता था। यहाँ इस का मतलब शाहन्शाह के पहरेदारों के क्वार्टर भी हो सकता है।

ख़्वाह मुनाद की नीयत पुरख़ुलूस हो या न। और इस
वजह से मैं ख़ुश हूँ। और ख़ुश रहूँगा भी, 19 क्यूँकि मैं
जानता हूँ कि यह मेरे लिए रिहाई का बाइस बनेगा,
इस लिए कि आप मेरे लिए दुआ कर रहे हैं और ईसा
मसीह का रूह मेरी हिमायत कर रहा है। 20 हाँ, यह
मेरी पूरी तवक़्क़ो और उम्मीद है। मैं यह भी जानता हूँ
कि मुझे किसी भी बात में शर्मिन्दा नहीं किया जाएगा
बल्कि जैसा माज़ी में हमेशा हुआ अब भी मुझे बड़ी
दिलेरी से मसीह को जलाल देने का फ़ज़्ल मिलेगा,
ख़्वाह मैं ज़िन्दा रहूँ या मर जाऊँ। 21 क्यूँकि मेरे लिए
मसीह ज़िन्दगी है और मौत नफ़ा का बाइस। 22 अगर
मैं ज़िन्दा रहूँ तो इस का फ़ाइदा यह होगा कि मैं
मेहनत करके मज़ीद फल ला सकूँगा। चुनाँचे मैं नहीं
कह सकता कि क्या बेहतर है। 23 मैं बड़ी कश-म-
कश में रहता हूँ। एक तरफ़ मैं कूच करके मसीह के
पास होने की आर्ज़ू रखता हूँ, क्यूँकि यह मेरे लिए
सब से बेहतर होता। 24 लेकिन दूसरी तरफ़ ज़्यादा
ज़रूरी यह है कि मैं आप की ख़ातिर ज़िन्दा रहूँ।
25 और चूँकि मुझे इस ज़रूरत का यक़ीन है, इस लिए
मैं जानता हूँ कि मैं ज़िन्दा रह कर दुबारा आप सब
के साथ रहूँगा ताकि आप तरक़्क़ी करें और ईमान
में ख़ुश रहें। 26 हाँ, मेरे आप के पास वापस आने से
आप मेरे सबब से मसीह ईसा पर हद से ज़्यादा फ़ख़र
करेंगे।

27 लेकिन आप हर सूरत में मसीह की ख़ुशख़बरी
और आसमान के शहरियों के लाइक़ ज़िन्दगी गुज़ारें।
फिर ख़्वाह मैं आ कर आप को देखूँ, ख़्वाह
ग़ैरमौजूदगी में आप के बारे में सुनूँ, मुझे मालूम
होगा कि आप एक रूह में क़ाइम हैं, आप मिल कर
यकदिली से उस ईमान के लिए जाँफ़िशानी कर रहे
हैं जो अल्लाह की ख़ुशख़बरी से पैदा हुआ है, 28 और
आप किसी सूरत में अपने मुख़ालिफ़ों से दहशत नहीं
खाते। यह उन के लिए एक निशान होगा कि वह
हलाक हो जाएंगे जबकि आप को नजात हासिल
होगी, और वह भी अल्लाह से। 29 क्यूँकि आप को न
सिर्फ़ मसीह पर ईमान लाने का फ़ज़्ल हासिल हुआ
है बल्कि उस की ख़ातिर दुख उठाने का भी। 30 आप
भी उस मुक़ाबले में जाँफ़िशानी कर रहे हैं जिस में
आप ने मुझे देखा है और जिस के बारे में आप ने
अब सुन लिया है कि मैं अब तक उस में मसरूफ़ हूँ।

यगानगत की ज़रूरत

2 1 क्या आप के दरमियान मसीह में
हौसलाअफ़्ज़ाई, मुहब्बत की तसल्ली,
रूह-उल-क़ुद्स की रिफ़ाक़त, नर्मदिली और रहमत
पाई जाती है? 2 अगर ऐसा है तो मेरी ख़ुशी इस में
पूरी करें कि आप एक जैसी सोच रखें और एक
जैसी मुहब्बत रखें, एक जान और एक ज़हन हो
जाएँ। 3 ख़ुदग़रज़ न हों, न बातिल इज़्ज़त के पीछे
पड़ें बल्कि फ़रोतनी से दूसरों को अपने से बेहतर
समझें। 4 हर एक न सिर्फ़ अपना फ़ाइदा सोचे बल्कि
दूसरों का भी।

मसीह की राह-ए-सलीब

5 वही सोच रखें जो मसीह ईसा की भी थी।
6 वह जो अल्लाह की सूरत पर था
नहीं समझता था कि मेरा अल्लाह के बराबर होना
कोई ऐसी चीज़ है
जिस के साथ ज़बरदस्ती चिमटे रहने की ज़रूरत
है।
7 नहीं, उस ने अपने आप को इस से महरूम करके
ग़ुलाम की सूरत अपनाई
और इन्सानों की मानिन्द बन गया।
शक्ल-ओ-सूरत में वह इन्सान पाया गया।
8 उस ने अपने आप को पस्त कर दिया
और मौत तक ताबे रहा,
बल्कि सलीबी मौत तक।
9 इस लिए अल्लाह ने उसे सब से आला मक़ाम पर
सरफ़राज़ कर दिया
और उसे वह नाम बख़्शा जो हर नाम से आला है,
10 ताकि ईसा के इस नाम के सामने हर घुटना झुके,

ख़्वाह वह घुटना आसमान पर, ज़मीन पर या इस
के नीचे हो,
11 और हर ज़बान तस्लीम करे कि ईसा मसीह
ख़ुदावन्द है।
यूँ ख़ुदा बाप को जलाल दिया जाएगा।

रुहानी तरक़्क़ी का राज़

12 मेरे अज़ीज़ो, जब मैं आप के पास था तो आप
हमेशा फ़रमाँबरदार रहे। अब जब मैं गैरहाज़िर हूँ
तो इस की कहीं ज़्यादा ज़रूरत है। चुनाँचे डरते
और काँपते हुए जाँफ़िशानी करते रहें ताकि आप की
नजात तक्मील तक पहुँचे। 13 क्यूँकि ख़ुदा ही आप
में वह कुछ करने की ख़्वाहिश पैदा करता है जो
उसे पसन्द है, और वही आप को यह पूरा करने की
ताक़त देता है।
14 सब कुछ बुड़बुड़ाए और बह्स-मुबाहसा किए
बग़ैर करें 15 ताकि आप बेइल्ज़ाम और पाक हो कर
अल्लाह के बेदाग़ फ़र्ज़न्द साबित हो जाएँ, ऐसे लोग जो
एक टेढ़ी और उलटी नस्ल के दरमियान ही आसमान
के सितारों की तरह चमकते दमकते 16 और ज़िन्दगी
का कलाम थामे रखते हैं। फिर मैं मसीह की आमद
के दिन फ़ख़र कर सकूँगा कि न मैं रायगाँ दौड़ा, न
बेफ़ाइदा जिद्द-ओ-जह्द की।
17 देखें, जो ख़िदमत आप ईमान से सरअन्जाम दे
रहे हैं वह एक ऐसी क़ुर्बानी है जो अल्लाह को पसन्द
है। ख़ुदा करे कि जो दुख मैं उठा रहा हूँ वह मै की उस
नज़र की मानिन्द हो जो बैत-उल-मुक़द्दस में क़ुर्बानी
पर उंडेली जाती है। अगर मेरी नज़र वाक़ई आप की
क़ुर्बानी यूँ मुकम्मल करे तो मैं ख़ुश हूँ और आप के
साथ ख़ुशी मनाता हूँ। 18 आप भी इसी वजह से ख़ुश
हों और मेरे साथ ख़ुशी मनाएँ।

तीमुथियुस और इपफ़्रुदितुस को फ़िलिप्पियों के पास भेजा जाएगा

19 मुझे उम्मीद है कि अगर ख़ुदावन्द ईसा ने चाहा
तो मैं जल्द ही तीमुथियुस को आप के पास भेज दूँगा
ताकि आप के बारे में ख़बर पा कर मेरा हौसला
भी बढ़ जाए। 20 क्यूँकि मेरे पास कोई और नहीं
जिस की सोच बिलकुल मेरी जैसी है और जो इतनी
ख़ुलूसदिली से आप की फ़िक्र करे। 21 दूसरे सब
अपने मफ़ाद की तलाश में रहते हैं और वह कुछ
नज़रअन्दाज़ करते हैं जो ईसा मसीह का काम बढ़ाता
है। 22 लेकिन आप को तो मालूम है कि तीमुथियुस
क़ाबिल-ए-एतिमाद साबित हुआ, कि उस ने मेरा बेटा
बन कर मेरे साथ अल्लाह की ख़ुशख़बरी फैलाने की
ख़िदमत सरअन्जाम दी। 23 चुनाँचे उम्मीद है कि जूँ
ही मुझे पता चले कि मेरा क्या बनेगा मैं उसे आप के
पास भेज दूँगा। 24 और मेरा ख़ुदावन्द में ईमान है कि
मैं भी जल्द ही आप के पास आऊँगा।
25 लेकिन मैं ने ज़रूरी समझा कि इतने में
इपफ़्रुदितुस को आप के पास वापस भेज दूँ जिसे
आप ने क़ासिद के तौर पर मेरी ज़रूरियात पूरी करने
के लिए मेरे पास भेज दिया था। वह मेरा सच्चा भाई,
हमख़िदमत और साथी सिपाही साबित हुआ। 26 मैं
उसे इस लिए भेज रहा हूँ क्यूँकि वह आप सब का
निहायत आरज़ूमन्द है और इस लिए बेचैन है कि
आप को उस के बीमार होने की ख़बर मिल गई थी।
27 और वह था भी बीमार बल्कि मरने को था। लेकिन
अल्लाह ने उस पर रहम किया, और न सिर्फ़ उस पर
बल्कि मुझ पर भी ताकि मेरे दुख में इज़ाफ़ा न हो
जाए। 28 इस लिए मैं उसे और जल्दी से आप के पास
भेजूँगा ताकि आप उसे देख कर ख़ुश हो जाएँ और
मेरी परेशानी भी दूर हो जाए। 29 चुनाँचे ख़ुदावन्द में
बड़ी ख़ुशी से उस का इस्तिक़्बाल करें। उस जैसे
लोगों की इज़्ज़त करें, 30 क्यूँकि वह मसीह के काम
के बाइस मरने की नौबत तक पहुँच गया था। उस ने
अपनी जान ख़तरे में डाल दी ताकि आप की जगह
मेरी वह ख़िदमत करे जो आप न कर सके।

अल्लाह में ख़ुशी

3 1 मेरे भाइयो, जो कुछ भी हो, ख़ुदावन्द में ख़ुश
रहें। मैं आप को यह बात बताते रहने से कभी

थकता नहीं, क्यूँकि ऐसा करने से आप महफ़ूज़ रहते हैं।

यहूदियों से ख़बरदार

2 कुत्तों से ख़बरदार! उन शरीर मज़दूरों से होश्यार
रहना जो जिस्म की काँट-छाँट यानी ख़तना करवाते
हैं। 3 क्यूँकि हम ही हक़ीक़ी ख़तना के पैरोकार हैं, हम
ही हैं जो अल्लाह के रूह में परस्तिश करते, मसीह ईसा
पर फ़ख़र करते और इन्सानी ख़ूबियों पर भरोसा नहीं
करते।

पौलुस की शख़्सी गवाही

4 बात यह नहीं कि मेरा अपनी इन्सानी ख़ूबियों पर
भरोसा करने का कोई जवाज़ न होता। जब दूसरे
अपनी इन्सानी ख़ूबियों पर फ़ख़र करते हैं तो मैं उन
की निस्बत ज़्यादा कर सकता हूँ। 5 मेरा ख़तना हुआ
जब मैं अभी आठ दिन का बच्चा था। मैं इस्राईल क़ौम
के क़बीले बिनयमीन का हूँ, ऐसा इब्रानी जिस के
वालिदैन भी इब्रानी थे। मैं फ़रीसियों का मैम्बर था जो
यहूदी शरीअत के कट्टर पैरोकार हैं। 6 मैं इतना सरगर्म
था कि मसीह की जमाअतों को ईज़ा पहुँचाई। हाँ, मैं
शरीअत पर अमल करने में रास्तबाज़ और बेइल्ज़ाम
था।

हक़ीक़ी फ़ाइदा

7 उस वक़्त यह सब कुछ मेरे नज़्दीक नफ़ा का
बाइस था, लेकिन अब मैं इसे मसीह में होने के बाइस
नुक़्सान ही समझता हूँ। 8 हाँ, बल्कि मैं सब कुछ इस
अज़ीमतरीन बात के सबब से नुक़्सान समझता हूँ
कि मैं अपने ख़ुदावन्द मसीह ईसा को जानता हूँ।
उसी की ख़ातिर मुझे तमाम चीज़ों का नुक़्सान पहुँचा
है। मैं उन्हें कूड़ा ही समझता हूँ ताकि मसीह को
हासिल करूँ 9 और उस में पाया जाऊँ। लेकिन मैं
इस नौबत तक अपनी उस रास्तबाज़ी के ज़रीए नहीं
पहुँच सकता जो शरीअत के ताबे रहने से हासिल
होती है। इस के लिए वह रास्तबाज़ी ज़रूरी है जो
मसीह पर ईमान लाने से मिलती है, जो अल्लाह की
तरफ़ से है और जो ईमान पर मब्नी होती है। 10 हाँ,
मैं सब कुछ कूड़ा ही समझता हूँ ताकि मसीह को,
उस के जी उठने की क़ुदरत और उस के दुखों में
शरीक होने का फ़ज़्ल जान लूँ। यूँ मैं उस की मौत का
हमशक्ल बनता जा रहा हूँ, 11 इस उम्मीद में कि मैं
किसी न किसी तरह मुर्दों में से जी उठने की नौबत
तक पहुँचूँगा।

इनआम हासिल करने के लिए दौड़ें

12 मतलब यह नहीं कि मैं यह सब कुछ हासिल
कर चुका या कामिल हो चुका हूँ। लेकिन मैं मन्ज़िल-
ए-मक़सूद की तरफ़ दौड़ा हुआ जाता हूँ ताकि वह
कुछ पकड़ लूँ जिस के लिए मसीह ईसा ने मुझे पकड़
लिया है। 13 भाइयो, में अपने बारे में यह ख़याल नहीं
करता कि मैं इसे हासिल कर चुका हूँ। लेकिन मैं
इस एक ही बात पर ध्यान देता हूँ, जो कुछ मेरे पीछे
है वह मैं भूल कर सख़्त तग-ओ-दौ के साथ उस
तरफ़ बढ़ता हूँ जो आगे पड़ा है। 14 मैं सीधा मन्ज़िल-
ए-मक़सूद की तरफ़ दौड़ा हुआ जाता हूँ ताकि वह
इनआम हासिल करूँ जिस के लिए अल्लाह ने मुझे
मसीह ईसा में आसमान पर बुलाया है।

मसीह में पुख़्ता होना

15 चुनाँचे हम में से जितने कामिल हैं आएँ, हम ऐसी
सोच रखें। और अगर आप किसी बात में फ़र्क़ सोचते
हैं तो अल्लाह आप पर यह भी ज़ाहिर करेगा। 16 जो
भी हो, जिस मरहले तक हम पहुँच गए हैं आएँ, हम
उस के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारें।

17 भाइयो, मिल कर मेरे नक़्श-ए-क़दम पर चलें।
और उन पर ख़ूब ध्यान दें जो हमारे नमूने पर चलते हैं।
18 क्यूँकि जिस तरह मैं ने आप को कई बार बताया
है और अब रो रो कर बता रहा हूँ, बहुत से लोग
अपने चाल-चलन से ज़ाहिर करते हैं कि वह मसीह
की सलीब के दुश्मन हैं। 19 ऐसे लोगों का अन्जाम
हलाकत है। खाने-पीने की पाबन्दियाँ और ख़तने

पर फ़ख़र उन का ख़ुदा बन गया है। [o]हाँ, वह सिर्फ़
दुनियावी सोच रखते हैं। 20 लेकिन हम आसमान के
शहरी हैं, और हम शिद्दत से इस इन्तिज़ार में हैं कि
हमारा नजातदहिन्दा और ख़ुदावन्द ईसा मसीह वहीं
से आए। 21 उस वक़्त वह हमारे पस्तहाल बदनों
को बदल कर अपने जलाली बदन के हमशक्ल बना
देगा। और यह वह उस क़ुव्वत के ज़रीए करेगा जिस
से वह तमाम चीज़ें अपने ताबे कर सकता है।

हिदायात

4 1 चुनाँचे मेरे प्यारे भाइयो, जिन का आरज़ूमन्द
मैं हूँ और जो मेरी मुसर्रत का बाइस और मेरा
ताज हैं, ख़ुदावन्द में साबितक़दम रहें। अज़ीज़ो, 2 मैं
युवदिया और सुन्तुख़े से अपील करता हूँ कि वह
ख़ुदावन्द में एक जैसी सोच रखें। 3 हाँ मेरे हमख़िदमत
भाई, मेरी आप से गुज़ारिश है कि आप उन की मदद
करें। क्यूँकि वह अल्लाह की ख़ुशख़बरी फैलाने की
जिद्द-ओ-जह्द में मेरे साथ ख़िदमत करती रही हैं,
उस मुक़ाबले में जिस में क्लेमेंस और मेरे वह बाक़ी
मददगार भी शरीक थे जिन के नाम किताब-ए-हयात
में दर्ज हैं।

4 हर वक़्त ख़ुदावन्द में ख़ुशी मनाएँ। एक बार फिर
कहता हूँ, ख़ुशी मनाएँ।

5 आप की नर्मदिली तमाम लोगों पर ज़ाहिर हो।
याद रखें कि ख़ुदावन्द आने को है। 6 अपनी किसी
भी फ़िक्र में उलझ कर परेशान न हो जाएँ बल्कि हर
हालत में दुआ और इल्तिजा करके अपनी दरख़्वास्तें
अल्लाह के सामने पेश करें। ध्यान रखें कि आप
यह शुक्रगुज़ारी की रूह में करें। 7 फिर अल्लाह की
सलामती जो समझ से बाहर है आप के दिलों और
ख़यालात को मसीह ईसा में महफ़ूज़ रखेगी।

8 भाइयो, एक आख़िरी बात, जो कुछ सच्चा है, जो
कुछ शरीफ़ है, जो कुछ रास्त है, जो कुछ मुक़द्दस
है, जो कुछ पसन्दीदा है, जो कुछ उम्दा है, ग़रज़,
अगर कोई अख़्लाक़ी या क़ाबिल-ए-तारीफ़ बात हो
तो उस का ख़याल रखें। 9 जो कुछ आप ने मेरे वसीले
से सीख लिया, हासिल कर लिया, सुन लिया या देख
लिया है उस पर अमल करें। फिर सलामती का ख़ुदा
आप के साथ होगा।

जमाअत की माली इम्दाद के लिए शुक्रिया

10 मैं ख़ुदावन्द में निहायत ही ख़ुश हुआ कि अब
आख़िरकार आप की मेरे लिए फ़िक्रमन्दी दुबारा जाग
उठी है। हाँ, मुझे पता है कि आप पहले भी फ़िक्रमन्द
थे, लेकिन आप को इस का इज़हार करने का मौक़ा
नहीं मिला था। 11 मैं यह अपनी किसी ज़रूरत की
वजह से नहीं कह रहा, क्यूँकि मैं ने हर हालत में
ख़ुश रहने का राज़ सीख लिया है। 12 मुझे दबाए जाने
का तजरिबा हुआ है और हर चीज़ कस्रत से मुयस्सर
होने का भी। मुझे हर हालत से ख़ूब वाक़िफ़ किया
गया है, सेर होने से और भूका रहने से भी, हर चीज़
कस्रत से मुयस्सर होने से और ज़रूरतमन्द होने से
भी। 13 मसीह में मैं सब कुछ करने के क़ाबिल हूँ,
क्यूँकि वही मुझे तक़वियत देता रहता है।

14 तो भी अच्छा था कि आप मेरी मुसीबत में शरीक
हुए। 15 आप जो फ़िलिप्पी के रहने वाले हैं ख़ुद जानते
हैं कि उस वक़्त जब मसीह की मुनादी का काम आप
के इलाक़े में शुरू हुआ था और मैं सूबा मकिदुनिया
से निकल आया था तो सिर्फ़ आप की जमाअत पूरे
हिसाब-किताब के साथ पैसे दे कर मेरी ख़िदमत में
शरीक हुई। 16 उस वक़्त भी जब मैं थिस्सलुनीके
शहर में था आप ने कई बार मेरी ज़रूरियात पूरी
करने के लिए कुछ भेज दिया। 17 कहने का मतलब
यह नहीं कि मैं आप से कुछ पाना चाहता हूँ, बल्कि
मेरी शदीद ख़्वाहिश यह है कि आप के देने से आप ही
को अल्लाह से कस्रत का सूद मिल जाए। 18 यही मेरी
रसीद है। मैं ने पूरी रक़म वसूल पाई है बल्कि अब
मेरे पास ज़रूरत से ज़्यादा है। जब से मुझे इपफ़्रुदितुस

---

[o]लफ़्ज़ी तर्जुमा : उन का पेट और उन का अपनी शर्म पर फ़ख़र उन का ख़ुदा बन गया है।

के हाथ आप का हदिया मिल गया है मेरे पास बहुत
कुछ है। यह ख़ुश्बूदार और क़ाबिल-ए-क़बूल क़ुर्बानी
अल्लाह को पसन्दीदा है। 19 जवाब में मेरा ख़ुदा अपनी
उस जलाली दौलत के मुवाफ़िक़ जो मसीह ईसा में है
आप की तमाम ज़रूरियात पूरी करे। 20 अल्लाह हमारे
बाप का जलाल अज़ल से अबद तक हो। आमीन।

सलाम और बरकत

21 तमाम मक़ामी मुक़द्दसीन को मसीह ईसा में मेरा
सलाम देना। जो भाई मेरे साथ हैं वह आप को
सलाम कहते हैं। 22 यहाँ के तमाम मुक़द्दसीन आप
को सलाम कहते हैं, ख़ासकर शहन्शाह के घराने के
भाई और बहनें। 23 ख़ुदावन्द ईसा मसीह का फ़ज़्ल
आप की रूह के साथ रहे। आमीन।

कुलुस्सियों

1 [1] यह ख़त पौलुस की तरफ़ से है जो अल्लाह की
मर्ज़ी से मसीह ईसा का रसूल है। साथ ही यह
भाई तीमुथियुस की तरफ़ से भी है।
[2] मैं कुलुस्से शहर के मुक़द्दस भाइयों को लिख रहा
हूँ जो मसीह पर ईमान लाए हैं :
ख़ुदा हमारा बाप आप को फ़ज़्ल और सलामती
बख़्शे।

शुक्रगुज़ारी की दुआ

[3] जब हम आप के लिए दुआ करते हैं तो हर वक़्त
ख़ुदा अपने ख़ुदावन्द ईसा मसीह के बाप का शुक्र
करते हैं, [4] क्यूँकि हम ने आप के मसीह ईसा पर ईमान
और आप की तमाम मुक़द्दसीन से मुहब्बत के बारे
में सुन लिया है। [5] आप का यह ईमान और मुहब्बत
वह कुछ ज़ाहिर करते हैं जिस की आप उम्मीद रखते
हैं और जो आसमान पर आप के लिए महफ़ूज़ रखा
गया है। और आप ने यह उम्मीद उस वक़्त से रखी है
जब से आप ने पहली मर्तबा सच्चाई का कलाम यानी
अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनी। [6] यह पैग़ाम जो आप के
पास पहुँच गया पूरी दुनिया में फल ला रहा और बढ़
रहा है, बिलकुल उसी तरह जिस तरह यह आप में भी
उस दिन से काम कर रहा है जब आप ने पहली बार
इसे सुन कर अल्लाह के फ़ज़्ल की पूरी हक़ीक़त समझ
ली। [7] आप ने हमारे अज़ीज़ हमख़िदमत इपफ़्रास से
इस ख़ुशख़बरी की तालीम पा ली थी। मसीह का यह
वफ़ादार ख़ादिम हमारी जगह आप की ख़िदमत कर
रहा है। [8] उसी ने हमें आप की उस मुहब्बत के बारे में
बताया जो रूह-उल-क़ुद्स ने आप के दिलों में डाल
दी है।
[9] इस वजह से हम आप के लिए दुआ करने से
बाज़ नहीं आए बल्कि यह माँगते रहते हैं कि अल्लाह
आप को हर रुहानी हिक्मत और समझ से नवाज़
कर अपनी मर्ज़ी के इल्म से भर दे। [10] क्यूँकि फिर
ही आप अपनी ज़िन्दगी ख़ुदावन्द के लाइक़ गुज़ार
सकेंगे और हर तरह से उसे पसन्द आएँगे। हाँ, आप
हर क़िस्म का अच्छा काम करके फल लाएँगे और
अल्लाह के इल्म-ओ-इर्फ़ान में तरक़्क़ी करेंगे। [11] और
आप उस की जलाली क़ुदरत से मिलने वाली हर
क़िस्म की क़ुव्वत से तक़वियत पा कर हर वक़्त
साबितक़दमी और सब्र से चल सकेंगे। आप ख़ुशी से
[12] बाप का शुक्र करेंगे जिस ने आप को उस मीरास में
हिस्सा लेने के लाइक़ बना दिया जो उस के रौशनी में
रहने वाले मुक़द्दसीन को हासिल है। [13] क्यूँकि वही
हमें तारीकी के इख़तियार से रिहाई दे कर अपने प्यारे
फ़र्ज़न्द की बादशाही में लाया, [14] उस वाहिद शख़्स
के इख़तियार में जिस ने हमारा फ़िद्या दे कर हमारे
गुनाहों को मुआफ़ कर दिया।

मसीह की शख़्सियत और काम

[15] अल्लाह को देखा नहीं जा सकता, लेकिन हम
मसीह को देख सकते हैं जो अल्लाह की सूरत और
काइनात का पहलौठा है। [16] क्यूँकि अल्लाह ने उसी
में सब कुछ ख़ल्क़ किया, ख़्वाह आसमान पर हो
या ज़मीन पर, आँखों को नज़र आए या न, ख़्वाह
शाही तख़्त, क़ुव्वतें, हुक्मरान या इख़तियार वाले हूँ।
सब कुछ मसीह के ज़रीए और उसी के लिए ख़ल्क़
हुआ। [17] वही सब चीज़ों से पहले है और उसी में सब
कुछ क़ाइम रहता है। [18] और वह बदन यानी अपनी
जमाअत का सर भी है। वही इब्तिदा है, और चूँकि
पहले वही मुर्दों में से जी उठा इस लिए वही उन में
से पहलौठा भी है ताकि वह सब बातों में अव्वल
हो। [19] क्यूँकि अल्लाह को पसन्द आया कि मसीह में
उस की पूरी मामूरी सुकूनत करे [20] और वह मसीह
के ज़रीए सब बातों की अपने साथ सुलह करा ले,

ख़्वाह वह ज़मीन की हूँ ख़्वाह आसमान की। क्यूँकि उस ने मसीह के सलीब पर बहाए गए ख़ून के वसीले से सुलह-सलामती क़ाइम की।

21 आप भी पहले अल्लाह के सामने अजनबी थे और दुश्मन की सी सोच रख कर बुरे काम करते थे। 22 लेकिन अब उस ने मसीह के इन्सानी बदन की मौत से आप के साथ सुलह कर ली है ताकि वह आप को मुक़द्दस, बेदाग़ और बेइल्ज़ाम हालत में अपने हुज़ूर खड़ा करे। 23 बेशक अब ज़रूरी है कि आप ईमान में क़ाइम रहें, कि आप ठोस बुन्याद पर मज़बूती से खड़े रहें और उस ख़ुशख़बरी की उम्मीद से हट न जाएँ जो आप ने सुन ली है। यह वही पैग़ाम है जिस की मुनादी दुनिया में हर मख़्लूक़ के सामने कर दी गई है और जिस का ख़ादिम मैं पौलुस बन गया हूँ।

जमाअत के ख़ादिम की हैसियत से पौलुस की ख़िदमत

24 अब मैं उन दुखों के बाइस ख़ुशी मनाता हूँ जो मैं आप की ख़ातिर उठा रहा हूँ। क्यूँकि मैं अपने जिस्म में मसीह के बदन यानी उस की जमाअत की ख़ातिर मसीह की मुसीबतों की वह कमियाँ पूरी कर रहा हूँ जो अब तक रह गई हैं। 25 हाँ, अल्लाह ने मुझे अपनी जमाअत का ख़ादिम बना कर यह ज़िम्मादारी दी कि मैं आप को अल्लाह का पूरा कलाम सुना दूँ, 26 वह राज़ जो अज़ल से तमाम गुज़री नस्लों से पोशीदा रहा था लेकिन अब मुक़द्दसीन पर ज़ाहिर किया गया है। 27 क्यूँकि अल्लाह चाहता था कि वह जान लें कि ग़ैरयहूदियों में यह राज़ कितना बेशक़ीमत और जलाली है। और यह राज़ है क्या? यह कि मसीह आप में है। वही आप में है जिस के बाइस हम अल्लाह के जलाल में शरीक होने की उम्मीद रखते हैं। 28 यूँ हम सब को मसीह का पैग़ाम सुनाते हैं। हर मुमकिना हिक्मत से हम उन्हें समझाते और तालीम देते हैं ताकि हर एक को मसीह में कामिल हालत में अल्लाह के हुज़ूर पेश करें। 29 यही मक़्सद पूरा करने के लिए मैं सख़्त मेहनत करता हूँ। हाँ, मैं पूरी जिद्द-ओ-जह्द करके मसीह की उस क़ुव्वत का सहारा लेता हूँ जो बड़े ज़ोर से मेरे अन्दर काम कर रही है।

2 1 मैं चाहता हूँ कि आप जान लें कि मैं आप के लिए किस क़दर जाँफ़िशानी कर रहा हूँ - आप के लिए, लौदीकिया वालों के लिए और उन तमाम ईमानदारों के लिए भी जिन की मेरे साथ मुलाक़ात नहीं हुई। 2 मेरी कोशिश यह है कि उन की दिली हौसलाअफ़ज़ाई की जाए और वह मुहब्बत में एक हो जाएँ, कि उन्हें वह ठोस एतिमाद हासिल हो जाए जो पूरी समझ से पैदा होता है। क्यूँकि मैं चाहता हूँ कि वह अल्लाह का राज़ जान लें। राज़ क्या है? मसीह ख़ुद। 3 उसी में हिक्मत और इल्म-ओ-इर्फ़ान के तमाम ख़ज़ाने पोशीदा हैं।

4 ग़रज़ ख़बरदार रहें कि कोई आप को बज़ाहिर सहीह और मीठे मीठे अल्फ़ाज़ से धोका न दे। 5 क्यूँकि गो मैं जिस्म के लिहाज़ से हाज़िर नहीं हूँ, लेकिन रूह में मैं आप के साथ हूँ। और मैं यह देख कर ख़ुश हूँ कि आप कितनी मुनज़्ज़म ज़िन्दगी गुज़ारते हैं, कि आप का मसीह पर ईमान कितना पुख़्ता है।

मसीह में ज़िन्दगी

6 आप ने ईसा मसीह को ख़ुदावन्द के तौर पर क़बूल कर लिया है। अब उस में ज़िन्दगी गुज़ारें। 7 उस में जड़ पकड़ें, उस पर अपनी ज़िन्दगी तामीर करें, उस ईमान में मज़बूत रहें जिस की आप को तालीम दी गई है और शुक्रगुज़ारी से लबरेज़ हो जाएँ।

8 मुह्तात रहें कि कोई आप को फ़ल्सफ़ियाना और महज़ फ़रेब देने वाली बातों से अपने जाल में न फंसा ले। ऐसी बातों का सरचश्मा मसीह नहीं बल्कि इन्सानी रिवायतें और इस दुनिया की क़ुव्वतें हैं। 9 क्यूँकि मसीह में उलूहियत की सारी मामूरी मुजस्सम हो कर सुकूनत करती है। 10 और आप को जो मसीह में हैं उस की मामूरी में शरीक कर दिया गया है। वही हर हुक्मरान और इख़्तियार वाले का सर है।

11 उस में आते वक़्त आप का ख़तना भी करवाया
गया। लेकिन यह ख़तना इन्सानी हाथों से नहीं किया
गया बल्कि मसीह के वसीले से। उस वक़्त आप की
पुरानी फ़ित्रत उतार दी गई, 12 आप को बपतिस्मा
दे कर मसीह के साथ दफ़नाया गया और आप को
ईमान से ज़िन्दा कर दिया गया। क्यूँकि आप अल्लाह
की क़ुदरत पर ईमान लाए थे, उसी क़ुदरत पर जिस
ने मसीह को मुर्दों में से ज़िन्दा कर दिया था। 13 पहले
आप अपने गुनाहों और नामख़्तून जिस्मानी हालत
के सबब से मुर्दा थे, लेकिन अब अल्लाह ने आप को
मसीह के साथ ज़िन्दा कर दिया है। उस ने हमारे
तमाम गुनाहों को मुआफ़ कर दिया है। 14 हमारे क़र्ज़
की जो रसीद अपनी शराइत की बिना पर हमारे
ख़िलाफ़ थी उसे उस ने मन्सूख़ कर दिया। हाँ, उस ने
हम से दूर करके उसे कीलों से सलीब पर जड़ दिया।
15 उस ने हुक्मरानों और इख़तियार वालों से उन का
असलिहा छीन कर सब के सामने उन की रुस्वाई
की। हाँ, मसीह की सलीबी मौत से वह अल्लाह के
क़ैदी बन गए और उन्हें फ़त्ह के जुलूस में उस के
पीछे पीछे चलना पड़ा।

16 चुनाँचे कोई आप को इस वजह से मुजरिम न
ठहराए कि आप क्या क्या खाते-पीते या कौन कौन
सी ईदें मनाते हैं। इसी तरह कोई आप की अदालत न
करे अगर आप हिलाल की ईद या सबत का दिन नहीं
मनाते। 17 यह चीज़ें तो सिर्फ़ आने वाली हक़ीक़त का
साया ही हैं जबकि यह हक़ीक़त ख़ुद मसीह में पाई
जाती है। 18 ऐसे लोग आप को मुजरिम न ठहराएँ जो
ज़ाहिरी फ़रोतनी और फ़रिश्तों की पूजा पर इसरार
करते हैं। बड़ी तफ़्सील से अपनी रोयाओं में देखी
हुई बातें बयान करते करते उन के ग़ैररुहानी ज़हन
ख़्वाह-म-ख़्वाह फूल जाते हैं। 19 यूँ उन्हों ने मसीह
के साथ लगे रहना छोड़ दिया अगरचे वह बदन का
सर है। वही जोड़ों और पट्ठों के ज़रीए पूरे बदन को
सहारा दे कर उस के मुख़्तलिफ़ हिस्सों को जोड़ देता
है। यूँ पूरा बदन अल्लाह की मदद से तरक़्क़ी करता
जाता है।

मसीह के साथ मरना और ज़िन्दगी गुज़ारना

20 आप तो मसीह के साथ मर कर दुनिया की
कुव्वतों से आज़ाद हो गए हैं। अगर ऐसा है तो आप
ज़िन्दगी ऐसे क्यूँ गुज़ारते हैं जैसे कि आप अभी तक
इस दुनिया की मिलकियत हैं? आप क्यूँ इस के
अह्काम के ताबे रहते हैं? 21 मसलन "इसे हाथ न
लगाना, वह न चखना, यह न छूना।" 22 इन तमाम
चीज़ों का मक़्सद तो यह है कि इस्तेमाल हो कर
ख़त्म हो जाएँ। यह सिर्फ़ इन्सानी अह्काम और
तालीमात हैं। 23 बेशक यह अह्काम जो घड़े हुए
मज़्हबी फ़राइज़, नाम-निहाद फ़रोतनी और जिस्म के
सख़्त दबाओ का तक़ाज़ा करते हैं हिक्मत पर मब्नी
तो लगते हैं, लेकिन यह बेकार हैं और सिर्फ़ जिस्म
ही की ख़्वाहिशात पूरी करते हैं।

3 1 आप को मसीह के साथ ज़िन्दा कर दिया गया
है, इस लिए वह कुछ तलाश करें जो आसमान
पर है जहाँ मसीह अल्लाह के दहने हाथ बैठा है।
2 दुनियावी चीज़ों को अपने ख़यालों का मर्कज़ न
बनाएँ बल्कि आसमानी चीज़ों को। 3 क्यूँकि आप
मर गए हैं और अब आप की ज़िन्दगी मसीह के साथ
अल्लाह में पोशीदा है। 4 मसीह ही आप की ज़िन्दगी
है। जब वह ज़ाहिर हो जाएगा तो आप भी उस के साथ
ज़ाहिर हो कर उस के जलाल में शरीक हो जाएंगे।

पुरानी और नई ज़िन्दगी

5 चुनाँचे उन दुनियावी चीज़ों को मार डालें जो आप
के अन्दर काम कर रही हैं : ज़िनाकारी, नापाकी,
शहवतपरस्ती, बुरी ख़्वाहिशात और लालच (लालच
तो एक क़िस्म की बुतपरस्ती है)। 6 अल्लाह का ग़ज़ब
ऐसी ही बातों की वजह से नाज़िल होगा। 7 एक वक़्त
था जब आप भी इन के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारते थे,
जब आप की ज़िन्दगी इन के क़ाबू में थी।

8 लेकिन अब वक़्त आ गया है कि आप यह सब
कुछ यानी ग़ुस्सा, तैश, बदसुलूकी, बुह्तान और
गन्दी ज़बान ख़स्ताहाल कपड़े की तरह उतार कर

फैंक दें। 9 एक दूसरे से बात करते वक़्त झूट मत
बोलना, क्यूँकि आप ने अपनी पुरानी फ़ित्रत उस की
हरकतों समेत उतार दी है। 10 साथ साथ आप ने नई
फ़ित्रत पहन ली है, वह फ़ित्रत जिस की तज्दीद हमारा
ख़ालिक़ अपनी सूरत पर करता जा रहा है ताकि आप
उसे और बेहतर तौर पर जान लें। 11 जहाँ यह काम
हो रहा है वहाँ लोगों में कोई फ़र्क़ नहीं है, ख़्वाह
कोई ग़ैरयहूदी हो या यहूदी, मख़्तून हो या नामख़्तून,
ग़ैरयूनानी हो या स्कूती, [P]ग़ुलाम हो या आज़ाद। कोई
फ़र्क़ नहीं पड़ता, सिर्फ़ मसीह ही सब कुछ और सब
में है।

12 अल्लाह ने आप को चुन कर अपने लिए मख़्सूस-
ओ-मुक़द्दस कर लिया है। वह आप से मुहब्बत रखता
है। इस लिए अब तरस, नेकी, फ़रोतनी, नर्मदिली
और सब्र को पहन लें। 13 एक दूसरे को बर्दाश्त
करें, और अगर आप की किसी से शिकायत हो तो
उसे मुआफ़ कर दें। हाँ, यूँ मुआफ़ करें जिस तरह
ख़ुदावन्द ने आप को मुआफ़ कर दिया है। 14 इन
के इलावा मुहब्बत भी पहन लें जो सब कुछ बांध
कर कामिलियत की तरफ़ ले जाती है। 15 मसीह
की सलामती आप के दिलों में हुकूमत करे। क्यूँकि
अल्लाह ने आप को इसी सलामती की ज़िन्दगी गुज़ारने
के लिए बुला कर एक बदन में शामिल कर दिया है।
शुक्रगुज़ार भी रहें। 16 आप की ज़िन्दगी में मसीह के
कलाम की पूरी दौलत घर कर जाए। एक दूसरे को
हर तरह की हिक्मत से तालीम देते और समझाते रहें।
साथ साथ अपने दिलों में अल्लाह के लिए शुक्रगुज़ारी
के साथ ज़बूर, हम्द-ओ-सना और रुहानी गीत गाते
रहें। 17 और जो कुछ भी आप करें ख़्वाह ज़बानी हो
या अमली वह ख़ुदावन्द ईसा का नाम ले कर करें।
हर काम में उसी के वसीले से ख़ुदा बाप का शुक्र
करें।

नई ज़िन्दगी में ताल्लुक़ात कैसे हूँ

18 बीवियो, अपने शौहर के ताबे रहें, क्यूँकि जो
ख़ुदावन्द में है उस के लिए यही मुनासिब है।

19 शौहरो, अपनी बीवियों से मुहब्बत रखें। उन से
तल्ख़मिज़ाजी से पेश न आएँ।

20 बच्चो, हर बात में अपने माँ-बाप के ताबे रहें,
क्यूँकि यही ख़ुदावन्द को पसन्द है।

21 वालिदो, अपने बच्चों को मुश्तइल न करें, वर्ना
वह बेदिल हो जाएंगे।

22 ग़ुलामो, हर बात में अपने दुनियावी मालिकों
के ताबे रहें। न सिर्फ़ उन के सामने ही और उन्हें
ख़ुश रखने के लिए ख़िदमत करें बल्कि ख़ुलूसदिली
और ख़ुदावन्द का ख़ौफ़ मान कर काम करें। 23 जो
कुछ भी आप करते हैं उसे पूरी लगन के साथ करें,
इस तरह जैसा कि आप न सिर्फ़ इन्सानों की बल्कि
ख़ुदावन्द की ख़िदमत कर रहे हूँ। 24 आप तो जानते
हैं कि ख़ुदावन्द आप को इस के मुआवज़े में वह
मीरास देगा जिस का वादा उस ने किया है। हक़ीक़त
में आप ख़ुदावन्द मसीह की ही ख़िदमत कर रहे हैं।
25 लेकिन जो ग़लत काम करे उसे अपनी ग़लतियों
का मुआवज़ा भी मिलेगा। अल्लाह तो किसी की भी
जानिबदारी नहीं करता।

4 1 मालिको, अपने ग़ुलामों के साथ मुन्सिफ़ाना
और जाइज़ सुलूक करें। आप तो जानते हैं कि
आसमान पर आप का भी मालिक है।

हिदायात

2 दुआ में लगे रहें। और दुआ करते वक़्त
शुक्रगुज़ारी के साथ जागते रहें। 3 साथ साथ हमारे
लिए भी दुआ करें ताकि अल्लाह हमारे लिए कलाम
सुनाने का दरवाज़ा खोले और हम मसीह का राज़
पेश कर सकें। आख़िर मैं इसी राज़ की वजह से क़ैद

[P]एक क़बीला जो ज़लील समझा जाता था।

में हूँ। 4 दुआ करें कि मैं इसे यूँ पेश करूँ जिस तरह
करना चाहिए, कि इसे साफ़ समझा जा सके।
5 जो अब तक ईमान न लाए हों उन के साथ
दानिशमन्दाना सुलूक करें। इस सिलसिले में हर
मौक़े से फ़ाइदा उठाएँ। 6 आप की गुफ़्तगु हर वक़्त
मेहरबान हो, ऐसी कि मज़ा आए और आप हर एक
को मुनासिब जवाब दे सकें।

आख़िरी सलाम-ओ-दुआ

7 जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है हमारा अज़ीज़ भाई
तुख़िकुस आप को सब कुछ बता देगा। वह एक
वफ़ादार ख़ादिम और ख़ुदावन्द में हमख़िदमत रहा
है। 8 मैं ने उसे ख़ासकर इस लिए आप के पास भेज
दिया ताकि आप को हमारा हाल मालूम हो जाए
और वह आप की हौसलाअफ़ज़ाई करे। 9 वह हमारे
वफ़ादार और अज़ीज़ भाई उनेसिमुस के साथ आप
के पास आ रहा है, वही जो आप की जमाअत से है।
दोनों आप को वह सब कुछ सुना देंगे जो यहाँ हो
रहा है।
10 अरिस्तर्ख़ुस जो मेरे साथ क़ैद में है आप को
सलाम कहता है और इसी तरह बर्नबास का कज़न
[1]मर्क़ुस भी। (आप को उस के बारे में हिदायात दी गई
हैं। जब वह आप के पास आए तो उसे ख़ुशआमदीद
कहना।) 11 ईसा जो यूस्तुस कहलाता है भी आप को
सलाम कहता है। उन में से जो मेरे साथ अल्लाह की
बादशाही में ख़िदमत कर रहे हैं सिर्फ़ यह तीन मर्द
यहूदी हैं। और यह मेरे लिए तसल्ली का बाइस रहे हैं।
12 मसीह ईसा का ख़ादिम इपफ़्रास भी जो आप की
जमाअत से है सलाम कहता है। वह हर वक़्त बड़ी
जिद्द-ओ-जह्द के साथ आप के लिए दुआ करता है।
उस की ख़ास दुआ यह है कि आप मज़बूती के साथ
खड़े रहें, कि आप बालिग़ मसीही बन कर हर बात में
अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ चलें। 13 मैं ख़ुद इस की
तस्दीक़ कर सकता हूँ कि उस ने आप के लिए सख़्त
मेहनत की है बल्कि लौदीकिया और हियरापुलिस
की जमाअतों के लिए भी। 14 हमारे अज़ीज़ डाक्टर
लूक़ा और देमास आप को सलाम कहते हैं।
15 मेरा सलाम लौदीकिया की जमाअत को देना
और इसी तरह नुम्फ़ास को उस जमाअत समेत जो
उस के घर में जमा होती है। 16 यह पढ़ने के बाद
ध्यान दें कि लौदीकिया की जमाअत में भी यह ख़त
पढ़ा जाए और आप लौदीकिया का ख़त भी पढ़ें।
17 अर्ख़िप्पुस को बता देना, ख़बरदार कि आप वह
ख़िदमत तक्मील तक पहुँचाएँ जो आप को ख़ुदावन्द
में सौंपी गई है।
18 मैं अपने हाथ से यह अल्फ़ाज़ लिख रहा हूँ। मेरी
यानी पौलुस की तरफ़ से सलाम। मेरी ज़न्जीरें मत
भूलना! अल्लाह का फ़ज़्ल आप के साथ होता रहे।

---

[1]यूनानी लफ़्ज़ से ज़ाहिर नहीं होता कि मर्क़ुस चचा, मामूँ, फूफी या ख़ाला का लड़का है।

१-थिस्सलुनीकियों

1 1 यह ख़त पौलुस, सिल्वानुस और तीमुथियुस
की तरफ़ से है।
हम थिस्सलुनीकियों की जमाअत को लिख रहे हैं,
उन्हें जो ख़ुदा बाप और ख़ुदावन्द ईसा मसीह पर
ईमान लाए हैं।
अल्लाह आप को फ़ज़्ल और सलामती बख़्शे।

थिस्सलुनीकियों की ज़िन्दगी और ईमान

2 हम हर वक़्त आप सब के लिए ख़ुदा का शुक्र
करते और अपनी दुआओं में आप को याद करते
रहते हैं। 3 हमें अपने ख़ुदा बाप के हुज़ूर ख़ासकर
आप का अमल, मेहनत-मशक़्क़त और साबितक़दमी
याद आती रहती है। आप अपना ईमान कितनी
अच्छी तरह अमल में लाए, आप ने मुहब्बत की
रूह में कितनी मेहनत-मशक़्क़त की और आप ने
कितनी साबितक़दमी दिखाई, ऐसी साबितक़दमी
जो सिर्फ़ हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह पर उम्मीद ही
दिला सकती है। 4 भाइयो, अल्लाह आप से मुहब्बत
रखता है, और हमें पूरा इल्म है कि उस ने आप को
वाक़ई चुन लिया है। 5 क्यूँकि जब हम ने अल्लाह की
ख़ुशख़बरी आप तक पहुँचाई तो न सिर्फ़ बातें करके
बल्कि क़ुव्वत के साथ, रूह-उल-क़ुदस में और पूरे
एतिमाद के साथ। आप जानते हैं कि जब हम आप के
पास थे तो हम ने किस तरह की ज़िन्दगी गुज़ारी। जो
कुछ हम ने किया वह आप की ख़ातिर किया। 6 उस
वक़्त आप हमारे और ख़ुदावन्द के नमूने पर चलने
लगे। अगरचे आप बड़ी मुसीबत में पड़ गए तो भी
आप ने हमारे पैग़ाम को उस ख़ुशी के साथ क़बूल
किया जो सिर्फ़ रूह-उल-क़ुद्स दे सकता है। 7 यूँ
आप सूबा मकिदुनिया और सूबा अख़या के तमाम
ईमानदारों के लिए नमूना बन गए। 8 ख़ुदावन्द के
पैग़ाम की आवाज़ आप में से निकल कर न सिर्फ़
मकिदुनिया और अख़या में सुनाई दी, बल्कि यह
ख़बर कि आप अल्लाह पर ईमान रखते हैं हर जगह
तक पहुँच गई है। नतीजे में हमें कुछ कहने की
ज़रूरत नहीं रही, 9 क्यूँकि लोग हर जगह बात कर रहे
हैं कि आप ने हमें किस तरह ख़ुशआमदीद कहा है,
कि आप ने किस तरह बुतों से मुँह फेर कर अल्लाह की
तरफ़ रुजू किया ताकि ज़िन्दा और हक़ीक़ी ख़ुदा की
ख़िदमत करें। 10 लोग यह भी कह रहे हैं कि अब आप
इस इन्तिज़ार में हैं कि अल्लाह का फ़र्ज़न्द आसमान
पर से आए यानी ईसा जिसे अल्लाह ने मुर्दों में से ज़िन्दा
कर दिया और जो हमें आने वाले ग़ज़ब से बचाएगा।

थिस्सलुनीके में पौलुस का काम

2 1 भाइयो, आप जानते हैं कि हमारा आप के
पास आना बेफ़ाइदा न हुआ। 2 आप उस दुख
से भी वाक़िफ़ हैं जो हमें आप के पास आने से
पहले सहना पड़ा, कि फ़िलिप्पी शहर में हमारे साथ
कितनी बदसुलूकी हुई थी। तो भी हम ने अपने ख़ुदा
की मदद से आप को उस की ख़ुशख़बरी सुनाने की
जुरअत की हालाँकि बहुत मुख़ालफ़त का सामना
करना पड़ा। 3 क्यूँकि जब हम आप को उभारते हैं
तो इस के पीछे न तो कोई ग़लत नीयत होती है, न
कोई नापाक मक़्सद या चालाकी। 4 नहीं, अल्लाह ने
ख़ुद हमें जाँच कर इस लाइक़ समझा कि हम उस की
ख़ुशख़बरी सुनाने की ज़िम्मादारी सँभालें। इसी बिना
पर हम बोलते हैं, इन्सानों को ख़ुश रखने के लिए
नहीं बल्कि अल्लाह को जो हमारे दिलों को परखता है।
5 आप को भी मालूम है कि हम ने न ख़ुशामद से काम
लिया, न हम पस-ए-पर्दा लालची थे - अल्लाह हमारा
गवाह है! 6 हम इस मक़्सद से काम नहीं कर रहे थे
कि लोग हमारी इज़्ज़त करें, ख़्वाह आप हों या दीगर
लोग। 7 मसीह के रसूलों की हैसियत से हम आप

के लिए माली बोझ बन सकते थे, लेकिन हम आप
के दरमियान होते हुए नर्मदिल रहे, ऐसी माँ की तरह
जो अपने छोटे बच्चों की परवरिश करती है। 8 हमारी
आप के लिए चाहत इतनी शदीद थी कि हम आप को
न सिर्फ़ अल्लाह की ख़ुशख़बरी की बरकत में शरीक
करने को तय्यार थे बल्कि अपनी ज़िन्दगियों में भी।
हाँ, आप हमें इतने अज़ीज़ थे! 9 भाइयो, बेशक आप
को याद है कि हम ने कितनी सख़्त मेहनत-मशक़्क़त
की। दिन रात हम काम करते रहे ताकि अल्लाह की
ख़ुशख़बरी सुनाते वक़्त किसी पर बोझ न बनें।

10 आप और अल्लाह हमारे गवाह हैं कि आप ईमान
लाने वालों के साथ हमारा सुलूक कितना मुक़द्दस,
रास्त और बेइल्ज़ाम था। 11 क्यूँकि आप जानते हैं कि
हम ने आप में से हर एक से ऐसा सुलूक किया जैसा
बाप अपने बच्चों के साथ करता है। 12 हम आप की
हौसलाअफ़्ज़ाई करते, आप को तसल्ली देते और आप
को समझाते रहे कि आप अल्लाह के लाइक़ ज़िन्दगी
गुज़ारें, क्यूँकि वह आप को अपनी बादशाही और
जलाल में हिस्सा लेने के लिए बुलाता है।

13 एक और वजह है कि हम हर वक़्त ख़ुदा का
शुक्र करते हैं। जब हम ने आप तक अल्लाह का पैग़ाम
पहुँचाया तो आप ने उसे सुन कर यूँ क़बूल किया
जैसा यह हक़ीक़त में है यानी अल्लाह का कलाम जो
इन्सानों की तरफ़ से नहीं है और जो आप ईमानदारों
में काम कर रहा है। 14 भाइयो, न सिर्फ़ यह बल्कि
आप यहूदिया में अल्लाह की उन जमाअतों के नमूने
पर चल पड़े जो मसीह ईसा में हैं। क्यूँकि आप को
अपने हमवतनों के हाथों वह कुछ सहना पड़ा जो
उन्हें पहले ही अपने हमवतन यहूदियों से सहना पड़ा
था। 15 हाँ, यहूदियों ने न सिर्फ़ ख़ुदावन्द ईसा और
नबियों को क़त्ल किया बल्कि हमें भी अपने बीच
में से निकाल दिया। यह लोग अल्लाह को पसन्द नहीं
आते और तमाम लोगों के ख़िलाफ़ हो कर 16 हमें
इस से रोकने की कोशिश करते हैं कि ग़ैरयहूदियों
को अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाएँ, ऐसा न हो कि वह
नजात पाएँ। यूँ वह हर वक़्त अपने गुनाहों का प्याला
किनारे तक भरते जा रहे हैं। लेकिन अल्लाह का पूरा
ग़ज़ब उन पर नाज़िल हो चुका है।

पौलुस की उन से दुबारा मिलने की ख़्वाहिश

17 भाइयो, जब हमें कुछ देर के लिए आप से अलग
कर दिया गया (गो हम दिल से आप के साथ रहे) तो
हम ने बड़ी आर्ज़ू से आप से मिलने की पूरी कोशिश
की। 18 क्यूँकि हम आप के पास आना चाहते थे।
हाँ, मैं पौलुस ने बार बार आने की कोशिश की,
लेकिन इब्लीस ने हमें रोक लिया। 19 आख़िर आप
ही हमारी उम्मीद और ख़ुशी का बाइस हैं। आप ही
हमारा इनआम और हमारा ताज हैं जिस पर हम अपने
ख़ुदावन्द ईसा के हुज़ूर फ़ख़र करेंगे जब वह आएगा।
20 हाँ, आप हमारा जलाल और ख़ुशी हैं।

3 1 आख़िरकार हम यह हालत मज़ीद बर्दाश्त न
कर सके। हम ने फ़ैसला किया कि अकेले ही
अथेने में रह कर 2 तीमुथियुस को भेज देंगे जो हमारा
भाई और मसीह की ख़ुशख़बरी फैलाने में हमारे साथ
अल्लाह की ख़िदमत करता है। हम ने उसे भेज दिया
ताकि वह आप को मज़बूत करे और ईमान में आप
की हौसलाअफ़्ज़ाई करे 3 ताकि कोई इन मुसीबतों
से बेचैन न हो जाए। क्यूँकि आप ख़ुद जानते हैं कि
इन का सामना करना हमारे लिए अल्लाह की मर्ज़ी है।
4 बल्कि जब हम आप के पास थे तो हम ने इस की
पेशगोई की कि हमें मुसीबत बर्दाश्त करनी पड़ेगी।
और ऐसा ही हुआ जैसा कि आप ख़ूब जानते हैं।
5 यही वजह थी कि मैं ने तीमुथियुस को भेज दिया।
मैं यह हालात बर्दाश्त न कर सका, इस लिए मैं ने
उसे आप के ईमान को मालूम करने के लिए भेज
दिया। ऐसा न हो कि आज़माने वाले ने आप को
यूँ आज़माइश में डाल दिया हो कि हमारी आप पर
मेहनत ज़ाए जाए।

6 लेकिन अब तीमुथियुस लौट आया है, और वह
आप के ईमान और मुहब्बत के बारे में अच्छी ख़बर
ले कर आया है। उस ने हमें बताया कि आप हमें
बहुत याद करते हैं और हम से उतना ही मिलने

के आरज़ूमन्द हैं जितना कि हम आप से। 7 भाइयो,
आप और आप के ईमान के बारे में यह सुन कर
हमारी हौसलाअफ़्ज़ाई हुई, हालाँकि हम ख़ुद तरह
तरह के दबाओ और मुसीबतों में फंसे हुए हैं। 8 अब
हमारी जान में जान आ गई है, क्यूँकि आप मज़बूती
से ख़ुदावन्द में क़ाइम हैं। 9 हम आप की वजह से
अल्लाह के कितने शुक्रगुज़ार हैं! यह ख़ुशी नाक़ाबिल-
ए-बयान है जो हम आप की वजह से अल्लाह के हुज़ूर
महसूस करते हैं। 10 दिन रात हम बड़ी सन्जीदगी से
दुआ करते रहते हैं कि आप से दुबारा मिल कर वह
कमियाँ पूरी करें जो आप के ईमान में अब तक रह
गई हैं।

11 अब हमारा ख़ुदा और बाप ख़ुद और हमारा
ख़ुदावन्द ईसा रास्ता खोले ताकि हम आप तक पहुँच
सकें। 12 ख़ुदावन्द करे कि आप की एक दूसरे और
दीगर तमाम लोगों से मुहब्बत इतनी बढ़ जाए कि
वह यूँ दिल से छलक उठे जिस तरह आप के लिए
हमारी मुहब्बत भी छलक रही है। 13 क्यूँकि इस तरह
अल्लाह आप के दिलों को मज़बूत करेगा और आप
उस वक़्त हमारे ख़ुदा और बाप के हुज़ूर बेइल्ज़ाम
और मुक़द्दस साबित होंगे जब हमारा ख़ुदावन्द ईसा
अपने तमाम मुक़द्दसीन के साथ आएगा। आमीन।

अल्लाह को पसन्दीदा ज़िन्दगी

4 1 भाइयो, एक आख़िरी बात, आप ने हम से
सीख लिया था कि हमारी ज़िन्दगी किस तरह
होनी चाहिए ताकि वह अल्लाह को पसन्द आए।
और आप इस के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारते भी हैं।
अब हम ख़ुदावन्द ईसा में आप से दरख़्वास्त और
आप की हौसलाअफ़्ज़ाई करते हैं कि आप इस में
मज़ीद तरक़्क़ी करते जाएँ। 2 आप तो उन हिदायात
से वाक़िफ़ हैं जो हम ने आप को ख़ुदावन्द ईसा के
वसीले से दी थीं। 3 क्यूँकि अल्लाह की मर्ज़ी है कि
आप उस के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हों, कि आप
ज़िनाकारी से बाज़ रहें। 4 हर एक अपने बदन पर
यूँ क़ाबू पाना सीख ले कि वह मुक़द्दस और शरीफ़
ज़िन्दगी गुज़ार सके। 5 वह ग़ैरईमानदारों की तरह जो
अल्लाह से नावाक़िफ़ हैं शहवतपरस्ती का शिकार न
हो। 6 इस मुआमले में कोई अपने भाई का गुनाह न
करे, न उस से ग़लत फ़ाइदा उठाए। ख़ुदावन्द ऐसे
गुनाहों की सज़ा देता है। हम यह सब कुछ बता
चुके और आप को आगाह कर चुके हैं। 7 क्यूँकि
अल्लाह ने हमें नापाक ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए नहीं
बुलाया बल्कि मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस ज़िन्दगी गुज़ारने
के लिए। 8 इस लिए जो यह हिदायात रद्द करता है
वह इन्सान को नहीं बल्कि अल्लाह को रद्द करता है
जो आप को अपना मुक़द्दस रूह दे देता है।

9 यह लिखने की ज़रूरत नहीं कि आप दूसरे
ईमानदारों से मुहब्बत रखें। अल्लाह ने ख़ुद आप को
एक दूसरे से मुहब्बत रखना सिखाया है। 10 और
हक़ीक़तन आप मकिदुनिया के तमाम भाइयों से
ऐसी ही मुहब्बत रखते हैं। तो भी भाइयो, हम आप
की हौसलाअफ़्ज़ाई करना चाहते हैं कि आप इस
में मज़ीद तरक़्क़ी करते जाएँ। 11 अपनी इज़्ज़त इस
में बरक़रार रखें कि आप सुकून से ज़िन्दगी गुज़ारें,
अपने फ़राइज़ अदा करें और अपने हाथों से काम
करें, जिस तरह हम ने आप को कह दिया था। 12 जब
आप ऐसा करेंगे तो ग़ैरईमानदार आप की क़दर करेंगे
और आप किसी भी चीज़ के मुहताज नहीं रहेंगे।

ख़ुदावन्द की आमद

13 भाइयो, हम चाहते हैं कि आप उन के बारे में
हक़ीक़त जान लें जो सो गए हैं ताकि आप दूसरों
की तरह जिन की कोई उम्मीद नहीं मातम न करें।
14 हमारा ईमान है कि ईसा मर गया और दुबारा जी
उठा, इस लिए हमारा यह भी ईमान है कि जब ईसा
वापस आएगा तो अल्लाह उस के साथ उन ईमानदारों
को भी वापस लाएगा जो मौत की नींद सो गए हैं।

15 जो कुछ हम अब आप को बता रहे हैं वह
ख़ुदावन्द की तालीम है। ख़ुदावन्द की आमद पर
हम जो ज़िन्दा होंगे सोए हुए लोगों से पहले ख़ुदावन्द
से नहीं मिलेंगे। 16 उस वक़्त ऊँची आवाज़ से हुक्म

दिया जाएगा, फ़रिश्ता-ए-आज़म की आवाज़ सुनाई
देगी, अल्लाह का तुरम बजेगा और ख़ुदावन्द ख़ुद
आसमान पर से उतर आएगा। तब पहले वह जी उठेंगे
जो मसीह में मर गए थे। 17 इन के बाद ही हमें जो
ज़िन्दा होंगे बादलों पर उठा लिया जाएगा ताकि हवा
में ख़ुदावन्द से मिलें। फिर हम हमेशा ख़ुदावन्द के
साथ रहेंगे। 18 चुनाँचे इन अल्फ़ाज़ से एक दूसरे को
तसल्ली दिया करें।

ख़ुदावन्द की आमद के लिए तय्यार रहना

5 1 भाइयो, इस की ज़रूरत नहीं कि हम आप को
लिखें कि यह सब कुछ कब और किस मौक़े पर
होगा। 2 क्यूँकि आप ख़ुद ख़ूब जानते हैं कि ख़ुदावन्द
का दिन यूँ आएगा जिस तरह चोर रात के वक़्त घर
में घुस आता है। 3 जब लोग कहेंगे, "अब अम्न-ओ-
अमान है," तो हलाकत अचानक ही उन पर आन
पड़ेगी। वह इस तरह मुसीबत में पड़ जाएंगे जिस तरह
वह औरत जिस का बच्चा पैदा हो रहा है। वह हरगिज़
नहीं बच सकेंगे। 4 लेकिन आप भाइयो तारीकी की
गिरिफ़्त में नहीं हैं, इस लिए यह दिन चोर की तरह
आप पर ग़ालिब नहीं आना चाहिए। 5 क्यूँकि आप
सब रौशनी और दिन के फ़र्ज़न्द हैं। हमारा रात या
तारीकी से कोई वास्ता नहीं। 6 ग़रज़ आएँ, हम दूसरों
की मानिन्द न हों जो सोए हुए हैं बल्कि जागते रहें,
होशमन्द रहें। 7 क्यूँकि रात के वक़्त ही लोग सो जाते
हैं, रात के वक़्त ही लोग नशे में धुत हो जाते हैं।
8 लेकिन चूँकि हम दिन के हैं इस लिए आएँ हम होश
में रहें। लाज़िम है कि हम ईमान और मुहब्बत को
ज़िराबक्तर के तौर पर और नजात की उम्मीद को
ख़ोद के तौर पर पहन लें। 9 क्यूँकि अल्लाह ने हमें इस
लिए नहीं चुना कि हम पर अपना ग़ज़ब नाज़िल करे
बल्कि इस लिए कि हम अपने ख़ुदावन्द ईसा मसीह
के वसीले से नजात पाएँ। 10 उस ने हमारी ख़ातिर
अपनी जान दे दी ताकि हम उस के साथ जिएँ, ख़्वाह
हम उस की आमद के दिन मुर्दा हों या ज़िन्दा। 11 इस
लिए एक दूसरे की हौसलाअफ़्ज़ाई और तामीर करते
रहें, जैसा कि आप कर भी रहे हैं।

आख़िरी हिदायात और सलाम

12 भाइयो, हमारी दरख़्वास्त है कि आप उन की
क़दर करें जो आप के दरमियान सख़्त मेहनत करके
ख़ुदावन्द में आप की राहनुमाई और हिदायत करते
हैं। 13 उन की ख़िदमत को सामने रख कर प्यार से
उन की बड़ी इज़्ज़त करें। और एक दूसरे के साथ
मेल-मिलाप से ज़िन्दगी गुज़ारें।

14 भाइयो, हम इस पर ज़ोर देना चाहते हैं कि उन्हें
समझाएँ जो बेक़ाइदा ज़िन्दगी गुज़ारते हैं, उन्हें तसल्ली
दें जो जल्दी से मायूस हो जाते हैं, कमज़ोरों का
ख़याल रखें और सब को सब्र से बर्दाश्त करें। 15 इस
पर ध्यान दें कि कोई किसी से बुराई के बदले बुराई
न करे बल्कि आप हर वक़्त एक दूसरे और तमाम
लोगों के साथ नेक काम करने में लगे रहें।

16 हर वक़्त ख़ुश रहें, 17 बिलानाग़ा दुआ करें,
18 और हर हालत में ख़ुदा का शुक्र करें। क्यूँकि जब
आप मसीह में हैं तो अल्लाह यही कुछ आप से चाहता
है।

19 रूह-उल-क़ुद्स को मत बुझाएँ। 20 नबुव्वतों की
तह्क़ीर न करें। 21 सब कुछ परख कर वह थामे रखें
जो अच्छा है, 22 और हर क़िस्म की बुराई से बाज़
रहें।

23 अल्लाह ख़ुद जो सलामती का ख़ुदा है आप को पूरे
तौर पर मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करे। वह करे कि आप
पूरे तौर पर रूह, जान और बदन समेत उस वक़्त तक
मह्फ़ूज़ और बेइल्ज़ाम रहें जब तक हमारा ख़ुदावन्द
ईसा मसीह वापस नहीं आ जाता। 24 जो आप को
बुलाता है वह वफ़ादार है और वह ऐसा करेगा भी।

25 भाइयो, हमारे लिए दुआ करें।

26 तमाम भाइयों को हमारी तरफ़ से बोसा देना।

27 ख़ुदावन्द के हुज़ूर मैं आप को ताकीद करता हूँ
कि यह ख़त तमाम भाइयों के सामने पढ़ा जाए।

28 हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह का फ़ज़्ल आप के
साथ होता रहे।

२-थिस्सलुनीकियों

1 1 यह ख़त पौलुस, सिल्वानुस और तीमुथियुस
की तरफ़ से है।
हम थिस्सलुनीकियों की जमाअत को लिख रहे हैं,
उन्हें जो अल्लाह हमारे बाप और ख़ुदावन्द ईसा मसीह
पर ईमान लाए हैं।
2 ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावन्द ईसा मसीह आप
को फ़ज़्ल और सलामती बख़्शें।

मसीह की आमद पर अदालत

3 भाइयो, वाजिब है कि हम हर वक़्त आप के लिए
ख़ुदा का शुक्र करें। हाँ, यह मौज़ूँ है, क्यूँकि आप का
ईमान हैरतअंगेज़ तरक़्क़ी कर रहा है और आप सब
की एक दूसरे से मुहब्बत बढ़ रही है। 4 यही वजह
है कि हम अल्लाह की दीगर जमाअतों में आप पर
फ़ख़र करते हैं। हाँ, हम फ़ख़र करते हैं कि आप इन
दिनों में कितनी साबितक़दमी और ईमान दिखा रहे
हैं हालाँकि आप बहुत ईज़ारसानियाँ और मुसीबतें
बर्दाश्त कर रहे हैं।
5 यह सब कुछ साबित करता है कि अल्लाह की
अदालत रास्त है, और नतीजे में आप उस की
बादशाही के लाइक़ ठहरेंगे, जिस के लिए आप अब
दुख उठा रहे हैं। 6 अल्लाह वही कुछ करेगा जो रास्त
है। वह उन्हें मुसीबतों में डाल देगा जो आप को
मुसीबत में डाल रहे हैं, 7 और आप को जो मुसीबत
में हैं हमारे समेत आराम देगा। वह यह उस वक़्त
करेगा जब ख़ुदावन्द ईसा अपने क़वी फ़रिश्तों के
साथ आसमान पर से आ कर ज़ाहिर होगा 8 और
भड़कती हुई आग में उन्हें सज़ा देगा जो न अल्लाह को
जानते हैं, न हमारे ख़ुदावन्द ईसा की ख़ुशख़बरी के
ताबे हैं। 9 ऐसे लोग अबदी हलाकत की सज़ा पाएँगे,
वह हमेशा तक ख़ुदावन्द की हुज़ूरी और उस की
जलाली क़ुदरत से दूर हो जाएंगे। 10 लेकिन उस दिन
ख़ुदावन्द इस लिए भी आएगा कि अपने मुक़द्दसीन में
जलाल पाए और तमाम ईमानदारों में हैरत का बाइस
हो। आप भी उन में शामिल होंगे, क्यूँकि आप उस
पर ईमान लाए जिस की गवाही हम ने आप को दी।
11 यह पेश-ए-नज़र रख कर हम लगातार आप के
लिए दुआ करते हैं। हमारा ख़ुदा आप को उस बुलावे
के लाइक़ ठहराए जिस के लिए आप को बुलाया
गया है। और वह अपनी क़ुदरत से आप की नेकी
करने की हर ख़्वाहिश और आप के ईमान का हर
काम तक्मील तक पहुँचाए। 12 क्यूँकि इस तरह ही
हमारे ख़ुदावन्द ईसा का नाम आप में जलाल पाएगा
और आप भी उस में जलाल पाएँगे, उस फ़ज़्ल के
मुताबिक़ जो हमारे ख़ुदा और ख़ुदावन्द ईसा मसीह
ने आप को दिया है।

"बेदीनी का आदमी"

2 1 भाइयो, यह सवाल उठा है कि हमारे ख़ुदावन्द
ईसा मसीह की आमद कैसी होगी? हम किस
तरह उस के साथ जमा हो जाएंगे? इस नाते से हमारी
आप से दरख़्वास्त है 2 कि जब लोग कहते हैं कि
ख़ुदावन्द का दिन आ चुका है तो आप जल्दी से बेचैन
या परेशान न हो जाएँ। उन की बात न मानें, चाहे वह
यह दावा भी करें कि उन के पास हमारी तरफ़ से
कोई नबुव्वत, पैग़ाम या ख़त है। 3 कोई भी आप को
किसी भी चाल से फ़रेब न दे, क्यूँकि यह दिन उस
वक़्त तक नहीं आएगा जब तक आख़िरी बग़ावत
पेश न आए और "बेदीनी का आदमी" ज़ाहिर न हो
जाए, वह जिस का अन्जाम हलाकत होगा। 4 वह
हर एक की मुख़ालफ़त करेगा जो ख़ूदा और माबूद
कहलाता है और अपने आप को उन सब से बड़ा
ठहराएगा। हाँ, वह अल्लाह के घर में बैठ कर एलान
करेगा, "मैं अल्लाह हूँ।"

5 क्या आप को याद नहीं कि मैं आप को यह बताता
रहा जब अभी आप के पास था? 6 और अब आप
जानते हैं कि क्या कुछ उसे रोक रहा है ताकि वह
अपने मुक़र्ररा वक़्त पर ज़ाहिर हो जाए। 7 क्यूँकि यह
पुरअस्रार बेदीनी अब भी असर कर रही है। लेकिन
यह उस वक़्त तक ज़ाहिर नहीं होगी जब तक वह
शख़्स हट न जाए जो अब तक उसे रोक रहा है। 8 फिर
ही "बेदीनी का आदमी" ज़ाहिर होगा। लेकिन जब
ख़ुदावन्द ईसा आएगा तो वह उसे अपने मुँह की फूँक
से मार डालेगा, ज़ाहिर होने पर ही वह उसे हलाक
कर देगा। 9 "बेदीनी के आदमी" में इब्लीस काम
करेगा। जब वह आएगा तो हर क़िस्म की ताक़त
का इज़हार करेगा। वह झूटे निशान और मोजिज़े पेश
करेगा। 10 यूँ वह उन्हें हर तरह के शरीर फ़रेब में
फंसाएगा जो हलाक होने वाले हैं। लोग इस लिए
हलाक हो जाएंगे कि उन्हों ने सच्चाई से मुहब्बत
करने से इन्कार किया, वर्ना वह बच जाते। 11 इस
वजह से अल्लाह उन्हें बुरी तरह से फ़रेब में फंसने
देता है ताकि वह इस झूट पर ईमान लाएँ। 12 नतीजे
में सब जो सच्चाई पर ईमान न लाए बल्कि नारास्ती
से लुत्फ़अन्दोज़ हुए मुजरिम ठहरेंगे।

आप को नजात के लिए चुन लिया गया है

13 मेरे भाइयो, वाजिब है कि हम हर वक़्त आप के
लिए ख़ुदा का शुक्र करें जिन्हें ख़ुदावन्द प्यार करता
है। क्यूँकि अल्लाह ने आप को शुरू ही से नजात पाने
के लिए चुन लिया, ऐसी नजात के लिए जो रूह-उल-
क़ुद्स से पाकीज़गी पा कर सच्चाई पर ईमान लाने
से हासिल होती है। 14 अल्लाह ने आप को उस वक़्त
यह नजात पाने के लिए बुला लिया जब हम ने आप
को उस की ख़ुशख़बरी सुनाई। और अब आप हमारे
ख़ुदावन्द ईसा मसीह के जलाल में शरीक हो सकते
हैं। 15 भाइयो, इस लिए साबितक़दम रहें और उन
रिवायात को थामे रखें जो हम ने आप को सिखाई
हैं, ख़्वाह ज़बानी या ख़त के ज़रीए।

16 हमारा ख़ुदावन्द ईसा मसीह ख़ुद और ख़ुदा
हमारा बाप जिस ने हम से मुहब्बत रखी और अपने
फ़ज़्ल से हमें अबदी तसल्ली और ठोस उम्मीद बख़्शी
17 आप की हौसलाअफ़्ज़ाई करे और यूँ मज़बूत करे
कि आप हमेशा वह कुछ बोलें और करें जो अच्छा
है।

हमारे लिए दुआ करना

3 1 भाइयो, एक आख़िरी बात, हमारे लिए दुआ
करें कि ख़ुदावन्द का पैग़ाम जल्दी से फैल जाए
और इज़्ज़त पाए, बिलकुल उसी तरह जिस तरह आप
के दरमियान हुआ। 2 इस के लिए भी दुआ करें कि
अल्लाह हमें ग़लत और शरीर लोगों से बचाए रखे,
क्यूँकि सब तो ईमान नहीं रखते।

3 लेकिन ख़ुदावन्द वफ़ादार है, और वही आप
को मज़बूत करके इब्लीस से महफ़ूज़ रखेगा। 4 हम
ख़ुदावन्द में आप पर एतिमाद रखते हैं कि आप वह
कुछ कर रहे हैं बल्कि करते रहेंगे जो हम ने आप को
करने को कहा था।

5 ख़ुदावन्द आप के दिलों को अल्लाह की मुहब्बत
और मसीह की साबितक़दमी की तरफ़ माइल करता
रहे।

काम करने का फ़र्ज़

6 भाइयो, अपने ख़ुदावन्द ईसा मसीह के नाम में
हम आप को हुक्म देते हैं कि हर उस भाई से किनारा
करें जो बेक़ाइदा चलता और जो हम से पाई हुई
रिवायत के मुताबिक़ ज़िन्दगी नहीं गुज़ारता। 7 आप
ख़ुद जानते हैं कि आप को किस तरह हमारे नमूने पर
चलना चाहिए। जब हम आप के पास थे तो हमारी
ज़िन्दगी में बेतर्तीबी नहीं पाई जाती थी। 8 हम ने
किसी का खाना भी पैसे दिए बग़ैर न खाया, बल्कि
दिन रात सख़्त मेहनत-मशक़्क़त करते रहे ताकि आप
में से किसी के लिए बोझ न बनें। 9 बात यह नहीं कि
हमें आप से मुआवज़ा मिलने का हक़ नहीं था। नहीं,
हम ने ऐसा किया ताकि हम आप के लिए अच्छा

नमूना बनें और आप इस नमूने पर चलें। 10 जब हम
अभी आप के पास थे तो हम ने आप को हुक्म दिया,
“जो काम नहीं करना चाहता वह खाना भी न खाए।”
11 अब हमें यह ख़बर मिली है कि आप में से बाज़
बेक़ाइदा ज़िन्दगी गुज़ारते हैं। वह काम नहीं करते
बल्कि दूसरों के कामों में ख़्वाह-म-ख़्वाह दख़ल देते
हैं। 12 ख़ुदावन्द ईसा मसीह के नाम में हम ऐसे लोगों
को हुक्म देते और समझाते हैं कि आराम से काम
करके अपनी रोज़ी कमाएँ।
13 भाइयो, आप भलाई करने से कभी हिम्मत न
हारें। 14 अगर कोई इस ख़त में दर्ज हमारी हिदायत
पर अमल न करे तो उस से ताल्लुक़ न रखना ताकि उसे
शर्म आए। 15 लेकिन उसे दुश्मन मत समझना बल्कि
उसे भाई जान कर समझाना।

आख़िरी अल्फ़ाज़

16 ख़ुदावन्द ख़ुद जो सलामती का सरचश्मा है आप
को हर वक़्त और हर तरह से सलामती बख़्शे।
ख़ुदावन्द आप सब के साथ हो।
17 मैं, पौलुस अपने हाथ से यह लिख रहा हूँ। मेरी
तरफ़ से सलाम। मैं इसी तरीक़े से अपने हर ख़त पर
दस्तख़त करता और इसी तरह लिखता हूँ।
18 हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह का फ़ज़्ल आप सब
के साथ रहे।

१-तीमुथियुस

1 1 यह ख़त पौलुस की तरफ़ से है जो हमारे
नजातदहिन्दा अल्लाह और हमारी उम्मीद मसीह
ईसा के हुक्म पर मसीह ईसा का रसूल है।
2 मैं तीमुथियुस को लिख रहा हूँ जो ईमान में मेरा
सच्चा बेटा है।
ख़ुदा बाप और हमारा ख़ुदावन्द मसीह ईसा आप
को फ़ज़्ल, रहम और सलामती अता करें।

ग़लत तालीम से ख़बरदार

3 मैं ने आप को मकिदुनिया जाते वक़्त नसीहत की
थी कि इफ़िसुस में रहें ताकि आप वहाँ के कुछ लोगों
को ग़लत तालीम देने से रोकें। 4 उन्हें फ़र्ज़ी कहानियों
और ख़त्म न होने वाले नसबनामे के पीछे न लगने दें।
इन से महज़ बह्स-मुबाहसा पैदा होता है और अल्लाह
का नजातबख़्श मन्सूबा पूरा नहीं होता। क्यूँकि यह
मन्सूबा सिर्फ़ ईमान से तक्मील तक पहुँचता है। 5 मेरी
इस हिदायत का मक़्सद यह है कि मुहब्बत उभर
आए, ऐसी मुहब्बत जो ख़ालिस दिल, साफ़ ज़मीर
और बेरिया ईमान से पैदा होती है। 6 कुछ लोग इन
चीज़ों से भटक कर बेमानी बातों में गुम हो गए हैं।
7 यह शरीअत के उस्ताद बनना चाहते हैं, लेकिन उन्हें
उन बातों की समझ नहीं आती जो वह कर रहे हैं और
जिन पर वह इतने एतिमाद से इसरार कर रहे हैं।
8 लेकिन हम तो जानते हैं कि शरीअत अच्छी है
बशर्तेकि इसे सहीह तौर पर इस्तेमाल किया जाए।
9 और याद रहे कि यह रास्तबाज़ों के लिए नहीं दी
गई। क्यूँकि यह उन के लिए है जो बग़ैर शरीअत
के और सरकश ज़िन्दगी गुज़ारते हैं, जो बेदीन और
गुनाहगार हैं, जो मुक़द्दस और रुहानी बातों से ख़ाली
हैं, जो अपने माँ-बाप के क़ातिल हैं, जो ख़ूनी,
10 ज़िनाकार, हमजिन्सपरस्त और ग़ुलामों के ताजिर
हैं, जो झूट बोलते, झूटी क़सम खाते और मज़ीद बहुत
कुछ करते हैं जो सेहतबख़्श तालीम के ख़िलाफ़ है।
11 और सेहतबख़्श तालीम क्या है? वह जो मुबारक
ख़ुदा की उस जलाली ख़ुशख़बरी में पाई जाती है जो
मेरे सपुर्द की गई है।

अल्लाह के रहम के लिए शुक्रगुज़ारी

12 मैं अपने ख़ुदावन्द मसीह ईसा का शुक्र करता हूँ
जिस ने मेरी तक़वियत की है। मैं उस का शुक्र करता
हूँ कि उस ने मुझे वफ़ादार समझ कर ख़िदमत के
लिए मुक़र्रर किया। 13 गो मैं पहले कुफ़्र बकने वाला
और गुस्ताख़ आदमी था, जो लोगों को ईज़ा देता
था, लेकिन अल्लाह ने मुझ पर रहम किया। क्यूँकि
उस वक़्त मैं ईमान नहीं लाया था और इस लिए
नहीं जानता था कि क्या कर रहा हूँ। 14 हाँ, हमारे
ख़ुदावन्द ने मुझ पर अपना फ़ज़्ल कस्रत से उंडेल
दिया और मुझे वह ईमान और मुहब्बत अता की जो
हमें मसीह ईसा में होते हुए मिलती है। 15 हम इस
क़ाबिल-ए-क़बूल बात पर पूरा भरोसा रख सकते हैं
कि मसीह ईसा गुनाहगारों को नजात देने के लिए इस
दुनिया में आया। उन में से मैं सब से बड़ा गुनाहगार
हूँ, 16 लेकिन यही वजह है कि अल्लाह ने मुझ पर रहम
किया। क्यूँकि वह चाहता था कि मसीह ईसा मुझ में
जो अव्वल गुनाहगार हूँ अपना वसी सब्र ज़ाहिर करे
और मैं यूँ उन के लिए नमूना बन जाऊँ जो उस पर
ईमान ला कर अबदी ज़िन्दगी पाने वाले हैं। 17 हाँ,
हमारे अज़ली-ओ-अबदी शहन्शाह की हमेशा तक
इज़्ज़त-ओ-जलाल हो! वही लाफ़ानी, अनदेखा और
वाहिद ख़ुदा है। आमीन।
18 तीमुथियुस मेरे बेटे, मैं आप को यह हिदायत उन
पेशगोइयों के मुताबिक़ देता हूँ जो पहले आप के
बारे में की गई थीं। क्यूँकि मैं चाहता हूँ कि आप
इन की पैरवी करके अच्छी तरह लड़ सकें 19 और

ईमान और साफ़ ज़मीर के साथ ज़िन्दगी गुज़ार सकें।
क्यूँकि बाज़ ने यह बातें रद्द कर दी हैं और नतीजे
में उन के ईमान का बेड़ा ग़र्क़ हो गया। 20 हुमिनयुस
और सिकन्दर भी इन में शामिल हैं। अब मैं ने इन्हें
इब्लीस के हवाले कर दिया है ताकि वह कुफ़्र बकने
से बाज़ आना सीखें।

जमाअत की परस्तिश

2 1 पहले मैं इस पर ज़ोर देना चाहता हूँ कि आप
सब के लिए दरख़्वास्तें, दुआएँ, सिफारिशें और
शुक्रगुज़ारियाँ पेश करें, 2 बादशाहों और इख़तियार
वालों के लिए भी ताकि हम आराम और सुकून से
ख़ुदातरस और शरीफ़ ज़िन्दगी गुज़ार सकें। 3 यह
अच्छा और हमारे नजातदहिन्दा अल्लाह को पसन्दीदा
है। 4 हाँ, वह चाहता है कि तमाम इन्सान नजात पा
कर सच्चाई को जान लें। 5 क्यूँकि एक ही ख़ुदा है और
अल्लाह और इन्सान के बीच में एक ही दरमियानी है
यानी मसीह ईसा, वह इन्सान 6 जिस ने अपने आप
को फ़िद्या के तौर पर सब के लिए दे दिया ताकि वह
मख़्लसी पाएँ। यूँ उस ने मुक़र्ररा वक़्त पर गवाही दी
7 और यह गवाही सुनाने के लिए मुझे मुनाद, रसूल
और ग़ैरयहूदियों का उस्ताद मुक़र्रर किया ताकि उन्हें
ईमान और सच्चाई का पैग़ाम सुनाऊँ। मैं झूट नहीं बोल
रहा बल्कि सच कह रहा हूँ।

8 अब मैं चाहता हूँ कि हर मक़ामी जमाअत के
मर्द मुक़द्दस हाथ उठा कर दुआ करें। वह ग़ुस्से
या बह्स-मुबाहसा की हालत में ऐसा न करें। 9 इसी
तरह मैं चाहता हूँ कि ख़वातीन मुनासिब कपड़े
पहन कर शराफ़त और शाइस्तगी से अपने आप
को आरास्ता करें। वह गुंधे हुए बाल, सोना, मोती
या हद से ज़्यादा महंगे कपड़ों से अपने आप को
आरास्ता न करें 10 बल्कि नेक कामों से। क्यूँकि
यही ऐसी ख़वातीन के लिए मुनासिब है जो ख़ुदातरस
होने का दावा करती हैं। 11 ख़ातून ख़ामोशी से और
पूरी फ़रमाँबरदारी के साथ सीखे। 12 मैं ख़वातीन
को तालीम देने या आदमियों पर हुकूमत करने की
इजाज़त नहीं देता। वह ख़ामोश रहें। 13 क्यूँकि पहले
आदम को तश्कील दिया गया, फिर हव्वा को।
14 और आदम ने इब्लीस से धोका न खाया बल्कि
हव्वा ने, जिस का नतीजा गुनाह था। 15 लेकिन
ख़वातीन बच्चे जन्म देने से नजात पाएँगी। शर्त यह है
कि वह समझ के साथ ईमान, मुहब्बत और मुक़द्दस
हालत में ज़िन्दगी गुज़ारती रहें।

ख़ुदा की जमाअत के निगरान

3 1 यह बात यक़ीनी है कि जो जमाअत का
निगरान बनना चाहता है वह एक अच्छी
ज़िम्मादारी की आर्ज़ू रखता है। 2 लाज़िम है कि
निगरान बेइल्ज़ाम हो। उस की एक ही बीवी हो। वह
होशमन्द, समझदार, [r]शरीफ़, मेहमान-नवाज़ और
तालीम देने के क़ाबिल हो। 3 वह शराबी न हो, न
लड़ाका बल्कि नर्मदिल और अम्नपसन्द। वह पैसों
का लालच करने वाला न हो। 4 लाज़िम है कि वह
अपने ख़ानदान को अच्छी तरह सँभाल सके और
कि उस के बच्चे शराफ़त के साथ उस की बात मानें।
5 क्यूँकि अगर वह अपना ख़ानदान न सँभाल सके
तो वह किस तरह अल्लाह की जमाअत की देख-भाल
कर सकेगा? 6 वह नौमुरीद न हो वर्ना ख़तरा है कि
वह फूल कर इब्लीस के जाल में उलझ जाए और यूँ
उस की अदालत की जाए। 7 लाज़िम है कि जमाअत
से बाहर के लोग उस की अच्छी गवाही दे सकें, ऐसा
न हो कि वह बदनाम हो कर इब्लीस के फंदे में फंस
जाए।

जमाअत के मददगार

8 इसी तरह जमाअत के मददगार भी शरीफ़ हों। वह
रियाकार न हों, न हद से ज़्यादा मै पिएँ। वह लालची
भी न हों। 9 लाज़िम है कि वह साफ़ ज़मीर रख कर

---

[r]यूनानी लफ़्ज़ में ज़ब्त-ए-नफ़्स का उन्सुर भी पाया जाता है।

ईमान की पुरअस्रार सच्चाइयाँ महफ़ूज़ रखें। 10 यह भी ज़रूरी है कि उन्हें पहले परखा जाए। अगर वह इस के बाद बेइल्ज़ाम निकलें तो फिर वह ख़िदमत करें। 11 उन की बीवियाँ भी शरीफ़ हों। वह बुहतान लगाने वाली न हों बल्कि होशमन्द और हर बात में वफ़ादार। 12 मददगार की एक ही बीवी हो। लाज़िम है कि वह अपने बच्चों और ख़ानदान को अच्छी तरह सँभाल सके। 13 जो मददगार अच्छी तरह अपनी ख़िदमत सँभालते हैं उन की हैसियत बढ़ जाएगी और मसीह ईसा पर उन का ईमान इतना पुख़्ता हो जाएगा कि वह बड़े एतिमाद के साथ ज़िन्दगी गुज़ार सकेंगे।

एक अज़ीम भेद

14 अगरचे मैं जल्द आप के पास आने की उम्मीद रखता हूँ तो भी आप को यह ख़त लिख रहा हूँ। 15 लेकिन अगर देर भी लगे तो यह पढ़ कर आप को मालूम होगा कि अल्लाह के घराने में हमारा बरताओ कैसा होना चाहिए। अल्लाह का घराना क्या है? ज़िन्दा ख़ुदा की जमाअत, जो सच्चाई का सतून और बुन्याद है। 16 यक़ीनन हमारे ईमान का भेद अज़ीम है।

वह जिस्म में ज़ाहिर हुआ,
रूह में रास्तबाज़ ठहरा
और फ़रिश्तों को दिखाई दिया।
उस की ग़ैरयहूदियों में मुनादी की गई,
उस पर दुनिया में ईमान लाया गया
और उसे आसमान के जलाल में उठा लिया गया।

झूटे उस्ताद

4 1 रूह-उल-क़ुद्स साफ़ फ़रमाता है कि आख़िरी दिनों में कुछ ईमान से हट कर फ़रेबदिह रूहों और शैतानी तालीमात की पैरवी करेंगे। 2 ऐसी तालीमात झूट बोलने वालों की रियाकार बातों से आती हैं, जिन के ज़मीर पर इब्लीस ने अपना निशान लगा कर ज़ाहिर कर दिया है कि यह उस के अपने हैं। 3 यह शादी करने की इजाज़त नहीं देते और लोगों को कहते हैं कि वह मुख़्तलिफ़ खाने की चीज़ों से पर्हेज़ करें। लेकिन अल्लाह ने यह चीज़ें इस लिए बनाई हैं कि जो ईमान रखते हैं और सच्चाई से वाक़िफ़ हैं इन्हें शुक्रगुज़ारी के साथ खाएँ। 4 जो कुछ भी अल्लाह ने ख़ल्क़ किया है वह अच्छा है, और हमें उसे रद्द नहीं करना चाहिए बल्कि ख़ुदा का शुक्र करके उसे खा लेना चाहिए। 5 क्यूँकि उसे अल्लाह के कलाम और दुआ से मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस किया गया है।

मसीह ईसा का अच्छा ख़ादिम

6 अगर आप भाइयों को यह तालीम दें तो आप मसीह ईसा के अच्छे ख़ादिम होंगे। फिर यह साबित हो जाएगा कि आप को ईमान और उस अच्छी तालीम की सच्चाइयों में तर्बियत दी गई है जिस की पैरवी आप करते रहे हैं। 7 लेकिन दादी-अम्माँ की इन बेमानी फ़र्ज़ी कहानियों से बाज़ रहें। इन की बजाय ऐसी तर्बियत हासिल करें जिस से आप की रुहानी ज़िन्दगी मज़बूत हो जाए। 8 क्यूँकि जिस्म की तर्बियत का थोड़ा ही फ़ाइदा है, लेकिन रुहानी तर्बियत हर लिहाज़ से मुफ़ीद है, इस लिए कि अगर हम इस क़िस्म की तर्बियत हासिल करें तो हम से हाल और मुस्तक़बिल में ज़िन्दगी पाने का वादा किया गया है। 9 यह बात क़ाबिल-ए-एतिमाद है और इसे पूरे तौर पर क़बूल करना चाहिए। 10 यही वजह है कि हम मेहनत-मशक़्क़त और जाँफ़िशानी करते रहते हैं, क्यूँकि हम ने अपनी उम्मीद ज़िन्दा ख़ुदा पर रखी है जो तमाम इन्सानों का नजातदहिन्दा है, ख़ासकर ईमान रखने वालों का।

11 लोगों को यह हिदायात दें और सिखाएँ। 12 कोई भी आप को इस लिए हक़ीर न जाने कि आप जवान हैं। लेकिन ज़रूरी है कि आप कलाम में, चाल-चलन में, मुहब्बत में, ईमान में और पाकीज़गी में ईमानदारों के लिए नमूना बन जाएँ। 13 जब तक मैं नहीं आता इस पर ख़ास ध्यान दें कि जमाअत में बाक़ाइदगी से कलाम की तिलावत की जाए, लोगों को नसीहत की जाए और उन्हें तालीम दी जाए। 14 अपनी उस नेमत को नज़रअन्दाज़ न करें जो आप को उस वक़्त

पेशगोई के ज़रीए मिली जब बुज़ुर्गों ने आप पर अपने
हाथ रखे। 15 इन बातों को फ़रोग़ दें और इन के पीछे
लगे रहें ताकि आप की तरक़्क़ी सब को नज़र आए।
16 अपना और तालीम का ख़ास ख़याल रखें। इन में
साबितक़दम रहें, क्यूँकि ऐसा करने से आप अपने
आप को और अपने सुनने वालों को बचा लेंगे।

ईमानदारों से सुलूक

5 1 बुज़ुर्ग भाइयों को सख़्ती से न डाँटना बल्कि
उन्हें यूँ समझाना जिस तरह कि वह आप के
बाप हों। इसी तरह जवान आदमियों को यूँ समझाना
जैसे वह आप के भाई हों, 2 बुज़ुर्ग बहनों को यूँ जैसे
वह आप की माएँ हों और जवान ख़वातीन को तमाम
पाकीज़गी के साथ यूँ जैसे वह आप की बहनें हों।
3 उन बेवाओं की मदद करके उन की इज़्ज़त करें
जो वाक़ई ज़रूरतमन्द हैं। 4 अगर किसी बेवा के बच्चे
या पोते-नवासे हों तो उस की मदद करना उन ही
का फ़र्ज़ है। हाँ, वह सीखें कि ख़ुदातरस होने का
पहला फ़र्ज़ यह है कि हम अपने घर वालों की फ़िक्र
करें और यूँ अपने माँ-बाप, दादा-दादी और नाना-
नानी को वह कुछ वापस करें जो हमें उन से मिला
है, क्यूँकि ऐसा अमल अल्लाह को पसन्द है। 5 जो
औरत वाक़ई ज़रूरतमन्द बेवा और तन्हा रह गई
है वह अपनी उम्मीद अल्लाह पर रख कर दिन रात
अपनी इल्तिजाओं और दुआओं में लगी रहती है।
6 लेकिन जो बेवा ऐश-ओ-इश्रत में ज़िन्दगी गुज़ारती
है वह ज़िन्दा हालत में ही मुर्दा है। 7 यह हिदायात
लोगों तक पहुँचाएँ ताकि उन पर इल्ज़ाम न लगाया
जा सके। 8 क्यूँकि अगर कोई अपनों और ख़ासकर
अपने घर वालों की फ़िक्र न करे तो उस ने अपने
ईमान का इन्कार कर दिया। ऐसा शख़्स ग़ैरईमानदारों
से बदतर है।
9 जिस बेवा की उम्र 60 साल से कम है उसे बेवाओं
की फ़हरिस्त में दर्ज न किया जाए। शर्त यह भी है कि
जब उस का शौहर ज़िन्दा था तो वह उस की वफ़ादार
रही हो 10 और कि लोग उस के नेक कामों की अच्छी
गवाही दे सकें, मसलन क्या उस ने अपने बच्चों को
अच्छी तरह पाला है? क्या उस ने मेहमान-नवाज़ी की
और मुक़द्दसीन के पाँओ धो कर उन की ख़िदमत की
है? क्या वह मुसीबत में फंसे हुओं की मदद करती
रही है? क्या वह हर नेक काम के लिए कोशाँ रही
है?
11 लेकिन जवान बेवाएँ इस फ़हरिस्त में शामिल
मत करना, क्यूँकि जब उन की जिस्मानी ख़्वाहिशात
उन पर ग़ालिब आती हैं तो वह मसीह से दूर हो कर
शादी करना चाहती हैं। 12 यूँ वह अपना पहला ईमान
छोड़ कर मुजरिम ठहरती हैं। 13 इस के इलावा वह
सुस्त होने और इधर उधर घरों में फिरने की आदी
बन जाती हैं। न सिर्फ़ यह बल्कि वह बातूनी भी बन
जाती हैं और दूसरों के मुआमलात में दख़ल दे कर
नामुनासिब बातें करती हैं। 14 इस लिए मैं चाहता हूँ
कि जवान बेवाएँ दुबारा शादी करके बच्चों को जन्म
दें और अपने घरों को सँभालें। फिर वह दुश्मन को
बदगोई करने का मौक़ा नहीं देंगी। 15 क्यूँकि बाज़
तो सहीह राह से हट कर इब्लीस के पीछे लग चुकी
हैं। 16 लेकिन जिस ईमानदार औरत के ख़ानदान में
बेवाएँ हैं उस का फ़र्ज़ है कि वह उन की मदद करे
ताकि वह ख़ुदा की जमाअत के लिए बोझ न बनें।
वर्ना जमाअत उन बेवाओं की सहीह मदद नहीं कर
सकेगी जो वाक़ई ज़रूरतमन्द हैं।
17 जो बुज़ुर्ग जमाअत को अच्छी तरह सँभालते
हैं उन्हें दुगनी इज़्ज़त के लाइक़ समझा जाए [s]। मैं
ख़ासकर उन की बात कर रहा हूँ जो पाक कलाम
सुनाने और तालीम देने में मेहनत-मशक़्क़त करते
हैं। 18 क्यूँकि कलाम-ए-मुक़द्दस फ़रमाता है, “जब
तू फ़सल गाहने के लिए उस पर बैल चलने देता है
तो उस का मुँह बांध कर न रखना।” यह भी लिखा
है, “मज़दूर अपनी मज़दूरी का हक़दार है।” 19 जब

[s] यहाँ मतलब है कि उन की इज़्ज़त ख़ासकर माली लिहाज़ से की जाए।

किसी बुज़ुर्ग पर इल्ज़ाम लगाया जाए तो यह बात सिर्फ़ इस सूरत में मानें कि दो या इस से ज़्यादा गवाह इस की तस्दीक़ करें। 20 लेकिन जिन्हों ने वाक़ई गुनाह किया हो उन्हें पूरी जमाअत के सामने समझाएँ ताकि दूसरे ऐसी हरकतें करने से डर जाएँ।

21 अल्लाह और मसीह ईसा और उस के चुनीदा फ़रिश्तों के सामने मैं सन्जीदगी से ताकीद करता हूँ कि इन हिदायात की यूँ पैरवी करें कि आप किसी मुआमले से सहीह तौर पर वाक़िफ़ होने से पेशतर फ़ैसला न करें, न जानिबदारी का शिकार हो जाएँ। 22 जल्दी से किसी पर हाथ रख कर उसे किसी ख़िदमत के लिए मख़्सूस मत करना, न दूसरों के गुनाहों में शरीक होना। अपने आप को पाक रखें।

23 चूँकि आप अक्सर बीमार रहते हैं इस लिए अपने मेदे का लिहाज़ करके न सिर्फ़ पानी ही पिया करें बल्कि साथ साथ कुछ मै भी इस्तेमाल करें।

24 कुछ लोगों के गुनाह साफ़ साफ़ नज़र आते हैं, और वह उन से पहले ही अदालत के तख़्त के सामने आ पहुँचते हैं। लेकिन कुछ ऐसे भी हैं जिन के गुनाह गोया उन के पीछे चल कर बाद में ज़ाहिर होते हैं। 25 इसी तरह कुछ लोगों के अच्छे काम साफ़ नज़र आते हैं जबकि बाज़ के अच्छे काम अभी नज़र नहीं आते। लेकिन यह भी पोशीदा नहीं रहेंगे बल्कि किसी वक़्त ज़ाहिर हो जाएंगे।

6 1 जो भी ग़ुलामी के जूए में हैं वह अपने मालिकों को पूरी इज़्ज़त के लाइक़ समझें ताकि लोग अल्लाह के नाम और हमारी तालीम पर कुफ़्र न बकें। 2 जब मालिक ईमान लाते हैं तो ग़ुलामों को उन की इस लिए कम इज़्ज़त नहीं करना चाहिए कि वह अब मसीह में भाई हैं। बल्कि वह उन की और ज़्यादा ख़िदमत करें, क्यूँकि अब जो उन की अच्छी ख़िदमत से फ़ाइदा उठा रहे हैं वह ईमानदार और अज़ीज़ हैं।

ग़लत तालीम और हक़ीक़ी दौलत

लाज़िम है कि आप लोगों को इन बातों की तालीम दें और इस में उन की हौसलाअफ़्ज़ाई करें। 3 जो भी इस से फ़र्क़ तालीम दे कर हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह के सेहतबख़्श अल्फ़ाज़ और इस ख़ुदातरस ज़िन्दगी की तालीम से वाबस्ता नहीं रहता 4 वह ख़ुदपसन्दी से फूला हुआ है और कुछ नहीं समझता। ऐसा शख़्स बह्स-मुबाहसा करने और ख़ाली बातों पर झगड़ने में ग़ैरसेहतमन्द दिलचस्पी लेता है। नतीजे में हसद, झगड़े, कुफ़्र और बदगुमानी पैदा होती है। 5 यह लोग आपस में झगड़ने की वजह से हमेशा कुढ़ते रहते हैं। उन के ज़हन बिगड़ गए हैं और सच्चाई उन से छीन ली गई है। हाँ, यह समझते हैं कि ख़ुदातरस ज़िन्दगी गुज़ारने से माली नफ़ा हासिल किया जा सकता है।

6 ख़ुदातरस ज़िन्दगी वाक़ई बहुत नफ़ा का बाइस है, लेकिन शर्त यह है कि इन्सान को जो कुछ भी मिल जाए वह उस पर इकतिफ़ा करे। 7 हम दुनिया में अपने साथ क्या लाए? कुछ नहीं! तो हम दुनिया से निकलते वक़्त क्या कुछ साथ ले जा सकेंगे? कुछ भी नहीं! 8 चुनाँचे अगर हमारे पास ख़ुराक और लिबास हो तो यह हमारे लिए काफ़ी होना चाहिए। 9 जो अमीर बनने के ख़्वाहाँ रहते हैं वह कई तरह की आज़माइशों और फंदों में फंस जाते हैं। बहुत सी नासमझ और नुक़्सानदेह ख़्वाहिशात उन्हें हलाकत और तबाही में ग़र्क़ हो जाने देती हैं। 10 क्यूँकि पैसों का लालच हर ग़लत काम का सरचश्मा है। कई लोगों ने इसी लालच के बाइस ईमान से भटक कर अपने आप को बहुत अज़ियत पहुँचाई है।

शख़्सी हिदायात

11 लेकिन आप जो अल्लाह के बन्दे हैं इन चीज़ों से भागते रहें। इन की बजाय रास्तबाज़ी, ख़ुदातरसी, ईमान, मुहब्बत, साबितक़दमी और नर्मदिली के पीछे लगे रहें। 12 ईमान की अच्छी कुश्ती लड़ें। अबदी ज़िन्दगी से ख़ूब लिपट जाएँ, क्यूँकि अल्लाह ने आप को यही ज़िन्दगी पाने के लिए बुलाया, और आप ने अपनी तरफ़ से बहुत से गवाहों के सामने इस बात का इक़्रार भी किया। 13 मेरे दो गवाह हैं, अल्लाह जो सब कुछ ज़िन्दा रखता है और मसीह ईसा जिस ने

पुन्तियुस पीलातुस के सामने अपने ईमान की अच्छी
गवाही दी। इन ही के सामने मैं आप को कहता हूँ कि
14 यह हुक्म यूँ पूरा करें कि आप पर न दाग़ लगे, न
इल्ज़ाम। और इस हुक्म पर उस दिन तक अमल करते
रहें जब तक हमारा ख़ुदावन्द ईसा मसीह ज़ाहिर
नहीं हो जाता। 15 क्यूँकि अल्लाह मसीह को मुक़र्ररा
वक़्त पर ज़ाहिर करेगा। हाँ, जो मुबारक और वाहिद
हुक्मरान, बादशाहों का बादशाह और मालिकों का
मालिक है वह उसे मुक़र्ररा वक़्त पर ज़ाहिर करेगा।
16 सिर्फ़ वही लाफ़ानी है, वही ऐसी रौशनी में रहता
है जिस के क़रीब कोई नहीं आ सकता। न किसी
इन्सान ने उसे कभी देखा, न वह उसे देख सकता है।
उस की इज़्ज़त और क़ुदरत अबद तक रहे। आमीन।
17 जो मौजूदा दुनिया में अमीर हैं उन्हें समझाएँ कि
वह मग़रूर न हों, न दौलत जैसी ग़ैरयक़ीनी चीज़ पर
उम्मीद रखें। इस की बजाय वह अल्लाह पर उम्मीद
रखें जो हमें फ़य्याज़ी से सब कुछ मुहय्या करता है
ताकि हम उस से लुत्फ़अन्दोज़ हो जाएँ। 18 यह पेश-
ए-नज़र रख कर अमीर नेक काम करें और भलाई
करने में ही अमीर हों। वह ख़ुशी से दूसरों को देने और
अपनी दौलत में शरीक करने के लिए तय्यार हों। 19 यूँ
वह अपने लिए एक अच्छा ख़ज़ाना जमा करेंगे यानी
आने वाले जहान के लिए एक ठोस बुन्याद जिस पर
खड़े हो कर वह हक़ीक़ी ज़िन्दगी पा सकेंगे।
20 तीमुथियुस बेटे, जो कुछ आप के हवाले किया
गया है उसे महफ़ूज़ रखें। दुनियावी बकवास और
उन मुतज़ाद ख़यालात से कतराते रहें जिन्हें ग़लती
से इल्म का नाम दिया गया है। 21 कुछ तो इस इल्म
के माहिर होने का दावा करके ईमान की सहीह राह
से हट गए हैं।

अल्लाह का फ़ज़्ल आप सब के साथ रहे।

२-तीमुथियुस

1 1 यह ख़त पौलुस की तरफ़ से है जो अल्लाह की
मर्ज़ी से मसीह ईसा का रसूल है ताकि उस वादा
की हुई ज़िन्दगी का पैग़ाम सुनाए जो हमें मसीह ईसा
में हासिल होती है।
2 मैं अपने प्यारे बेटे तीमुथियुस को लिख रहा हूँ।
ख़ुदा बाप और हमारा ख़ुदावन्द मसीह ईसा आप
को फ़ज़्ल, रहम और सलामती अता करें।

शुक्रगुज़ारी और हौसलाअफ़ज़ाई

3 मैं आप के लिए ख़ुदा का शुक्र करता हूँ जिस
की ख़िदमत मैं अपने बापदादा की तरह साफ़ ज़मीर
से करता हूँ। दिन रात मैं लगातार आप को अपनी
दुआओं में याद रखता हूँ। 4 मुझे आप के आँसू याद
आते हैं, और मैं आप से मिलने का आरज़ूमन्द हूँ
ताकि ख़ुशी से भर जाऊँ। 5 मुझे ख़ासकर आप का
मुख़लिस ईमान याद है जो पहले आप की नानी लूइस
और माँ यUनीके रखती थीं। और मुझे यक़ीन है कि
आप भी यही ईमान रखते हैं। 6 यही वजह है कि मैं
आप को एक बात याद दिलाता हूँ। अल्लाह ने आप
को उस वक़्त एक नेमत से नवाज़ा जब मैं ने आप पर
हाथ रखे। आप को उस नेमत की आग को नए सिरे से
भड़काने की ज़रूरत है। 7 क्यूँकि जिस रूह से अल्लाह
ने हमें नवाज़ा है वह हमें बुज़दिल नहीं बनाता बल्कि
हमें क़ुव्वत, मुहब्बत और नज़्म-ओ-ज़ब्त दिलाता है।
8 इस लिए हमारे ख़ुदावन्द के बारे में गवाही देने से
न शर्माएँ, न मुझ से जो मसीह की ख़ातिर क़ैदी हूँ। इस
के बजाय मेरे साथ अल्लाह की क़ुव्वत से मदद ले कर
उस की ख़ुशख़बरी की ख़ातिर दुख उठाएँ। 9 क्यूँकि
उस ने हमें नजात दे कर मुक़द्दस ज़िन्दगी गुज़ारने के
लिए बुलाया। और यह चीज़ें हमें अपनी मेहनत से
नहीं मिलीं बल्कि अल्लाह के इरादे और फ़ज़्ल से।
यह फ़ज़्ल ज़मानों की इब्तिदा से पहले हमें मसीह में
दिया गया 10 लेकिन अब हमारे नजातदहिन्दा मसीह
ईसा की आमद से ज़ाहिर हुआ। मसीह ही ने मौत को
नेस्त कर दिया। उसी ने अपनी ख़ुशख़बरी के ज़रीए
लाफ़ानी ज़िन्दगी रौशनी में ला कर हम पर ज़ाहिर
कर दी है।
11 अल्लाह ने मुझे यही ख़ुशख़बरी सुनाने के लिए
मुनाद, रसूल और उस्ताद मुक़र्रर किया है। 12 इसी
वजह से मैं दुख उठा रहा हूँ। तो भी मैं शर्माता नहीं,
क्यूँकि मैं उसे जानता हूँ जिस पर में ईमान लाया हूँ,
और मुझे पूरा यक़ीन है कि जो कुछ मैं ने उस के
हवाले कर दिया है उसे वह अपनी आमद के दिन
तक महफ़ूज़ रखने के क़ाबिल है। 13 उन सेहतबख़्श
बातों के मुताबिक़ चलते रहें जो आप ने मुझ से सुन
ली हैं, और यूँ ईमान और मुहब्बत के साथ मसीह
ईसा में ज़िन्दगी गुज़ारें। 14 जो बेशक़ीमत चीज़ आप
के हवाले कर दी गई है उसे रूह-उल-क़ुद्स की मदद
से जो हम में सुकूनत करता है महफ़ूज़ रखें।
15 आप को मालूम है कि सूबा आसिया में तमाम
लोगों ने मुझे तर्क कर दिया है। इन में फ़ूगिलुस और
हिर्मुग़िनेस भी शामिल हैं। 16 ख़ुदावन्द उनेसिफ़ुरुस
के घराने पर रहम करे, क्यूँकि उस ने कई दफ़ा मुझे
तर-ओ-ताज़ा किया। हाँ, वह इस से कभी न शर्माया
कि मैं क़ैदी हूँ। 17 बल्कि जब वह रोम शहर पहुँचा
तो बड़ी कोशिशों से मेरा खोज लगा कर मुझे मिला।
18 ख़ुदावन्द करे कि वह क़ियामत के दिन ख़ुदावन्द
से रहम पाए। आप ख़ुद बेहतर जानते हैं कि उस ने
इफ़िसुस में कितनी ख़िदमत की।

मसीह ईसा का वफ़ादार सिपाही

2 1 लेकिन आप, मेरे बेटे, उस फ़ज़्ल से तक़वियत
पाएँ जो आप को मसीह ईसा में मिल गया है।
2 जो कुछ आप ने बहुत गवाहों की मौजूदगी में मुझ

से सुना है उसे मोतबर लोगों के सपुर्द करें। यह ऐसे
लोग हों जो औरों को सिखाने के क़ाबिल हों।
3 मसीह ईसा के अच्छे सिपाही की तरह हमारे साथ
दुख उठाते रहें। 4 जिस सिपाही की ड्यूटी है वह
आम रआया के मुआमलात में फंसने से बाज़ रहता
है, क्यूँकि वह अपने अफ़्सर को पसन्द आना चाहता
है। 5 इसी तरह खेल के मुक़ाबले में हिस्सा लेने वाले
को सिर्फ़ इस सूरत में इनआम मिल सकता है कि
वह क़वाइद के मुताबिक़ ही मुक़ाबला करे। 6 और
लाज़िम है कि फ़सल की कटाई के वक़्त पहले उस
को फ़सल का हिस्सा मिले जिस ने खेत में मेहनत की
है। 7 उस पर ध्यान देना जो मैं आप को बता रहा हूँ,
क्यूँकि ख़ुदावन्द आप को इन तमाम बातों की समझ
अता करेगा।
8 मसीह ईसा को याद रखें, जो दाऊद की औलाद में
से है और जिसे मुर्दों में से ज़िन्दा कर दिया गया। यही
मेरी ख़ुशख़बरी है 9 जिस की ख़ातिर मैं दुख उठा रहा
हूँ, यहाँ तक कि मुझे आम मुजरिम की तरह ज़न्जीरों
से बांधा गया है। लेकिन अल्लाह का कलाम ज़न्जीरों
से बांधा नहीं जा सकता। 10 इस लिए मैं सब कुछ
अल्लाह के चुने हुए लोगों की ख़ातिर बर्दाश्त करता
हूँ ताकि वह भी नजात पाएँ - वह नजात जो मसीह
ईसा से मिलती है और जो अबदी जलाल का बाइस
बनती है। 11 यह क़ौल क़ाबिल-ए-एतिमाद है,

अगर हम उस के साथ मर गए
तो हम उस के साथ जिएँगे भी।
12 अगर हम बर्दाश्त करते रहें
तो हम उस के साथ हुकूमत भी करेंगे।
अगर हम उसे जानने से इन्कार करें
तो वह भी हमें जानने से इन्कार करेगा।
13 अगर हम बेवफ़ा निकलें
तो भी वह वफ़ादार रहेगा।
क्यूँकि वह अपना इन्कार नहीं कर सकता।

क़ाबिल-ए-क़बूल ख़िदमतगुज़ार

14 लोगों को इन बातों की याद दिलाते रहें और
उन्हें सन्जीदगी से अल्लाह के हुज़ूर समझाएँ कि वह
बाल की खाल उतार कर एक दूसरे से न झगड़ें। यह
बेफ़ाइदा है बल्कि सुनने वालों को बिगाड़ देता है।
15 अपने आप को अल्लाह के सामने यूँ पेश करने की
पूरी कोशिश करें कि आप मक़्बूल साबित हों, कि
आप ऐसा मज़दूर निकलें जिसे अपने काम से शर्माने
की ज़रूरत न हो बल्कि जो सहीह तौर पर अल्लाह
का सच्चा कलाम पेश करे। 16 दुनियावी बकवास से
बाज़ रहें। क्यूँकि जितना यह लोग इस में फंस जाएंगे
उतना ही बेदीनी का असर बढ़ेगा 17 और उन की
तालीम कैंसर की तरह फैल जाएगी। इन लोगों में
हुमिनयुस और फ़िलेतुस भी शामिल हैं 18 जो सच्चाई
से हट गए हैं। यह दावा करते हैं कि मुर्दों के जी उठने
का अमल हो चुका है और यूँ बाज़ एक का ईमान
तबाह हो गया है। 19 लेकिन अल्लाह की ठोस बुन्याद
क़ाइम रहती है और उस पर इन दो बातों की मुहर
लगी है, "ख़ुदावन्द ने अपने लोगों को जान लिया है"
और "जो भी समझे कि मैं ख़ुदावन्द का पैरोकार हूँ
वह नारास्ती से बाज़ रहे।"
20 बड़े घरों में न सिर्फ़ सोने और चाँदी के बर्तन
होते हैं बल्कि लकड़ी और मिट्टी के भी। यानी कुछ
शरीफ़ कामों के लिए इस्तेमाल होते हैं और कुछ
कमक़दर कामों के लिए। 21 अगर कोई अपने आप
को इन बुरी चीज़ों से पाक-साफ़ करे तो वह शरीफ़
कामों के लिए इस्तेमाल होने वाला बर्तन होगा। वह
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस, मालिक के लिए मुफ़ीद और हर
नेक काम के लिए तय्यार होगा। 22 जवानी की बुरी
ख़्वाहिशात से भाग कर रास्तबाज़ी, ईमान, मुहब्बत
और सुलह-सलामती के पीछे लगे रहें। और यह उन
के साथ मिल कर करें जो ख़ुलूसदिली से ख़ुदावन्द
की परस्तिश करते हैं। 23 हमाक़त और जहालत की
बहसों से किनारा करें। आप तो जानते हैं कि इन से
सिर्फ़ झगड़े पैदा होते हैं। 24 लाज़िम है कि ख़ुदावन्द

का ख़ादिम न झगड़े बल्कि हर एक से मेहरबानी का
सुलूक करे। वह तालीम देने के क़ाबिल हो और सब्र
से ग़लत सुलूक बर्दाश्त करे। 25 जो मुख़ालफ़त करते
हैं उन्हें वह नर्मदिली से तर्बियत दे, क्यूँकि हो सकता
है कि अल्लाह उन्हें तौबा करने की तौफ़ीक़ दे और
वह सच्चाई को जान लें, 26 होश में आएँ और इब्लीस
के फंदे से बच निकलें। क्यूँकि इब्लीस ने उन्हें क़ैद
कर लिया है ताकि वह उस की मर्ज़ी पूरी करें।

आख़िरी दिन

3 1 लेकिन यह बात जान लें कि आख़िरी दिनों
में हौलनाक लम्हे आएँगे। 2 लोग ख़ुदपसन्द
और पैसों के लालची होंगे। वह शेख़ीबाज़, मग़रूर,
कुफ़्र बकने वाले, माँ-बाप के नाफ़रमान, नाशुकरे,
बेदीन 3 और मुहब्बत से ख़ाली होंगे। वह सुलह
करने के लिए तय्यार नहीं होंगे, दूसरों पर तुहमत
लगाएँगे, अय्याश और वहशी होंगे और भलाई से
नफ़रत रखेंगे। 4 वह नमकहराम, ग़ैरमुह्तात और
ग़ुरूर से फूले हुए होंगे। अल्लाह से मुहब्बत रखने
के बजाय उन्हें ऐश-ओ-इश्रत प्यारी होगी। 5 वह
बज़ाहिर ख़ुदातरस ज़िन्दगी गुज़ारेंगे, लेकिन हक़ीक़ी
ख़ुदातरस ज़िन्दगी की क़ुव्वत का इन्कार करेंगे।
ऐसों से किनारा करें। 6 उन में से कुछ लोग घरों में
घुस कर कमज़ोर ख़वातीन को अपने जाल में फंसा
लेते हैं, ऐसी ख़वातीन को जो अपने गुनाहों तले दबी
हुई हैं और जिन्हें कई तरह की शहवतें चलाती हैं।
7 गो यह हर वक़्त तालीम हासिल करती रहती हैं तो
भी सच्चाई को जानने तक कभी नहीं पहुँच सकतीं।
8 जिस तरह यन्नेस और यम्ब्रेस मूसा की मुख़ालफ़त
करते थे उसी तरह यह लोग भी सच्चाई की मुख़ालफ़त
करते हैं। इन का ज़हन बिगड़ा हुआ है और इन
का ईमान नामक़्बूल निकला। 9 लेकिन यह ज़्यादा
तरक़्क़ी नहीं करेंगे क्यूँकि इन की हमाक़त सब पर
ज़ाहिर हो जाएगी, बिलकुल उसी तरह जिस तरह
यन्नेस और यम्ब्रेस के साथ भी हुआ।

आख़िरी हिदायात

10 लेकिन आप हर लिहाज़ से मेरे शागिर्द रहे हैं,
चाल-चलन में, इरादे में, ईमान में, सब्र में, मुहब्बत
में, साबितक़दमी में, 11 ईज़ारसानियों में और दुखों में।
अन्ताकिया, इकुनियुम और लुस्तरा में मेरे साथ क्या
कुछ न हुआ! वहाँ मुझे कितनी सख़्त ईज़ारसानियों
का सामना करना पड़ा। लेकिन ख़ुदावन्द ने मुझे इन
सब से रिहाई दी। 12 बात यह है कि सब जो मसीह
ईसा में ख़ुदातरस ज़िन्दगी गुज़ारना चाहते हैं उन्हें
सताया जाएगा। 13 साथ साथ शरीर और धोकेबाज़
लोग अपने ग़लत कामों में तरक़्क़ी करते जाएंगे। वह
दूसरों को ग़लत राह पर ले जाएंगे और उन्हें ख़ुद
भी ग़लत राह पर लाया जाएगा। 14 लेकिन आप ख़ुद
उस पर क़ाइम रहें जो आप ने सीख लिया और जिस
पर आप को यक़ीन आया है। क्यूँकि आप अपने
उस्तादों को जानते हैं 15 और आप बचपन से मुक़द्दस
सहीफ़ों से वाक़िफ़ हैं। अल्लाह का यह कलाम आप
को वह हिक्मत अता कर सकता है जो मसीह ईसा
पर ईमान लाने से नजात तक पहुँचाती है। 16 क्यूँकि
हर पाक नविश्ता अल्लाह के रूह से वुजूद में आया है
और तालीम देने, मलामत करने, इस्लाह करने और
रास्तबाज़ ज़िन्दगी गुज़ारने की तर्बियत देने के लिए
मुफ़ीद है। 17 कलाम-ए-मुक़द्दस का मक़्सद यही है
कि अल्लाह का बन्दा हर लिहाज़ से क़ाबिल और हर
नेक काम के लिए तय्यार हो।

4 1 मैं अल्लाह और मसीह ईसा के सामने जो ज़िन्दों
और मुर्दों की अदालत करेगा और उस की
आमद और बादशाही की याद दिला कर सन्जीदगी
से इस की ताकीद करता हूँ, 2 कि वक़्त बेवक़्त
कलाम-ए-मुक़द्दस की मुनादी करने के लिए तय्यार
रहें। बड़े सब्र से ईमानदारों को तालीम दे कर उन्हें
समझाएँ, मलामत करें और उन की हौसलाअफ़्ज़ाई
भी करें। 3 क्यूँकि एक वक़्त आएगा जब लोग
सेहतबख़्श तालीम बर्दाश्त नहीं करेंगे बल्कि अपने
पास अपनी बुरी ख़्वाहिशात से मुताबिक़त रखने

वाले उस्तादों का ढेर लगा लेंगे। यह उस्ताद उन्हें
सिर्फ़ दिल बहलाने वाली बातें सुनाएँगे, सिर्फ़ वह
कुछ जो वह सुनना चाहते हैं। 4 वह सच्चाई को सुनने
से बाज़ आ कर फ़र्ज़ी कहानियों के पीछे पड़ जाएंगे।
5 लेकिन आप ख़ुद हर हालत में होश में रहें। दुख को
बर्दाश्त करें, अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाते रहें और
अपनी ख़िदमत के तमाम फ़राइज़ अदा करें।

6 जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है, वह वक़्त आ चुका है
कि मुझे मै की नज़र की तरह क़ुर्बानगाह पर उंडेला
जाए। मेरे कूच का वक़्त आ गया है। 7 मैं ने अच्छी
कुश्ती लड़ी है, मैं दौड़ के इख़तिताम तक पहुँच गया
हूँ, मैं ने ईमान को महफ़ूज़ रखा है। 8 और अब एक
इनआम तय्यार पड़ा है, रास्तबाज़ी का वह ताज जो
ख़ुदावन्द हमारा रास्त मुन्सिफ़ मुझे अपनी आमद के
दिन देगा। और न सिर्फ़ मुझे बल्कि उन सब को जो
उस की आमद के आरज़ूमन्द रहे हैं।

कुछ शख़्सी बातें

9 मेरे पास आने में जल्दी करें। 10 क्यूँकि देमास
ने इस दुनिया को प्यार करके मुझे छोड़ दिया है।
वह थिस्सलुनीके चला गया। क्रेस्केन्स गलतिया और
तितुस दल्मतिया चले गए हैं। 11 सिर्फ़ लूक़ा मेरे पास
है। मर्क़ुस को अपने साथ ले आना, क्यूँकि वह
ख़िदमत के लिए मुफ़ीद साबित होगा। 12 तुख़िकुस
को मैं ने इफ़िसुस भेज दिया है। 13 आते वक़्त मेरा
वह कोट अपने साथ ले आएँ जो मैं त्रोआस में कर्पुस
के पास छोड़ आया था। मेरी किताबें भी ले आएँ,
ख़ासकर चरमी काग़ज़ वाली।

14 सिकन्दर लोहार ने मुझे बहुत नुक़्सान पहुँचाया
है। ख़ुदावन्द उसे उस के काम का बदला देगा।
15 उस से मुहतात रहें क्यूँकि उस ने बड़ी शिद्दत से
हमारी बातों की मुख़ालफ़त की।

16 जब मुझे पहली दफ़ा अपने दिफ़ा के लिए
अदालत में पेश किया गया तो सब ने मुझे तर्क कर
दिया। अल्लाह उन से इस बात का हिसाब न ले बल्कि
इसे नज़रअन्दाज़ कर दे। 17 लेकिन ख़ुदावन्द मेरे
साथ था। उसी ने मुझे तक़वियत दी, क्यूँकि उस की
मर्ज़ी थी कि मेरे वसीले से उस का पूरा पैग़ाम सुनाया
जाए और तमाम ग़ैरयहूदी उसे सुनें। यूँ अल्लाह ने मुझे
शेरबबर के मुँह से निकाल कर बचा लिया। 18 और
आगे भी ख़ुदावन्द मुझे हर शरीर हमले से बचाएगा
और अपनी आसमानी बादशाही में ला कर नजात
देगा। उस का जलाल अज़ल से अबद तक होता रहे।
आमीन।

आख़िरी सलाम

19 प्रिस्किल्ला, अक्विला और उनेसिफ़ुरुस के घराने
को हमारा सलाम कहना। 20 इरास्तुस कुरिन्थुस में
रहा, और मुझे त्रुफ़िमुस को मीलेतुस में छोड़ना पड़ा,
क्यूँकि वह बीमार था। 21 जल्दी करें ताकि सर्दियों
के मौसम से पहले यहाँ पहुँचें।

यूबूलुस, पूदेन्स, लीनुस, क्लौदिया और तमाम भाई
आप को सलाम कहते हैं।

22 ख़ुदावन्द आप की रूह के साथ हो। अल्लाह का
फ़ज़्ल आप के साथ होता रहे।

तितुस

1 [1] यह ख़त पौलुस की तरफ़ से है जो अल्लाह का
ख़ादिम और ईसा मसीह का रसूल है।
मुझे चुन कर भेजा गया ताकि मैं ईमान लाने और
ख़ुदातरस ज़िन्दगी की सच्चाई जान लेने में अल्लाह
के चुने हुए लोगों की मदद करूँ। [2] क्यूँकि उस से
उन्हें अबदी ज़िन्दगी की उम्मीद दिलाई जाती है,
ऐसी ज़िन्दगी की जिस का वादा अल्लाह ने दुनिया
के ज़मानों से पेशतर ही किया था। और वह झूट नहीं
बोलता। [3] अपने मुक़र्ररा वक़्त पर अल्लाह ने अपने
कलाम का एलान करके उसे ज़ाहिर कर दिया। यही
एलान मेरे सपुर्द किया गया है और मैं इसे हमारे
नजातदहिन्दा अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ सुनाता
हूँ।
[4] मैं तितुस को लिख रहा हूँ जो हमारे मुश्तरका
ईमान के मुताबिक़ मेरा हक़ीक़ी बेटा है।
ख़ुदा बाप और हमारा नजातदहिन्दा मसीह ईसा
आप को फ़ज़्ल और सलामती अता करें।

क्रेते में तितुस की ख़िदमत

[5] मैं ने आप को क्रेते में इस लिए छोड़ा था कि
आप वह कमियाँ दुरुस्त करें जो अब तक रह गई
थीं। यह भी एक मक़्सद था कि आप हर शहर की
जमाअत में बुज़ुर्ग मुक़र्रर करें, जिस तरह मैं ने आप
को कहा था। [6] बुज़ुर्ग बेइल्ज़ाम हो। उस की सिर्फ़
एक बीवी हो। उस के बच्चे ईमानदार हों और लोग
उन पर अय्याश या सरकश होने का इल्ज़ाम न लगा
सकें। [7] निगरान को तो अल्लाह का घराना सँभालने
की ज़िम्मादारी दी गई है, इस लिए लाज़िम है कि वह
बेइल्ज़ाम हो। वह ख़ुदसर, ग़ुसीला, शराबी, लड़ाका
या लालची न हो। [8] इस के बजाय वह मेहमान-नवाज़
हो और सब अच्छी चीज़ों से प्यार करने वाला हो।
वह समझदार, रास्तबाज़ और मुक़द्दस हो। वह अपने
आप पर क़ाबू रख सके। [9] वह उस कलाम के साथ
लिपटा रहे जो क़ाबिल-ए-एतिमाद और हमारी तालीम
के मुताबिक़ है। क्यूँकि इस तरह ही वह सेहतबख़्श
तालीम दे कर दूसरों की हौसलाअफ़्ज़ाई कर सकेगा
और मुख़ालफ़त करने वालों को समझा भी सकेगा।
[10] बात यह है कि बहुत से ऐसे लोग हैं जो सरकश
हैं, जो फ़ुज़ूल बातें करके दूसरों को धोका देते हैं। यह
बात ख़ासकर उन पर सादिक़ आती है जो यहूदियों
में से हैं। [11] लाज़िम है कि उन्हें चुप करा दिया जाए,
क्यूँकि यह लालच में आ कर कई लोगों के पूरे घर
अपनी ग़लत तालीम से ख़राब कर रहे हैं। [12] उन के
अपने एक नबी ने कहा है, "क्रेते के बाशिन्दे हमेशा
झूट बोलने वाले, वहशी जानवर और सुस्त पेटू होते
हैं।" [13] उस की यह गवाही दुरुस्त है। इस वजह से
लाज़िम है कि आप उन्हें सख़्ती से समझाएँ ताकि
उन का ईमान सेहतमन्द रहे [14] और वह यहूदी फ़र्ज़ी
कहानियों या उन इन्सानों के अह्काम पर ध्यान न
दें जो सच्चाई से हट गए हैं। [15] जो लोग पाक-साफ़ हैं
उन के लिए सब कुछ पाक है। लेकिन जो नापाक
और ईमान से ख़ाली हैं उन के लिए कुछ भी पाक
नहीं होता बल्कि उन का ज़हन और उन का ज़मीर
दोनों नापाक हो गए हैं। [16] यह अल्लाह को जानने का
दावा तो करते हैं, लेकिन उन की हरकतें इस बात का
इन्कार करती हैं। यह घिनौने, नाफ़रमान और कोई
भी अच्छा काम करने के क़ाबिल नहीं हैं।

सेहतबख़्श तालीम

2 [1] लेकिन आप वह कुछ सुनाएँ जो सेहतबख़्श
तालीम से मुताबिक़त रखता है। [2] बुज़ुर्ग मर्दों को
बता देना कि वह होशमन्द, शरीफ़ और समझदार हों।
उन का ईमान, मुहब्बत और साबितक़दमी सेहतमन्द
हों।

3 इसी तरह बुज़ुर्ग ख़वातीन को हिदायत देना कि
वह मुक़द्दसीन की सी ज़िन्दगी गुज़ारें। न वह तुहमत
लगाएँ न शराब की ग़ुलाम हों। इस के बजाय वह
अच्छी तालीम देने के लाइक़ हों 4 ताकि वह जवान
औरतों को समझदार ज़िन्दगी गुज़ारने की तर्बियत
दे सकें, कि वह अपने शौहरों और बच्चों से मुहब्बत
रखें, 5 कि वह समझदार [t]और मुक़द्दस हों, कि वह
घर के फ़राइज़ अदा करने में लगी रहें, कि वह नेक
हों, कि वह अपने शौहरों के ताबे रहें। अगर वह ऐसी
ज़िन्दगी गुज़ारें तो वह दूसरों को अल्लाह के कलाम
पर कुफ़्र बकने का मौक़ा फ़राहम नहीं करेंगी।
6 ईसी तरह जवान आदमियों की हौसलाअफ़्ज़ाई
करें कि वह हर लिहाज़ से समझदार ज़िन्दगी गुज़ारें।
7 आप ख़ुद नेक काम करने में उन के लिए नमूना
बनें। तालीम देते वक़्त आप की ख़ुलूसदिली, शराफ़त
8 और अल्फ़ाज़ की बेइल्ज़ाम सेहत साफ़ नज़र आए।
फिर आप के मुख़ालिफ़ शर्मिन्दा हो जाएंगे, क्यूँकि
वह हमारे बारे में कोई बुरी बात नहीं कह सकेंगे।
9 ग़ुलामों को कह देना कि वह हर लिहाज़ से अपने
मालिकों के ताबे रहें। वह उन्हें पसन्द आएँ, बहस-
मुबाहसा किए बग़ैर उन की बात मानें 10 और उन की
चीज़ें चोरी न करें बल्कि साबित करें कि उन पर हर
तरह का एतिमाद किया जा सकता है। क्यूँकि इस
तरीक़े से वह हमारे नजातदहिन्दा अल्लाह के बारे में
तालीम को हर तरह से दिलकश बना देंगे।
11 क्यूँकि अल्लाह का नजातबख़्श फ़ज़्ल तमाम
इन्सानों पर ज़ाहिर हुआ है। 12 और यह फ़ज़्ल हमें
तर्बियत दे कर इस क़ाबिल बना देता है कि हम
बेदीनी और दुनियावी ख़्वाहिशात का इन्कार करके
इस दुनिया में समझदार, रास्तबाज़ और ख़ुदातरस
ज़िन्दगी गुज़ार सकें। 13 साथ साथ यह तर्बियत उस
मुबारक दिन का इन्तिज़ार करने में हमारी मदद
करती है जिस की उम्मीद हम रखते हैं और जब
हमारे अज़ीम ख़ुदा और नजातदहिन्दा ईसा मसीह
का जलाल ज़ाहिर हो जाएगा। 14 क्यूँकि मसीह ने
हमारे लिए अपनी जान दे दी ताकि फ़िद्या दे कर हमें
हर तरह की बेदीनी से छुड़ा कर अपने लिए एक
पाक और मख़्सूस क़ौम बनाए जो नेक काम करने में
सरगर्म हो।
15 इन ही बातों की तालीम दे कर पूरे इख़तियार के
साथ लोगों को समझाएँ और उन की इस्लाह करें।
कोई भी आप को हक़ीर न जाने।

मसीही किरदार

3 1 उन्हें याद दिलाना कि वह हुक्मरानों और
इख़तियार वालों के ताबे और फ़रमाँबरदार रहें।
वह हर नेक काम करने के लिए तय्यार रहें, 2 किसी
पर तुहमत न लगाएँ, अम्नपसन्द और नर्मदिल
हों और तमाम लोगों के साथ नर्ममिज़ाजी से पेश
आएँ। 3 क्यूँकि एक वक़्त था जब हम भी नासमझ,
नाफ़रमान और सहीह राह से भटके हुए थे। उस
वक़्त हम कई तरह की शहवतों और ग़लत ख़्वाहिशों
की ग़ुलामी में थे। हम बुरे कामों और हसद करने
में ज़िन्दगी गुज़ारते थे। दूसरे हम से नफ़रत करते
थे और हम भी उन से नफ़रत करते थे। 4 लेकिन
जब हमारे नजातदहिन्दा अल्लाह की मेहरबानी और
मुहब्बत ज़ाहिर हुई 5 तो उस ने हमें बचाया। यह नहीं
कि हम ने रास्त काम करने के बाइस नजात हासिल
की बल्कि उस के रहम ही ने हमें रूह-उल-क़ुद्स के
वसीले से बचाया जिस ने हमें धो कर नए सिरे से जन्म
दिया और नई ज़िन्दगी अता की। 6 अल्लाह ने अपने
इस रूह को बड़ी फ़य्याज़ी से हमारे नजातदहिन्दा
ईसा मसीह के वसीले से हम पर उंडेल दिया 7 ताकि
हमें उस के फ़ज़्ल से रास्तबाज़ क़रार दिया जाए और
हम उस अबदी ज़िन्दगी के वारिस बन जाएँ जिस
की उम्मीद हम रखते हैं। 8 इस बात पर पूरा एतिमाद
किया जा सकता है।

---

[t]यूनानी लफ़्ज़ में ज़ब्त-ए-नफ़्स का उन्सुर भी पाया जाता है।

मैं चाहता हूँ कि आप इन बातों पर ख़ास ज़ोर दें
ताकि जो अल्लाह पर ईमान लाए हैं वह ध्यान से नेक
काम करने में लगे रहें। यह बातें सब के लिए अच्छी
और मुफ़ीद हैं। 9 लेकिन बेहूदा बह्सों, नसबनामों,
झगड़ों और शरीअत के बारे में तनाज़ुओं से बाज़ रहें,
क्यूँकि ऐसा करना बेफ़ाइदा और फ़ुज़ूल है। 10 जो
शख़्स पार्टीबाज़ है उसे दो बार समझाएँ। अगर वह
इस के बाद भी न माने तो उसे रिफ़ाक़त से ख़ारिज
करें। 11 क्यूँकि आप को पता होगा कि ऐसा शख़्स
ग़लत राह पर है और गुनाह में फंसा हुआ होता है। उस
ने अपनी हरकतों से अपने आप को मुजरिम ठहराया
है। 12

आख़िरी हिदायात

जब मैं अर्तिमास या तुख़िकुस को आप के पास भेज
दूँगा तो मेरे पास आने में जल्दी करें। मैं नीकुपुलिस
शहर में हूँ, क्यूँकि मैं ने फ़ैसला कर लिया है कि
सर्दियों का मौसम यहाँ गुज़ारूँ। 13 जब ज़ेनास वकील
और अपुल्लोस सफ़र की तय्यारियाँ कर रहे हैं तो उन
की मदद करें। ख़याल रखें कि उन की हर ज़रूरत पूरी
की जाए। 14 लाज़िम है कि हमारे लोग नेक काम करने
में लगे रहना सीखें, ख़ासकर जहाँ बहुत ज़रूरत है,
ऐसा न हो कि आख़िरकार वह बेफल निकलें। 15 सब
जो मेरे साथ हैं आप को सलाम कहते हैं। उन्हें मेरा
सलाम देना जो ईमान में हम से मुहब्बत रखते हैं।

अल्लाह का फ़ज़्ल आप सब के साथ होता रहे।

फ़िलेमोन

1 1 यह ख़त मसीह ईसा के क़ैदी पौलुस और
तीमुथियुस की तरफ़ से है।
मैं अपने अज़ीज़ दोस्त और हमख़िदमत फ़िलेमोन
को लिख रहा हूँ 2 और साथ साथ अपनी बहन
अफ़िया, अपने हमसिपाह अर्ख़िप्पुस और उस
जमाअत को जो आप के घर में जमा होती है।
3 ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावन्द ईसा मसीह आप
को फ़ज़्ल और सलामती अता करें।

फ़िलेमोन की मुहब्बत और ईमान

4 जब भी मैं दुआ करता हूँ तो आप को याद करके
अपने ख़ुदा का शुक्र करता हूँ। 5 क्यूँकि मुझे ख़ुदावन्द
ईसा के बारे में आप के ईमान और आप की तमाम
मुक़द्दसीन से मुहब्बत की ख़बर मिलती रहती है।
6 मेरी दुआ है कि आप की जो रिफ़ाक़त ईमान से पैदा
हुई है वह आप में यूँ ज़ोर पकड़े कि आप को बेहतर
तौर पर हर उस अच्छी चीज़ की समझ आए जो हमें
मसीह में हासिल है। 7 भाई, आप की मुहब्बत देख
कर मुझे बड़ी ख़ुशी और तसल्ली हुई है, क्यूँकि आप
ने मुक़द्दसीन के दिलों को तर-ओ-ताज़ा कर दिया है।

उनेसिमुस की सिफ़ारिश

8 इस वजह से मैं मसीह में इतनी दिलेरी महसूस
करता हूँ कि आप को वह कुछ करने का हुक्म दूँ
जो अब मुनासिब है। 9 तो भी मैं ऐसा नहीं करना
चाहता बल्कि मुहब्बत की बिना पर आप से अपील
ही करता हूँ। गो मैं पौलुस मसीह ईसा का एलची
बल्कि अब उस का क़ैदी भी हूँ 10 तो भी मिन्नत करके
अपने बेटे उनेसिमुस की सिफ़ारिश करता हूँ। क्यूँकि
मेरे क़ैद में होते हुए वह मेरा बेटा बन गया। 11 पहले
तो वह आप के काम नहीं आ सकता था, लेकिन
अब वह आप के लिए और मेरे लिए काफ़ी मुफ़ीद
साबित हुआ है। [u]
12 अब मैं इस को गोया अपनी जान को आप के
पास वापस भेज रहा हूँ। 13 असल में मैं उसे अपने
पास रखना चाहता था ताकि जब तक मैं ख़ुशख़बरी
की ख़ातिर क़ैद में हूँ वह आप की जगह मेरी ख़िदमत
करे। 14 लेकिन मैं आप की इजाज़त के बग़ैर कुछ
नहीं करना चाहता था। क्यूँकि मैं चाहता हूँ कि जो
भी मेहरबानी आप करेंगे वह आप मज्बूर हो कर न
करें बल्कि ख़ुशी से।
15 हो सकता है कि उनेसिमुस इस लिए कुछ देर के
लिए आप से जुदा हो गया कि वह आप को हमेशा के
लिए दुबारा मिल जाए। 16 क्यूँकि अब वह न सिर्फ़
ग़ुलाम है बल्कि ग़ुलाम से कहीं ज़्यादा। अब वह
एक अज़ीज़ भाई है जो मुझे ख़ास अज़ीज़ है। लेकिन
वह आप को कहीं ज़्यादा अज़ीज़ होगा, ग़ुलाम की
हैसियत से भी और ख़ुदावन्द में भाई की हैसियत से
भी।
17 ग़रज़, अगर आप मुझे अपना साथी समझें तो
उसे यूँ ख़ुशआमदीद कहें जैसे मैं ख़ुद आ कर हाज़िर
होता। 18 अगर उस ने आप को कोई नुक़्सान पहुँचाया
या आप का क़र्ज़दार हुआ तो मैं इस का मुआवज़ा
देने के लिए तय्यार हूँ। 19 यहाँ मैं पौलुस अपने ही
हाथ से इस बात की तस्दीक़ करता हूँ : मैं इस का
मुआवज़ा दूँगा अगरचे मुझे आप को याद दिलाने की
ज़रूरत नहीं कि आप ख़ुद मेरे क़र्ज़दार हैं। क्यूँकि मेरा
क़र्ज़ जो आप पर है वह आप ख़ुद हैं। 20 चुनाँचे मेरे
भाई, मुझ पर यह मेहरबानी करें कि मुझे ख़ुदावन्द

---

[u] उनेसिमुस का मतलब कारआमद, फ़ाइदामन्द है।

में आप से कुछ फ़ाइदा मिले। मसीह में मेरी जान को
ताज़ा करें।

21 मैं आप की फ़रमाँबरदारी पर एतिबार करके
आप को यह लिख रहा हूँ। क्यूँकि मैं जानता हूँ कि
आप न सिर्फ़ मेरी सुनेंगे बल्कि इस से कहीं ज़्यादा
मेरे लिए करेंगे। 22 एक और गुज़ारिश भी है, मेरे लिए
एक कमरा तय्यार करें, क्यूँकि मुझे उम्मीद है कि
आप की दुआओं के जवाब में मुझे आप को वापस
दिया जाएगा।

आख़िरी सलाम

23 इपफ़्रास जो मसीह ईसा में मेरे साथ क़ैदी है
आप को सलाम कहता है। 24 इसी तरह मर्क़ुस,
अरिस्तर्ख़ुस, देमास और लूक़ा भी आप को सलाम
कहते हैं।

25 ख़ुदावन्द ईसा का फ़ज़्ल आप सब के साथ होता
रहे।

इब्रानियों

अल्लाह का अपने फ़र्ज़न्द के ज़रीए कलाम

1 1 माज़ी में अल्लाह मुख़्तलिफ़ मौक़ों पर और कई
तरीक़ों से हमारे बापदादा से हमकलाम हुआ।
उस वक़्त उस ने यह नबियों के वसीले से किया
2 लेकिन इन आख़िरी दिनों में वह अपने फ़र्ज़न्द के
वसीले से हम से हमकलाम हुआ, उसी के वसीले
से जिसे उस ने सब चीज़ों का वारिस बना दिया
और जिस के वसीले से उस ने काइनात को भी
ख़ल्क़ किया। 3 फ़र्ज़न्द अल्लाह का शानदार जलाल
मुनअकिस करता और उस की ज़ात की ऐन शबीह
[v]है। वह अपने क़वी कलाम से सब कुछ सँभाले
रखता है। जब वह दुनिया में था तो उस ने हमारे
लिए गुनाहों से पाक-साफ़ हो जाने का इन्तिज़ाम
क़ाइम किया। इस के बाद वह आसमान पर क़ादिर-
ए-मुतलक़ के दहने हाथ जा बैठा।

अल्लाह के फ़र्ज़न्द की अज़मत

4 फ़र्ज़न्द फ़रिश्तों से कहीं अज़ीम है, इतना जितना
उस का मीरास में पाया हुआ नाम उन के नामों से
अज़ीम है। 5 क्यूँकि अल्लाह ने किस फ़रिश्ते से कभी
कहा,
"तू मेरा फ़र्ज़न्द है,
आज मैं तेरा बाप बन गया हूँ।"
यह भी उस ने किसी फ़रिश्ते के बारे में कभी नहीं
कहा,
"मैं उस का बाप हूँगा
और वह मेरा फ़र्ज़न्द होगा।"
6 और जब अल्लाह अपने पहलौठे फ़र्ज़न्द को
आसमानी दुनिया में लाता है तो वह फ़रमाता है,
"अल्लाह के तमाम फ़रिश्ते उस की परस्तिश करें।"
7 फ़रिश्तों के बारे में वह फ़रमाता है,
"वह अपने फ़रिश्तों को हवाएँ
और अपने ख़ादिमों को आग के शोले बना देता
है।"
8 लेकिन फ़र्ज़न्द के बारे में वह कहता है,
"ऐ ख़ुदा, तेरा तख़्त अज़ल से अबद तक क़ाइम-
ओ-दाइम रहेगा,
और इन्साफ़ का शाही असा तेरी बादशाही पर
हुकूमत करेगा।
9 तू ने रास्तबाज़ी से मुहब्बत
और बेदीनी से नफ़रत की,
इस लिए अल्लाह तेरे ख़ुदा ने तुझे ख़ुशी के तेल से
मसह करके
तुझे तेरे साथियों से कहीं ज़्यादा सरफ़राज़ कर
दिया।"
10 वह यह भी फ़रमाता है,
"ऐ रब, तू ने इब्तिदा में दुनिया की बुन्याद रखी,
और तेरे ही हाथों ने आसमानों को बनाया।
11 यह तो तबाह हो जाएंगे,
लेकिन तू क़ाइम रहेगा।
यह सब लिबास की तरह घिस फट जाएंगे
12 और तू इन्हें चादर की तरह लपेटेगा,
पुराने कपड़े की तरह यह बदले जाएंगे।
लेकिन तू वही का वही रहता है,
और तेरी ज़िन्दगी कभी ख़त्म नहीं होती।"
13 अल्लाह ने कभी भी अपने किसी फ़रिश्ते से यह
बात न कही,
"मेरे दहने हाथ बैठ,
जब तक मैं तेरे दुश्मनों को

---

[v]या नक़्श।

तेरे पाँओ की चौकी न बना दूँ।”

14 फिर फ़रिश्ते क्या हैं? वह तो सब ख़िदमतगुज़ार
रूहें हैं जिन्हें अल्लाह उन की ख़िदमत करने के लिए
भेज देता है जिन्हें मीरास में नजात पानी है।

नजात की अज़मत

2 1 इस लिए लाज़िम है कि हम और ज़्यादा ध्यान
से कलाम-ए-मुक़द्दस की उन बातों पर ग़ौर करें
जो हम ने सुन ली हैं। ऐसा न हो कि हम समुन्दर पर
बेकाबू कश्ती की तरह बेमक़्सद इधर उधर फिरें।
2 जो कलाम फ़रिश्तों ने इन्सान तक पहुँचाया वह
तो अनमिट रहा, और जिस से भी कोई ख़ता या
नाफ़रमानी हुई उसे उस की मुनासिब सज़ा मिली।
3 तो फिर हम किस तरह अल्लाह के ग़ज़ब से बच
सकेंगे अगर हम मसीह की इतनी अज़ीम नजात को
नज़रअन्दाज़ करें? पहले ख़ुदावन्द ने ख़ुद इस नजात
का एलान किया, और फिर ऐसे लोगों ने हमारे पास
आ कर इस की तस्दीक़ की जिन्हों ने उसे सुन लिया
था। 4 साथ साथ अल्लाह ने इस बात की इस तरह
तस्दीक़ भी की कि उस ने अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़
इलाही निशान, मोजिज़े और मुख़्तलिफ़ क़िस्म के
ज़ोरदार काम दिखाए और रूह-उल-क़ुद्स की नेमतें
लोगों में तक़्सीम कीं।

मसीह का नजातबख़्श काम

5 अब ऐसा है कि अल्लाह ने मज़कूरा आने वाली
दुनिया को फ़रिश्तों के ताबे नहीं किया। 6 क्यूँकि
कलाम-ए-मुक़द्दस में किसी ने कहीं यह गवाही दी
है,

“इन्सान कौन है कि तू उसे याद करे
या आदमज़ाद कि तू उस का ख़याल रखे?
7 तू ने उसे थोड़ी देर के लिए फ़रिश्तों से कम कर
दिया,
तू ने उसे जलाल और इज़्ज़त का ताज पहना कर
8 सब कुछ उस के पाँओ के नीचे कर दिया।”

जब लिखा है कि सब कुछ उस के पाँओ तले कर
दिया गया तो इस का मतलब है कि कोई चीज़ न
रही जो उस के ताबे नहीं है। बेशक हमें हाल में यह
बात नज़र नहीं आती कि सब कुछ उस के ताबे है,
9 लेकिन हम उसे ज़रूर देखते हैं जो “थोड़ी देर के
लिए फ़रिश्तों से कम” था यानी ईसा को जिसे उस की
मौत तक के दुख की वजह से “जलाल और इज़्ज़त
का ताज” पहनाया गया है। हाँ, अल्लाह के फ़ज़्ल से
उस ने सब की ख़ातिर मौत बर्दाश्त की। 10 क्यूँकि
यही मुनासिब था कि अल्लाह जिस के लिए और जिस
के वसीले से सब कुछ है यूँ बहुत से बेटों को अपने
जलाल में शरीक करे कि वह उन की नजात के बानी
ईसा को दुख उठाने से कामिलियत तक पहुँचाए।

11 ईसा और वह जिन्हें वह मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस
कर देता है दोनों का एक ही बाप है। यही वजह
है कि ईसा यह कहने से नहीं शर्माता कि मुक़द्दसीन
मेरे भाई हैं। 12 मसलन वह अल्लाह से कहता है,

“मैं अपने भाइयों के सामने तेरे नाम का एलान
करूँगा,
जमाअत के दरमियान ही तेरी मद्हसराई करूँगा।”

13 वह यह भी कहता है, “मैं उस पर भरोसा
रखूँगा।” और फिर “मैं हाज़िर हूँ, मैं और वह बच्चे
जो अल्लाह ने मुझे दिए हैं।”

14 अब चूँकि यह बच्चे गोश्त-पोस्त और ख़ून के
इन्सान हैं इस लिए ईसा ख़ुद उन की मानिन्द बन गया
और उन की इन्सानी फ़ित्रत में शरीक हुआ। क्यूँकि
इस तरह ही वह अपनी मौत से मौत के मालिक
इब्लीस को तबाह कर सका, 15 और इस तरह ही वह
उन्हें छुड़ा सका जो मौत से डरने की वजह से ज़िन्दगी
भर ग़ुलामी में थे। 16 ज़ाहिर है कि जिन की मदद
वह करता है वह फ़रिश्ते नहीं हैं बल्कि इब्राहीम की
औलाद। 17 इस लिए लाज़िम था कि वह हर लिहाज़
से अपने भाइयों की मानिन्द बन जाए। सिर्फ़ इस से
उस का यह मक़्सद पूरा हो सका कि वह अल्लाह के
हुज़ूर एक रहीम और वफ़ादार इमाम-ए-आज़म बन
कर लोगों के गुनाहों का कफ़्फ़ारा दे सके। 18 और

अब वह उन की मदद कर सकता है जो आज़माइश
में उलझे हुए हैं, क्यूँकि उस की भी आज़माइश हुई
और उस ने ख़ुद दुख उठाया है।

ईसा मूसा से बड़ा है

3 1 मुक़द्दस भाइयो, जो मेरे साथ अल्लाह के बुलाए
हुए हैं! ईसा पर ग़ौर-ओ-ख़ौज़ करते रहें जो
अल्लाह का पैग़म्बर और इमाम-ए-आज़म है और
जिस का हम इक़्रार करते हैं। 2 ईसा अल्लाह का
वफ़ादार रहा जब उस ने उसे यह काम करने के लिए
मुक़र्रर किया, बिलकुल उसी तरह जिस तरह मूसा भी
वफ़ादार रहा जब अल्लाह का पूरा घर उस के सपुर्द
किया गया। 3 अब जो किसी घर को तामीर करता
है उसे घर की निस्बत ज़्यादा इज़्ज़त हासिल होती
है। इसी तरह ईसा मूसा की निस्बत ज़्यादा इज़्ज़त
के लाइक़ है। 4 क्यूँकि हर घर को किसी न किसी ने
बनाया होता है, जबकि अल्लाह ने सब कुछ बनाया
है। 5 मूसा तो अल्लाह के पूरे घर में ख़िदमत करते
वक़्त वफ़ादार रहा, लेकिन मुलाज़िम की हैसियत से
ताकि कलाम-ए-मुक़द्दस की आने वाली बातों की
गवाही देता रहे। 6 मसीह फ़र्क़ है। उसे फ़र्ज़न्द की
हैसियत से अल्लाह के घर पर इख़तियार है और इसी
में वह वफ़ादार है। हम उस का घर हैं बशर्तेकि हम
अपनी दिलेरी और वह उम्मीद क़ाइम रखें जिस पर
हम फ़ख़र करते हैं।

अल्लाह की क़ौम के लिए सुकून

7 चुनाँचे जिस तरह रूह-उल-क़ुद्स फ़रमाता है,
"अगर तुम आज अल्लाह की आवाज़ सुनो
8 तो अपने दिलों को सख़्त न करो जिस तरह
बग़ावत के दिन हुआ,
जब तुम्हारे बापदादा ने रेगिस्तान में मुझे आज़माया।
9 वहाँ उन्हों ने मुझे आज़माया और जाँचा,
हालाँकि उन्हों ने चालीस साल के दौरान मेरे काम
देख लिए थे।
10 इस लिए मुझे उस नस्ल पर ग़ुस्सा आया और मैं
बोला,
'उन के दिल हमेशा सहीह राह से हट जाते हैं
और वह मेरी राहें नहीं जानते।'
11 अपने ग़ज़ब में मैं ने क़सम खाई,
'यह कभी उस मुल्क में दाख़िल नहीं होंगे
जहाँ मैं उन्हें सुकून देता'।"
12 भाइयो, ख़बरदार रहें ताकि आप में से किसी
का दिल बुराई और कुफ़्र से भर कर ज़िन्दा ख़ुदा
से बर्गश्ता न हो जाए। 13 इस के बजाय जब तक
अल्लाह का यह फ़रमान क़ाइम है रोज़ाना एक दूसरे
की हौसलाअफ़्ज़ाई करें ताकि आप में से कोई भी
गुनाह के फ़रेब में आ कर सख़्तदिल न हो। 14 बात
यह है कि हम मसीह के शरीक-ए-कार बन गए हैं।
लेकिन इस शर्त पर कि हम आख़िर तक वह एतिमाद
मज़बूती से क़ाइम रखें जो हम आग़ाज़ में रखते थे।
15 मज़कूरा कलाम में लिखा है,
"अगर तुम आज अल्लाह की आवाज़ सुनो,
तो अपने दिलों को सख़्त न करो जिस तरह बग़ावत
के दिन हुआ।"
16 यह कौन थे जो अल्लाह की आवाज़ सुन कर बाग़ी
हो गए? वह सब जिन्हें मूसा मिस्र से निकाल कर
बाहर लाया। 17 और यह कौन थे जिन से अल्लाह
चालीस साल के दौरान नाराज़ रहा? यह वही थे
जिन्हों ने गुनाह किया और जो रेगिस्तान में मर कर
वहीं पड़े रहे। 18 अल्लाह ने किन की बाबत क़सम
खाई कि "यह कभी भी उस मुल्क में दाख़िल नहीं
होंगे जहाँ मैं उन्हें सुकून देता"? ज़ाहिर है उन की
बाबत जिन्हों ने नाफ़रमानी की थी। 19 चुनाँचे हम
देखते हैं कि वह ईमान न रखने की वजह से मुल्क में
दाख़िल न हो सके।

4 1 देखें, अब तक अल्लाह का यह वादा क़ाइम है,
और अब तक हम सुकून के मुल्क में दाख़िल
हो सकते हैं। इस लिए आएँ, हम ख़बरदार रहें।
ऐसा न हो कि आप में से कोई पीछे रह कर उस
में दाख़िल न होने पाए। 2 क्यूँकि हमें भी उन की तरह

एक ख़ुशख़बरी सुनाई गई। लेकिन यह पैग़ाम उन के लिए बेफ़ाइदा था, क्यूँकि वह उसे सुन कर ईमान न लाए। 3 उन की निस्बत हम जो ईमान लाए हैं सुकून के इस मुल्क में दाख़िल हो सकते हैं।

ग़रज़, यह ऐसा ही है जिस तरह अल्लाह ने फ़रमाया,
"अपने ग़ज़ब में मैं ने क़सम खाई,
'यह कभी उस मुल्क में दाख़िल नहीं होंगे
जहाँ मैं उन्हें सुकून देता'।"

अब ग़ौर करें कि उस ने यह कहा अगरचे उस का काम दुनिया की तख़्लीक़ पर इख़तिताम तक पहुँच गया था। 4 क्यूँकि कलाम-ए-मुक़द्दस में सातवें दिन के बारे में लिखा है, "सातवें दिन अल्लाह का सारा काम तक्मील तक पहुँच गया। इस से फ़ारिग़ हो कर उस ने आराम किया।" 5 अब इस का मुक़ाबला मज़कूरा आयत से करें,

"यह कभी उस मुल्क में दाख़िल नहीं होंगे
जहाँ मैं उन्हें सुकून देता।"

6 जिन्हों ने पहले अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनी उन्हें नाफ़रमान होने की वजह से यह सुकून न मिला। तो भी यह बात क़ाइम रही कि कुछ तो सुकून के इस मुल्क में दाख़िल हो जाएंगे। 7 यह मद्द-ए-नज़र रख कर अल्लाह ने एक और दिन मुक़र्रर किया, मज़कूरा "आज" का दिन। कई सालों के बाद ही उस ने दाऊद की मारिफ़त वह बात की जिस पर हम ग़ौर कर रहे हैं,

"अगर तुम आज अल्लाह की आवाज़ सुनो
तो अपने दिलों को सख़्त न करो।"

8 जब यशूअ उन्हें मुल्क-ए-कनआन में लाया तब उस ने इस्राईलियों को यह सुकून न दिया, वर्ना अल्लाह इस के बाद के किसी और दिन का ज़िक्र न करता। 9 चुनाँचे अल्लाह की क़ौम के लिए एक ख़ास सुकून बाक़ी रह गया है, ऐसा सुकून जो अल्लाह के सातवें दिन आराम करने से मुताबिक़त रखता है। 10 क्यूँकि जो भी वह सुकून पाता है जिस का वादा अल्लाह ने किया वह अल्लाह की तरह अपने कामों से फ़ारिग़ हो कर आराम करेगा। 11 इस लिए आएँ, हम इस सुकून में दाख़िल होने की पूरी कोशिश करें ताकि हम में से कोई भी बापदादा के नाफ़रमान नमूने पर चल कर गुनाह में न गिर जाए।

12 क्यूँकि अल्लाह का कलाम ज़िन्दा, मुअस्सिर और हर दोधारी तलवार से ज़्यादा तेज़ है। वह इन्सान में से गुज़र कर उस की जान रूह से और उस के जोड़ों को गूदे से अलग कर लेता है। वही दिल के ख़यालात और सोच को जाँच कर उन पर फ़ैसला करने के क़ाबिल है। 13 कोई मख़्लूक़ भी अल्लाह की नज़र से नहीं छुप सकती। उस की आँखों के सामने जिस के जवाबदिह हम होते हैं सब कुछ अयाँ और बेनिक़ाब है।

ईसा हमारा इमाम-ए-आज़म है

14 ग़रज़ आएँ, हम उस ईमान से लिपटे रहें जिस का इक़्रार हम करते हैं। क्यूँकि हमारा ऐसा अज़ीम इमाम-ए-आज़म है जो आसमानों में से गुज़र गया यानी ईसा अल्लाह का फ़र्ज़न्द। 15 और वह ऐसा इमाम-ए-आज़म नहीं है जो हमारी कमज़ोरियों को देख कर हमदर्दी न दिखाए बल्कि अगरचे वह बेगुनाह रहा तो भी हमारी तरह उसे हर क़िस्म की आज़माइश का सामना करना पड़ा। 16 अब आएँ, हम पूरे एतिमाद के साथ अल्लाह के तख़्त के सामने हाज़िर हो जाएँ जहाँ फ़ज़्ल पाया जाता है। क्यूँकि वहीं हम वह रहम और फ़ज़्ल पाएँगे जो ज़रूरत के वक़्त हमारी मदद कर सकता है।

5 1 अब इन्सानों में से चुने गए इमाम-ए-आज़म को इस लिए मुक़र्रर किया जाता है कि वह उन की ख़ातिर अल्लाह की ख़िदमत करे, ताकि वह गुनाहों के लिए नज़राने और क़ुर्बानियाँ पेश करे। 2 वह जाहिल और आवारा लोगों के साथ नर्म सुलूक रख सकता है, क्यूँकि वह ख़ुद कई तरह की कमज़ोरियों की गिरिफ़्त में होता है। 3 यही वजह है कि उसे न सिर्फ़ क़ौम के गुनाहों के लिए बल्कि अपने गुनाहों के लिए भी क़ुर्बानियाँ चढ़ानी पड़ती हैं। 4 और कोई अपनी मर्ज़ी से इमाम-ए-आज़म का पुरवक़ार उह्दा नहीं अपना

सकता बल्कि लाज़िम है कि अल्लाह उसे हारून की तरह बुला कर मुक़र्रर करे।

5 इसी तरह मसीह ने भी अपनी मर्ज़ी से इमाम-ए-आज़म का पुरवक़ार उह्दा नहीं अपनाया। इस के बजाय अल्लाह ने उस से कहा,

"तू मेरा फ़र्ज़न्द है,
आज मैं तेरा बाप बन गया हूँ।"

6 कहीं और वह फ़रमाता है,

"तू अबद तक इमाम है,
ऐसा इमाम जैसा मलिक-ए-सिद्क़ था।"

7 जब ईसा इस दुनिया में था तो उस ने ज़ोर ज़ोर से पुकार कर और आँसू बहा बहा कर उसे दुआएँ और इल्तिजाएँ पेश कीं [w]जो उसे मौत से बचा सकता था। और अल्लाह ने उस की सुनी, क्यूँकि वह ख़ुदा का ख़ौफ़ रखता था। 8 वह अल्लाह का फ़र्ज़न्द तो था, तो भी उस ने दुख उठाने से फ़रमाँबरदारी सीखी। 9 जब वह कामिलियत तक पहुँच गया तो वह उन सब की अबदी नजात का सरचश्मा बन गया जो उस की सुनते हैं। 10 उस वक़्त अल्लाह ने उसे इमाम-ए-आज़म भी मुतअय्यिन किया, ऐसा इमाम जैसा मलिक-ए-सिद्क़ था।

ईमान तर्क करने की बाबत आगाही

11 इस के बारे में हम मज़ीद बहुत कुछ कह सकते हैं, लेकिन हम मुश्किल से इस की तश्रीह कर सकते हैं, क्यूँकि आप सुनने में सुस्त हैं। 12 असल में इतना वक़्त गुज़र गया है कि अब आप को ख़ुद उस्ताद होना चाहिए। अफ़्सोस कि ऐसा नहीं है बल्कि आप को इस की ज़रूरत है कि कोई आप के पास आ कर आप को अल्लाह के कलाम की बुन्यादी सच्चाइयाँ दुबारा सिखाए। आप अब तक ठोस खाना नहीं खा सकते बल्कि आप को दूध की ज़रूरत है। 13 जो दूध ही पी सकता है वह अभी छोटा बच्चा ही है और वह रास्तबाज़ी की तालीम से नावाक़िफ़ है। 14 इस के मुक़ाबले में ठोस खाना बालिग़ों के लिए है जिन्हों ने अपनी बलूग़त के बाइस अपनी रुहानी बसारत को इतनी तर्बियत दी है कि वह भलाई और बुराई में इम्तियाज़ कर सकते हैं।

6 1 इस लिए आएँ, हम मसीह के बारे में बुन्यादी तालीम को छोड़ कर बलूग़त की तरफ़ आगे बढ़ें। क्यूँकि ऐसी बातें दुहराने की ज़रूरत नहीं होनी चाहिए जिन से ईमान की बुन्याद रखी जाती है, मसलन मौत तक पहुँचाने वाले काम से तौबा, 2 बपतिस्मा क्या है, किसी पर हाथ रखने की तालीम, मुर्दों के जी उठने और अबदी सज़ा पाने की तालीम। 3 चुनाँचे अल्लाह की मर्ज़ी हुई तो हम यह छोड़ कर आगे बढ़ेंगे।

4 नामुमकिन है कि उन्हें बहाल करके दुबारा तौबा तक पहुँचाया जाए जिन्हों ने अपना ईमान तर्क कर दिया हो। उन्हें तो एक बार अल्लाह के नूर में लाया गया था, उन्हों ने आसमान की नेमत चख ली थी, वह रूह-उल-क़ुद्स में शरीक हुए, 5 उन्हों ने अल्लाह के कलाम की भलाई और आने वाले ज़माने की कुव्वतों का तजरिबा किया था। 6 और फिर उन्हों ने अपना ईमान तर्क कर दिया! ऐसे लोगों को बहाल करके दुबारा तौबा तक पहुँचाना नामुमकिन है। क्यूँकि ऐसा करने से वह अल्लाह के फ़र्ज़न्द को दुबारा मस्लूब करके उसे लान-तान का निशाना बना देते हैं।

7 अल्लाह उस ज़मीन को बरकत देता है जो अपने पर बार बार पड़ने वाली बारिश को जज़ब करके ऐसी फ़सल पैदा करती है जो खेतीबाड़ी करने वाले के लिए मुफ़ीद हो। 8 लेकिन अगर वह सिर्फ़ ख़ारदार पौदे और ऊँटकटारे पैदा करे तो वह बेकार है और इस ख़तरे में है कि उस पर लानत भेजी जाए। अन्जाम-ए-कार उस पर का सब कुछ जलाया जाएगा।

9 अज़ीज़ो, गो हम इस तरह की बातें कर रहे हैं तो भी हमारा एतिमाद यह है कि आप को वह बेहतरीन

---

[w]यानी इमाम की हैसियत से उस ने यह दुआएँ और इल्तिजाएँ क़ुर्बानी के तौर पर पेश कीं।

बरकतें हासिल हैं जो नजात से मिलती हैं। 10 क्यूँकि
अल्लाह बेइन्साफ़ नहीं है। वह आप का काम और वह
मुहब्बत नहीं भूलेगा जो आप ने उस का नाम ले कर
ज़ाहिर की जब आप ने मुक़द्दसीन की ख़िदमत की
बल्कि आज तक कर रहे हैं। 11 लेकिन हमारी बड़ी
ख़्वाहिश यह है कि आप में से हर एक इसी सरगर्मी
का इज़हार आख़िर तक करता रहे ताकि जिन बातों
की उम्मीद आप रखते हैं वह वाक़ई पूरी हो जाएँ।
12 हम नहीं चाहते कि आप सुस्त हो जाएँ बल्कि यह
कि आप उन के नमूने पर चलें जो ईमान और सब्र से
वह कुछ मीरास में पा रहे हैं जिस का वादा अल्लाह
ने किया है।

अल्लाह का यक़ीनी वादा

13 जब अल्लाह ने क़सम खा कर इब्राहीम से वादा
किया तो उस ने अपनी ही क़सम खा कर यह वादा
किया। क्यूँकि कोई और नहीं था जो उस से बड़ा था
जिस की क़सम वह खा सकता। 14 उस वक़्त उस
ने कहा, "मैं ज़रूर तुझे बहुत बरकत दूँगा, और मैं
यक़ीनन तुझे कस्रत की औलाद दूँगा।" 15 इस पर
इब्राहीम ने सब्र से इन्तिज़ार करके वह कुछ पाया
जिस का वादा किया गया था। 16 क़सम खाते वक़्त
लोग उस की क़सम खाते हैं जो उन से बड़ा होता है।
इस तरह से क़सम में बयानकरदा बात की तस्दीक़
बह्स-मुबाहसा की हर गुन्जाइश को ख़त्म कर देती
है। 17 अल्लाह ने भी क़सम खा कर अपने वादे की
तस्दीक़ की। क्यूँकि वह अपने वादे के वारिसों पर
साफ़ ज़ाहिर करना चाहता था कि उस का इरादा
कभी नहीं बदलेगा। 18 ग़रज़, यह दो बातें क़ाइम रही
हैं, अल्लाह का वादा और उस की क़सम। वह इन्हें न
तो बदल सकता न इन के बारे में झूट बोल सकता है।
यूँ हम जिन्हों ने उस के पास पनाह ली है बड़ी तसल्ली
पा कर उस उम्मीद को मज़बूती से थामे रख सकते हैं
जो हमें पेश की गई है। 19 क्यूँकि यह उम्मीद हमारी
जान के लिए मज़बूत लंगर है। और यह आसमानी
बैत-उल-मुक़द्दस के मुक़द्दसतरीन कमरे के पर्दे में से
गुज़र कर उस में दाख़िल होती है। 20 वहीं ईसा हमारे
आगे आगे जा कर हमारी ख़ातिर दाख़िल हुआ है।
यूँ वह मलिक-ए-सिद्क़ की मानिन्द हमेशा के लिए
इमाम-ए-आज़म बन गया है।

मलिक-ए-सिद्क़

7 1 यह मलिक-ए-सिद्क़, सालिम का बादशाह
और अल्लाह तआला का इमाम था। जब
इब्राहीम चार बादशाहों को शिकस्त देने के बाद
वापस आ रहा था तो मलिक-ए-सिद्क़ उस से मिला
और उसे बरकत दी। 2 इस पर इब्राहीम ने उसे तमाम
लूट के माल का दसवाँ हिस्सा दे दिया। अब मलिक-
ए-सिद्क़ का मतलब "रास्तबाज़ी का बादशाह" है।
दूसरे, "सालिम का बादशाह" का मतलब "सलामती
का बादशाह" है। 3 न उस का बाप या माँ है, न कोई
नसबनामा। उस की ज़िन्दगी का न तो आग़ाज़ है,
न इख़तिताम। अल्लाह के फ़र्ज़न्द की तरह वह अबद
तक इमाम रहता है।

4 ग़ौर करें कि वह कितना अज़ीम था। हमारे
बापदादा इब्राहीम ने उसे लूटे हुए माल का दसवाँ
हिस्सा दे दिया। 5 अब शरीअत तलब करती है कि
लावी की वह औलाद जो इमाम बन जाती है क़ौम
यानी अपने भाइयों से पैदावार का दसवाँ हिस्सा
ले, हालाँकि उन के भाई इब्राहीम की औलाद हैं।
6 लेकिन मलिक-ए-सिद्क़ लावी की औलाद में से
नहीं था। तो भी उस ने इब्राहीम से दसवाँ हिस्सा ले
कर उसे बरकत दी जिस से अल्लाह ने वादा किया
था। 7 इस में कोई शक नहीं कि कमहैसियत शख़्स
को उस से बरकत मिलती है जो ज़्यादा हैसियत का
हो। 8 जहाँ लावी इमामों का ताल्लुक़ है फ़ानी इन्सान
दसवाँ हिस्सा लेते हैं। लेकिन मलिक-ए-सिद्क़ के
मुआमले में यह हिस्सा उस को मिला जिस के बारे
में गवाही दी गई है कि वह ज़िन्दा रहता है। 9 यह
भी कहा जा सकता है कि जब इब्राहीम ने माल का
दसवाँ हिस्सा दे दिया तो लावी ने उस के ज़रीए भी
यह हिस्सा दिया, हालाँकि वह ख़ुद दसवाँ हिस्सा

लेता है। 10 क्यूँकि गो लावी उस वक़्त पैदा नहीं हुआ
था तो भी वह एक तरह से इब्राहीम के जिस्म में मौजूद
था जब मलिक-ए-सिद्क़ उस से मिला।

11 अगर लावी की कहानत (जिस पर शरीअत
मब्नी थी) कामिलियत पैदा कर सकती तो फिर एक
और क़िस्म के इमाम की क्या ज़रूरत होती, उस की
जो हारून जैसा न हो बल्कि मलिक-ए-सिद्क़ जैसा?
12 क्यूँकि जब भी कहानत बदल जाती है तो लाज़िम
है कि शरीअत में भी तब्दीली आए। 13 और हमारा
ख़ुदावन्द जिस के बारे में यह बयान किया गया है
वह एक फ़र्क़ क़बीले का फ़र्द था। उस के क़बीले
के किसी भी फ़र्द ने इमाम की ख़िदमत अदा नहीं
की। 14 क्यूँकि साफ़ मालूम है कि ख़ुदावन्द मसीह
यहूदाह क़बीले का फ़र्द था, और मूसा ने इस क़बीले
को इमामों की ख़िदमत में शामिल न किया।

मलिक-ए-सिद्क़ जैसा एक और इमाम

15 मुआमला मज़ीद साफ़ हो जाता है। एक फ़र्क़
इमाम ज़ाहिर हुआ है जो मलिक-ए-सिद्क़ जैसा है।
16 वह लावी के क़बीले का फ़र्द होने से इमाम न
बना जिस तरह शरीअत तक़ाज़ा करती थी, बल्कि
वह लाफ़ानी ज़िन्दगी की क़ुव्वत ही से इमाम बन
गया। 17 क्यूँकि कलाम-ए-मुक़द्दस फ़रमाता है,

"तू अबद तक इमाम है,
ऐसा इमाम जैसा मलिक-ए-सिद्क़ था।"

18 यूँ पुराने हुक्म को मन्सूख़ कर दिया जाता है,
क्यूँकि वह कमज़ोर और बेकार था 19 (मूसा की
शरीअत तो किसी चीज़ को कामिल नहीं बना सकती
थी) और अब एक बेहतर उम्मीद मुहय्या की गई है
जिस से हम अल्लाह के क़रीब आ जाते हैं।

20 और यह नया निज़ाम अल्लाह की क़सम से क़ाइम
हुआ। ऐसी कोई क़सम न खाई गई जब दूसरे इमाम
बने। 21 लेकिन ईसा एक क़सम के ज़रीए इमाम बन
गया जब अल्लाह ने फ़रमाया,

"रब ने क़सम खाई है
और इस से पछताएगा नहीं,
'तू अबद तक इमाम है'।"

22 इस क़सम की वजह से ईसा एक बेहतर अह्द
की ज़मानत देता है।

23 एक और फ़र्क़, पुराने निज़ाम में बहुत से इमाम
थे, क्यूँकि मौत ने हर एक की ख़िदमत मह्दूद किए
रखी। 24 लेकिन चूँकि ईसा अबद तक ज़िन्दा है इस
लिए उस की कहानत कभी भी ख़त्म नहीं होगी। 25 यूँ
वह उन्हें अबदी नजात दे सकता है जो उस के वसीले
से अल्लाह के पास आते हैं, क्यूँकि वह अबद तक
ज़िन्दा है और उन की शफ़ाअत करता रहता है।

26 हमें ऐसे ही इमाम-ए-आज़म की ज़रूरत थी। हाँ,
ऐसा इमाम जो मुक़द्दस, बेक़ुसूर, बेदाग़, गुनाहगारों
से अलग और आसमानों से बुलन्द हुआ है। 27 उसे
दूसरे इमामों की तरह इस की ज़रूरत नहीं कि हर
रोज़ क़ुर्बानियाँ पेश करे, पहले अपने लिए फिर क़ौम
के लिए। बल्कि उस ने अपने आप को पेश करके
अपनी इस क़ुर्बानी से उन के गुनाहों को एक बार सदा
के लिए मिटा दिया। 28 मूसवी शरीअत ऐसे लोगों
को इमाम-ए-आज़म मुक़र्रर करती है जो कमज़ोर हैं।
लेकिन शरीअत के बाद अल्लाह की क़सम फ़र्ज़न्द को
इमाम-ए-आज़म मुक़र्रर करती है, और यह फ़र्ज़न्द
अबद तक कामिल है।

ईसा हमारा इमाम-ए-आज़म

8 1 जो कुछ हम कह रहे हैं उस की मर्कज़ी बात
यह है, हमारा एक ऐसा इमाम-ए-आज़म है जो
आसमान पर जलाली ख़ुदा के तख़्त के दहने हाथ
बैठा है। 2 वहाँ वह मक़्दिस में ख़िदमत करता है, उस
हक़ीक़ी मुलाक़ात के ख़ैमे में जिसे इन्सानी हाथों ने
खड़ा नहीं किया बल्कि रब ने।

3 हर इमाम-ए-आज़म को नज़राने और क़ुर्बानियाँ
पेश करने के लिए मुक़र्रर किया जाता है। इस लिए
लाज़िम है कि हमारे इमाम-ए-आज़म के पास भी कुछ
हो जो वह पेश कर सके। 4 अगर यह दुनिया में होता
तो इमाम-ए-आज़म न होता, क्यूँकि यहाँ इमाम तो हैं
जो शरीअत के मतलूबा नज़राने पेश करते हैं। 5 जिस

मक़्दिस में वह ख़िदमत करते हैं वह उस मक़्दिस की
सिर्फ़ नक़ली सूरत और साया है जो आसमान पर है।
यही वजह है कि अल्लाह ने मूसा को मुलाक़ात का
ख़ैमा बनाने से पहले आगाह करके यह कहा, "ग़ौर
कर कि सब कुछ ऐन उस नमूने के मुताबिक़ बनाया
जाए जो मैं तुझे यहाँ पहाड़ पर दिखाता हूँ।" 6 लेकिन
जो ख़िदमत ईसा को मिल गई है वह दुनिया के इमामों
की ख़िदमत से कहीं बेहतर है, उतनी बेहतर जितना
वह अह्द जिस का दरमियानी ईसा है पुराने अह्द से
बेहतर है। क्यूँकि यह अह्द बेहतर वादों की बुन्याद
पर बांधा गया।

7 अगर पहला अह्द बेइल्ज़ाम होता तो फिर नए
अह्द की ज़रूरत न होती। 8 लेकिन अल्लाह को अपनी
क़ौम पर इल्ज़ाम लगाना पड़ा। उस ने कहा,

"रब का फ़रमान है, ऐसे दिन आ रहे हैं
जब मैं इस्राईल के घराने और यहूदाह के घराने से
एक नया अह्द बांधूँगा।
9 यह उस अह्द की मानिन्द नहीं होगा
जो मैं ने उन के बापदादा के साथ
उस दिन बांधा था जब मैं उन का हाथ पकड़ कर
उन्हें मिस्र से निकाल लाया।
क्यूँकि वह उस अह्द के वफ़ादार न रहे
जो मैं ने उन से बांधा था।
नतीजे में मेरी उन के लिए फ़िक्र न रही।
10 ख़ुदावन्द फ़रमाता है कि
जो नया अह्द मैं उन दिनों के बाद उन से बांधूँगा
उस के तहत मैं अपनी शरीअत
उन के ज़हनों में डाल कर
उन के दिलों पर कन्दा करूँगा।
तब मैं ही उन का ख़ुदा हूँगा, और वह मेरी क़ौम
होंगे।
11 उस वक़्त से इस की ज़रूरत नहीं रहेगी
कि कोई अपने पड़ोसी या भाई को तालीम दे कर
कहे,
'रब को जान लो।'
क्यूँकि छोटे से ले कर बड़े तक
सब मुझे जानेंगे,
12 क्यूँकि मैं उन का क़ुसूर मुआफ़ करूँगा
और आइन्दा उन के गुनाहों को याद नहीं करूँगा।"

13 इन अल्फ़ाज़ में अल्लाह एक नए अह्द का ज़िक्र
करता है और यूँ पुराने अह्द को मतरूक क़रार देता
है। और जो मतरूक और पुराना है उस का अन्जाम
क़रीब ही है।

दुनियावी और आसमानी इबादत

9 1 जब पहला अह्द बांधा गया तो इबादत करने
के लिए हिदायात दी गईं। ज़मीन पर एक
मक़्दिस भी बनाया गया, 2 एक ख़ैमा जिस के पहले
कमरे में शमादान, मेज़ और उस पर पड़ी मख़्सूस
की गई रोटियाँ थीं। उस का नाम "मुक़द्दस कमरा"
था। 3 उस के पीछे एक और कमरा था जिस का
नाम "मुक़द्दसतरीन कमरा" था। पहले और दूसरे
कमरे के दरमियान वाक़े दरवाज़े पर पर्दा लगा था।
4 इस पिछले कमरे में बख़ूर जलाने के लिए सोने
की क़ुर्बानगाह और अह्द का सन्दूक़ था। अह्द के
सन्दूक़ पर सोना मंढा हुआ था और उस में तीन चीज़ें
थीं : सोने का मर्तबान जिस में मन भरा था, हारून का
वह असा जिस से कोंपलें फूट निकली थीं और पत्थर
की वह दो तख़्तियाँ जिन पर अह्द के अह्काम लिखे
थे। 5 सन्दूक़ पर इलाही जलाल के दो करूबी फ़रिश्ते
लगे थे जो सन्दूक़ के ढकने को साया देते थे जिस का
नाम "कफ़्फ़ारा का ढकना" था। लेकिन इस जगह
पर हम सब कुछ मज़ीद तफ़्सील से बयान नहीं करना
चाहते।

6 यह चीज़ें इसी तर्तीब से रखी जाती हैं। जब
इमाम अपनी ख़िदमत के फ़राइज़ अदा करते हैं तो
बाक़ाइदगी से पहले कमरे में जाते हैं। 7 लेकिन सिर्फ़
इमाम-ए-आज़म ही दूसरे कमरे में दाख़िल होता है,
और वह भी साल में सिर्फ़ एक दफ़ा। जब भी वह
जाता है वह अपने साथ ख़ून ले कर जाता है जिसे
वह अपने और क़ौम के लिए पेश करता है ताकि
वह गुनाह मिट जाएँ जो लोगों ने ग़ैरइरादी तौर पर

किए होते हैं। 8 इस से रूह-उल-क़ुद्स दिखाता है कि
मुक़द्दसतरीन कमरे तक रसाई उस वक़्त तक ज़ाहिर
नहीं की गई थी जब तक पहला कमरा इस्तेमाल में
था। 9 यह मजाज़न मौजूदा ज़माने की तरफ़ इशारा है।
इस का मतलब यह है कि जो नज़राने और क़ुर्बानियाँ
पेश की जा रही हैं वह परस्तार के ज़मीर को पाक-
साफ़ करके कामिल नहीं बना सकतीं। 10 क्यूँकि
इन का ताल्लुक़ सिर्फ़ खाने-पीने वाली चीज़ों और
ग़ुसल की मुख़्तलिफ़ रस्मों से होता है, ऐसी ज़ाहिरी
हिदायात जो सिर्फ़ नए निज़ाम के आने तक लागू हैं।
11 लेकिन अब मसीह आ चुका है, उन अच्छी
चीज़ों का इमाम-ए-आज़म जो अब हासिल हुई हैं।
जिस ख़ैमे में वह ख़िदमत करता है वह कहीं ज़्यादा
अज़ीम और कामिल है। यह ख़ैमा इन्सानी हाथों से
नहीं बनाया गया यानी यह इस काइनात का हिस्सा
नहीं है। 12 जब मसीह एक बार सदा के लिए ख़ैमे
के मुक़द्दसतरीन कमरे में दाख़िल हुआ तो उस ने
क़ुर्बानियाँ पेश करने के लिए बकरों और बछड़ों का
ख़ून इस्तेमाल न किया। इस के बजाय उस ने अपना
ही ख़ून पेश किया और यूँ हमारे लिए अबदी नजात
हासिल की। 13 पुराने निज़ाम में बैल-बकरों का ख़ून
और जवान गाय की राख नापाक लोगों पर छिड़के
जाते थे ताकि उन के जिस्म पाक-साफ़ हो जाएँ।
14 अगर इन चीज़ों का यह असर था तो फिर मसीह
के ख़ून का क्या ज़बरदस्त असर होगा! अज़ली रूह
के ज़रीए उस ने अपने आप को बेदाग़ क़ुर्बानी के
तौर पर पेश किया। यूँ उस का ख़ून हमारे ज़मीर को
मौत तक पहुँचाने वाले कामों से पाक-साफ़ करता है
ताकि हम ज़िन्दा ख़ुदा की ख़िदमत कर सकें।
15 यही वजह है कि मसीह एक नए अह्द का
दरमियानी है। मक़्सद यह था कि जितने लोगों को
अल्लाह ने बुलाया है उन्हें अल्लाह की मौऊदा और
अबदी मीरास मिले। और यह सिर्फ़ इस लिए मुमकिन
हुआ है कि मसीह ने मर कर फ़िद्या दिया ताकि लोग
उन गुनाहों से छुटकारा पाएँ जो उन से उस वक़्त
सरज़द हुए जब वह पहले अह्द के तहत थे।
16 जहाँ वसियत है वहाँ ज़रूरी है कि वसियत करने
वाले की मौत की तस्दीक़ की जाए। 17 क्यूँकि जब
तक वसियत करने वाला ज़िन्दा हो वसियत बेअसर
होती है। इस का असर वसियत करने वाले की मौत
ही से शुरू होता है। 18 यही वजह है कि पहला अह्द
बांधते वक़्त भी ख़ून इस्तेमाल हुआ। 19 क्यूँकि पूरी
क़ौम को शरीअत का हर हुक्म सुनाने के बाद मूसा
ने बछड़ों का ख़ून पानी से मिला कर उसे ज़ूफ़े के
गुच्छे और क़िर्मिज़ी रंग के धागे के ज़रीए शरीअत
की किताब और पूरी क़ौम पर छिड़का। 20 उस ने
कहा, “यह ख़ून उस अह्द की तस्दीक़ करता है जिस
की पैरवी करने का हुक्म अल्लाह ने तुम्हें दिया है।”
21 इसी तरह मूसा ने यह ख़ून मुलाक़ात के ख़ैमे और
इबादत के तमाम सामान पर छिड़का। 22 न सिर्फ़ यह
बल्कि शरीअत तक़ाज़ा करती है कि तक़रीबन हर
चीज़ को ख़ून ही से पाक-साफ़ किया जाए बल्कि
अल्लाह के हुज़ूर ख़ून पेश किए बग़ैर मुआफ़ी मिल ही
नहीं सकती।

मसीह की क़ुर्बानी गुनाहों को मिटा देती है

23 ग़रज़, लाज़िम था कि यह चीज़ें जो आसमान
की असली चीज़ों की नक़ली सूरतें हैं पाक-साफ़ की
जाएँ। लेकिन आसमानी चीज़ें ख़ुद ऐसी क़ुर्बानियों
का मुतालबा करती हैं जो इन से कहीं बेहतर
हों। 24 क्यूँकि मसीह सिर्फ़ इन्सानी हाथों से बने
मक़्दिस में दाख़िल नहीं हुआ जो असली मक़्दिस
की सिर्फ़ नक़ली सूरत थी बल्कि वह आसमान में
ही दाख़िल हुआ ताकि अब से हमारी ख़ातिर अल्लाह
के सामने हाज़िर हो। 25 दुनिया का इमाम-ए-आज़म
तो सालाना किसी और (यानी जानवर) का ख़ून ले
कर मुक़द्दसतरीन कमरे में दाख़िल होता है। लेकिन
मसीह इस लिए आसमान में दाख़िल न हुआ कि वह
अपने आप को बार बार क़ुर्बानी के तौर पर पेश करे।
26 अगर ऐसा होता तो उसे दुनिया की तख़्लीक़ से ले
कर आज तक बहुत दफ़ा दुख सहना पड़ता। लेकिन
ऐसा नहीं है बल्कि अब वह ज़मानों के इख़तिताम पर

एक ही बार सदा के लिए ज़ाहिर हुआ ताकि अपने
आप को क़ुर्बान करने से गुनाह को दूर करे। 27 एक
बार मरना और अल्लाह की अदालत में हाज़िर होना
हर इन्सान के लिए मुक़र्रर है। 28 इसी तरह मसीह
को भी एक ही बार बहुतों के गुनाहों को उठा कर ले
जाने के लिए क़ुर्बान किया गया। दूसरी बार जब वह
ज़ाहिर होगा तो गुनाहों को दूर करने के लिए ज़ाहिर
नहीं होगा बल्कि उन्हें नजात देने के लिए जो शिद्दत
से उस का इन्तिज़ार कर रहे हैं।

10 1 मूसवी शरीअत आने वाली अच्छी और
असली चीज़ों की सिर्फ़ नक़ली सूरत और
साया है। यह उन चीज़ों की असली शक्ल नहीं है।
इस लिए यह उन्हें कभी भी कामिल नहीं कर सकती
जो साल-ब-साल और बार बार अल्लाह के हुज़ूर आ
कर वही क़ुर्बानियाँ पेश करते रहते हैं। 2 अगर वह
कामिल कर सकती तो क़ुर्बानियाँ पेश करने की
ज़रूरत न रहती। क्यूँकि इस सूरत में परस्तार एक
बार सदा के लिए पाक-साफ़ हो जाते और उन्हें
गुनाहगार होने का शऊर न रहता। 3 लेकिन इस के
बजाय यह क़ुर्बानियाँ साल-ब-साल लोगों को उन के
गुनाहों की याद दिलाती हैं। 4 क्यूँकि मुमकिन ही नहीं
कि बैल-बकरों का ख़ून गुनाहों को दूर करे।

5 इस लिए मसीह दुनिया में आते वक़्त अल्लाह से
कहता है,

“तू क़ुर्बानियाँ और नज़रें नहीं चाहता था
लेकिन तू ने मेरे लिए एक जिस्म तय्यार किया।
6 भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ और गुनाह की क़ुर्बानियाँ
तुझे पसन्द नहीं थीं।
7 फिर मैं बोल उठा, ‘ऐ ख़ुदा, मैं हाज़िर हूँ
ताकि तेरी मर्ज़ी पूरी करूँ,
जिस तरह मेरे बारे में कलाम-ए-मुक़द्दस में [x]लिखा है’।”

8 पहले मसीह कहता है, “न तू क़ुर्बानियाँ, नज़रें,
भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ या गुनाह की क़ुर्बानियाँ
चाहता था, न उन्हें पसन्द करता था” गो शरीअत
इन्हें पेश करने का मुतालबा करती है। 9 फिर वह
फ़रमाता है, “मैं हाज़िर हूँ ताकि तेरी मर्ज़ी पूरी करूँ।”
यूँ वह पहला निज़ाम ख़त्म करके उस की जगह दूसरा
निज़ाम क़ाइम करता है। 10 और उस की मर्ज़ी पूरी
हो जाने से हमें ईसा मसीह के बदन के वसीले से
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस किया गया है। क्यूँकि उसे एक
ही बार सदा के लिए हमारे लिए क़ुर्बान किया गया।

11 हर इमाम रोज़-ब-रोज़ मक़्दिस में खड़ा अपनी
ख़िदमत के फ़राइज़ अदा करता है। रोज़ाना और
बार बार वह वही क़ुर्बानियाँ पेश करता रहता है जो
कभी भी गुनाहों को दूर नहीं कर सकतीं। 12 लेकिन
मसीह ने गुनाहों को दूर करने के लिए एक ही क़ुर्बानी
पेश की, एक ऐसी क़ुर्बानी जिस का असर सदा के
लिए रहेगा। फिर वह अल्लाह के दहने हाथ बैठ गया।
13 वहीं वह अब इन्तिज़ार करता है जब तक अल्लाह
उस के दुश्मनों को उस के पाँओ की चौकी न बना
दे। 14 यूँ उस ने एक ही क़ुर्बानी से उन्हें सदा के लिए
कामिल बना दिया है जिन्हें मुक़द्दस किया जा रहा
है।

15 रूह-उल-क़ुद्स भी हमें इस के बारे में गवाही
देता है। पहले वह कहता है,

16 “रब फ़रमाता है कि
जो नया अह्द मैं उन दिनों के बाद उन से बांधूँगा
उस के तहत मैं अपनी शरीअत
उन के दिलों में डाल कर
उन के ज़हनों पर कन्दा करूँगा।”

17 फिर वह कहता है, “उस वक़्त से मैं उन के
गुनाहों और बुराइयों को याद नहीं करूँगा।” 18 और
जहाँ इन गुनाहों की मुआफ़ी हुई है वहाँ गुनाहों को
दूर करने की क़ुर्बानियों की ज़रूरत ही नहीं रही।

---

[x]लफ़्ज़ी तर्जुमा : किताब के तूमार में।

आएँ, हम अल्लाह के हुज़ूर आएँ

19 चुनाँचे भाइयो, अब हम ईसा के ख़ून के वसीले
से पूरे एतिमाद के साथ मुक़द्दसतरीन कमरे में दाख़िल
हो सकते हैं। 20 अपने बदन की क़ुर्बानी से ईसा
ने उस कमरे के पर्दे में से गुज़रने का एक नया
और ज़िन्दगीबख़्श रास्ता खोल दिया। 21 हमारा एक
अज़ीम इमाम-ए-आज़म है जो अल्लाह के घर पर
मुक़र्रर है। 22 इस लिए आएँ, हम ख़ुलूसदिली और
ईमान के पूरे एतिमाद के साथ अल्लाह के हुज़ूर आएँ।
क्यूँकि हमारे दिलों पर मसीह का ख़ून छिड़का गया है
ताकि हमारे मुजरिम ज़मीर साफ़ हो जाएँ। नीज़, हमारे
बदनों को पाक-साफ़ पानी से धोया गया है। 23 आएँ,
हम मज़बूती से उस उम्मीद को थामे रखें जिस का
इक़्रार हम करते हैं। हम डाँवाँडोल न हो जाएँ, क्यूँकि
जिस ने इस उम्मीद का वादा किया है वह वफ़ादार
है। 24 और आएँ, हम इस पर ध्यान दें कि हम एक
दूसरे को किस तरह मुहब्बत दिखाने और नेक काम
करने पर उभार सकें। 25 हम बाहम जमा होने से बाज़
न आएँ, जिस तरह बाज़ की आदत बन गई है। इस
के बजाय हम एक दूसरे की हौसलाअफ़ज़ाई करें,
ख़ासकर यह बात मद्द-ए-नज़र रख कर कि ख़ुदावन्द
का दिन क़रीब आ रहा है।

26 ख़बरदार! अगर हम सच्चाई जान लेने के बाद भी
जान-बूझ कर गुनाह करते रहें तो मसीह की क़ुर्बानी
इन गुनाहों को दूर नहीं कर सकेगी। 27 फिर सिर्फ़
अल्लाह की अदालत की हौलनाक तवक़्क़ो बाक़ी
रहेगी, उस भड़कती हुई आग की जो अल्लाह के
मुख़ालिफ़ों को भस्म कर डालेगी। 28 जो मूसा की
शरीअत रद्द करता है उस पर रहम नहीं किया जा
सकता बल्कि अगर दो या इस से ज़ाइद लोग इस जुर्म
की गवाही दें तो उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए। 29 तो फिर
क्या ख़याल है, वह कितनी सख़्त सज़ा के लाइक़
होगा जिस ने अल्लाह के फ़र्ज़न्द को पाँओ तले रौंदा?
जिस ने अह्द का वह ख़ून हक़ीर जाना जिस से उसे
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस किया गया था? और जिस ने
फ़ज़्ल के रूह की बेइज़्ज़ती की? 30 क्यूँकि हम उसे
जानते हैं जिस ने फ़रमाया, "इन्तिक़ाम लेना मेरा ही
काम है, मैं ही बदला लूँगा।" उस ने यह भी कहा,
"रब अपनी क़ौम का इन्साफ़ करेगा।" 31 यह एक
हौलनाक बात है अगर ज़िन्दा ख़ुदा हमें सज़ा देने के
लिए पकड़े।

32 ईमान के पहले दिन याद करें जब अल्लाह ने
आप को रौशन कर दिया था। उस वक़्त के सख़्त
मुक़ाबले में आप को कई तरह का दुख सहना पड़ा,
लेकिन आप साबितक़दम रहे। 33 कभी कभी आप
की बेइज़्ज़ती और अवाम के सामने ही ईज़ारसानी
होती थी, कभी कभी आप उन के साथी थे जिन से
ऐसा सुलूक हो रहा था। 34 जिन्हें जेल में डाला गया
आप उन के दुख में शरीक हुए और जब आप का
माल-ओ-मता लूटा गया तो आप ने यह बात ख़ुशी से
बर्दाश्त की। क्यूँकि आप जानते थे कि वह माल हम
से नहीं छीन लिया गया जो पहले की निस्बत कहीं
बेहतर है और हर सूरत में क़ाइम रहेगा। 35 चुनाँचे
अपने इस एतिमाद को हाथ से जाने न दें क्यूँकि इस
का बड़ा अज्र मिलेगा। 36 लेकिन इस के लिए आप
को साबितक़दमी की ज़रूरत है ताकि आप अल्लाह
की मर्ज़ी पूरी कर सकें और यूँ आप को वह कुछ
मिल जाए जिस का वादा उस ने किया है। 37 क्यूँकि
कलाम-ए-मुक़द्दस यह फ़रमाता है,

"थोड़ी ही देर बाक़ी है
तो आने वाला पहुँचेगा, वह देर नहीं करेगा।
38 लेकिन मेरा रास्तबाज़ ईमान ही से जीता रहेगा,
और अगर वह पीछे हट जाए
तो मैं उस से ख़ुश नहीं हूँगा।"

39 लेकिन हम उन में से नहीं हैं जो पीछे हट कर
तबाह हो जाएंगे बल्कि हम उन में से हैं जो ईमान रख
कर नजात पाते हैं।

ईमान

11 1 ईमान क्या है? यह कि हम उस में क़ाइम
रहें जिस पर हम उम्मीद रखते हैं और कि

हम उस का यक़ीन रखें जो हम नहीं देख सकते।
2 ईमान ही से पुराने ज़मानों के लोगों को अल्लाह की
क़बूलियत हासिल हुई।
3 ईमान के ज़रीए हम जान लेते हैं कि काइनात को
अल्लाह के कलाम से ख़ल्क़ किया गया, कि जो कुछ
हम देख सकते हैं नज़र आने वाली चीज़ों से नहीं
बना।
4 यह ईमान का काम था कि हाबील ने अल्लाह को
एक ऐसी क़ुर्बानी पेश की जो क़ाबील की क़ुर्बानी
से बेहतर थी। इस ईमान की बिना पर अल्लाह ने
उसे रास्तबाज़ ठहरा कर उस की अच्छी गवाही दी,
जब उस ने उस की क़ुर्बानियों को क़बूल किया।
और ईमान के ज़रीए वह अब तक बोलता रहता है
हालाँकि वह मुर्दा है। 5 यह ईमान का काम था कि
हनूक न मरा बल्कि ज़िन्दा हालत में आसमान पर
उठाया गया। कोई भी उसे ढूँड कर पा न सका क्यूँकि
अल्लाह उसे आसमान पर उठा ले गया था। वजह यह
थी कि उठाए जाने से पहले उसे यह गवाही मिली
कि वह अल्लाह को पसन्द आया। 6 और ईमान रखे
बग़ैर हम अल्लाह को पसन्द नहीं आ सकते। क्यूँकि
लाज़िम है कि अल्लाह के हुज़ूर आने वाला ईमान रखे
कि वह है और कि वह उन्हें अज्र देता है जो उस के
तालिब हैं।
7 यह ईमान का काम था कि नूह ने अल्लाह की सुनी
जब उस ने उसे आने वाली बातों के बारे में आगाह
किया, ऐसी बातों के बारे में जो अभी देखने में नहीं
आई थीं। नूह ने ख़ुदा का ख़ौफ़ मान कर एक कश्ती
बनाई ताकि उस का ख़ानदान बच जाए। यूँ उस ने
अपने ईमान के ज़रीए दुनिया को मुजरिम क़रार दिया
और उस रास्तबाज़ी का वारिस बन गया जो ईमान से
हासिल होती है।
8 यह ईमान का काम था कि इब्राहीम ने अल्लाह की
सुनी जब उस ने उसे बुला कर कहा कि वह एक ऐसे
मुल्क में जाए जो उसे बाद में मीरास में मिलेगा। हाँ,
वह अपने मुल्क को छोड़ कर रवाना हुआ, हालाँकि
उसे मालूम न था कि वह कहाँ जा रहा है। 9 ईमान
के ज़रीए वह वादा किए हुए मुल्क में अजनबी की
हैसियत से रहने लगा। वह ख़ैमों में रहता था और
इसी तरह इस्हाक़ और याक़ूब भी जो उस के साथ
उसी वादे के वारिस थे। 10 क्यूँकि इब्राहीम उस शहर
के इन्तिज़ार में था जिस की मज़बूत बुन्याद है और
जिस का नक़्श बनाने और तामीर करने वाला ख़ुद
अल्लाह है।
11 यह ईमान का काम था कि इब्राहीम बाप बनने
के क़ाबिल हो गया, हालाँकि वह बुढ़ापे की वजह
से बाप नहीं बन सकता था। इसी तरह सारा भी बच्चे
जन्म नहीं दे सकती थी। लेकिन इब्राहीम समझता
था कि अल्लाह जिस ने वादा किया है वफ़ादार है।
12 गो इब्राहीम तक़रीबन मर चुका था तो भी उसी
एक शख़्स से बेशुमार औलाद निकली, तादाद में
आसमान पर के सितारों और साहिल पर की रेत के
ज़र्रों के बराबर।
13 यह तमाम लोग ईमान रखते रखते मर गए। उन्हें
वह कुछ न मिला जिस का वादा किया गया था।
उन्हों ने उसे सिर्फ़ दूर ही से देख कर ख़ुशआमदीद
[y]कहा। और उन्हों ने तस्लीम किया कि हम ज़मीन
पर [z]सिर्फ़ मेहमान और आरिज़ी तौर पर रहने वाले
अजनबी हैं। 14 जो इस क़िस्म की बातें करते हैं वह
ज़ाहिर करते हैं कि हम अब तक अपने वतन की
तलाश में हैं। 15 अगर उन के ज़हन में वह मुल्क होता
जिस से वह निकल आए थे तो वह अब भी वापस
जा सकते थे। 16 इस के बजाय वह एक बेहतर मुल्क
यानी एक आसमानी मुल्क की आर्ज़ू कर रहे थे। इस
लिए अल्लाह उन का ख़ुदा कहलाने से नहीं शर्माता,
क्यूँकि उस ने उन के लिए एक शहर तय्यार किया है।
17 यह ईमान का काम था कि इब्राहीम ने उस वक़्त
इस्हाक़ को क़ुर्बानी के तौर पर पेश किया जब अल्लाह
ने उसे आज़माया। हाँ, वह अपने इक्लौते बेटे को

[y]लफ़्ज़ी तर्जुमा : सलामी दी। सलाम दे कर इज़्ज़त का इज़हार किया। सल्यूट किया।

[z]ज़मीन पर या मुल्क (यानी कनआन) में।

क़ुर्बान करने के लिए तय्यार था अगरचे उसे अल्लाह
के वादे मिल गए थे 18 कि "तेरी नस्ल इस्हाक़ ही से
क़ाइम रहेगी।" 19 इब्राहीम ने सोचा, "अल्लाह मुर्दों को
भी ज़िन्दा कर सकता है," और मजाज़न उसे वाक़ई
इस्हाक़ मुर्दों में से वापस मिल गया।

20 यह ईमान का काम था कि इस्हाक़ ने आने वाली
चीज़ों के लिहाज़ से याक़ूब और एसौ को बरकत दी।
21 यह ईमान का काम था कि याक़ूब ने मरते वक़्त
यूसुफ़ के दोनों बेटों को बरकत दी और अपनी लाठी
के सिरे पर टेक लगा कर अल्लाह को सिज्दा किया।
22 यह ईमान का काम था कि यूसुफ़ ने मरते वक़्त
यह पेशगोई की कि इस्राईली मिस्र से निकलेंगे बल्कि
यह भी कहा कि निकलते वक़्त मेरी हड्डियाँ भी अपने
साथ ले जाओ।

23 यह ईमान का काम था कि मूसा के माँ-बाप
ने उसे पैदाइश के बाद तीन माह तक छुपाए रखा,
क्यूँकि उन्हों ने देखा कि वह ख़ूबसूरत है। वह
बादशाह के हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी करने से न डरे।
24 यह ईमान का काम था कि मूसा ने परवान चढ़
कर इन्कार किया कि उसे फ़िरऔन की बेटी का
बेटा ठहराया जाए। 25 आरिज़ी तौर पर गुनाह से
लुत्फ़अन्दोज़ होने के बजाय उस ने अल्लाह की क़ौम
के साथ बदसुलूकी का निशाना बनने को तर्जीह दी।
26 वह समझा कि जब मेरी मसीह की ख़ातिर रुस्वाई
की जाती है तो यह मिस्र के तमाम ख़ज़ानों से ज़्यादा
क़ीमती है, क्यूँकि उस की आँखें आने वाले अज्र पर
लगी रहीं।

27 यह ईमान का काम था कि मूसा ने बादशाह के
ग़ुस्से से डरे बग़ैर मिस्र को छोड़ दिया, क्यूँकि वह
गोया अनदेखे ख़ुदा को मुसलसल अपनी आँखों के
सामने रखता रहा। 28 यह ईमान का काम था कि उस
ने फ़सह की ईद मना कर हुक्म दिया कि ख़ून को
चौखटों पर लगाया जाए ताकि हलाक करने वाला
फ़रिश्ता उन के पहलौठे बेटों को न छुए।

29 यह ईमान का काम था कि इस्राईली बहर-ए-
क़ुल्ज़ुम में से यूँ गुज़र सके जैसे कि यह ख़ुश्क ज़मीन
थी। जब मिस्रियों ने यह करने की कोशिश की तो
वह डूब गए।

30 यह ईमान का काम था कि सात दिन तक
यरीहू शहर की फ़सील के गिर्द चक्कर लगाने के बाद
पूरी दीवार गिर गई। 31 यह भी ईमान का काम था
कि राहब फ़ाहिशा अपने शहर के बाक़ी नाफ़रमान
बाशिन्दों के साथ हलाक न हुई, क्यूँकि उस ने
इस्राईली जासूसों को सलामती के साथ ख़ुशआमदीद
कहा था।

32 मैं मज़ीद क्या कुछ कहूँ? मेरे पास इतना वक़्त
नहीं कि मैं जिदाऊन, बरक़, सम्सून, इफ़्ताह, दाऊद,
समूएल और नबियों के बारे में सुनाता रहूँ। 33 यह सब
ईमान के सबब से ही कामयाब रहे। वह बादशाहियों
पर ग़ालिब आए और इन्साफ़ करते रहे। उन्हें अल्लाह
के वादे हासिल हुए। उन्हों ने शेरबबरों के मुँह बन्द
कर दिए 34 और आग के भड़कते शोलों को बुझा
दिया। वह तलवार की ज़द से बच निकले। वह
कमज़ोर थे लेकिन उन्हें क़ुव्वत हासिल हुई। जब
जंग छिड़ गई तो वह इतने ताक़तवर साबित हुए कि
उन्हों ने ग़ैरमुल्की लश्करों को शिकस्त दी। 35 ईमान
रखने के बाइस ख़वातीन को उन के मुर्दा अज़ीज़
ज़िन्दा हालत में वापस मिले।

लेकिन ऐसे भी थे जिन्हें तशद्दुद बर्दाश्त करना पड़ा
और जिन्हों ने आज़ाद हो जाने से इन्कार किया
ताकि उन्हें एक बेहतर चीज़ यानी जी उठने का
तजरिबा हासिल हो जाए। 36 बाज़ को लान-तान और
कोड़ों बल्कि ज़न्जीरों और क़ैद का भी सामना करना
पड़ा। 37 उन्हें संगसार किया गया, उन्हें आरे से
चीरा गया, उन्हें तलवार से मार डाला गया। बाज़
को भेड़-बकरियों की खालों में घूमना फिरना पड़ा।
ज़रूरतमन्द हालत में उन्हें दबाया और उन पर ज़ुल्म
किया जाता रहा। 38 दुनिया उन के लाइक़ नहीं थी!
वह वीरान जगहों में, पहाड़ों पर, ग़ारों और गढ़ों में
आवारा फिरते रहे।

39 इन सब को ईमान की वजह से अच्छी गवाही
मिली। तो भी इन्हें वह कुछ हासिल न हुआ जिस

का वादा अल्लाह ने किया था। 40 क्यूँकि उस ने हमारे
लिए एक ऐसा मन्सूबा बनाया था जो कहीं बेहतर है।
वह चाहता था कि यह लोग हमारे बग़ैर कामिलियत
तक न पहुँचें।

अल्लाह हमारा बाप

12 1 ग़रज़, हम गवाहों के इतने बड़े लश्कर से
घेरे रहते हैं! इस लिए आएँ, हम सब कुछ
उतारें जो हमारे लिए रुकावट का बाइस बन गया है,
हर गुनाह को जो हमें आसानी से उलझा लेता है।
आएँ, हम साबितक़दमी से उस दौड़ में दौड़ते रहें जो
हमारे लिए मुक़र्रर की गई है। 2 और दौड़ते हुए हम
ईसा को तकते रहें, उसे जो ईमान का बानी भी है
और उसे तक्मील तक पहुँचाने वाला भी। याद रहे
कि गो वह ख़ुशी हासिल कर सकता था तो भी उस
ने सलीबी मौत की शर्मनाक बेइज़्ज़ती की पर्वा न की
बल्कि उसे बर्दाश्त किया। और अब वह अल्लाह के
तख़्त के दहने हाथ जा बैठा है!

3 उस पर ध्यान दें जिस ने गुनाहगारों की इतनी
मुख़ालफ़त बर्दाश्त की। फिर आप थकते थकते
बेदिल नहीं हो जाएंगे। 4 देखें, आप गुनाह से लड़े
तो हैं, लेकिन अभी तक आप को जान देने तक इस
की मुख़ालफ़त नहीं करनी पड़ी। 5 क्या आप कलाम-
ए-मुक़द्दस की यह हौसलाअफ़्ज़ा बात भूल गए हैं जो
आप को अल्लाह के फ़र्ज़न्द ठहरा कर बयान करती
है,

"मेरे बेटे, रब की तर्बियत को हक़ीर मत जान,
जब वह तुझे डाँटे तो न बेदिल हो।

6 क्यूँकि जो रब को प्यारा है उस की वह तादीब
करता है,

वह हर एक को सज़ा देता है
जिसे उस ने बेटे के तौर पर क़बूल किया है।"

7 अपनी मुसीबतों को इलाही तर्बियत समझ कर
बर्दाश्त करें। इस में अल्लाह आप से बेटों का सा
सुलूक कर रहा है। क्या कभी कोई बेटा था जिस
की उस के बाप ने तर्बियत न की? 8 अगर आप
की तर्बियत सब की तरह न की जाती तो इस का
मतलब यह होता कि आप अल्लाह के हक़ीक़ी फ़र्ज़न्द
न होते बल्कि नाजाइज़ औलाद। 9 देखें, जब हमारे
इन्सानी बाप ने हमारी तर्बियत की तो हम ने उस की
इज़्ज़त की। अगर ऐसा है तो कितना ज़्यादा ज़रूरी
है कि हम अपने रुहानी बाप के ताबे हो कर ज़िन्दगी
पाएँ। 10 हमारे इन्सानी बापों ने हमें अपनी समझ
के मुताबिक़ थोड़ी देर के लिए तर्बियत दी। लेकिन
अल्लाह हमारी ऐसी तर्बियत करता है जो फ़ाइदे का
बाइस है और जिस से हम उस की क़ुद्दूसियत में
शरीक होने के क़ाबिल हो जाते हैं। 11 जब हमारी
तर्बियत की जाती है तो उस वक़्त हम ख़ुशी महसूस
नहीं करते बल्कि ग़म। लेकिन जिन की तर्बियत इस
तरह होती है वह बाद में रास्तबाज़ी और सलामती
की फ़सल काटते हैं।

हिदायात

12 चुनाँचे अपने थकेहारे बाज़ूओं और कमज़ोर
घुटनों को मज़बूत करें। 13 अपने रास्ते चलने के
क़ाबिल बना दें ताकि जो उज़्ज़ू लंगड़ा है उस का जोड़
उतर न जाए [a]बल्कि शिफ़ा पाए।

14 सब के साथ मिल कर सुलह-सलामती और
क़ुद्दूसियत के लिए जिद्द-ओ-जह्द करते रहें, क्यूँकि
जो मुक़द्दस नहीं है वह ख़ुदावन्द को कभी नहीं
देखेगा। 15 इस पर ध्यान देना कि कोई अल्लाह के
फ़ज़्ल से महरूम न रहे। ऐसा न हो कि कोई कड़वी
जड़ फूट निकले और बढ़ कर तक्लीफ़ का बाइस
बन जाए और बहुतों को नापाक कर दे। 16 ध्यान
दें कि कोई भी ज़िनाकार या एसौ जैसा दुनियावी
शख़्स न हो जिस ने एक ही खाने के इवज़ अपने
वह मौरूसी हुक़ूक़ बेच डाले जो उसे बड़े बेटे की
हैसियत से हासिल थे। 17 आप को भी मालूम है कि

---

[a]एक और मुमकिना तर्जुमा : जो लंगड़ा है वह भटक न जाए।

बाद में जब वह यह बरकत विरासत में पाना चाहता
था तो उसे रद्द किया गया। उस वक़्त उसे तौबा का
मौक़ा न मिला हालाँकि उस ने आँसू बहा बहा कर
यह बरकत हासिल करने की कोशिश की।

18 आप उस तरह अल्लाह के हुज़ूर नहीं आए जिस
तरह इस्राईली जब वह सीना पहाड़ पर पहुँचे, उस
पहाड़ के पास जिसे छुआ जा सकता था। वहाँ आग
भड़क रही थी, अंधेरा ही अंधेरा था और आँधी चल
रही थी। 19 जब नरसिंगे की आवाज़ सुनाई दी और
अल्लाह उन से हमकलाम हुआ तो सुनने वालों ने उस
से इल्तिजा की कि हमें मज़ीद कोई बात न बता।
20 क्यूँकि वह यह हुक्म बर्दाश्त नहीं कर सकते थे
कि "अगर कोई जानवर भी पहाड़ को छू ले तो उसे
संगसार करना है।" 21 यह मन्ज़र इतना हैबतनाक था
कि मूसा ने कहा, "मैं ख़ौफ़ के मारे काँप रहा हूँ।"

22 नहीं, आप सिय्यून पहाड़ के पास आ गए हैं,
यानी ज़िन्दा ख़ुदा के शहर आसमानी यरूशलम के
पास। आप बेशुमार फ़रिश्तों और जश्न मनाने वाली
जमाअत के पास आ गए हैं, 23 उन पहलौठों की
जमाअत के पास जिन के नाम आसमान पर दर्ज किए
गए हैं। आप तमाम इन्सानों के मुन्सिफ़ अल्लाह के
पास आ गए हैं और कामिल किए गए रास्तबाज़ों की
रूहों के पास। 24 नीज़ आप नए अह्द के दरमियानी
ईसा के पास आ गए हैं और उस छिड़काए गए ख़ून
के पास जो हाबील के ख़ून की तरह बदला लेने की
बात नहीं करता बल्कि एक ऐसी मुआफ़ी देता है जो
कहीं ज़्यादा मुअस्सिर है। 25 चुनाँचे ख़बरदार रहें कि
आप उस की सुनने से इन्कार न करें जो इस वक़्त
आप से हमकलाम हो रहा है। क्यूँकि अगर इस्राईली
न बचे जब उन्हों ने दुनियावी पैग़म्बर मूसा की सुनने
से इन्कार किया तो फिर हम किस तरह बचेंगे अगर
हम उस की सुनने से इन्कार करें जो आसमान से हम
से हमकलाम होता है। 26 जब अल्लाह सीना पहाड़ पर
से बोल उठा तो ज़मीन काँप गई, लेकिन अब उस
ने वादा किया है, "एक बार फिर मैं न सिर्फ़ ज़मीन
को हिला दूँगा बल्कि आसमान को भी।" 27 "एक
बार फिर" के अल्फ़ाज़ इस तरफ़ इशारा करते हैं कि
ख़ल्क़ की गई चीज़ों को हिला कर दूर किया जाएगा
और नतीजे में सिर्फ़ वह चीज़ें क़ाइम रहेंगी जिन्हें
हिलाया नहीं जा सकता।

28 चुनाँचे आएँ, हम शुक्रगुज़ार हों। क्यूँकि हमें एक
ऐसी बादशाही हासिल हो रही है जिसे हिलाया नहीं
जा सकता। हाँ, हम शुक्रगुज़ारी की इस रूह में
एहतिराम और ख़ौफ़ के साथ अल्लाह की पसन्दीदा
परस्तिश करें, 29 क्यूँकि हमारा ख़ुदा हक़ीक़तन भस्म
कर देने वाली आग है।

हम अल्लाह को किस तरह पसन्द आएँ

13 1 एक दूसरे से भाइयों की सी मुहब्बत रखते
रहें। 2 मेहमान-नवाज़ी मत भूलना, क्यूँकि
ऐसा करने से बाज़ ने नादानिस्ता तौर पर फ़रिश्तों
की मेहमान-नवाज़ी की है। 3 जो क़ैद में हैं, उन्हें यूँ
याद रखना जैसे आप ख़ुद उन के साथ क़ैद में हों।
और जिन के साथ बदसुलूकी हो रही है उन्हें यूँ याद
रखना जैसे आप से यह बदसुलूकी हो रही हो।

4 लाज़िम है कि सब के सब इज़्दिवाजी ज़िन्दगी
का एहतिराम करें। शौहर और बीवी एक दूसरे के
वफ़ादार रहें, क्यूँकि अल्लाह ज़िनाकारों और शादी
का बंधन तोड़ने वालों की अदालत करेगा।

5 आप की ज़िन्दगी पैसों के लालच से आज़ाद हो।
उसी पर इकतिफ़ा करें जो आप के पास है, क्यूँकि
अल्लाह ने फ़रमाया है, "मैं तुझे कभी नहीं छोड़ूँगा, मैं
तुझे कभी तर्क नहीं करूँगा।" 6 इस लिए हम एतिमाद
से कह सकते हैं,

"रब मेरी मदद करने वाला है,
इस लिए मैं नहीं डरूँगा।
इन्सान मेरा क्या बिगाड़ सकता है?"

7 अपने राहनुमाओं को याद रखें जिन्हों ने आप को
अल्लाह का कलाम सुनाया। इस पर ग़ौर करें कि उन
के चाल-चलन से कितनी भलाई पैदा हुई है, और
उन के ईमान के नमूने पर चलें। 8 ईसा मसीह माज़ी में,
आज और अबद तक यक्साँ है। 9 तरह तरह की और

बेगाना तालीमात आप को इधर उधर न भटकाएँ। आप तो अल्लाह के फ़ज़्ल से तक़वियत पाते हैं और इस से नहीं कि आप मुख़्तलिफ़ खानों से पर्हेज़ करते हैं। इस में कोई ख़ास फ़ाइदा नहीं है।

10 हमारे पास एक ऐसी क़ुर्बानगाह है जिस की क़ुर्बानी खाना मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत करने वालों के लिए मना है। 11 क्यूँकि गो इमाम-ए-आज़म जानवरों का ख़ून गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर मुक़द्दसतरीन कमरे में ले जाता है, लेकिन उन की लाशों को ख़ैमागाह के बाहर जलाया जाता है। 12 इस वजह से ईसा को भी शहर के बाहर सलीबी मौत सहनी पड़ी ताकि क़ौम को अपने ख़ून से मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करे। 13 इस लिए आएँ, हम ख़ैमागाह से निकल कर उस के पास जाएँ और उस की बेइज़्ज़ती में शरीक हो जाएँ। 14 क्यूँकि यहाँ हमारा कोई क़ाइम रहने वाला शहर नहीं है बल्कि हम आने वाले शहर की शदीद आर्ज़ू रखते हैं। 15 चुनाँचे आएँ, हम ईसा के वसीले से अल्लाह को हम्द-ओ-सना की क़ुर्बानी पेश करें, यानी हमारे होंटों से उस के नाम की तारीफ़ करने वाला फल निकले। 16 नीज़, भलाई करना और दूसरों को अपनी बरकात में शरीक करना मत भूलना, क्यूँकि ऐसी क़ुर्बानियाँ अल्लाह को पसन्द हैं।

17 अपने राहनुमाओं की सुनें और उन की बात मानें। क्यूँकि वह आप की देख-भाल करते करते जागते रहते हैं, और इस में वह अल्लाह के सामने जवाबदिह हैं। उन की बात मानें ताकि वह ख़ुशी से अपनी ख़िदमत सरअन्जाम दें। वर्ना वह कराहते कराहते अपनी ज़िम्मादारी निभाएँगे, और यह आप के लिए मुफ़ीद नहीं होगा।

18 हमारे लिए दुआ करें, गो हमें यक़ीन है कि हमारा ज़मीर साफ़ है और हम हर लिहाज़ से अच्छी ज़िन्दगी गुज़ारने के ख़्वाहिशमन्द हैं।

19 मैं ख़ासकर इस पर ज़ोर देना चाहता हूँ कि आप दुआ करें कि अल्लाह मुझे आप के पास जल्द वापस आने की तौफ़ीक़ बख़्शे।

आख़िरी दुआ

20 अब सलामती का ख़ुदा जो अबदी अह्द के ख़ून से हमारे ख़ुदावन्द और भेड़ों के अज़ीम चरवाहे ईसा को मुर्दों में से वापस लाया 21 वह आप को हर अच्छी चीज़ से नवाज़े ताकि आप उस की मर्ज़ी पूरी कर सकें। और वह ईसा मसीह के ज़रीए हम में वह कुछ पैदा करे जो उसे पसन्द आए। उस का जलाल अज़ल से अबद तक होता रहे! आमीन।

आख़िरी अल्फ़ाज़

22 भाइयो, मेहरबानी करके नसीहत की इन बातों पर सन्जीदगी से ग़ौर करें, क्यूँकि मैं ने आप को सिर्फ़ चन्द अल्फ़ाज़ लिखे हैं। 23 यह बात आप के इल्म में होनी चाहिए कि हमारे भाई तीमुथियुस को रिहा कर दिया गया है। अगर वह जल्दी पहुँचे तो उसे साथ ले कर आप से मिलने आऊँगा।

24 अपने तमाम राहनुमाओं और तमाम मुक़द्दसीन को मेरा सलाम कहना। इटली के ईमानदार आप को सलाम कहते हैं।

25 अल्लाह का फ़ज़्ल आप सब के साथ रहे।

याक़ूब

1 [1] यह ख़त अल्लाह और ख़ुदावन्द ईसा मसीह के
ख़ादिम याक़ूब की तरफ़ से है।
ग़ैरयहूदी क़ौमों में बिखरे हुए बारह इस्राईली
क़बीलों को सलाम।

ईमान और हिक्मत

[2] मेरे भाइयो, जब आप को तरह तरह की
आज़माइशों का सामना करना पड़े तो अपने आप को
ख़ुशक़िसमत समझें, [3] क्यूँकि आप जानते हैं कि आप
के ईमान के आज़माए जाने से साबितक़दमी पैदा
होती है। [4] चुनाँचे साबितक़दमी को बढ़ने दें, क्यूँकि
जब वह तक्मील तक पहुँचेगी तो आप बालिग़ और
कामिल बन जाएंगे, और आप में कोई भी कमी
नहीं पाई जाएगी। [5] लेकिन अगर आप में से किसी
में हिक्मत की कमी हो तो अल्लाह से माँगे जो सब
को फ़य्याज़ी से और बग़ैर झिड़की दिए देता है।
वह ज़रूर आप को हिक्मत देगा। [6] लेकिन अपनी
गुज़ारिश ईमान के साथ पेश करें और शक न करें,
क्यूँकि शक करने वाला समुन्दर की मौज की मानिन्द
होता है जो हवा से इधर उधर उछलती बहती जाती
है। [7] ऐसा शख़्स न समझे कि मुझे ख़ुदावन्द से कुछ
मिलेगा, [8] क्यूँकि वह दोदिला और अपने हर काम में
ग़ैरमुस्तक़िलमिज़ाज है।

ग़ुर्बत और दौलत

[9] पस्तहाल भाई मसीह में अपने ऊँचे मर्तबे पर
फ़ख़र करे [10] जबकि दौलतमन्द शख़्स अपने अदना
मर्तबे पर फ़ख़र करे, क्यूँकि वह जंगली फूल की
तरह जल्द ही जाता रहेगा। [11] जब सूरज तुलू होता
है तो उस की झुलसा देने वाली धूप में पौदा मुरझा
जाता, उस का फूल गिर जाता और उस की तमाम
ख़ूबसूरती ख़त्म हो जाती है। उस तरह दौलतमन्द
शख़्स भी काम करते करते मुरझा जाएगा।

आज़माइश

[12] मुबारक है वह जो आज़माइश के वक़्त
साबितक़दम रहता है, क्यूँकि क़ाइम रहने पर उसे
ज़िन्दगी का वह ताज मिलेगा जिस का वादा अल्लाह
ने उन से किया है जो उस से मुहब्बत रखते हैं।
[13] आज़माइश के वक़्त कोई न कहे कि अल्लाह
मुझे आज़माइश में फंसा रहा है। न तो अल्लाह को
बुराई से आज़माइश में फंसाया जा सकता है, न
वह किसी को फंसाता है। [14] बल्कि हर एक की
अपनी बुरी ख़्वाहिशात उसे खैंच कर और उकसा कर
आज़माइश में फंसा देती हैं। [15] फिर यह ख़्वाहिशात
हामिला हो कर गुनाह को जन्म देती हैं और गुनाह
बालिग़ हो कर मौत को जन्म देता है।
[16] मेरे अज़ीज़ भाइयो, फ़रेब मत खाना! [17] हर
अच्छी नेमत और हर अच्छा तुह्फ़ा आसमान से
नाज़िल होता है, नूरों के बाप से, जिस में न कभी
तब्दीली आती है, न बदलते हुए साइयों की सी हालत
पाई जाती है। [18] उसी ने अपनी मर्ज़ी से हमें सच्चाई
के कलाम के वसीले से पैदा किया। यूँ हम एक तरह
से उस की तमाम मख़्लूक़ात का पहला फल हैं।

सुनना काफ़ी नहीं है

[19] मेरे अज़ीज़ भाइयो, इस का ख़याल रखना, हर
शख़्स सुनने में तेज़ हो, लेकिन बोलने और ग़ुस्सा
करने में धीमा। [20] क्यूँकि इन्सान का ग़ुस्सा वह
रास्तबाज़ी पैदा नहीं करता जो अल्लाह चाहता है।
[21] चुनाँचे अपनी ज़िन्दगी की गन्दी आदतें और शरीर
चाल-चलन दूर करके हलीमी से कलाम-ए-मुक़द्दस

का वह बीज क़बूल करें जो आप के अन्दर बोया गया है, क्यूँकि यही आप को नजात दे सकता है।

22 कलाम-ए-मुक़द्दस को न सिर्फ़ सुनें बल्कि उस पर अमल भी करें, वर्ना आप अपने आप को फ़रेब देंगे। 23 जो कलाम को सुन कर उस पर अमल नहीं करता वह उस आदमी की मानिन्द है जो आईने में अपने चिहरे पर नज़र डालता है। 24 अपने आप को देख कर वह चला जाता है और फ़ौरन भूल जाता है कि मैं ने किया कुछ देखा। 25 उस की निस्बत वह मुबारक है जो आज़ाद करने वाली कामिल शरीअत में ग़ौर से नज़र डाल कर उस में क़ाइम रहता है और उसे सुनने के बाद नहीं भूलता बल्कि उस पर अमल करता है।

26 क्या आप अपने आप को दीनदार समझते हैं? अगर आप अपनी ज़बान पर क़ाबू नहीं रख सकते तो आप अपने आप को फ़रेब देते हैं। फिर आप की दीनदारी का इज़हार बेकार है। 27 ख़ुदा बाप की नज़र में दीनदारी का पाक और बेदाग़ इज़हार यह है, यतीमों और बेवाओं की देख-भाल करना जब वह मुसीबत में हों और अपने आप को दुनिया की आलूदगी से बचाए रखना।

तास्सुब से ख़बरदार

2 1 मेरे भाइयो, लाज़िम है कि आप जो हमारे जलाली ख़ुदावन्द ईसा मसीह पर ईमान रखते हैं जानिबदारी न दिखाएँ। 2 फ़र्ज़ करें कि एक आदमी सोने की अंगूठी और शानदार कपड़े पहने हुए आप की जमाअत में आ जाए और साथ साथ एक ग़रीब आदमी भी मैले-कुचैले कपड़े पहने हुए अन्दर आए। 3 और आप शानदार कपड़े पहने हुए आदमी पर ख़ास ध्यान दे कर उस से कहें, "यहाँ इस अच्छी कुर्सी पर तश्रीफ़ रखें," लेकिन ग़रीब आदमी को कहें, "वहाँ खड़ा हो जा" या "आ, मेरे पाँओ के पास फ़र्श पर बैठ जा।" 4 क्या आप ऐसा करने से मुजरिमाना ख़यालात वाले मुन्सिफ़ नहीं साबित हुए? क्यूँकि आप ने लोगों में नारवा फ़र्क़ किया है।

5 मेरे अज़ीज़ भाइयो, सुनें! क्या अल्लाह ने उन्हें नहीं चुना जो दुनिया की नज़र में ग़रीब हैं ताकि वह ईमान में दौलतमन्द हो जाएँ? यही लोग वह बादशाही मीरास में पाएँगे जिस का वादा अल्लाह ने उन से किया है जो उसे प्यार करते हैं। 6 लेकिन आप ने ज़रूरतमन्दों की बेइज़्ज़ती की है। ज़रा सोच लें, वह कौन हैं जो आप को दबाते और अदालत में घसीट कर ले जाते हैं? क्या यह दौलतमन्द ही नहीं हैं? 7 वही तो ईसा पर कुफ़्र बकते हैं, उस अज़ीम नाम पर जिस के पैरोकार आप बन गए हैं।

8 अल्लाह चाहता है कि आप कलाम-ए-मुक़द्दस में मज़कूर शाही शरीअत पूरी करें, "अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आप से रखता है।" 9 चुनाँचे जब आप जानिबदारी दिखाते हैं तो गुनाह करते हैं और शरीअत आप को मुजरिम ठहराती है। 10 मत भूलना कि जिस ने शरीअत का सिर्फ़ एक हुक्म तोड़ा है वह पूरी शरीअत का क़ुसूरवार ठहरता है। 11 क्यूँकि जिस ने फ़रमाया, "ज़िना न करना" उस ने यह भी कहा, "क़त्ल न करना।" हो सकता है कि आप ने ज़िना तो न किया हो, लेकिन किसी को क़त्ल किया हो। तो भी आप उस एक जुर्म की वजह से पूरी शरीअत तोड़ने के मुजरिम बन गए हैं। 12 चुनाँचे जो कुछ भी आप कहते और करते हैं याद रखें कि आज़ाद करने वाली शरीअत आप की अदालत करेगी। 13 क्यूँकि अल्लाह अदालत करते वक़्त उस पर रहम नहीं करेगा जिस ने ख़ुद रहम नहीं दिखाया। लेकिन रहम अदालत पर ग़ालिब आ जाता है। जब आप रहम करेंगे तो अल्लाह आप पर रहम करेगा।

ईमान नेक कामों के बग़ैर मुर्दा है

14 मेरे भाइयो, अगर कोई ईमान रखने का दावा करे, लेकिन उस के मुताबिक़ ज़िन्दगी न गुज़ारे तो उस का क्या फ़ाइदा है? क्या ऐसा ईमान उसे नजात दिला सकता है? 15 फ़र्ज़ करें कि कोई भाई या बहन कपड़ों और रोज़मर्रा रोटी की ज़रूरतमन्द हो। 16 यह

देख कर आप में से कोई उस से कहे, “अच्छा जी,
ख़ुदा हाफ़िज़। गर्म कपड़े पहनो और जी भर कर
खाना खाओ।” लेकिन वह ख़ुद यह ज़रूरियात पूरी
करने में मदद न करे। क्या इस का कोई फ़ाइदा है?
17 ग़रज़, महज़ ईमान काफ़ी नहीं। अगर वह नेक
कामों से अमल में न लाया जाए तो वह मुर्दा है।

18 हो सकता है कोई एतिराज़ करे, “एक शख़्स के
पास तो ईमान होता है, दूसरे के पास नेक काम।”
आएँ, मुझे दिखाएँ कि आप नेक कामों के बग़ैर
किस तरह ईमान रख सकते हैं। यह तो नामुमकिन
है। लेकिन मैं ज़रूर आप को अपने नेक कामों से
दिखा सकता हूँ कि मैं ईमान रखता हूँ। 19 अच्छा,
आप कहते हैं, “हम ईमान रखते हैं कि एक ही ख़ुदा
है।” शाबाश, यह बिलकुल सहीह है। शयातीन भी
यह ईमान रखते हैं, गो वह यह जान कर ख़ौफ़ के
मारे थरथराते हैं। 20 होश में आएँ! क्या आप नहीं
समझते कि नेक आमाल के बग़ैर ईमान बेकार है?
21 हमारे बाप इब्राहीम पर ग़ौर करें। वह तो इसी
वजह से रास्तबाज़ ठहराया गया कि उस ने अपने
बेटे इस्हाक़ को क़ुर्बानगाह पर पेश किया। 22 आप
ख़ुद देख सकते हैं कि उस का ईमान और नेक काम
मिल कर अमल कर रहे थे। उस का ईमान तो उस से
मुकम्मल हुआ जो कुछ उस ने किया 23 और इस तरह
ही कलाम-ए-मुक़द्दस की यह बात पूरी हुई, “इब्राहीम
ने अल्लाह पर भरोसा रखा। इस बिना पर अल्लाह ने उसे
रास्तबाज़ क़रार दिया।” इसी वजह से वह “अल्लाह
का दोस्त” कहलाया। 24 यूँ आप ख़ुद देख सकते हैं
कि इन्सान अपने नेक आमाल की बिना पर रास्तबाज़
क़रार दिया जाता है, न कि सिर्फ़ ईमान रखने की
वजह से।

25 राहब फ़ाहिशा की मिसाल भी लें। उसे भी अपने
कामों की बिना पर रास्तबाज़ क़रार दिया गया जब
उस ने इस्राईली जासूसों की मेहमान-नवाज़ी की और
उन्हें शहर से निकलने का दूसरा रास्ता दिखा कर
बचाया।

26 ग़रज़, जिस तरह बदन रूह के बग़ैर मुर्दा है उसी
तरह ईमान भी नेक आमाल के बग़ैर मुर्दा है।

ज़बान

3 1 मेरे भाइयो, आप में से ज़्यादा उस्ताद न बनें।
आप को मालूम है कि हम उस्तादों की ज़्यादा
सख़्ती से अदालत की जाएगी। 2 हम सब से तो कई
तरह की ग़लतियाँ सरज़द होती हैं। लेकिन जिस
शख़्स से बोलने में कभी ग़लती नहीं होती वह कामिल
है और अपने पूरे बदन को क़ाबू में रखने के क़ाबिल
है। 3 हम घोड़े के मुँह में लगाम का दहाना रख देते
हैं ताकि वह हमारे हुक्म पर चले, और इस तरह हम
अपनी मर्ज़ी से उस का पूरा जिस्म चला लेते हैं। 4 या
बादबानी जहाज़ को मिसाल लें। जितना भी बड़ा वह
हो और जितनी भी तेज़ हवा चलती हो नाख़ुदा एक
छोटी सी पतवार के ज़रीए उस का रुख़ ठीक रखता
है। यूँ ही वह उसे अपनी मर्ज़ी से चला लेता है। 5 इसी
तरह ज़बान एक छोटा सा उज़ू है, लेकिन वह बड़ी
बड़ी बातें करती है।

देखें, एक बड़े जंगल को भस्म करने के लिए एक ही
चिंगारी काफ़ी होती है। 6 ज़बान भी आग की मानिन्द
है। बदन के दीगर आज़ा के दरमियान रह कर उस में
नारास्ती की पूरी दुनिया पाई जाती है। वह पूरे बदन
को आलूदा कर देती है, हाँ इन्सान की पूरी ज़िन्दगी
को आग लगा देती है, क्यूँकि वह ख़ुद जहन्नुम की
आग से सुलगाई गई है। 7 देखें, इन्सान हर क़िस्म के
जानवरों पर क़ाबू पा लेता है और उस ने ऐसा किया
भी है, ख़्वाह जंगली जानवर हों या परिन्दे, रेंगने वाले
हों या समुन्दरी जानवर। 8 लेकिन ज़बान पर कोई
क़ाबू नहीं पा सकता, इस बेताब और शरीर चीज़ पर
जो मोहलिक ज़हर से लबालब भरी है। 9 ज़बान से
हम अपने ख़ुदावन्द और बाप की सताइश भी करते
हैं और दूसरों पर लानत भी भेजते हैं, जिन्हें अल्लाह की
सूरत पर बनाया गया है। 10 एक ही मुँह से सताइश
और लानत निकलती है। मेरे भाइयो, ऐसा नहीं होना
चाहिए। 11 यह कैसे हो सकता है कि एक ही चश्मे से

मीठा और कड़वा पानी फूट निकले। 12 मेरे भाइयो,
क्या अन्जीर के दरख़्त पर ज़ैतून लग सकते हैं या
अंगूर की बेल पर अन्जीर? हरगिज़ नहीं! इसी तरह
नमकीन चश्मे से मीठा पानी नहीं निकल सकता।

आसमान से हिक्मत

13 क्या आप में से कोई दाना और समझदार है?
वह यह बात अपने अच्छे चाल-चलन से ज़ाहिर करे,
हिक्मत से पैदा होने वाली हलीमी के नेक कामों से।
14 लेकिन ख़बरदार! अगर आप दिल में हसद की
कड़वाहट और ख़ुदग़रज़ी पाल रहे हैं तो इस पर
शेख़ी मत मारना, न सच्चाई के ख़िलाफ़ झूट बोलें।
15 ऐसा फ़ख़र आसमान की तरफ़ से नहीं है, बल्कि
दुनियावी, ग़ैररुहानी और इब्लीस से है। 16 क्यूँकि
जहाँ हसद और ख़ुदग़रज़ी है वहाँ फ़साद और हर
शरीर काम पाया जाता है। 17 आसमान की हिक्मत
फ़र्क़ है। अव्वल तो वह पाक और मुक़द्दस है।
नीज़ वह अम्नपसन्द, नर्मदिल, फ़रमाँबरदार, रहम
और अच्छे फल से भरी हुई, ग़ैरजानिबदार और
ख़ुलूसदिल है। 18 और जो सुलह कराते हैं उन के
लिए रास्तबाज़ी का फल सलामती से बोया जाता है।

दुनिया से दोस्ती

4 1 यह लड़ाइयाँ और झगड़े जो आप के दरमियान
हैं कहाँ से आते हैं? क्या इन का सरचश्मा वह
बुरी ख़्वाहिशात नहीं जो आप के आज़ा में लड़ती
रहती हैं? 2 आप किसी चीज़ की ख़्वाहिश रखते हैं,
लेकिन उसे हासिल नहीं कर सकते। आप क़त्ल और
हसद करते हैं, लेकिन जो कुछ आप चाहते हैं वह पा
नहीं सकते। आप झगड़ते और लड़ते हैं। तो भी आप
के पास कुछ नहीं है, क्यूँकि आप अल्लाह से माँगते
नहीं। 3 और जब आप माँगते हैं तो आप को कुछ नहीं
मिलता। वजह यह है कि आप ग़लत नीयत से माँगते
हैं। आप इस से अपनी ख़ुदग़रज़ ख़्वाहिशात पूरी
करना चाहते हैं। 4 बेवफ़ा लोगो! क्या आप को नहीं
मालूम कि दुनिया का दोस्त अल्लाह का दुश्मन होता
है? जो दुनिया का दोस्त बनना चाहता है वह अल्लाह
का दुश्मन बन जाता है। 5 या क्या आप समझते हैं
कि कलाम-ए-मुक़द्दस की यह बात बेतुकी सी है कि
अल्लाह ग़ैरत से उस रूह का आरज़ूमन्द है जिस को
उस ने हमारे अन्दर सुकूनत करने दिया? 6 लेकिन
वह हमें इस से कहीं ज़्यादा फ़ज़्ल बख़्शता है।
कलाम-ए-मुक़द्दस यूँ फ़रमाता है, "अल्लाह मग़ुरूरों
का मुक़ाबला करता लेकिन फ़रोतनों पर मेहरबानी
करता है।"

7 ग़रज़, अल्लाह के ताबे हो जाएँ। इब्लीस का
मुक़ाबला करें तो वह भाग जाएगा। 8 अल्लाह के
क़रीब आ जाएँ तो वह आप के क़रीब आएगा।
गुनाहगारो, अपने हाथों को पाक-साफ़ करें। दोदिलो,
अपने दिलों को मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करें। 9 अफ़सोस
करें, मातम करें, ख़ूब रोएँ। आप की हंसी मातम में
बदल जाए और आप की ख़ुशी मायूसी में। 10 अपने
आप को ख़ुदावन्द के सामने नीचा करें तो वह आप
को सरफ़राज़ करेगा।

एक दूसरे का मुन्सिफ़ मत बनना

11 भाइयो, एक दूसरे पर तुहमत मत लगाना। जो
अपने भाई पर तुहमत लगाता या उसे मुजरिम ठहराता
है वह शरीअत पर तुहमत लगाता है और शरीअत
को मुजरिम ठहराता है। और जब आप शरीअत पर
तुहमत लगाते हैं तो आप उस के पैरोकार नहीं रहते
बल्कि उस के मुन्सिफ़ बन गए हैं। 12 शरीअत देने
वाला और मुन्सिफ़ सिर्फ़ एक ही है और वह है अल्लाह
जो नजात देने और हलाक करने के क़ाबिल है। तो
फिर आप कौन हैं जो अपने आप को मुन्सिफ़ समझ
कर अपने पड़ोसी को मुजरिम ठहरा रहे हैं!

शेख़ी मत मारना

13 और अब मेरी बात सुनें, आप जो कहते हैं,
"आज या कल हम फ़ुलाँ फ़ुलाँ शहर में जाएंगे।
वहाँ हम एक साल ठहर कर कारोबार करके पैसे
कमाएँगे।" 14 देखें, आप यह भी नहीं जानते कि कल

क्या होगा। आप की ज़िन्दगी चीज़ ही किया है! आप
भाप ही हैं जो थोड़ी देर के लिए नज़र आती, फिर
ग़ाइब हो जाती है। 15 बल्कि आप को यह कहना
चाहिए, "अगर ख़ुदावन्द की मर्ज़ी हुई तो हम जिएँगे
और यह या वह करेंगे।" 16 लेकिन फ़िलहाल आप
शेख़ी मार कर अपने ग़ुरूर का इज़हार करते हैं। इस
क़िस्म की तमाम शेख़ीबाज़ी बुरी है।
17 चुनाँचे जो जानता है कि उसे क्या क्या नेक काम
करना है, लेकिन फिर भी कुछ नहीं करता वह गुनाह
करता है।

दौलतमन्दो, ख़बरदार!

5 1 दौलतमन्दो, अब मेरी बात सुनें! ख़ूब रोएँ और
गिर्या-ओ-ज़ारी करें, क्यूँकि आप पर मुसीबत
आने वाली है। 2 आप की दौलत सड़ गई है और
कीड़े आप के शानदार कपड़े खा गए हैं। 3 आप के
सोने और चाँदी को ज़ंग लग गया है। और उन की
ज़ंगआलूदा हालत आप के ख़िलाफ़ गवाही देगी और
आप के जिस्मों को आग की तरह खा जाएगी। क्यूँकि
आप ने इन आख़िरी दिनों में अपने लिए ख़ज़ाने जमा
कर लिए हैं। 4 देखें, जो मज़दूरी आप ने फ़सल की
कटाई करने वालों से बाज़ रखी है वह आप के
ख़िलाफ़ चिल्ला रही है। और आप की फ़सल जमा
करने वालों की चीख़ें आसमानी लश्करों के रब के
कानों तक पहुँच गई हैं। 5 आप ने दुनिया में अय्याशी
और ऐश-ओ-इश्रत की ज़िन्दगी गुज़ारी है। ज़बह के
दिन आप ने अपने आप को मोटा-ताज़ा कर दिया
है। 6 आप ने रास्तबाज़ को मुजरिम ठहरा कर क़त्ल
किया है, और उस ने आप का मुक़ाबला नहीं किया।

सब्र और दुआ

7 भाइयो, अब सब्र से ख़ुदावन्द की आमद के
इन्तिज़ार में रहें। किसान पर ग़ौर करें जो इस
इन्तिज़ार में रहता है कि ज़मीन अपनी क़ीमती फ़सल
पैदा करे। वह कितने सब्र से ख़रीफ़ और बहार की
बारिशों का इन्तिज़ार करता है! 8 आप भी सब्र करें
और अपने दिलों को मज़बूत रखें, क्यूँकि ख़ुदावन्द
की आमद क़रीब आ गई है।
9 भाइयो, एक दूसरे पर मत बुड़बुड़ाना, वर्ना आप
की अदालत की जाएगी। मुन्सिफ़ तो दरवाज़े पर
खड़ा है। 10 भाइयो, उन नबियों के नमूने पर चलें
जिन्हों ने रब के नाम में कलाम पेश करके सब्र से
दुख उठाया। 11 देखें, हम उन्हें मुबारक कहते हैं जो
सब्र से दुख बर्दाश्त करते थे। आप ने अय्यूब की
साबितक़दमी के बारे में सुना है और यह भी देख
लिया कि रब ने आख़िर में क्या कुछ किया, क्यूँकि
रब बहुत मेहरबान और रहीम है।
12 मेरे भाइयो, सब से बढ़ कर यह कि आप क़सम
न खाएँ, न आसमान की क़सम, न ज़मीन की, न
किसी और चीज़ की। जब आप "हाँ" कहना चाहते
हैं तो बस "हाँ" ही काफ़ी है। और अगर इन्कार
करना चाहें तो बस "नहीं" कहना काफ़ी है, वर्ना
आप मुजरिम ठहरेंगे।
13 क्या आप में से कोई मुसीबत में फंसा हुआ है?
वह दुआ करे। क्या कोई ख़ुश है? वह सताइश के
गीत गाए । 14 क्या आप में से कोई बीमार है? वह
जमाअत के बुज़ुर्गों को बुलाए ताकि वह आ कर उस
के लिए दुआ करें और ख़ुदावन्द के नाम में उस पर
तेल मलें। 15 फिर ईमान से की गई दुआ मरीज़ को
बचाएगी और ख़ुदावन्द उसे उठा खड़ा करेगा। और
अगर उस ने गुनाह किया हो तो उसे मुआफ़ किया
जाएगा। 16 चुनाँचे एक दूसरे के सामने अपने गुनाहों
का इक़्रार करें और एक दूसरे के लिए दुआ करें ताकि
आप शिफ़ा पाएँ। रास्त शख़्स की मुअस्सिर दुआ से
बहुत कुछ हो सकता है। 17 इल्यास हम जैसा इन्सान
था। लेकिन जब उस ने ज़ोर से दुआ की कि बारिश
न हो तो साढ़े तीन साल तक बारिश न हुई। 18 फिर
उस ने दुबारा दुआ की तो आसमान ने बारिश अता
की और ज़मीन ने अपनी फ़सलें पैदा कीं।
19 मेरे भाइयो, अगर आप में से कोई सच्चाई से
भटक जाए और कोई उसे सहीह राह पर वापस लाए
20 तो यक़ीन जानें, जो किसी गुनाहगार को उस की

ग़लत राह से वापस लाता है वह उस की जान को
मौत से बचाएगा और गुनाहों की बड़ी तादाद को
छुपा देगा।

१-पतरस

1 [1] यह ख़त ईसा मसीह के रसूल पतरस की तरफ़
से है।

मैं अल्लाह के चुने हुओं को लिख रहा हूँ, दुनिया के
उन मेहमानों को जो पुन्तुस, गलतिया, कप्पदुकिया,
आसिया और बिथुनिया के सूबों में बिखरे हुए हैं।
[2] ख़ुदा बाप ने आप को बहुत देर पहले जान कर
चुन लिया और उस के रूह ने आप को मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस कर दिया। नतीजे में आप ईसा मसीह के ताबे
और उस के छिड़काए गए ख़ून से पाक-साफ़ हो गए
हैं।

अल्लाह आप को भरपूर फ़ज़्ल और सलामती बख़्शे।

ज़िन्दा उम्मीद

[3] ख़ुदा हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह के बाप की
तारीफ़ हो! अपने अज़ीम रहम से उस ने ईसा मसीह
को ज़िन्दा करने के वसीले से हमें नए सिरे से पैदा
किया है। इस से हमें एक ज़िन्दा उम्मीद मिली है,
[4] एक ऐसी मीरास जो कभी नहीं सड़ेगी, कभी नहीं
नापाक हो जाएगी और कभी नहीं मुरझाएगी। क्यूँकि
यह आसमान पर आप के लिए महफ़ूज़ रखी गई है।
[5] और अल्लाह आप के ईमान के ज़रीए अपनी क़ुदरत
से आप की उस वक़्त तक हिफ़ाज़त करता रहेगा
जब तक आप को नजात न मिल जाए, वह नजात जो
आख़िरत के दिन सब पर ज़ाहिर होने के लिए तय्यार
है।

[6] उस वक़्त आप ख़ुशी मनाएँगे, गो फ़िलहाल आप
को थोड़ी देर के लिए तरह तरह की आज़माइशों का
सामना करके ग़म खाना पड़ता है [7] ताकि आप का
ईमान असली साबित हो जाए। क्यूँकि जिस तरह
आग सोने को आज़मा कर ख़ालिस बना देती है
उसी तरह आप का ईमान भी आज़माया जा रहा
है, हालाँकि यह फ़ानी सोने से कहीं ज़्यादा क़ीमती
है। क्यूँकि अल्लाह चाहता है कि आप को उस दिन
तारीफ़, जलाल और इज़्ज़त मिल जाए जब ईसा
मसीह ज़ाहिर होगा। [8] उसी को आप प्यार करते हैं
अगरचे आप ने उसे देखा नहीं, और उसी पर आप
ईमान रखते हैं गो वह आप को इस वक़्त नज़र नहीं
आता। हाँ, आप दिल में नाक़ाबिल-ए-बयान और
जलाली ख़ुशी मनाएँगे, [9] जब आप वह कुछ पाएँगे
जो ईमान की मन्ज़िल-ए-मक़सूद है यानी अपनी जानों
की नजात।

[10] नबी इसी नजात की तलाश और तफ़्तीश में लगे
रहे, और उन्हों ने उस फ़ज़्ल की पेशगोई की जो
अल्लाह आप को देने वाला था। [11] उन्हों ने मालूम
करने की कोशिश की कि मसीह का रूह जो उन में
था किस वक़्त या किन हालात के बारे में बात कर
रहा था जब उस ने मसीह के दुख और बाद के जलाल
की पेशगोई की। [12] उन पर इतना ज़ाहिर किया गया
कि उन की यह पेशगोइयाँ उन के अपने लिए नहीं थीं,
बल्कि आप के लिए। और अब यह सब कुछ आप
को उन ही के वसीले से पेश किया गया है जिन्हों ने
आसमान से भेजे गए रूह-उल-क़ुद्स के ज़रीए आप
को अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाई है। यह ऐसी बातें हैं
जिन पर फ़रिश्ते भी नज़र डालने के आरज़ूमन्द हैं।

मुक़द्दस ज़िन्दगी गुज़ारना

[13] चुनाँचे ज़हनी तौर पर कमरबस्ता हो जाएँ।
होशमन्दी से अपनी पूरी उम्मीद उस फ़ज़्ल पर रखें
जो आप को ईसा मसीह के ज़ुहूर पर बख़्शा जाएगा।
[14] आप अल्लाह के ताबेफ़रमान फ़र्ज़न्द हैं, इस लिए
उन बुरी ख़्वाहिशात को अपनी ज़िन्दगी में जगह न दें
जो आप जाहिल होते वक़्त रखते थे। वर्ना वह आप
की ज़िन्दगी को अपने साँचे में ढाल लेंगी। [15] इस
के बजाय अल्लाह की मानिन्द बनें जिस ने आप को

बुलाया है। जिस तरह वह क़ुद्दूस है उसी तरह आप भी
हर वक़्त मुक़द्दस ज़िन्दगी गुज़ारें। 16 क्यूँकि कलाम-
ए-मुक़द्दस में लिखा है, "अपने आप को मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस रखो क्यूँकि मैं मुक़द्दस हूँ।"

17 और याद रखें कि आसमानी बाप जिस से आप
दुआ करते हैं जानिबदारी नहीं करता बल्कि आप के
अमल के मुताबिक़ आप का फ़ैसला करेगा। चुनाँचे
जब तक आप इस दुनिया के मेहमान रहेंगे ख़ुदा के
ख़ौफ़ में ज़िन्दगी गुज़ारें। 18 क्यूँकि आप ख़ुद जानते
हैं कि आप को बापदादा की बेमानी ज़िन्दगी से
छुड़ाने के लिए क्या फ़िद्या दिया गया। यह सोने या
चाँदी जैसी फ़ानी चीज़ नहीं थी 19 बल्कि मसीह का
क़ीमती ख़ून था। उसी को बेनुक़्स और बेदाग़ लेले
की हैसियत से हमारे लिए क़ुर्बान किया गया। 20 उसे
दुनिया की तख़्लीक़ से पेशतर चुना गया, लेकिन
इन आख़िरी दिनों में आप की ख़ातिर ज़ाहिर किया
गया। 21 और उस के वसीले से आप अल्लाह पर ईमान
रखते हैं जिस ने उसे मुर्दों में से ज़िन्दा करके इज़्ज़त-
ओ-जलाल दिया ताकि आप का ईमान और उम्मीद
अल्लाह पर हो।

22 सच्चाई के ताबे हो जाने से आप को मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस कर दिया गया और आप के दिलों में भाइयों
के लिए बेरिया मुहब्बत डाली गई है। चुनाँचे अब
एक दूसरे को ख़ुलूसदिली और लगन से प्यार करते
रहें। 23 क्यूँकि आप की नए सिरे से पैदाइश हुई है।
और यह किसी फ़ानी बीज का फल नहीं है बल्कि
अल्लाह के लाफ़ानी, ज़िन्दा और क़ाइम रहने वाले
कलाम का फल है। 24 यूँ कलाम-ए-मुक़द्दस फ़रमाता
है,

"तमाम इन्सान घास ही हैं,
उन की तमाम शान-ओ-शौकत जंगली फूल की
मानिन्द है।
घास तो मुरझा जाती और फूल गिर जाता है,
25 लेकिन रब का कलाम अबद तक क़ाइम रहता
है।"

मज़कूरा कलाम अल्लाह की ख़ुशख़बरी है जो आप
को सुनाई गई है।

ज़िन्दा पत्थर और मुक़द्दस क़ौम

2 1 चुनाँचे अपनी ज़िन्दगी से तमाम तरह की
बुराई, धोकेबाज़ी, रियाकारी, हसद और
बुह्तान निकालें। 2 चूँकि आप नौमौलूद बच्चे हैं इस
लिए ख़ालिस रुहानी दूध पीने के आरज़ूमन्द रहें,
क्यूँकि इसे पीने से ही आप बढ़ते बढ़ते नजात की
नौबत तक पहुँचेंगे। 3 जिन्हों ने ख़ुदावन्द की भलाई
का तजरिबा किया है उन के लिए ऐसा करना ज़रूरी
है।

4 ख़ुदावन्द के पास आएँ, उस ज़िन्दा पत्थर के
पास जिसे इन्सानों ने रद्द किया है, लेकिन जो अल्लाह
के नज़्दीक चुनीदा और क़ीमती है। 5 और आप भी
ज़िन्दा पत्थर हैं जिन को अल्लाह अपने रुहानी मक़्दिस
को तामीर करने के लिए इस्तेमाल कर रहा है। न
सिर्फ़ यह बल्कि आप उस के मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस
इमाम हैं। ईसा मसीह के वसीले से आप ऐसी रुहानी
क़ुर्बानियाँ पेश कर रहे हैं जो अल्लाह को पसन्द हैं।
6 क्यूँकि कलाम-ए-मुक़द्दस फ़रमाता है,

"देखो, मैं सिय्यून में एक पत्थर रख देता हूँ,
कोने का एक चुनीदा और क़ीमती पत्थर।
जो उस पर ईमान लाएगा
उसे शर्मिन्दा नहीं किया जाएगा।"

7 यह पत्थर आप के नज़्दीक जो ईमान रखते हैं
बेशक़ीमत है। लेकिन जो ईमान नहीं लाए उन्हों ने
उसे रद्द किया।

"जिस पत्थर को मकान बनाने वालों ने रद्द किया
वह कोने का बुन्यादी पत्थर बन गया।"
8 नीज़ वह एक ऐसा पत्थर है
"जो ठोकर का बाइस बनेगा,
एक चटान जो ठेस लगने का सबब होगी।"

वह इस लिए ठोकर खाते हैं क्यूँकि वह कलाम-ए-
मुक़द्दस के ताबे नहीं होते। यही कुछ अल्लाह की उन
के लिए मर्ज़ी थी।

9 लेकिन आप अल्लाह की चुनी हुई नस्ल हैं, आप
आसमानी बादशाह के इमाम और उस की मख़्सूस-
ओ-मुक़द्दस क़ौम हैं। आप उस की मिलकियत बन
गए हैं ताकि अल्लाह के क़वी कामों का एलान करें,
क्यूँकि वह आप को तारीकी से अपनी हैरतअंगेज़
रौशनी में लाया है। 10 एक वक़्त था जब आप उस
की क़ौम नहीं थे, लेकिन अब आप अल्लाह की क़ौम
हैं। पहले आप पर रहम नहीं हुआ था, लेकिन अब
अल्लाह ने आप पर अपने रहम का इज़हार किया है।

अल्लाह के ख़ादिम

11 अज़ीज़ो, आप इस दुनिया में अजनबी और
मेहमान हैं। इस लिए मैं आप को ताकीद करता हूँ कि
आप जिस्मानी ख़्वाहिशात का इन्कार करें। क्यूँकि
यह आप की जान से लड़ती हैं। 12 ग़ैरईमानदारों के
दरमियान रहते हुए इतनी अच्छी ज़िन्दगी गुज़ारें कि
गो वह आप पर ग़लत काम करने की तुहमत भी
लगाएँ तो भी उन्हें आप के नेक काम नज़र आएँ
और उन्हें अल्लाह की आमद के दिन उस की तम्जीद
करनी पड़े।

13 ख़ुदावन्द की ख़ातिर हर इन्सानी इख़तियार के
ताबे रहें, ख़्वाह बादशाह हो जो सब से आला
इख़तियार रखने वाला है, 14 ख़्वाह उस के वज़ीर
जिन्हें उस ने इस लिए मुक़र्रर किया है कि वह ग़लत
काम करने वालों को सज़ा और अच्छा काम करने
वालों को शाबाश दें। 15 क्यूँकि अल्लाह की मर्ज़ी है
कि आप अच्छा काम करने से नासमझ लोगों की
जाहिल बातों को बन्द करें। 16 आप आज़ाद हैं,
इस लिए आज़ादाना ज़िन्दगी गुज़ारें। लेकिन अपनी
आज़ादी को ग़लत काम छुपाने के लिए इस्तेमाल
न करें, क्यूँकि आप अल्लाह के ख़ादिम हैं। 17 हर
एक का मुनासिब एहतिराम करें, अपने बहन-भाइयों
से मुहब्बत रखें, ख़ुदा का ख़ौफ़ मानें, बादशाह का
एहतिराम करें।

मसीह के दुख का नमूना

18 ऐ ग़ुलामो, हर लिहाज़ से अपने मालिकों का
एहतिराम करके उन के ताबे रहें। और यह सुलूक न
सिर्फ़ उन के साथ हो जो नेक और नर्मदिल हैं बल्कि
उन के साथ भी जो ज़ालिम हैं। 19 क्यूँकि अगर कोई
अल्लाह की मर्ज़ी का ख़याल करके बेइन्साफ़ तक्लीफ़
का ग़म सब्र से बर्दाश्त करे तो यह अल्लाह का फ़ज़्ल
है। 20 बेशक इस में फ़ख़र की कोई बात नहीं अगर
आप सब्र से पिटाई की वह सज़ा बर्दाश्त करें जो आप
को ग़लत काम करने की वजह से मिली हो। लेकिन
अगर आप को अच्छा काम करने की वजह से दुख
सहना पड़े और आप यह सज़ा सब्र से बर्दाश्त करें तो
यह अल्लाह का फ़ज़्ल है। 21 आप को इसी के लिए
बुलाया गया है। क्यूँकि मसीह ने आप की ख़ातिर
दुख सहने में आप के लिए एक नमूना छोड़ा है। और
वह चाहता है कि आप उस के नक़्श-ए-क़दम पर
चलें। 22 उस ने तो कोई गुनाह न किया, और न कोई
फ़रेब की बात उस के मुँह से निकली। 23 जब लोगों
ने उसे गालियाँ दीं तो उस ने जवाब में गालियाँ न
दीं। जब उसे दुख सहना पड़ा तो उस ने किसी को
धमकी न दी बल्कि उस ने अपने आप को अल्लाह
के हवाले कर दिया जो इन्साफ़ से अदालत करता
है। 24 मसीह ख़ुद अपने बदन पर हमारे गुनाहों को
सलीब पर ले गया ताकि हम गुनाहों के एतिबार से मर
जाएँ और यूँ हमारा गुनाह से ताल्लुक़ ख़त्म हो जाए।
अब वह चाहता है कि हम रास्तबाज़ी की ज़िन्दगी
गुज़ारें। क्यूँकि आप को उसी के ज़ख़्मों के वसीले से
शिफ़ा मिली है। 25 पहले आप आवारा भेड़ों की तरह
आवारा फिर रहे थे, लेकिन अब आप अपनी जानों
के चरवाहे और निगरान के पास लौट आए हैं।

बीवी और शौहर

3 1 इसी तरह आप बीवियों को भी अपने अपने
शौहर के ताबे रहना है। क्यूँकि इस तरह वह
जो ईमान नहीं रखते अपनी बीवी के चाल-चलन से

जीते जा सकते हैं। कुछ कहने की ज़रूरत नहीं रहेगी
2 क्यूँकि वह देखेंगे कि आप कितनी पाकीज़गी से
ख़ुदा के ख़ौफ़ में ज़िन्दगी गुज़ारती हैं। 3 इस की फ़िक्र
मत करना कि आप ज़ाहिरी तौर पर आरास्ता हों,
मसलन ख़ास तौर-तरीक़ों से गुंधे हुए बालों से या
सोने के ज़ेवर और शानदार लिबास पहनने से। 4 इस
के बजाय इस की फ़िक्र करें कि आप की बातिनी
शख़्सियत आरास्ता हो। क्यूँकि जो रूह नर्मदिली
और सुकून के लाफ़ानी ज़ेवरों से सजी हुई है वही
अल्लाह के नज़्दीक बेशक़ीमत है। 5 माज़ी में अल्लाह
पर उम्मीद रखने वाली मुक़द्दस ख़वातीन भी इसी
तरह अपना सिंगार किया करती थीं। यूँ वह अपने
शौहरों के ताबे रहीं, 6 सारा की तरह जो अपने शौहर
इब्राहीम को आक़ा कह कर उस की मानती थी।
आप तो सारा की बेटियाँ बन गई हैं। चुनाँचे नेक
काम करें और किसी भी चीज़ से न डरें, ख़्वाह वह
कितनी ही डराऔनी क्यूँ न हो। 7 इस तरह लाज़िम है
कि आप जो शौहर हैं समझ के साथ अपनी बीवियों
के साथ ज़िन्दगी गुज़ारें, यह जान कर कि यह आप
की निस्बत कमज़ोर हैं। उन की इज़्ज़त करें, क्यूँकि
यह भी आप के साथ ज़िन्दगी के फ़ज़्ल की वारिस
हैं। ऐसा न हो कि इस में बेपर्वाई करने से आप की
दुआइया ज़िन्दगी में रुकावट पैदा हो जाए।

नेक ज़िन्दगी गुज़ारने की वजह से दुख

8 आख़िर में एक और बात, आप सब एक ही सोच
रखें और एक दूसरे से ताल्लुक़ात में हमदर्दी, प्यार,
रहम और हलीमी का इज़हार करें। 9 किसी के ग़लत
काम के जवाब में ग़लत काम मत करना, न किसी
की गालियों के जवाब में गाली देना। इस के बजाय
जवाब में ऐसे शख़्स को बरकत दें, क्यूँकि अल्लाह
ने आप को भी इस लिए बुलाया है कि आप उस
की बरकत विरासत में पाएँ। 10 कलाम-ए-मुक़द्दस यूँ
फ़रमाता है,

"कौन मज़े से ज़िन्दगी गुज़ारना
और अच्छे दिन देखना चाहता है?
वह अपनी ज़बान को शरीर बातें करने से रोके
और अपने होंटों को झूट बोलने से।
11 वह बुराई से मुँह फेर कर नेक काम करे,
सुलह-सलामती का तालिब हो कर
उस के पीछे लगा रहे।
12 क्यूँकि रब की आँखें रास्तबाज़ों पर लगी रहती
हैं,
और उस के कान उन की दुआओं की तरफ़ माइल
हैं।
लेकिन रब का चिहरा उन के ख़िलाफ़ है जो ग़लत
काम करते हैं।"

13 अगर आप नेक काम करने में सरगर्म हों तो कौन
आप को नुक़्सान पहुँचाएगा? 14 लेकिन अगर आप
को रास्त काम करने की वजह से दुख भी उठाना
पड़े तो आप मुबारक हैं। उन की धमकियों से मत
डरना और मत घबराना 15 बल्कि अपने दिलों में
ख़ुदावन्द मसीह को मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस जानें। और
जो भी आप से आप की मसीह पर उम्मीद के बारे
में पूछे हर वक़्त उसे जवाब देने के लिए तय्यार
रहें। लेकिन नर्मदिली से और ख़ुदा के ख़ौफ़ के साथ
जवाब दें। 16 साथ साथ आप का ज़मीर साफ़ हो।
फिर जो लोग आप के मसीह में अच्छे चाल-चलन
के बारे में ग़लत बातें कर रहे हैं उन्हें अपनी तुहमत
पर शर्म आएगी। 17 याद रहे कि ग़लत काम करने
की वजह से दुख सहने की निस्बत बेहतर यह है कि
हम नेक काम करने की वजह से तक्लीफ़ उठाएँ,
बशर्तेकि यह अल्लाह की मर्ज़ी हो। 18 क्यूँकि मसीह
ने हमारे गुनाहों को मिटाने की ख़ातिर एक बार सदा
के लिए मौत सही। हाँ, जो रास्तबाज़ है उस ने यह
नारास्तों के लिए किया ताकि आप को अल्लाह के
पास पहुँचाए। उसे बदन के एतिबार से सज़ा-ए-मौत
दी गई, लेकिन रूह के एतिबार से उसे ज़िन्दा कर
दिया गया। 19 इस रूह के ज़रीए उस ने जा कर क़ैदी
रूहों को पैग़ाम दिया। 20 यह उन की रूहें थीं जो उन
दिनों में नाफ़रमान थे जब नूह अपनी कश्ती बना रहा
था। उस वक़्त अल्लाह सब्र से इन्तिज़ार करता रहा,

लेकिन आख़िरकार सिर्फ़ चन्द एक लोग यानी आठ
अफ़राद पानी में से गुज़र कर बच निकले। 21 यह
पानी उस बपतिस्मे की तरफ़ इशारा है जो इस वक़्त
आप को नजात दिलाता है। इस से जिस्म की गन्दगी
दूर नहीं की जाती बल्कि बपतिस्मा लेते वक़्त हम
अल्लाह से अर्ज़ करते हैं कि वह हमारा ज़मीर पाक-
साफ़ कर दे। फिर यह आप को ईसा मसीह के जी
उठने से नजात दिलाता है। 22 अब मसीह आसमान
पर जा कर अल्लाह के दहने हाथ बैठ गया है जहाँ
फ़रिश्ते, इख़तियार वाले और क़ुव्वतें उस के ताबे
हैं।

तब्दीलशुदा ज़िन्दगियाँ

4 1 अब चूँकि मसीह ने जिस्मानी तौर पर दुख
उठाया इस लिए आप भी अपने आप को उस
की सी सोच से लेस करें। क्यूँकि जिस ने मसीह की
ख़ातिर जिस्मानी तौर पर दुख सह लिया है उस ने
गुनाह से निपट लिया है। 2 नतीजे में वह ज़मीन पर
अपनी बाक़ी ज़िन्दगी इन्सान की बुरी ख़्वाहिशात
पूरी करने में नहीं गुज़ारेगा बल्कि अल्लाह की मर्ज़ी
पूरी करने में। 3 माज़ी में आप ने काफ़ी वक़्त वह कुछ
करने में गुज़ारा जो ग़ैरईमानदार पसन्द करते हैं यानी
अय्याशी, शहवतपरस्ती, नशाबाज़ी, शराबनोशी,
रंगरलियों, नाच-रंग और घिनौनी बुतपरस्ती में। 4 अब
आप के ग़ैरईमानदार दोस्त ताज्जुब करते हैं कि
आप उन के साथ मिल कर अय्याशी के इस तेज़
धारे में छलाँग नहीं लगाते। इस लिए वह आप पर
कुफ़्र बकते हैं। 5 लेकिन उन्हें अल्लाह को जवाब देना
पड़ेगा जो ज़िन्दों और मुर्दों की अदालत करने के
लिए तय्यार खड़ा है। 6 यही वजह है कि अल्लाह
की ख़ुशख़बरी उन्हें भी सुनाई गई जो अब मुर्दा हैं।
मक़्सद यह था कि वह अल्लाह के सामने रूह में
ज़िन्दगी गुज़ार सकें अगरचे इन्सानी लिहाज़ से उन
के जिस्म की अदालत की गई है।

अपनी नेमतों से एक दूसरे की ख़िदमत करें

7 तमाम चीज़ों का ख़ातमा क़रीब आ गया है।
चुनाँचे दुआ करने के लिए चुस्त और होशमन्द रहें।
8 सब से ज़रूरी बात यह है कि आप एक दूसरे से
लगातार मुहब्बत रखें, क्यूँकि मुहब्बत गुनाहों की
बड़ी तादाद पर पर्दा डाल देती है। 9 बुड़बुड़ाए बग़ैर
एक दूसरे की मेहमान-नवाज़ी करें। 10 अल्लाह अपना
फ़ज़्ल मुख़्तलिफ़ नेमतों से ज़ाहिर करता है। फ़ज़्ल
का यह इन्तिज़ाम वफ़ादारी से चलाते हुए एक दूसरे
की ख़िदमत करें, हर एक उस नेमत से जो उसे मिली
है। 11 अगर कोई बोले तो अल्लाह के से अल्फ़ाज़ के
साथ बोले। अगर कोई ख़िदमत करे तो उस ताक़त
के ज़रीए जो अल्लाह उसे मुहय्या करता है, क्यूँकि
इस तरह ही अल्लाह को ईसा मसीह के वसीले से
जलाल दिया जाएगा। अज़ल से अबद तक जलाल
और क़ुदरत उसी की हो! आमीन।

आप की मुसीबत ग़ैरमामूली नहीं है

12 अज़ीज़ो, ईज़ारसानी की उस आग पर ताज्जुब न
करें जो आप को आज़माने के लिए आप पर आन पड़ी
है। यह मत सोचना कि मेरे साथ कैसी ग़ैरमामूली बात
हो रही है। 13 बल्कि ख़ुशी मनाएँ कि आप मसीह के
दुखों में शरीक हो रहे हैं। क्यूँकि फिर आप उस वक़्त
भी ख़ुशी मनाएँगे जब मसीह का जलाल ज़ाहिर होगा।
14 अगर लोग इस लिए आप की बेइज़्ज़ती करते हैं
कि आप मसीह के पैरोकार हैं तो आप मुबारक हैं।
क्यूँकि इस का मतलब है कि अल्लाह का जलाली रूह
आप पर ठहरा हुआ है। 15 अगर आप में से किसी को
दुख उठाना पड़े तो यह इस लिए नहीं होना चाहिए कि
आप क़ातिल, चोर, मुजरिम या फ़सादी हैं। 16 लेकिन
अगर आप को मसीह के पैरोकार होने की वजह से
दुख उठाना पड़े तो न शर्माएँ बल्कि मसीह के नाम में
अल्लाह की हम्द-ओ-सना करें।

17 क्यूँकि अब वक़्त आ गया है कि अल्लाह की
अदालत शुरू हो जाए, और पहले उस के घर वालों

की अदालत की जाएगी। अगर ऐसा है तो फिर इस
का अन्जाम उन के लिए क्या होगा जो अल्लाह की
ख़ुशख़बरी के ताबे नहीं हैं? 18 और अगर रास्तबाज़
मुश्किल से बचेंगे तो फिर बेदीन और गुनाहगार का
क्या होगा? 19 चुनाँचे जो अल्लाह की मर्ज़ी से दुख
उठा रहे हैं वह नेक काम करने से बाज़ न आएँ
बल्कि अपनी जानों को उसी के हवाले करें जो उन
का वफ़ादार ख़ालिक़ है।

अल्लाह का गल्ला

5 1 अब मैं आप को जो जमाअतों के बुज़ुर्ग हैं
नसीहत करना चाहता हूँ। मैं ख़ुद भी बुज़ुर्ग हूँ
बल्कि मसीह के दुखों का गवाह भी हूँ, और मैं आप
के साथ उस आने वाले जलाल में शरीक हो जाऊँगा
जो ज़ाहिर हो जाएगा। इस हैसियत से मैं आप से
अपील करता हूँ, 2 गल्लाबान होते हुए अल्लाह के उस
गल्ले की देख-भाल करें जो आप के सपुर्द किया गया
है। यह ख़िदमत मज्बूरन न करें बल्कि ख़ुशी से,
क्यूँकि यह अल्लाह की मर्ज़ी है। लालच के बग़ैर पूरी
लगन से यह ख़िदमत सरअन्जाम दें। 3 जिन्हें आप के
सपुर्द किया गया है उन पर हुकूमत मत करना बल्कि
गल्ले के लिए अच्छा नमूना बनें। 4 फिर जब हमारा
सरदार गल्लाबान ज़ाहिर होगा तो आप को जलाल
का ग़ैरफ़ानी ताज मिलेगा।

5 इसी तरह लाज़िम है कि आप जो जवान हैं
बुज़ुर्गों के ताबे रहें। सब इनकिसारी का लिबास
पहन कर एक दूसरे की ख़िदमत करें, क्यूँकि अल्लाह
मग़ुरूरों का मुक़ाबला करता लेकिन फ़रोतनों पर
मेहरबानी करता है। 6 चुनाँचे अल्लाह के क़ादिर हाथ
के नीचे झुक जाएँ ताकि वह मौज़ूँ वक़्त पर आप
को सरफ़राज़ करे। 7 अपनी तमाम परेशानियाँ उस
पर डाल दें, क्यूँकि वह आप की फ़िक्र करता है।

8 होशमन्द रहें, जागते रहें। आप का दुश्मन इब्लीस
गरजते हुए शेरबबर की तरह घूमता फिरता और
किसी को हड़प कर लेने की तलाश में रहता है।
9 ईमान में मज़बूत रह कर उस का मुक़ाबला करें।
आप को तो मालूम है कि पूरी दुनिया में आप के
भाई इसी क़िस्म का दुख उठा रहे हैं। 10 लेकिन
आप को ज़्यादा देर के लिए दुख उठाना नहीं पड़ेगा।
क्यूँकि हर तरह के फ़ज़्ल का ख़ुदा जिस ने आप
को मसीह में अपने अबदी जलाल में शरीक होने के
लिए बुलाया है वह ख़ुद आप को कामिलियत तक
पहुँचाएगा, मज़बूत बनाएगा, तक़वियत देगा और
एक ठोस बुन्याद पर खड़ा करेगा। 11 अबद तक
क़ुदरत उसी को हासिल रहे। आमीन।

आख़िरी सलाम

12 मैं आप को यह मुख़्तसर ख़त सिल्वानुस की
मदद से लिख रहा हूँ जिसे मैं वफ़ादार भाई समझता
हूँ। मैं इस से आप की हौसलाअफ़्ज़ाई और इस की
तस्दीक़ करना चाहता हूँ कि यही अल्लाह का हक़ीक़ी
फ़ज़्ल है। इस पर क़ाइम रहें।

13 बाबल में जो जमाअत अल्लाह ने आप की तरह
चुनी है वह आप को सलाम कहती है, और इसी
तरह मेरा बेटा मर्क़ुस भी। 14 एक दूसरे को मुहब्बत
का बोसा देना।

आप सब की जो मसीह में हैं सलामती हो।

२-पतरस

1 1 यह ख़त ईसा मसीह के ख़ादिम और रसूल
शमाऊन पतरस की तरफ़ से है।
मैं उन सब को लिख रहा हूँ जिन्हें हमारे ख़ुदा और
नजातदहिन्दा ईसा मसीह की रास्तबाज़ी के वसीले
से वही बेशक़ीमत ईमान बख़्शा गया है जो हमें भी
मिला।
2 ख़ुदा करे कि आप उसे और हमारे ख़ुदावन्द ईसा
को जानने में तरक़्क़ी करते करते कस्रत से फ़ज़्ल
और सलामती पाते जाएँ।

अल्लाह का बुलावा

3 अल्लाह ने अपनी इलाही क़ुदरत से हमें वह सब
कुछ अता किया है जो ख़ुदातरस ज़िन्दगी गुज़ारने के
लिए ज़रूरी है। और हमें यह उसे जान लेने से हासिल
हुआ है। क्यूँकि उस ने हमें अपने ज़ाती जलाल
और क़ुदरत के ज़रीए बुलाया है। 4 इस जलाल और
क़ुदरत से उस ने हमें वह अज़ीम और बेशक़ीमत
चीज़ें दी हैं जिन का वादा उस ने किया था। क्यूँकि
वह चाहता था कि आप इन से दुनिया की बुरी
ख़्वाहिशात से पैदा होने वाले फ़साद से बच कर
उस की इलाही ज़ात में शरीक हो जाएँ। 5 यह सब
कुछ पेश-ए-नज़र रख कर पूरी लगन से कोशिश
करें कि आप के ईमान से अख़्लाक़ पैदा हो जाए,
अख़्लाक़ से इल्म, 6 इल्म से ज़ब्त-ए-नफ़्स, ज़ब्त-ए-
नफ़्स से साबितक़दमी, साबितक़दमी से ख़ुदातरस
ज़िन्दगी, 7 ख़ुदातरस ज़िन्दगी से बरादराना शफ़क़त
और बरादराना शफ़क़त से सब के लिए मुहब्बत।
8 क्यूँकि जितना ही आप इन ख़ूबियों में बढ़ते जाएंगे
उतना ही यह आप को इस से महफ़ूज़ रखेंगी कि आप
हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह को जानने में सुस्त और
बेफल रहें। 9 लेकिन जिस में यह ख़ूबियाँ नहीं हैं उस
की नज़र इतनी कमज़ोर है कि वह अंधा है। वह भूल
गया है कि उसे उस के गुज़रे गुनाहों से पाक-साफ़
किया गया है।
10 चुनाँचे भाइयो, मज़ीद लगन से अपने बुलावे और
चुनाओ की तस्दीक़ करने में कोशाँ रहें। क्यूँकि यह
करने से आप गिर जाने से बचेंगे 11 और अल्लाह बड़ी
ख़ुशी से आप को हमारे ख़ुदावन्द और नजातदहिन्दा
ईसा मसीह की बादशाही में दाख़िल होने की इजाज़त
देगा।
12 इस लिए मैं हमेशा आप को इन बातों की याद
दिलाता रहूँगा, हालाँकि आप इन से वाक़िफ़ हैं और
मज़बूती से उस सच्चाई पर क़ाइम हैं जो आप को
मिली है। 13 बल्कि मैं अपना फ़र्ज़ समझता हूँ कि
जितनी और देर मैं जिस्म की इस झोंपड़ी में रहता हूँ
आप को इन बातों की याद दिलाने से उभारता रहूँ।
14 क्यूँकि मुझे मालूम है कि अब मेरी यह झोंपड़ी
जल्द ही ढा दी जाएगी। हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह
ने भी मुझ पर यह ज़ाहिर किया था। 15 लेकिन मैं पूरी
कोशिश करूँगा कि मेरे कूच कर जाने के बाद भी
आप हर वक़्त इन बातों को याद रख सकें।

मसीह के जलाल के गवाह

16 क्यूँकि जब हम ने आप को अपने और आप के
ख़ुदावन्द मसीह की क़ुदरत और आमद के बारे में
बताया तो हम चालाकी से घड़े क़िस्से-कहानियों पर
इन्हिसार नहीं कर रहे थे बल्कि हम ने यह गवाहों की
हैसियत से बताया। क्यूँकि हम ने अपनी ही आँखों
से उस की अज़मत देखी थी। 17 हम मौजूद थे जब
उसे ख़ुदा बाप से इज़्ज़त-ओ-जलाल मिला, जब एक
आवाज़ ने अल्लाह की पुरजलाल शान से आ कर
कहा, “यह मेरा प्यारा फ़र्ज़न्द है जिस से मैं ख़ुश हूँ।”
18 जब हम उस के साथ मुक़द्दस पहाड़ पर थे तो हम
ने ख़ुद यह आवाज़ आसमान से आती सुनी।

19 इस तजरिबे की बिना पर हमारा नबियों के
पैग़ाम पर एतिमाद ज़्यादा मज़बूत है। आप अच्छा
करेंगे अगर इस पर ख़ूब ध्यान दें। क्यूँकि यह किसी
तारीक जगह में रौशनी की मानिन्द है जो उस वक़्त
तक चमकती रहेगी जब तक पौ फट कर सुब्ह का
सितारा आप के दिलों में तुलू न हो जाए। 20 सब
से बढ़ कर आप को यह समझने की ज़रूरत है
कि कलाम-ए-मुक़द्दस की कोई भी पेशगोई नबी की
अपनी ही तफ़सीर से पैदा नहीं होती। 21 क्यूँकि कोई
भी पेशगोई कभी भी इन्सान की तहरीक से वुजूद
में नहीं आई बल्कि पेशगोई करते वक़्त इन्सानों ने
रूह-उल-क़ुद्स से तहरीक पा कर अल्लाह की तरफ़
से बात की।

झूटे उस्ताद

2 1 लेकिन जिस तरह माज़ी में इस्राईल क़ौम में
झूटे नबी भी थे, उसी तरह आप में से भी झूटे
उस्ताद खड़े हो जाएंगे। यह ख़ुदा की जमाअतों में
मोहलिक तालीमात फैलाएँगे बल्कि अपने मालिक
को जानने से इन्कार भी करेंगे जिस ने उन्हें ख़रीद
लिया था। ऐसी हरकतों से यह जल्द ही अपने आप
पर हलाकत लाएँगे। 2 बहुत से लोग उन की अय्याश
हरकतों की पैरवी करेंगे, और इस वजह से दूसरे
सच्चाई की राह पर कुफ़्र बकेंगे। 3 लालच के सबब
से यह उस्ताद आप को फ़र्ज़ी कहानियाँ सुना कर
आप की लूट-खसूट करेंगे। लेकिन अल्लाह ने बड़ी
देर से उन्हें मुजरिम ठहराया, और उस का फ़ैसला
सुस्तरफ़्तार नहीं है। हाँ, उन का मुन्सिफ़ ऊँघ नहीं
रहा बल्कि उन्हें हलाक करने के लिए तय्यार खड़ा
है।

4 देखें, अल्लाह ने उन फ़रिश्तों को बचने न दिया
जिन्हों ने गुनाह किया बल्कि उन्हें तारीकी की
ज़न्जीरों में बांध कर जहन्नुम में डाल दिया जहाँ वह
अदालत के दिन तक महफ़ूज़ रहेंगे। 5 इसी तरह उस
ने क़दीम दुनिया को बचने न दिया बल्कि उस के
बेदीन बाशिन्दों पर सैलाब को आने दिया। उस ने
सिर्फ़ रास्तबाज़ी के पैग़म्बर नूह को सात और जानों
समेत बचाया। 6 और उस ने सदूम और अमूरा के
शहरों को मुजरिम क़रार दे कर राख कर दिया। यूँ
अल्लाह ने उन्हें इब्रत बना कर दिखाया कि बेदीनों के
साथ क्या कुछ किया जाएगा। 7 साथ साथ उस ने लूत
को बचाया जो रास्तबाज़ था और बेउसूल लोगों के
गन्दे चाल-चलन देख देख कर पिसता रहा। 8 क्यूँकि
यह रास्तबाज़ आदमी उन के दरमियान बसता था,
और उस की रास्तबाज़ जान रोज़-ब-रोज़ उन की
शरीर हरकतें देख और सुन कर सख़्त अज़ाब में
फंसी रही। 9 यूँ ज़ाहिर है कि रब दीनदार लोगों को
आज़माइश से बचाना और बेदीनों को अदालत के
दिन तक सज़ा के तहत रखना जानता है, 10 ख़ासकर
उन्हें जो अपने जिस्म की गन्दी ख़्वाहिशात के पीछे
लगे रहते और ख़ुदावन्द के इख़तियार को हक़ीर
जानते हैं।

यह लोग गुस्ताख़ और मग़रूर हैं और जलाली
हस्तियों पर कुफ़्र बकने से नहीं डरते। 11 इस के
मुक़ाबले में फ़रिश्ते भी जो कहीं ज़्यादा ताक़तवर
और क़वी हैं रब के हुज़ूर ऐसी हस्तियों पर बुह्तान
और इल्ज़ामात लगाने की जुरअत नहीं करते।
12 लेकिन यह झूटे उस्ताद बेअक़्ल जानवरों की
मानिन्द हैं, जो फ़ित्री तौर पर इस लिए पैदा हुए हैं
कि उन्हें पकड़ा और ख़त्म किया जाए। जो कुछ वह
नहीं समझते उस पर वह कुफ़्र बकते हैं। और जंगली
जानवरों की तरह वह भी हलाक हो जाएंगे। 13 यूँ
जो नुक़्सान उन्हों ने दूसरों को पहुँचाया वही उन्हें
ख़ुद भुगतना पड़ेगा। उन के नज़्दीक लुत्फ़ उठाने से
मुराद यह है कि दिन के वक़्त खुल कर ऐश करें। वह
दाग़ और धब्बे हैं जो आप की ज़ियाफ़तों में शरीक
हो कर अपनी दग़ाबाज़ियों की रंगरलियाँ मनाते हैं।
14 उन की आँखें हर वक़्त किसी बदकार औरत से
ज़िना करने की तलाश में रहती हैं और गुनाह करने से
कभी नहीं रुकतीं। वह कमज़ोर लोगों को ग़लत काम
करने के लिए उकसाते और लालच करने में माहिर
हैं। उन पर अल्लाह की लानत! 15 वह सहीह राह से

हट कर आवारा फिर रहे और बलआम बिन बओर
के नक़्श-ए-क़दम पर चल रहे हैं, क्यूँकि बलआम ने
पैसों के लालच में ग़लत काम किया। 16 लेकिन गधी
ने उसे इस गुनाह के सबब से डाँटा। इस जानवर ने
जो बोलने के क़ाबिल नहीं था इन्सान की सी आवाज़
में बात की और नबी को उस की दीवानगी से रोक
दिया।

17 यह लोग सूखे हुए चश्मे और आँधी से धकेले
हुए बादल हैं। इन की तक़्दीर अंधेरे का तारीकतरीन
हिस्सा है। 18 यह मग़रूर बातें करते हैं जिन के पीछे
कुछ नहीं है और ग़ैरअख़्लाक़ी जिस्मानी शहवतों से
ऐसे लोगों को उकसाते हैं जो हाल ही में धोके की
ज़िन्दगी गुज़ारने वालों में से बच निकले हैं। 19 यह
उन्हें आज़ाद करने का वादा करते हैं जबकि ख़ुद
बदकारी के ग़ुलाम हैं। क्यूँकि इन्सान उसी का ग़ुलाम
है जो उस पर ग़ालिब आ गया है। 20 और जो हमारे
ख़ुदावन्द और नजातदहिन्दा ईसा मसीह को जान
लेने से इस दुनिया की आलूदगी से बच निकलते हैं,
लेकिन बाद में एक बार फिर इस में फंस कर मग़लूब
हो जाते हैं उन का अन्जाम पहले की निस्बत ज़्यादा
बुरा हो जाता है। 21 हाँ, जिन लोगों ने रास्तबाज़ी की
राह को जान लिया, लेकिन बाद में उस मुक़द्दस हुक्म
से मुँह फेर लिया जो उन के हवाले किया गया था, उन
के लिए बेहतर होता कि वह इस राह से कभी वाक़िफ़
न होते। 22 उन पर यह मुहावरा सादिक़ आता है कि
"कुत्ता अपनी क़ै के पास वापस आ जाता है।" और
यह भी कि "सूअरनी नहाने के बाद दुबारा कीचड़ में
लोटने लगती है।"

ख़ुदावन्द की आमद का वादा

3 1 अज़ीज़ो, यह अब दूसरा ख़त है जो मैं ने आप
को लिख दिया है। दोनों ख़तों में मैं ने कई
बातों की याद दिला कर आप के ज़हनों में पाक
सोच उभारने की कोशिश की। 2 मैं चाहता हूँ कि
आप वह कुछ याद रखें जिस की पेशगोई मुक़द्दस
नबियों ने की थी और साथ साथ हमारे ख़ुदावन्द और
नजातदहिन्दा का वह हुक्म भी जो आप को अपने
रसूलों की मारिफ़त मिला। 3 अव्वल आप को यह
बात समझने की ज़रूरत है कि इन आख़िरी दिनों में
ऐसे लोग आएँगे जो मज़ाक़ उड़ा कर अपनी शहवतों
के क़ब्ज़े में रहेंगे। 4 वह पूछेंगे, "ईसा ने आने का
वादा तो किया, लेकिन वह कहाँ है? हमारे बापदादा
तो मर चुके हैं, और दुनिया की तख़्लीक़ से ले कर
आज तक सब कुछ वैसे का वैसा ही है।" 5 लेकिन
यह लोग नज़रअन्दाज़ करते हैं कि क़दीम ज़माने
में अल्लाह के हुक्म पर आसमानों की तख़्लीक़ हुई
और ज़मीन पानी में से और पानी के ज़रीए वुजूद में
आई। 6 इसी पानी के ज़रीए क़दीम ज़माने की दुनिया
पर सैलाब आया और सब कुछ तबाह हुआ। 7 और
अल्लाह के इसी हुक्म ने मौजूदा आसमान और ज़मीन
को आग के लिए महफ़ूज़ कर रखा है, उस दिन के
लिए जब बेदीन लोगों की अदालत की जाएगी और
वह हलाक हो जाएंगे।

8 लेकिन मेरे अज़ीज़ो, एक बात आप से पोशीदा
न रहे। ख़ुदावन्द के नज़्दीक एक दिन हज़ार साल
के बराबर है और हज़ार साल एक दिन के बराबर।
9 ख़ुदावन्द अपना वादा पूरा करने में देर नहीं करता
जिस तरह कुछ लोग समझते हैं बल्कि वह तो आप
की ख़ातिर सब्र कर रहा है। क्यूँकि वह नहीं चाहता
कि कोई हलाक हो जाए बल्कि यह कि सब तौबा
की नौबत तक पहुँचें।

10 लेकिन ख़ुदावन्द का दिन चोर की तरह आएगा।
आसमान बड़े शोर के साथ ख़त्म हो जाएंगे, अज्राम-
ए-फ़लकी आग में पिघल जाएंगे और ज़मीन उस
के कामों समेत ज़ाहिर हो कर अदालत में पेश की
जाएगी। 11 अब सोचें, अगर सब कुछ इस तरह ख़त्म
हो जाएगा तो फिर आप किस क़िस्म के लोग होने
चाहिएँ? आप को मुक़द्दस और ख़ुदातरस ज़िन्दगी
गुज़ारते हुए 12 अल्लाह के दिन की राह देखनी चाहिए।
हाँ, आप को यह कोशिश करनी चाहिए कि वह दिन
जल्दी आए जब आसमान जल जाएंगे और अज्राम-ए-
फ़लकी आग में पिघल जाएंगे। 13 लेकिन हम उन नए

आसमानों और नई ज़मीन के इन्तिज़ार में हैं जिन का
वादा अल्लाह ने किया है। और वहाँ रास्ती सुकूनत
करेगी।
14 चुनाँचे अज़ीज़ो, चूँकि आप इस इन्तिज़ार में हैं
इस लिए पूरी लगन के साथ कोशाँ रहें कि आप
अल्लाह के नज़्दीक बेदाग़ और बेइल्ज़ाम ठहरें और
आप की उस के साथ सुलह हो। 15 याद रखें कि
हमारे ख़ुदावन्द का सब्र लोगों को नजात पाने का
मौक़ा देता है। हमारे अज़ीज़ भाई पौलुस ने भी उस
हिक्मत के मुताबिक़ जो अल्लाह ने उसे अता की है
आप को यही कुछ लिखा है। 16 वह यही कुछ अपने
तमाम ख़तों में लिखता है जब वह इस मज़्मून का
ज़िक्र करता है। उस के ख़तों में कुछ ऐसी बातें
हैं जो समझने में मुश्किल हैं और जिन्हें जाहिल
और कमज़ोर लोग तोड़-मरोड़ कर बयान करते हैं,
बिलकुल उसी तरह जिस तरह वह बाक़ी सहीफ़ों के
साथ भी करते हैं। लेकिन इस से वह अपने आप को
ही हलाक कर रहे हैं।
17 मेरे अज़ीज़ो, मैं आप को वक़्त से पहले इन बातों
से आगाह कर रहा हूँ। इस लिए ख़बरदार रहें ताकि
बेउसूल लोगों की ग़लत सोच आप को बहका कर
आप को महफ़ूज़ मक़ाम से हटा न दे। 18 इस के
बजाय हमारे ख़ुदावन्द और नजातदहिन्दा ईसा मसीह
के फ़ज़्ल और इल्म में तरक़्क़ी करते रहें। उसे अब
और अबद तक जलाल हासिल होता रहे! आमीन।

१-यूहन्ना

ज़िन्दगी का कलाम

1 1 हम आप को उस की मुनादी करते हैं जो
इब्तिदा से था, जिसे हम ने अपने कानों से सुना,
अपनी आँखों से देखा, जिस का मुशाहदा हम ने किया
और जिसे हम ने अपने हाथों से छुआ। वही ज़िन्दगी
का कलाम है। 2 वह जो ख़ुद ज़िन्दगी था ज़ाहिर हुआ,
हम ने उसे देखा। और अब हम गवाही दे कर आप
को उस अबदी ज़िन्दगी की मुनादी करते हैं जो ख़ुदा
बाप के पास थी और हम पर ज़ाहिर हुई है। 3 हम
आप को वह कुछ सुनाते हैं जो हम ने ख़ुद देख और
सुन लिया है ताकि आप भी हमारी रिफ़ाक़त में शरीक
हो जाएँ। और हमारी रिफ़ाक़त ख़ुदा बाप और उस
के फ़र्ज़न्द ईसा मसीह के साथ है। 4 हम यह इस लिए
लिख रहे हैं ताकि हमारी ख़ुशी पूरी हो जाए।

अल्लाह नूर है

5 जो पैग़ाम हम ने उस से सुना और आप को सुना
रहे हैं वह यह है, अल्लाह नूर है और उस में तारीकी
है ही नहीं। 6 जब हम तारीकी में चलते हुए अल्लाह के
साथ रिफ़ाक़त रखने का दावा करते हैं तो हम झूट
बोल रहे और सच्चाई के मुताबिक़ ज़िन्दगी नहीं गुज़ार
रहे। 7 लेकिन जब हम नूर में चलते हैं, बिलकुल उसी
तरह जिस तरह अल्लाह नूर में है, तो फिर हम एक
दूसरे के साथ रिफ़ाक़त रखते हैं और उस के फ़र्ज़न्द
ईसा का ख़ून हमें तमाम गुनाहों से पाक-साफ़ कर
देता है।

8 अगर हम गुनाह से पाक होने का दावा करें तो
हम अपने आप को फ़रेब देते हैं और हम में सच्चाई
नहीं है।

9 लेकिन अगर हम अपने गुनाहों का इक़्रार करें
तो वह वफ़ादार और रास्त साबित होगा। वह हमारे
गुनाहों को मुआफ़ करके हमें तमाम नारास्ती से पाक-
साफ़ करेगा। 10 अगर हम दावा करें कि हम ने गुनाह
नहीं किया तो हम उसे झूटा क़रार देते हैं और उस
का कलाम हमारे अन्दर नहीं है।

मसीह हमारी शफ़ाअत करता है

2 1 मेरे बच्चो, मैं आप को यह इस लिए लिख रहा
हूँ कि आप गुनाह न करें। लेकिन अगर कोई
गुनाह करे तो एक है जो ख़ुदा बाप के सामने हमारी
शफ़ाअत करता है, ईसा मसीह जो रास्त है। 2 वही
हमारे गुनाहों का कफ़्फ़ारा देने वाली क़ुर्बानी है, और
न सिर्फ़ हमारे गुनाहों का बल्कि पूरी दुनिया के गुनाहों
का भी।

3 इस से हमें पता चलता है कि हम ने उसे जान
लिया है, जब हम उस के अह्काम पर अमल करते
हैं। 4 जो कहता है, "मैं उसे जानता हूँ" लेकिन उस
के अह्काम पर अमल नहीं करता वह झूटा है और
सच्चाई उस में नहीं है। 5 लेकिन जो उस के कलाम की
पैरवी करता है उस में अल्लाह की मुहब्बत हक़ीक़तन
तक्मील तक पहुँच गई है। इस से हमें पता चलता है
कि हम उस में हैं। 6 जो कहता है कि वह उस में क़ाइम
है उस के लिए लाज़िम है कि वह यूँ चले जिस तरह
ईसा चलता था।

एक नया हुक्म

7 अज़ीज़ो, मैं आप को कोई नया हुक्म नहीं लिख
रहा, बल्कि वही पुराना हुक्म जो आप को शुरू से
मिला है। यह पुराना हुक्म वही पैग़ाम है जो आप
ने सुन लिया है। 8 लेकिन दूसरी तरफ़ से यह हुक्म
नया भी है, और इस की सच्चाई मसीह और आप में
ज़ाहिर हुई है। क्यूँकि तारीकी ख़त्म होने वाली है और
हक़ीक़ी रौशनी चमकने लग गई है।

9 जो नूर में होने का दावा करके अपने भाई से
नफ़रत करता है वह अब तक तारीकी में है। 10 जो
अपने भाई से मुहब्बत रखता है वह नूर में रहता है
और उस में कोई भी चीज़ नहीं पाई जाती जो ठोकर
का बाइस बन सके। 11 लेकिन जो अपने भाई से
नफ़रत करता है वह तारीकी ही में है और अंधेरे
में चलता फिरता है। उस को यह नहीं मालूम कि वह
कहाँ जा रहा है, क्यूँकि तारीकी ने उसे अंधा कर
रखा है।

12 प्यारे बच्चो, मैं आप को इस लिए लिख रहा हूँ कि
आप के गुनाहों को उस के नाम की ख़ातिर मुआफ़
कर दिया गया है। 13 वालिदो, मैं आप को इस लिए
लिख रहा हूँ कि आप ने उसे जान लिया है जो इब्तिदा
ही से है। जवान मर्दो, मैं आप को इस लिए लिख रहा
हूँ कि आप इब्लीस पर ग़ालिब आ गए हैं। बच्चो, मैं
आप को इस लिए लिख रहा हूँ कि आप ने बाप को
जान लिया है। 14 वालिदो, मैं आप को इस लिए लिख
रहा हूँ कि आप ने उसे जान लिया है जो इब्तिदा ही
से है। जवान मर्दो, मैं आप को इस लिए लिख रहा
हूँ कि आप मज़बूत हैं। अल्लाह का कलाम आप में
बसता है और आप इब्लीस पर ग़ालिब आ गए हैं।

15 दुनिया को प्यार मत करना, न किसी चीज़ को
जो दुनिया में है। अगर कोई दुनिया को प्यार करे तो
ख़ुदा बाप की मुहब्बत उस में नहीं है। 16 क्यूँकि जो
भी चीज़ दुनिया में है वह बाप की तरफ़ से नहीं बल्कि
दुनिया की तरफ़ से है, ख़्वाह वह जिस्म की बुरी
ख़्वाहिशात, आँखों का लालच या अपनी मिलकियत
पर फ़ख़र हो। 17 दुनिया और उस की वह चीज़ें जो
इन्सान चाहता है ख़त्म हो रही हैं, लेकिन जो अल्लाह
की मर्ज़ी पूरी करता है वह अबद तक जीता रहेगा।

मसीह का दुश्मन

18 बच्चो, अब आख़िरी घड़ी आ पहुँची है। आप ने
ख़ुद सुन लिया है कि मुख़ालिफ़-ए-मसीह आ रहा है,
और हक़ीक़तन बहुत से ऐसे मुख़ालिफ़-ए-मसीह आ
चुके हैं। इस से हमें पता चलता है कि आख़िरी घड़ी
आ गई है। 19 यह लोग हम में से निकले तो हैं, लेकिन
हक़ीक़त में हम में से नहीं थे। क्यूँकि अगर वह हम
में से होते तो वह हमारे साथ ही रहते। लेकिन हमें
छोड़ने से ज़ाहिर हुआ कि सब हम में से नहीं हैं।

20 लेकिन आप फ़र्क़ हैं। आप को उस से जो क़ुद्दूस
है रूह का मसह मिल गया है, और आप पूरी सच्चाई
को जानते हैं। 21 मैं आप को इस लिए नहीं लिख रहा
कि आप सच्चाई को नहीं जानते बल्कि इस लिए कि
आप सच्चाई जानते हैं और कि कोई भी झूट सच्चाई
की तरफ़ से नहीं आ सकता।

22 कौन झूटा है? वह जो ईसा के मसीह होने का
इन्कार करता है। मुख़ालिफ़-ए-मसीह ऐसा शख़्स है।
वह बाप और फ़र्ज़न्द का इन्कार करता है। 23 जो
फ़र्ज़न्द का इन्कार करता है उस के पास बाप भी
नहीं है, और जो फ़र्ज़न्द का इक़्रार करता है उस के
पास बाप भी है।

24 चुनाँचे लाज़िम है कि जो कुछ आप ने इब्तिदा
से सुना वह आप में रहे। अगर वह आप में रहे तो
आप भी फ़र्ज़न्द और बाप में रहेंगे। 25 और जो वादा
उस ने हम से किया है वह है अबदी ज़िन्दगी।

26 मैं आप को यह उन के बारे में लिख रहा हूँ जो
आप को सहीह राह से हटाने की कोशिश कर रहे हैं।
27 लेकिन आप को उस से रूह का मसह मिल गया
है। वह आप के अन्दर बसता है, इस लिए आप को
इस की ज़रूरत ही नहीं कि कोई आप को तालीम दे।
क्यूँकि मसीह का रूह आप को सब बातों के बारे में
तालीम देता है और जो कुछ भी वह सिखाता है वह
सच है, झूट नहीं। चुनाँचे जिस तरह उस ने आप को
तालीम दी है, उसी तरह मसीह में रहें।

28 और अब प्यारे बच्चो, उस में क़ाइम रहें ताकि
उस के ज़ाहिर होने पर हम पूरे एतिमाद के साथ
उस के सामने खड़े हो सकें और उस की आमद पर
शर्मिन्दा न होना पड़े। 29 अगर आप जानते हैं कि
मसीह रास्तबाज़ है तो आप यह भी जानते हैं कि जो
भी रास्त काम करता है वह अल्लाह से पैदा हो कर
उस का फ़र्ज़न्द बन गया है।

अल्लाह के फ़र्ज़न्द

3 1 ध्यान दें कि बाप ने हम से कितनी मुहब्बत की
है, यहाँ तक कि हम अल्लाह के फ़र्ज़न्द कहलाते
हैं। और हम वाक़ई हैं भी। इस लिए दुनिया हमें नहीं
जानती। वह तो उसे भी नहीं जानती। 2 अज़ीज़ो, अब
हम अल्लाह के फ़र्ज़न्द हैं, और जो कुछ हम होंगे वह
अभी तक ज़ाहिर नहीं हुआ है। लेकिन इतना हम
जानते हैं कि जब वह ज़ाहिर हो जाएगा तो हम उस
की मानिन्द होंगे। क्यूँकि हम उस का मुशाहदा वैसे
ही करेंगे जैसा वह है। 3 जो भी मसीह में यह उम्मीद
रखता है वह अपने आप को पाक-साफ़ रखता है,
वैसे ही जैसा मसीह ख़ुद है।

4 जो गुनाह करता है वह शरीअत की ख़िलाफ़वरज़ी
करता है। हाँ, गुनाह शरीअत की ख़िलाफ़वरज़ी ही
है। 5 लेकिन आप जानते हैं कि ईसा हमारे गुनाहों को
उठा ले जाने के लिए ज़ाहिर हुआ। और उस में गुनाह
नहीं है। 6 जो उस में क़ाइम रहता है वह गुनाह नहीं
करता। और जो गुनाह करता रहता है न तो उस ने
उसे देखा है, न उसे जाना है।

7 प्यारे बच्चो, किसी को इजाज़त न दें कि वह आप
को सहीह राह से हटा दे। जो रास्त काम करता है वह
रास्तबाज़, हाँ मसीह जैसा रास्तबाज़ है। 8 जो गुनाह
करता है वह इब्लीस से है, क्यूँकि इब्लीस शुरू ही से
गुनाह करता आया है। अल्लाह का फ़र्ज़न्द इसी लिए
ज़ाहिर हुआ कि इब्लीस का काम तबाह करे।

9 जो भी अल्लाह से पैदा हो कर उस का फ़र्ज़न्द
बन गया है वह गुनाह नहीं करेगा, क्यूँकि अल्लाह की
फ़ित्रत उस में रहती है। वह गुनाह कर ही नहीं सकता
क्यूँकि वह अल्लाह से पैदा हो कर उस का फ़र्ज़न्द बन
गया है। 10 इस से पता चलता है कि अल्लाह के फ़र्ज़न्द
कौन हैं और इब्लीस के फ़र्ज़न्द कौन : जो रास्त काम
नहीं करता, न अपने भाई से मुहब्बत रखता है, वह
अल्लाह का फ़र्ज़न्द नहीं है।

एक दूसरे से मुहब्बत रखना

11 क्यूँकि यही वह पैग़ाम है जो आप ने शुरू से
सुन रखा है, कि हमें एक दूसरे से मुहब्बत रखना है।
12 क़ाबील की तरह न हों, जो इब्लीस का था और
जिस ने अपने भाई को क़त्ल किया। और उस ने उस
को क़त्ल क्यूँ किया? इस लिए कि उस का काम
बुरा था जबकि भाई का काम रास्त था।

13 चुनाँचे भाइयो, जब दुनिया आप से नफ़रत करती
है तो हैरान न हो जाएँ। 14 हम तो जानते हैं कि हम
मौत से निकल कर ज़िन्दगी में दाख़िल हो गए हैं।
हम यह इस लिए जानते हैं कि हम अपने भाइयों से
मुहब्बत रखते हैं। जो मुहब्बत नहीं रखता वह अब
तक मौत की हालत में है। 15 जो भी अपने भाई से
नफ़रत रखता है वह क़ातिल है। और आप जानते हैं
कि जो क़ातिल है उस में अबदी ज़िन्दगी नहीं रहती।
16 इस से ही हम ने मुहब्बत को जाना है कि मसीह
ने हमारी ख़ातिर अपनी जान दे दी। और हमारा भी
फ़र्ज़ यही है कि अपने भाइयों की ख़ातिर अपनी जान
दें। 17 अगर किसी के माली हालात ठीक हों और वह
अपने भाई की ज़रूरतमन्द हालत को देख कर रहम न
करे तो उस में अल्लाह की मुहब्बत किस तरह क़ाइम
रह सकती है? 18 प्यारे बच्चो, आएँ हम अल्फ़ाज़ और
बातों से मुहब्बत का इज़हार न करें बल्कि हमारी
मुहब्बत अमली और हक़ीक़ी हो।

अल्लाह के हुज़ूर पूरा एतिमाद

19 ग़रज़ इस से हम जान लेते हैं कि हम सच्चाई की
तरफ़ से हैं, और यूँ ही हम अपने दिल को तसल्ली दे
सकते हैं 20 जब वह हमें मुजरिम ठहराता है। क्यूँकि
अल्लाह हमारे दिल से बड़ा है और सब कुछ जानता
है। 21 और अज़ीज़ो, जब हमारा दिल हमें मुजरिम
नहीं ठहराता तो हम पूरे एतिमाद के साथ अल्लाह के
हुज़ूर आ सकते हैं 22 और वह कुछ पाते हैं जो उस से
माँगते हैं। क्यूँकि हम उस के अह्काम पर चलते हैं
और वही कुछ करते हैं जो उसे पसन्द है। 23 और उस

का यह हुक्म है कि हम उस के फ़र्ज़न्द ईसा मसीह
के नाम पर ईमान ला कर एक दूसरे से मुहब्बत रखें,
जिस तरह मसीह ने हमें हुक्म दिया था। 24 जो अल्लाह
के अह्काम के ताबे रहता है वह अल्लाह में बसता है
और अल्लाह उस में। हम किस तरह जान लेते हैं कि
वह हम में बसता है? उस रूह के वसीले से जो उस
ने हमें दिया है।

हक़ीक़ी और झूटी रूह

4 1 अज़ीज़ो, हर एक रूह का यक़ीन मत करना
बल्कि रूहों को परख कर मालूम करें कि वह
अल्लाह से हैं या नहीं, क्यूँकि मुतअद्दिद झूटे नबी
दुनिया में निकले हैं। 2 इस से आप अल्लाह के रूह
को पहचान लेते हैं : जो भी रूह इस का एतिराफ़
करती है कि ईसा मसीह मुजस्सम हो कर आया है
वह अल्लाह से है। 3 लेकिन जो भी रूह ईसा के बारे
में यह तस्लीम न करे वह अल्लाह से नहीं है। यह
मुख़ालिफ़-ए-मसीह की रूह है जिस के बारे में आप
को ख़बर मिली कि वह आने वाला है बल्कि इस
वक़्त दुनिया में आ चुका है।

4 लेकिन आप प्यारे बच्चो, अल्लाह से हैं और उन पर
ग़ालिब आ गए हैं। क्यूँकि जो आप में है वह उस से
बड़ा है जो दुनिया में है। 5 यह लोग दुनिया से हैं और
इस लिए दुनिया की बातें करते हैं और दुनिया उन की
सुनती है। 6 हम तो अल्लाह से हैं और जो अल्लाह को
जानता है वह हमारी सुनता है। लेकिन जो अल्लाह से
नहीं है वह हमारी नहीं सुनता। यूँ हम सच्चाई की रूह
और फ़रेब देने वाली रूह में इम्तियाज़ कर सकते हैं।

अल्लाह मुहब्बत है

7 अज़ीज़ो, आएँ हम एक दूसरे से मुहब्बत रखें।
क्यूँकि मुहब्बत अल्लाह की तरफ़ से है, और जो
मुहब्बत रखता है वह अल्लाह से पैदा हो कर उस
का फ़र्ज़न्द बन गया है और अल्लाह को जानता
है। 8 जो मुहब्बत नहीं रखता वह अल्लाह को नहीं
जानता, क्यूँकि अल्लाह मुहब्बत है। 9 इस में अल्लाह
की मुहब्बत हमारे दरमियान ज़ाहिर हुई कि उस ने
अपने इक्लौते फ़र्ज़न्द को दुनिया में भेज दिया ताकि
हम उस के ज़रीए जिएँ। 10 यही मुहब्बत है, यह नहीं
कि हम ने अल्लाह से मुहब्बत की बल्कि यह कि उस
ने हम से मुहब्बत करके अपने फ़र्ज़न्द को भेज दिया
ताकि वह हमारे गुनाहों को मिटाने के लिए कफ़्फ़ारा
दे।

11 अज़ीज़ो, चूँकि अल्लाह ने हमें इतना प्यार किया
इस लिए लाज़िम है कि हम भी एक दूसरे को प्यार
करें। 12 किसी ने भी अल्लाह को नहीं देखा। लेकिन
जब हम एक दूसरे को प्यार करते हैं तो अल्लाह हमारे
अन्दर बसता है और उस की मुहब्बत हमारे अन्दर
तक्मील पाती है।

13 हम किस तरह जान लेते हैं कि हम उस में रहते हें
और वह हम में? इस तरह कि उस ने हमें अपना रूह
बख़्श दिया है। 14 और हम ने यह बात देख ली और
इस की गवाही देते हैं कि ख़ुदा बाप ने अपने फ़र्ज़न्द
को दुनिया का नजातदहिन्दा बनने के लिए भेज दिया
है। 15 अगर कोई इक़्रार करे कि ईसा अल्लाह का
फ़र्ज़न्द है तो अल्लाह उस में रहता है और वह अल्लाह
में। 16 और ख़ुद हम ने वह मुहब्बत जान ली है और
उस पर ईमान लाए हैं जो अल्लाह हम से रखता है।
अल्लाह मुहब्बत ही है। जो भी मुहब्बत में क़ाइम रहता
है वह अल्लाह में रहता है और अल्लाह उस में। 17 इसी
तरह मुहब्बत हमारे दरमियान तक्मील तक पहुँचती
है, और यूँ हम अदालत के दिन पूरे एतिमाद के साथ
खड़े हो सकेंगे, क्यूँकि जैसे वह है वैसे ही हम भी इस
दुनिया में हैं। 18 मुहब्बत में ख़ौफ़ नहीं होता बल्कि
कामिल मुहब्बत ख़ौफ़ को भगा देती है, क्यूँकि ख़ौफ़
के पीछे सज़ा का डर है। जो डरता है उस की मुहब्बत
तक्मील तक नहीं पहुँची।

19 हम इस लिए मुहब्बत रखते हैं कि अल्लाह ने
पहले हम से मुहब्बत रखी। 20 अगर कोई कहे, “मैं
अल्लाह से मुहब्बत रखता हूँ” लेकिन अपने भाई से
नफ़रत करे तो वह झूटा है। क्यूँकि जो अपने भाई से
जिसे उस ने देखा है मुहब्बत नहीं रखता वह किस

तरह अल्लाह से मुहब्बत रख सकता है जिसे उस ने नहीं देखा? 21 जो हुक्म मसीह ने हमें दिया है वह यह है, जो अल्लाह से मुहब्बत रखता है वह अपने भाई से भी मुहब्बत रखे।

दुनिया पर हमारी फ़त्ह

5 1 जो भी ईमान रखता है कि ईसा ही मसीह है वह अल्लाह से पैदा हो कर उस का फ़र्ज़न्द बन गया है। और जो बाप से मुहब्बत रखता है वह उस के फ़र्ज़न्द से भी मुहब्बत रखता है। 2 हम किस तरह जान लेते हैं कि हम अल्लाह के फ़र्ज़न्द से मुहब्बत रखते हैं? इस से कि हम अल्लाह से मुहब्बत रखते और उस के अह्काम पर अमल करते हैं। 3 क्यूँकि अल्लाह से मुहब्बत से मुराद यह है कि हम उस के अह्काम पर अमल करें। और उस के अह्काम हमारे लिए बोझ का बाइस नहीं हैं, 4 क्यूँकि जो भी अल्लाह से पैदा हो कर उस का फ़र्ज़न्द बन गया है वह दुनिया पर ग़ालिब आ जाता है। और हम यह फ़त्ह अपने ईमान के ज़रीए पाते हैं। 5 कौन दुनिया पर ग़ालिब आ सकता है? सिर्फ़ वह जो ईमान रखता है कि ईसा अल्लाह का फ़र्ज़न्द है।

ईसा मसीह के बारे में गवाही

6 ईसा मसीह वह है जो अपने बपतिस्मे के पानी और अपनी मौत के ख़ून के ज़रीए ज़ाहिर हुआ, न सिर्फ़ पानी के ज़रीए बल्कि पानी और ख़ून दोनों ही के ज़रीए। और रूह-उल-क़ुद्स जो सच्चाई है इस की गवाही देता है। 7 क्यूँकि इस के तीन गवाह हैं, 8 रूह-उल-क़ुद्स, पानी और ख़ून। और तीनों एक ही बात की तस्दीक़ करते हैं। 9 हम तो इन्सान की गवाही क़बूल करते हैं, लेकिन अल्लाह की गवाही इस से कहीं अफ़्ज़ल है। और अल्लाह की गवाही यह है कि उस ने अपने फ़र्ज़न्द की तस्दीक़ की है। 10 जो अल्लाह के फ़र्ज़न्द पर ईमान रखता है उस के दिल में यह गवाही है। और जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखता उस ने उसे झूटा क़रार दिया है। क्यूँकि उस ने वह गवाही न मानी जो अल्लाह ने अपने फ़र्ज़न्द के बारे में दी। 11 और गवाही यह है, अल्लाह ने हमें अबदी ज़िन्दगी अता की है, और यह ज़िन्दगी उस के फ़र्ज़न्द में है। 12 जिस के पास फ़र्ज़न्द है उस के पास ज़िन्दगी है, और जिस के पास अल्लाह का फ़र्ज़न्द नहीं है उस के पास ज़िन्दगी भी नहीं है।

अबदी ज़िन्दगी

13 मैं आप को जो अल्लाह के फ़र्ज़न्द के नाम पर ईमान रखते हैं इस लिए लिख रहा हूँ कि आप जान लें कि आप को अबदी ज़िन्दगी हासिल है। 14 हमारा अल्लाह पर यह एतिमाद है कि जब भी हम उस की मर्ज़ी के मुताबिक़ कुछ माँगते हैं तो वह हमारी सुनता है। 15 और चूँकि हम जानते हैं कि जब माँगते हैं तो वह हमारी सुनता है इस लिए हम यह इल्म भी रखते हैं कि हमें वह कुछ हासिल भी है जो हम ने उस से माँगा था।

16 अगर कोई अपने भाई को ऐसा गुनाह करते देखे जिस का अन्जाम मौत न हो तो वह दुआ करे, और अल्लाह उसे ज़िन्दगी अता करेगा। मैं उन गुनाहों की बात कर रहा हूँ जिन का अन्जाम मौत नहीं। लेकिन एक ऐसा गुनाह भी है जिस का अन्जाम मौत है। मैं नहीं कह रहा कि ऐसे शख़्स के लिए दुआ की जाए जिस से ऐसा गुनाह सरज़द हुआ हो। 17 हर नारास्त हरकत गुनाह है, लेकिन हर गुनाह का अन्जाम मौत नहीं होता।

18 हम जानते हैं कि जो अल्लाह से पैदा हो कर उस का फ़र्ज़न्द बन गया है वह गुनाह करता नहीं रहता, क्यूँकि अल्लाह का फ़र्ज़न्द ऐसे शख़्स को मह्फ़ूज़ रखता है और इब्लीस उसे नुक़्सान नहीं पहुँचा सकता।

19 हम जानते हैं कि हम अल्लाह के फ़र्ज़न्द हैं और कि तमाम दुनिया इब्लीस के क़ब्ज़े में है।

20 हम जानते हैं कि अल्लाह का फ़र्ज़न्द आ गया है और हमें समझ अता की है ताकि हम उसे जान लें जो हक़ीक़ी है। और हम उस में हैं जो हक़ीक़ी है यानी

उस के फ़र्ज़न्द ईसा मसीह में। वही हक़ीक़ी ख़ुदा
और अबदी ज़िन्दगी है।
21 प्यारे बच्चो, अपने आप को बुतों से महफ़ूज़ रखें!

२-यूहन्ना

1 [1] यह ख़त बुज़ुर्ग यूहन्ना की तरफ़ से है।
मैं चुनीदा ख़ातून और उस के बच्चों को लिख
रहा हूँ जिन्हें मैं सच्चाई से प्यार करता हूँ, और न
सिर्फ़ मैं बल्कि सब जो सच्चाई को जानते हैं। [2] क्यूँकि
सच्चाई हम में रहती है और अबद तक हमारे साथ
रहेगी।

[3] ख़ुदा बाप और बाप का फ़र्ज़न्द ईसा मसीह हमें
फ़ज़्ल, रहम और सलामती अता करे। और यह चीज़ें
सच्चाई और मुहब्बत की रूह में हमें हासिल हों।

सच्चाई और मुहब्बत

[4] मैं निहायत ही ख़ुश हुआ कि मैं ने आप के बच्चों
में से बाज़ ऐसे पाए जो उसी तरह सच्चाई में चलते हैं
जिस तरह ख़ुदा बाप ने हमें हुक्म दिया था। [5] और
अब अज़ीज़ ख़ातून, मैं आप से दरख़्वास्त करता हूँ
कि आएँ, हम सब एक दूसरे से मुहब्बत रखें। यह
कोई नया हुक्म नहीं है जो मैं आप को लिख रहा हूँ
बल्कि वही जो हमें शुरू ही से मिला है। [6] मुहब्बत का
मतलब यह है कि हम उस के अह्काम के मुताबिक़
ज़िन्दगी गुज़ारें। जिस तरह आप ने शुरू ही से सुना
है, उस का हुक्म यह है कि आप मुहब्बत की रूह में
चलें।

[7] क्यूँकि बहुत से ऐसे लोग दुनिया में निकल खड़े
हुए हैं जो आप को सहीह राह से हटाने की कोशिश
में लगे रहते हैं। यह लोग नहीं मानते कि ईसा मसीह
मुजस्सम हो कर आया है। हर ऐसा शख़्स फ़रेब देने
वाला और मुख़ालिफ़-ए-मसीह है। [8] चुनाँचे ख़बरदार
रहें। ऐसा न हो कि आप ने जो कुछ मेहनत करके
हासिल किया है वह जाता रहे बल्कि ख़ुदा करे कि
आप को इस का पूरा अज्र मिल जाए।

[9] जो भी मसीह की तालीम पर क़ाइम नहीं रहता
बल्कि इस से आगे निकल जाता है उस के पास
अल्लाह नहीं। जो मसीह की तालीम पर क़ाइम रहता
है उस के पास बाप भी है और फ़र्ज़न्द भी। [10] चुनाँचे
अगर कोई आप के पास आ कर यह तालीम पेश
नहीं करता तो न उसे अपने घरों में आने दें, न उस
को सलाम करें। [11] क्यूँकि जो उस के लिए सलामती
की दुआ करता है वह उस के शरीर कामों में शरीक
हो जाता है।

आख़िरी बातें

[12] मैं आप को बहुत कुछ बताना चाहता हूँ, लेकिन
काग़ज़ और सियाही के ज़रीए नहीं। इस के बजाय
मैं आप से मिलने और आप के रू-ब-रू बात करने
की उम्मीद रखता हूँ। फिर हमारी ख़ुशी मुकम्मल हो
जाएगी।

[13] आप की चुनीदा बहन के बच्चे आप को सलाम
कहते हैं।

३-यूहन्ना

1 [1] यह ख़त बुज़ुर्ग यूहन्ना की तरफ़ से है।
मैं अपने अज़ीज़ गयुस को लिख रहा हूँ जिसे
मैं सच्चाई से प्यार करता हूँ।
[2] मेरे अज़ीज़, मेरी दुआ है कि आप का हाल हर
तरह से ठीक हो और आप जिस्मानी तौर पर उतने
ही तन्दुरुस्त हों जितने आप रुहानी लिहाज़ से हैं।
[3] क्यूँकि मैं निहायत ख़ुश हुआ जब भाइयों ने आ कर
गवाही दी कि आप किस तरह सच्चाई के मुताबिक़
ज़िन्दगी गुज़ारते हैं। और यक़ीनन आप हमेशा सच्चाई
के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारते हैं। [4] जब मैं सुनता हूँ
कि मेरे बच्चे सच्चाई के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं
तो यह मेरे लिए सब से ज़्यादा ख़ुशी का बाइस होता
है।

गयुस की तारीफ़

[5] मेरे अज़ीज़, जो कुछ आप भाइयों के लिए कर
रहे हैं उस में आप वफ़ादारी दिखा रहे हैं, हालाँकि
वह आप के जानने वाले नहीं हैं। [6] उन्हों ने ख़ुदा की
जमाअत के सामने ही आप की मुहब्बत की गवाही
दी है। मेहरबानी करके उन की सफ़र के लिए यूँ
मदद करें कि अल्लाह ख़ुश हो। [7] क्यूँकि वह मसीह
के नाम की ख़ातिर सफ़र के लिए निकले हैं और
ग़ैरईमानदारों से मदद नहीं लेते। [8] चुनाँचे यह हमारा
फ़र्ज़ है कि हम ऐसे लोगों की मेहमान-नवाज़ी करें,
क्यूँकि यूँ हम भी सच्चाई के हमख़िदमत बन जाते हैं।

दियुत्रिफ़ेस और देमेत्रियुस

[9] मैं ने तो जमाअत को कुछ लिख दिया था, लेकिन
दियुत्रिफ़ेस जो उन में अव्वल होने की ख़्वाहिश
रखता है हमें क़बूल नहीं करता। [10] चुनाँचे मैं जब
आऊँगा तो उसे उन बुरी हरकतों की याद दिलाऊँगा
जो वह कर रहा है, क्यूँकि वह हमारे ख़िलाफ़ बुरी
बातें बक रहा है। और न सिर्फ़ यह बल्कि वह भाइयों
को ख़ुशआमदीद कहने से भी इन्कार करता है। जब
दूसरे यह करना चाहते हैं तो वह उन्हें रोक कर
जमाअत से निकाल देता है।
[11] मेरे अज़ीज़, जो बुरा है उस की नक़ल मत करना
बल्कि उस की करना जो अच्छा है। जो अच्छा काम
करता है वह अल्लाह से है। लेकिन जो बुरा काम
करता है उस ने अल्लाह को नहीं देखा।
[12] सब लोग देमेत्रियुस की अच्छी गवाही देते हैं
बल्कि सच्चाई ख़ुद भी उस की अच्छी गवाही देती
है। हम भी इस के गवाह हैं, और आप जानते हैं कि
हमारी गवाही सच्ची है।

आख़िरी सलाम

[13] मुझे आप को बहुत कुछ लिखना था, लेकिन यह
ऐसी बातें हैं जो मैं क़लम और सियाही के ज़रीए आप
को नहीं बता सकता। [14] मैं जल्द ही आप से मिलने
की उम्मीद रखता हूँ। फिर हम रू-ब-रू बात करेंगे।
[15] सलामती आप के साथ होती रहे।
यहाँ के दोस्त आप को सलाम कहते हैं। वहाँ के
हर दोस्त को शख़्सी तौर पर हमारा सलाम दें।

यहूदाह

1 [1] यह ख़त ईसा मसीह के ख़ादिम और याक़ूब
के भाई यहूदाह की तरफ़ से है।
मैं उन्हें लिख रहा हूँ जिन्हें बुलाया गया है, जो ख़ुदा
बाप में प्यारे हैं और ईसा मसीह के लिए महफ़ूज़ रखे
गए हैं।
[2] अल्लाह आप को रहम, सलामती और मुहब्बत
कस्रत से अता करे।

झूटे उस्ताद

[3] अज़ीज़ो, गो मैं आप को उस नजात के बारे में
लिखने का बड़ा शौक़ रखता हूँ जिस में हम सब
शरीक हैं, लेकिन अब मैं आप को एक और बात
के बारे में लिखना चाहता हूँ। मैं इस में आप को
नसीहत करने की ज़रूरत महसूस करता हूँ कि आप
उस ईमान की ख़ातिर जिद्द-ओ-जहद करें जो एक ही
बार सदा के लिए मुक़द्दसीन के सपुर्द कर दिया गया
है। [4] क्यूँकि कुछ लोग आप के दरमियान घुस आए
हैं जिन्हें बहुत अर्सा पहले मुजरिम ठहराया जा चुका
है। उन के बारे में यह लिखा गया है कि वह बेदीन हैं
जो हमारे ख़ुदा के फ़ज़्ल को तोड़-मरोड़ कर अय्याशी
का बाइस बना देते हैं और हमारे वाहिद आक़ा और
ख़ुदावन्द ईसा मसीह का इन्कार करते हैं।
[5] गो आप यह सब कुछ जानते हैं, फिर भी मैं
आप को इस की याद दिलाना चाहता हूँ कि अगरचे
ख़ुदावन्द ने अपनी क़ौम को मिस्र से निकाल कर
बचा लिया था तो भी उस ने बाद में उन्हें हलाक
कर दिया जो ईमान नहीं रखते थे। [6] उन फ़रिश्तों
को याद करें जो उस दाइरा-ए-इख़तियार के अन्दर
न रहे जो अल्लाह ने उन के लिए मुक़र्रर किया था
बल्कि जिन्हों ने अपनी रिहाइशगाह को तर्क कर
दिया। उन्हें उस ने तारीकी में महफ़ूज़ रखा है जहाँ
वह अबदी ज़न्जीरों में जकड़े हुए रोज़-ए-अज़ीम की
अदालत का इन्तिज़ार कर रहे हैं। [7] सदूम, अमूरा
और उन के इर्दगिर्द के शहरों को भी मत भूलना,
जिन के बाशिन्दे इन फ़रिश्तों की तरह ज़िनाकारी
और ग़ैरफ़ित्री सोहबत के पीछे पड़े रहे। यह लोग
अबदी आग की सज़ा भुगतते हुए सब के लिए एक
इब्रतनाक मिसाल हैं।
[8] तो भी इन लोगों ने उन का सा रवय्या अपना लिया
है। अपने ख़्वाबों की बिना पर वह अपने बदनों को
आलूदा कर लेते, ख़ुदावन्द का इख़तियार रद्द करते
और जलाली हस्तियों पर कुफ़्र बकते हैं। [9] इन के
मुक़ाबले में सरदार फ़रिश्ते मीकाएल के रवय्ये पर
ग़ौर करें। जब वह इब्लीस से झगड़ते वक़्त मूसा
की लाश के बारे में बहस-मुबाहसा कर रहा था तो
उस ने इब्लीस पर कुफ़्र बकने का फ़ैसला करने की
जुरअत न की बल्कि सिर्फ़ इतना ही कहा, "रब आप
को डाँटे!" [10] लेकिन यह लोग हर ऐसी बात के बारे
में कुफ़्र बकते हैं जो उन की समझ में नहीं आती।
और जो कुछ वह फ़ित्री तौर पर बेसमझ जानवरों की
तरह समझते हैं वही उन्हें तबाह कर देता है। [11] उन
पर अफ़्सोस! उन्हों ने क़ाबील की राह इख़तियार की
है। पैसों के लालच में उन्हों ने अपने आप को पूरे तौर
पर उस ग़लती के हवाले कर दिया है जो बलआम ने
की। वह क़ोरह की तरह बाग़ी हो कर हलाक हुए हैं।
[12] जब यह लोग ख़ुदावन्द की मुहब्बत को याद करने
वाले रिफ़ाक़ती खानों में शरीक होते हैं तो रिफ़ाक़त
के लिए धब्बे बन जाते हैं। यह डरे बग़ैर खाना खा
खा कर उस से महज़ूज़ होते हैं। यह ऐसे चरवाहे हैं जो
सिर्फ़ अपनी गल्लाबानी करते हैं। यह ऐसे बादल हैं जो
हवाओं के ज़ोर से चलते तो हैं लेकिन बरसते नहीं।
यह सर्दियों के मौसम में ऐसे दरख़्तों की मानिन्द हैं
जो दो लिहाज़ से मुर्दा हैं। वह फल नहीं लाते और
जड़ से उखड़े हुए हैं। [13] यह समुन्दर की बेकाबू लहरों

की मानिन्द हैं जो अपनी शर्मनाक हरकतों की झाग उछालती हैं। यह आवारा सितारे हैं जिन के लिए अल्लाह ने सब से गहरी तारीकी में एक दाइमी जगह मख़्सूस की है।

14 आदम के बाद सातवें आदमी हनूक ने इन लोगों के बारे में यह पेशगोई की, "देखो, ख़ुदावन्द अपने बेशुमार मुक़द्दस फ़रिश्तों के साथ 15 सब की अदालत करने आएगा। वह उन्हें उन तमाम बेदीन हरकतों के सबब से मुजरिम ठहराएगा जो उन से सरज़द हुई हैं और उन तमाम सख़्त बातों की वजह से जो बेदीन गुनाहगारों ने उस के ख़िलाफ़ की हैं।"

16 यह लोग बुड़बुड़ाते और शिकायत करते रहते हैं। यह सिर्फ़ अपनी ज़ाती ख़्वाहिशात पूरी करने के लिए ज़िन्दगी गुज़ारते हैं। यह अपने बारे में शेख़ी मारते और अपने फ़ाइदे के लिए दूसरों की ख़ुशामद करते हैं।

आगाही और हिदायात

17 लेकिन आप मेरे अज़ीज़ो, वह कुछ याद रखें जिस की पेशगोई हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह के रसूलों ने की थी। 18 उन्हों ने आप से कहा था, "आख़िरी दिनों में मज़ाक़ उड़ाने वाले होंगे जो अपनी बेदीन ख़्वाहिशात पूरी करने के लिए ही ज़िन्दगी गुज़ारेंगे।" 19 यह वह हैं जो पार्टीबाज़ी करते, जो दुनियावी सोच रखते हैं और जिन के पास रूह-उल-क़ुद्स नहीं है। 20 लेकिन आप मेरे अज़ीज़ो, अपने आप को अपने मुक़द्दसतरीन ईमान की बुन्याद पर तामीर करें और रूह-उल-क़ुद्स में दुआ करें। 21 अपने आप को अल्लाह की मुहब्बत में क़ाइम रखें और इस इन्तिज़ार में रहें कि हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह का रहम आप को अबदी ज़िन्दगी तक पहुँचाए।

22 उन पर रहम करें जो शक में पड़े हैं। 23 बाज़ को आग में से छीन कर बचाएँ और बाज़ पर रहम करें, लेकिन ख़ौफ़ के साथ। बल्कि उस शख़्स के लिबास से भी नफ़रत करें जो अपनी हरकतों से गुनाह से आलूदा हो गया है।

सताइश की दुआ

24 उस की तम्जीद हो जो आप को ठोकर खाने से महफ़ूज़ रख सकता है और आप को अपने जलाल के सामने बेदाग़ और बड़ी ख़ुशी से मामूर करके खड़ा कर सकता है। 25 उस वाहिद ख़ुदा यानी हमारे नजातदहिन्दा का जलाल हो। हाँ, हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह के वसीले से उसे जलाल, अज़मत, क़ुदरत और इख़तियार अज़ल से अब भी हो और अबद तक रहे। आमीन।

मुकाशफ़ा

1 1 यह ईसा मसीह की तरफ़ से मुकाशफ़ा है जो
अल्लाह ने उसे अता किया ताकि वह अपने
ख़ादिमों को वह कुछ दिखाए जिसे जल्द ही पेश
आना है। उस ने अपने फ़रिश्ते को भेज कर यह
मुकाशफ़ा अपने ख़ादिम यूहन्ना तक पहुँचा दिया।
2 और जो कुछ भी यूहन्ना ने देखा है उस की गवाही
उस ने दी है, ख़्वाह अल्लाह का कलाम हो या ईसा
मसीह की गवाही। 3 मुबारक है वह जो इस नबुव्वत
की तिलावत करता है। हाँ, मुबारक हैं वह जो सुन
कर अपने दिलों में इस किताब में दर्ज बातें महफ़ूज़
रखते हैं, क्यूँकि यह जल्द ही पूरी हो जाएँगी।

सात जमाअतों को सलाम

4 यह ख़त यूहन्ना की तरफ़ से सूबा आसिया की
सात जमाअतों के लिए है।

आप को अल्लाह की तरफ़ से फ़ज़्ल और सलामती
हासिल रहे, उस की तरफ़ से जो है, जो था और जो
आने वाला है, उन सात रूहों की तरफ़ से जो उस के
तख़्त के सामने होती हैं, 5 और ईसा मसीह की तरफ़
से यानी उस से जो इन बातों का वफ़ादार गवाह, मुर्दों
में से पहला जी उठने वाला और दुनिया के बादशाहों
का सरदार है।

उस की तम्जीद हो जो हमें प्यार करता है, जिस
ने अपने ख़ून से हमें हमारे गुनाहों से ख़लासी बख़्शी
है 6 और जिस ने हमें शाही इख़तियार दे कर अपने
ख़ुदा और बाप के इमाम बना दिया है। उसे अज़ल से
अबद तक जलाल और क़ुदरत हासिल रहे! आमीन।

7 देखें, वह बादलों के साथ आ रहा है। हर एक उसे
देखेगा, वह भी जिन्हों ने उसे छेदा था। और दुनिया
की तमाम क़ौमें उसे देख कर आह-ओ-ज़ारी करेंगी।
हाँ, ऐसा ही हो! आमीन।

8 रब ख़ुदा फ़रमाता है, "मैं अव्वल और आख़िर
हूँ, वह जो है, जो था और जो आने वाला है, यानी
क़ादिर-ए-मुतलक़ ख़ुदा।"

मसीह की रोया

9 मैं यूहन्ना आप का भाई और शरीक-ए-हाल हूँ।
मुझ पर भी आप की तरह ज़ुल्म किया जा रहा है।
मैं आप के साथ अल्लाह की बादशाही में शरीक हूँ
और ईसा में आप के साथ साबितक़दम रहता हूँ।
मुझे अल्लाह का कलाम सुनाने और ईसा के बारे में
गवाही देने की वजह से इस जज़ीरे में जो पत्मुस
कहलाता है छोड़ दिया गया। 10 रब के दिन यानी
इत्वार को मैं रूह-उल-क़ुद्स की गिरिफ़्त में आ गया
और मैं ने अपने पीछे तुरम की सी एक ऊँची आवाज़
सुनी। 11 उस ने कहा, "जो कुछ तू देख रहा है उसे
एक किताब में लिख कर उन सात जमाअतों को भेज
देना जो इफ़िसुस, स्मुर्ना, पिर्गमुन, थुआतीरा, सर्दीस,
फ़िलदिल्फ़िया और लौदीकिया में हैं।"

12 मैं ने बोलने वाले को देखने के लिए अपने पीछे
नज़र डाली तो सोने के सात शमादान देखे। 13 इन
शमादानों के दरमियान कोई खड़ा था जो इब्न-ए-
आदम की मानिन्द था। उस ने पाँओ तक का लम्बा
चोग़ा पहन रखा था और सीने पर सोने का सीनाबन्द
बांधा हुआ था। 14 उस का सर और बाल ऊन या बर्फ़
जैसे सफ़ेद थे और उस की आँखें आग के शोले की
मानिन्द थीं। 15 उस के पाँओ भट्टे में दमकते पीतल
की मानिन्द थे और उस की आवाज़ आबशार के
शोर जैसी थी। 16 अपने दहने हाथ में उस ने सात
सितारे थाम रखे थे और उस के मुँह से एक तेज़ और
दोधारी तलवार निकल रही थी। उस का चिहरा पूरे
ज़ोर से चमकने वाले सूरज की तरह चमक रहा था।
17 उसे देखते ही मैं उस के पाँओ में गिर गया। मैं

मुर्दा सा था। फिर उस ने अपना दहना हाथ मुझ पर
रख कर कहा, “मत डर। मैं अव्वल और आख़िर हूँ।
18 मैं वह हूँ जो ज़िन्दा है। मैं तो मर गया था लेकिन
अब देख, मैं अबद तक ज़िन्दा हूँ। और मौत और
पाताल की कुंजियाँ मेरे हाथ में हैं। 19 चुनाँचे जो कुछ
तू ने देखा है, जो अभी है और जो आइन्दा होगा उसे
लिख दे। 20 मेरे दहने हाथ में सात सितारों और सात
शमादानों का पोशीदा मतलब यह है : यह सात सितारे
आसिया की सात जमाअतों के फ़रिश्ते हैं, और यह
सात शमादान यह सात जमाअतें हैं।

इफ़िसुस के लिए पैग़ाम

2 1 इफ़िसुस में मौजूद जमाअत के फ़रिश्ते को यह
लिख देना : यह उस का फ़रमान है जो अपने
दहने हाथ में सात सितारे थामे रखता और सोने के
सात शमादानों के दरमियान चलता फिरता है। 2 मैं
तेरे कामों को जानता हूँ, तेरी सख़्त मेहनत और तेरी
साबितक़दमी को। मैं जानता हूँ कि तू बुरे लोगों को
बर्दाश्त नहीं कर सकता, कि तू ने उन की पड़ताल
की है जो रसूल होने का दावा करते हैं, हालाँकि वह
रसूल नहीं हैं। तुझे तो पता चल गया है कि वह झूटे
थे। 3 तू मेरे नाम की ख़ातिर साबितक़दम रहा और
बर्दाश्त करते करते थका नहीं। 4 लेकिन मुझे तुझ से
यह शिकायत है, तू मुझे उस तरह प्यार नहीं करता
जिस तरह पहले करता था। 5 अब ख़याल कर कि
तू कहाँ से गिर गया है। तौबा करके वह कुछ कर
जो तू पहले करता था, वर्ना मैं आ कर तेरे शमादान
को उस की जगह से हटा दूँगा। 6 लेकिन यह बात तेरे
हक़ में है, तू मेरी तरह नीकुलियों के कामों से नफ़रत
करता है।

7 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूह-उल-क़ुद्स
जमाअतों को क्या कुछ बता रहा है।

जो ग़ालिब आएगा उसे मैं ज़िन्दगी के दरख़्त का
फल खाने को दूँगा, उस दरख़्त का फल जो अल्लाह
के फ़िर्दौस में है।

स्मुर्ना के लिए पैग़ाम

8 स्मुर्ना में मौजूद जमाअत के फ़रिश्ते को यह लिख
देना : यह उस का फ़रमान है जो अव्वल और आख़िर
है, जो मर गया था और दुबारा ज़िन्दा हुआ। 9 मैं तेरी
मुसीबत और ग़ुर्बत को जानता हूँ। लेकिन हक़ीक़त में
तू दौलतमन्द है। मैं उन लोगों के बुह्तान से वाक़िफ़
हूँ जो कहते हैं कि वह यहूदी हैं हालाँकि हैं नहीं।
असल में वह इब्लीस की जमाअत हैं। 10 जो कुछ
तुझे झेलना पड़ेगा उस से मत डरना। देख, इब्लीस
तुझे आज़माने के लिए तुम में से बाज़ को जेल में डाल
देगा, और दस दिन तक तुझे ईज़ा पहुँचाई जाएगी।
मौत तक वफ़ादार रह तो मैं तुझे ज़िन्दगी का ताज
दूँगा।

11 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूह-उल-क़ुद्स
जमाअतों को क्या कुछ बता रहा है।

जो ग़ालिब आएगा उसे दूसरी मौत से नुक़्सान नहीं
पहुँचेगा।

पिर्गमुन के लिए पैग़ाम

12 पिर्गमुन में मौजूद जमाअत के फ़रिश्ते को यह
लिख देना :

यह उस का फ़रमान है जिस के पास दोधारी तेज़
तलवार है। 13 मैं जानता हूँ कि तू कहाँ रहता है,
वहाँ जहाँ इब्लीस का तख़्त है। ताहम तू मेरे नाम
का वफ़ादार रहा है। तू ने उन दिनों में भी मुझ पर
ईमान रखने का इन्कार न किया जब मेरा वफ़ादार
गवाह अनतिपास तुम्हारे पास शहीद हुआ, वहाँ जहाँ
इब्लीस बसता है। 14 लेकिन मुझे तुझ से कई बातों
की शिकायत है। तेरे पास ऐसे लोग हैं जो बलआम
की तालीम की पैरवी करते हैं। क्यूँकि बलआम ने
बलक़ को सिखाया कि वह किस तरह इस्राईलियों
को गुनाह करने पर उकसा सकता है यानी बुतों को
पेश की गई क़ुर्बानियाँ खाने और ज़िना करने से।
15 इसी तरह तेरे पास भी ऐसे लोग हैं, जो नीकुलियों
की तालीम की पैरवी करते हैं। 16 अब तौबा कर!

वर्ना मैं जल्द ही तेरे पास आ कर अपने मुँह की तलवार से उन के साथ लड़ूँगा।

17 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूह-उल-क़ुद्स जमाअतों को क्या कुछ बता रहा है।

जो ग़ालिब आएगा उसे मैं पोशीदा मन में से दूँगा। मैं उसे एक सफ़ेद पत्थर भी दूँगा जिस पर एक नया नाम लिखा होगा, ऐसा नाम जो सिर्फ़ मिलने वाले को मालूम होगा।

थुआतीरा के लिए पैग़ाम

18 थुआतीरा में मौजूद जमाअत के फ़रिश्ते को यह लिख देना :

यह अल्लाह के फ़र्ज़न्द का फ़रमान है जिस की आँखें आग के शोलों और पाँओ दमकते पीतल की मानिन्द हैं। 19 मैं तेरे कामों को जानता हूँ यानी तेरी मुहब्बत और ईमान, तेरी ख़िदमत और साबितक़दमी, और यह कि इस वक़्त तू पहले की निस्बत कहीं ज़्यादा कर रहा है। 20 लेकिन मुझे तुझ से यह शिकायत है, तू उस औरत ईज़बिल को जो अपने आप को नबिया कहती है काम करने देता है, हालाँकि यह अपनी तालीम से मेरे ख़ादिमों को सहीह राह से दूर करके उन्हें ज़िना करने और बुतों को पेश की गई क़ुर्बानियाँ खाने पर उकसाती है। 21 मैं ने उसे काफ़ी देर से तौबा करने का मौक़ा दिया है, लेकिन वह इस के लिए तय्यार नहीं है। 22 चुनाँचे मैं उसे यूँ मारूँगा कि वह बिस्तर पर पड़ी रहेगी। और अगर वह जो उस के साथ ज़िना कर रहे हैं अपनी ग़लत हरकतों से तौबा न करें तो मैं उन्हें शदीद मुसीबत में फंसाऊँगा। 23 हाँ, मैं उस के फ़र्ज़न्दों को मार डालूँगा। फिर तमाम जमाअतें जान लेंगी कि मैं ही ज़हनों और दिलों को परखता हूँ, और मैं ही तुम में से हर एक को उस के कामों का बदला दूँगा।

24 लेकिन थुआतीरा की जमाअत के ऐसे लोग भी हैं जो इस तालीम की पैरवी नहीं करते, और जिन्हों ने वह कुछ नहीं जाना जिसे इन लोगों ने "इब्लीस के गहरे भेद" का नाम दिया है। तुम्हें मैं बताता हूँ कि मैं तुम पर कोई और बोझ नहीं डालूँगा। 25 लेकिन इतना ज़रूर करो कि जो कुछ तुम्हारे पास है उसे मेरे आने तक मज़बूती से थामे रखना। 26 जो ग़ालिब आएगा और आख़िर तक मेरे कामों पर क़ाइम रहेगा उसे मैं क़ौमों पर इख़तियार दूँगा। 27 हाँ, वह लोहे के शाही असा से उन पर हुकूमत करेगा, उन्हें मिट्टी के बर्तनों की तरह फोड़ डालेगा। 28 यानी उसे वही इख़तियार मिलेगा जो मुझे भी अपने बाप से मिला है। ऐसे शख़्स को मैं सुब्ह का सितारा भी दूँगा।

29 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूह-उल-क़ुद्स जमाअतों को क्या कुछ बता रहा है।

सर्दीस के लिए पैग़ाम

3 1 सर्दीस में मौजूद जमाअत के फ़रिश्ते को यह लिख देना :

यह उस का फ़रमान है जो अल्लाह की सात रूहों और सात सितारों को अपने हाथ में थामे रखता है। मैं तेरे कामों को जानता हूँ। तू ज़िन्दा तो कहलाता है लेकिन है मुर्दा। 2 जाग उठ! जो बाक़ी रह गया है और मरने वाला है उसे मज़बूत कर। क्यूँकि मैं ने तेरे काम अपने ख़ुदा की नज़र में मुकम्मल नहीं पाए। 3 चुनाँचे जो कुछ तुझे मिला है और जो तू ने सुना है उसे याद रखना। उसे महफ़ूज़ रख और तौबा कर। अगर तू बेदार न हो तो मैं चोर की तरह आऊँगा और तुझे मालूम नहीं होगा कि मैं कब तुझ पर आन पड़ूँगा। 4 लेकिन सर्दीस में तेरे कुछ ऐसे लोग हैं जिन्हों ने अपने लिबास आलूदा नहीं किए। वह सफ़ेद कपड़े पहने हुए मेरे साथ चलें फिरेंगे, क्यूँकि वह इस के लाइक़ हैं। 5 जो ग़ालिब आएगा वह भी उन की तरह सफ़ेद कपड़े पहने हुए फिरेगा। मैं उस का नाम किताब-ए-हयात से नहीं मिटाऊँगा बल्कि अपने बाप और उस के फ़रिश्तों के सामने इक़्रार करूँगा कि यह मेरा है।

6 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूह-उल-क़ुद्स जमाअतों को क्या कुछ बता रहा है।

फ़िलदिल्फ़िया के लिए पैग़ाम

7 फ़िलदिल्फ़िया में मौजूद जमाअत के फ़रिश्ते को
यह लिख देना :
यह उस का फ़रमान है जो क़ुद्दूस और सच्चा है, जिस
के हाथ में दाऊद की चाबी है। जो कुछ वह खोलता
है उसे कोई बन्द नहीं कर सकता, और जो कुछ वह
बन्द कर देता है उसे कोई खोल नहीं सकता। 8 मैं
तेरे कामों को जानता हूँ। देख, मैं ने तेरे सामने एक
ऐसा दरवाज़ा खोल रखा है जिसे कोई बन्द नहीं कर
सकता। मुझे मालूम है कि तेरी ताक़त कम है। लेकिन
तू ने मेरे कलाम को महफ़ूज़ रखा है और मेरे नाम का
इन्कार नहीं किया। 9 देख, जहाँ तक उन का ताल्लुक़
है जो इब्लीस की जमाअत से हैं, वह जो यहूदी होने
का दावा करते हैं हालाँकि वह झूट बोलते हैं, मैं उन्हें
तेरे पास आने दूँगा, उन्हें तेरे पाँओ में झुक कर यह
तस्लीम करने पर मज्बूर करूँगा कि मैं ने तुझे प्यार
किया है। 10 तू ने मेरा साबितक़दम रहने का हुक्म
पूरा किया, इस लिए मैं तुझे आज़माइश की उस घड़ी
से बचाए रखूँगा जो पूरी दुनिया पर आ कर उस में
बसने वालों को आज़माएगी।
11 मैं जल्द आ रहा हूँ। जो कुछ तेरे पास है उसे
मज़बूती से थामे रखना ताकि कोई तुझ से तेरा ताज
छीन न ले। 12 जो ग़ालिब आएगा उसे मैं अपने ख़ुदा
के घर में सतून बनाऊँगा, ऐसा सतून जो उसे कभी
नहीं छोड़ेगा। मैं उस पर अपने ख़ुदा का नाम और
अपने ख़ुदा के शहर का नाम लिख दूँगा, उस नए
यरूशलम का नाम जो मेरे ख़ुदा के हाँ से उतरने वाला
है। हाँ, मैं उस पर अपना नया नाम भी लिख दूँगा।
13 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूह-उल-क़ुद्स
जमाअतों को क्या कुछ बता रहा है।

लौदीकिया के लिए पैग़ाम

14 लौदीकिया में मौजूद जमाअत के फ़रिश्ते को यह
लिख देना :
यह उस का फ़रमान है जो आमीन है, वह जो
वफ़ादार और सच्चा गवाह और अल्लाह की काइनात
का मम्बा है। 15 मैं तेरे कामों को जानता हूँ। तू न तो
सर्द है, न गर्म। काश तू इन में से एक होता! 16 लेकिन
चूँकि तू नीमगर्म है, न गर्म, न सर्द, इस लिए मैं तुझे
क़ै करके अपने मुँह से निकाल फैंकूँगा। 17 तू कहता
है, "मैं अमीर हूँ, मैं ने बहुत दौलत हासिल कर ली
है और मुझे किसी भी चीज़ की ज़रूरत नहीं।" और
तू नहीं जानता कि तू असल में बदबख़्त, क़ाबिल-ए-
रहम, ग़रीब, अंधा और नंगा है। 18 मैं तुझे मश्वरा देता
हूँ कि मुझ से आग में ख़ालिस किया गया सोना ख़रीद
ले। तब ही तू दौलतमन्द बनेगा। और मुझ से सफ़ेद
लिबास ख़रीद ले जिस को पहनने से तेरे नंगेपन की
शर्म ज़ाहिर नहीं होगी। इस के इलावा मुझ से आँखों
में लगाने के लिए मर्हम ख़रीद ले ताकि तू देख सके।
19 जिन को मैं प्यार करता हूँ उन की मैं सज़ा दे कर
तर्बियत करता हूँ। अब सन्जीदा हो जा और तौबा
कर। 20 देख, मैं दरवाज़े पर खड़ा खटखटा रहा हूँ।
अगर कोई मेरी आवाज़ सुन कर दरवाज़ा खोले तो
मैं अन्दर आ कर उस के साथ खाना खाऊँगा और
वह मेरे साथ। 21 जो ग़ालिब आए उसे मैं अपने साथ
अपने तख़्त पर बैठने का हक़ दूँगा, बिलकुल उसी
तरह जिस तरह मैं ख़ुद भी ग़ालिब आ कर अपने बाप
के साथ उस के तख़्त पर बैठ गया।
22 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूह-उल-क़ुद्स
जमाअतों को क्या कुछ बता रहा है।"

आसमान पर अल्लाह की परस्तिश

4 1 इस के बाद मैं ने देखा कि आसमान में एक
दरवाज़ा खुला हुआ है और तुरम की सी आवाज़
ने जो मैं ने पहले सुनी थी कहा, "इधर ऊपर आ।
फिर मैं तुझे वह कुछ दिखाऊँगा जिसे इस के बाद
पेश आना है।" 2 तब रूह-उल-क़ुद्स ने मुझे फ़ौरन
अपनी गिरिफ़्त में ले लिया। वहाँ आसमान पर एक
तख़्त था जिस पर कोई बैठा था। 3 और बैठने वाला
देखने में यशब और अक़ीक़ से मुताबिक़त रखता

था। तख़्त के इर्दगिर्द क़ौस-ए-क़ुज़ह थी जो देखने में
ज़ुमुर्रद की मानिन्द थी। 4 यह तख़्त 24 तख़्तों से घिरा
हुआ था जिन पर 24 बुज़ुर्ग बैठे थे। बुज़ुर्गों के लिबास
सफ़ेद थे और हर एक के सर पर सोने का ताज
था। 5 दरमियानी तख़्त से बिजली की चमकें, आवाज़ें
और बादल की गरजें निकल रही थीं। और तख़्त के
सामने सात मशअलें जल रही थीं। यह अल्लाह की
सात रूहें हैं। 6 तख़्त के सामने शीशे का सा समुन्दर
भी था जो बिल्लौर से मुताबिक़त रखता था।

बीच में तख़्त के इर्दगिर्द चार जानदार थे जिन के
जिस्मों पर हर जगह आँखें ही आँखें थीं, सामने वाले
हिस्से पर भी और पीछे वाले हिस्से पर भी। 7 पहला
जानदार शेरबबर जैसा था, दूसरा बैल जैसा, तीसरे
का इन्सान जैसा चिहरा था और चौथा उड़ते हुए
उक़ाब की मानिन्द था। 8 इन चार जानदारों में से हर
एक के छः पर थे और जिस्म पर हर जगह आँखें ही
आँखें थीं, बाहर भी और अन्दर भी। दिन रात वह
बिलानाग़ा कहते रहते हैं,

"क़ुद्दूस, क़ुद्दूस, क़ुद्दूस है रब क़ादिर-ए-मुतलक़
ख़ुदा,
जो था, जो है और जो आने वाला है।"

9 यूँ यह जानदार उस की तम्जीद, इज़्ज़त और शुक्र
करते हैं जो तख़्त पर बैठा है और अबद तक ज़िन्दा
है। जब भी वह यह करते हैं 10 तो 24 बुज़ुर्ग तख़्त
पर बैठने वाले के सामने मुँह के बल हो कर उसे
सिज्दा करते हैं जो अज़ल से अबद तक ज़िन्दा है।
साथ साथ वह अपने सोने के ताज तख़्त के सामने
रख कर कहते हैं,

11 "ऐ रब हमारे ख़ुदा,
तू जलाल, इज़्ज़त और क़ुदरत के लाइक़ है।
क्यूँकि तू ने सब कुछ ख़ल्क़ किया।
तमाम चीज़ें तेरी ही मर्ज़ी से थीं और पैदा हुईं।"

सात मुहरों वाला तूमार

5 1 फिर मैं ने तख़्त पर बैठने वाले के दहने हाथ
में एक तूमार देखा जिस पर दोनों तरफ़ लिखा
हुआ था और जिस पर सात मुहरें लगी थीं। 2 और मैं
ने एक ताक़तवर फ़रिश्ता देखा जिस ने ऊँची आवाज़
से एलान किया, "कौन मुहरों को तोड़ कर तूमार को
खोलने के लाइक़ है?" 3 लेकिन न आसमान पर, न
ज़मीन पर और न ज़मीन के नीचे कोई था जो तूमार
को खोल कर उस में नज़र डाल सकता। 4 मैं ख़ूब
रो पड़ा, क्यूँकि कोई इस लाइक़ न पाया गया कि
वह तूमार को खोल कर उस में नज़र डाल सकता।
5 लेकिन बुज़ुर्गों में से एक ने मुझ से कहा, "मत रो।
देख, यहूदाह क़बीले के शेरबबर और दाऊद की जड़
ने फ़त्ह पाई है, और वही तूमार की सात मुहरों को
खोल सकता है।"

6 फिर मैं ने एक लेला देखा जो तख़्त के दरमियान
खड़ा था। वह चार जानदारों और बुज़ुर्गों से घिरा हुआ
था और यूँ लगता था कि उसे ज़बह किया गया हो।
उस के सात सींग और सात आँखें थीं। इन से मुराद
अल्लाह की वह सात रूहें हैं जिन्हें दुनिया की हर जगह
भेजा गया है। 7 लेले ने आ कर तख़्त पर बैठने वाले
के दहने हाथ से तूमार को ले लिया। 8 और लेते वक़्त
चार जानदार और 24 बुज़ुर्ग लेले के सामने मुँह के
बल गिर गए। हर एक के पास एक सरोद और बख़ूर
से भरे सोने के प्याले थे। इन से मुराद मुक़द्दसीन की
दुआएँ हैं। 9 साथ साथ वह एक नया गीत गाने लगे,

"तू तूमार को ले कर
उस की मुहरों को खोलने के लाइक़ है।
क्यूँकि तुझे ज़बह किया गया, और अपने ख़ून से
तू ने लोगों को हर क़बीले, हर अहल-ए-ज़बान, हर
मिल्लत और हर क़ौम से
अल्लाह के लिए ख़रीद लिया है।
10 तू ने उन्हें शाही इख़तियार दे कर
हमारे ख़ुदा के इमाम बना दिया है।
और वह दुनिया में हुकूमत करेंगे।"

11 मैं ने दुबारा देखा तो बेशुमार फ़रिश्तों की
आवाज़ सुनी। वह तख़्त, चार जानदारों और बुज़ुर्गों
के इर्दगिर्द खड़े 12 ऊँची आवाज़ से कह रहे थे,

"लाइक़ है वह लेला जो ज़बह किया गया है।

वह क़ुदरत, दौलत, हिक्मत और ताक़त,
इज़्ज़त, जलाल और सताइश पाने के लाइक़ है।”
13 फिर मैं ने आसमान पर, ज़मीन पर, ज़मीन के
नीचे और समुन्दर की हर मख़्लूक़ की आवाज़ें सुनीं।
हाँ, काइनात की सब मख़्लूक़ात यह गा रहे थे,
“तख़्त पर बैठने वाले और लेले की सताइश और
इज़्ज़त,
जलाल और क़ुदरत अज़ल से अबद तक रहे।”
14 चार जानदारों ने जवाब में “आमीन” कहा, और
बुज़ुर्गों ने गिर कर सिज्दा किया।

मुहरें तोड़ी जाती हैं

6 1 फिर मैं ने देखा, लेले ने सात मुहरों में से पहली
मुहर को खोला। इस पर मैं ने चार जानदारों में
से एक को जिस की आवाज़ कड़कते बादलों की
मानिन्द थी यह कहते हुए सुना, “आ!” 2 मेरे देखते
देखते एक सफ़ेद घोड़ा नज़र आया। उस के सवार
के हाथ में कमान थी, और उसे एक ताज दिया गया।
यूँ वह फ़ातेह की हैसियत से और फ़त्ह पाने के लिए
वहाँ से निकला।
3 लेले ने दूसरी मुहर खोली तो मैं ने दूसरे जानदार
को कहते हुए सुना कि “आ!” 4 इस पर एक और
घोड़ा निकला जो आग जैसा सुर्ख़ था। उस के सवार
को दुनिया से सुलह-सलामती छीनने का इख़तियार
दिया गया ताकि लोग एक दूसरे को क़त्ल करें। उसे
एक बड़ी तलवार पकड़ाई गई।
5 लेले ने तीसरी मुहर खोली तो मैं ने तीसरे जानदार
को कहते हुए सुना कि “आ!” मेरे देखते देखते एक
काला घोड़ा नज़र आया। उस के सवार के हाथ में
तराज़ू था। 6 और मैं ने चारों जानदारों में से गोया एक
आवाज़ सुनी जिस ने कहा, “एक दिन की मज़दूरी
के लिए एक किलोग्राम गन्दुम, और एक दिन की
मज़दूरी के लिए तीन किलोग्राम जौ। लेकिन तेल और
मै को नुक़्सान मत पहुँचाना।”
7 लेले ने चौथी मुहर खोली तो मैं ने चौथे जानदार
को कहते सुना कि “आ!” 8 मेरे देखते देखते एक
घोड़ा नज़र आया जिस का रंग हल्का पीला सा था।
उस के सवार का नाम मौत था, और पाताल उस
के पीछे पीछे चल रही थी। उन्हें ज़मीन का चौथा
हिस्सा क़त्ल करने का इख़तियार दिया गया, ख़्वाह
तलवार, काल, मोहलिक वबा या वहशी जानवरों के
ज़रीए से हो।
9 लेले ने पाँचवीं मुहर खोली तो मैं ने क़ुर्बानगाह के
नीचे उन की रूहें देखीं जो अल्लाह के कलाम और
अपनी गवाही क़ाइम रखने की वजह से शहीद हो
गए थे। 10 उन्हों ने ऊँची आवाज़ से चिल्ला कर कहा,
“ऐ क़ादिर-ए-मुतलक़, क़ुद्दूस और सच्चे रब, कितनी
देर और लगेगी? तू कब तक ज़मीन के बाशिन्दों की
अदालत करके हमारे शहीद होने का इन्तिक़ाम न
लेगा?” 11 तब उन में से हर एक को एक सफ़ेद
लिबास दिया गया, और उन्हें समझाया गया कि
“मज़ीद थोड़ी देर आराम करो, क्यूँकि पहले तुम्हारे
हमख़िदमत भाइयों में से उतनों को शहीद हो जाना
है जितनों के लिए यह मुक़र्रर है।”
12 लेले ने छटी मुहर खोली तो मैं ने एक शदीद
ज़ल्ज़ला देखा। सूरज बकरी के बालों से बने टाट
की मानिन्द काला हो गया, पूरा चाँद ख़ून जैसा नज़र
आने लगा 13 और आसमान के सितारे ज़मीन पर
यूँ गिर गए जिस तरह अन्जीर के दरख़्त पर लगे
आख़िरी अन्जीर तेज़ हवा के झोंकों से गिर जाते हैं।
14 आसमान तूमार की तरह जब उसे लपेट कर बन्द
किया जाता है पीछे हट गया। और हर पहाड़ और
जज़ीरा अपनी अपनी जगह से खिसक गया। 15 फिर
ज़मीन के बादशाह, शहज़ादे, जरनैल, अमीर, असर-
ओ-रसूख़ वाले, ग़ुलाम और आज़ाद सब के सब ग़ारों
में और पहाड़ी चटानों के दरमियान छुप गए। 16 उन्हों
ने चिल्ला कर पहाड़ों और चटानों से मिन्नत की, “हम
पर गिर कर हमें तख़्त पर बैठे हुए के चिहरे और
लेले के ग़ज़ब से छुपा लो। 17 क्यूँकि उन के ग़ज़ब
का अज़ीम दिन आ गया है, और कौन क़ाइम रह
सकता है?”

इस्राईल के 1,44,000 चुने हुए अफ़राद

7 1 इस के बाद मैं ने चार फ़रिश्तों को ज़मीन के
चार कोनों पर खड़े देखा। वह ज़मीन की चार
हवाओं को चलने से रोक रहे थे ताकि न ज़मीन
पर, न समुन्दर या किसी दरख़्त पर कोई हवा चले।
2 फिर मैं ने एक और फ़रिश्ता मशरिक़ से चढ़ते हुए
देखा जिस के पास ज़िन्दा ख़ुदा की मुहर थी। उस
ने ऊँची आवाज़ से उन चार फ़रिश्तों से बात की
जिन्हें ज़मीन और समुन्दर को नुक़्सान पहुँचाने का
इख़तियार दिया गया था। उस ने कहा, 3 "ज़मीन,
समुन्दर या दरख़्तों को उस वक़्त तक नुक़्सान मत
पहुँचाना जब तक हम अपने ख़ुदा के ख़ादिमों के
माथों पर मुहर न लगा लें।" 4 और मैं ने सुना कि
जिन पर मुहर लगाई गई थी वह 1,44,000 अफ़राद
थे और वह इस्राईल के हर एक क़बीले से थे :
5 12,000 यहूदाह से, 12,000 रूबिन से, 12,000
जद से, 6 12,000 आशर से, 12,000 नफ़्ताली से,
12,000 मनस्सी से, 7 12,000 शमाऊन से, 12,000
लावी से, 12,000 इश्कार से, 8 12,000 ज़बूलून से,
12,000 यूसुफ़ से और 12,000 बिनयमीन से।

अल्लाह के हुज़ूर एक बड़ा हुजूम

9 इस के बाद मैं ने एक हुजूम देखा जो इतना बड़ा
था कि उसे गिना नहीं जा सकता था। उस में हर
मिल्लत, हर क़बीले, हर क़ौम और हर ज़बान के
अफ़राद सफ़ेद लिबास पहने हुए तख़्त और लेले के
सामने खड़े थे। उन के हाथों में खजूर की डालियाँ
थीं। 10 और वह ऊँची आवाज़ से चिल्ला चिल्ला कर
कह रहे थे, "नजात तख़्त पर बैठे हुए हमारे ख़ुदा
और लेले की तरफ़ से है।" 11 तमाम फ़रिश्ते तख़्त,
बुज़ुर्गों और चार जानदारों के इर्दगिर्द खड़े थे। उन्हों
ने तख़्त के सामने गिर कर अल्लाह को सिज्दा किया
12 और कहा, "आमीन! हमारे ख़ुदा की अज़ल से
अबद तक सताइश, जलाल, हिक्मत, शुक्रगुज़ारी,
इज़्ज़त, क़ुदरत और ताक़त हासिल रहे। आमीन!"

13 बुज़ुर्गों में से एक ने मुझ से पूछा, "सफ़ेद लिबास
पहने हुए यह लोग कौन हैं और कहाँ से आए हैं?"
14 मैं ने जवाब दिया, "मेरे आक़ा, आप ही जानते
हैं।"

उस ने कहा, "यह वही हैं जो बड़ी ईज़ारसानी से
निकल कर आए हैं। उन्हों ने अपने लिबास लेले के
ख़ून में धो कर सफ़ेद कर लिए हैं। 15 इस लिए वह
अल्लाह के तख़्त के सामने खड़े हैं और दिन रात उस
के घर में उस की ख़िदमत करते हैं। और तख़्त पर
बैठा हुआ उन को पनाह देगा। 16 इस के बाद न कभी
भूक उन्हें सताएगी न प्यास। न धूप, न किसी और
क़िस्म की तपती गर्मी उन्हें झुलसाएगी। 17 क्यूँकि
जो लेला तख़्त के दरमियान बैठा है वह उन की
गल्लाबानी करेगा और उन्हें ज़िन्दगी के चश्मों के पास
ले जाएगा। और अल्लाह उन की आँखों से तमाम आँसू
पोंछ डालेगा।"

सातवीं मुहर

8 1 जब लेले ने सातवीं मुहर खोली तो आसमान
पर ख़ामोशी छा गई। यह ख़ामोशी तक़रीबन
आधे घंटे तक रही। 2 फिर मैं ने अल्लाह के सामने
खड़े सात फ़रिश्तों को देखा। उन्हें सात तुरम दिए
गए।

3 एक और फ़रिश्ता जिस के पास सोने का
बख़ूरदान था आ कर क़ुर्बानगाह के पास खड़ा हो
गया। उसे बहुत सा बख़ूर दिया गया ताकि वह उसे
मुक़द्दसीन की दुआओं के साथ तख़्त के सामने की
सोने की क़ुर्बानगाह पर पेश करे। 4 बख़ूर का धुआँ
मुक़द्दसीन की दुआओं के साथ फ़रिश्ते के हाथ से
उठते उठते अल्लाह के सामने पहुँचा। 5 फिर फ़रिश्ते
ने बख़ूरदान को लिया और उसे क़ुर्बानगाह की आग
से भर कर ज़मीन पर फैंक दिया। तब कड़कती और
गरजती आवाज़ें सुनाई दीं, बिजली चमकने लगी और
ज़ल्ज़ला आ गया।

तुरमों का असर

6 फिर जिन सात फ़रिश्तों के पास सात तुरम थे वह
उन्हें बजाने के लिए तय्यार हुए।
7 पहले फ़रिश्ते ने अपने तुरम को बजा दिया। इस
पर ओले और ख़ून के साथ मिलाई गई आग पैदा हो
कर ज़मीन पर बरसाई गई। इस से ज़मीन का तीसरा
हिस्सा, दरख़्तों का तीसरा हिस्सा और तमाम हरी
घास भस्म हो गई।
8 फिर दूसरे फ़रिश्ते ने अपने तुरम में फूँक मारी। इस
पर जलती हुई एक बड़ी पहाड़नुमा चीज़ को समुन्दर
में फैंका गया। समुन्दर का तीसरा हिस्सा ख़ून में
बदल गया, 9 समुन्दर में मौजूद ज़िन्दा मख़्लूक़ात का
तीसरा हिस्सा हलाक और बहरी जहाज़ों का तीसरा
हिस्सा तबाह हो गया।
10 फिर तीसरे फ़रिश्ते ने अपने तुरम में फूँक मारी।
इस पर मशअल की तरह भड़कता हुआ एक बड़ा
सितारा आसमान से दरयाओं के तीसरे हिस्से और
पानी के चश्मों पर गिर गया। 11 इस सितारे का नाम
अफ़्सन्तीन था और इस से पानी का तीसरा हिस्सा
अफ़्सन्तीन जैसा कड़वा हो गया। बहुत से लोग यह
कड़वा पानी पीने से मर गए।
12 फिर चौथे फ़रिश्ते ने अपने तुरम में फूँक मारी।
इस पर सूरज का तीसरा हिस्सा, चाँद का तीसरा
हिस्सा और सितारों का तीसरा हिस्सा रौशनी से
महरूम हो गया। दिन का तीसरा हिस्सा रौशनी से
महरूम हुआ और इसी तरह रात का तीसरा हिस्सा
भी।
13 फिर देखते देखते मैं ने एक उक़ाब को सुना जिस
ने मेरे सर के ऊपर ही बुलन्दियों पर उड़ते हुए ऊँची
आवाज़ से पुकारा, "अफ़्सोस! अफ़्सोस! ज़मीन के
बाशिन्दों पर अफ़्सोस! क्यूँकि तीन फ़रिश्तों के तुरमों
की आवाज़ें अभी बाक़ी हैं।"

9 1 फिर पाँचवें फ़रिश्ते ने अपने तुरम में फूँक
मारी। इस पर मैं ने एक सितारा देखा जो
आसमान से ज़मीन पर गिर गया था। इस सितारे को
अथाह गढ़े के रास्ते की चाबी दी गई। 2 उस ने अथाह
गढ़े का रास्ता खोल दिया तो उस से धुआँ निकल
कर ऊपर आया, यूँ जैसे धुआँ किसी बड़े भट्टे से
निकलता है। सूरज और चाँद अथाह गढ़े के इस धुएँ
से तारीक हो गए। 3 और धुएँ में से टिड्डियाँ निकल
कर ज़मीन पर उतर आईं। उन्हें ज़मीन के बिछूओं
जैसा इख़तियार दिया गया। 4 उन्हें बताया गया, "न
ज़मीन की घास, न किसी पौदे या दरख़्त को नुक़्सान
पहुँचाओ बल्कि सिर्फ़ उन लोगों को जिन के माथों
पर अल्लाह की मुहर नहीं लगी है।" 5 टिड्डियों को इन
लोगों को मार डालने का इख़तियार न दिया गया
बल्कि उन्हें बताया गया कि वह पाँच महीनों तक
इन को अज़ियत दें। और यह अज़ियत उस तक्लीफ़
की मानिन्द है जो तब पैदा होती है जब बिच्छू किसी
को डंक मारता है। 6 उन पाँच महीनों के दौरान लोग
मौत की तलाश में रहेंगे, लेकिन उसे पाएँगे नहीं। वह
मर जाने की शदीद आर्ज़ू करेंगे, लेकिन मौत उन से
भाग कर दूर रहेगी।
7 टिड्डियों की शक्ल-ओ-सूरत जंग के लिए तय्यार
घोड़ों की मानिन्द थी। उन के सरों पर सोने के ताजों
जैसी चीज़ें थीं और उन के चिहरे इन्सानों के चिहरों
की मानिन्द थे। 8 उन के बाल ख़वातीन के बालों की
मानिन्द और उन के दाँत शेरबबर के दाँतों जैसे थे।
9 यूँ लगा जैसे उन के सीनों पर लोहे के से ज़िराबक्तर
लगे हुए थे, और उन के परों की आवाज़ बेशुमार
रथों और घोड़ों के शोर जैसी थी जब वह मुख़ालिफ़
पर झपट रहे होते हों। 10 उन की दुम पर बिच्छू का
सा डंक लगा था और उन्हें इन ही दुमों से लोगों को
पाँच महीनों तक नुक़्सान पहुँचाने का इख़तियार था।
11 उन का बादशाह अथाह गढ़े का फ़रिश्ता है जिस
का इब्रानी नाम अबद्दोन और यूनानी नाम अपुल्लियोन
(हलाकू) है।
12 यूँ पहला अफ़्सोस गुज़र गया, लेकिन इस के
बाद दो मज़ीद अफ़्सोस होने वाले हैं।
13 छटे फ़रिश्ते ने अपने तुरम में फूँक मारी। इस पर
मैं ने एक आवाज़ सुनी जो अल्लाह के सामने वाक़े

सोने की क़ुर्बानगाह के चार कोनों पर लगे सींगों से
आई। 14 इस आवाज़ ने छटा तुरम पकड़े हुए फ़रिश्ते
से कहा, “उन चार फ़रिश्तों को खुला छोड़ देना जो
बड़े दरया बनाम फ़ुरात के पास बंधे हुए हैं।” 15 इन
चार फ़रिश्तों को इसी महीने के इसी दिन के इसी घंटे
के लिए तय्यार किया गया था। अब इन्हें खुला छोड़
दिया गया ताकि वह इन्सानों का तीसरा हिस्सा मार
डालें। 16 मुझे बताया गया कि घोड़ों पर सवार फ़ौजी
बीस करोड़ थे। 17 रोया में घोड़े और सवार यूँ नज़र
आए : सीनों पर लगे ज़िराबक्तर आग जैसे सुर्ख़, नीले
और गंधक जैसे पीले थे। घोड़ों के सर शेरबबर के
सरों से मुताबिक़त रखते थे और उन के मुँह से आग,
धुआँ और गंधक निकलती थी। 18 आग, धुएँ और
गंधक की इन तीन बलाओं से इन्सानों का तीसरा
हिस्सा हलाक हुआ। 19 हर घोड़े की ताक़त उस के
मुँह और दुम में थी, क्यूँकि उन की दुमें साँप की
मानिन्द थीं जिन के सर नुक़्सान पहुँचाते थे।

20 जो इन बलाओं से हलाक नहीं हुए थे बल्कि
अभी बाक़ी थे उन्हों ने फिर भी अपने हाथों के कामों
से तौबा न की। वह बदरूहों और सोने, चाँदी, पीतल,
पत्थर और लकड़ी के बुतों की पूजा से बाज़ न आए
हालाँकि ऐसी चीज़ें न तो देख सकती हैं, न सुनने या
चलने के क़ाबिल होती हैं। 21 वह क़त्ल-ओ-ग़ारत,
जादूगरी, ज़िनाकारी और चोरियों से भी तौबा करके
बाज़ न आए।

फ़रिश्ता और छोटा तूमार

10 1 फिर मैं ने एक और ताक़तवर फ़रिश्ता
देखा। वह बादल ओढ़े हुए आसमान से
उतर रहा था और उस के सर के ऊपर क़ौस-ए-क़ुज़ह
थी। उस का चिहरा सूरज जैसा था और उस के पाँओ
आग के सतून जैसे। 2 उस के हाथ में एक छोटा
तूमार था जो खुला था। अपने एक पाँओ को उस
ने समुन्दर पर रख दिया और दूसरे को ज़मीन पर।
3 फिर वह ऊँची आवाज़ से पुकार उठा। ऐसे लगा
जैसे शेरबबर गरज रहा है। इस पर कड़क की सात
आवाज़ें बोलने लगीं। 4 उन के बोलने पर मैं उन की
बातें लिखने को था कि एक आवाज़ ने कहा, “कड़क
की सात आवाज़ों की बातों पर मुहर लगा और उन्हें
मत लिखना।”

5 फिर उस फ़रिश्ते ने जिसे मैं ने समुन्दर और ज़मीन
पर खड़ा देखा अपने दहने हाथ को आसमान की
तरफ़ उठा कर 6 अल्लाह के नाम की क़सम खाई, उस
के नाम की जो अज़ल से अबद तक ज़िन्दा है और
जिस ने आसमानों, ज़मीन और समुन्दर को उन तमाम
चीज़ों समेत ख़ल्क़ किया जो उन में हैं। फ़रिश्ते ने
कहा, “अब देर नहीं होगी। 7 जब सातवाँ फ़रिश्ता
अपने तुरम में फूँक मारने को होगा तब अल्लाह का
भेद जो उस ने अपने नबुव्वत करने वाले ख़ादिमों
को बताया था तक्मील तक पहुँचेगा।”

8 फिर जो आवाज़ आसमान से सुनाई दी थी उस ने
एक बार फिर मुझ से बात की, “जा, वह तूमार ले
लेना जो समुन्दर और ज़मीन पर खड़े फ़रिश्ते के हाथ
में खुला पड़ा है।”

9 चुनाँचे मैं ने फ़रिश्ते के पास जा कर उस से
गुज़ारिश की कि वह मुझे छोटा तूमार दे। उस ने मुझ
से कहा, “इसे ले और खा ले। यह तेरे मुँह में शहद
की तरह मीठा लगेगा, लेकिन तेरे मेदे में कड़वाहट
पैदा करेगा।”

10 मैं ने छोटे तूमार को फ़रिश्ते के हाथ से ले कर
उसे खा लिया। मेरे मुँह में तो वह शहद की तरह मीठा
लग रहा था, लेकिन मेदे में जा कर उस ने कड़वाहट
पैदा कर दी। 11 फिर मुझे बताया गया, “लाज़िम है
कि तू बहुत उम्मतों, क़ौमों, ज़बानों और बादशाहों
के बारे में मज़ीद नबुव्वत करे।”

दो गवाह

11 1 मुझे गज़ की तरह का सरकंडा दिया गया
और बताया गया, “जा, अल्लाह के घर और
क़ुर्बानगाह की पैमाइश कर। उस में परस्तारों की
तादाद भी गिन। 2 लेकिन बैरूनी सहन को छोड़ दे।
उसे मत नाप, क्यूँकि उसे ग़ैरईमानदारों को दिया गया

है जो मुक़द्दस शहर को 42 महीनों तक कुचलते
रहेंगे। 3 और मैं अपने दो गवाहों को इख़तियार दूँगा,
और वह टाट ओढ़ कर 1,260 दिनों के दौरान
नबुव्वत करेंगे।"

4 यह दो गवाह ज़ैतून के वह दो दरख़्त और वह दो
शमादान हैं जो दुनिया के आक़ा के सामने खड़े हैं।
5 अगर कोई उन्हें नुक़्सान पहुँचाना चाहे तो उन के
मुँह में से आग निकल कर उन के दुश्मनों को भस्म
कर देती है। जो भी उन्हें नुक़्सान पहुँचाना चाहे उसे
इस तरह मरना पड़ता है। 6 इन गवाहों को आसमान
को बन्द रखने का इख़तियार है ताकि जितना वक़्त
वह नबुव्वत करें बारिश न हो। उन्हें पानी को ख़ून
में बदलने और ज़मीन को हर क़िस्म की अज़ियत
पहुँचाने का इख़तियार भी है। और वह जितनी दफ़ा
जी चाहे यह कर सकते हैं।

7 उन की गवाही का मुक़र्ररा वक़्त पूरा होने पर
अथाह गढ़े में से निकलने वाला हैवान उन से जंग
करना शुरू करेगा और उन पर ग़ालिब आ कर उन्हें
मार डालेगा। 8 उन की लाशें उस बड़े शहर की सड़क
पर पड़ी रहेंगी जिस का अलामती नाम सदूम और
मिस्र है। वहाँ उन का आक़ा भी मस्लूब हुआ था।
9 और साढ़े तीन दिनों के दौरान हर उम्मत, क़बीले,
ज़बान और क़ौम के लोग इन लाशों को घूर कर देखेंगे
और इन्हें दफ़न करने नहीं देंगे। 10 ज़मीन के बाशिन्दे
उन की वजह से मसरूर होंगे और ख़ुशी मना कर एक
दूसरे को तुह्फ़े भेजेंगे, क्यूँकि इन दो नबियों ने ज़मीन
पर रहने वालों को काफ़ी ईज़ा पहुँचाई थी। 11 लेकिन
इन साढ़े तीन दिनों के बाद अल्लाह ने उन में ज़िन्दगी
का दम फूँक दिया, और वह अपने पाँओ पर खड़े
हुए। जो उन्हें देख रहे थे वह सख़्त दह्शतज़दा हुए।
12 फिर उन्हों ने आसमान से एक ऊँची आवाज़ सुनी
जिस ने उन से कहा, "यहाँ ऊपर आओ!" और उन के
दुश्मनों के देखते देखते दोनों एक बादल में आसमान
पर चले गए। 13 उसी वक़्त एक शदीद ज़ल्ज़ला आया
और शहर का दसवाँ हिस्सा गिर कर तबाह हो गया।
7,000 अफ़राद उस की ज़द में आ कर मर गए। बचे
हुए लोगों में दह्शत फैल गई और वह आसमान के
ख़ुदा को जलाल देने लगे।

14 दूसरा अफ़्सोस गुज़र गया, लेकिन अब तीसरा
अफ़्सोस जल्द होने वाला है।

सातवाँ तुरम

15 सातवें फ़रिश्ते ने अपने तुरम में फूँक मारी। इस
पर आसमान पर से ऊँची आवाज़ें सुनाई दें जो कह
रही थीं, "ज़मीन की बादशाही हमारे आक़ा और उस
के मसीह की हो गई है। वही अज़ल से अबद तक
हुकूमत करेगा।" 16 और अल्लाह के तख़्त के सामने
बैठे 24 बुज़ुर्गों ने गिर कर अल्लाह को सिज्दा किया
17 और कहा, "ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ख़ुदा, हम
तेरा शुक्र करते हैं, तू जो है और जो था। क्यूँकि तू
अपनी अज़ीम क़ुदरत को काम में ला कर हुकूमत
करने लगा है। 18 क़ौमें ग़ुस्से में आएँ तो तेरा ग़ज़ब
नाज़िल हुआ। अब मुर्दों की अदालत करने और
अपने ख़ादिमों को अज्र देने का वक़्त आ गया है। हाँ,
तेरे नबियों, मुक़द्दसीन और तेरा ख़ौफ़ मानने वालों
को अज्र मिलेगा, ख़्वाह वह छोटे हों या बड़े। अब
वह वक़्त भी आ गया है कि ज़मीन को तबाह करने
वालों को तबाह किया जाए।"

19 आसमान पर अल्लाह के घर को खोला गया और
उस में उस के अह्द का सन्दूक़ नज़र आया। बिजली
चमकने लगी, शोर मच गया, बादल गरजने और बड़े
बड़े ओले पड़ने लगे।

ख़ातून और अज़दहा

12 1 फिर आसमान पर एक अज़ीम निशान
ज़ाहिर हुआ, एक ख़ातून जिस का लिबास
सूरज था। उस के पाँओ तले चाँद और सर पर बारह
सितारों का ताज था। 2 उस का पाँओ भारी था, और
जन्म देने के शदीद दर्द में मुब्तला होने की वजह से
वह चिल्ला रही थी।

3 फिर आसमान पर एक और निशान नज़र आया,
एक बड़ा और आग जैसा सुर्ख़ अज़दहा। उस के सात

सर और दस सींग थे, और हर सर पर एक ताज था।
4 उस की दुम ने सितारों के तीसरे हिस्से को आसमान
पर से उतार कर ज़मीन पर फैंक दिया। फिर अज़दहा
जन्म देने वाली ख़ातून के सामने खड़ा हुआ ताकि
उस बच्चे को जन्म लेते ही हड़प कर ले। 5 ख़ातून के
बेटा पैदा हुआ, वह बच्चा जो लोहे के शाही असा से
क़ौमों पर हुकूमत करेगा। और ख़ातून के इस बच्चे
को छीन कर अल्लाह और उस के तख़्त के सामने
लाया गया। 6 ख़ातून ख़ुद रेगिस्तान में हिज्रत करके
एक ऐसी जगह पहुँच गई जो अल्लाह ने उस के लिए
तय्यार कर रखी थी, ताकि वहाँ 1,260 दिन तक उस
की परवरिश की जाए।

7 फिर आसमान पर जंग छिड़ गई। मीकाएल और
उस के फ़रिश्ते अज़दहे से लड़े। अज़दहा और उस के
फ़रिश्ते उन से लड़ते रहे, 8 लेकिन वह ग़ालिब न आ
सके बल्कि आसमान पर अपने मक़ाम से महरूम
हो गए। 9 बड़े अज़दहे को निकाल दिया गया, उस
क़दीम अज़दहे को जो इब्लीस या शैतान कहलाता
है और जो पूरी दुनिया को गुमराह कर देता है। उसे
उस के फ़रिश्तों समेत ज़मीन पर फैंका गया।

10 फिर आसमान पर एक ऊँची आवाज़ सुनाई दी,
"अब हमारे ख़ुदा की नजात, क़ुदरत और बादशाही
आ गई है, अब उस के मसीह का इख़तियार आ
गया है। क्यूँकि हमारे भाइयों और बहनों पर इल्ज़ाम
लगाने वाला जो दिन रात अल्लाह के हुज़ूर उन पर
इल्ज़ाम लगाता रहता था उसे ज़मीन पर फैंका गया
है। 11 ईमानदार लेले के ख़ून और अपनी गवाही
सुनाने के ज़रीए ही उस पर ग़ालिब आए हैं। उन्हों
ने अपनी जान अज़ीज़ न रखी बल्कि उसे देने तक
तय्यार थे। 12 चुनाँचे ख़ुशी मनाओ, ऐ आसमानो!
ख़ुशी मनाओ, उन में बसने वालो! लेकिन ज़मीन और
समुन्दर पर अफ़्सोस! क्यूँकि इब्लीस तुम पर उतर
आया है। वह बड़े ग़ुस्से में है, क्यूँकि वह जानता है
कि अब उस के पास वक़्त कम है।"

13 जब अज़दहे ने देखा कि उसे ज़मीन पर गिरा
दिया गया है तो वह उस ख़ातून के पीछे पड़ गया
जिस ने बच्चे को जन्म दिया था। 14 लेकिन ख़ातून को
बड़े उक़ाब के से दो पर दिए गए ताकि वह उड़ कर
रेगिस्तान में उस जगह पहुँचे जो उस के लिए तय्यार
की गई थी और जहाँ वह साढ़े तीन साल तक अज़दहे
की पहुँच से महफ़ूज़ रह कर परवरिश पाएगी। 15 इस
पर अज़दहे ने अपने मुँह से पानी निकाल कर दरया
की सूरत में ख़ातून के पीछे पीछे बहा दिया ताकि
उसे बहा ले जाए। 16 लेकिन ज़मीन ने ख़ातून की
मदद करके अपना मुँह खोल दिया और उस दरया
को निगल लिया जो अज़दहे ने अपने मुँह से निकाल
दिया था। 17 फिर अज़दहे को ख़ातून पर ग़ुस्सा आया,
और वह उस की बाक़ी औलाद से जंग करने के लिए
चला गया। (ख़ातून की औलाद वह हैं जो अल्लाह के
अहकाम पूरे करके ईसा की गवाही को क़ाइम रखते
हैं)। 18 और अज़दहा समुन्दर के साहिल पर खड़ा हो
गया।

दो हैवान

13 1 फिर मैं ने देखा कि समुन्दर में से एक
हैवान निकल रहा है। उस के सात सींग
और सात सर थे। हर सींग पर एक ताज और हर
सर पर कुफ़्र का एक नाम था। 2 यह हैवान चीते की
मानिन्द था। लेकिन उस के रीछ के से पाँओ और
शेरबबर का सा मुँह था। अज़दहे ने इस हैवान को
अपनी क़ुव्वत, अपना तख़्त और बड़ा इख़तियार दे
दिया। 3 लगता था कि हैवान के सरों में से एक पर
लाइलाज ज़ख़्म लगा है। लेकिन इस ज़ख़्म को शिफ़ा
दी गई। पूरी दुनिया यह देख कर हैरतज़दा हुई और
हैवान के पीछे लग गई। 4 लोगों ने अज़दहे को सिज्दा
किया, क्यूँकि उसी ने हैवान को इख़तियार दिया था।
और उन्हों ने यह कह कर हैवान को भी सिज्दा किया,
"कौन इस हैवान की मानिन्द है? कौन इस से लड़
सकता है?"

5 इस हैवान को बड़ी बड़ी बातें और कुफ़्र बकने
का इख़तियार दिया गया। और उसे यह करने का
इख़तियार 42 महीने के लिए मिल गया। 6 यूँ वह

अपना मुँह खोल कर अल्लाह, उस के नाम, उस की
सुकूनतगाह और आसमान के बाशिन्दों पर कुफ़्र
बकने लगा। 7 उसे मुक़द्दसीन से जंग करके उन पर
फ़त्ह पाने का इख़तियार भी दिया गया। और उसे
हर क़बीले, हर उम्मत, हर ज़बान और हर क़ौम पर
इख़तियार दिया गया। 8 ज़मीन के तमाम बाशिन्दे इस
हैवान को सिज्दा करेंगे यानी वह सब जिन के नाम
दुनिया की इब्तिदा से लेले की किताब-ए-हयात में
दर्ज नहीं हैं, उस लेले की किताब में जो ज़बह किया
गया है।

9 जो सुन सकता है वह सुन ले! 10 अगर किसी
को क़ैदी बनना है तो वह क़ैदी ही बनेगा। अगर
किसी को तलवार की ज़द में आ कर मरना है तो
वह ऐसे ही मरेगा। अब मुक़द्दसीन को साबितक़दमी
और वफ़ादार ईमान की ख़ास ज़रूरत है।

11 फिर मैं ने एक और हैवान को देखा। वह ज़मीन
में से निकल रहा था। उस के लेले के से दो सींग
थे, लेकिन उस के बोलने का अन्दाज़ अज़दहे का
सा था। 12 उस ने पहले हैवान का पूरा इख़तियार
उस की ख़ातिर इस्तेमाल करके ज़मीन और उस
के बाशिन्दों को पहले हैवान को सिज्दा करने पर
उकसाया, यानी उस हैवान को जिस का लाइलाज
ज़ख़्म भर गया था। 13 और उस ने बड़े मोजिज़ाना
निशान दिखाए, यहाँ तक कि उस ने लोगों के देखते
देखते आसमान से ज़मीन पर आग नाज़िल होने
दी। 14 यूँ उसे पहले हैवान की ख़ातिर मोजिज़ाना
निशान दिखाने का इख़तियार दिया गया, और इन
के ज़रीए उस ने ज़मीन के बाशिन्दों को सहीह राह
से बहकाया। उस ने उन्हें कहा कि वह उस हैवान
की ताज़ीम में एक मुजस्समा बना दें जो तलवार
से ज़ख़्मी होने के बावुजूद दुबारा ज़िन्दा हुआ था।
15 फिर उसे पहले हैवान के मुजस्समे में जान डालने
का इख़तियार दिया गया ताकि मुजस्समा बोल सके
और उन्हें क़त्ल करवा सके जो उसे सिज्दा करने
से इन्कार करते थे। 16 उस ने यह भी करवाया कि
हर एक के दहने हाथ या माथे पर एक ख़ास निशान
लगाया जाए, ख़्वाह वह छोटा हो या बड़ा, अमीर हो
या ग़रीब, आज़ाद हो या ग़ुलाम। 17 सिर्फ़ वह शख़्स
कुछ ख़रीद या बेच सकता था जिस पर यह निशान
लगा था। यह निशान हैवान का नाम या उस के नाम
का नम्बर था।

18 यहाँ हिक्मत की ज़रूरत है। जो समझदार है वह
हैवान के नम्बर का हिसाब करे, क्यूँकि यह एक मर्द
का नम्बर है। उस का नम्बर 666 है।

लेला और उस की क़ौम

14 1 फिर मैं ने देखा कि लेला मेरे सामने ही
सिय्यून के पहाड़ पर खड़ा है। उस के साथ
1,44,000 अफ़राद खड़े थे जिन के माथों पर उस
का और उस के बाप का नाम लिखा था। 2 और मैं
ने आसमान से एक ऐसी आवाज़ सुनी जो किसी बड़े
आबशार और गरजते बादलों की ऊँची कड़क की
मानिन्द थी। यह उस आवाज़ की मानिन्द थी जो
सरोद बजाने वाले अपने साज़ों से निकालते हैं। 3 यह
1,44,000 अफ़राद तख़्त, चार जानदारों और बुज़ुर्गों
के सामने खड़े एक नया गीत गा रहे थे, एक ऐसा
गीत जो सिर्फ़ वही सीख सके जिन्हें लेले ने ज़मीन से
ख़रीद लिया था। 4 यह वह मर्द हैं जिन्हों ने अपने आप
को ख़वातीन के साथ आलूदा नहीं किया, क्यूँकि वह
कुंवारे हैं। जहाँ भी लेला जाता है वहाँ वह भी जाते
हैं। उन्हें बाक़ी इन्सानों में से फ़सल के पहले फल
की हैसियत से अल्लाह और लेले के लिए ख़रीदा गया
है। 5 उन के मुँह से कभी झूट नहीं निकला बल्कि वह
बेइल्ज़ाम हैं।

तीन फ़रिश्ते

6 फिर मैं ने एक और फ़रिश्ता देखा। वह मेरे सर
के ऊपर ही हवा में उड़ रहा था। उस के पास अल्लाह
की अबदी ख़ुशख़बरी थी ताकि वह उसे ज़मीन के
बाशिन्दों यानी हर क़ौम, क़बीले, अहल-ए-ज़बान
और उम्मत को सुनाए। 7 उस ने ऊँची आवाज़ से
कहा, “ख़ुदा का ख़ौफ़ मान कर उसे जलाल दो,

क्यूँकि उस की अदालत का वक़्त आ गया है। उसे सिज्दा करो जिस ने आसमानों, ज़मीन, समुन्दर और पानी के चश्मों को ख़ल्क़ किया है।”

8 एक दूसरे फ़रिश्ते ने पहले के पीछे पीछे चलते हुए कहा, “वह गिर गया है! हाँ, अज़ीम बाबल गिर गया है, जिस ने तमाम क़ौमों को अपनी हरामकारी और मस्ती की मै पिलाई है।”

9 इन दो फ़रिश्तों के पीछे एक तीसरा फ़रिश्ता चल रहा था। उस ने ऊँची आवाज़ से कहा, “जो भी हैवान और उस के मुजस्समे को सिज्दा करे और जिसे भी उस का निशान अपने माथे या हाथ पर मिल जाए 10 वह अल्लाह के ग़ज़ब की मै से पिएगा, ऐसी मै जो मिलावट के बग़ैर ही अल्लाह के ग़ज़ब के प्याले में डाली गई है। मुक़द्दस फ़रिश्तों और लेले के हुज़ूर उसे आग और गंधक का अज़ाब सहना पड़ेगा। 11 और इन लोगों को सताने वाली यह आग जलती रहेगी, इस का धुआँ अबद तक चढ़ता रहेगा। जो हैवान और उस के मुजस्समे को सिज्दा करते हैं या जिन्हों ने उस के नाम का निशान लिया है वह न दिन, न रात को आराम पाएँगे।”

12 यहाँ मुक़द्दसीन को साबितक़दम रहने की ज़रूरत है, उन्हें जो अल्लाह के अह्काम पूरे करते और ईसा के वफ़ादार रहते हैं।

13 फिर मैं ने आसमान से एक आवाज़ यह कहती हुई सुनी, “लिख, मुबारक हैं वह मुर्दे जो अब से ख़ुदावन्द में वफ़ात पाते हैं।”

“जी हाँ,” रूह फ़रमाता है, “वह अपनी मेहनत-मशक़्क़त से आराम पाएँगे, क्यूँकि उन के नेक काम उन के पीछे हो कर उन के साथ चलेंगे।”

ज़मीन पर फ़सल की कटाई

14 फिर मैं ने एक सफ़ेद बादल देखा, और उस पर कोई बैठा था जो इब्न-ए-आदम की मानिन्द था। उस के सर पर सोने का ताज और हाथ में तेज़ दरान्ती थी। 15 एक और फ़रिश्ता अल्लाह के घर से निकल कर ऊँची आवाज़ से पुकार कर उस से मुख़ातिब हुआ जो बादल पर बैठा था, “अपनी दरान्ती ले कर फ़सल की कटाई कर! क्यूँकि फ़सल काटने का वक़्त आ गया है और ज़मीन पर की फ़सल पक गई है।” 16 चुनाँचे बादल पर बैठने वाले ने अपनी दरान्ती ज़मीन पर चलाई और ज़मीन की फ़सल की कटाई हुई।

17 इस के बाद एक और फ़रिश्ता अल्लाह के उस घर से निकल आया जो आसमान पर है, और उस के पास भी तेज़ दरान्ती थी।

18 फिर एक तीसरा फ़रिश्ता आया। उसे आग पर इख़तियार था। वह क़ुर्बानगाह से आया और ऊँची आवाज़ से पुकार कर तेज़ दरान्ती पकड़े हुए फ़रिश्ते से मुख़ातिब हुआ, “अपनी तेज़ दरान्ती ले कर ज़मीन की अंगूर की बेल से अंगूर के गुच्छे जमा कर, क्यूँकि उस के अंगूर पक गए हैं।” 19 फ़रिश्ते ने ज़मीन पर अपनी दरान्ती चलाई, उस के अंगूर जमा किए और उन्हें अल्लाह के ग़ज़ब के उस बड़े हौज़ में फैंक दिया जिस में अंगूर का रस निकाला जाता है। 20 यह हौज़ शहर से बाहर वाक़े था। उस में पड़े अंगूरों को इतना रौंदा गया कि हौज़ में से ख़ून बह निकला। ख़ून का यह सैलाब 300 किलोमीटर दूर तक पहुँच गया और वह इतना ज़्यादा था कि घोड़ों की लगामों तक पहुँच गया।

आख़िरी बलाओं के फ़रिश्ते

15 1 फिर मैं ने आसमान पर एक और इलाही निशान देखा, जो अज़ीम और हैरतअंगेज़ था। सात फ़रिश्ते सात आख़िरी बलाएँ अपने पास रख कर खड़े थे। इन से अल्लाह का ग़ज़ब तक्मील तक पहुँच गया।

2 मैं ने शीशे का सा एक समुन्दर भी देखा जिस में आग मिलाई गई थी। इस समुन्दर के पास वह खड़े थे जो हैवान, उस के मुजस्समे और उस के नाम के नम्बर पर ग़ालिब आ गए थे। वह अल्लाह के दिए हुए सरोद पकड़े 3 अल्लाह के ख़ादिम मूसा और लेले का गीत गा रहे थे,

“ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ख़ुदा,

तेरे काम कितने अज़ीम और हैरतअंगेज़ हैं।
ए ज़मानों के बादशाह,
तेरी राहें कितनी रास्त और सच्ची हैं।
4 ऐ रब, कौन तेरा ख़ौफ़ नहीं मानेगा?
कौन तेरे नाम को जलाल नहीं देगा?
क्यूँकि तू ही क़ुद्दूस है।
तमाम क़ौमें आ कर तेरे हुज़ूर सिज्दा करेंगी,
क्यूँकि तेरे रास्त काम ज़ाहिर हो गए हैं।"

5 इस के बाद मैं ने देखा कि अल्लाह के घर यानी आसमान पर के शरीअत के ख़ैमे को [b]खोल दिया गया। 6 अल्लाह के घर से वह सात फ़रिश्ते निकल आए जिन के पास सात बलाएँ थीं। उन के कतान के कपड़े साफ़-सुथरे और चमक रहे थे। यह कपड़े सीनों पर सोने के कमरबन्द से बंधे हुए थे। 7 फिर चार जानदारों में से एक ने इन सात फ़रिश्तों को सोने के सात प्याले दिए। यह प्याले उस ख़ुदा के ग़ज़ब से भरे हुए थे जो अज़ल से अबद तक ज़िन्दा है। 8 उस वक़्त अल्लाह का घर उस के जलाल और क़ुदरत से पैदा होने वाले धुएँ से भर गया। और जब तक सात फ़रिश्तों की सात बलाएँ तक्मील तक न पहुँचीं उस वक़्त तक कोई भी अल्लाह के घर में दाख़िल न हो सका।

अल्लाह के ग़ज़ब के प्याले

16 1 फिर मैं ने एक ऊँची आवाज़ सुनी जिस ने अल्लाह के घर में से सात फ़रिश्तों से कहा, "जाओ, अल्लाह के ग़ज़ब से भरे सात प्यालों को ज़मीन पर उंडेल दो।"

2 पहले फ़रिश्ते ने जा कर अपना प्याला ज़मीन पर उंडेल दिया। इस पर उन लोगों के जिस्मों पर भद्दे और तक्लीफ़दिह फोड़े निकल आए जिन पर हैवान का निशान था और जो उस के मुजस्समे को सिज्दा करते थे।

3 दूसरे फ़रिश्ते ने अपना प्याला समुन्दर पर उंडेल दिया। इस पर समुन्दर का पानी लाश के से ख़ून में बदल गया, और उस में हर ज़िन्दा मख़्लूक़ मर गई।

4 तीसरे फ़रिश्ते ने अपना प्याला दरयाओं और पानी के चश्मों पर उंडेल दिया तो उन का पानी ख़ून बन गया। 5 फिर मैं ने पानियों पर मुक़र्रर फ़रिश्ते को यह कहते सुना, "तू यह फ़ैसला करने में रास्त है, तू जो है और जो था, तू जो क़ुद्दूस है। 6 चूँकि उन्हों ने तेरे मुक़द्दसीन और नबियों की ख़ूँरेज़ी की है, इस लिए तू ने उन्हें वह कुछ दे दिया जिस के लाइक़ वह हैं। तू ने उन्हें ख़ून पिला दिया।" 7 फिर मैं ने क़ुर्बानगाह को यह जवाब देते सुना, "हाँ, ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ख़ुदा, हक़ीक़तन तेरे फ़ैसले सच्चे और रास्त हैं।"

8 चौथे फ़रिश्ते ने अपना प्याला सूरज पर उंडेल दिया। इस पर सूरज को लोगों को आग से झुलसाने का इख़तियार दिया गया। 9 लोग शदीद तपिश से झुलस गए, और उन्हों ने अल्लाह के नाम पर कुफ़्र बका जिसे इन बलाओं पर इख़तियार था। उन्हों ने तौबा करने और उसे जलाल देने से इन्कार किया।

10 पाँचवें फ़रिश्ते ने अपना प्याला हैवान के तख़्त पर उंडेल दिया। इस पर उस की बादशाही में अंधेरा छा गया। लोग अज़ियत के मारे अपनी ज़बानें काटते रहे। 11 उन्हों ने अपनी तकलीफों और फोड़ों की वजह से आसमान पर कुफ़्र बका और अपने कामों से इन्कार न किया।

12 छटे फ़रिश्ते ने अपना प्याला बड़े दरया फ़ुरात पर उंडेल दिया। इस पर उस का पानी सूख गया ताकि मशरिक़ के बादशाहों के लिए रास्ता तय्यार हो जाए। 13 फिर मैं ने तीन बदरुहें देखीं जो मेंढ़कों की मानिन्द थीं। वह अज़दहे के मुँह, हैवान के मुँह और झूटे नबी के मुँह में से निकल आईं। 14 यह मेंढ़क शयातीन की रूहें हैं जो मोजिज़े दिखाती हैं और निकल कर पूरी दुनिया के बादशाहों के पास जाती हैं ताकि उन्हें

---

[b]यानी मुलाक़ात के ख़ैमे को।

अल्लाह क़ादिर-ए-मुतलक़ के अज़ीम दिन पर जंग के लिए इकट्ठा करें।

15 "देखो, मैं चोर की तरह आऊँगा। मुबारक है वह जो जागता रहता और अपने कपड़े पहने हुए रहता है ताकि उसे नंगी हालत में चलना न पड़े और लोग उस की शर्मगाह न देखें।"

16 फिर उन्हों ने बादशाहों को उस जगह पर इकट्ठा किया जिस का नाम इब्रानी ज़बान में हर्मजिद्दोन है।

17 सातवें फ़रिश्ते ने अपना प्याला हवा में उंडेल दिया। इस पर अल्लाह के घर में तख़्त की तरफ़ से एक ऊँची आवाज़ सुनाई दी जिस ने कहा, "अब काम तक्मील तक पहुँच गया है!" 18 बिजलियाँ चमकने लगीं, शोर मच गया, बादल गरजने लगे और एक शदीद ज़ल्ज़ला आया। इस क़िस्म का ज़ल्ज़ला ज़मीन पर इन्सान की तख़्लीक़ से ले कर आज तक नहीं आया, इतना सख़्त ज़ल्ज़ला कि 19 अज़ीम शहर तीन हिस्सों में बट गया और क़ौमों के शहर तबाह हो गए। अल्लाह ने अज़ीम बाबल को याद करके उसे अपने सख़्त ग़ज़ब की मै से भरा प्याला पिला दिया। 20 तमाम जज़ीरे ग़ाइब हो गए और पहाड़ कहीं नज़र न आए। 21 लोगों पर आसमान से मन मन भर के बड़े बड़े ओले गिर गए। और लोगों ने ओलों की बला की वजह से अल्लाह पर कुफ़्र बका, क्यूँकि यह बला निहायत सख़्त थी।

मश्हूर कस्बी

17 1 फिर सात प्याले अपने पास रखने वाले इन सात फ़रिश्तों में से एक मेरे पास आया। उस ने कहा, "आ, मैं तुझे उस बड़ी कस्बी की सज़ा दिखा दूँ जो गहरे पानी के पास बैठी है। 2 ज़मीन के बादशाहों ने उस के साथ ज़िना किया। हाँ, उस की ज़िनाकारी की मै से ज़मीन के बाशिन्दे मस्त हो गए।"

3 फिर फ़रिश्ता मुझे रूह में एक रेगिस्तान में ले गया। वहाँ मैं ने एक औरत को देखा। वह एक क़िर्मिज़ी रंग के हैवान पर सवार थी जिस के पूरे जिस्म पर कुफ़्र के नाम लिखे थे और जिस के सात सर और दस सींग थे। 4 यह औरत अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग के कपड़े पहने और सोने, बेशक़ीमत जवाहिर और मोतियों से सजी हुई थी। उस के हाथ में सोने का एक प्याला था जो घिनौनी चीज़ों और उस की ज़िनाकारी की गन्दगी से भरा हुआ था। 5 उस के माथे पर यह नाम लिखा था, जो एक भेद है, "अज़ीम बाबल, कस्बियों और ज़मीन की घिनौनी चीज़ों की माँ।" 6 और मैं ने देखा कि यह औरत उन मुक़द्दसीन के ख़ून से मस्त हो गई थी जिन्हों ने ईसा की गवाही दी थी।

उसे देख कर मैं निहायत हैरान हुआ। 7 फ़रिश्ते ने मुझ से पूछा, "तू क्यूँ हैरान है? मैं तुझ पर औरत और उस हैवान का भेद खोल दूँगा जिस पर औरत सवार है और जिस के सात सर और दस सींग हैं। 8 जिस हैवान को तू ने देखा वह पहले था, इस वक़्त नहीं है और दुबारा अथाह गढ़े में से निकल कर हलाकत की तरफ़ बढ़ेगा। ज़मीन के जिन बाशिन्दों के नाम दुनिया की तख़्लीक़ से ही किताब-ए-हयात में दर्ज नहीं हैं वह हैवान को देख कर हैरतज़दा हो जाएंगे। क्यूँकि वह पहले था, इस वक़्त नहीं है लेकिन दुबारा आएगा।

9 यहाँ समझदार ज़हन की ज़रूरत है। सात सरों से मुराद सात पहाड़ हैं जिन पर यह औरत बैठी है। यह सात बादशाहों की नुमाइन्दगी भी करते हैं। 10 इन में से पाँच गिर गए हैं, छटा मौजूद है और सातवाँ अभी आने वाला है। लेकिन जब वह आएगा तो उसे थोड़ी देर के लिए रहना है। 11 जो हैवान पहले था और इस वक़्त नहीं है वह आठवाँ बादशाह है, गो वह सात बादशाहों में से भी एक है। वह हलाकत की तरफ़ बढ़ रहा है।

12 जो दस सींग तू ने देखे वह दस बादशाह हैं जिन्हें अभी कोई बादशाही नहीं मिली। लेकिन उन्हें घंटे भर के लिए हैवान के साथ बादशाह का इख़तियार मिलेगा। 13 यह एक ही सोच रख कर अपनी ताक़त और इख़तियार हैवान को दे देंगे और लेले से जंग करेंगे, 14 लेकिन लेला अपने बुलाए गए, चुने हुए और

वफ़ादार पैरोकारों के साथ उन पर ग़ालिब आएगा,
क्यूँकि वह रब्बों का रब और बादशाहों का बादशाह
है।”
15 फिर फ़रिश्ते ने मुझ से कहा, “जिस पानी के पास
तू ने कस्बी को बैठी देखा वह उम्मतें, हुजूम, क़ौमें
और ज़बानें है। 16 जो हैवान और दस सींग तू ने देखे
वह कस्बी से नफ़रत करेंगे। वह उसे वीरान करके
नंगा छोड़ देंगे और उस का गोश्त खा कर उसे भस्म
करेंगे। 17 क्यूँकि अल्लाह ने उन के दिलों में यह डाल
दिया है कि वह उस का मक़्सद पूरा करें और उस
वक़्त तक हुकूमत करने का अपना इख़तियार हैवान
के सपुर्द कर दें जब तक अल्लाह के फ़रमान तक्मील
तक न पहुँच जाएँ।
18 जिस औरत को तू ने देखा वह वही बड़ा शहर है
जो ज़मीन के बादशाहों पर हुकूमत करता है।”

बाबल शहर की शिकस्त

18 1 इस के बाद मैं ने एक और फ़रिश्ता देखा
जो आसमान पर से उतर रहा था। उसे बहुत
इख़तियार हासिल था और ज़मीन उस के जलाल से
रौशन हो गई। 2 उस ने ऊँची आवाज़ से पुकार कर
कहा, “वह गिर गई है! हाँ, अज़ीम कस्बी बाबल गिर
गई है! अब वह शयातीन का घर और हर बदरुह का
बसेरा बन गई है, हर नापाक और घिनौने परिन्दे का
बसेरा। 3 क्यूँकि तमाम क़ौमों ने उस की हरामकारी
और मस्ती की मै पी ली है। ज़मीन के बादशाहों ने
उस के साथ ज़िना किया और ज़मीन के सौदागर उस
की बेलगाम अय्याशी से अमीर हो गए हैं।” 4 फिर मैं
ने एक और आवाज़ सुनी। उस ने आसमान की तरफ़
से कहा,

“ऐ मेरी क़ौम, उस में से निकल आ,
ताकि तुम उस के गुनाहों में शरीक न हो जाओ
और उस की बलाएँ तुम पर न आएँ। 5 क्यूँकि उस
के गुनाह आसमान तक पहुँच गए हैं,
और अल्लाह उन की बदियों को याद करता है।
6 उस के साथ वही सुलूक करो
जो उस ने तुम्हारे साथ किया है।
जो कुछ उस ने किया है
उस का दुगना बदला उसे देना।
जो शराब उस ने दूसरों को पिलाने के लिए तय्यार
की है
उस का दुगना बदला उसे दे देना।
7 उसे उतनी ही अज़ियत और ग़म पहुँचा दो
जितना उस ने अपने आप को शानदार बनाया और
अय्याशी की।
क्यूँकि अपने दिल में वह कहती है,
‘मैं यहाँ अपने तख़्त पर रानी हूँ।
न मैं बेवा हूँ, न मैं कभी मातम करूँगी।’
8 इस वजह से एक दिन यह बलाएँ यानी मौत,
मातम और काल
उस पर आन पड़ेंगी।
वह भस्म हो जाएगी,
क्यूँकि उस की अदालत करने वाला रब ख़ुदा क़वी
है।”
9 और ज़मीन के जिन बादशाहों ने उस के साथ ज़िना
और अय्याशी की वह उस के जलने का धुआँ देख
कर रो पड़ेंगे और आह-ओ-ज़ारी करेंगे। 10 वह उस
की अज़ियत को देख कर ख़ौफ़ खाएँगे और दूर दूर
खड़े हो कर कहेंगे, “अफ़्सोस! तुझ पर अफ़्सोस, ऐ
अज़ीम और ताक़तवर शहर बाबल! एक ही घंटे के
अन्दर अन्दर अल्लाह की अदालत तुझ पर आ गई
है।”
11 ज़मीन के सौदागर भी उसे देख कर रो पड़ेंगे
और आह-ओ-ज़ारी करेंगे, क्यूँकि कोई नहीं रहा
होगा जो उन का माल ख़रीदे : 12 उन का सोना,
चाँदी, बेशक़ीमत जवाहिर, मोती, बारीक कतान,
अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग का कपड़ा, रेशम, हर
क़िस्म की ख़ुश्बूदार लकड़ी, हाथीदाँत की हर चीज़
और क़ीमती लकड़ी, पीतल, लोहे और संग-ए-मरमर
की हर चीज़, 13 दारचीनी, मसाला, अगरबत्ती, मुर,
बख़ूर, मै, ज़ैतून का तेल, बेहतरीन मैदा, गन्दुम,
गाय-बैल, भेड़ें, घोड़े, रथ और ग़ुलाम यानी इन्सान।

14 सौदागर उस से कहेंगे, “जो फल तू चाहती थी वह
तुझ से दूर हो गया है। तेरी तमाम दौलत और शान-
ओ-शौकत ग़ाइब हो गई है और आइन्दा कभी भी तेरे
पास पाई नहीं जाएगी।” 15 जो सौदागर उसे यह चीज़ें
फ़रोख़्त करने से दौलतमन्द हुए वह उस की अज़ियत
देख कर ख़ौफ़ के मारे दूर दूर खड़े हो जाएंगे। वह
रो रो कर मातम करेंगे 16 और कहेंगे, “हाय! तुझ
पर अफ़सोस, ऐ अज़ीम शहर, ऐ ख़ातून जो पहले
बारीक कतान, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग के कपड़े
पहने फिरती थी और जो सोने, क़ीमती जवाहिर और
मोतियों से सजी हुई थी। 17 एक ही घंटे के अन्दर
अन्दर सारी दौलत तबाह हो गई है!”

हर बहरी जहाज़ का कप्तान, हर समुन्दरी मुसाफ़िर,
हर मल्लाह और वह तमाम लोग जो समुन्दर पर सफ़र
करने से अपनी रोज़ी कमाते हैं वह सब दूर दूर
खड़े हो जाएंगे। 18 उस के जलने का धुआँ देख कर
वह कहेंगे, “क्या कभी कोई इतना अज़ीम शहर
था?” 19 वह अपने सरों पर ख़ाक डाल लेंगे और
चिल्ला चिल्ला कर रोएँगे और आह-ओ-ज़ारी करेंगे।
वह कहेंगे, “हाय! तुझ पर अफ़सोस, ऐ अज़ीम शहर,
जिस की दौलत से तमाम बहरी जहाज़ों के मालिक
अमीर हुए। एक ही घंटे के अन्दर अन्दर वह वीरान
हो गया है।”

20 ऐ आसमान, उसे देख कर ख़ुशी मना!
ऐ मुक़द्दसो, रसूलो और नबियो, ख़ुशी मनाओ!
क्यूँकि अल्लाह ने तुम्हारी ख़ातिर उस की अदालत
की है।

21 फिर एक ताक़तवर फ़रिश्ते ने बड़ी चक्की के पाट
की मानिन्द एक बड़े पत्थर को उठा कर समुन्दर में
फैंक दिया। उस ने कहा, “अज़ीम शहर बाबल को
इतनी ही ज़बरदस्ती से पटक दिया जाएगा। बाद में
उसे कहीं नहीं पाया जाएगा। 22 अब से न मौसीक़ारों
की आवाज़ें तुझ में कभी सुनाई देंगी, न सरोद, बाँसरी
या तुरम बजाने वालों की। अब से किसी भी काम
का कारीगर तुझ में पाया नहीं जाएगा। हाँ, चक्की
की आवाज़ हमेशा के लिए बन्द हो जाएगी। 23 अब
से चराग़ तुझे रौशन नहीं करेगा, दुल्हन-दूल्हे की
आवाज़ तुझ में सुनाई नहीं देगी। हाय, तेरे सौदागर
दुनिया के बड़े बड़े अफ़्सर थे, और तेरी जादूगरी से
तमाम क़ौमों को बहकाया गया।”

24 हाँ, बाबल में नबियों, मुक़द्दसीन और उन तमाम
लोगों का ख़ून पाया गया है जो ज़मीन पर शहीद हो
गए हैं।

19 1 इस के बाद मैं ने आसमान पर एक
बड़े हुजूम की सी आवाज़ सुनी जिस ने
कहा, “अल्लाह की तम्जीद हो! नजात, जलाल और
क़ुदरत हमारे ख़ुदा को हासिल है। 2 क्यूँकि उस की
अदालतें सच्ची और रास्त हैं। उस ने उस बड़ी कस्बी
को मुजरिम ठहराया है जिस ने ज़मीन को अपनी
ज़िनाकारी से बिगाड़ दिया। उस ने उस से अपने
ख़ादिमों की क़त्ल-ओ-ग़ारत का बदला ले लिया है।”
3 और वह दुबारा बोल उठे, “अल्लाह की तम्जीद हो!
इस शहर का धुआँ अबद तक चढ़ता रहता है।”
4 चौबीस बुज़ुर्गों और चार जानदारों ने गिर कर तख़्त
पर बैठे अल्लाह को सिज्दा किया। उन्हों ने कहा,
“आमीन, अल्लाह की तम्जीद हो।”

लेले की ज़ियाफ़त

5 फिर तख़्त की तरफ़ से एक आवाज़ सुनाई दी।
उस ने कहा, “ऐ उस के तमाम ख़ादिमो, हमारे ख़ुदा
की तम्जीद करो। ऐ उस का ख़ौफ़ मानने वालो,
ख़्वाह बड़े हो या छोटे उस की सताइश करो।”
6 फिर मैं ने एक बड़े हुजूम की सी आवाज़ सुनी,
जो बड़ी आबशार के शोर और गरजते बादलों की
कड़क की मानिन्द थी। इन लोगों ने कहा, “अल्लाह
की तम्जीद हो! क्यूँकि हमारा रब क़ादिर-ए-मुतलक़
ख़ुदा तख़्तनशीन हो गया है। 7 आओ, हम मसरूर
हों, ख़ुशी मनाएँ और उसे जलाल दें, क्यूँकि लेले की
शादी का वक़्त आ गया है। उस की दुल्हन ने अपने
आप को तय्यार कर लिया है, 8 और उसे पहनने के
लिए बारीक कतान का चमकता और पाक-साफ़

लिबास दे दिया गया।" (बारीक कतान से मुराद मुक़द्दसीन के रास्त काम हैं।)

9 फिर फ़रिश्ते ने मुझ से कहा, "लिख, मुबारक हैं वह जिन्हें लेले की शादी की ज़ियाफ़त के लिए दावत मिल गई है।" उस ने मज़ीद कहा, "यह अल्लाह के सच्चे अल्फ़ाज़ हैं।"

10 इस पर मैं उसे सिज्दा करने के लिए उस के पाँओ में गिर गया। लेकिन उस ने मुझ से कहा, "ऐसा मत कर! मैं भी तेरा और तेरे उन भाइयों का हमख़िदमत हूँ जो ईसा की गवाही देने पर क़ाइम हैं। सिर्फ़ अल्लाह को सिज्दा कर। क्यूँकि जो ईसा के बारे में गवाही देता है वह यह नबुव्वत की रूह में करता है।"

सफ़ेद घोड़े का सवार

11 फिर मैं ने आसमान को खुला देखा। एक सफ़ेद घोड़ा नज़र आया जिस के सवार का नाम "वफ़ादार और सच्चा" है, क्यूँकि वह इन्साफ़ से अदालत और जंग करता है। 12 उस की आँखें भड़कते शोले की मानिन्द हैं और उस के सर पर बहुत से ताज हैं। उस पर एक नाम लिखा है जिसे सिर्फ़ वही जानता है, कोई और उसे नहीं जानता। 13 वह एक लिबास से मुलब्बस था जिसे ख़ून में डुबोया गया था। उस का नाम "अल्लाह का कलाम" है। 14 आसमान की फ़ौजें उस के पीछे पीछे चल रही थीं। सब सफ़ेद घोड़ों पर सवार थे और बारीक कतान के चमकते और पाक-साफ़ कपड़े पहने हुए थे। 15 उस के मुँह से एक तेज़ तलवार निकलती है जिस से वह क़ौमों को मार देगा। वह लोहे के शाही असा से उन पर हुकूमत करेगा। हाँ, वह अंगूर का रस निकालने के हौज़ में उन्हें कुचल डालेगा। यह हौज़ क्या है? अल्लाह क़ादिर-ए-मुतलक़ का सख़्त ग़ज़ब। 16 उस के लिबास और रान पर यह नाम लिखा है, "बादशाहों का बादशाह और रब्बों का रब।"

17 फिर मैं ने एक फ़रिश्ता सूरज पर खड़ा देखा। उस ने ऊँची आवाज़ से पुकार कर उन तमाम परिन्दों से जो मेरे सर पर मंडला रहे थे कहा, "आओ, अल्लाह की बड़ी ज़ियाफ़त के लिए जमा हो जाओ। 18 फिर तुम बादशाहों, जरनैलों, बड़े बड़े अफ़सरों, घोड़ों और उन के सवारों का गोश्त खाओगे, हाँ तमाम लोगों का गोश्त, ख़्वाह आज़ाद हों या ग़ुलाम, छोटे हों या बड़े।"

19 फिर मैं ने हैवान और बादशाहों को उन की फ़ौजों समेत देखा। वह घोड़े पर "अल्लाह का कलाम" नामी सवार और उस की फ़ौज से जंग करने के लिए जमा हुए थे। 20 लेकिन हैवान को गिरिफ़्तार किया गया। उस के साथ उस झूटे नबी को भी गिरिफ़्तार किया गया जिस ने हैवान की ख़ातिर मोजिज़ाना निशान दिखाए थे। इन मोजिज़ों के वसीले से उस ने उन को फ़रेब दिया था जिन्हें हैवान का निशान मिल गया था और जो उस के मुजस्समे को सिज्दा करते थे। दोनों को जलती हुई गंधक की शोलाख़ेज़ झील में फैंका गया। 21 बाक़ी लोगों को उस तलवार से मार डाला गया जो घोड़े पर सवार के मुँह से निकलती थी। और तमाम परिन्दे लाशों का गोश्त खा कर सेर हो गए।

हज़ार साल का दौर

20 1 फिर मैं ने एक फ़रिश्ता देखा जो आसमान से उतर रहा था। उस के हाथ में अथाह गढ़े की चाबी और एक भारी ज़न्जीर थी। 2 उस ने अज़दहे यानी क़दीम साँप को जो शैतान या इब्लीस कहलाता है पकड़ कर हज़ार साल के लिए बांध लिया। 3 उस ने उसे अथाह गढ़े में फैंक कर ताला लगा दिया और उस पर मुहर लगा दी ताकि वह हज़ार साल तक क़ौमों को गुमराह न कर सके। उस के बाद ज़रूरी है कि उसे थोड़ी देर के लिए आज़ाद कर दिया जाए।

4 फिर मैं ने तख़्त देखे जिन पर वह बैठे थे जिन्हें अदालत करने का इख़्तियार दिया गया था। और मैं ने उन की रूहें देखीं जिन्हें ईसा के बारे में गवाही देने और जिन का अल्लाह का कलाम पेश करने की वजह से सर क़लम किया गया था। उन्हों ने हैवान या उस के मुजस्समे को सिज्दा नहीं किया था, न उस का निशान अपने माथों या हाथों पर लगवाया

था। अब यह लोग ज़िन्दा हुए और हज़ार साल तक
मसीह के साथ हुकूमत करते रहे। 5 (बाक़ी मुर्दे हज़ार
साल के इख़तिताम पर ही ज़िन्दा हुए)। यह पहली
क़ियामत है। 6 मुबारक और मुक़द्दस हैं वह जो इस
पहली क़ियामत में शरीक हैं। इन पर दूसरी मौत का
कोई इख़तियार नहीं है बल्कि यह अल्लाह और मसीह
के इमाम हो कर हज़ार साल तक उस के साथ हुकूमत
करेंगे।

इब्लीस की शिकस्त

7 हज़ार साल गुज़र जाने के बाद इब्लीस को उस की
क़ैद से आज़ाद कर दिया जाएगा। 8 तब वह निकल
कर ज़मीन के चारों कोनों में मौजूद क़ौमों बनाम जूज
और माजूज को बहकाएगा और उन्हें जंग करने के
लिए जमा करेगा। लड़ने वालों की तादाद साहिल
पर की रेत के ज़र्रों जैसी बेशुमार होगी। 9 उन्हों ने
ज़मीन पर फैल कर मुक़द्दसीन की लश्करगाह को घेर
लिया, यानी उस शहर को जिसे अल्लाह प्यार करता
है। लेकिन आग ने आसमान से नाज़िल हो कर उन्हें
हड़प कर लिया। 10 और इब्लीस को जिस ने उन को
फ़रेब दिया था जलती हुई गंधक की झील में फैंका
गया, वहाँ जहाँ हैवान और झूटे नबी को पहले फैंका
गया था। उस जगह पर उन्हें दिन रात बल्कि अबद
तक अज़ाब सहना पड़ेगा।

आख़िरी अदालत

11 फिर मैं ने एक बड़ा सफ़ेद तख़्त देखा और उसे
जो उस पर बैठा है। आसमान-ओ-ज़मीन उस के हुज़ूर
से भाग कर ग़ाइब हो गए। 12 और मैं ने तमाम मुर्दों
को तख़्त के सामने खड़े देखा, ख़्वाह वह छोटे थे या
बड़े। किताबें खोली गईं। फिर एक और किताब को
खोल दिया गया जो किताब-ए-हयात थी। मुर्दों का
उस के मुताबिक़ फ़ैसला किया गया जो कुछ उन्हों
ने किया था और जो किताबों में दर्ज था। 13 समुन्दर
ने उन तमाम मुर्दों को पेश कर दिया जो उस में थे, और
मौत और पाताल ने भी उन मुर्दों को पेश कर दिया
जो उन में थे। चुनाँचे हर शख़्स का उस के मुताबिक़
फ़ैसला किया गया जो उस ने किया था। 14 फिर मौत
और पाताल को जलती हुई झील में फैंका गया। यह
झील दूसरी मौत है। 15 जिस किसी का नाम किताब-
ए-हयात में दर्ज नहीं था उसे जलती हुई झील में फैंका
गया।

नया आसमान और नई ज़मीन

21 1 फिर मैं ने एक नया आसमान और एक
नई ज़मीन देखी। क्यूँकि पहला आसमान
और पहली ज़मीन ख़त्म हो गए थे और समुन्दर भी
नेस्त था। 2 मैं ने नए यरूशलम को भी देखा। यह
मुक़द्दस शहर दुल्हन की सूरत में अल्लाह के पास से
आसमान पर से उतर रहा था। और यह दुल्हन अपने
दूल्हे के लिए तय्यार और सजी हुई थी। 3 मैं ने एक
आवाज़ सुनी जिस ने तख़्त पर से कहा, "अब अल्लाह
की सुकूनतगाह इन्सानों के दरमियान है। वह उन के
साथ सुकूनत करेगा और वह उस की क़ौम होंगे।
अल्लाह ख़ुद उन का ख़ुदा होगा। 4 वह उन की आँखों
से तमाम आँसू पोंछ डालेगा। अब से न मौत होगी न
मातम, न रोना होगा न दर्द, क्यूँकि जो भी पहले था
वह जाता रहा है।"

5 जो तख़्त पर बैठा था उस ने कहा, "मैं सब कुछ
नए सिरे से बना रहा हूँ।" उस ने यह भी कहा, "यह
लिख दे, क्यूँकि यह अल्फ़ाज़ क़ाबिल-ए-एतिमाद
और सच्चे हैं।" 6 फिर उस ने कहा, "काम मुकम्मल हो
गया है! मैं अलिफ़ और यह, अव्वल और आख़िर हूँ।
जो प्यासा है उसे मैं ज़िन्दगी के चश्मे से मुफ़्त पानी
पिलाऊँगा। 7 जो ग़ालिब आएगा वह यह सब कुछ
विरासत में पाएगा। मैं उस का ख़ुदा हूँगा और वह
मेरा फ़र्ज़न्द होगा। 8 लेकिन बुज़दिलों, ग़ैरईमानदारों,
घिनौनों, क़ातिलों, ज़िनाकारों, जादूगरों, बुतपरस्तों
और तमाम झूटे लोगों का अन्जाम जलती हुई गंधक
की शोलाख़ेज़ झील है। यह दूसरी मौत है।"

नया यरूशलम

9 जिन सात फ़रिश्तों के पास सात आख़िरी बलाओं
से भरे प्याले थे उन में से एक ने मेरे पास आ कर कहा,
“आ, मैं तुझे दुल्हन यानी लेले की बीवी दिखाऊँ।”
10 वह मुझे रूह में उठा कर एक बड़े और ऊँचे
पहाड़ पर ले गया। वहाँ से उस ने मुझे मुक़द्दस शहर
यरूशलम दिखाया जो अल्लाह की तरफ़ से आसमान
पर से उतर रहा था। 11 उसे अल्लाह का जलाल हासिल
था और वह अनमोल जौहर बल्कि बिल्लौर जैसे साफ़-
शफ़्फ़ाफ़ यशब की तरह चमक रहा था। 12 उस की
बड़ी और ऊँची फ़सील में बारह दरवाज़े थे, और
हर दरवाज़े पर एक फ़रिश्ता खड़ा था। दरवाज़ों
पर इस्राईल के बारह क़बीलों के नाम लिखे थे।
13 तीन दरवाज़े मशरिक़ की तरफ़ थे, तीन शिमाल
की तरफ़, तीन जुनूब की तरफ़ और तीन मग़रिब की
तरफ़। 14 शहर की फ़सील की बारह बुन्यादें थीं जिन
पर लेले के बारह रसूलों के नाम लिखे थे। 15 जिस
फ़रिश्ते ने मुझ से बात की थी उस के पास सोने का
गज़ था ताकि शहर, उस के दरवाज़ों और उस की
फ़सील की पैमाइश करे। 16 शहर चौकोर था। उस
की लम्बाई उतनी ही थी जितनी उस की चौड़ाई।
फ़रिश्ते ने गज़ से शहर की पैमाइश की तो पता
चला कि उस की लम्बाई, चौड़ाई और ऊँचाई 2,400
किलोमीटर है। 17 जब उस ने फ़सील की पैमाइश की
तो चौड़ाई 60 मीटर थी यानी उस पैमाने के हिसाब से
जो वह इस्तेमाल कर रहा था। 18 फ़सील यशब की
थी जबकि शहर ख़ालिस सोने का था, यानी साफ़-
शफ़्फ़ाफ़ शीशे जैसे सोने का। 19 शहर की बुन्यादें
हर क़िस्म के क़ीमती जवाहिर से सजी हुई थीं :
पहली यशब [c]से, दूसरी संग-ए-लाजवर्द [d]से, तीसरी
संग-ए-यमानी [e]से, चौथी ज़ुमुर्रद से, 20 पाँचवीं संग-
ए-सुलेमानी [f]से, छटी अक़ीक़-ए-अह्मर [g]से, सातवीं
ज़बर्जद [h]से, आठवीं आब-ए-बहर [i]से, नव्वीं पुखराज
[j]से, दसवीं अक़ीक़-ए-सबज़ [k]से, ग्यारवीं नीले रंग के
ज़रक़ोन [l]से और बारहवीं याक़ूत-ए-अर्ग़वानी [m]से।
21 बारह दरवाज़े बारह मोती थे और हर दरवाज़ा एक
मोती का था। शहर की बड़ी सड़क ख़ालिस सोने की
थी, यानी साफ़-शफ़्फ़ाफ़ शीशे जैसे सोने की।

22 मैं ने शहर में अल्लाह का घर न देखा, क्यूँकि
रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ख़ुदा और लेला ही उस का
मक़्दिस हैं। 23 शहर को सूरज या चाँद की ज़रूरत
नहीं जो उसे रौशन करे, क्यूँकि अल्लाह का जलाल
उसे रौशन कर देता है और लेला उस का चराग़
है। 24 क़ौमें उस की रौशनी में चलेंगी, और ज़मीन
के बादशाह अपनी शान-ओ-शौकत उस में लाएँगे।
25 उस के दरवाज़े किसी भी दिन बन्द नहीं होंगे
क्यूँकि वहाँ कभी भी रात का वक़्त नहीं आएगा।
26 क़ौमों की शान-ओ-शौकत उस में लाई जाएगी।
27 कोई नापाक चीज़ उस में दाख़िल नहीं होगी, न

---

[c] jasper

[d] lapis lazuli

[e] chalcedony

[f] sardonyx। यानी संग-ए-सुलेमानी की एक क़िस्म जिस में नारंजी और सफ़ेद अक़ीक़ के परत यके बाद दीगरे होते हैं।

[g] carnelian

[h] peridot

[i] beryl

[j] topaz

[k] chrysoprase

[l] यूनानी लफ़्ज़ कुछ मुब्हम सा है।

[m] amethyst

वह जो घिनौनी हरकतें करता और झूट बोलता है।
सिर्फ़ वह दाख़िल होंगे जिन के नाम लेले की किताब-
ए-हयात में दर्ज हैं।

मुकाशफ़ा

22 1 फिर फ़रिश्ते ने मुझे ज़िन्दगी के पानी
का दरया दिखाया। वह बिल्लौर जैसा साफ़-
शफ़्फ़ाफ़ था और अल्लाह और लेले के तख़्त से निकल
कर 2 शहर की बड़ी सड़क के बीच में से बह रहा
था। दरया के दोनों किनारों पर ज़िन्दगी का दरख़्त
था। यह दरख़्त साल में बारह दफ़ा फल लाता था,
हर महीने में एक बार। और दरख़्त के पत्ते क़ौमों
की शिफ़ा के लिए इस्तेमाल होते थे। 3 वहाँ कोई भी
मलऊन चीज़ नहीं होगी। अल्लाह और लेले का तख़्त
शहर में होंगे और उस के ख़ादिम उस की ख़िदमत
करेंगे। 4 वह उस का चिहरा देखेंगे, और उस का नाम
उन के माथों पर होगा। 5 वहाँ रात नहीं होगी और
उन्हें किसी चराग़ या सूरज की रौशनी की ज़रूरत
नहीं होगी, क्यूँकि रब ख़ुदा उन्हें रौशनी देगा। वहाँ
वह अबद तक हुकूमत करेंगे।

ईसा की आमद

6 फ़रिश्ते ने मुझ से कहा, "यह बातें क़ाबिल-ए-
एतिमाद और सच्ची हैं। रब ने जो नबियों की रूहों
का ख़ुदा है अपने फ़रिश्ते को भेज दिया ताकि अपने
ख़ादिमों को वह कुछ दिखाए जो जल्द होने वाला
है।"

7 ईसा फ़रमाता है, "देखो, मैं जल्द आऊँगा।
मुबारक है वह जो इस किताब की पेशगोइयों के
मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारता है।"

8 मैं यूहन्ना ने ख़ुद यह कुछ सुना और देखा है। और
उसे सुनने और देखने के बाद मैं उस फ़रिश्ते के पाँओ
में गिर गया जिस ने मुझे यह दिखाया था और उसे
सिज्दा करना चाहता था। 9 लेकिन उस ने मुझ से
कहा, "ऐसा मत कर! मैं भी उसी का ख़ादिम हूँ जिस
का तू, तेरे भाई नबी और किताब की पैरवी करने
वाले हैं। ख़ुदा ही को सिज्दा कर!" 10 फिर उस ने
मझे बताया, "इस किताब की पेशगोइयों पर मुहर
मत लगाना, क्यूँकि वक़्त क़रीब आ गया है। 11 जो
ग़लत काम कर रहा है वह ग़लत काम करता रहे।
जो घिनौना है वह घिनौना होता जाए। जो रास्तबाज़ है
वह रास्तबाज़ी करता रहे। जो मुक़द्दस है वह मुक़द्दस
होता जाए।"

12 ईसा फ़रमाता है, "देखो, मैं जल्द आने को हूँ।
मैं अज्र ले कर आऊँगा और मैं हर एक को उस के
कामों के मुवाफ़िक़ अज्र दूँगा। 13 मैं अलिफ़ और यह,
अव्वल और आख़िर, इब्तिदा और इन्तिहा हूँ।"

14 मुबारक हैं वह जो अपने लिबास को धोते हैं।
क्यूँकि वह ज़िन्दगी के दरख़्त के फल से खाने और
दरवाज़ों के ज़रीए शहर में दाख़िल होने का हक़ रखते
हैं। 15 लेकिन बाक़ी सब शहर के बाहर रहेंगे। कुत्ते,
ज़िनाकार, क़ातिल, बुतपरस्त और तमाम वह लोग
जो झूट को प्यार करते और उस पर अमल करते हैं
सब के सब बाहर रहेंगे।

16 "मैं ईसा ने अपने फ़रिश्ते को तुम्हारे पास भेजा
है ताकि वह जमाअतों के लिए तुम्हें इन बातों की
गवाही दे। मैं दाऊद की जड़ और औलाद हूँ, मैं ही
चमकता हुआ सुब्ह का सितारा हूँ।"

17 रूह और दुल्हन कहती हैं, "आ!"

हर सुनने वाला भी यही कहे, "आ!"

जो प्यासा हो वह आए और जो चाहे वह ज़िन्दगी
का पानी मुफ़्त ले ले।

ख़ुलासा

18 मैं, यूहन्ना हर एक को जो इस किताब की
पेशगोइयाँ सुनता है आगाह करता हूँ, अगर कोई इस
किताब में किसी भी बात का इज़ाफ़ा करे तो अल्लाह
उस की ज़िन्दगी में उन बलाओं का इज़ाफ़ा करेगा
जो इस किताब में बयान की गई हैं। 19 और अगर
कोई नबुव्वत की इस किताब से बातें निकाले तो
अल्लाह उस से किताब में मज़कूर ज़िन्दगी के दरख़्त

के फल से खाने और मुक़द्दस शहर में रहने का हक़
छीन लेगा।

20 जो इन बातों की गवाही देता है वह फ़रमाता
है, “जी हाँ! मैं जल्द ही आने को हूँ।” “आमीन! ऐ
ख़ुदावन्द ईसा आ!”

21 ख़ुदावन्द ईसा का फ़ज़्ल सब के साथ रहे।